स्वर्गवासी सेठ गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास



लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर छापेखानेके मालिक

अथ

सिद्धांतचन्द्रिकोत्तरार्द्धस्य

अकारानुक्रमेण सूत्रानुक्रमणिका ।

ह.

श्रीरघुनाथजी महाराज पण्डित स्वामी श्री ज्ञानचन्द्जी महाराज खुशालचं[illegible] जैन मुनि को है। चैत्र शु० ६ स १[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

पदकृत्य-भाषाटीकासहितः

सिद्धान्तचन्द्रिकोत्तरार्द्धः।

धातोः ॥ १ ॥ धातोः। एकपदमिदं सूत्रम् ॥ इदमधिक्रियते ॥

नत्वाजं परमानदमज्ञप्रज्ञाप्रदीप्तये । चद्रिकोत्तरार्द्धवृत्तौ दधे भाषां पदार्थिनीम् ॥ १ ॥

भाषा–धातुसे यह आख्यातप्रकरण अधिकृत है अथवा धातुसम्बन्धी यह आख्यातप्रकरण मुझ सरस्वतीकर व्याख्या किया जाता है वा छैः प्रकारके सूत्रोंके मध्यमें धातोः यह अधिकारसूत्र अधिकारी होनेसे मुझ सरस्वतीकर प्रतिज्ञा किया जाता है ॥

भ्वादिः ॥ २ ॥ भ्वादिः एकपदमिदं सूत्रम् ॥ क्रियावाची भ्वादिर्धातुसंज्ञकः स्यात् ॥

भाषा–क्रियाके कहनेवाले जो भू आदि शब्द ते धातुसंज्ञक होवे हैं । भाव यह है जिसकरके कि क्रिया कही जावे है ऐसे जो भूशब्दसे आदि लेकर शब्द हैं वह धातुसंज्ञक होवे हैं ॥

आदनुदात्तङितः ॥ ३ ॥ आत्, अनुदात्तङितः। द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ अनुदात्तेतो ङितश्च धातोरात् ॥

भाषा–अनुदात्तस्वर इत्संज्ञक होय जिसका और ङकार इत्संज्ञक होय जिसका ऐसे धातुसे आत्मनेपद होता है ॥

ञित्स्वरितेत उभे ॥ ४ ॥ ञित्स्वरितेतः, उभे। द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ ञितः स्वरितेतश्च धातोः आतपे स्तः ॥

---

१ प्रत्ययविधिसे यह सूत्र पञ्चम्यन्त माना जाता है और आगमादेशविधिमें षष्ठ्यन्त माना जाता है और अधिकारविधिमें शान्त प्रथमान्त माना जाता है ॥

२ संज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियम एव च । प्रतिषेधोऽधिकारश्च षड्विध सूत्रलक्षणम् ॥

३ करोत्यर्थभूता उत्पादनाऽपरपर्य्याया उत्पत्त्यनुकूलव्यापारसतानरूपा भावनेव क्रिया ॥

४ क्रियावाचित्वे सति भ्वादिगणपठितत्वं धातुत्वम् । अर्थ–क्रिया वाचा होकर जो कि भ्वादिगणोंमें पढे गये हों वे धातु कहाते है ॥

इति सूत्रानुक्रमणिका समाप्ता ।



पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण–मुंबई.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

पदकृत्य-भाषाटीकासहितः

सिद्धान्तचन्द्रिकोत्तरार्द्धः ।

धातोः ॥ १ ॥ धातोः । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ इदमधिक्रियते ॥

नत्वाजं परमानन्दमज्ञप्रज्ञाप्रदीप्तये । चंद्रिकोत्तरार्द्धवृत्तौ दधे भाषा पदार्थिनीम् ॥ १ ॥

भाषा-धातुसे यह आख्यातप्रकरण अधिकृत है अथवा धातुसम्बन्धी यह आख्यातप्रकरण मुझ सरस्वतीकर व्याख्या किया जाता है वा छः प्रकारके सूत्रोंके मध्यमें धातोः यह अधिकारसूत्र अधिकारी होनेसे मुझ सरस्वतीकर प्रतिज्ञा किया जाता है ॥

भ्वादिः ॥ २ ॥ भ्वादिः एकपदमिदं सूत्रम् ॥ क्रियावाची भ्वादि-धातुसंज्ञकः स्यात् ॥

भाषा-क्रियाके कहनेवाले जो भू आदि शब्द ते धातुसंज्ञक होवे हैं । भाव यह है जिसकरके कि क्रिया कही जावे है ऐसे जो भूशब्दसे आदि लेकर शब्द हैं वह धातु-संज्ञक होवे हैं ॥

आदनुदात्तङितः ॥ ३ ॥ आत्, अनुदात्तङितः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ अनुदात्तेतो ङितश्च धातोरात् ॥

भाषा-अनुदात्तस्वर इत्संज्ञक होय जिसका और ङकार इत्संज्ञक होय जिसका ऐसे धातुसे आत्मनेपद होता है ॥

ञित्स्वरितेत उभे ॥ ४ ॥ ञित्स्वरितेतः, उभे । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ ञितः स्वरितेतश्च धातोः आत्पे स्तः ॥

---

१ प्रत्ययविधिसे यह सूत्र पञ्चम्यन्त माना जाता है और आगमादेशविधिमें षष्ठ्यन्त माना जाता है और अधिकारविधिमें सान्त प्रथमान्त माना जाता है ॥

२ संज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियम एव च । प्रतिषेधोऽधिकारश्च षड्विधं सूत्रलक्षणम् ॥

३ करोत्यर्थभूता उत्पादनाऽपरपर्य्याया उत्पत्त्यनुकूलव्यापारसतानरूपा भावनेव क्रिया ॥

४ क्रियावाचित्वे सति भ्वादिगणपठितत्वं धातुत्वम् । अर्थ-क्रिया वाचा होकर जो कि भ्वादिगणोंमें पढे गये हों वे धातु कहाते हैं ॥

भाषा—अकार इत्संज्ञक होय जिसका और स्वरित इत्संज्ञक होय जिसका ऐसे धातुसे आत्मनेपद और परस्मैपद दोनों होते हैं ॥

परतोऽन्यत् ॥ ५ ॥ परतः, अन्यत् । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ उक्तनिमित्तहीनाद्धातोः पं स्यात् ॥

भाषा—कहे हुए निमित्तोंसे हीन जो धातु है उससे परस्मैपदही होता है । भाव यह है कि आत्मनेपद होनेका जो कि लक्षण कहा है और परस्मैपद और आत्मनेपद दोनोंके होनेका जो कि लक्षण कहा है वह लक्षण जिस धातुमें न पाया जावे उस धातुसे केवल परस्मैपदही होता है । यदि कहो कि आत्मनेपद किसको कहते और परस्मैपद किसको कहते हैं वहां कहते हैं ॥

नव पम् ॥ ६ ॥ नव, पम् । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ तिबादीनामाद्यानि नव वचनानि पसंज्ञानि स्युः ॥

भाषा—तिप् आदिक प्रत्ययोंके मध्यमें आदिके जो नव वचन हैं वह परस्मैपदसंज्ञक हैं । भाव यह है कि दश प्रकार आख्यातोंमें प्रत्येक आख्यातके अठारह २ वचन हैं । उन अठारह वचनोंमें आदिके जो नव वचन हैं उनकी परस्मैपद संज्ञा है ॥

पराण्यात् ॥ ७ ॥ पराणि, आत् । द्विपदमिदं सूत्रम् पराणि नव वचनानि आत्संज्ञानि स्युः ॥

भाषा—तिप् आदिक प्रत्ययोंके मध्यमें पिछले जो नव वचन हैं वह आत्मनेपदसंज्ञक हैं ॥

नाम्नि च युष्मदि च अस्मदि च भागे ॥ ८ ॥ नाम्नि, च, युष्मदि, च, अस्मदि, च, भागे । सप्तपदमिदं सूत्रम् ॥ तिबाद्येकार्थेषु नामादिषूपपदेष्वेते प्रत्ययास्त्रिभिर्भागैः स्युरात्मयोः ॥ नाम्नि प्रयुज्यमानेऽप्रयुज्यमाने प्रथम । युष्मदि मध्यमः । अस्मद्युत्तमः ॥

भाषा—तिबादिक प्रत्ययोंका एक अर्थ है जिनका ऐसे नामादिक उपपद हुए सते आत्मनेपद और परस्मैपदके यह प्रत्यय तीन २ भागोंकर होते हैं नाम प्रयुज्यमान होवे अथवा चकारसे अप्रयुज्यमान होवे तो प्रथम भाग होता है और युष्मद्शब्द प्रयुज्यमान होवे अथवा चकारसे अप्रयुज्यमान होवे तो मध्यमभाग होता है और अस्मद्शब्द प्रयुज्यमान होवे अथवा चकारसे अप्रयुज्यमान होवे तो उत्तमभाग होता है । भाव यह है नामापकर्ता प्रयुक्त होवे अथवा अप्रयुक्त होवे

तौ तिवादिक प्रत्ययोंके मध्यमें धातुसे जो कि नव वचन होते हैं उनमेंसे प्रथमभाग एकवचन द्विवचन बहुवचनके क्रमसे होता है और युष्मदर्थकर्त्ता प्रयुक्त होवे वा अप्रयुक्त होवे तौ मध्यमभाग होता है और अस्मदर्थकर्त्ता प्रयुक्त होवे वा अप्रयुक्त होवे तौ उत्तमभाग होता है ॥

कर्तरि पं च ॥ ९॥ कर्त्तरि, पंम्, चं । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ चादात् ॥ भू सत्तायाम् ॥

भाषा–कर्त्ता अर्थ वाच्य हुए संते धातुसे परस्मैपद होता है और चकारसे आत्मनेपदभी होता है । भूधातु सत्ताअर्थके विषें वर्त्ते है । सत्ता नाम होनेमात्रका है ॥

वर्तमाने तिप् तस अन्ति, सिप् थस् थ, मिप् वस् मस्, ते आते अन्ते, से आथे ध्वे, ए वहे महे ॥ १० ॥ वर्तमाने, तिप् तस् अन्ति, सिप्, थस् थ, मिप् वस् मस्, ते आते अन्ते, से आथे ध्वे, ए वहे महे । सप्तपदमिदं सूत्रम् ॥ वर्तमानार्थक्रियावृतेर्धातोस्तिवादयः प्रत्यया भवन्ति ॥ एषां संज्ञा लट् ॥

भाषा–वर्त्तमान अर्थ है जिसका ऐसी क्रियाके विषें वृत्ति है जिस धातुकी उससे तिप् आदि अठारह प्रत्यय होवे हैं । भाव यह है कि जब कि धातुकी वर्त्तमानार्थ क्रिया करी जावे तब उस धातुसे तिप् आदिक अठारह प्रत्यय होवे हैं । यदि नामार्थकर्त्ता होवे तौ कर्त्ताके वचनानुसार क्रमसे परस्मैपदके तिप् तस् अन्ति यह प्रत्यय धातुसे होवे हैं और आत्मनेपदके ते आते अन्ते यह प्रत्यय होवे हैं और यदि युष्मदर्थ कर्त्ता होवे तौ परस्मैपदके सिप् थस् थ यह प्रत्यय धातुसे होवे हैं और आत्मनेपदके से आथे ध्वे यह प्रत्यय होवे हैं । यदि अस्मदर्थ कर्त्ता होवे तौ परस्मैपदके मिप् वस् मस् यह प्रत्यय धातुसे होवे हैं और आत्मनेपदके ए वहे महे यह प्रत्यय होवे हैं इसी प्रकार प्रत्ययविभाग अन्य लकारोंसेभी जानना । इन वर्तमानार्थवाचक तिप् आदिक अठारह प्रत्ययोंकी संज्ञा लट् है ॥

अप् कर्तरि ॥ ११ ॥ अप्, कर्तरि । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ कर्त्रर्थेषु तिवादिषु चतुर्षु दिप्पर्यन्तेषु परतो धातोरप् स्यात् ॥

भाषा–कर्त्ता है अर्थ जिनका ऐसे तिवादिक दिप्पर्यन्त चार लकार पर हुए संते धातुसे अप् होय । उदाहरण–भूधातुसे वर्त्तमान अर्थ विषें प्रथम तिप् प्रत्यय करनेसे रूप हुआ भू–ति फिर ' अप् कर्त्तरि ' इसकर अप् प्रत्यय करनेसे रूप हुआ भू–अ–ति फिर ॥

गुण ॥ १२ ॥ गुणं । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ नाम्यन्तस्य धातोर्गुणः ॥ भवति ॥

भाषा—नामिसंज्ञक स्वर है अन्तमें जिसके ऐसे धातुको गुण होय । उदाहरण—भू अ-ति इसमें नाम्यन्त भूधातुके ऊकारको ' अरेदो नामिन, गुण ' इसकर गुण करनेसे रूप हुआ भो-अ-ति फिर ' ओ अव् ' इसकर सिद्ध हुआ । भवति । अब प्रथमभागका द्विवचन करनेसे रूप हुआ भू-तस् फिर ' अप् कर्त्तरि ' इसकर रूप हुआ भू-अ-तस् ॥

अपित्तादिर्ङित् ॥ १३॥ अपित्तादि , ङित् । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ पकारेत तादिकं च विहाय अन्यप्रत्ययो ङिद्वत्स्यात् ॥

भाषा—जिस प्रत्ययका कि पकार इत्संज्ञक होय उसको और तादिक प्रत्ययको त्याग कर अन्य प्रत्यय ङित्के समान होता है । भाव. यह है कि पकार इत्वाला प्रत्यय और तादिक प्रत्ययको छोड जो कि अन्य प्रत्यय है उसमें ङित्प्रत्ययका कार्य होता है ॥

क्ङित्यद्वयसि ॥१४॥ क्ङिति, अद्वयसि । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ किति ङिति च परे वृद्धिगुणौ न द्विर्वचनहेतुके उसि गुण स्यात् ॥ इति तसि गुणाभावे अप्निमित्तो गुण । भवत॰ ॥

भाषा—कित्संज्ञक वा ङित्संज्ञक प्रत्यय जिस धातुसे परे विद्यमान होवे तो उस धातुको वृद्धि और गुण नहीं होय और धातुका द्वित्वही है कारण जिसका ऐसा उस प्रत्यय पर हुए संते गुण होंयें । भाव यह है कि कित् और ङित् प्रत्यय पर हुए संते धातुको वृद्धि गुण नहीं होते हैं परन्तु धातुके द्वित्व होनेसे जो कि ङित्संज्ञक अन्प्रत्ययके स्थानमें उस् आदेश हुआ है वह यदि पर होवे तो धातुको गुण होये । इस कथनसे ङित्संज्ञक तस्प्रत्यय परे होनेसे भूधातुको गुण नहीं होना चाहिये परन्तु भूधातुसे तो प्रथम अप्प्रत्यय परे विद्यमान है इसलिये अप्प्रत्ययको गुणका निमित्त मानकर भूधातुको गुण हुआ तब रूप हुआ भो-अ-तस् फिर ' ओ अव्, सोर्विसर्गः ' इनकर रूप सिद्ध हुआ । भवतः । अब प्रथमभागका बहुवचन करनेसे रूप हुआ भू-अन्ति फिर ' अप् कर्त्तरि ' इसकर अप्प्रत्यय करनेसे रूप हुआ भू-अ-अन्ति फिर 'गुणः ओ अव् ' इन सूत्रोंकर रूप हुआ भव-अन्ति फिर ॥

१ आयामसीयसीना संज्ञा ङित् । अर्थ—आय, आम, सीयादिक और सि यह प्रत्ययभी ङित्संज्ञक हैं ॥

२ इस कथनसे यहांपर उस उस्प्रत्ययका ग्रहण है जो कि धातुके द्वित्व होनेसे 'अन उस्' इस सूत्रकर अन्प्रत्ययके स्थानमें उस्का आदेश हुआ है न कि अन्य उसका ग्रहण ॥

अदे ॥ १५ ॥ अत्, एँ । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ अतो लोपो भव-त्यकारे एकारे च परे ॥ भवन्ति । भवसि भवथः भवथ ॥

भाषा—अकारका लोप होय अकार एकार परे हुए संते । उदाहरण—भव-अन्ति इसमें वकार उत्तरवर्त्ती अकारका लोप हो गया क्योंकि प्रत्ययका अकार परमें विद्यमान है तव रूप सिद्ध हुआ । भवन्ति । इसी प्रकार मध्यमभागके तीनों वचनोंमें रूप सिद्ध हुए । भवसि भवथः भवथ । उत्तमभागके प्रथमवचनमें भू-मि । द्वितीयवचनमें भू-वः और वहुवचनमें भू-मः ऐसे रूप स्थित हैं तीनों वचनोंमें 'अप् कर्तरि, गुणः, ओ अव्' इन सूत्रोंकर रूप हुए, भव-मि भव-वः भव-मः फिर ॥

व्मोरा ॥ १६ ॥ व्मोः, आं । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ वमयोः परयोरत आत्वं स्यात् ॥ भवामि भवावः भवामः । स भवति । त्वं भवसि । अहं भवामि । युगपत्प्राप्तौ परः । स च त्वं च भवथः । अहं च त्वं च भवावः । अहं च त्वं च स भवामः ॥

भाषा—प्रत्ययके वकार और मकार पर हुए संते अकारको आकार होय । उदाहरण—भव-मि भव-वः भव-मः इन तीनोंमें अकारसे परे प्रत्ययके मकार वकार विद्यमान हैं इस कारण अकारको आकार करनेसे रूप सिद्ध हुए । भवामि भवावः भवामः । सः यह नामका प्रथम वचन है इस कारण सःके साथमें प्रथमभागका प्रथम वचन जोडनेसे हुआ स भवति और त्वं यह युष्मद्शब्दका प्रथम वचन है इस कारण त्वंके साथमें मध्यमभागका प्रथम वचन जोडनेसे हुआ त्वं भवसि और अहं यह अस्मद्-शब्दका प्रथम वचन है इस कारण अहंके साथमें उत्तमभागका प्रथम वचन जोडनेसे रूप हुआ अहं भवामि । नाम और युष्मद् और अस्मद् इन तीनोंके मध्यमें दो वा तीनोंकी एकही समय प्राप्ति होवे तौ परभाग होता है अर्थात् प्रथमकी अपेक्षाकर मध्यम और मध्यमकी अपेक्षाकर उत्तम होता है[१] । उदाहरण—स च त्वं च यहां नाम और युष्मद्शब्दकी एकही साथ प्राप्ति हुई इस कारण प्रथमकी अपेक्षाकर मध्यमभागका द्विवचन जोडनेसे रूप हुआ स च त्वं च भवथः और अहं च त्वं च यहां युष्मद् और अस्मदशब्दकी एकही साथ प्राप्त हुई इस कारण मध्यमकी अपेक्षाकर उत्तमभागका द्विवचन जोडनेसे रूप हुआ अहं च त्वं च भवावः और अहं च त्वं च स च यहां नाम युष्मद् अस्मद् इन तीनोंकी एकही

१ एकदा चोक्तक्रियाकालसम्बन्धप्रतिपादनम् । धातोर्नामादिपूक्तेषु यः परः स पुमान् भवेत् ॥ अर्थ—नाम और आदिशब्दसे युष्मद् अस्मद् शब्दोंके एकही समय कहे जानेपर जो धातुके क्रियाकालसंबन्धका प्रतिपादन होय तौ उनमें जो पर पुरुष है वह होता है ॥

साप भाषि(हुई इस कारण प्रथम और मध्यममागकी अपेक्षाकर उत्तमभागकी बहुवचन जोडनेसे हुआ अई य र्त य स य मवाम ॥

विधिसंभावनयोः यात् याताम् युस्, यास्, यातं यात, यां याव याम, ईत ईयातां ईरन्, ईथास् ईयाथां ईध्वम्, ईय ईवहि ईमहि ॥ १७ ॥ विधिसंभावनयो , यात्, यांताम् युस्, यांस् यातं यात, यां यांव याम, ईत ईयांतां ईरन्, ईथांस् ईयाथां ईध्वम्, ईय ईवहि ईमहि । सप्तपदमिदं सूत्रम् ॥ विधि कर्तव्यार्थोपदेश । संभावनं कल्पनम् । तत्र यातादयः ॥ एषां संज्ञा लिङ् ॥

भाषा—करने योग्य अर्थके उपदेशका नाम विधि है और कल्पित करनेका नाम संभावन है इन दोनों अर्थोंके विषैं वर्तमान हुए धातुसे यात् आदिक अठारह प्रत्यय होते हैं इन यात् आदिक अठारह प्रत्ययोंकी संज्ञा लिङ् है । उदाहरण–विधि और सम्भावनअर्थके विषैं भूधातुसे प्रथमपुरुषका प्रथम वचन यात् प्रत्यय करनेसे रूप हुआ भूयात् । फिर ' अप् कर्तरि, गुण', ओ अव् इनकर हुआ भव यात् फिर ॥

या ॥ १८ ॥ यां । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ अत परो या इ स्यात् ॥ भवेत् भवेताम् ॥

भाषा—अकारसे परे जो प्रत्ययसंबन्धी या तिसको इ होय । उदाहरण–भव-यात् इसमें अकारसे परे प्रत्ययसम्बन्धी या विद्यमान है इस कारण याके स्थानमें इकार कर नेपर अइ ए ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । भवेत् । इसी प्रकार द्विवचनमें सिद्ध हुआ । भवेतां । बहुवचनमें अप् कर्तरि ' आदिक सूत्रोंकर प्रथम भव-युस् ऐसा स्थित है ॥

युस् इट् ॥ १९ ॥ युसं, इट् । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ अतः परस्य युस् इडागम स्यात् ॥ भवेयुः । भवे भवेत भवेत ॥

भाषा—अकारसे परे जो युस् प्रत्यय तिसको इट्का आगम होय । उदाहरण–भव युस् इसमें अकारसे परे युस् प्रत्यय विद्यमान है इस कारण युसको इट् आगम करनेपर अइ ए, सोर्विसर्गः ' इनकर रूप सिद्ध हुआ । भवेयुः । और मध्यमभागके तीनों वचनोंमें या इत्यादिक सूत्रोंकर रूप सिद्ध हुए । भवे भवेतं भवेत । भव उत्तमपुरुषके प्रथमवचनमें पूर्ववत् रूप स्थित हुआ । भव-यां ॥

यामियम् ॥ २० ॥ याम्, इयम्। द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ अतः परो याम् इयं स्यात् ॥ भवेयं भवेव भवेम। शिष्यो गुरुशुश्रूषको भवेत्। विधिः। भवेदसौ वेदवित् ब्राह्मणत्वात् ॥

भाषा—अकारसे परे जो याम् प्रत्यय सो इयम् होय। उदाहरण—भव-यां इसमें अकारसे परे याम् प्रत्यय विद्यमान है इस कारण याम्के स्थानमे इयं करनेसे रूप 'अइ ए' इसकर रूप सिद्ध हुआ। भवेयम्। और द्विवचन बहुवचनमें पूर्ववत् 'या' इस सूत्रकर सिद्ध हुए। भवेव भवेम। शिष्यो गुरुशुश्रूषको भवेत्। यहां भवेत् क्रिया विधिअर्थमें है क्योंकि गुरुकी शुश्रूषा करना शिष्यका करने योग्य अर्थ है उसीका यहां उपदेश है। भवेदसौ वेदविद्ब्राह्मणत्वात्। यहां भवेत् क्रिया संभावन अर्थमें है क्योंकि ब्राह्मण होनेसे यह वेदके जाननेवाला होगा यह कल्पना की है ॥

आशीःप्रेरणयोः तुप् तां अन्तु, हि तं त, आनिप् आवप् आमप्, तां आतां अन्ताम्, स्व आथा ध्वम्, ऐप् आवहैप् आमहैप् ॥ २१ ॥ आशीःप्रेरणयोः, तुप् तां अन्तु, हि तं तं, आनिप् आवप् आमप्, तां आतां अन्तां, स्व आथां ध्वं, ऐप् आवहैप् आमहैप्। सप्तपदमिदं सूत्रम् ॥ अप्राप्तप्रार्थनमाशीः। परस्येष्टार्थशंसनं वा। प्रेरणं प्रवर्तनम्। तत्र तुबादयः ॥ एषां संज्ञा लोट् ॥

भाषा—अप्राप्त पदार्थकी प्रार्थनाका नाम आशीर्वाद है अथवा दूसरेके इच्छित अर्थके कथनका नामभी आशीर्वाद है और प्रेरणा नाम किसीको किसी कार्यमें प्रवृत्त कर देनेका है इन अर्थोंके विषैं धातुसे तुप् आदिक अठारह प्रत्यय होवे हैं इन तुप् आदिक अठारह प्रत्ययोंकी संज्ञा लोट् है। उदाहरण—आशीः और प्रेरण-अर्थके विषैं भूधातुसे प्रथमपुरुषका तुप् प्रत्यय करनेपर 'अप् कर्त्तरि, गुणः, ओ अव्' इन सूत्रोंकर रूप सिद्ध हुआ। भवतु ॥

तुह्योस्तातङ्ङाशिषि वा ॥ २२ ॥ तुह्योः, तातङ्, आशिषि, वा। चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ भवतु भवतात् भवतां भवन्तु ॥

भाषा—तुप् प्रत्यय और हि प्रत्ययको आशीः अर्थके विषैं तातङ् आदेश होय

---

१ यदि कहो कि ङित् आदेश अन्त्यको होता है फिर यहां समस्तको कैसे कर दिया है तहां समाधान है कि यहापर जो कि आदेशको ङित् किया है वह अन्त्यादेशके वास्ते नहीं किन्तु वृद्धिगुणके निषेध और सम्प्रसारणके वास्ते है। उदाहरण—ब्रूतात्, उष्टात् इत्यादि ॥

विकल्प करके । इस कथनसे यहां तुप्के तातङ् आदेश किया वहां रूप सिद्ध हुआ । भवतात् । और द्विवचनमें सिद्ध हुआ । भवताम् । और बहुवचनमें 'अदे' इसकर वकार उत्तरवर्ती अकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । भवन्तु । मध्यमपुरुषके प्रथमवचनमें प्रथम भव+हि ऐसा स्थित है ॥

अत ॥ २३ ॥ अत इति । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ अत परस्य हेर्लुक् स्यात् ॥ भव भवतात् भवत भवत । भवानि भवाव भवाम । अध्ययनायोद्यतो भव सौम्य । आयुष्मान् भवतु भवान् ॥

भाषा—अकारसे परे हिप्रत्ययका लुक् होय । उदाहरण—भव हि इसमें अकारसे परे हिप्रत्यय विद्यमान है इस कारण हिप्रत्ययका लुक् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । भव । द्विवचन बहुवचनमें सिद्ध हुए । भवत भवत । और उत्तमपुरुषके तीनों वचनोंमें 'सवर्णे दीर्घः सह' इसकर सिद्ध हुए । भवानि भवाव भवाम । अध्ययनायोद्यतो भव सौम्य । यहां प्रेरण अर्थ है । हे सौम्य अध्ययनके लिये उद्यत हो । सौम्यको अध्ययनमें प्रवृत्त करनेकी प्रेरणा है । आयुष्मान् भवतु भवान् । यहां आशीः अर्थ है । आप बडी आयुवाले हूजिये यहां दूसरेके इच्छित अर्थका कथन है ॥

अनद्यतनेऽतीते दिप् तां अन्, सिप् त त, अमिप् व म, तन् आतां अन्त, थास् आथां ध्वम्, इ वहि महि ॥२४॥ अनद्यतने, अतीते, दिप् तां अन्, सिप् त त, अमिप् व म, तन् आतां अन्तां, थास् आथां ध्वं, इ वहि महि । अष्टपदमिदं सूत्रम् ॥ अतीताया रात्रेर्यामद्वयादर्वाग्यावदागामिन्या प्रथमं यामद्वयं दिवसं सकलं सोऽद्यतनः । नास्त्यद्यतनो यस्मिन्नतीते तत्र दिबादयः ॥ एषां संज्ञा लङ् । दिसिमीनामिकार उच्चारणार्थः ॥

भाषा—बीती हुई रात्रिके दो प्रहरसे लेकर जबतक कि आनेवाली रात्रिके दो प्रहर हैं और मध्यका समस्त दिन वह काल अद्यतन है अर्थात् गत अर्द्धरात्रसे लेकर आनेवाली रात्रिके अर्द्धरात्रतक अद्यतनकाल होता है वह अद्यतनकाल जिस बीते हुए कालके विषैं नहीं है वह अनद्यतन काल है उस अनद्यतन कालके विषैं अर्थात् अद्यतनकालसे वर्जित जो अन्य व्यतीत काल है उसके विषैं दिप आदिक अठारह प्रत्यय होते हैं । इन दिप् आदिक अठारह प्रत्ययोंकी संज्ञा लङ् है । दिप्, सिप् और मिप् इन प्रत्ययोंका इकार उच्चारणार्थ है । उदाहरण—अनद्यतन अतीत

कालअर्थके विषैं भूधातुसे प्रथमपुरुषका प्रथम वचन दिप् करनेपर ' अप् कर्त्तरि, गुणः, ओ अव् ' इनकर स्थित हुआ भवद् ॥

दिबादावट् ॥ २५ ॥ दिबादौ, अट् । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ धातोः ॥ अभवत् अभवतां अभवन् । अभवः अभवतम् अभवत । अभवम् अभवाव अभवाम । ह्योऽभवत् त्वत्पुत्रः ॥

भाषा–दिप् आदिक अठारह प्रत्यय पर हुए संते धातुको अट्का आगम होय । उदाहरण–भवद् । इसमें भूधातुसे दिप् प्रत्यय परे विद्यमान है इस कारण भूधातुको अट्का आगम करनेसे रूप स्थित हुआ । अभवद् । फिर ' वावसाने ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । अभवत्–अभवद् । और द्विवचनमेंभी इसी प्रकार सिद्ध हुआ । अभवताम् । और वहुवचनमें ' अदे ' इसकर सिद्ध हुआ । अभवन् । और मध्यमपुरुषका प्रथम वचन सि करनेसे ' स्रोर्विसर्गः ' इसकर सिद्ध हुआ । अभवः । और द्विवचन बहुवचनमें सिद्ध हुए । अभवतं, अभवत । और उत्तमपुरुषके एकवचनमें ' अदे ' इसकर सिद्ध हुआ । अभवम् । और द्विवचन वहुवचनमें ' वमोरा ' इसकर सिद्ध हुए । अभवाव, अभवाम । ह्योऽभवत् त्वत्पुत्रः । यहां अद्यतनकालवर्जित अतीतकाल है । तेरा पुत्र कालि हुआ था । इसमें अद्यतनकाल नहीं पाया जाता है ॥

परोक्षे णप् अतुस् उस्, थप् अथुस् अ, णप् व म, ए आते इरे, से आथे ध्वे, ए वहे महे ॥२६ ॥ परोक्षे, णप् अतुस् उस्, थप् अथुस् अ, णप् व म, ए आते इरे, से आथे ध्वे, ए वहे महे । सप्तपदमिदं सूत्रम् ॥ धातोः परोक्षेऽतीते काले णबादयः ॥ एषां संज्ञा लिट् ॥

भाषा–परोक्ष अतीतकालके विषैं क्रियावृत्ति है जिस धातुकी उससे णप् आदिक अठारह प्रत्यय होवे हैं । भाव यह है कि जो काल कि नेत्रोंके सामने न वीता हो उसका नाम परोक्ष अतीतकाल है उस कालमें क्रियावृत्ति धातुकी होनेसे णप् आदिक प्रत्यय होवे हैं इन णप् आदिक अठारह प्रत्ययोंकी संज्ञा लिट् है । उदाहरण–परोक्ष अतीतकालके विषैं भूधातुसे प्रथमपुरुषका प्रथम वचन णप् करनेपर रूप हुआ भू-अ णप्में णकार और पकार इत्संज्ञक हैं फिर ॥

द्विश्च ॥ २७ ॥ द्विः, च । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ उक्तार्थणबादियोगे धातोर्द्विर्वचनम् ॥

भाषा—कहा है परोक्ष अतीतकाल अर्थ जिनका ऐसे णप् आदिक अक्षर प्रत्ययोंका योग होनेपर धातुको द्वित्व होय अर्थात् एक धातुके स्थानमें उसी धातुके दो रूप करने चाहिये । उदाहरण—भू-भ इसमें परोक्षातीत कालार्थवाचक णप् प्रत्ययका योग है इस कारण भूधातुको द्वित्व करनेसे रूप हुआ भू-भू-भ ॥

सस्वरादिर्द्विरद्विः ॥ २८ ॥ सस्वरादि, द्विः, अद्विः । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ अनेकस्वरस्य धातोः सस्वराद्योऽक्षरवाऽद्विरुक्तो द्विर्भवति ॥

भाषा—अनेक स्वर हैं जिसके विषें ऐसा जो धातु उस धातुका जो आदिका अक्षर वह अक्षर यदि पूर्व किसी विधिसे द्वित्वको नहीं प्राप्त हुआ होय तो स्वरसहित द्विरूप होय ॥

णादि कित् ॥ २९ ॥ णादि, कित् । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ अपित् णादि कित् ॥

भाषा—नहीं है पकार इत्संज्ञक जिसका ऐसा जो णप् आदिक प्रत्ययसमूह है वह कित्संज्ञक होता है ॥

आभ्वाणादा ॥ ३० ॥ आ अभ्वोः, णादौ । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ पूर्वस्याकारस्य भूशब्दस्य चाकारो णादौ परे ॥

भाषा—पूर्वक आकार और भूशब्दको अकार होय णप् आदि प्रत्यय पर हुए संते । भाव यह है कि द्वित्व करनेपर जो कि पूर्वका अकार और भूशब्दका उकार है इन दोनोंको आकार होय जो णप् आदिक प्रत्यय परे विद्यमान होय तौ । उदाहरण—भू-भू-भ । इसमें पूर्वक भू शब्दके ऊकारको आकार किया क्योंकि परमें णप् प्रत्यय विद्यमान है तब रूप हुआ भा-भू-भ फिर ॥

ह्रस्व ॥ ३१ ॥ ह्रस्वः । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ पूर्वसम्बन्धिनो दीर्घस्य ह्रस्वः ॥

भाषा—द्वित्व करनेपर जो कि पूर्वअक्षरका सम्बन्धी दीर्घ स्वर है उसको ह्रस्व होय । उदाहरण—भा-भू-भ । इसमें पूर्वके भकारसंबन्धी आकारको ह्रस्व करनेपर रूप हुआ भ-भू-भ फिर ॥

झपानां जबचपा ॥ ३२ ॥ झपानाम्, जबचपाः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ पूर्वस्य झपानां जबाश्चपाः स्युः ॥ झढधघभानां जडदगबाः । छठथखफानां चटतकपाः स्युः ॥

---

१ इस कथनसे यह सिद्ध हुआ कि ' विधौ भवानां स्यादीनां णबादिर्नैवको या ' इसप्रकार जो कि स्यादि प्रत्ययोंके स्थानमें णबादि प्रत्ययोंका आदेश हुआ है उन णबादि प्रत्ययोंके विषें धातुको द्वित्व नहीं होय ॥

भाषा—द्वित्वको प्राप्त हुए पूर्ववर्णके झषप्रत्याहारको जब और चप प्रत्याहार होय । झढधघभ इनको क्रमसे जडदगब ये होंय और छठथखफ इनको सवर्गीय-चटतकप ये होंय । भाव यह है कि पूर्वके वर्णमें यदि झ होवे तौ ज और ढ होवे तौ ड और ध होवे तौ द और घ होवे तौ ग और भ होवे तौ ब होय और यदि पूर्ववर्णमें ख होवे तौ 'वर्ग्यो वर्गेण सवर्णः' इसकर ख होवे तो क और फ होवे तौ प और छ होवे तौ च और ठ होवे तौ ट और थ होवे तौ त होय । उदाहरण-भ-भू-अ । इसमें पूर्वके वर्णोंमे भ विद्यमान है इस कारण भके स्थानमें ब करनेसे रूप हुआ ब-भू-अ फिर ॥

भुवो वुक् ॥ ३३ ॥ भुवः, वुक् । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ भुवो वुगागमो णादौ स्वरे ॥ बभूव बभूवतुः बभूवुः ॥

भाषा—भूधातुको वुक्का आगम होय णप् आदिक प्रत्ययसम्बन्धी स्वर पर हुए संते । उदाहरण—ब-भू-अ । इसमे भूधातुको वुक्का आगम किया क्योंकि परमे णप्प्रत्ययसम्बन्धी अ स्वर विद्यमान है । वुक् आगम 'टित्किताबाद्यन्तयोर्वक्त-व्यौ' इसकर भूधातुके अन्तमें हुआ । आगममें उकार उच्चारणार्थ है तब रूप हुआ ब-भूव्-अ । फिर 'स्वरहीनं परेण संयोज्यम्' इसकर रूप सिद्ध हुआ । बभूव । और द्विवचन बहुवचनमें इसी प्रकार सिद्ध हुए । बभूवतुः, बभूवुः । मध्य-मभागके एकवचनमें पूर्ववत् करनेसे रूप हुआ बभू-थ फिर ॥

क्रादेर्णादेः ॥ ३४ ॥ क्रादेः णादे । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ कृ सृ भृ वृ द्रु स्तु श्रु स्रु इत्येतेभ्यः परस्य वसादेर्णादेरिट् न भवति । अन्य-स्मात् भवतीति नियमादिट् स्यात् ॥ बभूविथ बभूवथुः बभूव । बभूव बभूविव बभूविम । बलिर्बलवान् बभूव ॥

भाषा—कृ, सृ, भृ, वृ, द्रु, स्तु श्रु, स्रु इन धातुओंसे परे जो वस प्रत्याहार-आदिवाले णप् आदिक प्रत्यय तिनको इट्का आगम नहीं होय और इन कहे हुए धातुओंसे जो कि अन्य धातु हैं उससे परे जो वस प्रत्याहारआदिवाले णप् आदिक प्रत्यय उनको इट्का आगम होय । उदाहरण-बभू-थ । इसमें कहे हुए कृ आदिक धातुओंसे अन्य धातु भू है इससे परे वस प्रत्याहार आदिवाला णवादिकोंमें थप् प्रत्यय है इस कारण थप्को इट्का आगम करा तौ टित् होनेसे थप्के आदिमें हुआ तब रूप हुआ बभू-इ-थ । फिर 'यदागमास्तद्गुणीभूतास्तद्ग्र-हणेनैव गृह्यन्ते' इसकर इको थप्काही अंग मानि 'भुवो वुक्' इसकर वुक् आगम करनेसे रूप सिद्ध हुआ । बभूविथ । द्विवचन बहुवचनमें पूर्ववत् सिद्ध हुए ।

बभूवथु बभूव । अब उत्तमभागके तीनों वचनोंमें पूर्ववत् रूप सिद्ध हुए । बभूव बभूविव, बभूविम । बलिर्बलवान् बभूव । इसमें नामार्थबलिके साथ परोक्ष अतीत कालकी बभूव इस क्रियाका सम्बन्ध है । बलिराजा बलवान् होते हुए ॥

आशिषि यात् यास्तां यासुस्, यास् यास्तं यास्त, यासं यास्व यास्म, सीष्ट सीयास्तां सीरन्, सीष्ठास् सीयास्थां सीध्वम्, सीय सीवहि सीमहि ॥ २५ ॥ आशिषि, यात् यास्तां यासुस्, यास् यास्तं यास्त, यासं यास्व यास्म, सीष्ट सीयास्तां सीरन्, सीष्ठास् सीयास्थां सीध्वम्, सीय सीवहि सीमहि । सप्तपदमिदं सूत्रम् ॥ धातोराशिषि यादादय ॥ एषां संज्ञा लिङ् ॥

भाषा—आशीर्वाद अर्थवाच्य होनेपर धातुसे यात् आदिक अठारह प्रत्यय होते हैं इन यात् आदिकोंकी संज्ञा लिङ् है ।

आशीर्वादे च कित् ॥ २६ ॥ आशीर्वादे, च, कित् । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ भूयात् भूयास्ताम् भूयासुः । भूयाः भूयास्तम् भूयास्त । भूयासम् भूयास्व भूयास्म । स श्रीमान् भूयात् ॥

भाषा—आशीर्वाद अर्थके कहनेवाले जो यात् आदिक प्रत्यय उनमेंसे परस्मैपद संज्ञक आदिके नव प्रत्ययोंकी संज्ञा कित् है । उदाहरण—आशीर्वादअर्थके विषै भू धातुसे प्रथमपुरुषका प्रथम वचन करनेपर 'क्ङित्यगुसि' इसकर गुण न होनेसे रूप सिद्ध हुआ । भूयात् । द्विवचन बहुवचनमें । भूयास्तां, भूयासु[1] । इसी प्रकार मध्यम और उत्तमभागके रूप सिद्ध करने चाहिये । स श्रीमान् भूयात् । सो पुरुष लक्ष्मीवान् होवे । इसमें आशीर्वाद अर्थ प्रकट होता है ॥

श्वस्तने ता तारौ तारस्, तासि तास्थस् तास्थ, तास्मि तास्वस् तास्मस्, ता तारौ तारस्, तासे तासाथे ताध्वे, ताहे तास्वहे तास्महे ॥२७॥ श्वस्तने, ता तारौ तारस्, तासि तास्थस् तास्थ, तास्मि तास्वस् तास्मस्, ता तारौ तारस्, तासे तासाथे ताध्वे, ताहे तास्वहे तास्महे । सप्तपदमिदं सूत्रम् ॥ श्वोभाविन्यर्थे तादय एषां संज्ञा लुट् ॥

---

१ 'अपित्वादिर्ङित्' इसकरही यात् आदिक प्रत्ययोंकी संज्ञा ङित् होनेसे गुणवृद्धिका निषेध तो सिद्ध होही गया फिर कित्संज्ञा करनेसे क्या फल हुआ ? समाधान—यदि यात् आदिकोंकी कित्संज्ञा न करते तो इज्यात् सुप्यात् इत्यादिकोंके विषै संप्रसारण कैसे होता, और जागर्यात् इसके विषै गुण कैसे होता ॥

भाषा—श्वस्तन अर्थात् अद्यतनसंज्ञक कालसे वर्जित जो कि आनेवाले दिनके विषैं वर्त्तमान हुआ काल है उसमें ता आदिक प्रत्यय होवे हैं इन ता आदिक अठारह प्रत्ययोंकी संज्ञा लुट् है । उदाहरण—श्वस्तनकालके विषैं भूधातुसे प्रथम पुरुषका प्रथम वचन ता प्रत्यय करनेपर रूप हुआ भू-ता ॥

सिसतासीस्यपामिट् ॥ ३८ ॥ सिसतासीस्यपाम्, इट्, द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ भविता भवितारौ भवितारः । भवितासि भवितास्थः भवितास्थ । भवितास्मि भवितास्वः भवितास्मः । श्वो भविता राज्यभारः कुमारस्य ॥

भाषा—सिप्रत्यय और सप्रत्यय और ता आदिक प्रत्यय और सीट आदिक प्रत्यय और स्यप् प्रत्यय इनको इट्का आगम होय । उदाहरण—भू-ता । इसमें ताप्रत्ययको इट्का आगम करनेपर रूप हुआ भू-इ-ता फिर ' गुणः, ओ अव् ' इन सूत्रोंकर रूप सिद्ध हुआ । भविता । इसी प्रकार शेष वचनोंमें साध लेने चाहिये । श्वो भविता राज्यभारः कुमारस्य । इसमें आनेवाले दिनकी क्रिया विद्यमान है । कालि कुमारको राज्यभार होवेगा ॥

त्यादौ भविष्यति स्यप् ॥ ३९ ॥ त्यादौ, भविष्यति, स्यप् । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ धातोर्भविष्यति काले स्यप्प्रत्ययो भवति तिबाद्यष्टादशसु परतः॥एषां संज्ञा लृट् । भविष्यति भविष्यतः भविष्यन्ति । भविष्यसि भविष्यथः भविष्यथ । भविष्यामि भविष्यावः भविष्यामः । कल्की धर्मपालको भविष्यति ॥

भाषा—धातुसे भविष्यत् कालअर्थके विषैं स्यप् प्रत्यय होय तिप् आदिक अठारह प्रत्यय परे संते । इन स्यप् प्रत्यययुक्त तिप् आदिक अठारह प्रत्ययोंकी संज्ञा लृट् है । उदाहरण—भविष्यत् कालके विषैं भूधातुसे तिप् प्रत्ययके आदिमें स्यप् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ भू-स्य-ति । इसमें ' सिसतासीस्यपामिट् ' इसकर इट्का आगम किया फिर ' गुणः, ओ अव्, क्लिात्षः सः कृतस्य ' इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ । भविष्यति । इसी प्रकार अन्य वचनोंमेंभी रूप सिद्ध करने चाहिये । कल्की भगवान् धर्मकी रक्षा करनेवाले होवेंगे । इसमें भविष्यत् क्रिया पाई जाती है ॥

स्यप् क्रियातिक्रमे ॥ ४० ॥ स्यप्, क्रियातिक्रमे । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ क्रियाया अतिक्रमे कुतश्चिदनिष्पत्तौ सत्यां स्यप्प्रत्ययो भवति दिबादिषु परतः ॥ एषां संज्ञा लृङ् । यदि सुवृष्टिः सुराज्यं

चाभविष्यत् तदा सुभिक्षमभविष्यत् । अभविष्यताम्, अभविष्यन् । अभविष्य अभविष्यतम् अभविष्यत । अभविष्यम् अभविष्याव अभविष्याम ॥

भाषा-क्रियाकी किसी प्रकारसे [1] असिद्धि होनेपर धातुसे स्यप् प्रत्यय होवे दिप् आदिक प्रत्यय पर हुए संते । भाव यह है कि क्रियाकी असिद्धि प्राप्त होनेपर भूत वा भविष्यत् काल वर्तमान हुए धातुसे स्यप् प्रत्यय होय दिप् आदिक परे संते । इन स्यप्सहित दिप् आदिक अठारह प्रत्ययोंकी संज्ञा लङ् है । उदाहरण-क्रियाकी असिद्धि प्राप्त होनेपर भूधातुसे दिप्प्रत्ययके आदिमें स्यप् करनेपर रूप हुआ भू-स्य-द् । फिर ' दियादावट्, सिसतासीस्यपामिट्, गुण', ओ अव्, किलास्व स ' इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ । अभविष्यत् । इसी प्रकार अन्य वचनोंमेंभी रूप सिद्ध करने चाहिये । यदि सुवृष्टि सुराज्य चाभविष्यत् तथा सुभिक्षमभविष्यत् । इसमें क्रियाकी असिद्धि पाई जाती है । जब अच्छी वर्षा और अच्छा राज्य होवेगा तब सुभिक्ष होवेगा । इस अर्थमें ही भविष्यत् कालमें क्रियाकी असिद्धि पाई जाती है । जब २ सुवृष्टि और सुराज्य होता हुआ तब २ सुभिक्ष होता हुआ । यहां भूतकालमें क्रियाकी असिद्धि पाई जाती है ॥

भूते सिः ॥ ४१ ॥ भूते, सिः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ धातोर्भूतमात्रे काले सि प्रत्ययो भवति दियादिषु परतः एषां संज्ञा लुङ् ॥

भाषा-सामान्य भूतकाल अर्थके विषें वर्तमान हुए धातुसे सिप्रत्यय होय दिप् आदिक परे हुए संते । इन सिसहित दिप् आदिक अठारह प्रत्ययोंकी संज्ञा लुङ् है । उदाहरण-सामान्य भूतकालके विषें वर्तमान हुए भूधातुसे दिप् प्रत्ययके आदिमें सिप्रत्यय करनेपर रूप हुआ भू-सि-द् । फिर ' दियादावट् ' इसकर रूप हुआ अभू-सि-द् । सिप्रत्ययमें इकार उच्चारणार्थ है फिर ॥

दादेः पे ॥ ४२ ॥ दादे, पे । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ पे परे अपिद्दाधास्थेणभूपिबतिभ्य परस्य सेर्लोप ॥

भाषा-परस्मैपदसंज्ञक प्रत्यय पर हुए संते अपित् दा, धा, स्था, इण्, भू पिबति इन धातुओंसे परे जो सिप्रत्यय तिसका लोप होय । भाव यह है कि जिसका पकार इत् नहीं होय ऐसे जो दाण् दो, डुदाञ्, धा, इण् भू और पा इन धातुओंमें सिका

[1] सिप्रत्ययसहित दिबादिप्रत्ययोंका भूतसामान्य अर्थ है और स्यप्प्रत्ययवयुक्त दिबादि प्रत्ययोंका भूतविशेष अनद्यतन अतीत अर्थ है ॥

लोप होय परस्मैपदसंज्ञक नव प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—अ-भू-स्-द् । इसमें भूधातुसे परे जो कि सि प्रत्यय है उसका लोप किया क्योंकि परस्मैपदसंज्ञक दिप् प्रत्यय परे विद्यमान है तव रूप हुआ अ-भू-द् फिर ॥

शाच्छासाघ्राधेटां वा ॥४३॥ शाच्छासाघ्राधेटां, वा । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥

भाषा—शो, छो, षो, घ्रा और धेट् इन धातुओंसे परे सिप्रत्ययका विकल्प करके लोप होय परस्मैपदसंज्ञक प्रत्यय पर हुए संते ॥

भुवः सिलोपे अयङ्लुकि गुणो न ॥ ४४ ॥ भुवः, सिलोपे, अयङ्लुकि, गुणः, न । पञ्चपदमिदं सूत्रम् ॥ अभूत् अभूताम् ॥

भाषा—भूधातुको सिलोप होनेपर गुण नहीं होय किन्तु भूधातुको सिलोप होनेपर यङ्लुक् प्रक्रियाके विषैं गुण होय । उदाहरण—अ-भू-द् । इसमें सिप्रत्ययका लोप करनेपर भूधातुको गुण नहीं हुआ तव 'वावसाने' इसकर रूप हुआ । अभूत्-अभू-द् इसी प्रकार द्विवचनमें रूप सिद्ध हुआ । अभूताम् । वहुवचनमें 'दादेः पे' इत्यादि-कर रूप हुआ अभू-अन् फिर ॥

भुवः सिलोपे स्वरे वुक् ॥ ४५ ॥ भुवः, सिलोपे, स्वरे, वुक् । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ अभूवन् । अभूः अभूतम् अभूत । अभूवम् अभूव अभूम ॥

भाषा—भूधातुको वुक्का आगम होय स्वर पर हुए संते सिप्रत्यका लोप होनेपर । उदाहरण—अ-भू अन् । इसमें भूधातुको वुक्का आगम किया क्योंकि सिप्रत्ययका लोप होनेपर स्वर अकार परे विद्यमान है तव रूप सिद्ध हुआ । अभूवन् । इसी प्रकार अन्य वचनोंमें रूप सिद्ध करने चाहिये ॥

माङि सिरेव ॥ ४६ ॥ माङि, सिः, एव । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥

स्मसहिते दिवादिर्वा ॥ ४७ ॥ स्मसहिते, दिवादिः, वा । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥

भाषा—माङ्शब्द प्रयुक्त हुए संते समस्त आख्यातोंके विषयमें सिप्रत्यय होय । भाव यह है कि जब कि क्रियाके साथ माङ्शब्द प्रयुक्त होवे तौ समस्त लकारोंके विषैं लुङ् लकारही होय और स्मयुक्त माङ् प्रयुक्त हुए संते समस्त आख्यातोंके विषयमें दिवादि प्रत्ययसमूह होय विकल्प करके अर्थात् एक जगह केवल दिवादि और एक जगह सिप्रत्ययसहित दिवादि प्रत्ययसमूह होय । भाव यह है कि

क्रियाके साथ मा स्म यह प्रयुक्त होवे तौ समस्त लकारोंके विषैं लङ् और लुङ् यह दोनों होय ॥

मेऽट् ॥३८॥ मे, अटः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ माङ्योगे अटो लोपः ॥ मा भवान् भूत् । मा स्म भूत् । मा स्म भवत् ॥

भाषा– माङ्शब्दका योग हुए संते अट्का लोप होय । उदाहरण–मा–अभूत् । इसमें माङ् अव्ययका योग है इस कारण अट्का लोप करनेसे रूप हुआ । मा भूत् । और मास्मका योग होनेपर रूप हुए । मास्म भूत् । मास्म भवत् ॥

भू प्राप्तावात्मने ॥ ४८ ॥ ॥ भू प्राप्तौ, आत्मने । त्रिपदमिद सूत्रम् ॥ भवते ॥

भाषा–भूधातु प्राप्तिअर्थके विषैं आत्मनेपदी होवे है । उदाहरण–भूधातुसे प्राप्तिअर्थमें वर्तमानकालके विषैं प्रथमपुरुषका प्रथम वचन ते करनेसे ' शप् कर्तरि, गुणः, ओ अव् ' इन सूत्रोंकर रूप सिद्ध हुआ । भवते । द्विवचनमें पूर्वविधि करनेसे प्रथम रूप स्थित हुआ भव–आते फिर ॥

आदाथ ई ॥ ४९ ॥ आदाथ, ई । द्विपदमिद सूत्रम् ॥ अतः परस्यात आथश्चात ईः भवति ॥ भवेते भवन्ते । भवसे भवेथे भवध्वे । भवे भवावहे भवामहे । भवेत भवेयातां भवेरन् । भवेथाः भवेयाथां भवेध्वम् । भवेय भवेवहि भवेमहि । भवताम् भवेताम् भवन्ताम् । भवस्व भवेथाम् भवध्वम् । भवै भवावहै भवामहै । अभवत अभवेतां अभवन्त । अभवथा अभवेथाम् अभवध्वम् । अभवे अभवावहि अभवामहि । बभूवे बभूवाते बभूविरे । बभूविषे बभूवाथे ॥

भाषा–अकारसे परे जो आत् और आथ इनके आकारको ईकार होय । भाव यह है कि अकारसे परे आते–आतां आथे आथां इनके आकारको ईकार होय । उदाहरण– भव–आते । इसमें अकारसे परे आते प्रत्ययके आकारको ईकार कर ' आद् ए ' सूत्रसे रूप सिद्ध किया । भवेते । बहुवचनमें अदे ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । भवन्ते । मध्यमपुरुषके एकवचनमें । भवसे । द्विवचनमें आदाथ ई ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । भवेथे । बहुवचनमें । भवध्वे । उत्तमपुरुषके एकवचनमें अदे ' इस सूत्रकर रूप हुआ । भवे । द्विवचनबहुवचनमें ' भ्योरा इसकर सिद्ध हुए । भवावहे, भवामहे । पूर्वसूत्रानुसार लिङ्के आत्मनेपदसे लेकर लिट्के आत्मनेपदके मध्यमपुरुषके द्विवचनपर्यन्त रूप सिद्ध कर लेने चाहिये । उनमें जहां जिन

सूत्रोंकी प्राप्ति होती हो तहांही वह सूत्र संबद्ध कर देने चाहिये । लिट्के आत्मनेपदमें मध्यमपुरुषके बहुवचनके विषैं 'द्विश्च, आम्भोर्णादो, ह्रस्वः, क्रादेर्णादेः, भुवो वुक्' इन सूत्रोंकर रूप किया बभूविध्वे। फिर ॥

नामिनो चतुर्णां धो ढः ॥ ५० ॥ नामिनः, चतुर्णाम्, धः, ढः। चतुष्पदमिदं सूत्रम् । नाम्यन्ताद्धातोः परस्य सीध्वंलुङ्लिटां धस्य ढः ॥

भाषा—नामिसंज्ञक स्वर है अन्तमे जिसके ऐसे धातुसे परे सी, ध्वं, लुङ् और लिट् इनके धकारको ढकार होय ॥

सेटो हलाद्वा ॥ ५१ ॥ से टः, हलात्, वा। त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥

बभूविढ्वे बभूविध्वे । बभूवे बभूविवहे बभूविमहे । भविषीष्ट भविषीयास्ताम् भविषीरन् । भविषीष्ठाः भविषीयास्थाम् भविषीढ्वम् भविषीध्वम् । भविषीय भविषीवहि भविषीमहि । भविता भवितारौ भवितारः । भवितासे भवितासाथे भविताध्वे । भविताहे भवितास्वहे भवितास्महे । भविष्यते भविष्येते भविष्यन्ते । भविष्यसे भविष्येथे भविष्यध्वे । भविष्ये भविष्यावहे भविष्यामहे । अभविष्यत अभविष्येताम् अभविष्यन्त । अभविष्यथाः अभविष्येथाम् अभविष्यध्वम् । अभविष्ये अभविष्यावहि अभविष्यामहि । अभविष्ट अभविषाताम् ॥

भाषा—इट्युक्त जो हल प्रत्याहार है उससे परे सी, ध्वं, लुङ्, लिट् इनके धकारको विकल्प करके ढकार होय। भाव यह है कि इट्युक्त जो हयवरल यह वर्ण हैं इनसे परे सी, ध्वं, लुङ्, लिट्के धकारको विकल्पकरके ढकार होय । उदाहरण—बभूविध्वे । इसमे इट्युक्त वसे परे लिट्का थकार ध्वे प्रत्ययमें, विद्यमान है इस कारण धकारके स्थानमें ढकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ। बभूविढ्वे । और जहां धकारको ढकार नहीं हुआ तहां यथावत् रूप रहा । बभूविध्वे । बभूविढ्वे-बभूविध्वे इत्यादिक ऊपर सिद्ध किये हुए रूप प्रयोगानुसार पूर्वसूत्रोंकरही साधने चाहिये यह रूप लिट्के मध्यमपुरुषके बहुवचनसे लेकर लुङ् लकारके प्रथमपुरुषके द्विवचनतक जानने। बहुवचनमें सिप्रत्यय करनेपर 'दिवादावट्, धातोः, सिसतासीस्यपामिट्, गुणः, ओ अव्, किलातषः सः' इन सूत्रोंकर रूप हुआ अभविष-अन्त फिर ॥

क्रियाके साथ मा स्म यह प्रयुक्त होवे तो समस्त लकारोंके विषैं लङ् और लुङ् यह दोनों होय ॥

मेऽट ॥३८॥ मे, अटे । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ माङ्योगे अटो लोप ॥ मा भवान् भूत् । मा स्म भूत् । मा स्म भवत् ॥

भाषा– माङ्शब्दका योग हुए संते अट्का लोप होय । उदाहरण–मा–अभूत् । इसमें माङ् अव्ययका योग है इस कारण अट्का लोप करनेसे रूप हुआ । मा भूत् । और मास्मका योग होनेपर रूप हुए । मास्म भूत् । मास्म भवत् ॥

भू प्राप्तावात्मन् ॥ ४८ ॥ ॥ भ्वादौ, आत्मन् । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ भवते ॥

भाषा–भूधातु प्राप्तिअर्थके विषैं आत्मनेपदी होवे है । उदाहरण–भूधातुसे प्राप्ति अर्थमें वर्त्तमानकालके विषैं प्रथमपुरुषका प्रथम वचन ते करनेसे ' अप् कर्त्तरि, गुणः, ओ अव् ' इन सूत्रोंकर रूप सिद्ध हुआ । भवते । द्विवचनमें पूर्वविधि करनेसे प्रथम रूप स्थित हुआ भव–आते फिर ॥

आदाय ई ॥ ४९ ॥ आदाय , ई । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ अत परस्यात आयश्चात ई भवति ॥ भवेते भवन्ते । भवसे भवेथे भवध्वे । भवे भवावहे भवामहे । भवेत भवेयाता भवेरन् । भवेथाः भवेयाथां भवेध्वम् । भवेय भवेवहि भवेमहि । भवताम् भवेताम् भवन्ताम् । भवस्व भवेयाम् भवध्वम् । भवै भवावहै भवामहै । अभवत अभवेतां अभवन्त । अभवथा अभवेयाम् अभवध्वम् । अभवे अभवावहि अभवामहि । बभूवे बभूवाते बभूविरे । बभूविषे बभूवाथे ॥

भाषा–अकारसे परे जो आत् और आय इनके आकारको इकार होय । भाव यह है कि अकारसे परे आते–आतां, आथे आथां इनके आकारको ईकार होय । उदाहरण– भव–आते । इसमें आकारसे परे आते प्रत्ययके आकारको ईकार कर ' अइ ए ' सूत्रसे रूप सिद्ध किया । भवेते । बहुवचनमें ' अदे इसकर रूप सिद्ध हुआ । भवन्ते । मध्यमपुरुषके एकवचनमें । भवसे । द्विवचनमें ' आदाय ई ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । भवेथे । बहुवचनमें । भवध्वे । उत्तमपुरुषके एकवचनमें अदे इस सूत्रकर रूप हुआ । भवे । द्विवचनबहुवचनमें म्वोरा इसकर सिद्ध हुए । भवावहे, भवामहे । पूर्वसूत्रानुसार लिङ्के आत्मनेपदसे लेकर लिट्के आत्मनेपदके मध्यमपुरुषके द्विवचनपर्यन्त रूप सिद्ध कर लेने चाहिये । उनमें जहां जिन

पदमिदं सूत्रम् ॥ पूर्वस्यादिर्हसः शिष्यते अन्ये हसो लुप्यन्ते ॥ चिचेत । चिचेतिथ ॥

भाषा—द्वित्वको प्राप्त हुए धातुको जो कि पूर्वरूप है उसका आदि हसही शेष रहै और हस लोपको प्राप्त हो जावे । उदाहरण—चित्—चित्—अ । इसमें पूर्वका आदि हस चकारही शेष रहा अन्य हस तकारका लोप हो गया तब रूप हुआ चि—चित्—अ । फिर 'उपधाया लघोः' इसकर गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । चिचेत । मध्यमपुरुषके प्रथम वचन थप्में इट्का आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । चिचेतिथ । द्विवचन बहुवचनमें क्रमसे सिद्ध हुए । चिचितथुः । चिचित । उत्तमभागके तीनों वचनोंमें । चिचेत चिचितिव चिचितिम । आशीर्लिङ्के प्रथमभागके एकवचनमें सिद्ध हुआ । चित्यात् । और लुट्के प्रथमवचनमें रूप सिद्ध हुआ । चेतित । और लृट्के प्रथमभागके एकवचनमें । चेतिष्यति । और लृङ्के प्रथमभागके एकवचनमें सिद्ध हुआ । अचेतिष्यत् । और लुङ्के प्रथमभागके प्रथमवचनमें चित्-स्-द् स्थित है 'सिसतासीस्यपामिद्, उपधाया लघोः, दिबादावट्' इनकर रूप हुआ अचेत्—इ—स्—द् फिर ॥

सेः ॥ ५६ ॥ सेः । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ सिशब्दात्परयोर्दिप्सिपोरीट् ॥

भाषा—विद्यमान हुए सिप्रत्ययोंसे परे दिप् प्रत्यय और सिप् प्रत्ययको ईट्का आगम होय । उदाहरण—अचेत्—इ—स्—द् । इसमें विद्यमान सिप्रत्ययसे दिप् प्रत्यय परे विद्यमान है इस कारण दिप्को ईट्का आगम करनेपर रूप हुआ अचेत्—इ—स्—ई—द् फिर ॥

इट ईटि ॥ ५७ ॥ इटः, ईटि । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ इटः परस्य सेर्लोपः ईटि परे ॥ अचेतीत् अचेतिष्टाम् ॥

भाषा—इट्से परे जो सिप्रत्यय तिसका लोप होय ईट् पर हुए संते । उदाहरण—अचेत्-इ-स्-ई-द् । इसमें इट्से परे सिप्रत्यय विद्यमान है इस कारण सिप्रत्ययका लोप किया क्योंकि पिछारी ईट् विद्यमान है, तब रूप हुआ अचेत्-इ-ई-द् । फिर 'सवर्णे दीर्घः सह, स्वरहीनं परेण संयोज्यम्, वावसाने' इनकर रूप सिद्ध हुआ । अचेतीत्—अचेतीद् । द्विवचनमें पूर्ववत् समस्त प्रक्रिया करनेपर 'किलात्षः सः, कृतस्य, ष्टुभिः ष्टुः' इनकर रूप सिद्ध हुआ । अचेतिष्टाम् । बहुवचनमें पूर्ववत् समस्त विधि करनेपर प्रथमरूप स्थित हुआ अचेत्-इ-स्-अन् फिर ॥

---

१ सिशब्दके कहनेसे यहां यह अभिप्राय है कि विद्यमान सिप्रत्ययसे दिप्सिप्को ईट्का आगम होय और जहां सिप्रत्ययका लोप हो गया हो तहां 'प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणं न याति' इसकर दिप्सिप्को ईट् न होय । जैसे—अदात् ॥

आतोऽन्तोऽदनतः ॥९२॥ आतः, अन्तः, अत्, अनतः । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ आतोऽन्तोऽत्स्यादकारादुत्तरस्य न ॥अमाविषत । अमाविषाथाम् ॥

भाषा—आत्मनेपदका जो कि अन्त है उसको अत् होय और अकारसे उत्तर आत्मनेपदके अन्तको अत् नहीं होय । भाव यह है कि आत्मनेपदके जो कि अन्ते, अन्ता अन्त प्रत्यय हैं तिनके स्थानमें क्रमसे अते, अताम्, अत यह आदेश होंय और अकारसे परे आत्मनेपदके यह प्रत्यय होंय तौ नहीं होंय । उदाहरण-ममविष-अन्त । इसमें आत्मनेपदके अन्तके स्थानमें अत आदेश करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अमाविषत । मध्यमपुरुषके एकवचन द्विवचनमें पूर्ववत् करनेसे रूप सिद्ध हुए । अमविष्ठा । अमवि-षाथाम् । बहुवचनमें पूर्ववत् सब कार्य करनेपर रूप हुआ अमाविषध्वं फिर ॥

ध्वे सेर्लोपः ॥९३॥ ध्वे, सेः, लोपः । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ अमाविढ्वम् । अमाविषि अमाविष्वहि अमाविष्महि ॥ चिती संज्ञाने ॥

भाषा—ध्वप्रत्यय पर हुए सते सिप्रत्ययका लोप होय । उदाहरण—अमविषध्वं । इससे ध्वप्रत्यय परे विद्यमान है इस कारण सिप्रत्ययका लोप करनेपर, 'सेटो इलाद्या' इस वतके रूप सिद्ध हुए । अमाविढ्—अमाविढ्वम् । उत्तमभागोंके तीनों वचनोंके विषें पूर्वके सर्व कार्य करनेपर रूप सिद्ध हुए । अमाविष अमाविष्वहि अमाविष्महि । चिती धातु भली प्रकार ज्ञानमें वर्ते है । चितीधातुमें ईकार उच्चारणार्थ है । चितीधातुसे तिप् प्रत्यय करनेपर 'अप् कर्तरि' इसकर रूप स्थित हुआ चित् अ-ति फिर ॥

उपधाया लघो ॥ ९४ ॥ उपधायाः, लघोः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ धातोरुपधाया लघोर्नामिनो गुणः ॥ चेतति । चेतेत् । चेततु । अचेतत् ॥

भाषा—धातुका उपधासंज्ञक जो लघु नामिस्वर तिसको गुण होय । उदाहरण—चित्-अ-ति । इसमें चित् धातुका उपधासंज्ञक लघुनामि इकार है उसको गुण करने पर रूप सिद्ध हुआ । चेतति । इसी प्रकार लट्लकारसे लेकर लङ्लकार पर्यन्त रूप सिद्ध करने योग्य हैं । लिट्लकारमें चित् धातुसे प्रथमपुरुषका प्रथम वचन करने पर रूप स्थित हुआ चित अ फिर 'द्विः' इसकर रूप हुआ चित्-चित्-अ फिर ॥

पूर्वस्य हलादि शेषः ॥ ९५ ॥ पूर्वस्य, हलादिः, शेषः । त्रि-

---

१ 'सिटेष' इति पुस्तके पाठः ।

पदमिदं सूत्रम् ॥ पूर्वस्यादिर्हसः शिष्यते अन्ये हसो लुप्यन्ते ॥ चिचेत । चिचेतिथ ॥

भाषा–द्वित्वको प्राप्त हुए धातुको जो कि पूर्वरूप है उसका आदि हसही शेष रहे और हस लोपको प्राप्त हो जावे । उदाहरण–चित्–चित्–अ । इसमें पूर्वका आदि हस चकारही शेष रहा अन्य हस तकारका लोप हो गया तब रूप हुआ चि–चित्–अ । फिर 'उपधाया लघोः' इसकर गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । चिचेत । मध्यमपुरुषके प्रथम वचन थप्में इट्का आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । चिचेतिथ । द्विवचन बहुवचनमें क्रमसे सिद्ध हुए । चिचितथुः । चिचित । उत्तमभागके तीनों वचनोंमें । चिचेत चिचितिव चिचितिम । आशीर्लिङ्के प्रथमभागके एकवचनमें सिद्ध हुआ । चित्यात् । और लुट्के प्रथमवचनमें रूप सिद्ध हुआ । चेतित । और लृट्के प्रथमभागके एकवचनमें । चेतिष्यति । और लृङ्के प्रथमभागके एकवचनमें सिद्ध हुआ । अचेतिष्यत् । और लुङ्के प्रथमभागके प्रथमवचनमें चित्-स्-द् स्थित है 'सिसतासीस्यपामिद्, उपधाया लघोः, दिबादावद्' इनकर रूप हुआ अचेत्–इ–स्–द् फिर ॥

सेः ॥ ५६ ॥ सेः । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ सिशब्दात्परयोर्दिप्सिपोरीट्[1] ॥

भाषा–विद्यमान हुए सिप्रत्ययोंसे परे दिप् प्रत्यय और सिप् प्रत्ययको ईट्का आगम होय । उदाहरण–अचेत्–इ–स्–द् । इसमे विद्यमान सिप्रत्ययसे दिप् प्रत्यय परे विद्यमान है इस कारण दिप्को ईट्का आगम करनेपर रूप हुआ अचेत्–इ–स्–ई–द् फिर ॥

इट ईटि ॥ ५७ ॥ इटः, ईटि । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ इटः परस्य सेर्लोपः ईटि परे ॥ अचेतीत् अचेतिष्टाम् ॥

भाषा–इट्से परे जो सिप्रत्यय तिसका लोप होय ईट् पर हुए संते । उदाहरण–अचेत्-इ-स्-ई-द् । इसमें इट्से परे सिप्रत्यय विद्यमान है इस कारण सिप्रत्ययका लोप किया क्योंकि पिछारी ईट् विद्यमान है,तब रूप हुआ अचेत्-इ-ई-द् । फिर 'सवर्णे दीर्घः सह, स्वरहीनं परेण संयोज्यम्, वावसाने' इनकर रूप सिद्ध हुआ । अचेतीत्–अचेतीद् । द्विवचनमें पूर्ववत् समस्त प्रक्रिया करनेपर 'क्लिातषः सः, कृतस्य, ष्टुभिः ष्टुः' इनकर रूप सिद्ध हुआ । अचेतिष्टाम् । बहुवचनमें पूर्ववत् समस्त विधि करनेपर प्रथमरूप स्थित हुआ अचेत्-इ-स्-अन् फिर ॥

---

१ सिशब्दके कहनेसे यहा यह अभिप्राय है कि विद्यमान सिप्रत्ययसे दिप्सिप्को ईट्का आगम होय और जहां सिप्रत्ययका लोप हो गया हो तहां 'प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणं न याति' इसकर दिप्सिप्को ईट् न होय । जैसे–अदात् ॥

स्याविद् ॥ ५८ ॥ स्योंविद् । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ सेरातो विदश्च परस्यान उस् भवति ॥ अचेतिषुः । अचेती अचेतिष्ट अचेतिष्ट । अचेतिष अचेतिष्व अचेतिष्म ॥ च्युतिर् आसेचने ॥ च्योतति । च्योतेत् । च्योततु च्योततात् । अच्योतत् । चुच्योत । च्युत्यात् । च्योतिता । च्योतिष्यति । अच्योतिष्यत् । अच्योतीत् ॥

भाषा—विद्यमान हुए सिप्रत्यय और आकारान्त धातु और विद्धातुसे परे अन् प्रत्ययके स्थानमें उस् होय । उदाहरण—अचेत् इ-स्-अन् । इसमें सिप्रत्ययसे परे अन् प्रत्यय विद्यमान है इस कारण अन्के स्थानमें उस करनेसे रूप हुआ अचेत्-इ-स्-उस । फिर 'किलात्प स कृतस्य, सोर्विसर्गः, स्वरहीनं परेण संयोज्यम्' इनकर रूप सिद्ध हुआ । अचेतिषुः । मध्यमभागके एकवचनमें सिसस्तासीस्यपामिट्, उपधाया लघोः, दिवादावट्, से इट इटि, सोर्विसर्ग इनकर सिद्ध हुआ । अचेती । द्विवचनबहुवचनमें । अचेतिष्टं, अचेतिष्ट । उत्तमभागके तीनों वचनोंमें सिद्ध हुए । अचेतिष अचेतिष्व अचेतिष्म । च्युतिर् धातु आसेचन अर्थमें वर्त्ते है । आसेचन नाम आर्द्रीकरण अर्थात् सब तरफसे गीले करनेका है । च्युतिर धातुकेभी रूप लुङ्पर्यन्त चित्धातुके सिद्ध करनेमें लगे हुए सूत्रोंकर सिद्ध करने चाहिये । लुङमें च्युत्-स द ऐसा रूप स्थित है 'दिवादावट् धातोः' इसकर रूप स्थित हुआ अच्युत्-स द फिर ॥

इरितो वा ॥ ५९ ॥ इरितः, वा । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ इरितो धातोर्वा अङ्प्रत्ययो भवति पे ॥ सेरपवादः । अच्युतत् अच्योतीत् ॥ श्च्युतिर् क्षरणे ॥ श्च्योतति । श्च्योतेत् । श्च्योततु श्च्योततात् । अश्च्योतत् ॥

भाषा—इर् है इत्संज्ञक जिसका ऐसे धातुसे विकल्पकरके अङ्प्रत्यय होय परस्मैपदसंज्ञक सूत्रभागवाले दिबादि पर हुए संते और सिप्रत्ययका अपवाद होय अर्थात् जहाँ सिप्रत्ययके होनेका स्थान है वहाँ अङ् होय और सिप्रत्यय नहीं होय । उदाहरण—सिप्रत्ययके स्थानमें अङ् करनेसे रूप हुआ अच्युत्-अ-त् । अदम् इत्यादि गुणादिके निषेधार्थ है । फिर स्वरहीनं परेण संयोज्यम्' इसकर रूप सिद्ध हुआ । अच्युतत् । द्विवचनबहुवचनमें । अच्युततां अच्युतन् । इसी प्रकार अन्य वचनोंमें जानने । और जहाँ अङ् नहीं हुआ वहाँ चित्धातुके समान सिद्ध हुआ । अच्योतीत् । इसी प्रकार अन्य वचनोंमें जानने । श्च्युतिर् धातु क्षरणअर्थमें वर्त्ते है । श्च्युतिर्धातुके रूपभी लुङ्से लेकर लुङ्पर्यन्त च्युतिर्धातुके समान जानने । लिट्के प्रथमवचनमें द्वित्व इसकर

प्रथम स्थित हुआ श्च्युत्-श्च्युत्-अ । फिर ' पूर्वस्य हसादिः शेषः ' इसकर पूर्वके इसोंमें केवल शकारही शेष रहता सो अगले सूत्रकर शकार शेष नहीं रहा किन्तु चकार शेष रहा ॥

नशसात्खपाः ॥ ६० ॥ नं, शसात्, खपाः । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ पूर्वशसात्पराः खपाः शिष्यन्ते न शसाः ॥ चुश्च्योत । श्च्युत्यात् । श्च्योतिता । श्च्योतिष्यति । अश्च्योतिष्यत् । अश्च्युतत् अश्च्योतीत् । यकाररहितोऽप्ययम् । श्चोतति । श्चोतेत् । श्चोततु श्चोततात् । अश्चोतत् । चुश्चोत । श्चुत्यात् । श्चोतिता । श्चोतिष्यति । अश्चोतिष्यत् । अश्चुतत् । अश्चोतीत् ॥ मन्थ विलोडने ॥ मन्थति । मन्थेत् । मन्थतु मन्थतात् । अमन्थत् । नो लोप इति नलोपे प्राप्ते ॥

भाषा--पूर्वशसप्रत्याहारसे परे जो खपप्रत्याहार होय तो खपप्रत्याहारही शेष रहे न कि शस् शेष रहे । उदाहरण—श्च्युत्-श्च्युत्-अ । इसमें पूर्व शसप्रत्याहारसम्बन्धी शकारसे परे खपप्रत्याहारसम्बधी चकार शेष रहा तब रूप हुआ चुश्च्युत्-अ । फिर ' उपधाया लघोः ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । चुश्च्योत । शेष रहे लकारोंमें च्युतिर् धातुके समान रूप सिद्ध कर लेने चाहिये । मंथधातु विलोवनेरूप अर्थमें वर्त्ते है । मंथधातुसे अप् प्रत्यय करनेपर लट्लकारसे लेकर लङ्लकारपर्यंत प्रथमपुरुषके प्रथम २ वचनोंमें रूप सिद्ध हुए । मथति । मंथेत् । मंथतु । अमंथत् । इसी प्रकार शेष वचनोंमें जानने। लिट्के प्रथमपुरुषके प्रथमवचनमे ' द्विश्च, पूर्वस्य हसादिः शेषः ' इनकर रूप सिद्ध हुआ। ममंथ । द्विवचनमें ममंथ-अतुस् ऐसा स्थित है । इसमें ' नो लोपः ' इस अगारी कहे हुए सूत्रकी प्राप्ति होवे है क्योंकि जो कि णादिप्रत्यय पित्संज्ञक नहीं है वह कित्-संज्ञक होता है परन्तु यहां अतुस् प्रत्ययकी कित्संज्ञा नहीं है ॥

ऋसंयोगाण्णादिरकित् ॥ ६० ❀ ॥ ऋसंयोगात्, णादिः, अकित् । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ ममन्थ ममन्थतुः ॥

भाषा—ऋकारान्त और संयोगसे परे णप् आदिक प्रत्यय कित्संज्ञक नहीं होव हैं । उदाहरण—ममंथ्-अतुस् । इसमें संयोगसंज्ञक नकार थकारसे परे अतुस् प्रत्यय विद्यमान है इस कारण अतुस्की कित्संज्ञा न होनेसे ' नो लोपः ' इसकर नकारका लोप नहीं हुआ तब रूप सिद्ध हुआ । ममंथतुः । इसी प्रकार शेषवचनोंमें रूप जानने आशीर्लिङ्के प्रथमपुरुषके प्रथमवचनमें मंथ-यात् ऐसा स्थित है ॥

नो लोपः ॥ ६१ ॥ नः, लोपः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ धातो-

स्याविद ॥ ५८ ॥ स्योविद । एकपदमिद सूत्रम् ॥ सेरातो विदश्च परस्यान उस् भवति ॥ अचेतिषु । अचेती अचेविष्ट अचेतिष्ट । अचेतिष अचेतिष्व अचेतिष्म ॥ च्युतिर् आसेचने ॥ च्योतति । च्योतेत् । च्योततु च्योततात् । अच्योतत् । चुच्योत । च्युत्यात् । च्योतिता । च्योतिष्यति । अच्योतिष्यत । अच्योतीत् ॥

भाषा—विद्यमान हुए सिप्रत्यय और आकारान्त धातु और विद्धातुसे परे अन्-प्रत्ययके स्थानमें उस् होय । उदाहरण—अचेत्-इ-स्-अन् । इसमें सिप्रत्ययसे परे अन् प्रत्यय विद्यमान है इस कारण अन्के स्थानमें उस् करनेसे रूप हुआ अचेत्-इ-स्-उस् । फिर ' किल्लात्य' स' षृत्वस्य, सोर्विसर्गः स्वरहीनं परेण संयोज्यम् ' इनकर रूप सिद्ध हुआ । अचेतिषु । मध्यमभागके एकवचनमें सिसवासीस्यपामिद्, उपधाया लघो', द्विवादावद् से' इट ईटि, सोर्विसग' इनकर सिद्ध हुआ । अचेती । द्विवचनबहुवचनमें । अचेतिष्टं, अचेतिष्ट । उत्तमभागके तीनों वचनोंमें सिद्ध हुए । अचेतिष अचेतिष्व अचेतिष्म । च्युतिर् धातु आसेचन अर्थमें वर्त्ते है । आसेचन नाम आर्द्रीकरण अर्थात् सब तरफसे गीले करनेका है । च्युतिर धातुकेभी रूप लुङ्पर्यन्त चित्धातुके सिद्ध करनेमें कहे हुए सूत्रोंकर सिद्ध करने चाहिये । लुङमें च्युत्-स् द् ऐसा रूप स्थित है दिवादावद् धातो' ' इसकर रूप स्थित हुआ अच्युत्-स्-द् फिर ॥

इरितो वा ॥ ५९ ॥ इरित , वा । द्विपदमिद सूत्रम् ॥ इरितो धातोर्वा अङ्प्रत्ययो भवति पे ॥ सेरपवाद । अच्युतत् अच्योतीत् ॥ श्च्युतिर् क्षरणे ॥ श्च्योतति । श्च्योतेत् । श्च्योततु श्च्योततात् । अश्च्योतत् ॥

भाषा—इर है इत्संज्ञक जिसका ऐसे धातुसे विकल्पकरके अङ्प्रत्यय होय परस्मैपदसंज्ञक भूतमात्रवाले दिवादि पर हुए सते और सिप्रत्ययका अपवाद होय अर्थात् जहां सिप्रत्ययके होनेका स्थान है तहां अङ् होय और सिप्रत्यय नहीं होय । उदाहरण—सिप्रत्ययके स्थानमें अङ् करनेसे रूप हुआ अच्युत्-अ-द् । ङकारमें ङकार गुणवृद्धिके निषेधार्थ है । फिर ' स्वरहीनं परेण संयोज्यम् ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । अच्युतत् । द्विवचनबहुवचनमें । अच्युततां अच्युतन् । इसी प्रकार अन्य वचनोंमें जानना । और जहां अङ् नहीं हुआ तहां चित्धातुके समान सिद्ध हुआ । अच्योतीत् । इसी प्रकार अन्य वचनोंमें जानने । श्च्युतिर् धातु क्षरणअर्थमें वर्त्ते है । श्च्युतिर्धातुके रूपभी लट्से लेकर लङ्पर्यन्त च्युतिर्धातुके समान जानने । लिट्के प्रथमवचनमें द्वित्व इसकर

शीर्लिङ्में प्रथमपुरुषके प्रथमवचनमें कुंथ्-यात् ऐसा स्थित है इसमें ' नो लोपः ' इसकर नकारका लोप होना चाहिये था सो अगले सूत्रकर नहीं हुआ ॥

इदितो नलोपो न ॥ ६४ ॥ इदितः नलोपः, न । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ कुन्थ्यात् । कुन्थिष्यति । अकुन्थिष्यत् । अकुन्थीत् ॥ चुबि वक्त्रसंयोगे ॥ चुम्बति ॥ षिधू गत्याम् ॥

भाषा–इकार है इत् जिसका ऐसे धातुके नकारका लोप नहीं होय । भाव यह है कि ' इदितो नुम् ' इसकरके जो कि नुम्का आगम हुआ उसका लोप ' नलोपः ' इस सूत्रकर नहीं होय । उदाहरण–कुंथ्-यात् । इसमें ' इदितो नुम् ' इसकर नुम्का आगम किया था इस कारण ' नो लोपः ' इसकर नुम्का लोप नहीं हुआ तब रूप सिद्ध हुआ । कुंथ्यात् । शेष लकारोंमें मंथकी समान रूप सिद्ध करने चाहिये । इसी प्रकार पाथि, लुथि, मथि इन धातुओंके रूप जानने । चुवि धातु चूंवनेरूप अर्थमें वर्त्ते है । ' इदितो नुम् ' इसकर नुम्का आगम करनेपर समस्त लकारोंमे कुंथधातुके समान रूप सिद्ध करने चाहिये । षिध् धातु गति नाम ज्ञान और गमन और प्राप्ति इन तीनों अर्थोंके विषें वर्त्ते है ॥

आदेः ष्णः स्नः ॥ ६५ ॥ आदेः, ष्णः, स्नः । त्रिपदमिदं सूत्रम् धात्वाद्योः षकारणकारयोः सकारनकारौ भवतः ॥ सेधति । सेधेत् । सेधतु सेधताद्वा । असेधत् । सिषेध । सिध्यात् । सेधिता । सेधिष्यति । असेधिष्यत् । असेधीत् ॥

भाषा–धातुके आदिके जो षकार और णकार तिन दोनोंको सकार और नकार होय । उदाहरण–षिध्धातुके आदिमें षकार है इस कारण षकारके स्थानमे सकार किया तब रूप हुआ सिध् फिर ' अप् कर्तरि, उपधाया लघोः ' इत्यादि सूत्रोंकर लट्लकारसे लेकर लुङ्लकारपर्यंत प्रथमपुरुषके प्रथम २ वचनोंमें रूप सिद्ध हुए । सेधाति । सेधेत् । इत्यादिक ॥

प्रादेश्च तथा तौ सुनमाम् ॥ ६६ ॥ प्रादेः, च, तथा, तौ, सुनमाम् । पंचपदमिदं सूत्रम् ॥ प्रादेः परेषां स्वादीनां नमादीनां च

---

१ षोपदेश धातुआंको कहते हैं । सेक्सृप्लसृस्तृञ्स्मृजस्तृस्त्यान्ये दत्याजतसादयः । एकाचः षोपदेशाः ष्वष्कष्विद्ष्वद्ष्वञ्ष्वप्ष्मिङ्. सह ॥ अर्थ–सेकृ, सृप्लृ, सृ, स्तृञ्, सृज्, स्तृञ्, और स्त्यै धातु इनसे अन्य ऐसे जो दन्त्यान्त अजन्त सादिक एकस्वर धातु है वह धातु ष्वष्क, ञिष्विदा, ष्वद, ष्वज, ञिष्वप्, ष्मिङ् धातु इनसहित षोपदेश हैं । अब णोपदेश धातुओंको कहते है । नर्दनाटिनाधनाधनंदनक्कनॄनृतः । अर्थ– नर्द, नाटि, नाथृ, नाधृ, टुनादि, नक्क, नॄ धातु और नृती धातु इन आठोंसे जो भिन्न धातु है वह णोपदेश है । कोई आचार्य नाधृ, टुनादि और नॄ धातुकोभी णोपदेश कहते हैं ॥

इदान्तस्योपधाभूतस्य नकारस्य लोप किति परे ॥ पूजार्थाञ्चतेर्न निरुपपदात् कुञ्चे किपि न । मथ्यात् । मन्थिता । मन्थिष्यति । अमन्थिष्यत् । अमन्थीत् ॥ कुथि पुथि लुथि मथि हिंसासंक्लेशनयो ॥

भाषा–इस् है अन्तमें जिसके ऐसे धातुके उपधारूप नकारका लोप होय कित्संज्ञक प्रत्यय पर हुए सते और पूजाअर्थवाले अञ्चधातुके नकारका लोप नहीं होय और निर् उपसर्ग है उपपद जिसके ऐसे कुञ्चधातुके नकारका लोप नहीं होय किप् प्रत्ययके विषें । उदाहरण–मंथ्-यात् । इसमें थकारान्त मथधातुका उपधारूप नकारका लोप किया क्योंकि कित्संज्ञक यात्प्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । मथ्यात् । लुट्के प्रथमपुरुषके प्रथमवचनमें इट् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । मथिता । लृट् लृङ् लुङ्के प्रथमपुरुषके प्रथमवचनमें पूर्ववत् सिद्ध हुए क्रमसे मंथिष्यति । अमंथिष्यत् । अमथीत् । इसी प्रकार शेषवचनोंमें सिद्ध करने चाहिये । कुथि पुथि, लुथि, मथि यह चारों धातु हिंसा और भली प्रकार क्लेश करनेरूप अर्थमें वर्त्ते हैं । कुथधातुसे 'अप् कर्त्तरि ' सूत्रकर अप्प्रत्यय करनेपर हुआ कुथ्-अ ति फिर ॥

इदितो नुम् ॥ ६२ ॥ इदितें', नुंमं । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ इदितो धातोर्नुम् ॥ कुन्थति । कुन्थेत् । कुन्थतु कुन्थतात्द्वा । अकुन्थत् ॥

भाषा–इकार है इत्संज्ञक जिसका ऐसे धातुको नुमका आगम होय । उदाहरण–कुथ्-अ-ति । इसमें इकार इत्वाले कुथ्धातुको नुमका आगम किया सो नुमका आगम 'मिदन्त्यात्स्वरात्परो वक्तव्य' ' इसकर मकार उत्तरवर्ती उकारसे परे हुआ तब रूप हुआ कुनुथ्-अ-ति फिर ' नश्चापदान्ते झलि, स्वरहीनं परेण संयोज्यम् ' इनकर सिद्ध हुआ । कुंथति । इसी प्रकार लङ्पर्यंत रूप सिद्ध करने चाहिये । लिट्के प्रथमपुरुषके प्रथमवचनमें द्विश्च पूर्वस्य हलादि शेष ' इनकर रूप स्थित हुआ कुकुंथ्-अ फिर ॥

कुहोश्चु ॥ ६३ ॥ कुंहो , श्चुं । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ पूर्वस्य कवर्गहकारयोश्चत्वं भवति हस्य वर्गचतुर्थ ॥ चुकुन्थ चुकुन्थतु चुकुन्थु । चुकुन्थिथ ॥

भाषा–द्वित्वको प्राप्त हुए धातुके पूर्वरूपके कवर्ग और हकारको चवर्ग होय हकारको वर्गका चतुर्थ अक्षर होय। अर्थात् हकारको झकार होय । उदाहरण–कुकुंथ् अ । इसमें पूर्वके ककारको चकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । चुकुंथ । द्विवचनमें चुकुंथतु । बहुवचनमें । चुकुंथु । इसी प्रकार शेष वचनोंमें जानने । आ'

शीर्लिङ्में प्रथमपुरुषके प्रथमवचनमें कुंथ्-यात् ऐसा स्थित है इसमें 'नो लोपः' इसकर नकारका लोप होना चाहिये था सो अगले सूत्रकर नहीं हुआ ॥

इदितो नलोपो न ॥ ६४ ॥ इदितः नलोपः, न । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ कुन्थ्यात् । कुन्थिष्यति । अकुन्थिष्यत् । अकुन्थीत् ॥ चुबि वक्त्रसंयोगे ॥ चुम्बति ॥ षिध् गत्याम् ॥

भाषा—इकार है इत् जिसका ऐसे धातुके नकारका लोप नहीं होय । भाव यह है कि 'इदितो नुम्' इसकरके जो कि नुम्का आगम हुआ उसका लोप 'नलोपः' इस सूत्रकर नहीं होय । उदाहरण—कुंथ्-यात् । इसमें 'इदितो नुम्' इसकर नुम्का आगम किया था इस कारण 'नो लोपः' इसकर नुम्का लोप नहीं हुआ तब रूप सिद्ध हुआ । कुंथ्यात् । शेष लकारोंमें मंथकी समान रूप सिद्ध करने चाहिये । इसी प्रकार पथि, लुथि, मथि इन धातुओंके रूप जानने । चुबि धातु चूंबनेरूप अर्थमे वर्त्ते है । 'इदितो नुम्' इसकर नुम्का आगम करनेपर समस्त लकारोमे कुंथधातुके समान रूप सिद्ध करने चाहिये । षिध् धातु गति नाम ज्ञान और गमन और प्राप्ति इन तीनों अर्थोंके विषैं वर्त्ते है ॥

[1]**आदेः ष्णः स्नः ॥ ६५ ॥** आदेः, ष्णः, स्नः । त्रिपदमिदं सूत्रम् धात्वाद्योः षकारणकारयोः सकारनकारौ भवतः ॥ सेधति । सेधेत् । सेधतु सेधताद्वा । असेधत् । सिषेध । सिध्यात् । सेधिता । सेधिष्यति । असेधिष्यत् । असेधीत् ॥

भाषा—धातुके आदिके जो षकार और णकार तिन दोनोंको सकार और नकार होय । उदाहरण—षिध्धातुके आदिमें षकार है इस कारण षकारके स्थानमें सकार किया तब रूप हुआ सिध् फिर 'अप् कर्तरि, उपधाया लघोः' इत्यादि सूत्रोकर लट्लकारसे लेकर लुङ्लकारपर्यंत प्रथमपुरुषके प्रथम २ वचनोंमे रूप सिद्ध हुए । सेधति । सेधेत् । इत्यादिक ॥

प्रादेश्च तथा तौ सुनमाम् ॥ ६६ ॥ प्रादेः, च, तथा, तौ, सुनमाम् । पंचपदमिदं सूत्रम् ॥ प्रादेः परेषां स्वादीनां नमादीनां च

---

१ षोपदेश धातुओंको कहते हैं । सेक्सृप्सृस्तृस्सृज्स्तृस्त्यान्ये दन्त्याजतसादयः । एकाचः षोपदेशाः ष्वष्क्ष्विद्ष्वद्ष्वञ्ष्वप्ष्मिङैः सह ॥ अर्थ—सेकृ, सृप्, सृ, स्तृञ्, सृज्, स्तृ, और स्त्यै धातु इनसे अन्य ऐसे जो दन्त्यान्त अजन्त सादिक एकस्वर धातु है वह धातु ष्वष्क, ञिष्विदा, ष्वद, ष्वज, ञिष्वप, ष्मिङ् धातु इनसहित षोपदेश हैं । अब णोपदेश धातुओंको कहते है । नर्दनाटिनाधनाधनंदनक्कनृनृतः । अर्थ— नर्द, नाटि, नाथृ, नाधृ, टुनादि, नक्क, नृ धातु और नृती धातु इन आठोंसे जो भिन्न धातु है वह णोपदेश है । कोई आचार्य नाधृ, टुनादि और नृ धातुकोभी णोपदेश कहते हैं ॥

धातूनां सकारनकारयो षकारणकारौ भवतः षत्वणत्वनिमित्ते सति ॥ निषेधति ॥

भाषा—मादिकसे परे जो सु आदिक धातु और नम् आदिक धातु तिनके सकार और नकारको षकार और णकार होय षकार होनेका निमित्त कवर्ग और इण प्रत्याहार हुए संते और णकार होनेका निमित्त षकार और ऋवर्ण और रकार हुए संते । भाव यह है कि उपसर्गस्थ कवर्ग इण्प्रत्याहारसे परे सुनोति आदिक धातुओंके सकारको षकार होय और उपसर्गस्थ षकार और रकार और ऋवर्णसे परे नमति आदिक धातुओंके नकारको णकार होय । उदाहरण—सेधति । इसमें निउपसर्ग पूर्व युक्त करनेसे रूप हुआ । निसेधति । इसमें उपसर्गस्थ इकारसे परे सेधति धातुका सकार विद्यमान है इस कारण सकारके स्थानमें षकारका आदेश किया तब रूप सिद्ध हुआ । निषेधति ॥

सेधतेर्गतौ न ष ॥ ६७ ॥ सेधं ते, गतौ, न ष । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ गङ्गां विसेधति ॥

भाषा—गतिअर्थमें सेधतिधातुके सकारको उपसर्गस्थ कवर्ग इण्प्रत्याहारसे परे षकार नहीं होय । उदाहरण—गङ्गां विसेधति । इसमें गतिअर्थवाला सेधति धातु है इस कारण उपसर्गस्थ इकारसे परे सेधतिधातुके सकारको षकार नहीं हुआ ॥

अड्द्वित्वव्यवधानेऽपि ष ॥६८॥ अड्द्वित्वव्यवधाने, अपि, षं । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ न्यषेधत् । निषिषेध ॥ षिधु शास्त्रे माङ्गल्ये च ॥

भाषा—अट् और द्वित्वका अन्तर हुए संतेभी उपसर्गस्थ निमित्त कवर्ग इण्प्रत्याहारसे परे सुनोति आदिक धातुओंके सकारको षकार होय । भाव यह है कि यदि धातु और उपसर्गस्थ निमित्तक वर्ग इण्प्रत्याहारके बीचमें अट् अथवा धातुका द्वित्व स्थित होते तोभी सुनोति आदिक धातुओंके सकारको षकार होय । उदाहरण—नि असेधत् । इसमें निउपसर्गस्थ इकार और सेधतिधातुके मध्यमें अट् है इस कारण सकारके स्थानमें षकार करनेपर ' इयं स्वरे ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । न्यषेधत और निसिसेध इसमें उपसर्गस्थ इकार और सेधतिधातुके मध्यमें द्वित्व वचन सि विद्यमान है इस कारण पिछले सकारको तो ' अड्द्वित्वव्यवधानेऽपि ष ' इसकर षकार किया और पहिले सकारको ' मादेश तथा सौ सुनमाम् ' इसकर

१ पद, सुप्, स्तुभ्, पो, पु, छा, व्यन्त सेनाशब्द, पंथ, पंज, पिव, अति और मति पूर्व हैं जिसके ऐसा परन, पद प्रत्यय नहीं है अन्तमें जिसके ऐसा धिन् अपपूर्व ष्टंभ धातु, वि और अप उपसर्ग है पूर्व जिसके ऐसा मोजनार्थ स्तन धातु परि और नि और वि उपसर्ग हैं पूर्व जिसके ऐसा सेवनार्थ षेवृधातु, सुट् प्रत्यय और अट्व्यवधान सिवु धातु, अड्व्यवधान षह धातु यह स्वादिक हैं ॥

षकार किया तब रूप सिद्ध हुआ । निषिषेध । षिधू धातु शास्त्र अर्थात् शासन नाम शिक्षा करनेमें और मंगलरूप क्रियामें वर्त्ते है । षिधू धातुके रूप लट्लकारसे लेकर लिट्के प्रथमपुरुषके वहुवचनपर्यन्त षिध्के समान जानने । मध्यमके प्रथमवचनमें ' द्विश्च, पूर्वस्य हसादिः शेषः, उपधाया लघोः, क्लितषः सः ' इत्यादि सूत्रोंकर प्रथम स्थित हुआ सिषेध्-थप् ॥

ऊदितो वा ॥ ६९ ॥ ऊदितः, वा । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ ऊदितो धातोः परस्य वसादेरनपीड्वा ॥

भाषा–ऊकार है इत् जिसका ऐसे धातुसे परे वस प्रत्याहार आदिवाले प्रत्ययको इट्का आगम होय विकल्पकरके । जहां अप्प्रत्यय होनेका विषय नहीं है तहां अर्थात् अप्विषयिक चार लट् आदिक लकारवर्जित अन्य लकारोंके विषैं । भाव यह है कि ऊकार इत्वाले धातुसे परे लिट्, लिङ्, लुट्, लट्. लङ्, लुङ् इन छः लकारोंके वसादि प्रत्ययोंको विकल्पकरके इट्का आगम होय ॥

स्वरतिसूतिसूयतिधूञ्रधनशतृपदृपद्रुहमुहस्नुहस्निहां च ॥७०॥ स्वरति–स्निहाम्, चं । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ स्वरतिसूतिसूयतिधूञां क्विद्वसादेर्णादेर्नित्यमिट् स्यात् ॥ सेधति । सेधेत् । सेधतु सेधताद्वा । असेधत् । सिषेध सिषेधिथ ॥

भाषा–स्वरति, सूति, सूयति, धूञ्, रध, नश, तृप्, दृप्, द्रुह, मुह, स्नुह और स्निह इन धातुओंसे परेभी वसप्रत्याहार आदिवाले लिट् आदिक छः लकारोके प्रत्ययोंको विकल्पकरके इट्का आगम होय और स्वरति, सूति, सूयति, धूञ् इन धातुओसे परे कित्सं-ज्ञक वसप्रत्याहार आदिवाले णप् आदिक प्रत्ययोंको नित्यही इट्का आगम होय । उदाहरण–सिषेध्-थ । इसमें जहां इट्का आगम हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । सिषे-धिथ । और इट्का आगम नहीं हुआ तहां ॥

तथोर्धः ॥ ७१ ॥ तथोः, धः द्विपदमिदं सूत्रम् । झभान्ता-द्धातोस्तकारथकारयोर्धकारो भवति दधातेर्न ॥ झभे जबाः । सि-षेद्ध । सेधिता सेद्धा । सेधिष्यति सेत्स्यति । असेधिष्यत् असे-त्स्यत् । असेधीत् ॥

भाषा–झभ प्रत्याहार है अन्तमें जिसके ऐसे धातुसे परे तकार और थकार दोनोंको धकार होय और दधाति धातुसे परे तकार थकारको धकार नहीं होय । उदाहरण–सिषेध्-थ । इसमें झभ प्रत्याहारसंवन्धी धकारान्त षिध्धातुसे परे वसप्रत्याहारसंवन्धी

धातूनां सकारनकारयोः षकारणकारौ भवतः षत्वणत्वनिमित्ते सति ॥ निषेधति ॥

भाषा—आदिकसे परे जो सु आदिक धातु और नम् आदिक धातु जिनके सकार और नकारको षकार और णकार होय षकार होनेका निमित्त कवर्ग और इण् प्रत्याहार हुए सते और णकार होनेका निमित्त षकार और ऋवर्ण और रकार हुए सते । भाव यह है कि उपसर्गस्थ कवर्ग इणप्रत्याहारसे परे सुनोति आदिक धातुओंके सकारको षकार होय और उपसर्गस्थ षकार और रकार और ऋवर्णसे परे नमति आदिक धातुओंके नकारको णकार होय । उदाहरण–सेधति । इसमें निउपसर्ग पूर्व युक्त करनेसे रूप हुआ । निषेधति । इसमें उपसर्गस्थ इकारसे परे सेधति धातुका सकार विद्यमान है इस कारण सकारके स्थानमें षकारका आदेश किया तब रूप सिद्ध हुआ । निषेधति ॥

सेधतेर्गतौ न षः ॥ ६७ ॥ सेधेः, गतौ, न, षः । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ गङ्गां विसेधति ॥

भाषा—गतिअर्थमें सेधतिधातुके सकारको उपसर्गस्थ कवर्ग इणप्रत्याहारसे परे षकार नहीं होय । उदाहरण–गङ्गा विसेधति । इसमें गतिअर्थवाला सेधति धातु है इस कारण उपसर्गस्थ इकारसे परे सेधतिधातुके सकारको षकार नहीं हुआ ॥

अड्द्वित्वव्यवधानेऽपि षः ॥ ६८ ॥ अड्द्वित्वव्यवधाने, अपि, षः । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ न्यषेधत् । निषिषेध ॥ षिधू शास्त्रे माङ्गल्ये च ॥

भाषा—अट् और द्वित्वका अन्तर हुए संतेभी उपसर्गस्थ निमित्त कवर्ण इणप्रत्याहारसे परे सुनोति आदिक धातुओंके सकारको षकार होय । भाव यह है कि यदि धातु और उपसर्गस्थ निमित्तक वर्ग इणप्रत्याहारके बीचमें अट् अथवा धातुका द्वित्व स्थित होवे तोभी सुनोति आदिक धातुओंके सकारको षकार होय । उदाहरण–नि-असेधत् । इसमें निउपसर्गस्थ इकार और सेधतिधातुके मध्यमें अट् है इस कारण सकारके स्थानमें षकार करनेपर इण् स्वरे इसकर रूप सिद्ध हुआ । न्यषेधत और निसिसेध इसमें उपसर्गस्थ इकार और सेधतिधातुके मध्यमें द्वित्व वचन सि विद्यमान है इस कारण पिछले सकारको तो 'अड्द्वित्वव्यवधानेऽपि षः' इसकर षकार किया और पहिले सकारको 'मात्रेऽस तथा ती पुनमासु' इसकर

[1] षह, स्तुह, स्तुभ्, षो, षु, षा, न्यम्त सेनाशब्द, षंभ, स्तंभ, षिध, आति और मति पूर्व है जिसके ऐसा षञ्ज, यङ् प्रत्यय नहीं है अन्तमें जिसके ऐसा षिधु, अवपूर्व ष्टम धातु, वि और अव उपसर्ग है पूर्व जिसके ऐसा भोजनार्थ स्वन धातु, परि और नि और वि उपसर्ग हैं पूर्व जिसके ऐसा सेवनार्थ षेव धातु, सुट् प्रत्यय और अट्सहित षिधु धातु, अट्सहित षह धातु यह स्तादिक है ॥

धकार किया तव रूप सिद्ध हुआ । निषिषेध । षिधू धातु शास्त्र अर्थात् शासन नाम शिक्षा करनेमें और मंगलरूप क्रियामें वर्त्ते है । षिधू धातुके रूप लट्लकारसे लेकर लिट्के प्रथमपुरुषके वहुवचनपर्यन्त षिध्के समान जानने । मध्यमके प्रथमवचनमें " द्विश्च, पूर्वस्य हसादिः शेषः, उपाधाया लघोः, क्लिातपः सः " इत्यादि सूत्रोंकर प्रथम स्थित हुआ सिषेध्-थप् ॥

ऊदितो वा ॥ ६९ ॥ ऊदितः, वा । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ ऊदितो धातोः परस्य वसादेरनपीड्वा ॥

भाषा–ऊकार है इत् जिसका ऐसे धातुसे परे वस प्रत्याहार आदिवाले प्रत्ययको इट्का आगम होय विकलपकरके । जहां अप्प्रत्यय होनेका विषय नहीं है तहां अर्थात् अप्विषयिक चार लट् आदिक लकारवर्जित अन्य लकारोंके विषैं । भाव यह है कि ऊकार इत्वाले धातुसे परे लिट्, लिङ्, लुट्, लृट्, लृङ्, लुङ् इन छः लकारोंके वसादि प्रत्ययोंको विकलपकरके इट्का आगम होय ॥

स्वरतिसूतिसूयतिधूञ्रधनशतृपदृपद्रुहमुहस्नुहस्निहां च ॥७०॥ स्वरति–स्निहाम्, च । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ स्वरतिसूतिसूयतिधूञ्ञां किद्वसादेर्णादेर्नित्यमिट् स्यात् ॥ सेधति । सेधेत् । सेधतु सेधताद्वा । असेधत् । सिषेध सिषेधिथ ॥

भाषा–स्वरति, सूति, सूयति, धूञ्, रध, नश, तृप्, दृप्, द्रुह, मुह, स्नुह और स्निह इन धातुओंसे परेभी वसप्रत्याहार आदिवाले लिट् आदिक छः लकारोंके प्रत्ययोंको विकलपकरके इट्का आगम होय और स्वरति, सूति, सूयति, धूञ् इन धातुओंसे परे कित्संज्ञक वसप्रत्याहार आदिवाले णप् आदिक प्रत्ययोंको नित्यही इट्का आगम होय । उदाहरण–सिषेध्-थ । इसमें जहां इट्का आगम हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । सिषेधिथ । और इट्का आगम नहीं हुआ तहां ॥

तथोर्धः ॥ ७१ ॥ तथोः, धः द्विपदमिदं सूत्रम् । झभान्ताद्धातोस्तकारथकारयोर्धकारो भवति दधातेर्न ॥ झभे जबाः । सिषेद्ध । सेधिता सेद्धा । सेधिष्यति सेत्स्यति । असेधिष्यत् असेत्स्यत् । असेधीत् ॥

भाषा–झभ प्रत्याहार है अन्तमें जिसके ऐसे धातुसे परे तकार और थकार दोनोंको धकार होय और दधाति धातुसे परे तकार थकारको धकार नहीं होय । उदाहरण–सिषेध्-थ । इसमें झभ प्रत्याहारसंवन्धी धकारान्त षिध्धातुसे परे वसप्रत्याहारसंवन्धी

यकार यप्रत्ययका विद्यमान है इस कारण यकारके स्थानमे षकार करनेसे ' झषे जबा' ' इसकर सिद्ध हुआ । सिषेद्ध । इसी प्रकार अन्य वचनोंमें जानने । आशीर्लिङ्में सिद्ध हुआ । सिध्यात् । लुट्में जेहां इट्का आगम हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । सेधिता । और जहां इट्का आगम नहीं हुआ तहां ' तथोर्धः, झषे जबा ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । सेद्धा । लृट्में इट्के विषे । सेधिष्यति । और अनिट्में ' खसे चपा झसानाम् इत्यादिकर सिद्ध हुआ । सेत्स्यति । इसी प्रकार लृङ्में इट्के विषे । असेधिष्यत् । और अनिट्में । असेत्स्यत् । और लुङ्में इट्के विषे ' दिबादावद् सिसताशीस्यपामिट्, सेः, इट इटि इत्यादि सूत्रोंकर सिद्ध हुआ । असेधीत् । और अनिट्पक्षमें सिध्-स्-त् ऐसा स्थित है । ' दिबादावद्, से ' इनकर स्थित हुआ असिध्-स्-ई द् फिर ॥

अनिटो नामिवत ॥ ७२ ॥ अनिट, नामिवत । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ अनिटो नामिवतश्च धातोर्वृद्धिः स्यात्से परे सौ ॥ असैत्सीत् ॥

भाषा—जिस धातुसे परे इट् नहीं होय ऐसे धातुका उपाधारूप जो नामिसंज्ञक स्वर तिसको वृद्धि होय परस्मैपदमें सिप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—असिध्-स-ई-द् । इसमें नहीं है इट् परे जिससे ऐसे सिधधातुके उपधारूप इकारको ' आरै औ वृद्धिः ' इसकर ऐकार किया क्योंकि परस्मैपदसम्बन्धी सिप्रत्यय परे विद्यमान है तब ' खसे चपा झसानाम् ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । असैत्सीत् । द्विवचनमें ' अनिटो नामिवत ' इसकर वृद्धि करनेपर रूप हुआ असैध्-स् तां फिर ॥

झसात् ॥ ७३ ॥ झसात् । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ झसादुत्तरस्य सेर्लोपो झसे ॥ असैद्धां असैत्सु । असैत्स असैत्सम ॥ खद स्थैर्ये हिंसायां च ॥ खदति । खदतु खदताद् । अखदत् ॥

भाषा—झसप्रत्याहारसे परे जो सिप्रत्यय तिसका लोप होय झसप्रत्याहार पर हुए संते । उदाहरण—असैध्-स-तां । इसमें झसप्रत्याहारसंबन्धी धकारसे परे सिप्रत्यय विद्यमान है इस कारण सिप्रत्ययका लोप किया क्योंकि परेभी झसप्रत्याहारसम्बन्धी तकार विद्यमान है तब रूप हुआ असैध्-तां फिर ' तथोर्धः, झषे जबा ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । असैद्धाम् । बहुवचनमें ' खसे चपा झसानाम् ' इत्यादि

१ अनिटोऽनामिवत ॥ अनिट, अनामिवत । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ अनिटोऽवतो नामिवतश्च धातोर्वृद्धिः स्यात्से परे सौ । भाषा—अनिट्, अकारवान् और नामिवान् धातुओंको वृद्धि होय परस्मैपदके विषे सि पर हुए संते । यदि कहो कि अकारवान् और नामिवान् दो वार कहा एकवारही स्वरवान् ऐसा कह देते तो क्या दोष था तहां सूत्रकी व्याख्या तत्त्वदीपिकामें इस प्रकार की है । 'अत्पधाभूत अकार और उपधाभूत नामिको वृद्धि होय परस्मैपदके विषे सिप्रत्यय पर हुए संते ॥

कर रूप सिद्ध हुआ । असेत्सुः । इसी प्रकार अन्यवचनोंमें जानने । खद्धातु स्थिरता और हिंसामें वर्त्ते है और चकारसे भक्षणअर्थमेंभी जानना । खदधातुके रूप लट्-लकारसे लेकर लङ्लकारपर्यन्त 'अप् कर्त्तरि' इत्यादि सूत्रोंकर सिद्ध करने चाहिये । लिट्लकारमें 'द्विश्च पूर्वस्य हसादिः शेषः, कुहोश्चुः, झपानां जबचपाः' इत्यादिक सूत्रों-कर प्रथम रूप स्थित हुआ चखद्-अ फिर ॥

अत उपधायाः ॥ ७४ ॥ अतः, उपधायाः द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ धातोरुपधाया अतो वृद्धिः ञ्णिति ॥ चखाद चखदतुः ॥

भाषा–धातुका उपधारूप जो अकार तिसको वृद्धि होय णकार इत्वाला तथा ञकार इत्वाला प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–चखद्-अ । इसमें खद्धातुका उप-धारूप खकार उत्तरवर्त्ती अकार है इस कारण अकारको 'आरै औ वृद्धिः' इसकर वृद्धि किया क्योंकि णकार इत्वाला णप्प्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । चखाद् । द्विवचनमें णित्प्रत्यय न होनेसे वृद्धि नहीं हुई । चखदतुः ॥

णबुत्तमो वा णित् ॥ ७५ ॥ णबुत्तमः, वा णित् । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ चखाद चखद । प्सेर्णित् ॥

भाषा–उत्तमभागका जो णप् प्रत्यय है सो विकल्पकरके णित्संज्ञक है अर्थात् एक जगह णित्संज्ञक और एक जगह केवल पित्संज्ञक है । उदाहरण–चखद्-अ । इसमें एक जगह णित्संज्ञक णप् होनेसे 'अत उपधायाः' इसकर रूप सिद्ध हुआ । चखाद् और एक जगह णित् न होनेसे वृद्धि न होकर रूप सिद्ध हुआ । चखद् । इसी प्रकार शेष वचनोंमें लङ्लकारपर्यन्त सिद्ध करना चाहिये । लुङ्लकारमें अखद्-इ-स्-ई-द् । ऐसा स्थित है । परस्मैपदके विषैं सिप्रत्यय णित्संज्ञक होता है । उदा-हरण-अखद्-इ-स्-ई-द् । इसमें परस्मैपद विद्यमान होनेसे सिकी णित्संज्ञा हुई फिर 'अत उपधाया वृद्धिः' इसकर वृद्धि होनी चाहिये ॥

अतो हसादेर्लघोर्वा वृद्धिः सेटि सौ ॥ ७६ ॥ अतः, हसादेः, लघोः, वा वृद्धिः, सेटि, सौ । सप्तपदमिदं सूत्रम् ॥ अखदीत् अखा-दीत् ॥ गद व्यक्तायां वाचि ॥ व्यक्ता कोऽर्थः परिस्फुटवर्णा ॥

भाषा–हस है आदिमें जिसके ऐसे धातुके लघु अकारको विकल्पकरके वृद्धि होय सेट् सिप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–अखद्-इ-स्-ई-द् । इसमें इट् आगमयुक्त सिप्रत्यय परे विद्यमान है और धातुके आदिमें हस खकार विद्यमान है इस कारण खकार उत्तरवर्त्ती लघु अकारको वृद्धि करनेसे एक जगह रूप सिद्ध हुआ । अखा-

दीत् । और जहां वृद्धि नहीं हुई वहां रूप सिद्ध हुआ । असदीत् । द्विवचनमें असादिष्टां-असदिष्टाम् । बहुवचनमें असादिषुः-असदिषुः । इसी प्रकार शेष पञ्चमी सिद्ध करने चाहिये । गद्धातु प्रगट कहनेमें वर्त्ते है । व्यक्तवाणी उसको कहते हैं जिसमें वर्ण स्पष्ट बोले जाते हैं । इस धातुकेभी रूप दशों लकारोंमें रदके समान जानने ॥

प्रादिस्थान्निमित्तान्नेर्नस्य णो गदनदपदपतअपिदाधास्यामाङ्मेङ्स्यतिहन्तियातिवातिद्रातिप्सातिवपतिवहतिशाम्यतिचिनोतिदेग्धिषु ॥ ७७ ॥ प्रादिस्थात्, निमित्तात्, नेः, नस्य, णः, गदे-देग्धिषु । षट्पदमिदं सूत्रम् ॥

भाषा-प्रादि उपसर्गस्थ निमित्तसे परे निके नकारको णकार आदेश होय । गद नद, पद, पत, अपिदा, धा, स्या, माङ्, मेङ, स्यति, हन्ति, याति, वाति, द्राति, प्साति, वपति, वहति, शाम्यति, चिनोति, देग्धि इतने धातु पर हुए सते । भाव यह है कि प्रादिक उपसर्गमें स्थित हुए षकार और रकार और ऋवर्णसे परे निउपसर्गके नकारको णकार होय गद् आदिक पर हुए सते ॥

अन्यत्राकखादावषान्ते आद्योच्चारणे वा ॥ ७८ ॥ अन्यत्र, अकखादौ, अषान्ते, आद्योच्चारणे, वा । पञ्चपदमिदं सूत्रम् ॥ अकखादौ किम् । प्रनिकरोति । प्रनिखादति । अषान्ते किम् । प्रनिद्वेष्टि । वेति किम् । प्रणिभवति प्रनिभवति । आद्योच्चारणे किम् । प्रणिचखाद प्रनिचखाद । प्रणिगदति । अगदीत् ॥ रद विलेखने ॥ रदति । रदेत् । रदतु । अरदत् । रराद ॥

भाषा-आद्योच्चारण अर्थात् आद्य नाम पाणिनि कात्यायन पतञ्जलि आचार्योंके उच्चारणमें ककार खकार आदि षान्तवर्जित ऐसे जो गदादिकसे अन्य धातुसे पर हुए सते विकल्पकरके प्रादि उपसर्गस्थ निमित्तसे निउपसर्गके नकारको णकार होय । भाव यह है कि पाणिनि आदिक आचार्योंके उच्चारणमें गदादिकसे अन्य धातुओंके परे हुए सतेभी प्रादि उपसर्गमें स्थित हुए षकार रकार ऋवर्णसे परे निउपसर्गके नकारको णकार होय विकल्पकरके और ककार और खकार है आदिमें जिसके और षकार है अन्तमें जिसके ऐसे धातु पर हुए सते । प्रादिस्थ निमित्तसे निउपसर्गके नकारको णकार नहीं होय अथवा प्रथम उच्चारणसमयमें ककारादि और खकारादि और षकारान्त नहीं है ऐसे गदादिकसे अन्य धातु पर हुए सते ।

प्रादिस्थ निमित्तसे निउपसर्गके नकारको णकार होय । अकखादौ ऐसा क्यों कहा कि । प्रनिकरोति । प्रनिखादति । इत्यादिक प्रयोगोंमे ककार खकारादि धातु होनेसे नकारको णकार नहीं हुआ । अषान्ते ऐसा क्यों कहा । प्रनिदुष्यति इत्यादिकमे षकारान्त धातु होनेसे नकारको णकार नहीं हुआ । वा ऐसा क्यों कहा । प्राणिभवति। प्रनिभवति इत्यादिक प्रयोगोंमे विकल्पकरके हुआ क्योंकि यह गदादिकसे अन्य है और कादि खादि षान्तोंमेंसेभी अन्य है । आद्योच्चारणे ऐसा क्यों कहा । प्रणिचखाद । प्रनिचकाद । इत्यादिकमें प्रथम उच्चारणके विषै ककार खकार नहीं है । उदाहरण–प्रनिगदति । इसमें प्र उपसर्गमें स्थित हुए रकारसे परे निके नकारको णकार हुआ क्योंकि गदधातु परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । प्रणिगदति । रद धातु विलेखन अर्थमें वर्त्ते है, विलेखन नाम भेदन करनेका है । रदधातुके रूप लट्‌लकारसे लेकर लिट्‌के प्रथमवचनपर्यन्त गदके समान जानने । द्विवचनमे ररद्-अतुस् ऐसा स्थित है ॥

लोपः चपां किल्ये चास्य ॥ ७९ ॥ लोपः, पचाम्, किति, एं, च अस्य । षट्पदमिदं सूत्रम् ॥ पचादीनां किति लिट्यनादेशादीनां पूर्वस्य लोपो भवत्यकारस्य एकहसमध्यस्थस्य चैकारः किति णादौ सेटि थपि च । रेदतुः । रेदिथ ॥ णद अव्यक्ते शब्दे ॥ प्रणिनेदुः । नेदिथ ॥ अर्द गतौ याचने च ॥ आन्वोर्णादौ ॥

भाषा–कित् लिट्‌के विषै नहीं हुआ है आदेश जिनको ऐसे पच् आदिक धातुओंके पूर्वरूपका लोप होय और एक एक हस्‌के मध्यमे स्थित हुए अकारको एकार होय कित्संज्ञक णम् आदिक प्रत्यय पर हुए संते और इट्‌युक्त थप्प्रत्यय पर हुए संते । भाव यह है कि जैसा कि पच्धातु लिट्‌के विषै द्वित्वको प्राप्त होने पर ‘ झपानां जवचपाः ’ इसकर आदेशको नहीं प्राप्त होता है और एक २ हसके मध्यमें स्थित हुए अकारवाला है तैसेही अन्य धातु यदि होवे तौ पूर्वका लोप होय और एक हसमध्यस्थ अकारको एकार होय कित् णादि और सेट् थप् पर हुए संते । उदाहरण–ररद-अतुस् । इसमें रदधातुको द्वित्व होनेसे आदेश नहीं हुआ और रकार और दकारके मध्यमें अकार विद्यमान है इस कारण पूर्वका लोप और अकारको एकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । रेदतुः । बहुवचनमे । रेदुः । मध्यमभागके एकवचनमें सिद्ध हुआ । रेदिथ । इसी प्रकार शेषवचनोंमें जानने और शेष लकारोंमें गदके समान रूप जानने । अर्दधातु गति नाम ज्ञान गमन प्राप्तिमें तथा याचन करनेमें वर्त्ते है । अर्दधातुके रूप लट्‌से लेकर लङ्‌पर्यंत रदके समान जानने ।

दीत्। और जहां वृद्धि नहीं हुई तहां रूप सिद्ध हुआ। अखदीत्। द्विवचनमें अखादिष्टां–अखदिष्टाम्। बहुवचनमें अखादिषु–अखदिषु। इसी प्रकार शेष वच नभी सिद्ध करने चाहिये। गदधातु प्रगट कहनेमें वर्त्ते है। व्यक्तवाणी उसको कहते हैं जिसमें वर्ण स्पष्ट बोले जाते हैं। इस धातुकेभी रूप दशों लकारोंमें खद्के समान जानने॥

प्रादिस्थान्निमित्तान्नेर्नस्य णो गदनदपदपतअपिहाधास्यामाङ्मेङ्स्यतिहन्तियातिवातिद्रातिप्सातिवपतिवहतिशाम्यतिचिनोतिदेग्घिषु ॥ ७७ ॥ प्रादिस्थात्, निमित्तात्, नेः, नस्य, णः, गदे–देग्घिषु। पञ्चपदमिदं सूत्रम्॥

भाषा–प्रादि उपसर्गस्थ निमित्तसे परे निके नकारको णकार आदेश होय। गद नद, पद, पत, अपिहा, धा, स्या, माङ, मेङ, स्यति, हन्ति, याति, वाति, द्राति, प्साति, वपति, वहति, शाम्यति, चिनोति, देग्घि इतने धातु पर हुए संते। भाव यह है कि प्रादिक उपसर्गमें स्थित हुए षकार और रकार और ऋवर्णसे परे निउपसर्गके नकारको णकार होय गद आदिक पर हुए संते॥

अन्यत्राकखादावपान्ते आद्योच्चारणे वा ॥ ७८ ॥ अन्यत्र, अकखादौ, अपान्ते, आद्योच्चारणे, वा। पञ्चपदमिदं सूत्रम्॥ अकखादौ किम्। प्रनिकरोति। प्रनिखादति। अपान्ते किम्। प्रनिष्पाति। वेति किम्। प्रणिजपति प्रनिजपति। आद्योच्चारणे किम्। प्रणिचखाद प्रनिचखाद। प्रणिगदति। अगदीत्॥ रद विलेखने॥ रदति। रदेत्। रदतु। अरदत्। रराद॥

भाषा–आद्योच्चारण अर्थात् आद्य नाम पाणिनि कात्यायन पतंजलि आचार्योंके उच्चारणमें कादि खादि पान्तवर्जित ऐसे जो गदादिकसे अन्य धातुसे पर हुए संते विकल्पकरके प्रादि उपसर्गस्थ निमित्तसे निउपसर्गके नकारको णकार होय। भाव यह है कि पाणिनि आदिक आचार्योंके उच्चारणमें गदादिकसे अन्य धातुओंके परे हुए सप्तमी प्रादि उपसर्गमें स्थित हुए षकार रकार ऋवर्णसे परे निउपसर्गके नकारको णकार होय विकल्पकरके और ककार और खकार है आदिमें जिसके और पकार है अन्तमें जिसके ऐसे धातु पर हुए संते। प्रादिस्थ निमित्तसे निउपसर्गके नकारको णकार नहीं होय अथवा प्रथम उच्चारणसमयमें ककारादि और खकारादि और पकारान्त नहीं है ऐसे गदादिकसे अन्य धातु पर हुए संते।

प्रादिस्थ निमित्तसे निउपसर्गके नकारको णकार होय । अकखादौ ऐसा क्यों कहा कि । प्रनिकरोति । प्रनिखादति । इत्यादिक प्रयोगोंमे ककार खकारादि धातु होनेसे नकारको णकार नहीं हुआ । अषान्ते ऐसा क्यों कहा । प्रनिदुष्यति इत्यादिकमें षकारान्त धातु होनेसे नकारको सकार नही हुआ । वा ऐसा क्यों कहा । प्रणिभवति । प्रनिभवति इत्यादिक प्रयोगोंमें विकल्पकरके हुआ क्योंकि यह गदादिकसे अन्य है और कादि खादि षान्तोंमेसेभी अन्य है । आद्योच्चारणे ऐसा क्यों कहा । प्रणिचखाद । प्रनिचकाद । इत्यादिकमें प्रथम उच्चारणके विषैं ककार खकार नही है । उदाहरण–प्रनिगदति । इसमे प्र उपसर्गमें स्थित हुए रकारसे परे निके नकारको णकार हुआ क्योंकि गदधातु परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । प्रणिगदति । रदधातु विलेखन अर्थमें वर्त्ते है, विलेखन नाम भेदन करनेका है । रदधातुके रूप लट् लकारसे लेकर लिट्के प्रथमवचनपर्यन्त गदके समान जानने । द्विवचनमे ररद्-अतुस् ऐसा स्थित है ॥

लोपः चपां कित्ये चास्य ॥ ७९ ॥ लोपः[१-१], पचाम्[६-३], किति[७-१], ए[१-१], च[अ], अस्य[६-१] । षट्पदमिदं सूत्रम् ॥ पचादीनां किति लिट्यनादेशादीनां पूर्वस्य लोपो भवत्यकारस्य एकहसमध्यस्थस्य चैकारः किति णादौ सेटि थपि च । रेदतुः । रेदिथ ॥ णद अव्यक्ते शब्दे ॥ प्रणिनेदुः । नेदिथ ॥ अर्द गतौ याचने च ॥ आर्द्वोर्णादौ ॥

भाषा–कित् लिट्के विषैं नही हुआ है आदेश जिनको ऐसे पच् आदिक धातुओंके पूर्वरूपका लोप होय और एक एक हस्के मध्यमें स्थित हुए अकारको एकार होय कित्संज्ञक णम् आदिक प्रत्यय पर हुए संते और इट्युक्त थप्प्रत्यय पर हुए संते । भाव यह है कि जैसा कि पच्धातु लिट्के विषैं द्वित्वको प्राप्त होने पर 'झपानां जवचपाः' इसकर आदेशको नही प्राप्त होता है और एक २ हसके मध्यमें स्थित हुए अकारवाला है तैसेही अन्य धातु यदि होवे तौ पूर्वका लोप होय और एक हसमध्यस्थ अकारको एकार होय कित् णादि और सेट् थप् पर हुए संते । उदाहरण–ररद-अतुस् । इसमें रदधातुको द्वित्व होनेसे आदेश नहीं हुआ और रकार और दकारके मध्यमें अकार विद्यमान है इस कारण पूर्वका लोप और अकारको एकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । रेदतुः । बहुवचनमे । रेदुः । मध्यमभागके एकवचनमें सिद्ध हुआ । रेदिथ । इसी प्रकार शेषवचनोंमें जानने और शेष लकारोंमें गदके समान रूप जानने । अर्दधातु गति नाम ज्ञान गमन प्राप्तिमें तथा याचन करनेमें वर्त्ते है । अर्दधातुके रूप लट्से लेकर लङ्पर्यंत रदके समान जानने ।

लिट्के प्रथमवचनमें अ अर्द् अ ऐसा स्थित है । 'आनर्दोर्गोदी' इसप्रकार रूप हुआ आ-अर्द्-अ ॥

नुगशाम् ॥ ८० ॥ नुर्क्, अर्थाम् । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ अश्नोते र्ऋकारादेः संयोगान्ताकारादेश्च पूर्वस्य नुगमवति णादौ ॥ आनर्द । आर्दीत् ॥ नर्द गर्द शब्दे ॥ तर्द हिंसायाम् ॥ तर्दति ॥ कर्द कुत्सिते शब्दे ॥ कर्दति ॥ खर्द दन्दशूके ॥ खर्दति ॥ क्रदि चेष्टायाम् ॥ क्लिदि परिदेवने ॥ क्लिन्दति ॥ अत सातत्यगमने ॥ आतिथ ॥ खाद भक्षणे ॥ अखादीत् ॥ क्रदि आह्वाने रोदने च ॥ अति अदि बन्धने ॥ अन्ताति । अन्तेत् । अन्ततु । आन्तत् । आनन्त । आनन्द । अन्द्यात् ॥ अन्दिता । अन्दिष्यति । आन्दिष्यत् । आन्दीत् ॥ टुणदि समृद्धौ ॥ ननन्द ॥ चदि आह्लादने दीप्तौ च ॥ इदितो नुम् । चन्दति । चन्देत् । चन्दतु । अचन्दत् । चचन्द । चन्द्यात् । चन्दिता । चन्दिष्यति । अचन्दिष्यत् । अचन्दीत् ॥ शुन्ध शुद्धौ ॥ शुन्धति । शुन्धेत् । शुन्धतु । अशुन्धत् । शुशुन्ध । शुन्ध्यात् । शुन्धिता । शुन्धिष्यति । अशुन्धिष्यत् । अशुन्धीत् ॥ तक कक हसने ॥ तकि कृच्छ्रजीवने ॥ तङ्कति । ततङ्क । अतङ्कीत् ॥ शुक गतौ ॥ शोकति । अशोकीत् ॥ बुक्क भषणे ॥ बुक्कति ॥ कष हसने ॥ कषति ॥ बुगि वर्जने ॥ बुङ्गति ॥ इदि परमैश्वर्ये ॥ इन्दति ॥

भाषा—अश्नोति अर्थात् अशूङ् धातु और ऋकार आदिवाला धातु और संयोग है अन्तमें जिसके ऐसा अकार आदिवाला धातु इन तीनोंके पूर्वरूपको नुकका आगम होय णल्आदिक प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—आ-अर्द्-अ । इसमें संयोग अन्तवाला और अकार आदिवाला अर्द् धातु है इसके पूर्वरूप आको नुकका आगम किया तब रूप सिद्ध हुआ । आनर्द । इसी प्रकार शेष वचनोंमें जानना । नर्द और गर्द यह दोनों धातु शब्द करनेमें वर्त्ते हैं और तर्द धातु हिंसा अर्थमें वर्त्ते है और कर्दधातु बुरा शब्द करनेमें वर्त्ते है और खर्दधातु दन्दशूक अर्थात् डसनेमें वर्त्ते है और क्रदिधातु चेष्टामें वर्त्ते है और क्लिदिधातु परिदेवन नाम विलाप करनेमें वर्त्ते है और अतधातु निरन्तर गमन करनेमें वर्त्ते है और खाद धातु भक्षण अर्थमें वर्त्ते है और क्रदिधातु बुलाने तथा रोवनेमें वर्त्ते है और अति

और अदि यह दोनों धातु बांधनेमें वर्त्ते हैं और टुणदि धातु समृद्धिमें वर्त्ते है और चदि धातु आह्लादन • अर्थात् तृप्ति और प्रकाश अर्थमें वर्त्ते है और शुंधधातु शुद्धि अर्थमे वर्त्ते है और तक्क और कक्क हँसनेमें वर्त्ते हैं और तकिधातु कष्टपूर्वक जीवनेमें वर्त्ते है और शुकधातु गतिअर्थमें वर्त्ते है और बुक्कधातु भाषण करनेमें वर्त्ते है और कखधातु हसन अर्थम वर्त्ते है और युगि और जुगि यह दोनों धातु वर्जनेमें वर्त्ते हैं। इदिधातु परमैश्वर्य अर्थमें वर्त्ते है । इदिधातुके रूप लट्लकारसे लेकर लोट्-लकारपर्यन्य ' इदितो नुम् ' इत्यादिक कर अत अतिधातुके समान जानने । लङ्-लकारके विषैं ' दिवादावट् धातोः ' इत्यादि सूत्रोंकर अ-इन्द्-द् ऐसा स्थित है ॥

स्वरादेः ॥ ८१ ॥ स्वरादेः । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ स्वरादेर्धातोर्द्वितीयोऽडागमो भवति दिबादौ परे ॥ अइ ए । एऐ ऐ । ऐन्दत् ॥

भाषा—स्वर है आदिम जिसके ऐसे धातुको दिप्आदिक प्रत्यय पर हुए संते दूसरे अट्का आगम होय । उदाहरण—अ-इन्द्-द् । इसमें स्वरआदिवाला इन्दधातु है इसको दूसरे अट्का आगम करनेसे रूप हुआ अ-अ-इन्द् द् फिर ' अइ ए, एऐ ऐ ' इनकर सिद्ध हुआ ऐदन्त् । इसी प्रकार अन्य वचनोंमे जानने । लिट्के प्रथम वचनमें इन्द्-अ ऐसा स्थित है ॥

कासादिप्रत्ययादाम् कृभ्भूपरः ॥८२॥ कासादिप्रत्ययात्, आम्, कृभ्भूपरः । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ कास् आस् दय अय गुरुनाम्याद्यनेकस्वरेभ्यो णबादौ परे आम् प्रत्ययो भवति । स च कृअस्भूपरः प्रयोक्तव्यः ॥

भाषा—कास्, आस्, दय, अयधातु और गुरुनामी स्वर है आदिम जिसके ऐसा धातु और अनेकस्वरवाला धातु इनसे परे आम्प्रत्यय होय णप्आदिक प्रत्यय पर हुए संते वह आम्प्रत्यय कृअस्भूपर प्रयुक्त करने योग्य है अर्थात् आम्प्रत्ययके पीछे कृ अथवा अस् अथवा भूधातु प्रयुक्त करने योग्य है ॥

विद्दरिद्राजागृषां वा ॥ ८३ ॥ विद्दरिद्राजागृषाम्, वा । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥

भाषा—विद्, दरिद्रा, जागृ और उष्धातु इनसे परे विकल्पकरके आम्प्रत्यय होवे है । उदाहरण—इन्द्-अ । इसमें संयोग पर होनेसे गुरु इकार स्वरधातुके आदिमें विद्यमान है इस कारण इन्द्धातुसे आम्प्रत्यय किया क्योंकि परमें णप्प्रत्यय विद्यमान है तब रूप हुआ इन्द् आम्-कृ-अ । अत्र णबादिक प्रत्ययका समीपवर्त्ती कृ धातुके साथ योग होनेसे ' द्विश्च, कुरोश्चु ' इनकर रूप हुआ इन्द्-आम्-चृ-कृ-अ ॥

र ॥८४॥ ऋं, अं । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ पूर्वस्य रवर्णस्याकार ॥

भाषा—पूर्वके ऋवर्णको अकार होय । उदाहरण—इन्द् आम्-च-कृ-ण्म । इसमें पूर्व-कृके ऋकारको अकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ इन्दाम्-च-कृ-ण्म ॥

धातोर्नामिनः ॥ ८५ ॥ धाँतो नाँमिन । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ नाम्यन्तस्यादन्तस्य च धातोर्वृद्धि ञ्णिति परे ॥ इन्दाचकार इन्दांचक्रतु इन्दांचक्रु इन्दाचकर्थ । इन्दामास इन्दामासतु इन्दामासु । इन्दांबभूव । इन्द्यात् । ऐन्दीत् ॥ णिदि कुत्सायाम् ॥ इदितो नुम् । भपूर्व । प्रणिन्दति प्रनिन्दति । प्रनिन्देत् । प्रणिन्दतु । प्राणिन्दत् । निनिन्द । निन्द्यात् । निन्दिता । निन्दिष्यति । अनिन्दिष्यत् । अनिन्दीत् ॥ दवि पालने ॥ ददक्ष ॥ उस गतौ ॥ अप् कर्तरि । उपधालघोर्गुण । ओसति । ओसेत् । ओसतु । औसत् ॥

भाषा—नामिसंज्ञक स्वर है अन्तमें जिसके और अकार है अन्तमें जिसके ऐसे धातुको वृद्धि होय ञकार और णकार इत्वाला प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—इन्दां-च-कृ-ण्म । इसमें कृधातु ऋकारान्त है इस कारण ऋकारको 'आरै औ वृद्धि' इसकर वृद्धि किया क्योंकि णकार इत्वाला णप्प्रत्यय परमें विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । इन्दांचकार । द्विवचनबहुवचनमें 'ऋरं' इसकर रूप सिद्ध हुआ । इन्दां चक्रतु इन्दांचक्रु । मध्यमभागके एकवचनमें ऋतोर्णादे 'इसकर इट् न करनेपर 'गुण' इसकर रूप सिद्ध हुआ । इन्दांचकर्थ । इसी प्रकार शेषवचनोंमें जानने और जहां इदिधातुसे णपादिकमें आमप्रत्ययके पश्चात् असधातु हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । इन्दामास । द्विवचनबहुवचनमें । इन्दामासतु' इन्दामासु' । मध्यमभागके प्रथम वचनमें इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । इन्दामासिथ । इसी प्रकार शेष वच नोंमें जानने और जहां इदिधातुसे णपादिकमें आमूप्रत्ययके पश्चात् भूधातु करनेसे पूर्ववत् सिद्ध हुआ । इन्दांबभूव । शेष लकारोंमें अदिधातुके समान रूप जानने । णिदिधातु निन्दा करनेमें वर्त्ते है । णिदिधातुके रूप 'आदे' ष्ण' स्न, इदितो नुम ' इत्यादिकर नदिधातुके समान जानने और प्रउपसर्ग पूर्व होनेसे 'प्रादेष्प तथा वो नुनमाम् ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । प्रणिन्दति । दक्षिधातु गाथ अर्थमें वर्त्ते है । उसधातु गति अर्थमें वर्त्ते है । 'अप् कर्तरि, उपधाया लघोः ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । ओसति । ओसेत् । ओसतु । औसत् । लट्लकारसे लेकर लङ्लकार-पर्यन्त इस प्रकार जानने । लिट्के विषे उ-उस-ण्म ऐसा स्थित है ॥

असवर्णे स्वरे पूर्वस्येवर्णोवर्णयोरियुवौ ॥८६॥ असवर्णे, स्वरे, पूर्वस्य, इवर्णोवर्णयोः, इयुवौ । पंचपदमिदं सूत्रम् ॥ उवोख ऊखतुः ऊखुः । उवोखिथ । औखीत् ॥ लुञ्च अपनयने ॥ अञ्चु गतिपूजनयोः ॥ अञ्चति । अञ्चेत् । अञ्चतु । आञ्चत् । आनञ्च । अच्यात् । पूजायां अञ्च्यात् । अञ्चिता । अञ्चिष्यति । आञ्चिष्यत् । आञ्चीत् ॥ आछि आयामे ॥ आञ्छति । आञ्छेत् । आञ्छतु । आञ्छत् ॥

भाषा—पूर्वके इवर्ण और उवर्णको इय् और उव् होय सवर्ण स्वरवर्जित स्वर पर हुए संते । भाव यह है कि पूर्वके इकार वा ईकारको इय् और उकार अथवा ऊकारको उव् होय जो असवर्ण स्वर परे होवे तौ । उदाहरण—उ-उख-अ इसमे 'उपधाया लघोः' इसकर धातुके उकारको गुण करनेसे असवर्ण स्वर ओकार परे है इस कारण उकारको उव् हुआ तव रूप सिद्ध हुआ । उवोख । द्विवचनमे वहुवचनमे गुण न होनेसे सवर्ण स्वरही परमें विद्यमान रहा इस कारण उव् न होनेपर 'सवर्णे दीर्घः' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । ऊखतुः ऊखुः । मध्यमभागके प्रथमवचन थप्मे गुण होनेसे असवर्ण स्वर ओकार परमें होनेसे रूप सिद्ध हुआ । उवोखिथ । इसी प्रकार शेष वचनोंमें जानने । अन्यलकारोंमे अतधातुके समान रूप जानने । लुञ्चधातु अपनयन अर्थमे वर्ते है अपनयन नाम उसका जो किसीको किसी स्थानसे दूर करना है । अञ्चुधातु गतिअर्थमें वर्त्ते है जहां अञ्चुधातुका गति अर्थ है तहां 'नो लोपः' इसकर लोप करनेसे आशीर्लिङ्के विषे सिद्ध हुआ । अच्यात् । और पूजाअर्थमे लोप न होनेसे सिद्ध हुआ । अंच्यात् । आछिधातु दीर्घता करनेमें वर्त्ते है आछिधातुके रूप लट्लकारसे लेकर लङ्लकारपर्यन्त अञ्चुधातुके समान जानने और लिट्के विषै आ-आंछ-अ ऐसा स्थित है ॥

आञ्छेर्नुग्वा णादौ ॥८७॥ आंछेः, नुक्, वा, णादौ । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ आञ्छ आनाञ्छ । हूर्छा कौटिल्ये ॥

य्वोर्विहसे ॥८८॥ हूर्छति । हूर्छेतु । अहूर्छत् । जुहूर्छ । हूर्छ्यात् । अहूर्छीत् हूर्छिता । हूर्छिष्यति । अहूर्छिष्यत् ॥ युच्छ प्रमादे ॥ युच्छति ॥ व्रज गतौ ॥ व्रजति ॥

भाषा—आंछधातुके पूर्वको विकल्प करके नुक्का आगम होय णप्आदिक प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—आ-आंछ-अ । इसमें '= शाम्' इसकर नुक्का

आगम नहीं करनेसे 'सवर्णे दीर्घः' इसकर रूप सिद्ध हुआ । आंछ । और आ नुकका आगम हुआ सर्वा रूप सिद्ध हुआ । आनांछ । हूर्छाधातु कुटिलता अर्थमें वर्त्ते है 'र्वोरुपधाया दीर्घ इकि' इसकर लट्के प्रथमवचनमें रूप सिद्ध हुआ । हूर्छति । इसी प्रकार लट्लकारपर्यन्त जानने । लिट्के प्रथमवचनमें द्वित्व करनेपर पूर्वके हकारको 'कुहोश्चुः' इसकर झकार करनेपर 'झपानां जबचपाः' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । जुहूर्छ । युच्छधातु प्रमाद अर्थमें वर्त्ते है और वजधातु गतिअर्थमें वर्त्ते है वजधातुके रूप लिट्के प्रथमवचनपर्यन्त रट्के समान जानने । द्विवचनमें व-वज अ तुस् ऐसा स्थित है ॥

शसदद्वादिगुणभूताकाराणां नेत्वपूर्वलोपौ ॥ ८९ ॥ शसददवादिगुणभूताकाराणा, न, एत्वपूर्वलोपौ । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ ववाज ॥ ववजतुः अवाजीत् ॥ व्रज गतौ ॥ व्रजति । व्रजेत् । व्रजतु । अव्रजत् । वव्राज । व्रज्यात् । व्रजिता । व्रजिष्यति । अव्रजिष्यत् ॥

भाषा—शसधातु और ददधातु और वकारआदिवाला धातु और गुणकरके हुआ जो अकार इनको एकार और पूर्वलोप नहीं होता । भाव यह है कि शस और दद और वकारआदिवाले धातु तथा लिट्के विर्षे शृ आदिक धातुओंके गुण करनेसे 'अ अर्' इत्यादिकर जो कि अकार किया है इन सबके 'लोप' 'पचां लिट्ये चास्य' इसकर पूर्वका लोप नहीं होय और अकारको एकार नहीं होय । उदाहरण—ववज्-अतुस् । इसमें वकारआदिवाला धातु होनेसे 'लोप' 'पचां लिट्ये चास्य' इसकर पूर्वका लोप और वज्के अकारको एकार नहीं हुआ तब रूप सिद्ध हुआ । ववजतुः । इसी प्रकार लोप वचनोंमें जानने । व्रजधातु गतिअर्थमें वर्त्ते है व्रजधातुकेभी रूप लङ्पर्यन्त वजके समान जानने । लुङ्के विर्षे अव्रज-इ-स्-ई-द्-ऐसा है ॥

वदव्रज्योः सौ नित्यं वृद्धिः ॥ ९० ॥ वदिव्रज्योः, सौ, नित्य वृद्धिः । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ अव्राजीत् ॥ अज गतौ क्षेपणे च ॥ अजति । अजेत् । अजतु । आजत् ॥

भाषा—वदधातु और व्रजधातु इन दोनोंको नित्यही वृद्धि होय सिप्रत्यय पर हुए सते । उदाहरण—अव्रज्-इ-स्-ई-द् । इसमें व्रजधातुको नित्यही वृद्धि करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अव्राजीत् । अजधातु गति अर्थ तथा क्षेपण नाम फेंकनेमें वर्त्ते है । अजधातुके रूप लङ्पर्यन्त अत्धातुके समान जानने । लिट्के प्रथमवचनमें अज अ ऐसा है ॥

अजेरचतुर्षु वी वसादौ वा ॥ ९१ ॥ अजे, अचतुर्षु, वी, वसादौ, वा । पंचपदमिदं सूत्रम् ॥ विवाय ॥

भाषा–लट्लकारसे लेकर लङ्लकारपर्यन्त जो चार लकार हैं उनको त्यागकर जो शेष लकार हैं उनके विषैं अजधातुको वी आदेश होय और आदिके चार लकार वर्जित शेष लकार हैं उनकेही विषैं वसप्रत्याहार आदिवाले प्रत्यय पर हुए संते अज धातुको विकल्पकरके वी आदेश होय। उदाहरण–अज-अ। इसमें अजको वी आदेश किया फिर ‘ द्विश्च, ह्रस्वः, धातोर्नामिनः ’ इत्यादिकर रूप स्थित हुआ वि-वै-अ फिर, ‘ ऐ आय् ’ इत्यादिकर सिद्ध हुआ। विवाय। द्विवचनके विषैं वि-वी-अतुस् ऐसा स्थित है ॥

नुधातोः ॥ ९२ ॥ नुधातोः। एकपदमिदं सूत्रम् ॥ विकरणस्य नोर्धातोश्चेवर्णयोरियुवौ स्वरे ॥ अनेकस्वरस्यासंयोगपूर्वस्य तु य्वौ ॥

भाषा–विकरण नुप्रत्यय और धातुके इवर्ण और उवर्णको इय् और उव् होय अर्थात् इकार ईकारको इय् और उकार ऊकारको उव् होय स्वर पर हुए संते और जिसके विषैं अनेक स्वर हैं और जिससे संयोग पूर्व नहीं है ऐसे धातुके इवर्ण और उवर्णको यकार और वकार होय स्वर पर हुए संते ॥

उवर्णान्ते हुन्वोरेवापि ॥ ९३ ॥ उवर्णान्ते, हुन्वोः, एवं, अपि चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ विव्यतुः ॥

भाषा–अनेक स्वर ऐसे नहीं संयोगपूर्ववाले धातुके उवर्णको वकार नहीं होय अप्रत्ययके विषयमें किन्तु अनेक स्वर ऐसे नहीं संयोग पूर्ववाले हुधातु तथा विकरण नुकेही उकारको वकार होय चारही लकारोंके विषैं शेष लकारोंके विषैं उवही होय। उदाहरण–वि-वी-अतुस्। इसमें द्वित्व होनेसे वीधातु अनेक स्वर है और इसके ईकारस्वरके पूर्वसंयोगभी नहीं है इस कारण वकार उत्तरवर्त्ती ईकारके स्थानमें इय् किया क्योंकि परे स्वर विद्यमान है तव रूप सिद्ध हुआ। विव्यतुः। बहुवचनमें। विव्युः। मध्यमभागके प्रथमवचनमे वि-वी-थ ऐसा स्थित है ॥

स्वरान्तादत्वतश्च तादौ नित्यानिटस्थपो वेट् ॥ ९४ ॥ स्वरान्तात्, अत्वतः, च तादौ, नित्यानिटः, थपः, वा, इट्। अष्टपदमिदं सूत्रम् ॥ विवयिथ। विवेथ। आजिथ। विव्यथुः विव्य। आजिव आजिम। वीयात् ॥

भाषा–तादिक प्रत्ययोके विषैं नित्यही अनिट् ऐसा स्वरान्त धातु और तादिकके

विषैं नित्यही अनिट् ऐसा प्रथमउच्चारणके विषैं अकारवान् धातु तिससे परे थप्प्रत्ययको विकल्पकरके इट्का आगम होय । उदाहरण—सि-षी-थ । इसमें एक जगह इट् करनेसे 'गुण', ऐ अय' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । सिषयिथ । और जहां इट्का आगम नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । सिषेथ । और जहां वसादि होनेसे थप्के विषैं अजको भी आदेश नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । सिषिव । इसी प्रकार शेषवचनोंमें जानने । आशीर्लिङ्के विषैं । सीयात् । ऐसा सिद्ध हुआ । और लुङ्के विषैं एक जगह भी आदेश किया॥

नैकस्वरादनुदात्तात् ॥ ९६ ॥ न, एकस्वरात्, अनुदात्तात् ।

त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ आद्योच्चारणेऽनुदात्तादेकस्वराद्धातो परस्य वसादेरिण्न स्यात् ॥

भाषा—आद्योच्चारणके विषैं अनुदात्त ऐसे एक स्वर धातुसे परे वसप्रत्याहार आदिवाले प्रत्ययको इट् नहीं होय ॥

अनिट् स्वरान्तो भवतीति दृश्यतामिमांस्तु सेट' प्रवदन्ति तद्विद ।
अद तमृदन्तमृता च वृङ्वृञौ श्विडीङ्श्विर्णेष्वथ शीङ्श्रिञावपि ॥ १ ॥

भाषा—स्वरान्तधातु अनिट् होता है अर्थात् स्वरान्त धातुसे परे वसादिप्रत्ययको इट् नहीं होता है ऐसा हे पण्डितो ! तुमकर जाना जावे और उन धातुओंके जाननेवाले शास्त्रज्ञ स्वरान्तधातुओंके विषैं इन धातुओंको सेट् कहते हैं वह धातु यह हैं। अकारान्त, ऋकारान्त और ऋकारान्तोंके मध्यमें वृङ् वृञ् और इवर्णान्तोंके मध्यमें श्वि, डीङ्, शीङ् और श्रिञ् यह धातु सेट् हैं ॥ १ ॥

गणस्थमूदन्तमुता च रुस्नुवो क्षुव तयोर्णोतिमथो युणुक्ष्णवः ।
इति स्वरान्ता निपुणै समुच्चितास्ततो हसान्तानपि सन्निबोधत ॥ २ ॥

भाषा-गणमें स्थित रहनेवाले ऊकारान्त धातुको सेट् कहते हैं और उकारान्तोंके मध्यमें रुधातु, स्नुधातु, क्षुधातु, ऊर्णोति धातु, युधातु, णुधातु और क्ष्णुधातुकोभी सेट् कहते हैं । इस प्रकार पण्डितजनोंने स्वरान्त धातु इट्युक्त इकट्ठे किये हैं । तदनन्तर हसान्तधातुओंको हे व्याकरणशास्त्रके पढ़नेवालो ! तुम जानियो ॥ २ ॥

शक्लृस्तु कान्तेष्वमिडेक इष्यते घसिश्च सान्तेषु वसि प्रसारणी ।
रभिश्च भान्तेष्वथ मैथुने यभिस्ततस्तृतीयो लभिरेव नेतरे ॥ ३ ॥

भाषा—ककारान्त धातुओंके मध्यमें एक शक्लधातु अनि कहा है और

सकारान्त धातुओंके मध्यमें घस्लधातु संप्रसारणवाला वसधातु अनिट् कहा है और मकारान्त धातुओंके मध्यमें रमधातु और मैथुनअर्थमे वर्त्तनेवाला यभधातु और तीसरा डुलभष् धातु अनिट् कहा है और अन्य धातु अनिट् नही हैं ॥ ३ ॥

यमिर्ञमान्तेष्वनिडेक इष्यते रमिर्दिवादावपि पठ्यते मनिः ।

नमिश्चतुर्थो हनिरेव पञ्चमो गमिस्तु षष्ठः प्रतिषेधवाचिनाम् ॥ ४ ॥

भाषा–यमप्रत्याहारान्त धातुओंके विषै इट्के निषेध करनेवालोंके मध्य एक यमधातु अनिट् कहा है और एक रमुधातु अनिट् कहा है और दिवादिगणमे जो कि मनधातु पण्डितोंने पढा है वह अनिट् कहा है और चौथा णम्धातु और पांचवां हन् धातु और छठा गम्लधातु अनिट् कहा है ॥ ४ ॥

दिहिर्दुहिर्मेहतिरोहती वहिर्नहिस्तु षष्ठो दहतिस्तथा लिहिः ।

इमेऽनिटोऽष्टाविह मुक्तसंशया गणेषु हन्ता प्रविभज्य कीर्तिताः ॥ ५ ॥

भाषा–यहा अनिट्कारिकाके विषैं यह आठ हान्त धातु मुझ ग्रंथकर्ताने अनिट् कहे हैं। कैसे हैं यह आठ धातु कि जिनके विषैं संशय दूर हो गया है क्या करके यहां आठ हान्त धातु अनिट् कहे है कि गणोंके विषैं हान्तोको भिन्न करके। वह कौनसे आठ धातु हैं कि एक दिहधातु, दुसरा दुहधातु, तृतीय मिहधातु, चतुर्थ रुहधातु, पाचवां वहधातु, छठा णहधातु, सातवां दहधातु और आठवां लिहधातु ॥ ५ ॥

दिशिं दृशिं दंशिमथो मृशिं स्पृशिं रिशिं रुशिं क्रोशतिमष्टमं विशिम् ।

लिशिं च शान्तानानिटः पुराणगाः पठन्ति पाठेषु दशैव नेतरान् ॥ ६ ॥

भाषा–प्राचीन विद्वान् गणपाठोंके विषैं दश शान्त धातुओंको अनिट् पढते हैं और अन्य धातुओंको नहीं। वह दश धातु यह हैं । एक दिशधातु, दूसरा दृशिर्धातु, तृतीय दंशिधातु, चतुर्थ मृशधातु, पांचवां स्पृशधातु, छठा रिशधातु, सातवां रुशधातु आठवां क्रुशधातु, नववां विशधातु और दशवा लिशधातु ॥ ६ ॥

रुधिः सराधिर्युधिबन्धिसाधयः क्रुधिक्षुधी शुध्यतिबुध्यती व्यधिः ।

इमे तु धान्ता दश चानिटो मतास्ततः परं सिध्यतिरेव नेतरे ॥ ७ ॥

भाषा–यह दश धकारान्त धातु अनिट् कहे हैं एक तौ रुधिर्, द्वितीय राध, तीसरा युध, चतुर्थ बंध, पांचवां साध, छठा क्रुध, सातवा क्षुध, आठवां शुध्यति, नववां बुध्यति, दशवां व्यध धातु ॥ ७ ॥

शिषिं पिषिं शुष्यतिपुष्यती त्विषिं विषिं श्लिषिं तुष्यतिदुष्यती द्विषम् ।

इमान् दशैवोपदिशन्त्यनिड्विधौ गणेषु षान्तान् कृषकर्षती तथा ॥ ८ ॥

भाषा—गणपाठोंके विषें अनिट्प्रकरणमें इन दश पकारान्त धातुओंको आचार्य उपदेश करते हैं । एक क्षिप्लृ, द्वितीय पिप्लृ, तृतीय शुप्यति चतुर्थ पुष्यति, पांचवां तिप्, छठा विप्लृ, सातवां स्लिप्, आठवां तुष्यति, नववा दुष्यति, दशवां द्विपूधातु८॥

तपिं तिपिं चापिमथो वपिं स्वपिं लिपिं लुपिं तुप्यतिदृप्यती सृपिम् ।
स्वरेण नीचेन शपिं छुपिं क्षिपिं प्रतीहि पान्तान् भणितांस्त्रयोदश ॥ ९ ॥

भाषा—अनुदात्तस्वरकरके गिने हुए तेरह पान्त धातुओंको तुम अनिट् जानिये । एक ती तप द्वितीय तिप् तृतीय आप्लृ, चतुर्थ डुवप्, पांचवां ञिष्वप्, छठा लिप्, सातवां लुप्लृ, आठवां तृप्यति, नववां दृप्यति, दशवां सृप्लृ, ग्यारहवां शप्, बारहवां छुप्, तेरहवां क्षिप् धातु ॥ ९ ॥

अदिं हदिं स्कन्दिभिदिच्छिदिक्षुदीन् शदिं सदिं स्विद्यतिपद्यती खिदिम् ।
नुदिं तुदिं विद्यति विन्त इत्यपि प्रतीहि दान्तान् दश पञ्च चानिट १०॥

भाषा—पन्द्रह दकारान्त धातुओंको तुम अनिट् जानिये । एक ती अद्, दूसरा हद्, तृतीय स्कन्दिर् , चतुथ भिदिर् पाचवां छिदिर् , छठा क्षुदिर्, सातवा शद्लृ, आठवां षद्लृ, नववां स्विद्यति, दशवां पद्यति, ग्यारहवां खिद्, बारहवां नुद, तेरहवां तुद, चौदहवां विद्‌ सत्तायां धातु, पन्द्रहवां विद विचारणे धातु ॥ १० ॥

पचिं वचिं विचिरिचिरञ्जिपृच्छतीन् निजिं सिचिं मुचिभजिभञ्जिभ्रस्जीन् । त्यजिं यजिं युजिरुजिसञ्जिमज्जतीन् भुजिं स्वजिं सृजि-विजिविद्धचनिट्स्वरान् ॥ ११ ॥

भाषा—नहीं है विद्यमान् इट् स्वर जिनसे ऐसे चकारान्त जकारान्त इन धातुओंको जानिये । एक डुपचष्, द्वितीय वच, तृतीय विचिर् , चतुर्थ रिचिर् , पांचवां रञ्ज, छठा पृच्छ, सातवां णिजिर् , आठवां षिच् 'नववां मुच्लृ, दशवां भज, ग्यारहवां भंजो बारहवां भ्रस्ज, तेरहवां त्यज, चौदहवां यज पन्द्रहवां युजिर् , सोलहवां रुज, सत्तरहवां षंज, अठारहवां टुमस्ज उन्नीसवां भुज, बीसवां ष्वञ्ज, इक्कीसवां सृज, बाईसवां विजिर्धातु ११

चेता । अचैषीत् ॥ क्षि क्षये ॥ चिक्षयिथ चिक्षेथ ॥

भाषा—उदाहरण—चीन्ता । इसमें स्वरांत चीधातु अनिट् है इस प्रकरण ' सिसःतासीस्यपामिट् ' इसकर इट्का आगम नहीं हुआ तब ' गुण ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । चेता । और जहां भी आदेश नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । अचिता । इसी प्रकार शेष स्वरांतोंमें जानना । लुङ्के प्रथमवचनके विषे ' धातोर्नामिन' इसकर

सिद्ध हुआ । अक्षैषीत् । क्षिधातु क्षयअर्थमें वर्त्ते है । लट्लकारसे लङ्पर्यन्त 'अप् कर्त्तरि, गुणः' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुए । क्षयति । क्षयतु । अक्षयत् । लिट्के प्रथमवचनमें 'द्विश्च, कुहोश्चुः, धातोर्नामिनः' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । चिक्षाय । द्विवचनमें चिक्षि-अतुस् ऐसा स्थित है 'नुधातोः' इसकर इय् किया क्योंकि संयोगपूर्व क्षिधातुमे इकार विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । चिक्षियतुः । इसी प्रकार बहुवचनमें करनेसे रूप सिद्ध हुआ । चिक्षियुः । मध्यमभागके प्रथमवचनमे 'स्वरान्तादत्वतश्च तादौ नित्यानिटस्थपो वेट्' इसकर एक जगह इट् किया और एक जगह इट् नहीं किया तब रूप सिद्ध हुए । चिक्षयिथ, चिक्षेथ । इसी प्रकार शेष वचनोंमें रूप जानने । आशीर्लिङ्मे क्षि-यात् ऐसा स्थित है ॥

ये ॥९६॥ ये । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ अनपि यकारे परे पूर्वस्वरस्य दीर्घः स्यात् ॥ क्षीयात् । अक्षैषीत् ॥ तुम्प हिंसायाम् ॥

भाषा—अप्विषयवर्जित लकारके विषैं यकार पर हुए संते पूर्वस्वरको दीर्घ होय । भाव यह है कि लट्से लेकर लङ्लकारपर्यन्त वचनोंको त्याग शेष लकारोके विषैं यकार पर हुए संते दीर्घ होय । उदाहरण—क्षि-यात् । इसमें अप्विषयवर्जित आशीर्लिङ्के विषैं यकार परे विद्यमान है इस कारण इकारको दीर्घ करनेसे रूप सिद्ध हुआ । क्षीयात् । शेष लकारोंमें वीधातुके समान रूप जानने । तुम्प धातु हिंसाअर्थके विषैं वर्त्ते है ॥

प्रात्तुम्पतेः सुट् गवि कर्तरि ॥ ९७ ॥ प्रात्, तुम्पतेः सुट्, गवि, कर्तरि । पञ्चपदमिदं सूत्रम् ॥ प्रस्तुम्पति गौः । अड्द्वित्वव्यवधानेऽपि सुट् । प्रास्तुम्पत् । प्रतुस्तुम्प ॥ ओणृ अपनयने॥ ओणाञ्चकार॥ वन षण संभक्तौ ॥ ववनतुः । अवनीत् अवानीत् । सेनतुः ॥

भाषा—प्रउपसर्गसे परे तुम्पतिधातुको सुट्का आगम होय गो कर्त्ता हुए संत । उदाहरण—प्रस्तुम्पति गौः । इसमे प्रउपसर्गसे परे तुम्पति धातु विद्यमान है और गो कर्त्ता है इस कारण प्रतुम्पतिधातुमे सुट्का आगम करनेसे रूप सिद्ध हुआ । प्रस्तुम्पति गौः । प्रउपसर्ग और तुम्पतिधातुका अट् और द्वित्व कर अंतर हुए संतेभी सुट्का आगम होय । उदाहरण—प्र-अ-तुम्पत् । इसमें प्र और तुम्पति धातुके मध्यमें अट् है इस कारण तुम्पतिधातुको सुट्का आगम करनेसे रूप सिद्ध हुआ । प्रास्तुम्पत् । प्र-तु-तुम्प इसमें प्र उपसर्ग और तुम्पति धातुके मध्यमें तुम्पतिधातुका द्वित्वरूप 'तु है इस कारण तुम्पतिधातुको सुट्का आगम करनेसे रूप सिद्ध हुआ । प्रतुस्तुम्प । ओणृधातु अपनयन नाम दूर करनेरूप अर्थमें वर्त्ते है । ओणृ

-धातुके लङ्पर्यन्त रूप उक्षधातुके समान जानने लिट्के विषै 'कासादि प्रत्ययादाम्' इसकर गुरु नाम्यादि होनेसे आम् प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । ओणांचकार । इसी प्रकार शेष वचनोंमें जानना । वन और पण धातु भजनमें वर्त्ते हैं । लिट्के विषै वनधातुको वकारादि होनेसे 'लोप पचां किस्ये चास्य' इसकी प्राप्ति नहीं हुई तब, रूप सिद्ध हुए । ववनतुः ववनुः । इत्यादिक । पणधातुके 'लोप पचां किस्ये चास्य' इसकर एकार पूर्वलोप करनेपर रूप सिद्ध हुए । सेनतुः । सेनुः । आशीर्लिङ्के विषै सन्-यात् ऐसा स्थित है ॥

जनसनखनामात्वनिटि से क्विति झसे हे च क्वौ यादौ क्विति वा ॥ ९८ ॥ जनसनखनाम्, आत्वम्, अनिटि, से क्विति, झसे, हे, च, क्वौ, यादौ, क्विति वा । द्वादशपदमिदं सूत्रम् ॥ सायात् सन्यात् । असनीत् असानीत् ॥ चमु अदने ॥

भाषा–जन, सन, खन धातु इनके टिको आकार होय अनिट् सप्रत्यय पर हुए संते, कित् ङित् झसप्रत्याहार पर हुए संते, हकार पर हुए संते क्विप् प्रत्यय पर हुए संते, कित् ङित् यादादिक पर हुए संते विकल्प करके । उदाहरण–सन्-यात् । इसमें सनधातुसे परे कित् यात् विद्यमान है इस कारण सन्धातुके टिको आकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । सायात् । और जहां सन्के टिको आकार नहीं हुआ वहां रूप सिद्ध हुआ । सन्यात् । लुङ्के विषै 'अतो हलादेर्लघोर्वा वृद्धिः' सेटि सौ' इसकर एक जगह रूप सिद्ध हुआ । असनीत् । और एक जगह सिद्ध हुआ । असानीत् । चमु धातु भक्षणमें वर्त्ते है ॥

ष्ठिवुक्लम्वाचमां दीर्घोऽपि ॥ ९९ ॥ ष्ठिवुक्लम्वाचमाम्, दीर्घ, अपि । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ आचामति । आङः किम् । चमति । विचमति । चेमतुः । अचमीत् ॥ ष्ठिवु निरसने ॥

भाषा–ष्ठिवु, क्लमु और आङ्पूर्व चमुधातु इनको दीर्घ होय शप्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–आचम् अ ति । इसमें आङ्पूर्व चमुधातुसे शप् प्रत्यय परे विद्यमान है इस कारण चमुधातुको दीर्घ करनेसे रूप सिद्ध हुआ । आचामति । आङ् ऐसा क्यों कहा तहां कहते हैं कि जहां आङ्पूर्व नहीं होय वहां दीर्घ नहीं होय । जैसे–चमति । विचमति । लिट्के प्रथमभागके द्विवचनमें 'लोप पचां किस्ये चास्य' इसकर सिद्ध हुआ । चेमतुः । लुङ्के विषै 'हम्यन्तक्षणश्वस०' इस जगहसे वृद्धि न होनेपर रूप सिद्ध हुआ । अचमीत् । ष्ठिवु धातु निरसन अर्थमें वर्त्ते है । निरसन नाम थूकनेका है ॥

नामधातुष्वष्कष्ठिवां सत्वं न ॥ १०० ॥ नामधातुष्वष्कष्ठिवाम्, सत्वं, न। त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ ष्ठीवति ॥

भाषा—नामधातु, ष्वष्क और ष्ठिवु धातु इनके षकारको सकार नहीं होय। उदाहरण—ष्ठिव्-अ-ति ' इसमें ' ष्ठिवुक्लम्वाचमां दीर्घोऽपि ' इसकर प्रथम दीर्घ किया फिर ' आदेः ष्णः स्नः ' इसकर षकारको सकार नहीं हुआ क्योकि 'ष्ठिवु धातुके षकारको सकार नहीं होता है तब रूप सिद्ध हुआ। ष्ठीवति ॥

ष्ठिवेः पूर्वस्य ठस्य थो वा ॥ १०१ ॥ ष्ठिवेः, पूर्वस्य, ठस्य, थः, वा। पंचपदमिदं सूत्रम् ॥ तिष्ठेव टिष्ठेव। य्वोर्विहसे। ष्ठीव्यात्। अष्ठेवीत् ॥ कटे वर्षावरणयोः ॥

भाषा—ष्ठिवुधातुके पूर्वरूपके ठकारको थकार विकल्प करके होय। उदाहरण—लिट्के प्रथम वचनमें ' द्विश्च, न शसात्खपाः' इसकर रूप स्थित हुआ। ठिष्ठिव्-अ फिर पूर्वठकारको विकल्पकरके थकार किया तब ' झपानां जवचपाः, उपधाया लघोः' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ। तिष्ठेव। और ठकारको थकार नहीं हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ। टिष्ठेव। आशीर्लिङ्के विषैं ' य्वोर्विहसे ' इसकर इकारको दीर्घ करनेपर रूप सिद्ध हुआ। ष्ठीव्यात्। लुङ्के विषैं सिद्ध हुआ। अष्ठेवीत्। कटे धातु वर्षने तथा ढकनेमें वर्त्ते है ॥

हय्यन्तक्षणश्वस्जागृश्व्येदितां सेटि सौ न वृद्धिः ॥ १०२ ॥

हय्यन्त—श्व्येदिताम्, सेटि, सौ, न, वृद्धिः। पंचपदमिदं सूत्रम् ॥ अकटीत् ॥ हय गतौ ॥ अहयीत् ॥ जु रंहसि।

भाषा—हकारान्त, मकारान्त, यकारान्त, क्षणु धातु, श्वस् धातु, जागृ धातु, टुओश्वि धातु और एकार इत्वाला धातु इनको सेट् सिप्रत्यय पर हुए संते वृद्धि नहीं होय अर्थात् इट्युक्त सिके विषैं वृद्धि नही होय। उदाहरण—लुङ्लकारके विषैं कटधातुको ' अतो हसादेर्लघोर्वा वृद्धिः' इसकर वृद्धि नहीं हुई क्योंकि कटधातु एकार इत्वाला है तब रूप सिद्ध हुआ। अकटीत्। हयधातु गतिअर्थमें वर्त्ते है। लुङ्के विषैं हयधातुकोभी वृद्धि नही हुई क्योंकि हयधातु यकारान्त है तब रूप सिद्ध हुआ। अहयीत्। जुधातु वेग अर्थमें वर्त्ते है ॥

नानप्योर्वः ॥ १०३ ॥ न, अनपि, ओः, वः। चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ अनपि विषये उवर्णस्य वत्वं न ॥ जुजुवतुः। जुजविथ जुजोथ। अजोषीत् ॥ गुपू रक्षणे ॥

भाषा–जहां कि अप्प्रत्यय नहीं होता है उस विषयमें उवर्णको वकार नहीं होय । भाव यह है कि इन्द्र्आदिक चार इकारवर्जित इकारोंके विषें उवर्णान्त धातुको वकार नहीं होय । उदाहरण–लिट्के प्रथमपुरुषके द्विवचनमें गु-गु-अतुस् ऐसा स्थित है । अनेक स्वर असंयोगपूर्व होनेसे गुधातुके उकारको वकार होना चाहिये था सो ' नानप्योर्वः ' इसकर नहीं हुआ तब उव् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । जुगुवतुः । इसी प्रकार अन्य वचनोंमें जानना । लुङ्के प्रथमपुरुषके प्रथमवचनमें रूप सिद्ध हुआ ' धातोर्नामिन ' इसकर । अजौपीत् । गुपू धातु रक्षा करनेमें वर्त्ते है ॥

आय ॥ १०४ ॥ आर्ये । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्य स्वार्थे आय प्रत्यय । अनपि तु वा ॥

भाषा–गुपू, धूप, विच्छ, पण और पन धातु इनसे स्वार्थके विषें आय प्रत्यय होय । जहां कि अप्प्रत्यय नहीं होता है उस विषयमें विकल्पकरके आयप्रत्यय होय ॥

स धातु ॥ १०५ ॥ से , धातुः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ यङादिप्रत्ययान्त शब्दो धातुसंज्ञको भवति ॥ गोपायति । गोपायांचकार । जुगोप ।

भाषा– येङ् आदिक प्रत्यय हैं अन्तमें जिसके ऐसा शब्द धातुसंज्ञक होवे है । उदाहरण–गुपूधातुसे आय प्रत्यय करनेपर ' उपधाया लघो ' इसकर रूप हुआ । गोपाय । फिर आयप्रत्ययको यङादि होनेसे तदन्त गोपायशब्दकी धातुसंज्ञा होनेपर 'धातुत्वाधियादय' इसकर तिबादि प्रत्यय करनेपर 'अप् कर्तरि, अदे इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । गोपायति । लिट्के प्रथमपुरुषके प्रथमवचनमें आयप्रत्यय करनेपर अनेक स्वर होनेसे 'कासाद्विप्रत्ययादाम्०' इसकर आम् किया फिर कृ अस् भू परमें करनेसे *' द्वित्व, धातोर्नामिनः' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । गोपायांचकार । गोपायामास ।* गोपायांबभूव । और जहां आयप्रत्यय नहीं हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । जुगोप । आशीर्लिङ्के विषें जहां आयप्रत्यय हुआ वहां स्थित हुआ गोपाय-यात् ॥

यत ॥ १०६ ॥ यतेः । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ यस्यातश्चानपि लोप ॥ गोपाय्यात् गुप्यात् । गोपायिता गोपिता गोप्ता । अगोपायीत् अगोप्सीत् ॥

झसात् ॥ १०७ ॥ झसात् । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ अगौप्ताम् ॥ एव

---

१ यट सकाम्या इयद् चोति वगायमिश्रीकस्तथा । आचारे क्रियो यश होमा दश यटादय ॥ १ ॥ इति ॥

धूप संतापे ॥ तप संतापे ॥ तेपिथ ततप्थ । अताप्सीत् ॥ जप जल्प व्यक्तायां वाचि ॥ जेपिथ । जपिता । अजापीत् ॥ क्रमु पादविक्षेपे ॥

भाषा–यकार और अकारका लोप होय अप्विषयवर्जित स्थानके विषैं । उदाहरण–गोपाय-यात् । इसमें अप्विषयवर्जित यात्प्रत्यय परे विद्यमान है इस कारण यकार उत्तरवर्त्ती अकारका लोप किया तहां रूप सिद्ध हुआ । गोपाय्यात् । और जहां आयप्रत्यय नहीं हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । गुप्यात् । तादिकमें जहा आयप्रत्यय हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । गोपायिता । और जहां आयप्रत्यय नहीं हुआ तहां 'ऊदितो वा' इसकर विकल्पकरके इट् होनेसे रूप सिद्ध हुआ । गोपिता, गोप्ता । लुङ्के विषैं जहां आयप्रत्यय हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । अगोपायीत् । और जहां आय नहीं हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । अगोपीत् । और जहां 'ऊदितो वा' इसकर इट् नही हुआ तहा 'अनिटो नामिवतः' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । अगौप्सीत् । द्विवचनमें 'झसात्' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अगौप्ताम् । इसी प्रकार धूपधातुसे आयप्रत्यय जानना । धूपधातु संतापअर्थमें वर्त्ते है और तपधातुभी संतापअर्थमे वर्त्ते है । थप्के विषैं 'स्वरान्तादत्वतश्च तादौ नित्याऽनिटस्थपो वेट्' इसकर एक जगह इट् किया तहां लोप 'लोपः पचां कित्ये चास्य' इसकर रूप सिद्ध हुआ । तेपिथ और इट्का आगम नहीं हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । ततप्थ । लुङ्के प्रथमवचनमें सिकी णित् संज्ञा होनेपर 'अत उपधायाः' इसकर रूप सिद्ध हुआ । अताप्सीत् । जप और जल्प धातु स्पष्ट बोलनेमें वर्त्ते हैं थप्के विषैं 'लोपः पचाम्०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । जेपिथ । तादिकके विषैं सिद्ध हुआ । जपिता । क्रमुधातु पादविक्षेप अर्थात् पावोंके चलानेमें वर्त्ते है ॥

भ्राशभ्लाशभ्रमुक्रमुक्लमुत्रसित्रुटिलषां यो वा कर्त्रर्थेषु चतुर्षु १०८

भ्राशे--लषाम्, यः, वा, कर्त्रर्थेषु, चतुर्षु । पञ्चपदमिदं सूत्रम् ॥

भाषा–भ्राश, भ्लाश, भ्रमु, क्रमु, क्लमु, त्रासि, त्रुट, लष धातुओंसे विकल्पकरके यप्रत्यय होय कर्त्ता है अर्थ जिनका ऐसे लट् आदिक चार लकार पर हुए संते ॥

क्रमः पे दीर्घोऽव्विषये ॥ १०९ ॥ क्रमः, पे, दीर्घः, अव्विषये । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ क्राम्यति । क्रामति । अक्रमीत् ॥ यम उपरमे

भाषा–क्रमुधातुको दीर्घ होय परस्मैपदके विषैं लट् आदिक चार लकारोंमे । उदाहरण–क्रमुधातुसे यप्रत्यय किया एक जगह तब रूप हुआ । क्रम्यति । फिर क्रमधातुको दीर्घ किया तब रूप सिद्ध हुआ । क्राम्यति । और जहां यप्रत्यय नहीं हुआ तहां केवल दीर्घही होकर 'अप् कर्तरि' इसकर रूप सिद्ध हुआ ।

क्रामति । इसके विषैं मकारान्त होनेसे वृद्धिको प्राप्त नहीं हुआ । तब रूप सिद्ध हुआ । अक्रमीत् । यमधातु उपरम नाम निवृत्तिअर्थमें वर्ते है ॥

गमां छ ॥ १११० ॥ गमीम्, छं । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ गमयमेषूणां छ स्यादश्विषये ॥ यच्छति । येमिथ ययन्थ ॥

भाषा—गम, यम और इषु धातु इनके अन्त्यवर्णको छ आदेश होय अश्विषय अर्थात् अद् आदिक चार लकारोंके विषैं । उदाहरण—यमधातुके मकारको छ आदेश करनेपर ' छ ' इत्यादिक रूप सिद्ध हुआ । यच्छति । थपके विषैं 'स्वरान्ता-दुत्तसभ०' इसकर एक जगह इट् करनेपर 'लोप पचां० ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । येमिथ । और जहां इट् नहीं हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । ययथ । लुङ्के विषैं यमधातुको अनिट्कारिकामें अनिट् होनेसे अयम रूप स्थित है अयम्-स-ई-द ॥

यमिरमिनमातां सक्सेरिट् पे ॥ १११ ॥ यमिरमिनेमाताम्, सक्, से, इट्, पे । पञ्चपदमिदं सूत्रम् ॥ अयंसीत् अयंसिष्टाम् ॥ णम प्रह्वत्वे शब्दे च ॥ नेमिथ । ननन्थ । अनंसीत् ॥ ईर्क्ष्य ईर्ष्य ईर्ष्या-याम् ॥ ईर्क्ष्यति । ऐर्क्ष्यीत् ऐर्ष्यीत् ॥ गम्लृ गतौ ॥ गच्छति ॥

भाषा—यम, रम, नम और आकारान्त धातु इनको सक्का आगम होय और सिको इट्का आगम होय परस्मैपदके विषैं । उदाहरण—अयम्-स-ई-द् । इसमें यमधातुको सक्का आगम किया और सिको इट् किया तब रूप हुआ । अयम् स-इ-स-ई-द फिर ' नश्चापदान्ते झले इट ईटि' इत्यादिक रूप सिद्ध हुआ । अयंसीत् । द्विवचनमें । अयंसिष्टाम् । नमधातु नम्रतामें तथा शब्द करनेमें वर्ते है यप के विषैं यमके समान रूप जानने और शेष लकारोंमेंभी यमके समान रूप जानने । ईर्क्ष्य और ईर्ष्य यह दोनों धातु ईर्ष्या अर्थके विषैं वर्ते हैं इन दोनों धातुओंके रूप इविधातुके समान जानने । गम्लृधातु गतिअर्थमें वर्ते है । ' गमां छः ' इसकर रूप सिद्ध हुआ लट्के प्रथमपुरुषके प्रथमवचनमें । गच्छति । लिट्के द्विवचनमें जग म्-अतुस् ऐसा स्थित है ॥

गमां स्वरे ॥ ११२ ॥ गमांमें, स्वरे । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ गम्-हन्‌जन्‌खन्‌घसामुपधाया लोप स्यात्स्वरे क्ङिति न तु के ॥ जग्मतुः । जगमिथ जगन्थ ॥

भाषा— गम, हन, जन, खन् और घस् धातु इनकी उपधाका लोप होय कि ङित्संज्ञक स्वर पर हुए संते और क यह पर हुए संते नहीं होय । उदाहरण—

जगम्-अतुस् । इसमें कित्संज्ञक अतुस् प्रत्यय परे विद्यमान है इस कारण गमधातुकी उपधा अकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । जग्मतुः । थप्में इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । जगमिथ । और जहां इट् नहीं हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । जगंथ । आशीर्लिङ्के विषें । गम्यात् । लुट्के विषें अनिट्कारिकामें अनिट् होनेसे रूप सिद्ध हुआ । गंता । लृट्के विषें गम्-स्य-ति ऐसा स्थित है इसको अनिट् होनेसे इट् नहीं होना चाहिये था ॥

हन्नृतः स्यपः ॥ ११३ ॥ हन्नृतः, स्यपः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥
हन्तेः ऋदन्ताच्च परस्य स्यप इड् भवति गमेस्तु पे ॥ गमिष्यति ॥

भाषा—हन् धातु और ऋकारान्त धातुसे परे स्यप्के इट्का आगम होय और गम धातुसे परे स्यप्को परस्मैपदकेही विषें इट्का आगम होय । उदाहरण—गम्-स्य-ति । इसमें गम्धातुसे परे परस्मैपदके विषें स्यप् है इस कारण स्यप्को इट्का आगम करनेपर 'क्लिात्पः०' इसकर रूप सिद्ध हुआ । गमिष्यति । लृङ्के विषें । अगमिष्यत् । लुङ्के विषें अगम्-स-द् ऐसा है ॥

लित्पुषादेर्ङः ॥ ११४ ॥ लित्पुषादेः, ङः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥
लितो धातोः पुषादेश्च ङः प्रत्ययः स्यात् पे ॥ सेरपवादः । अगमत् ॥
म्रुचु म्लुचु गतौ ॥ म्रोचति ॥

भाषा—लकार इत् है जिसका ऐसे धातुसे और पुष् आदिक धातुओंसे परस्मैपदके विषें ङ प्रत्यय होय और सिका अपवाद होय अर्थात् सिके स्थानमें ङ प्रत्यय होय । अगम्-स्-द् । इसमें सिके स्थानमें ङ प्रत्यय किया क्योंकि लकार इत्वाला गमधातु परस्मैपदके विषें विद्यमान है तब रूप हुआ अगम्-अ-द् इसमें ङकार इत्संज्ञक है फिर 'स्वरहीनं परेण०' इसकर रूप सिद्ध हुआ । अगमत् । म्रुचु और म्लुचु धातु गति अर्थमें वर्त्ते हैं लट्के विषें 'अप् कर्त्तरि, उपाधाया लघोः' इनकर सिद्ध हुआ । म्रोचति । इसी प्रकार सिद्ध हुआ । म्लोचति ॥

म्रुचादेर्वा ङः ॥ ११५ ॥ म्रुचादेः, वा, ङः । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥
अम्रुचत् अम्रोचीत् । अम्लुचत् अम्लोचीत् ॥ ग्रुचु ग्लुचु चौर्ये ॥
अग्रुचत् अग्रोचीत् । अग्लुचत् अग्लोचीत् ॥ ग्लुञ्चु गतौ ॥
अग्लुञ्चत् अग्लुञ्चीत् ॥ ञिफला विशरणे ॥

भाषा—म्रुचु म्लुचु, ग्रुचु, ग्लुचु, ग्लुंचु इनसे सिके स्थानमे विकल्पकरके ङ प्रत्यय होय । उदाहरण—म्रुचुधातुसे सिके स्थानमे ङ प्रत्यय करनेपर रूप सि-

हुआ । अग्लुचत् और जहां ङ प्रत्यय नहीं हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । अग्रो- चीत् । इसी प्रकार । अग्लुचत् । अग्लोचीत् । ग्लुच् और ग्लुञ्चु यह दोनों धातुओंमें वर्ते हैं । ग्लुच्धातुकेही समान इन दोनों धातुओंके रूप जानने । ग्लुञ्चुधातु गति अर्थमें वर्ते है ग्लुञ्चधातुका रूप लुङ्के विषैं एक जगह ङ प्रत्यय करनेपर 'नो लोपः' इसकर सिद्ध हुआ । अग्लुचत् । और एक जगह सिके विषैं सिद्ध हुआ । अग्लुचीत् । इत्यादि । ञिफला धातु विशरणअर्थमें वर्ते है इसमें ञि और आकार इत्संज्ञक है । विशरण नाम अंगोंके विभाग करनेका है । लिट्के प्रथमपुरुषके प्रथम- वचनमें 'द्विश्च, अपानां जशचपा, अत उपधायाः' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । पफाल । द्विवचनमें पफल-अतुस् ऐसा स्थित है ॥

तॄफलभजत्रपां किति णादौ सेटि थपि चैत्वपूर्वलोपौ ॥११६॥

तॄफलभजत्रपाम्, किति, णादौ, सेटि, थपि, च, एत्वपूर्वलोपौ ।

सप्तपदमिदं सूत्रम् ॥ फेलतुः । फेलिथ ॥

भाषा—तॄ, फल, भज और त्रप् धातु इनके पूर्वका लोप और अकारको एकार होय कित् णप् आदिक प्रत्यय और इट्युक्त थप् पर हुए संते । उदाहरण—पफ- ल-अतुस् । इसमें फलधातुसे परे कित् अतुस् विद्यमान है इस कारण पूर्वका लोप और पकार उत्तरवर्ती अकारको एकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । फेलतुः । थप्के विषैं इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । फेलिथ । लुङ्के प्रथमभागके प्रथमवचनमें अ-फल्-ई- स्-ई-द् ऐसा स्थित है ॥

लान्तस्य ॥ ११७ ॥ लान्तस्य । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ लसमी- पाकारस्य सौ नित्यं वृद्धिः ॥ अफालीत् ॥ फल निष्पत्तौ ॥ फेलतुः । अफालीत् ॥ चर गतिभक्षणयोः ॥ अचारीत् ॥ रपु शब्दोपतापयोः ॥ स्वरति । सस्वार ॥

भाषा—लकार और रकार है अन्तमें जिसके ऐसा जो धातु ताके अन्तके लकार रकारके समीप अकार तिसको सिके विषैं नित्यही वृद्धि होय । उदाहरण—अफल्- इ-स्-ई-द् । इसमें फलधातुके अंत्यलकारके समीप फकारउत्तरवर्ती अकार है इस कारण इसको नित्य वृद्धि करनेसे 'इट ईटि' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । अफा- लीत् । फलधातु सिद्धि अर्थमें वर्ते है इसी प्रकार फलधातुके रूप जानने । चर धातु गति और भक्षणअर्थमें वर्ते है इसी प्रकार चरधातुके रूप जानने । स्वृधातु शब्द और रोगअर्थमें वर्ते है । लट्में 'अप् कर्तरि, गुणः' इनकर रूप सिद्ध हुआ । स्वरति ।

लिट्के प्रथमभागके प्रथमवचनमें ' द्विश्च, रः, धातोर्नामिनः ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । सस्वार । द्विवचनमे स-स्वृ-अतुस् ऐसा स्थित है ॥

गुणोऽर्त्तिसंयोगाद्योः ॥११८॥ गुणः, अर्त्तिसंयोगाद्योः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ सस्वरिथ सस्वर्थ । सस्वरिव । स्वर्यात् । स्वरिष्यति । अस्वरीत् । अस्वारिष्टाम् । अस्वार्षीत् अस्वार्ष्टां अस्वार्षुः ॥ जि जये ॥

भाषा—अर्त्तिधातु अर्थात् ऋ धातुको और संयोग है आदिमें जिसके ऐसे ऋकारान्त धातुको गुण होय । यक्, यङ्, कित्संज्ञकणवादि और आशीर्यादादिक पर हुए संते । उदाहरण—स-स्वृ-अतुस् । इसमें संयोग आदिवाला ऋकारान्त स्वृधातु है इसको गुण किया क्योंकि कित् णादिकोंमें अतुस् प्रत्यय परे विद्यमान है तव रूप सिद्ध हुआ । सस्वरतुः । थपूमे ' ऊदितो वा ' इसकर विकल्प करके इट् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । सस्वरिथ, सस्वर्थ । और उत्तमभागके द्विवचनमें कित्संज्ञक वसादि णादिमेंसे व प्रत्यय होनेसे नित्यही इट् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । सस्वरिव । आशीर्लिङ्के प्रथमपुरुषके प्रथमवचनमे ' गुणोर्त्तिसंयोगाद्योः ' इसकर गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । स्वर्यात् । ल्टमे ' हन्नृतः स्यपः ' इसकर नित्यही इट् होनेसे रूप सिद्ध हुआ । स्वरिष्यति । लुङ्में जहां इट् हुआ । तहां ' धातोर्नामिनः ' इसकर वृद्धि करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अस्वारीत् । द्विवचनमे । अस्वारिष्टाम् । और जहां इट् नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । अस्वार्षीत् । द्विवचनमें । अस्वार्ष्टाम् । जिधातु उत्कर्ष प्राप्तिअर्थमें वर्त्ते है । लट्के विषें ' अप् कर्त्तरि, गुणः ' इसकर सिद्ध हुआ । जयति ॥

सपरोक्षयोर्जेर्गिः ॥ ११९ ॥ सपरोक्षयोः, जेः, गिः । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ जिगाय जिग्यतुः जिग्युः । जिगयिथ जिगेथ । जीयात् । अजैषीत् ॥ कृष विलेखने ॥ कर्षति । चकर्ष । चकर्षिथ ॥

भाषा—सप्रत्यय और परोक्षार्थ णवादि पर हुए संते जिको गि आदेश होय । उदाहरण—णपूमें जिको गि आदेश करनेपर ' धातोर्नामिनः ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । जिगाय । द्विवचनमें अनेक स्वर असंयोगपूर्व होनेसे इकारको यकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । जिग्यतुः । थपूमें ' स्वरान्तादत्वतश्च ' इसकर विकल्पकरके इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । जिगयिथ, जिगेथ । आशीर्लिङ्में ' ये ' इसकर सिद्ध हुआ । जीयात् । लुङ्में अनिट् होनेसे ' धातोर्नामिनः ' इसकर सिद्ध हुआ ।

अकर्षीत् । कृष धातु विलेखन अर्थमें वर्त्ते है। विलेखन नाम आकर्षण अर्थात् खेंचनेका है। लट्में ' अप् कर्त्तरि, उपधाया लघो ' इसकर सिद्ध हुआ। कर्षति। लिट्में ' द्विश्च र', कुहोश्चु', उपधाया लघो ' इनकर रूप सिद्ध हुआ। चकर्ष। थप्में इट् करनेसे रूप सिद्ध हुआ। चकर्षिथ। लुट्में कृष्-ता ऐसा स्थित है यह धातु अनिट्कारिकामें अनिट् गिनाया है इस कारण इट् नी हुआ नहीं 'उपधाया लघो' इसकर गुण हुआ तब रूप स्थित हुआ कर्ष्-ता फिर ॥

रारो झसे दृशाम् ॥१२०॥ रः, अरे, झसे, दृशाम् । चतुष्पदमिद सूत्रम् ॥ दृशसृजकृषमृशस्पृशतृपदृपसृपां झसेऽरो रो भवत्यारो राश्च ॥

भाषा-दृश्, सृज् कृष्, मृश्, स्पृश्, तृप्, दृप् और सृपधातु इन्होंके अर्को र और आर्को रा होय झस प्रत्याहार पर हुए सते। उदाहरण—कर्ष्-ता। इसमें कृष् धातुके अर्को र किया क्योंकि झसप्रत्याहारसंबन्धी ता परे विद्यमान है तब ' ष्टुभि ष्टुः ' इसकर रूप सिद्ध हुआ। क्रष्टा ॥

कृपादीनां वा ॥ १२१ ॥ कृपादीनां, वा । द्विपदमिद सूत्रम् ॥

क्रष्टा कर्ष्टा ॥

भाषा-कृष् आदिक छः धातुओंके अर्को र और आर्को रा विकल्पकरके होय झस प्रत्याहार पर हुए संते। उदाहरण—कर्ष्-ता। इसमें एक जगह अर्को र नहीं हुआ तहाँ ष्टुभि ष्टुः इसकर रूप सिद्ध हुआ। कर्ष्टा। लट्में ' उपधाया लघो ' इसकर गुण करनेसे रूप स्थित हुआ कर्ष्-स्य-ति फिर कृपादीनां वा ' इसकर एक जगह अर्को र और एक जगह नहीं किया तब स्थित हुआ। क्रष्-स्य-ति । कर्ष्-स्य-ति ॥

षढो कः से ॥ १२२ ॥ षढोः, कः, से । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ धातो षढयो कत्वं स्यात्से परे ॥ क्रक्ष्यति कर्क्ष्यति । अक्राक्षीत् । अकार्क्षीत् ॥

भाषा-धातुके षकार और ढकारको ककार होय स पर हुए संते। उदाहरण—क्रष्-स्य-ति । कर्ष्-स्य-ति । इसमें कृष्धातुके षकारको ककार किया क्योंकि परमें स्यमें का सकार विद्यमान है तब रूप स्थित हुआ। क्रक्-स्य-ति । कर्क्-स्य ति । फिर ' किलात्पः स' कषसंयोगे क्ष ' इनकर सिद्ध हुआ। क्रक्ष्यति । कर्क्ष्यति। लुङ्में अकृष्-स-ई-द् ऐसा स्थित है ' अनिटो नामिवत ' इसकर वृद्धि करनेपर कृपादीनां वा इसकर एक जगह आर्को रा किया तब रूप स्थित हुआ। अक्राष्-स-ई-द् । अकार्ष्-स-ई-द । फिर षढो कः से, किलात्पः, कषसंयोगे क्ष '

इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । अक्राक्षीत् । अकार्क्षीत् । और द्विवचनमे 'झसात्' इसकर सिका लोप होनेपर । अक्राष्टाम् । अकार्ष्टाम् ॥

कृषमृषस्पृशमृशतृपदृपां वा सिः ॥ १२३ ॥ कृषमृषस्पृशमृशतृपदृपाम्, वा, सिः । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥

भाषा—कृष् ,मृष्, स्पश्, मृश्, तृप् और दृप् धातु इनसे विकल्प करके सि होय ॥

हशषान्तात्सक् ॥ १२४ ॥ हशषान्तात्, सक् । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ हान्तात् शान्तात्षान्तान्नाम्युपधादनिटः सक् प्रत्ययः स्याद्दिबादिपरो न तु दृशेः ॥ सेरपवादः । अकृक्षत् ॥ सृप्लृ गतौ ॥ सर्पति । स्रप्ता सर्प्ता । असृपत् ॥ क्रुश आह्वाने रोदने च ॥ क्रोशति । क्रोष्टा । अक्रुक्षत् ॥ रुष रिष शिष हिंसायाम् ॥

भाषा—नामिसंज्ञक स्वर है उपधामे जिसके ऐसा अनिट् हकारान्त धातु और षकारान्त धातु और षकारान्त धातुसे परे दिप् आदिक प्रत्यय हैं परे जिसके ऐसा सक् प्रत्यय होय और दृश् धातुसे सि सक् प्रत्यय नही होय सिका अपवाद होय । उदाहरण—जहां कृष् धातुसे सि नहीं हुआ तहां कृष्धातुसे सक् प्रत्यय किया क्योंकि कृष्धातु षकारान्त है और उपधामे नामिसंज्ञक स्वर ऋकार है और तीसरे अनिट्कारिकामें अनिट् कहा है तब रूप स्थित हुआ अकृष्-स-द् फिर गुण तौ हुआ नहीं क्योंकि कित्सक् परे विद्यमान है । फिर 'षढोः कः से, क्लिा०, कषसंयोगे क्षः' इनकर रूप सिद्ध हुआ । अकृक्षत् । सृप्लृधातु गतिअर्थमें वर्त्ते है लट्मे सिद्ध हुआ । सर्पति । लुट्में अनिट् होनेसे 'कृषादीनां वा' इसकर रूप सिद्ध हुआ । स्रप्ता, सर्प्ता । और लुङ्के विषैं 'लित्पुषादेर्डः' इसकर ङ प्रत्यय किया क्योंकि लृकार इत्वाला सृप्लृधातु है तब रूप सिद्ध हुआ । असृपत् । कृश-धातु बुलाने और रोवनेमें वर्त्ते है । लट्में । क्रोशति । लुट्में अनिट् होनेसे इट् नहीं हुआ । किन्तु 'उपधाया लघोः, छशषराजादेः षः, ष्टुभिः ष्टुः' इनकर रूप सिद्ध हुआ । क्रोष्टा । लुङ्में 'हशषान्तात्सक्' इसकर सक् प्रत्यय करनेपर 'छश-षराजादेः षः, षढोः कस्से, क्लिातषः' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । अक्रुक्षत् । रुष्, रिष्, शिष् धातु हिंसाअर्थमें वर्त्ते हैं ॥

इषुसहलुभरिषरुषामनपि तस्येड्वा ॥ १२५ ॥ इषुसहलुभरिषरुषाम्, अनपि, तस्य, इट्, वा । पंचपदमिदं सूत्रम् ॥ रोषिता रोष्टा ।

रेपिता रेप्ता । अशिक्षिव ॥ उप गतौ ॥ ओपति । ओपाचकार । उवोप ॥ मिह सेचने ॥

भाषा–इषु, सह, लुभ, रिष और रुष् धातु इनसे परे अप्रविपयवर्जितमें तकार रकारे विकल्पकरके इट् होय । उदाहरण–लुट्के विषे रुष् और रिष्धातुसे परे तादिकको विकल्पकरके इट् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । रोपिता रोष्टा । रेपिता रेष्टा । शिपधातुको अनिट् होनेसे ' हशषान्तात्सक ' इसकर सक् करनेपर ' षढो' कः से ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ लुट्के प्रथमभागके प्रथमवचनमें । अशिक्षित् । कोई आचार्य शिप्धातुको सेट कहते हैं । तहां लुङ्के विषें रूप सिद्ध हुआ । अशेपीत् । उपधातु गतिअर्थमें वर्त्ते है कोई आचार्य दाह अर्थके विषें कहते हैं । लिट्के विषें 'विदुदारिद्राजागृभ्यां वा इसकर विकल्पकरके आम् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । ओपांचकार । और जहां आम् नहीं हुआ तहां ' उपधाया लघो , अस वर्णे स्वरे इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । उवोप । मिहधातु सेचनअर्थमें वर्त्ते है । सेचन नाम गीछे करनेका है । लुट्के विषें मिहधातुको अनिट् होनेसे प्रथम रूप स्थित हुआ ' उपधाया एघो' ' इसकर मेह्-ता फिर ' हो ढः ' इसकर हकारको ढकार करनेपर तयोध' ' इसकर ताको धा किया फिर ' ष्टुमि' ष्टु. ' इसकर धकारको ढकार करनेपर रूप स्थित हुआ मेढ् ढा ॥

ढि ढो लोपो दीर्घश्च ॥ १२६ ॥ ढि, ढँ, लोप, दीघ, च । पञ्चादमिदं सूत्रम् ॥ ढे परे ढस्य लोप स्यात्पाचूतो दीर्घ ॥ मेढा । षढो क से । अमिक्षत् ॥ दह भस्मीकरणे ॥ देहिथ ददग्ध । घ-क्ष्यति । अधाक्षीत् । ससाद । अदाग्धाम् ॥ इवि व्याप्तौ ॥ इन्वति । इन्वांचकार । ऐन्वीत् ॥ हिवि दिवि धिवि जिवि प्रीणने ॥ हिन्वति ॥

भाषा–ढकार पर हुए संते ढकारका लोप होय और अकारको त्यागि पूर्वस्व रको दीर्घ होय । उदाहरणमें–ढ्-ढा । इसमें ढकारका लोप किया क्योंकि ढकार पर विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । मेढा । लुङ्में ' हशषान्तात्सक ' इसकर सक् करनेपर ' हो ढ , षढोः कस्से, किरुत्स्यः ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । अमिक्षत् । दहधातु भस्म करनेमें वर्त्ते है थप्में ' स्वरान्तादस्वतथ ' इसकर एक जगह इट् करनेपर लोप' पर्श कि० इसकर पूर्वका लोप और अकारको एकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । देहिथ । और जहां इट् नहीं हुआ तहां ' दादेर्घः ' इसकर हकारको घकार करनेपर ' तथोर्धः, हशे जशः ' इसकर रूप सिद्ध हुआ ।

ददग्ध । लृट्के विषें 'दादेर्घः, आदिजबानां झभान्तस्य झभाः, स्ध्वोः ' इनकर रूप स्थित हुआ धघ्-स्य-ति फिर 'खसे चपा झसानाम्' इसकर घकारको ककार करनेपर 'किलात्षः' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । धक्ष्यति । लुङ्म 'दादेर्घः, आदिजबाना झभान्तस्य०, खसे चपा झसानाम्' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । अधाक्षीत् । द्विवचनम 'झसात्' इसकर सिका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अदाग्धाम् । इविधातु व्याप्तिअर्थमे वर्त्ते है । 'इदितो नुम्' इसकर लट्मे रूप सिद्ध हुआ । इन्वति । इविधातुको गुरुनाम्यादि होनेसे लिट्मे रूप सिद्ध हुआ । इन्वांचकार । लुङ्के विषें सिद्ध हुआ । ऐन्वीत् । हिवि, दिवि, धिवि, जिवि धातु प्रीणन नाम तृप्ति करनेमे वर्त्ते हैं ॥

धिन्विकृण्वोर्वस्य लोपो गुणाभाव उप्प्रत्ययश्चाद्विषये ॥ १२७॥ धिन्विकृण्व्योः, वस्य, लोपः, गुणाभावः, उप्प्रत्ययः च, अद्विषये । सप्तपदमिदं सूत्रम् ॥ आभ्यामुप् प्रत्ययः स्यात् धातोर्वकारस्य लोपो गुणाभावश्च चतुर्षु ॥

भाषा–धिन्विधातु और कृण्विधातुके वकारका लोप होय और गुणका अभाव होय और उप्प्रत्यय होय लट् आदिक चार लकारोंके विषैं ॥

नूपः ॥ १२७❀ ॥ नूपः । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ विकरणस्य नुप्रत्ययस्योप्प्रत्ययस्य च गुणो भवति पिति परे ॥ धिनोति ॥

भाषा–विकरण नुप्रत्यय और उप्प्रत्ययको गुण होय पकार इत्वाला प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–धिविधातुको 'इदितो नुम्' इसकर नुम् करनेपर वकारका लोप किया और गुण किया नहीं और उप्प्रत्यय किया तब रूप हुआ धिनु-ति फिर पकार इत्वाले तिप्प्रत्ययके परमें होनेसे उप्प्रत्ययको गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । धिनोति । उत्तमभागके दोनों वचनोंमें प्रथम, स्थित हुआ धिनु-वः, धिनु-मः फिर ॥

ओर्म्वोर्वा लोपः ॥ १२८ ॥ ओः, म्वोः, वा, लोपः । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ असंयोगपूर्वस्य प्रत्ययोकारस्य लोपो वा वमयोः ॥ धिन्वः धिनुवः । धिन्मः धिनुमः । मिपि तु गुणो बाधकः । धिनोमि ॥

भाषा–नही है संयोग पूर्व जिसके ऐसे प्रत्ययके उकारका लोप विकल्प करके होय प्रत्ययोंके वकार मकार पर हुए संते । उदाहरण–धिनु-वः धिनु-मः ।

इसमें असंयोगपूर्व प्रत्ययके उकारका लोप किया विकल्पकरके क्योंकि वम प्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुए । धिन्वः, धिनुवः । धिन्मः, धिनुमः । मिप्के विषैभी वकारके लोप होनेकी प्राप्ति है सो नहीं हुई क्योंकि मिप्में वकारके लोपकी प्राप्तिका गुण करना बाधा करता है ॥

ओर्वा हे ॥१२९॥ ओ, वा, हे । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ असंयोगपूर्वात्प्रत्ययोकाराद्धेर्लोपो भवति ॥ धिनु धिनुतात् ॥ कृवि हिंसाकरणगतिषु ॥ कृणोति ॥ कृण्वन्ति । चकृण्व ॥ अक्षू व्याप्तौ ॥ अक्षो नुप्रत्ययोऽन्विषये । अक्ष्णोति । अक्ष्णुवन्ति । अक्षति । आनक्षिथ आनष्ठ । अक्षिता अष्टा । अक्षिष्यति अक्ष्यति । आक्षीत् आक्षिष्टाम् । आक्षीत् आष्टाम् आक्षुः ॥ तक्षू त्वक्षू तनूकरणे ॥

भाषा—नहीं है संयोग पूर्व जिसके ऐसे प्रत्ययके उकारसे परे हिका लोप होय । उदाहरण—लोट्के मध्यमभागके प्रथमवचनमें असंयोग पूर्व प्रत्ययके उकारसे परे हि विद्यमान है इस कारण हिका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । धिनु । और जहां हिको तातङ् आदेश हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । धिनुतात् । कृविधातु मारनेमें, करनेमें और गतिअर्थमें वर्त्ते है । लट्में धिविके समान सिद्ध हुआ । कृणोति । बहुवचनमें 'हुश्नुवोरेवापि' इसकर उकारको वकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ कृण्वन्ति । लिट्में 'द्वित्व, कुहोश्चुः, र' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । चकृण्व । अक्षूधातु व्याप्तिअर्थमें वर्त्ते है । अक्षधातुसे विकल्पकरके नुप्रत्यय होय अन्विषय. अर्थात् लट् आदिक चार लकारोंके विषै । उदाहरण—एक जगह अक्षधातुसे नु प्रत्यय किया तब गुण करनेपर 'ष्टुभि ष्टुः' इसकर रूप सिद्ध हुआ । अक्ष्णोति । और अन्तिके विषै संयोग पूर्व होनसे 'हुश्नुवोः' इसकर उव् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अक्ष्णुवन्ति । लिट्के णप्में संयोगान्तावकारादि होनेसे 'नुगशाम्' इसकर पूर्वको नुक् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । आनक्ष । और थप्में 'ऊदितो वा' इसकर एक जगह इट् किया तहां रूप सिद्ध हुआ । आनक्षिथ । और जहां इट् नहीं हुआ तहां 'ष्टुभि ष्टुः' कर षको ठ किया फिर 'स्कोरादयोश्च' इसकर क्षमें जो ककार है उसका लोप करनेपर रूप हुआ आनष्ठ फिर 'स्वरहीन परेण सं०' इसकर रूप सिद्ध हुआ । आनष्ठ । इसी प्रकार तादिकमें इट्पक्षमें सिद्ध हुआ । अक्षिता । और अनिट्पक्षमें सिद्ध हुआ । अष्टा । लृट्के विषे इट्पक्षमें । अक्षिष्यति । और अनिट्पक्षमें 'स्कोरादयोश्च' इसकर ककारका लोप करनेपर 'षढोः कः से' इसकर षकारको ककार किया फिर 'किलात्प०' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । अक्ष्यति ।

इसी प्रकार लुङ्मे सेट्पक्षमें । आक्षीत् आक्षिष्टाम् । और अनिट्पक्षमें । आक्षीत् आष्टाम् । इत्यादिक जानने । तक्षू और त्वक्षू यह दोनो धातु तनूकरण अर्थमें वर्त्ते हैं । तनूकरण नाम सूक्ष्म करनेका है ॥

तक्षस्तनुकरणे नुर्वा अभिषये ॥ १३० ॥ तक्षः, तनूकरणे, नुः, वा, अभिषये । पञ्चपदमिदं सूत्रम् ॥ तक्ष्णोति तक्षति वा काष्ठान् । ततक्षिथ ततष्ठ । अतक्षीत् अतक्षिष्टाम् । अताक्षीत् अताष्टाम् । तनूकरणे किम् । वाग्भिः संतक्षति । भर्त्सयतीत्यर्थः ॥ णिक्ष चुम्बने ॥ प्रणिक्षति निक्षति ॥ ग्लै म्लै हर्षक्षये ॥

भाषा–तक्षधातुसे तनूकरण अर्थके विषैं नुप्रत्यय होय अप्विषय अर्थात् लट् आदिक चार लकारोंमें । उदाहरण–तक्षधातुसे नुप्रत्यय करनेपर तिप्में रूप सिद्ध हुआ । तक्ष्णोति । थप्मे 'ऊदितो वा' इसकर सेट्पक्षमे । ततक्षिथ । अनिट्पक्षमें 'ष्टुभिः ष्टुः, स्कोरा०' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । ततष्ठ । शेष लकारोंमें अक्षूके समान रूप जानने । इसी प्रकार त्वक्षूधातुके रूप होते हैं । तनूकरण अर्थमेंही नुप्रत्यय होय ऐसा क्यों कहा तहा कहते हैं कि अन्य अर्थोंके विषैं नुप्रत्यय नहीं होय । जैसें–वाग्भिः संतक्षति । इसमें संपूर्व तक्षधातुका तिरस्कार अर्थ है । णिक्षधातु चूंबनेमें वर्त्ते है और ग्लै और म्लै धातु हर्षक्षयमे वर्त्ते हैं । हर्षक्षय नाम ग्लानिका है । तिप्में 'अप्कर्त्तरि, ऐ आय' इनकर रूप सिद्ध हुआ । ग्लायति । म्लायति ॥

सन्ध्यक्षराणामानपि ॥ १३१ ॥ संध्यक्षराणाम्, आ, अनपि । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥

भाषा–सन्ध्यक्षर संज्ञक स्वर हैं अन्तमें जिनके ऐसे धातुओंके उन अन्तके संध्यक्षरोंको आ होय अप्विषयवर्जितमे । उदाहरण–लिट्में ग्लै धातुके ऐकारको आकार करनेपर 'द्विश्च, ह्रस्वः, कुहोश्चुः' इनकर प्रथम रूप स्थित हुआ जग्ला-अ फिर ॥

आतो णप्डौ ॥ १३२ ॥ आतः, णप्, डौ । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ आदन्ताद्धातोः परो णप् डौ ॥ जग्लौ ॥

भाषा–आकारान्त धातुसे परे णप्प्रत्ययको डौ होय । उदाहरण–जग्ला-अ । इसमें आकारान्त धातु ग्लासे परे णप् विद्यमान है इस कारण णप्को डौ करनेपर रूप स्थित हुआ जग्ला-डौ इसमें डकार इत्संज्ञक है 'डित्त्वाट्टिलोपः' इसकर रूप सिद्ध हुआ । जग्लौ । द्विवचनमें जग्ला-अतुस् ऐसा स्थित है ॥

आतोऽनपि ॥१२३॥ आतः, अनपि । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ धातो-
रातो लोपोऽनपि किति स्वरे इटि च ॥ जग्लतुः । जग्लिथ जग्लाथ ॥

भाषा–धातुके आकारका लोप होय अपूविषयवर्जित कित्‌ङित् स्वर पर हुए संते और इट् पर हुए संते । उदाहरण–जग्ला-अतुस् । इसमें धातु ग्लाके आकार का लोप किया क्योंकि कित्संज्ञक अतुस्‌का अकार स्वर परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । जग्लतुः । थप्‌में 'स्वरान्तात्‌तत्वत्‌थ०' इसकर इट्पक्षमें 'आतोऽनपि' इसकर सिद्ध हुआ । जग्लिथ । और जहां इट् नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । जग्लाथ । आशीर्लिङ्के विषें ग्लायात् ऐसा स्थित है ॥

सयोगादेरादन्तस्य किति लिङ्येकारो वा ॥ १२४ ॥ सयो
गादे , आदन्तस्य, किति, लिङि, एकार , वा । षट्पदमिदं सूत्रम् ॥
ग्लायात् ग्लेयात् । अग्लासिव् ॥ कै गै रै शब्दे ॥ जगौ ॥

भाषा–संयोग है आदिमें जिसके ऐसे आकारान्त धातुके अन्त्य आकारको एकार होय विकल्पकरके कित्‌लिङ्के विषें । उदाहरण–ग्ला-यात् । इसमें संयोगादि आकारान्त ग्लाधातुसे परे कित्‌लिङ्का यात् प्रत्यय विद्यमान है इस कारण धातुके अन्त्य आकारको एकार विकल्पकर करनेसे रूप सिद्ध हुआ । ग्लेयात्, ग्लायात् । तादिकमें । ग्लाता । लृट्‌में । ग्लास्यति । लृङ्में । अग्लास्यत् । लुङ्‌में यमिरमि-नमातां सक् सेरिट् पे' इसकर धातुको सक् किया सिको इट् किया तब रूप सिद्ध हुआ । अग्लासीत् । द्विवचनमें । अग्लासिष्टाम् । कै, गै और रै यह तीनों धातु शब्द करनेमें वर्ते हैं । ग्लैधातुके समानही इन धातुओंके रूप जानने । कै और रै धातुके रूप आशीर्लिङ्में । कायात् । रायात् ॥

दादेरे ॥ १२५॥ दादे , पे । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ अपिदाधामागे-
हाकृपिबतिसोस्थामात एकारो भवत्याशीर्यादादौ पे ॥ गेयात् ।
अगासीत् । स्त्यै ष्ट्यै शब्दसंघातयो ॥ स्त्यायति । तस्त्यौ । स्त्या-
यात् । स्त्येयात् । अस्त्यासीत् । दैप् शोधने ॥ ददौ । दायात् ।
अदासीत् ॥ धेट् पाने ॥ दधौ । धेयात् । अधासीत् । सिञ्लोपपक्षे ।
अधात् अधाताम् ॥

भाषा–नहीं है पकार इत्संज्ञक जिसका ऐसा दा, धा मा, गै, हाक्, पिबति सा और स्थाधातु इन्होंके आकारको एकार होय परस्मैपदमें आशीर्यादादिकके

विषैं । उदाहरण—गै इस धातुको ' संध्यक्षराणामानपि ' इसकर आकार करनेपर आशीर्लिङ्के परस्मैपदमें एकार किया तब रूप सिद्ध हुआ । गेयात् । शेष लकारोंमे ग्लैधातुके समान रूप जानने । स्त्यै और ष्ट्यै यह दोनो धातु शब्द करनेमें तथा इकट्ठे करनेमें वर्त्ते हैं । ग्लैधातुकेही समान समस्त लकारोंके विषैं इन धातुओंके रूप जानने और दैप् धातु शुद्ध करनेमें वर्त्ते है यह धातु पकारइत्वाला है । इस कारण यादादिकके विषैं इसके आकारको 'दादेरे' इसकर एकार नहीं हुआ किन्तु यथावत् आकारही बने रहनेसे रूप सिद्ध हुआ । दायात् । शेष रूप गैधातुके समान जानने । धेट्धातु पानअर्थमें वर्त्ते है इस धातुके रूप समस्त लकारोंमें गैके समान जानने । लुङ्के विषै ' शाछासाघ्राधेटां वा' इसकर एक जगह सिका लोप करनेपर प्रथमपुरुषके प्रथमवचनमें रूप सिद्ध हुआ । अधात् । द्विवचनमें । अधाताम् । बहुवचनमें अधा-अन् ऐसा स्थित है 'स्याविदः ' इसकर अन्को उस् करनेपर रूप हुआ अधा-उस् ॥

उस्यालोपः ॥ १३६ ॥ उसि, आलोपः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ अधुः ॥

भाषा—उस् पर हुए संते आकारका लोप होय । उदाहरण—अधा-उस् । इसमें आकारसे परे उस् विद्यमान है इस कारण आका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अधुः ॥

धेटो भूतमात्रे दिवादिपरो ङो वा द्वित्वं च ॥ १३७ ॥ धेटः, भूतमात्रे, दिवादिपरः, ङः, वा, द्वित्वम्, च । सप्तपदमिदं सूत्रम् ॥ आतोऽनपि ॥ अदधत् ॥ दृशिर् प्रेक्षणे ॥

भाषा—भूतमात्र अर्थवाचक लुङ्के विषैं धेट्धातुसे दिवादि हैं परे जिसके ऐसा ङप्रत्यय होय और धातुको द्वित्व होय । और सिका अपवाद होय । उदाहरण—धेट्धातुसे सिके होनेके स्थानमें ङप्रत्यय करनेपर और द्वित्व करनेपर रूप स्थित हुआ अद-धा-अ-द् फिर ' आतोऽनपि' इसकर आकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अदधत् । दृशिर्धातु प्रेक्षण अर्थमें वर्त्ते है । प्रेक्षण नाम देखनेका है ॥

दृशादेः पश्यादिः ॥ १३८ ॥ दृशादेः, पश्यादिः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ चतुर्ष्वपि दृशऋसृशदसदपाघ्राध्माम्नादाण्स्थानां पश्यऋच्छधौशीयसीदपिबजिघ्रधममनयच्छतिष्ठाः ॥ पश्यति ददर्श ददृशतुः ॥

भाषा—लट् आदिक चार लकार पर हुए संते दृश्को पश्य, ऋको ऋच्छ, सृको, धौ, शदको शीय, सदको सीद, पाको पिब, घ्राको जिघ्र, ध्माको धम,

ज्ञाको मन, दाण्को यच्छ और स्याधातुको तिष्ठ आदेश होय । उदाहरण—तिप्में ऋशधातुको पश्य आदेश करनेपर 'अप् कर्तरि' इसकर रूप सिद्ध हुआ । पश्यति । लिट्के विर्षे ' उपधाया लघो ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । ददर्श । द्विवचनमें । ददृशतु । थप्में ददृश्-थ ऐसा स्थित है ॥

सृजिदृशोस्थपो वेट् ॥ १३९ ॥ सृजिदृशोः, थपः, वा, इट् । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ ददर्शिथ दद्रष्ठ । द्रष्टा । अद्राक्षीत् अद्राष्टाम् ॥

भाषा—सृज् और दृशधातुसे परे थप्को विकल्पकरके इट् होय । उदाहरण—दृश्-थ । इसमें एक जगह थप्को इट् आगम करनेपर 'उपधाया लघो ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । ददर्शिथ । और जहां इट् नहीं हुआ तहां 'उपधाया लघो', छशषराजादे' ष, ष्टुभि' ष्टु ' इसकर रूप स्थित हुआ ददृष्-ठ फिर 'रारो ह्रसे दृशाम् ' इसकर ऋर्को र करनेपर रूप सिद्ध हुआ । दद्रष्ठ । तादिकर्में अनिट् होनेसे ' छशषरा०, ष्टुभि०, रारो ह्रसे०' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । द्रष्टा । लृट्में ' छशषरा०, षढो' कस्से, किलो०, रारो ह्रसे०' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । द्रक्ष्यति । लुङ्में ' अनिटो नामिवत ' इसकर वृद्धि किया फिर ' छशष०, षढो' कस्से, किलो०, रारो ह्रसे दृशाम् ' इनकर आर्को रा करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अद्राक्षीत् । द्विवचनमें ' ह्रसात्, छशषरा०, ष्टुभि०, रारो ह्रसे० इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ, । अद्राष्टाम् । और जहां ' इरितो वा ' इसकर विकल्प करके ङप्रत्यय किया तहां रूप स्थित हुआ । अदृश्-अ-द् फिर ॥

ऋवर्णदृशोऽङि गुणः ॥ १४० ॥ ऋवर्णदृशोः, ङे, गुणः । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ अदर्शत् ॥ ऋ गतौ ॥ ऋच्छति । आर्च्छत् ॥

गुणोऽर्तिसंयोगाद्योः ॥ १४१ ॥ गुणः, अर्तिसंयोगाद्योः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ अर्ते संयोगादेर्ऋदन्तस्य च गुणो यकि यङि किति णादावाशीर्यादौ च ॥ आरतुः आरुः ॥

भाषा—ऋवर्णान्त धातु और दृशधातुको गुण होय ङप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—अदृश्-अ-द् । इसमें ङप्रत्यय परे विद्यमान है इस कारण दृश्को गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अदर्शत् । ऋधातु गतिअर्थमें वर्त्ते है । ऋधातुको ' दृशादे पश्यादि ' इसकर ऋच्छ आदेश करनेपर लट्में रूप सिद्ध हुआ । ऋच्छति । लिट्में ' द्विश्च, र', धातोर्नामिनः इनकर रूप सिद्ध हुआ । आर । द्विवचनमें ' गुणोऽर्तिसंयोगाद्योः ' इसकर गुण करनेपर रूप सिद्ध हुआ । आरतुः । बहुवचनमें । आरुः ॥

अत्यर्तिव्ययतीनां थपो नित्यमिट् ॥ १४२ ॥ अत्यर्तिव्ययतीनाम्, थपः, नित्यम्, इट् । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ आरिथ । अर्यात् अर्ता । अरिष्यति । आरिष्यत् ॥

भाषा–अद्धातु और ऋधातु व्येञ्धातु इनसे पर थप्को नित्यही इट् होय । उदाहरण–थप्मे इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । आरिथ । आशीर्लिङ्में 'गुणोर्ति-संयो०' इसकर गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अर्यात् । लुट्मे अनिट् होनेसे 'गुणः' इसकर रूप सिद्ध हुआ । अर्त्ता । लट्मे 'हनृतः स्यपः' इसकर सिद्ध हुआ । अरिष्यति । लङ्में । आरिष्यत् ॥

सर्तिशास्त्यर्तिभ्यो ङो लुङि॥१४३॥ सर्तिशास्त्यर्तिभ्यः, ङः लुङि । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ सेरपवादः । स्वरादेः । आरत् आरताम् । अर्तेर्ह्वादेरिति केचित् । आर्षीत् आर्ष्टाम् ॥ सृ गतौ ॥ धावति । अधावत् । शीघ्रगतावेवायम् । अन्यत्र । सरति । ससार सस्रतुः । ससर्थ । सस्रिव सस्रिम ॥

भाषा–सृ, शास्, ऋधातुसे परे लुङ्के विषे ङप्रत्यय होय सिका अपवाद होय । उदाहरण–लुङ्मे ऋधातुसे सिके स्थानमें ङप्रत्यय करनेपर 'ऋवर्णदृशोऽङि गुणः' इसकर गुण किया तब रूप सिद्ध हुआ । आरत् । द्विवचनमे । आरताम् । कोई आचार्य यह कहते हैं कि ह्वादिगणके ऋधातुसे लुङ्के विषे ङप्रत्यय होय । इस कथनसे "धातोर्नामिनः' इसकर वृद्धि करनेपर रूप सिद्ध हुआ । आर्षीत् । द्विवचनमें । आर्ष्टाम् । सृधातु गति अर्थमें वर्त्ते है । सृधातुको चार लकारोंमे धौ आदेश किया तब तिप्के विषें 'अप् कर्त्तरि, औ आव्' इनकर सिद्ध हुआ । धावति । लङ्मे सिद्ध हुआ । अधावत् । शीघ्रगतिअर्थमही सृको धौ आदेश होता है और अर्थके विषें नहीं होता है । जैसे–सरति । लिट्के प्रथमपुरुषके प्रथमवचनमें 'रः, धातोर्नामिनः' इनकर रूप सिद्ध हुआ ससार । द्विवचनमे । सस्रतुः । थप्में 'ऋादेर्णादेः' इसकर इट् नही हुआ तब रूप सिद्ध हुआ । ससर्थ । और उत्तमभागके द्विवचन बहुवचनमें रूप सिद्ध हुआ । सस्रिव । सस्रिम । आशीर्लिङ्के विषें स्रियात् ऐसा स्थित है ॥

यादादौ पे ॥ १४४ ॥ यादादौ, पे । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ यादादौ धातोः ऋतो रिङ् भवति ॥ ङो व्यवधानार्थः । तेन पे इति न दीर्घः

स्रियात् । सर्ता । सरिष्यति । असरत् असरताम् ॥ स्रु गतौ ॥ स्रवति । अस्रवत् । सुस्राव सुस्रुवतुः । सुस्रोथ । स्रूयात् । स्रोता ॥

भाषा—परस्मैपदसम्बन्धी यादादिक पर हुए सते धातुके ऋकारको रिङ् आदेश होय रिङ्में जो कि रकार है वह व्यवधानके भय है तिसकरके ' ये ' इसकर दीर्घ नहीं होय । उदाहरण—सृ-यात् । इसमें धातुके ऋकारको रिङ् आदेश किया क्यों कि परमें यात् प्रत्यय विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । स्रियात् । (सादिकमें अनिट् होनेसे रूप सिद्ध हुआ । सर्ता । स्ट्में 'ऋतृत' स्यप' ' इसकर इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । सरिष्यति । लुङ्में ' सर्तिशास्त्यर्तिभ्यो ' इसकर सिके स्थानमें ङप्रत्यय करनेपर ' ऋवर्णदृशोर्ङि गुण' ' इसकर सृधातुको गुण किया तब रूप सिद्ध हुआ । असरत् । स्रुधातु गतिअर्थमें वर्त्ते है । तिप्में अप् करनेपर, गुण', औ अव् ' इनकर रूप सिद्ध हुआ । स्रवति । लिट्में द्विश्च पूर्वस्य इत्यादि क्षेप' धातोर्नामिन औ आव् ' इनकर रूप सिद्ध हुआ । सुस्राव । द्विवचनमें ' नुधातो ' इसकर उव् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । सुस्रुवतु' । थप्में ' क्रादेर्णादे ' इसकर इट् होनेसे रूप सिद्ध हुआ । सुस्रोथ । यात्में । स्रूयात् । लुट्में अनिट् होनेसे सिद्ध हुआ । स्रोता ॥

श्रिस्रुद्रुभ्यो ङो धातोश्च द्वित्व लुङि ॥ १४५ ॥ श्रिस्रुद्रुभ्य , ङे , धातो , च , द्वित्वम् लुङि । पञ्चपदमिदं सूत्रम् ॥ सेरपवादः ॥ असुस्रुवत् ॥ दु द्रु गतौ ॥ दुदविथ दुदोथ । दोता । अदोषीत् । द्रवति । दुद्रोथ । दुद्रुव । अदुद्रुवत् । श्रु श्रवणे ।

भाषा—श्रि, स्रु और द्रुधातु इनसे लुङ्के विषे ङप्रत्यय होय और धातुको द्वित्व होय सिका अपवाद होय । उदाहरण—लुङ्में सिके स्थानमें ङप्रत्यय करने पर धातुको द्वित्व किया फिर नुधातोः ' इसकर उव् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । असुस्रुवत् । दुधातु और द्रुधातु गति अर्थमें वर्त्ते है । थप्में ' स्वरान्तादृत्वतश्च ' इसकर एक जगह इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । दुदविथ । और जहां इट् नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । दुदोथ । तादिकमें अनिट् होनेसे रूप सिद्ध हुआ । दोता । लुङ्में । अदोषीत् । द्रुधातुके रूप स्रुधातुके समान जानने । श्रुधातु श्रवण अर्थमें वर्त्ते है ॥

श्रवः शृ आदेशो नुप्रत्ययश्चान्विषये ॥ १४६ ॥ श्रुवः, शृ आदेश , नुप्रत्ययः , च , अन्विषये । पञ्चपदमिदं सूत्रम् ॥ शृणोति ।

शृणोति । शृणोमि । ओर्मोर्वा लोपः । शृणुवः शृण्वः । शृणुमः शृण्मः । शृणुयात् । शुश्राव श्रूयात् । अश्रौषीत् ॥ शद्लृ शातने ॥

भाषा—श्रुधातुको शृ आदेश होय और नुप्रत्यय होय लट् आदिक चार लकारोंके विषैं । उदाहरण—श्रुधातुको चार लकारोंके विषै शृ आदेश किया और नुप्रत्यय किया तव तिप्में रूप स्थित हुआ शृणु-ति फिर 'नूपः' इसकर नुप्रत्ययको गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । शृणोति । और उत्तमपुरुषके द्विवचन बहुवचनमें 'ओर्मोर्वा लोपः' इसकर सिद्ध हुआ । शृणुवः, शृण्वः । शृणुमः, शृण्मः । लिट्मे प्रथमपुरुषके प्रथमवचनमें रूप सिद्ध हुआ । शुश्राव । थप्मे 'क्रादेर्णादेः' इसकर इट् न करनेपर रूप सिद्ध हुआ । शुश्रोथ । लुङ्मे 'धातोर्नामिनः' इसकर रूप सिद्ध हुआ । अश्रौषीत् । द्विवचनमे । अश्रौष्टाम् । शद्लृधातु शातन अर्थमे वर्त्ते है । शातन नाम विशीर्णताका है ॥

शीयादेशे आत् ॥ १४७ ॥ शीयादेशे, आत् । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ शीयते । अशीयत । शशाद । शेदिथ शशत्थ । शत्ता । अशदत् ॥ षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु ॥ सीदति ॥

भाषा—शद्धातुको शीय आदेश होनेपर आत्मनेपद होय । उदाहरण—शद्धातुको शीय आदेश करनेपर आत्मनेपद होनेसे लट्के विषै तेमें रूप सिद्ध हुआ । शीयते । लङ्के विषैं तन्में रूप सिद्ध हुआ । अशीयत । लिट्मे 'द्विश्च, अत उपधायाः' इनकर रूप सिद्ध हुआ । शशाद । थप्के विषैं 'स्वरान्तादत्वतश्च०' इसकर इट् होनेपर 'लोपः पचा०' इसकर शेदिथ । और जहां इट् नहीं हुआ तहां 'खसे चपा झसानां' इसकर रूप सिद्ध हुआ । शशत्थ । लुट्मे अनिट् होनेसे रूप सिद्ध हुआ । शत्ता । लृट्मे सिद्ध हुआ । शत्स्यति । और लुङ्के विषैं लृकार इत् होनेसे 'लित्पुषादेर्ङः' इसकर ङप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अशदत । षद्लृधातु विशरण नाम अवयवोंके विभागमे और गतिअर्थमे और अवसाद नाम नाश अर्थमे वर्त्ते है, । सद्धातुको 'दृशादेः पश्यादिः' इसकर सीद् आदेश करनेपर तिप्मे रूप सिद्ध हुआ । सीदति । और लिट्में 'द्विश्च, अत उपधायाः' इसकर रूप सिद्ध हुआ । ससाद ॥

सदिस्यञ्जोर्लिटि परस्य न षः ॥ १४८ ॥ सदिस्वंजोः, लिटि, परस्य, नः षः । पञ्चपदमिदं सूत्रम् ॥ निषसाद । सत्ता । सत्स्यति । असदत् ॥ पा पाने ॥ पिबति । पपौ । पेयात् । पाता ।

पास्यति । दावे' पे । अपात् ॥ घ्रा गन्धोपादाने ॥ जिघ्रति । जघ्रौ । घ्रेयात् । घ्रायात् । घ्रास्यति । अघ्रासीत् । अघ्रात् ॥ ध्मा शब्दाग्निसंयोगयोः ॥ धमति । दध्मौ । ध्मेयात् । ध्मायात् । अध्मासीत् ॥ ष्ठा गतिनिवृत्तौ ॥ तिष्ठति । तस्थौ । दादेरे । स्थेयात् ॥ म्ना अभ्यासे ॥ मनति । मम्नौ । म्नायात् । म्नेयात् । अम्नासीत् ॥ दाण् दाने ॥ यच्छति । ददौ । देयात् । अदात् ॥ हृ कौटिल्ये ॥ ह्वरति । जह्वार ॥ गुणोऽर्तिसंयोगाद्योः । जह्वरतुः ॥

भाषा—लिट्के विषे सद्धातु और स्वञ्जधातुके परके सको ष नहीं होय । उदाहरण—ससाद । इसमें निउपसर्ग पूर्व करनेसे रूप स्थित हुआ नि-ससाद इसमें 'आदेश' तथा 'णौ सुनमाम्' इसकर पूर्वके सकारको तो षकार हो गया परन्तु परके सकारको षकार 'अड्द्वित्वव्यवधानेऽपि ष' इसकर नहीं हुआ तब रूप सिद्ध हुआ । निषसाद । वादिकर्मे अनिट् होनेसे सिद्ध हुआ । सत्ता । लृट्में । सत्स्यति । लृट्में 'लिप्सुपादेश' इसकर सद्लृधातुको लृकार इत्वाला होनेसे अमप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । असदत् । पाधातु पानअर्थमें वर्त्ते है । पाधातुको दशादे पश्यादि' इसकर पिबआदेश करनेपर तिप्के विषे रूप सिद्ध हुआ । पिबति । लिट्में आतो णम् डौ इसकर रूप सिद्ध हुआ । पपौ । या दर्में 'दादेरे' इसकर सिद्ध हुआ । पेयात् । लुट्में पाता । लुङ्में दावे पे' इसकर सिप्रत्ययका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अपात् । घ्राधातु गन्धके ग्रहण करनेमें वर्त्ते है । घ्राधातुको जिघ्र आदेश करनेपर तिप्में रूप सिद्ध हुआ । जिघ्रति । और शेष लकारोंमें ग्लैधातुके समान रूप जानने । और लुङ्में 'शाच्छासाघ्राधेटां वा' इसकर विकल्पकरके सिका लोप हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । अघ्रात् । ध्माधातु शब्द अर्थात् फूंकनेमें तथा अग्निके साथ संयुक्त करनेमें वर्त्ते है । ध्माधातुको धम आदेश करनेपर तिप्में रूप सिद्ध हुआ । धमति । और शेष लकारोंमें ग्लैके समान रूप जानने । ष्ठाधातु गतिकी निवृत्तिअर्थमें वर्त्ते है अर्थात् स्थित होनेमें वर्त्ते है । ष्ठाधातुके स्थानमें 'आदेः ष्णः स' इसकर स्था करनेपर तिष्ठ आदेश किया तब तिप्में रूप सिद्ध हुआ । तिष्ठति । लिट्से लेकर लुङ्लकारपर्यन्त स्थाधातुके रूप घ्राधातुके समान जानने परन्तु यात्के विषे 'दादेरे' इसकर एकारही करनेसे रूप सिद्ध हुआ । स्थेयात् । लुङ्में दावेः पे इसकर सिका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ अस्थात् । म्नाधातु अभ्यासअर्थमें वर्त्ते है । म्नाधातुको मन आदेश करनेपर तिप्में रूप सिद्ध हुआ । मनति । शेष लकारोंमें

ग्लैधातुके समान रूप जानने । दाण्धातु देनेमें वर्त्त है । दाण्धातुमे णकार इत्संज्ञक है दाण्को यच्छ आदेश करनेमें तिप्में रूप सिद्ध हुआ । यच्छाति । शेष लकारोंमे पाधातुके समान रूप जानने । ह्वृधातु कुटिलताअर्थमे वर्त्त है । तिप्में सिद्ध हुआ । ह्वरति । लिट्में ' द्विश्व, कुहोश्चुः, झपानां जबचपाः, धातोर्नामिनः ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । जह्वार । द्विवचनमें ' गुणोर्त्तिसंयोगाद्योः ' इसकर संयोगादि होनेसे गुण करनेपर रूप सिद्ध हुआ । जह्वरतुः ॥

ऋदन्तात्थपो नेट्॥१४९॥ ऋदन्तात्, थपः, न, इट् । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ जह्वर्थ । ह्वर्यात् । ह्वर्ता, ह्वरिष्यति । अह्वरिष्यत् । अह्वार्षीत् ॥ स्वृ शब्दोपतापयोः ॥ स्वरति । सस्वरिथ सस्वर्थ । सस्वरिव । स्वरिता स्वर्ता । स्वरिष्यति । अस्वरिष्यत् । अस्वरीत् अस्वार्षीत् अस्वार्ष्टाम् अस्वार्षुः ॥ बुध अवगमने ॥ बोधति । बोधिता ॥ रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च ॥ रोढा । रोक्ष्यति । अरुक्षत् ॥ स्कन्दिर् गतिशोषणयोः ॥ स्कन्दति । चस्कन्दिथ चस्कन्थ । स्कद्यात् । स्कन्ता । स्कन्त्स्यति । अस्कान्त्सीत् । अस्कदत् ॥ यभ मैथुने ॥ यभति । ययाभ येभतुः येभुः । येभिथ ययब्ध । यभ्यात् । यब्धा । अयाप्सीत् अयाब्धाम् अयाप्सुः ॥ तॄ प्लवनतरणयोः ॥ तरति । ततार तेरतुः । तेरिथः ॥

भाषा–ऋकारान्त धातुसे परे थप्को इट् नहीं होय । उदाहरण–थप्के विषैं इट् न होनेसे रूप सिद्ध हुआ । जह्वर्थ । आशीर्लिङ्के विषैं ' गुणोर्तिसंयोगाद्योः ' इसकर सिद्ध हुआ । ह्वर्यात् । तादिकमें अनिट् होनेसे रूप सिद्ध हुआ । ह्वर्त्ता । लृट्में ' हनृतः स्यपः ' इसकर सिद्ध हुआ । ह्वरिष्यति । लुङ्के विषैं । अह्वार्षीत् । बुध धातु जाननेमें वर्त्त है । यह धातु सेट् है इस धातुके रूप शुकधातुके समान जानने । रुहधातु बीजके जमनेमें और प्रकट होनेमे वर्त्ते है अनिट् होनेसे लुट्में ' हो ढः, तथोर्धः, ष्टुभिः ष्टुः, उपधाया लघोः, ढि ढो लोपो दीर्घश्च ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । रोढा । और लृट्में ' उपधाया लघोः, हो ढः, षढोः कस्से, क्लिा०, कषसंयोगे क्षः ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । रोक्ष्यति । लुङ्मे ' हशषान्तात्सक्' इसकर सक् प्रत्यय करनेपर ' हो ढः षढोः कस्से, क्लिा०' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । अरुक्षत् । स्कन्दिर्धातु गति और शोषनेमें वर्त्ते है । थप्मे स्कन्दिर्धातु अकारवान् होनेसे ' स्वरान्तादत्वतश्च ' इसकर विकल्पकरके इट् करनेसे

रूप सिद्ध हुआ । चस्कन्दिथ । और जहां इट् नहीं हुआ वहां ' झसे चपा झसा नाम ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । चस्कन्त्थ और आशीर्लिङ्के विषें ' नो लोपः ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । स्कद्यात् । लुट्में अनिट् होनेसे सिद्ध हुआ स्कन्ता । और लुङ्में एक जगह सिप्रत्यय करनेपर ' अनिटो नामिवत ' इसकर अकारको वृद्धि किया तब रूप सिद्ध हुआ । अस्कान्त्सीत् । द्विवचनमें ' झसात् ' इसकर सिका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अस्कान्ताम् । और ' इरितो वा ' इसकर एक जगह ङ करनेपर ' नो लोप ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । अस्कदत् । यभधातु मैथुन अर्थमें वर्त्ते है लिट्के अतुसवचनमें ' लोप पचां० ' इसकर पूर्वलोप अकारको एकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । येभतु । थप्में आकारवान् होनेसे ' स्वरान्तादत्वतश्च ' इसकर एक जगह इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । येभिथ । और जहां इट् नहीं हुआ तहां ' तथोर्ध , झबे जबा ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । ययब्ध । लुट्में अनिट् होनेसे तथोर्ध , झबे जबा ' इनकर रूप सिद्ध हुआ । यब्धा । लुङ्में ' अत उपधाया', झसे चपा झसानाम् ' इनकर रूप सिद्ध हुआ । अयाप्सीत् । द्विवचनमें झसात् इसकर सिका लोप करनेपर तथोर्ध , झबे जबा ' इनकर रूप सिद्ध हुआ । अयाब्धाम् । तृधातु प्लवन नाम कूदनेमें और तरनेमें वर्त्ते है । लिट्के अतुस वचनमें ' असंयोगाण्णादिरकित् ' इसकर अतुस् अकित् होनेसे गुण करनेपर ' तॄफलभजत्रपां ' इसकर पूर्वलोप और एकार किया तब रूप सिद्ध हुआ । तेरतु । थप्में । तेरिथ । आशीर्लिङ्के विषें तीर्यात् ऐसा स्थित है ॥

ऋत इर् ॥१५०॥ ऋतः , इर् । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ ऋकारस्य इर् भवत्यगुणवृद्धिविषये ॥ तीर्यात् ॥

भाषा—ऋकारको इर् होय गुणवृद्धिके न होनेके स्थानमें । उदाहरण—तीर्यात् । इसमें तृधातुके ऋकारको इर् किया क्योंकि कित् यात् प्रत्यय परे परे विद्यमान है तब ' य्वोर्विहसे ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । तीर्यात् । लुट्में तृधातुको वेद् होनेसे इट् करनेपर रूप स्थित हुआ । तर्-इ-ता ॥

ईटो ग्रहाम् ॥ १५१ ॥ ई ईट् , ग्रहाम् । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ ग्रहादीनामिट ईकारो न तु णादौ ॥

वृङ्वृञ्ऋदन्तानां वा ॥१५२॥ वृङ्वृञ्ऋदन्तानाम्, वा । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ तरिता तरीता ॥

भाषा—ग्रह आदिक धातुओंके इट्को ईकार होय और णप् आदिक प्रत्यय परे होते तो नहीं होय । और वृङ् वृञ् और ऋकारान्त धातु इनके इट्को विक-

रूपकरके ईकार होय । उदाहरण—तर्-इ-ता । इसमें ऋकारान्त धातु तॄ है इस कारण तधातुसंबन्धी इट्को विकल्पकरके ईकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । तरिता, तरीता । लृट्में । तरिष्यति । लुङ्मे अतार्-इ-स्-ई-द् ऐसा स्थित है ॥

पे सेरिटो न दीर्घः सीष्टादेश्च ॥ १५३ ॥ पे सेः इटः, नं, दीर्घः, सीष्टादेः, चं । सप्तपदमिदं सूत्रम् ॥ अतारीत् अतारिष्टाम् अतारिषुः ॥ दंश दशने ॥

भाषा—वृङ्, वृञ्, ऋकारान्तसे परे परस्मैपदके विषैं सिप्रत्ययके इट्को दीर्घ नहीं होय और सीष्ट आदिक प्रत्ययोंके इट्कोभी दीर्घ नहीं होय । उदाहरण—अतार्-इ स् ई-द् । इसमे सिप्रत्ययके इट्को नहीं हुआ तब ' इट ईटि ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । अतारीत् । द्विवचनमे । अतारिष्टाम् । दंशधातु डाढसे काटनेमें वर्त्ते है अर्थात् डसनेमे वर्त्ते है ॥

अपि रञ्जदंशसञ्जस्वञ्जाम् ॥ १५४ ॥ अपि, रञ्जदंशसंजस्वंजाम् । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ एषां नस्य लोपोऽपि ॥ दशति । दंष्टा । अदाङ्क्षीत् ॥ षञ्ज सङ्गे ॥ ससञ्जिथ ससङ्क्थ । व्यषाङ्क्षीत् ॥ कित रोगापनयने संशये च ॥

भाषा—रञ्ज, दंश, संज और स्वञ्ज धातु इनके नकारका लोप होय अप्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—लट्में नकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । दशति । थप्में अकारवान् होनेसे ' स्वरान्तादत्वतश्च ' इसकर एक जगह इट् किया तहां रूप सिद्ध हुआ । ददंशिथ । और जहां इट् नहीं हुआ तहां ' छशषराजादेः षः, ष्टुभिः ष्टुः ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । ददंष्ठ । तादिकमें अनिट् होनेसे रूप सिद्ध हुआ । दंष्टा । लृट्मे ' छशषराजादेः०, षढोः कस्से, कि० ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । दंक्ष्यति । लुङ्में ' छशष:०, षढोः कस्से, कि०, अनिटो नामिवतः ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । अदाक्षीत् । द्विवचनमें ' झसात् ' इसकर सिलोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अदांष्टाम् । संजधातु संगति करनेमे वर्त्ते है । अकारवान् होनेसे थप्में विकल्पकरके इट् किया तहां रूप सिद्ध हुआ । ससंजिथ । और जहां इट् नहीं हुआ तहां ' चोः कुः, खसे चपा झसानाम् ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । ससङ्क्थ । लुट्में अनिट् होनेसे ' चोः कुः, खसे च० ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । सङ्क्ता । लुङ्में ' चोः कुः, खसे चपा झ०, कि०, अनिटो नामि० ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । असाङ्क्षीत । और द्विवचनमें ' झसात् ' इसकर

सिकस लोप करनेपर ' चो' कु , खसे चपा सतानाय् ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । असाञ्जत्कम् । और विउपसर्ग पूर्व करनेपर ' अड्द्रिस्वव्यवधानेऽपि प' ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । व्यपांक्षीत् । कित्धातु रोगके दूर करनेमें तथा संशय अर्थमें वर्ते है ॥

गुप्त्य ॥ १५५ ॥ सूत्रम् । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ गुपुतिजुकित्-

मानूबधुदानशान्भ्य स्वार्थे स प्रत्ययो भवति धातोश्च द्वित्वम् ॥

चिकित्सति । चिकित्साञ्चकार । चिकित्सिता । अचिकित्सीत् ॥

पत्लृ पतने ॥ पपात पेततु ॥

पतेर्ङे पुम् ॥ १५६ ॥ पते , ङे, पुम् । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥

अपप्तत् ॥ भ्रमु चलने ॥ भो वा । भ्राम्यति भ्रमति ॥

भाषा—गुप्, कित्, तिज्, मान्, बध, दान् और शान् धातु इनसे परे स्वार्थके विर्षे सप्रत्यय होय और धातुको द्वित्व होय । उदाहरण—कित् धातुसे स्वार्थके विर्षे सप्रत्यय किया और धातुको द्वित्व किया तब ' कुहोस्चु. ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । चिकित्सति । लिट्के विर्षे अनेक स्वर हेनेसे ' कासादिप्रत्ययादाम् इसकर आम् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । चिकित्साञ्चकार । आशीर्लिङ्में ' यत ' इसकर अकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । चिकित्स्यात् । लुट्में । चिकित्सिता । लुङ्में । अचिकित्सीत् । पत्लृ धातु पतन नाम गिरनेमें वर्ते है । अतुस्के विर्षे ' लोप पचां० इसकर रूप सिद्ध हुआ । पेततु । लुङ्के विर्षे ' लिट्पुषादेर्ङे ' इसकर ङप्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ अ-पत्-अ-द् फिर पत् धातुको ङप्रत्यय पर हुए सते पुम्का आगम होय । उदाहरण—अ-पत्-अ-द् । इसमें, पतधातुको पुम्का आगम किया क्योंकि ङप्रत्यय परे विद्यमान है तब पुम्का आगम मिदन्त्या रस्वरात्परो वक्तव्य ' इसकर पकार उत्तरवर्ती अकारसे पीछे हुआ आगममें उकार उच्चारणार्थ है तब रूप सिद्ध हुआ । अपप्तत् । भ्रमुधातु चलनेमें वर्ते है । ' भ्राशभ्लाशभ्रमु० इसकर एक जगह यप्रत्यय करनेपर ' शमां दीर्घ ,' इस दिवादिगणके सूत्रकर दीर्घ करनेसे रूप सिद्ध हुआ भ्राम्यति । और जहा यप्रत्यय नहीं हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । भ्रमति ॥

फणराजृभ्राजृभ्राशृभ्लाशृस्यमुस्वनशृपृभ्रमुत्रसां पत्त्यपूर्वलोपो

वा ॥ १५७ ॥ एर्णे—त्रसाम्, एत्त्वपूर्वलोपो, वा । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥

भ्रेमतु बभ्रमतुः । अभ्रमीत् ॥ टुवमु उद्गिरणे ॥ वम एत्वपूर्व

लोपो वेति केचित् । वेमतु ववमतु । अवमीत् ॥ फण गतौ

फेणतुः पफणतुः । अफाणीत् अफणीत् ॥ स्वन स्यमु शब्दे ॥ स्वेनतुः सस्वनतुः । अस्वानीत् अस्वनीत् । स्येमतुः सस्यमतुः । अस्यमीत् ॥ शसु हिंसायाम् ॥ शशसतुः । शशासिथ ॥ तुहिर् दुहिर् उहिर् अर्दने ॥ अतुहत् अतोहीत् । दोहिता । अदुहत् अदोहीत् । उवोह ऊहतुः ॥ वस निवासे ॥

भाषा—फण्, राज्, भ्राज्, भ्राश्, भ्लाश्, स्यमु, स्वन्, जॄष्, भ्रमु और त्रस्धातु इन्होंके अकारको एकार और पूर्वका लोप होय विकल्पकरके । उदाहरण—अतुस्में भ्रम्-धातुके अकारको एकार और पूर्वका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । भ्रेमतुः । और जहां अकारको एकार और पूर्वका लोप नही हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । बभ्रमतुः । लुङ्में ' ह्यन्तक्षणश्वस्जागृ० ' इसकर वृद्धि नहीं होनेसे रूप सिद्ध हुआ । अभ्रमीत् । टुवम् धातु उद्गिरण नाम वमन करनेमे वर्त्ते है । वमधातुको एकार और पूर्वका लोप विकल्पकरके होय । उदाहरण—अतुस्में वमके अकारको एकार और पूर्वका लोप विकल्पकरके किया तब रूप सिद्ध हुआ । वेमतुः, ववमतुः । और लुङ्मे ' ह्यन्तक्षणश्वस्० ' इसकर वृद्धि न होनेसे रूप सिद्ध हुआ । अवमीत् । फण्धातु गतिअर्थमे वर्त्ते है । अतुस्मे ' फण्राजृभ्राजृ० ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । फेणतुः, पफणतुः । लुङ्म ' अतो हसादेर्लघोर्वा वृद्धिः ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । अफाणीत्, अफणीत् । स्वन्धातु और स्यम्धातु शब्द करनेमे वर्त्ते हैं । अतुस्के विषैं ' फण्राजभ्राज० ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । स्वेनतुः, सस्वनतुः । लुङ्के विषे । अस्वानीत, अस्वनीत । और इसी प्रकार स्यमुधातुके रूप जानने । लुङ्मे मकारान्त होनेसे वृद्धिको प्राप्त नही हुआ तब रूप सिद्ध हुआ । अस्यमीत् । शसु धातु हिंसाअर्थमे वर्त्ते है । तुहिर्, दुहिर् और उहिर् यह तीनों धातु पीडा करनेमें वर्त्ते हैं । लुङ्के विषैं ' इरितो वा ' इसकर एक जगह ङप्रत्यय और एक जगह सिप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुए । अतुहत्, अतोहीत् । अदुहत्, अदोहीत् । उहिर्-धातुके लिट्के णप्वचनमें ' उपधाया लघोः, असवर्णे स्वरे ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । उवोह । लुङ्में एक जगह ' इरितो वा ' इसकर ङप्रत्यय और एक जगह सिप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुए । औहत, औहीत् । वसधातु वसनेमे वर्त्ते है । वसधातुसे ' अप् कर्त्तरि ' इसकर अप्प्रत्यय करनेपर तिप्मे रूप सिद्ध हुआ । वसति । लिट्के विषैं ' द्विश्च, अत उपधायाः ' इत्यादिकर प्रथम रूप स्थित हुआ ववास् अ फिर ॥

णबादौ पूर्वस्य ॥ १५८ ॥ णबादौ, पूर्वस्य । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥

यजादीनां ग्रहादीनां च पूर्वस्य सम्प्रसारणं णवादौ ॥ यवराणामिदुद्दृत ॥ १५९ ॥ यवराणाम्, इदुदृत । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ सस्वरस्य । सम्प्रसारणम् । दीर्घस्य दीर्घो ह्रस्वस्य ह्रस्व । उवास ॥

भाषा—यज् आदिक धातुओंके और ग्रह आदिक धातुओंके पूर्वको संप्रसारण होय णप् आदिक प्रत्यय पर हुए सते यको इकार और वको उकार और रको ऋकार सम्प्रसारण होता है । संप्रसारण स्वरयुक्तको होता है दीर्घको दीर्घ और ह्रस्वको ह्रस्व सम्प्रसारण होय । उदाहरण—ववास्-अ । इसमें यजादिकोंमें होनेसे वस्धातुके पूर्व अकारसहित वकारको उकार संप्रसारण किया क्योंकि परमें णप् प्रत्यय विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । उवास । द्विवचनमें वस्-अतुस् ऐसा स्थित है । इसमें वस् धातुके पूर्व अकारसहित वकारको 'णवादौ पूर्वस्य' इसकर उकार संप्रसारण हुआ तब रूप स्थित हुआ उवस्-अतुस् फिर ॥

यजां यवराणां ऋृत सम्प्रसारणं किति ॥ १६० ॥ यजाम्, यवराणाम्, ऋृत, सम्प्रसारणम्, किति । पञ्चपदमिदं सूत्रम् ॥ यजादीनां सम्प्रसारणं किति ॥ यजिवपिवहिश्वेव वेञ्व्येञौ ह्वयतिस्त्वपी । वदिवसी श्वयतिर्वकिरेकादश यजादय ॥

भाषा—यज आदिक धातुओंको य, व र इनको क्रमसे इकार, उकार, ऋकार संप्रसारण होय कित्संज्ञक पर हुए संते । यज्, दुवप् वह्, वेञ् व्येञ्, ह्वेञ् ञिष्वप्, वद्, वस्, टुओश्वि और वच् धातु यह ग्यारह यजादिक हैं । उदाहरण—उवस्-अतुस् । इसमें यजादिक होनेसे वसधातुके वको उकार संप्रसारण किया क्योंकि कित्संज्ञक अतुस् परे विद्यमान है तब रूप स्थित हुआ उ-उस्-अतुस् फिर ॥

घसादेः ष ॥ १६१ ॥ घसादेः, षः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ घसिशासिवसीनां सस्य षो निमित्ते सति ॥ ऊषतु । उवसिथ। उवस्थ ॥ उष्यात् । वस्ता ॥

भाषा—घस्, शास् और वस्धातु इनके सकारको षकार होय जो षकार होनेका निमित्त होवे तो । भाव यह है कि कवर्ग इण्प्रत्याहारसे परे घस् शास्, वस् इनके सकारको षकार आदेश होय । उदाहरण—उ-उस्-अतुस् । इसमें इण्प्रत्याहारसंबंधी उकारसे परे वस्के सकारका षकार करनेपर 'सवर्णे दीर्घः सह' इस कर रूप सिद्ध हुआ । ऊषतु । थप्में अकारवान् होनेसे 'स्वरान्तादृतवम०

इसकर विकल्पकरके इट् करनेपर । उवसिथ, उवस्थ । तादिकमें अनिट् होनेसे सिद्ध हुआ । वस्ता । लृट्मे वस्-स्य ति ऐसा स्थित है ॥

सस्तोऽनपि ॥ १६२ ॥ सः, तः, अनपि । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ सस्य तोऽनपि से ॥ वत्स्यति । अवात्सीत् अवात्ताम् ॥ वद व्यक्तायां वाचि ॥ वदति । उवदिथ । उद्यात् । वदिव्रज्योः सौ नित्यं वृद्धिः । अवादीत् । टुओश्विइर् गतिवृद्ध्योः ॥

भाषा—सकारको तकार होय अप्विषयवर्जित षकार पर हुए संते । उदाहरण— वस्-स्य-ति । इसमें अनप्के विषैं सकार परे विद्यमान है इस कारण सकारके स्थानमे तकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । वत्स्यति । लुङ्मे ' अत उपधायाः , सस्तोऽनपि ' इनकर सिद्ध हुआ । अवात्सीत् । द्विवचनमें प्रथम ' सस्तोऽनपि ' इसकर तकार करनेपर पश्चात् 'झसात्' इसकर सिप्रत्ययका लोप किया तब रूप सिद्ध हुआ । अवात्ताम् । वद्धातु प्रकट कहनेमें वर्त्ते है । थप्मे रूप सिद्ध हुआ ' णवादौ पूर्वस्य ' इत्यादिकर । उवदिथ । यात्के विषैं ' यजां यवराणां य्वृतः संप्रसारणं॰ ' इसकर सिद्ध हुआ । उद्यात् । लुङ्के विषैं ' वदिव्रज्योः सौ नित्यं वृद्धिः ' इसकर नित्यही वृद्धि करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अवादीत् । द्विवचनमें । अवादिष्टाम् । टुओश्विइर् धातु गतिअर्थ और वृद्धि अर्थमें वर्त्ते है । इसमें टु ओ और इर् यह तीनों इत्संज्ञक हैं । श्विधातुका रूप तिप्के विषैं सिद्ध हुआ 'गुणः, अप् कर्त्तरि ' इत्यादिकर । श्वयति ॥

श्वयतेर्णादौ संप्रसारणं वा ततो द्वित्वम् ॥ १६३ ॥ श्वयतेः, णादौ, संप्रसारणं, वा, ततः, द्वित्वम् । षष्ठपदमिदं सूत्रम् ॥ शुशाव शुशुवतुः । शुशविथ । शिश्वाय शिश्वियतुः । शिश्वयिथ । शूयात् । श्वयिता । अश्वयीत् ।

भाषा—श्विधातुको णादिक पर हुए संते विकल्पकरके संप्रसारण होय फिर संप्रसारण होनेके पश्चात् ' द्विश्च ' इस सूत्रकर द्वित्व होय । उदाहरण—श्विधातुके इकारसहित वकारको उकार संप्रसारण किया फिर ' द्विश्च ' इसकर द्वित्व किया पश्चात् ' धातोर्नामिनः इसकर वृद्धि की तब ' औ आव् ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । शुशाव । द्विवचनमें ' नानप्योर्वः ' इसकर उव् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । शुशुवतुः । थप्म । शुशविथ । और जहां संप्रसारण नहीं हुआ तहां णप्में ' द्विश्च, धातोर्नामिनः, ऐ आय् ' इत्यादिकर रूपसिद्ध हुआ । शिश्वाय । द्विवचनमें

'नुधातो ' इसकर इप् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । श्विश्वियतुः । आसीर्लिङ्में 'यजां यवराणा०' इसकर सम्प्रसारण करनेसे 'ये' इसकर सिद्ध हुआ । शूयात् । तादिकमें इद् होनेसे सिद्ध हुआ । श्वयिता । और लुङ्में धातुको सेद् होनेसे रूप स्थित हुआ 'अ-श्वि-इ-स-ई-द्' फिर 'ह्यन्तक्षण०' इसकर वृद्धि न होनेसे 'गुण', ईट इटि इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ अश्वयीत् । और जहां 'इरितो वा' इसकर सि नहीं हुआ वहां ङ्प्रत्यय किया तब रूप स्थित हुआ अ-श्वि-अ-द् ॥

श्वयतेरितो लोपो ङे ॥ १६४ ॥ श्वयतेः, इतः, लोपः, ङे । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ अश्वत् ॥

भाषा-श्विधातुके इकारका लोप होय ङ्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण-अ श्वि-अ-द् । इसमें श्विधातुसे परे ङ्प्रत्यय विद्यमान है इस कारण श्विके इकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अश्वत् ॥

श्वयतेर्ङे द्वित्वं वा एरलोपः ॥ १६५ ॥ श्वयतेः, ङे, द्वित्वम्, वा, एः, अलोपः । षट्पदमिदं सूत्रम् ॥ अशिश्वियत् ॥ घस्लृ अदने ॥ घसति । घसेत् । जघास जक्षतुः । जघसिथ जघस्थ । घस्ता । घत्स्यति । अघत्स्यत् ॥ इति पप्रक्रिया ॥

भाषा-श्विधातुको ङ्प्रत्यय पर हुए संते द्वित्व होय और इकारका लोप नहीं होय । उदाहरण-अ-श्वि-अ द् । इसमें श्विधातुसे परे ङ्प्रत्यय विद्यमान है इस कारण श्विधातुको द्वित्व किया और श्विके इकारका लोप नहीं किया तब 'नुधातो' इसकर इय् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अशिश्वियत् । घस्लृधातु भोजन करनेमें वर्त्ते है । अक्षतुसमें 'गमां स्वरे' इसकर घस्धातुके उपधाका लोप करनेपर रूप स्थित हुआ जघस् अतुस् फिर 'खसे चपा झसानाम्' इसकर घकारको ककार किया फिर 'घसादेः षः' इसकर सकारको षकार किया क्योंकि कसे परे सकार विद्यमान है तब 'कषसंयोगे क्षः' इसकर रूप सिद्ध हुआ । जक्षतुः । थप्में अकारवान् होनेसे 'स्वरान्तादत्वतश्च०' इसकर विकल्पकरके इद् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । जघसिथ, जघस्थ । तादिकमें अनिद् होनेसे सिद्ध हुआ । घस्ता । और लृट्में 'सस्तोऽस्यापि' इसकर सिद्ध हुआ । घत्स्यति । लुङ्में 'ऌदिपुपादे०' इसकर ङ्प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अघसत ॥ इति पप्रक्रिया समाप्तिमगात् ॥

इति मगस्त्सेनात्मज कविशिरामसर्पंचितपदार्थभाषया भ्वादिपरस्मैपदमापूर्तम् ।

एध वृद्धौ ॥ एधते । एधांचक्रे ॥

भाषा—एधधातु वृद्धि अर्थमे वर्त्ते है लट्के आत्मनेपदमें प्रथमपुरुषके विषें ' अप् कर्त्तरि ' इसकर अप् प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । एधते । लिट्को आत्मनेपदके एक वचनमे गुरुनाम्यादि होनेसे ' कासादिप्रत्ययादाम्० ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । एधांचक्रे ॥

आमो भ्वसोर्नात्कर्तरि ॥ १६६ ॥ आमः भ्वसोः, न आत्, कर्तरि । पंचपदमिदं सूत्रम् ॥ एधामास । एधांबभूव । ऐधिष्ट ॥ ईक्ष-दर्शनाङ्कनयोः ॥ ईक्षांचक्रे । ऐक्षिष्ट ॥ ष्वष्क गतौ ॥ ष्वष्कते । ष्वष्किषीष्ट । अष्वष्किष्ट ॥ वेष्ट वेष्टने ॥ विवेष्टे ॥ चेष्ट चेष्टायाम् ॥ चिचेष्ट । अचेष्टिष्ट ॥ ऋज गतौ स्थैर्ये च ॥ अर्जते । आनृजे । आर्जिष्ट ॥ ष्वञ्ज परिष्वङ्गे ॥ स्वजते ॥

भाषा—आम्प्रत्ययसे परे भू और अस् धातुको कर्त्ताअर्थके विषें आत्मनेपद नहीं होय. । उदाहरण—एधधातुसे आम् प्रत्यय करनेपर भू और अस् धातुको आत्मनेपद नहीं हुआ किन्तु परस्मैपद होनेसे रूप सिद्ध हुआ । एधामास । एधांबभूव । लुङ्के तनूवचनमें । ऐधिष्ट । द्विवचनमें । ऐधिषाताम् । ईक्ष-धातु देखनेमें तथा चिह्न करनेमें वर्त्ते है । तेमें । ईक्षते । लिट्मे । ईक्षांचक्रे । लुङ्में ऐक्षिष्ट । ष्वष्कधातु गतिअर्थमें वर्त्ते है । ' नामधातुष्वष्कष्ठिवां० ' इसकर षकारको सकार न होनेसे तेमें सिद्ध हुआ । ष्वष्कते । लिट्में ' द्विश्च ' इसकर सिद्ध हुआ । षष्वष्के । आशीर्लिङ्के आत्मनेपदमे सेट् होनेसे रूप सिद्ध हुआ । ष्वष्कि-षीष्ट । लुङ्में । अष्वष्किष्ट । वेष्टधातु लपटनेमें वर्त्ते है । लिट्में । विवेष्टे । चेष्ट धातु चेष्टा करनेमें वर्त्ते है । वेष्टधातुके समानही चेष्टधातुके रूप जानने । ऋजधातु गति और स्थिरताअर्थमे वर्त्ते है लट्के आत्मनेपदमें ' उपाधाया लघोः, अप् कर्त्तरि ' इनकर रूप सिद्ध हुआ । अर्जते । लिट्के प्रथमपुरुषके प्रथम आत्मनेपद-वचनमें ऋकारादि होनेसे ' नुगशाम् ' इसकर पूर्वको नुक् करनेपर ' रः, आभ्वो-र्णादौ ' इनकर रूप सिद्ध हुआ । आनृजे । लुङ्मे । आर्जिष्ट । ष्वञ्जधातु आलिंगन करनेमें वर्त्ते है । ' आदेः ष्णः स्नः ' इसकर षकारके स्थानमें सकार करनेपर प्रथम रूप स्थित हुआ स्वंज-अ-ते फिर ' अपिरंजदंशसंजस्वञ्जाम् ' इसकर नकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । स्वजते ॥

स्वजतेर्णादेर्वा किस्त्वम् ॥ १६७ ॥ स्वजतेः, णादेः, वा,

क्त्विम् । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ सस्वजे सस्वजे ॥

भाषा–स्वंजधातुसे परे णादि प्रत्ययोंको विकल्प करके कित्व होता है । उदाहरण–लिट्के आत्मनेपद एकवचनकी एक जगह कित्संज्ञा होनेपर स्वंजधातुके नकारका लोप किया तब रूप सिद्ध हुआ । सस्वजे । और जहां कित्संज्ञा नहीं हुई वहां सिद्ध हुआ । सस्वञ्जे ॥

सदिस्वञ्ज्योर्लिटि परस्य न प ॥ १६७ ॥ सदिस्वञ्ज्योः, लिटि, परस्य, न, प । पञ्चपदमिदं सूत्रम् ॥ परिषस्वजे परिषस्वजे । स्वङ्क्षीष्ट । स्वङ्क्ता । स्वङ्क्ष्यते । अस्वङ्क्त अस्वङ्क्षाताम् । पर्यष्वङ्क्त ॥ त्रपूष् ॥ लज्जायाम् ॥ त्रपते । त्रेपे । ऊदितो वा । त्रपिषीष्ट त्रप्सीष्ट । अत्रपिष्ट अत्रप्त ॥ तिपृ तेपृ ष्टिपृ ष्टेपृ क्षरणे तेपते । तितिपे । तिप्सीष्ट । अतिप्त ॥ तेपृ–तेपते । तितेपे । तेपिषीष्ट । अतेपिष्ट ॥ ष्टिपृ–स्तेपते । तिष्टिपे । स्तेपिषीष्ट । ष्टेपृ स्तेपते । तिष्टेपे । स्तेपिषीष्ट ॥ जभी जृभी गात्रविनामे ॥

भाषा–लिट्के विषै सदधातु और स्वञ्जधातुके परके सकारको षकार नहीं होय । उदाहरण–लिट्के विषै परि उपसर्ग पूर्व होनेसे 'अड्व्यवायेऽपि' इसकर पिछले सकारको षकार नहीं हुआ, किन्तु पूर्वके सकारको षकार 'आदेश तथा सी०' इसकर होनेसे रूप सिद्ध हुआ । परिषस्वंजे, परिषस्वजे । अनिट् होनेसे सीष्टादिकमें चो कुः, ससे ष०, क्ष्सस्य०' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । स्वङ्क्षीष्ट । तादिकमें । स्वङ्क्ता । लृट्में । स्वङ्क्ष्यते । लुङ्में अ-स्वज-स्-त ऐसा स्थित है 'झसात्' इसकर सिका लोप किया फिर 'चोः कुः ससे षपा झसाताम्' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । अस्वङ्क्त । द्विवचनमें चो कुः, ससे ष०, क्ष्स्य०' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । अस्वङ्क्षाताम् । त्रपूषधातु लज्जाअर्थमें वर्ते है । लट्में । त्रपते । लिट्में 'तृफलभजत्रपां' इसकर पूर्वलोप और एकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । त्रेपे । मध्यमपुरुषके एकवचनमें एक जगह 'ऊदितो वा' इसकर इट् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । त्रेपिषे । और जहां इट् नहीं हुआ वहां रूप सिद्ध हुआ । त्रेप्से । सीष्टादिमें इट्पक्षमें सिद्ध हुआ । त्रपिषीष्ट । अनिट्पक्षमें । त्रप्सीष्ट । लुङ्में इट्पक्षमें । अत्रपिष्ट । अनिट्पक्षमें । अत्रप्त । तिपृ, तेपृ, ष्टिपृ और ष्टेपृ यह चारों धातु क्षरणअर्थमें वर्ते हैं । लट्में । तेपते । लिट्में । तितिपे । सीष्टादिकोंमें अनिट् होनेसे तिपृधातुके उपधाभूत इकारको 'सिस्यो ' इस आगले सूत्रकर गुण

न होनेपर रूप सिद्ध हुआ । तिप्सीष्ट । लुङ्मेंभी गुण नहीं हुआ किन्तु ' झसात् ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । अतिप्त । द्विवचनमें । अतिप्साताम् । तेपृधातुके रूप लट्में । तेपते । लिट्में । तितेपे । और ष्टिपृ और ष्टेपृ धातुओंके रूप ' आदेः ष्णः स्नः ' इत्यादिकर । स्तेपते । इत्यादिक जानने । जभीधातु जृभिधातु गात्रविनाम नाम गात्रस्वेदमे वर्त्ते है । लट्मे ' अप् कर्त्तरि ' इस सूत्रकर जभ्-अ-ते- ऐसा स्थित है ॥

रधिजभोः स्वरे नुम् ॥ १६७ ॥ रधिजभोः, स्वरे, नुम् । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ जम्भते । अजंभिष्ट । जृम्भते । जजृम्भे ॥ ष्टुभ स्तम्भे ॥ विष्टोभते । तुष्टुभे । स्तोभिता । स्तोभिषीष्ट । क्षमूष् सहने ॥ क्षमते । चक्षमे । चक्षमिषे चक्षंसे ॥

भाषा—रधधातु और जभधातुको स्वर पर हुए संते नुमूका आगम होय । उदाहरण—जभ्-अ-ते इसमें जभधातुसे स्वर अकार परे विद्यमान है इस कारण जभको नुमूका आगम जकारउत्तरवर्त्ती अकारसे परे हुआ तब रूप सिद्ध हुआ । जम्भते । लिट्मे इट्संबन्धी स्वर परे होनेसे नुमूका आगम होनेपर रूप सिद्ध हुआ । जजम्भे । और जृभिधातुका रूप सिद्ध हुआ ' इदितो० ' इसकर । जृम्भते । ष्टुभ-धातु निरोध अर्थात् रोकनेमें वर्त्ते है । विउपसर्ग पूर्व होनेसे ' आदेश्व० ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । विष्टोभते । लिट्में ' द्विश्च ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । तुष्टुभे । सीयादिकोंमें इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । स्तोभिषीष्ट । क्षमूष्धातु सहनेमें वर्त्ते है । लट्में । क्षमते । लिट्के प्रथमपुरुषके एक वचनमें ' द्विश्च, कुहोश्चुः ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । चक्षमे । मध्यमभागके प्रथम वचन सेके विषे ' ऊदितो वा ' इसकर एक जगह इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । चक्षमिषे । और जहां इट् नहीं हुआ तहां, ' नश्चापदान्ते० ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । चक्षंसे । और उत्तमभागके वहे महे वचनमें जहां इट् नहीं हुआ तहां रूप स्थित हुआ । चक्षम्-वहे । चक्षम्-महे ॥

मो नो धातोः ॥ १६८ ॥ मः, नः, धातोः । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ मान्तस्य धातोर्मकारस्य नः स्यात् झसे पदान्ते वमयोः परयोः ॥ चक्षमिवहे चक्षण्वहे । चक्षमिमहे चक्षण्महे । अक्षमिष्ट अक्षंस्त ॥ क्नूयी शब्दे उन्दे च ॥ क्नूयते । अक्नूयिष्ट ॥ क्ष्मायी विधूनने ॥ क्ष्मायते । चक्ष्माये । अक्ष्मायिष्ट ॥ स्फायी ओप्यायी वृद्धौ ॥ स्फायते । पस्फाये । अस्फायिष्ट । प्यायते ॥

भाषा—मकारान्त धातुके मकारको नकार हो झस् प्रत्याहार पर हुए संते और

पक्षान्तके विषें और वकार और मकार पर हुए संते । उदाहरण–चक्षम्–वहे । चक्षम्–महे । इनमें मकारान्त धातुसे परे वकार और मकार विद्यमान है इस कारण मकारको नकार करनेपर 'धुर्वो वोनन्ते' इसकर रूप सिद्ध हुआ । चक्षण्वहे । चक्षण्महे । लुङ्में इट्पक्षके विषें । अक्षमिष्ट । और अनिट्पक्षमें 'मो नो धातो' इसकर नकार करनेपर 'नश्चापदान्ते०' इसकर रूप सिद्ध हुआ । अक्षस्त । क्लूपीधातु शब्द करनेमें तथा मीठे करनेमें वर्ते है । लिट्में सिद्ध हुआ । चुक्लूपे । लुङ्में । अक्लूपिष्ट । स्फायीधातु कंपित करनमें वर्ते है । स्फायी और ओप्यायी धातु वृद्धि अर्थमें वर्ते हैं लट्में । स्फायते । लिट्में । पस्फाये । लुङ्में । अस्फायिष्ट । ओप्यायी धातुमें ओकार और ईकार इत्संज्ञक हैं । लट्में सिद्ध हुआ । प्यायते ॥

लिड्यङोः प्याय पी ॥१६९॥ लिड्यङोः, प्याय पी ।

त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ पिप्ये ॥

भाषा–लिट् और यङ्प्रत्ययके विषें प्यायधातुको पी आदेश होय । उदाहरण–लिट्के विषें पी आदेश करनेपर 'द्विश्च, ह्रस्व' इनकर रूप स्थित हुआ । पि-पी फिर 'नुधातो' इसकर अनेक स्वर असंयोगपूर्व होनेसे रूप सिद्ध हुआ । पिप्ये । मध्यमभागके प्रथमवचनमें इट् करनेपर नुधातो 'इसकर रूप सिद्ध हुआ । पिप्यिषे ॥

दीपजनबुधपूरितायिप्यायिभ्यो वा इण् तनि कर्तरि ॥१७० ॥

दीप–प्यायिभ्य, वा, इण्, तनि, कर्तरि । पञ्चपदमिदं सूत्रम् ॥

भाषा–दीप, जन बुध पूर, ताय और प्याय धातु इनसे विकल्पकरके इण् प्रत्यय होय तन् पर हुए संते कर्त्ता अर्थके विषें । सिका अपवाद होय । उदाहरण–लुङ्में सिके स्थानमें इण् प्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ अप्याय्+इ+त फिर ॥

लुक् ॥ १७१ ॥ लुक् । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ इणः परस्य तनो लुक् ॥ अप्यायि । अप्यायिष्ट ॥ तायृ संतानपालनयो ॥ तताये । अतायिष्ट ॥ वल वल्ल संवरणे ॥ वलने । वल्लते ॥ टुभ्राजृ टुभ्राशृ टुभ्लाशृ दीप्तौ ॥ भ्रेजे बभ्राजे । भ्राश्यते भ्राशते । भ्रेशे बभ्राशे । भ्लाश्यते भ्लाशते । भ्लेशे बभ्लाशे ॥ तिज निशाने क्षमायां च ॥ तितिक्षते । तितिक्षांचक्रे ॥ गुप् गोपनकुत्सनयो ॥ जुगुप्सते ॥ मान विचारणे ॥

भाषा–इण् प्रत्ययसे परे तन्का लुक् होय । उदाहरण–अप्याय्-इ-त । इसमें इण्से परे तन् विद्यमान है इस कारण तन्का लुक् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अप्यायि । और जहां सिके स्थानमें इण्प्रत्यय नहीं हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । अप्यायिष्ट । तायृधातु सन्तान नाम प्रवन्ध करनेमे और पालन करनेमें वर्त्ते है । वल और वल्ल धातु ढकनेमें वर्त्ते हैं । टुभ्राजृ, टुभ्राशृ और टुभ्लाशृ यह तीनो धातु प्रकाश अर्थमें वर्त्ते हैं । लिट्में भ्राज धातुके " फणूराजृभ्राजृभ्राशृ० ' इसकर एक जगह पूर्वका लोप और एकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । भ्रेजे । और एक जगह सिद्ध हुआ । बभ्राजे । लट् आदिक चार लकारोंमें भ्राश और भ्लाशधातुसे विकल्पकरके 'भ्राश-भ्लाशभ्रमु०' इसकर यप्रत्यय किया तव रूप सिद्ध हुआ तेके विषे । भ्राश्यते । भ्लाश्यते । और जहां यप्रत्यय नहीं हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । भ्राशते । भ्लाशते । लिट्में 'फणूराजृ० ' इसकर विकल्पकरके पूर्वलोप एकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । भ्रेशे । भ्लेशे । बभ्राशे । बभ्लाशे । तिजधातु निशान नाम तीक्ष्ण करनेमें वर्त्ते है और क्षमा करनेमेभी वर्त्ते है । ' गुप्भ्यः ' इसकर सप्रत्यय और द्वित्व करनेसे तेमें सिद्ध हुआ ' चोः कुः, खसे चपा० ' इत्यादिकर । तितिक्षते । गुपृधातु रक्षा करनेमें और निन्दा करनेमे वर्त्ते है । ' गुप्भ्यः ' इसकर सप्रत्यय द्वित्व करनेपर तमें रूप सिद्ध हुआ । जुगुप्सते । मानधातु विचारनेमे वर्त्ते है । मानधातुसे 'गुप्भ्यः' इसकर सप्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ ममान्-स-ते फिर ॥

यः से ॥ १७२ ॥ इ, अः, से । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ पूर्वस्यात इत्से ॥

भाषा–पूर्वके अकारको इकार होय सप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–ममान्-स-ते । इसमे पूर्वके मकारउत्तरवर्ती अकारको इकार किया क्योकि परमे सप्रत्यय विद्यमान है तव रूप स्थित हुआ मिमान्-स-ते फिर ॥

मानादीनां पूर्वस्येतो दीर्घः ॥ १७३ ॥ मानादीनाम्, पूर्वस्य, इतः, दीर्घः । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ मीमांसते ॥ बध निन्दायाम्॥ आदिजबानामिति भः । बीभत्सते ॥ पण व्यवहारे स्तुतौ च । पन च ॥ पणायति । स्तुतावेवायः । पणते । पणायांचक्रे । पेणे । एवं पन् ॥ कमु कान्तौ ॥

भाषा–मान आदिक धातुओंके पूर्वके इकारको दीर्घ होय । उदाहरण–मिमान्-स-ते । इसमें मान्के पूर्व इकार मकारउत्तरवर्तीको दीर्घ करनेपर ' नश्चापदान्ते०' इसकर रूप सिद्ध हुआ । मीमांसते । बधधातु निन्दा करनेमे वर्त्ते है । ' गुप्भ्यः ' इसकर स-

त्यप और द्वित्व करनेपर ' रूप स्थित हुआ बबध्-स-ते फिर ' य हे ' इसकर पूर्वके अभ्यासके इकार करनेपर ' मानादीनां पूर्वस्येतो दीर्घः ' इसकर दीर्घ किया तब रूप स्थित हुआ बीबध्-स-ते फिर ' आदिजपानां क्षमान्तस्य० ' इसकर क्षम प्रत्याहारसम्बन्धी वकारान्त बधधातुके आदिजपसम्बन्धी बकारको भकार करनेपर ' खसे चपा० ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । बीभत्सते । पणधातु व्यवहार करनेमें तथा स्तुति करनेमें वर्ते है और पन्धातुभी इन्ही अर्थोंमें वर्ते है । पण और पन् धातुसे ' गुपूधूपविच्छि० ' इसकर स्तुति अर्थमेंही आयप्रत्यय होय किन्तु व्यवहार अर्थमें नहीं होय । पणधातुसे स्तुति अर्थमें आयप्रत्यय करनेसे रूप सिद्ध हुआ । पणायते । और जहां आयप्रत्यय नहीं हुआ वहां रूप सिद्ध हुआ । पणते । लिट्में । पणायांचक्रे । और जहां आय नहीं हुआ वहां ' थेप' पचां० ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । पेणे । इसी प्रकार पनधातुके रूप जानने । कमुधातु कान्ति अर्थमें वर्ते है । कान्ति नाम इच्छाका है ॥

कमे स्वार्थे णिङन्नपि तु वा ॥ १७४ ॥ 'कमे , स्वार्थे, णिङ्, अनेपि, तु , वा । षट्पदमिदं सूत्रम् ॥ कामयते । कामयांचक्रे । चकमे ।

भाषा—कमधातुसे स्वार्थमें णिङ्प्रत्यय होय और अनप् अर्थात् लट् आदिक चा लकारोंको त्यागि शेष लकारोंके विषै विकल्पकरके णिङ् प्रत्यय होय । उदाहरण—कम धातुसे स्वार्थमें णिङ् प्रत्यय किया तब रूप स्थित हुआ कम्-इ-अ-ते फिर ' अत उपधाया ' इसकर कम्के उपधाभूत अकारको आकार वृद्धि किया क्योंकि ञित् प्रत्यय परे विद्यमान है तब स्थित हुआ काम्-इ-अ-ते फिर यकादि प्रत्ययान्त होनेसे कामिकी धातुसंज्ञा होनेपर 'गुण' इसकर रूप सिद्ध हुआ । कामयते । लिट्में णिप्रत्यय होनेपर अनेक स्वर होनेसे आम् प्रत्यय किया तब रूप सिद्ध हुआ । कामयांचक्रे । और जहां णिप्रत्यय नहीं हुआ वहां लिट्में रूप सिद्ध हुआ । चकमे । सीधादिकोंमें णिप्रत्यय होने पर रूप सिद्ध हुआ । कामयिषीष्ट । और जहां णिप्रत्यय नहीं हुआ वहां रूप सिद्ध हुआ । कमिषीष्ट ॥

णेरङ् द्विश्च ॥ १७५ ॥ णे , अङ्, द्विः, च । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ ण्यन्ताद्धातो कर्त्तरि अङ् लुङि ॥ श्रेरपवाद । धातोश्च द्वित्वम् ॥

भाषा—णिप्रत्यय है अन्तमें जिसके ऐसे धातुसे कर्त्रर्थके विषै लुङ्लकारमें अङ् होय और सिका अपवाद होय धातुको द्वित्व होय । उदाहरण—णिप्रत्ययान्त कामि धातुसे लुङ्में कर्त्रर्थके विषै सिके स्थानमें अङ् करनेसे और कामिको सस्वरादि द्विरुक्तिः इसकर द्वित्व होनेसे रूप स्थित हुआ अचकामि अ-त् ॥

ञेः ॥ १७६ ॥ ञेः। एकपदमिदं सूत्रम् ॥ अनपि ञेर्लोपो न त्विडामन्तात्वाय्येत्न्विष्णुषु ॥

भाषा—अपूके न होनेके स्थानमें ञिप्रत्यका लोप होय परन्तु इट्, आम्, अन्त, आलु, आय्य, इत्नु और इष्णु ये पर हुए संते नहीं होय। उदाहरण—अचकामि-अ-द्। इसमें ञिप्रत्ययका लोप किया अपूके न होनेका स्थान विद्यमान है तव रूप सिद्ध हुआ अचकाम्-अ-द् फिर ॥

आङि लघौ ह्रस्व उपधायाः ॥ १७७ ॥ अङि, लघौ, ह्रस्वः, उपधायाः। चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ अङि सत्युपधायाः ह्रस्वो भवति पूर्वस्यातो लघुनि धात्वक्षरे इकारः ॥

भाषा—अङ् पर हुए संते धातुके उपधाको ह्रस्व होय और पूर्वके अकारको लघु धातुका अक्षर पर हुए संते इकार होय। उदाहरण अचकाम्-अ-द्। इसमें धातुसे अङ् परे विद्यमान है इस कारण धातुके उपधारूप अकारको ह्रस्व किया तव रूप स्थित हुआ अचकम्-अ-द् फिर पूर्वके चकार उत्तरवर्त्ती अकारको इकार किया क्योंकि परमे धातुका लघु अक्षर विद्यमान है तव रूप स्थित हुआ अचिकम्-अ-द् फिर ॥

लघोर्दीर्घः॥१७८॥ लघोः, दीर्घः। द्विपदमिदं सूत्रम्॥ अङि सति पूर्वस्य लघोर्दीर्घो भवति लघुनि ध्वात्वक्षरे परे॥ अचीकमत्। ञेरभावे॥

कमेरङ्द्वित्वे ॥ १७९ ॥ कमेः, अङ्द्वित्वे। द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ अचकमत ॥ अय गतौ। अयते ॥

भाषा—अङ् पर हुए संते पूर्वके लघुको दीर्घ होय जो लघु धातुका अक्षर परे होवे तौ। उदाहरण—अचिकम्-अ-द्। इसमें परमें अङ् और लघु धातुका अक्षर क विद्यमान है इस कारण पूर्वके चकारउत्तरवर्ती इकारको दीर्घ करनेपर रूप सिद्ध हुआ। अचीकमत्। और जहा ञि नही हुआ तहा कमिधातुसे सिके स्थानमें अङ् और धातुको द्वित्व होवे। उदाहरण—कम्धातुसे सिके स्थानमें अङ् और धातुको द्वित्व करनेपर रूप सिद्ध हुआ। अचकमत। द्विवचनमें। अचकमताम्। अयधातु गतिअर्थमें वर्त्ते है ॥

अयतौ प्रादे रेफस्य लत्वम् ॥ १८० ॥ अयतौ, प्रादेः, रेफस्य, लत्वम्। चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ प्लायते। अयांचक्रे। आयिष्ट ॥

दय दानगतिरक्षणहिंसादानेषु ॥ दयते । दयाचक्रे ॥ घट चेष्टायाम् ॥ घटते । जघटे । अघटिष्ट ॥ ईह चेष्टायाम् ईहांचक्रे ॥ ऊह वितर्के ॥ ऊहांचक्रे ॥ कास्ट शब्दकुत्सायाम् कासांचक्रे ॥ षेवृ सेवने ॥ सिषेवे । असेविष्ट । मुङ् प्लुङ् च्युङ् गतौ ॥ अमोष्ट । अप्लोष्ट । अच्योष्ट ॥ गाङ् गतौ ॥ गाते । गाते । गे गावहे गामहे । जगे अगास्त ॥ रुङ् गतौ रेषणे च रवते । रुरुवे । अरविष्ट । अनिडयमित्येके ॥ मूङ् बन्धने ॥ मविता । अमविष्ट ॥ पुङ् पवने । अपविष्ट । देङ् त्रैङ् पालने ॥ दयते ॥

भाषा—अयधातु पर हुए सत प्रादि उपसर्गके रकारको लकार होय । उदाहरण—प्लयते । इसमें प्रउपसर्गसे अय धातु परे विद्यमान है इस कारण प्रउपसर्गके रकारको लकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । प्लायते । लिट्में 'कासादिप्रत्ययादाम्०' इसकर आम् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अयांचक्रे । आशीर्लिङ्के सीध्वम् सेटो ड्वाद्वा इसकर विकल्पकरके सीध्वके षकारको ढकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अयिषीढ्वं, अयिषीध्वम् । लुङ्के ध्वम्वचनमें 'धि सेर्लोपः' इसकर सिच्का लोप करनेपर सेटो ड्वाद्वा इसकर रूप सिद्ध हुआ । आयिढ्वं, आयिध्वम् । दयधातु दान करनेमें गतिअर्थमें रक्षा करनेमें, हिंसा करनेमें और आदान नाम ग्रहण करनेमें वर्ते है । लिट्में कासादिप्रत्ययादाम्० इसकर रूप सिद्ध हुआ । दयांचक्रे । घट्धातु चेष्टा करनेमें वर्ते है । शेर्म घटते । लिट्में द्विश्च कुहोश्चु इत्यादिकर सिद्ध हुआ । जघटे । ईहधातु चेष्टा करनेमें वर्ते है । लिट्में कासादिप्र० इसकर सिद्ध हुआ । ईहांचक्रे । सीध्वंमें । ईहिषीढ्वं ईहिषीध्वम् । ऊहधातु वितर्कमें वर्ते है । वितर्क नाम विचारका है । ईह धातुके समानही ऊहधातुके रूप जानने । कासृधातु शब्दकुत्सा नाम अपानशब्द करनेमें अर्थात् पादनेमें वर्ते है । कासादिप्रत्ययादाम्० इसकर लिट्के विषै सिद्ध हुआ । कासांचक्रे । षेवृधातु सेवा करनेमें वर्ते है । लिट्में द्विश्च हृस्वः, विशात्प० इत्यादिकर सिद्ध हुआ । सिषेवे । लुङ्में । असेविष्ट । मुङ् प्लुङ् और च्युङ्धातु गति अर्थमें वर्ते है । लुङ्में अनिट् होनेसे 'गुण' इसकर तीनों धातुओंके रूप सिद्ध हुए । अमोष्ट । अप्लोष्ट । अच्योष्ट । गाङ्धातु गतिअर्थमें वर्ते है । शेर्मे अप् कर्तरि इसकर रूप सिद्ध हुआ । गाते । द्विवचन आतेमें गा-आते इसमें आ-

ाथ ईः ' इस सूत्रकी प्राप्ति नहीं हुई क्योंकि ' सवर्णे दीर्घः सह ' यह अन्तरंग सूत्र है पहिले ' सवर्णे दीर्घः सह ' इसकर गाधातुके आकार और अप्प्रत्ययके अकारकी संधि की पश्चात् ' आदाथ ईः ' सूत्रकी प्राप्ति न होनेसे ' सवर्णे दीर्घः सह ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । गाते । वहुवचन अन्तमे गा-अ-अन्ते इसमे प्रथम ' सवर्णे दीर्घः सह ' इसकर सन्धि करनेपर पश्चात् ' आतोऽन्तोऽदनतः ' इसकर अन्तेको अते करनेसे रूप सिद्ध हुआ । गाते । लिट्मे ' द्विश्च, ह्रस्वः, आतोऽनपि ' इसकर पिछले आकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । जगे । लुङ्मे अनिट् होनेसे रूप सिद्ध हुआ । अगास्त । रुङ्धातु गति और रेषण नाम हिंसाआर्थमे वर्त्ते है । लट्मे ' अप् कर्त्तरि, गुणः ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । रवते । लिट्मे ' द्विश्च, नानप्योर्वः ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । रुरुवे । अनिट्कारिकामे यह धातु सेट् होनेसे सीष्टादिकमे रूप सिद्ध हुआ । रविषीष्ट । कोई आचार्य इस धातुको अनिट्भी कहते हैं । मूङ्धातु बांधनेमे वर्त्ते है । सेट् होनेसे सीष्टादिक तथा तादिकमे रूप सिद्ध हुआ । मविसीष्ट । मविता । पूङ्धातु पवन नाम पवित्रता करनेमे वर्त्त है । लुङ्में सेट् होनेसे तनमें रूप सिद्ध हुआ । अपविष्ट । देङ् और त्रैङ् धातु पालनअर्थमे वर्त्ते है । लट्मे ' अप् कर्त्तरि, ए अय् ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । दयते ॥

देङो णादौ दिग्यादेशो द्वित्वाभावश्च ॥ १८१ ॥ देङः, णादौ, दिग्यादेशः, द्वित्वाभावः, च । पंचपदमिदं सूत्रम् ॥ दिग्ये । दासीष्ट ॥

भाषा–देङ्धातुको दिगि आदेश होय और द्वित्वका लोप होय णप् आदिक प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–लिट्के आत्मनेपदके प्रथमपुरुषके प्रथमवचनमें देङ्धातुको दिगि आदेश किया और द्वित्व हुआ नहीं तव रूप स्थित हुआ दिगि-ए फिर ' नुधातोः ' इसकर यकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । दिग्ये । और सीष्टादिकमें अनिट् होनेसे ' संध्यक्षराणामानपि ' इसकर धातुके एकारको आकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । दासीष्ट ॥

अपिद्दाधास्थामित्सेर्ङित्त्वमाति नतु दीङः ॥ १८२ ॥ अपिद्दाधास्थाम्, इत्, सेः, ङित्त्वम्, आति, नतु, दीङः । सप्तपदमिदं सूत्रम् ॥

भाषा–नहीं है षकार इत्संज्ञक जिसका ऐसा दा, दा, धा और स्था धातु इन्होंके आकारको इकार होय और इनसे परे सिकी ङित्संज्ञा होय आत्मनेपदके विषैं और दीङ्धातुके आकारको इकार नहीं होय ॥ उदाहरण–लुङ्के विषैं देङ्धातुके आकारको इकार और सिकी ङित्संज्ञा करनेपर रूप स्थित हुआ अदि-स्-त ॥

लोपो ह्रस्वात् ॥ १८३ ॥ "लोप, ह्रस्वात् । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ ह्रस्वात्परस्य सेर्लोपो झसे ॥ अदित अदिपाताम् । शायते । तत्रे । अत्रास्त ॥ ष्मिङ् ईषद्धसने ॥ स्मयते । सिष्मिये । स्मेषीष्ट । स्मेता । अस्मेष्ट ॥ डीङ् विहायसा गतौ ॥ डयते । डिड्ये । डयिष्ट ॥ द्युत दीप्तौ ॥ द्योतते ॥

भाषा—ह्रस्वसे परे सिका लोप होय झसप्रत्याहार पर हुए सते । उदाहरण—अदि-स् त । इसमें दकारउत्तरवर्ती ह्रस्व इकारके परे सिका लोप किया क्योंकि झसप्रत्याहारसम्बन्धी तकार परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । आदिव । द्विवचनमें परमें झसप्रत्याहार न होनेसे सिका लोप नहीं हुआ तब रूप सिद्ध हुआ । अदिपाताम् । शेङ्धातुका लट्में 'अप् कर्त्तरि' 'ऐ आय्' इनकर रूप सिद्ध हुआ । शायते । लिट्में । तत्रे । लुङ्में सिद्ध हुआ । अत्रास्त । ष्मिङ्धातु थोड़े हसनेमें वर्त्ते है । 'आदेः ष्णः स्नः' इसकर लट्में रूप सिद्ध हुआ । स्मयते । लिट्में 'द्वित्व, पूर्वस्य शेष, ञुधातोः' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । सिष्मिये । सीयुडादिकोंमें अनिट् होनेसे रूप सिद्ध हुआ । स्मेषीष्ट । डीङ्धातु आकाशकर जो कि चलना है उसमें वर्त्ते है अर्थात् उड़नेमें वर्त्ते है । लट्में सिद्ध हुआ । 'अप् कर्त्तरि, गुण' इनकर । डयते । लिट्में अनेक स्वर असंयोग पूर्व होनेसे यकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । डिड्ये । लुङ्में भेद होनेसे रूप सिद्ध हुआ । अडयिष्ट । द्युतधातु प्रकाशअर्थमें वर्त्ते है । लट्में 'अप् कर्त्तरि उपधाया लघो' इनकर रूप सिद्ध हुआ । द्योतते ॥

द्युतेः पूर्वस्य सम्प्रसारणम् ॥ १८४ ॥ 'द्युतेः', पूर्वस्य, सम्प्रसारणम् । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ दिद्युते ॥

भाषा—द्युतधातुके पूर्वको संप्रसारण होय । उदाहरण—लिट्में 'द्वित्व' इसकर द्वित्व करनेपर पूर्वके दकारउत्तरवर्ती युकारको इकार संप्रसारण करनेपर रूप सिद्ध हुआ । दिद्युते ॥

द्युतादिभ्यो लुङि वा पम् ॥ १८५ ॥ द्युतादिभ्यः, लुङि, वा, पम् । चतुष्पदमिदं सूत्रम् । पे ङः ॥ अद्युतत् अद्योतिष्ट ॥ श्विता वर्णे ॥ अश्वितत् । अश्वेतिष्ट ॥ ञिष्विदा स्नेहनमोचनयोः ॥ आस्वेदत् । अस्वेदिष्ट ॥ ञिक्ष्विदा च ॥ अक्ष्विदत् । अक्ष्वेदिष्ट ॥ ञिमिदा स्नेहने ॥ अमिदत् । अमेदिष्ट ॥ रुच दीप्तावभिप्रीतौ च ॥

अरुचत् । अरोचिष्ट ॥ घुट परिवर्तने ॥ अघुटत् । अघोटिष्ट ॥ रुठ लुठ लुट प्रतिघाते । अरुठत् । अरोठिष्ट । अलुठत् । अलोठिष्ट । अलुटत् । अलोटिष्ट ॥ शुभ दीप्तौ ॥ अशुभत् । अशोभिष्ट ॥ क्षुभ संचलने ॥ अक्षुभत् । अक्षोभिष्ट ॥ णभ तुभ हिंसायाम् ॥ नेभे । अनभत् । अनभिष्ट ॥ स्रंसु ध्वंसु भ्रंसु अवस्रंसने ॥ अस्रसत् । अस्रंसिष्ट ॥ ध्वंसु गतौ च ॥ अध्वसत् । अध्वंसिष्ट ॥ स्रम्भु विश्वासे ॥ अस्रभत् । अस्रम्भिष्ट ॥ वृतु वर्तने ॥ वर्तते ॥

भाषा–द्युत आदिक रुचपर्यन्त धातुओंसे लुङ्के विषे परस्मैपद होय विकल्पकरक । परस्मैपदके विषे द्युत आदिक रुचपर्यन्त धातुओंसे ङप्रत्यय होय और सिका अपवाद होय । उदाहरण–द्युतधातुसे लुंङ्का परस्मैपद होनेपर ङप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ अद्युतत् । और जहां परस्मैपद नहीं हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । अद्योतिष्ट । श्विताधातु वर्णअर्थमें वर्त्ते है इसमें आकार इत्संज्ञक है । द्युतादि होनेसे लुङ्मे रूप सिद्ध हुआ । अश्वितत् । अश्वेतिष्ट । ञिष्विदा धातु स्नेहनमे तथा छोड देनेमे वर्त्ते है । इसमे ञिकार और आकार इत्संज्ञक है । ञिमिदा धातुभी स्नेहनमे वर्त्ते है रुचधातु प्रकाश और अभिप्रीति अर्थमे वर्त्ते है और घुट्धातु परिवर्त्तन नाम लौट फेरकर देनेमें वर्त्ते है । रुठ, लुठ और लुट् धातु प्रतीघात नाम मारनेमे वर्त्ते है । शुभधातु दीप्तिअर्थमें वर्त्ते है । क्षुभधातु संचलन नाम क्षुभित होनेमें वर्त्ते है । णभ् और तुभ धातु हिंसाअर्थमें वर्त्ते हैं । णभ् धातुका रूप ' आदेः ष्णः स्नः, लोपः पचा० ' इत्यादिकर लिट्में सिद्ध हुआ । नेभे । स्रंसु, ध्वंसु और भ्रंशु धातु अवस्रंसन नाम नीचे गिरनेमें वर्त्ते है और अकेला ध्वंसु धातु गतिअर्थमें वर्त्ते है । ङप्रत्ययके विषें 'नो लोपः' इसकर रूप सिद्ध हुआ । अस्रसत् । अध्वसत् । अभ्रसत् । और जहां ङप्रत्यय नही हुआ तहां सिमें आत्मनेपदके विषें सिद्ध हुआ । अस्रंसिष्ट । अध्वंसिष्ट अभ्रंसिष्ट । स्रमुधातु विश्वास करनेमे वर्त्ते है । वृतुधातु वर्त्तनमें वर्त्ते है । लट्में वृत-ते ऐसा स्थित है ' उपधायाः लघोः' इसकर सिद्ध हुआ । वर्त्तते । लिट्में सिद्ध हुआ । ववृते ॥

वृताद्भ्यः स्यसयोर्वा पं पेऽनिट्त्वं च ॥ १८६ ॥ वृतादिभ्यः, स्यसयोः, वा, पम्, पे, अनिट्त्वम्, च । सप्तपदमिदं सूत्रम् ॥ वत्स्यंति वर्तिष्यते । अवृतत् अवर्तिष्ट ॥ वृधु वृद्धौ ॥ वत्स्यंति वर्धिष्यते । अवत्स्यत् अवर्धिष्यत् । अवृधत् अवर्धिष्ट ॥ शृधु शब्द-

कुत्सायाम् ॥ शर्धते ॥ स्यन्दू प्रस्रवणे ॥ स्यन्दते । स्यन्त्स्यति । स्यन्दिष्यते स्यन्त्स्यते।अस्यदत् अस्यन्दिष्ट अस्यन्त। कृपू सामर्थ्ये ॥

भाषा—वृतादि अर्थात् वृतु, वृधु शृधु स्यन्द, कृपू इन धातुओंसे स्यप और सप्रत्यय पर हुए सते परस्मैपद होय विकल्पकरके और परस्मैपद होनेपर वृतादिक धातुओंको अनिट् भाव होय । उदाहरण—लृट्में वृतधातुसे परस्मैपद करनेपर इट् न होनेसे 'गुण' इसकर रूप सिद्ध हुआ । वर्त्स्यति । और जहां परस्मैपद नहीं हुआ तहां धातुको अनिट्भावभी नहीं हुआ तब रूप सिद्ध हुआ । । वर्तिष्यते । लुङ्में द्युतादिक होनेसे परस्मैपद होनेपर रूप सिद्ध हुआ । अवृतत् । और जहां परस्मैपद नहीं हुआ वहां रूप सिद्ध हुआ । अवर्तिष्ट । वृधुधातु वृद्धि अर्थमें वर्त्ते है इसी प्रकार वृधुधातुके रूप मानने और इसी प्रकार शृधुधातुके रूप जानने । स्यन्दूधातु प्रस्रवण नाम गीले करनेमें वर्त्ते है । लट्में सिद्ध हुआ । स्यन्दते । लिट्में । सस्यन्दे । लृट्में परस्मैपद होनेपर इट् न होनेसे रूप सिद्ध हुआ । स्यन्त्स्यति । और जहां परस्मैपद नहीं हुआ वहां एक जगह 'ऊदितो वा' इसकर विकल्पकरके इट् न होनेसे रूप सिद्ध हुआ । स्यन्त्स्यते । और जहा इट् हुआ तहां सिद्ध हुआ । स्यन्दिष्यते । लुङ्में द्युतादिक होनेसे एक जगह परस्मैपद होनेपर रूप सिद्ध हुआ । 'नो लोपः' इसकर । अस्यदत् । और जहां परस्मैपद नहीं हुआ तहा एक जगह इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अस्यन्दिष्ट । और जहां ऊदितो वा' इसकर इट् न होनेपर प्रथम रूप सिद्ध हुआ अस्यन्द्-स्-त फिर 'झलात्' इस कर सिका लोप करनेपर 'झलो झला०' इसकर रूप सिद्ध हुआ । अस्यन्त । द्विवचनमें अस्यन्त्साताम् । कृपूधातु सामर्थ्य अर्थमें वर्त्ते है ॥

कृपो रो लः ॥ १८७ ॥ कृपः, रः, लः । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥

कृपो रेफस्य ल ऋकारस्य लृकारः ॥ कल्पते। चक्लृपे। कल्पिपीष्ट ॥

भाषा—कृपूधातुके रकारको लकार और ऋकारको लृकार होय । उदाहरण—लट्में गुण करनेपर जो कि रकार हुआ है उसके स्थानमें लकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । कल्पते । लिट्में द्वित्व, र, उरदत्व' इत्यादिकर प्रथम रूप स्थित हुआ च-कृप्-ए फिर ऋकारको लकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । चक्लृपे । सीयुडादिकमें इट् होनेपर 'उपधाया लघो', क्लिा०' इनकर रूप सिद्ध हुआ । कल्पिपीष्ट । और जहा 'ऊदितो वा' इसकर इट् नहीं हुआ वहां रूप स्थित हुआ कृप्-सीष्ट ॥

सिस्योः ॥ १८८ ॥ सिस्यो । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ उपधाया गुणो न सिस्योरनिटो परतः ॥ क्लृप्सीष्ट ॥

भाषा–उपधाको गुण नहीं होय अनिट् सि और सी पर हुए संते । उदाहरण–कृप्-सीष्ट । इसमें कृपधातुके उपधारूप ऋकारको गुण नहीं हुआ । क्योंकि अनिट् सीष्टादिकोंका सी परे विद्यमान है तब ' कृपो रो लः ' इसकर ऋकारको लकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । क्लृप्सीष्ट ॥

कृपेस्तादौ पं वा पेऽनिट्त्वं च ॥ १८९ ॥ कृपेः, तादौ, पं, वा, पे, अनिट्त्वम्, च । सप्तपदमिदं सूत्रम् ॥ कल्प्ता । आति–कल्पिता कल्प्ता । कल्प्स्यति । कल्पिष्यते कल्प्स्यते । अक्लृपत् । अकल्पिष्ट अक्लृप्त ॥ एते द्युतादयो वृतादयश्च ॥ व्यथ दुःखसंचलनयोः ॥ व्यथते ॥

भाषा–कृप्धातुसे तादिकमे विकल्पकरके परस्मैपद होय और परस्मैपद होनेपर कृप्धातुको अनिट् भाव होय । उदाहरण–तादिकमें परस्मैपद होनेपर अनिट् होनेसे ' उपधाया लघोः ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । कल्प्ता और । जहां परस्मैपद नहीं हुआ तहां एक जगह इट् होनेपर रूप सिद्ध हुआ । कल्पिता । और ' ऊदितो वा ' इसकर इट् न होनेसे रूप सिद्ध हुआ । कल्प्ता । स्यप्में वृतादिक होनेसे परस्मैपद करनेपर रूप सिद्ध हुआ । कल्प्स्यति । और जहां परस्मैपद नहीं हुआ तहां ' ऊदितो वा ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । कल्पिष्यते कल्प्स्यते । लुङ्म द्युतादिक होनेसे एक जगह परस्मैपद करनेसे डप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अक्लृपत् । और जहां परस्मैपद नहीं हुआ तहां ' ऊदितो वा ' इसकर एक जगह इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अकल्पिष्ट । और जहां इट् नहीं हुआ तहां रूप स्थित हुआ अक्लृप् स्-त फिर ' सिस्योः ' इसकर गुण न करनेसे ' झसात् ' इसकर सिका लोप किया तब रूप सिद्ध हुआ । अक्लृप्त द्विवचनमें । अक्लृप्साताम् ॥ यह पिछारी कहे हुए धातु द्युतादिक और वृतादिक हैं । व्यथ धातु दुःखित होनेमें तथा क्षुभित होनेमें वर्त्ते है । लट्में । व्यथते ॥

व्यथेर्णादौ पूर्वस्य यस्य इः ॥ १९० ॥ व्यथेः, णादौ, पूर्वस्य, यस्य, इः । पंचपदमिदं सूत्रम् ॥ विव्यथे । अव्यथिष्ट ॥ ज्युङ् गतौ ॥ ज्यवते । जुज्युवे । अज्योष्ट ॥ रमु क्रीडायाम् ॥ रमते ॥

भाषा–व्यथधातुके पूर्वके यको इकार होय णप् आदिक प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–लिट्में ' द्विश्च ' इसकर द्वित्व करनेपर पूर्वके यको इकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । विव्यथे । लुङ्में । अव्यथिष्ट । ज्युङ्धातु गतिअर्थमें वर्त्ते है । लट्में

उपयते । लिट्में 'क्षिप, पुर्वस्य इत्यादि' क्षेप ' इसकर सिद्ध हुआ । जुगुप्से । लुङ्में इट् होनेपर ' गुणः, किन्त०, छुमि' पु ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । अजुगोप्त । रमधातु क्रीडा करनेमें वर्त्ते है । लट्में सिद्ध हुआ । रमते ॥

व्याङ्पर्युपेभ्यो रम पम् ॥१९१॥ व्योईश्वपर्युपेभ्य', 'रमे', 'पर्मे' । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ विरमति । आरमति । परिरमति । उपरमति । रेमे । आरसीत् । अरस्त ॥ लोकृ दर्शने । लुलोके ॥ श्लोकृ सघाते ॥ अश्लोकिष्ट ॥ शकि शङ्कायाम् ॥ शशङ्के । अशङ्किष्ट ॥ अकि लक्षणे ॥ आनङ्के ॥ ढौकृ त्रौकृ रघि गतौ ॥ डुढौके । तुत्रौके अत्रौकिष्ट ॥ लघि भोजननिवृत्तौ ललङ्घे । अलङ्घिष्ट । बाधृ विलोडने ॥ बाधते । बबाधे । अबाधिष्ट ॥ नाथृ नाधृ याच्ञोपतापैश्वर्याशीःषु ॥

भाषा—वि आङ् परि और उप इन उपसर्गोंसे रमधातुको परस्मैपद होय । उदाहरण—वि, आङ्, परि, उप यह उपसर्ग पूर्व करनेसे रमधातुको परस्मैपद करनेपर रूप सिद्ध हुआ । विरमति । आरमति । परिरमति । उपरमति आङ् उपसर्ग पूर्व होनेसे लुङ्के विषैं परस्मैपद होनेपर ' यमिरमिनमातां सक् सेरिट् पे इसकर सकका आगम और सिका इट् करनेपर रूप स्थित हुआ आरम्-स-इ-स-ई-त् फिर नश्चापदान्ते०, इट ईटि ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । आरसीत् । द्विवचनमें । आरंसिष्टाम् । और जहां आङ्उपसर्गादि पूर्व नहीं हुए तहां लुङ्में अनिट् होनेसे इट् न होनेसे रूप सिद्ध हुआ । अरस्त । लोकृधातु देखनेमें वर्त्ते है । लिट्में सिद्ध हुआ । लुलोके । श्लोकृधातु संघात नाम ग्रंथ अर्थात् ग्रथित करनेमें वर्त्ते है । शकिधातु शंका करनेमें वर्त्ते है । लिट्में 'इदितो नुम् ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । शशङ्के । और अकिधातु चिह्न करनेमें वर्त्ते है । लिट्में ' इदितो नुम् ' इसकर नुमागम 'करनेपर संयोगान्ताक्षरादि होनेसे ' नुगशाम् ' इसकर पूर्वको नुक आगम किया आम्नोर्णादि इसकर पूर्वके अकारको आकार किया तब रूप सिद्ध हुआ । आनंङ्के । ढौकृ और त्रौकृ यह धातु और रघिधातु गतिअर्थमें वर्त्ते हैं । लिट्में । डुढौके । तुत्रौके । रंघे । इस प्रकार सिद्ध हुए और लघिधातु भोजनको न प्राप्त होनेमें अर्थात् लंघन करनेमें वर्त्ते है । लिट्में ' इदितो नुम् ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । ललंघे । बाधृधातु विलोडन अर्थमें अर्थात् प्रतिघातमें वर्त्ते है । नाथृ और नाधृ धातु मांगनेमें, रोगमें, ऐश्वर्यमें और आशीर्वादमें वर्त्ते हैं ॥

नाथ आशिष्येव आत्मनेपदम् ॥ १९२ ॥ नाथे', ओशिषि,

एवं, आत्मनेपदम् । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ नाथते । अन्यत्र नाथति । ननाथे अनाथिष्ट ॥ दध धारणे ॥ देधे । अदधिष्ट ॥ स्कुदि आप्रवने ॥ चुस्कुन्दे । अस्कुंदिष्ट ॥ वदि अभिवादनस्तुत्योः ॥ वन्दते । ववन्दे । अवन्दिष्ट ॥ भदि कल्याणे सुखे च ॥ बभन्दे ॥ मदि स्तुतिमोदमदस्वमकान्तिगतिषु ॥ मन्दते । ममन्दे । अमन्दिष्ट ॥ स्पदि किंचिच्चलने ॥ पस्पंदे ॥ मुद हर्षे ॥ मुमुदे ॥ दद दाने ॥ दददे ॥ यती प्रयत्ने ॥ येते ॥ ञित्वरा संभ्रमे ॥ त्वरते । तत्वरे । अत्वरिष्ट ॥ षह मर्षणे ॥ सहते । सेहे । साहिता ॥ इषसहलुभरुषरिषामनपि तस्येड्वा ॥

भाषा—नाथधातुसे आशीर्वाद अर्थकेही विषैं आतमनेपद होय है। उदाहरण—नाथधातुसे आशीर्वाद अर्थमें आतमनेपद करनेसे लट्में रूप सिद्ध हुआ । नाथते । और अन्य अर्थोंके विषैं परस्मैपद करनेसे रूप सिद्ध हुआ । नाथति। । दधधातु धारण करनेमें वर्त्ते है । लिट्में 'लोपः पचा०' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । दधे। लुङ्में इट् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अदधिष्ठ । स्कुदिधातु आप्लवन अर्थमें वर्त्ते है । आप्लवन नाम कूदनेका तथा उद्धरणका है । लिट्में 'इदितो नुम्, द्विश्च, न शसात्खपाः' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । चुस्कुन्दे । वदिधातु प्रणाम करनेमें तथा स्तुति करनेमें वर्त्ते है । लिट्में 'इदितो नुम्, द्विश्च' इनकर रूप सिद्ध हुआ । ववन्दे। वकरादि होनेसे पूर्व लोप और एकार नहीं हुआ ।भदिधातु कल्याण और सुखअर्थमें वर्त्ते है लिट्में 'द्विश्च, झपानां जबचपाः' इनकर रूप सिद्ध हुआ । बभन्दे । मदिधातु स्तुति मोद अर्थात् संतोष, मद नाम गर्व, स्वम, आलस्य, कान्ति और गतिअर्थमें वर्त्ते है । लुङ्में । अमन्दिष्ठ। यतीधातु प्रयत्न करनेमें वर्त्ते है लिट्में 'लोपः पचां०' इसकर रूप सिद्ध हुआ । येते । ञित्वरा धातु संभ्रम करनेमें वर्त्ते है । इसमे ञि और आ इत्संज्ञक हैं । लुङ्में सेट् होनेसे सिद्ध हुआ । अत्वरिष्ट । षहधातु सहनेमें वर्त्ते है । 'आदेः ष्णः०' इसकर लट्में रूप सिद्ध हुआ । सहते । लिट्में 'लोपः पचां०' इसकर पूर्वलोप और एकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । सेहे । और तादिकमें इट् होनेसे सिद्ध हुआ । सहिता । और जहां 'इषसहलुभरुष०' इसकर इट् नहीं हुआ तहां रूप स्थित है हुआ सह्-ता फिर 'हो ढः, तथोर्धः, ष्टुभिः ष्टुः' इनकर रूप स्थित हुआ सढ्-ढा फिर 'ढि ढो लोपो दीर्घश्च' इसकर ढकार लोप करनेपर रूप स्थित हुआ सा-ढा फिर ॥

सहिवहोरोदवर्णस्य ढलोपे सति ॥ ११३ ॥ 'सहिवहो, 'ओत् अवर्णस्य, 'ढलोपे, 'सति । ४चपदमिदं सूत्रम् ॥ सोढा । असोढ असहिष्ट ॥ गाहू विलोडने ॥ गाहते । जगाहिषे जघाक्षे । जगाहिढ्वे जगाहिध्वे जघाढ्वे । गाहिषीष्ट घाक्षीष्ट । गाहिता गाढा । गाहिष्यते घाक्ष्यते । अगाहिष्ट अगाढ । अघाक्षाताम् । अघाढ्वम् ॥ गृहू ग्रहणे ॥ जगृहिषे जघृक्षे । जगृहिध्वे जघृढ्वे । गर्हिषीष्ट घृक्षीष्ट । गर्ढा । गर्हिष्यते घर्क्ष्यति । अगर्हिष्ट अघृक्षत ॥

भाषा—सह और वह धातु इन दोनोंके अवर्णको ओकार होय ढकारका लोप होने-पर । उदाहरण—सो-ढा । इसमें सहधातुके अकारको ओकार किया क्योंकि ढकारका लोप हुआ है तब रूप सिद्ध हुआ । सोढा । और लुङ्में जहां ढलके विषे 'इपसह० । इसकर इट नहीं हुआ तहां इसी प्रकार रूप सिद्ध हुआ । असोढ । और जहां इट् हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । असहिष्ट । गाहधातु विलोडन नाम विलोवनेमें वर्ते है । लिट्के सेवचनमें जहां इट हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । जगाहिषे । और 'उदितो वा,' इसकर इट् नहीं हुआ तहां 'हो ढ', आदिजबानां झमान्तस्य०, षढो' कस्से, किलसप०' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ। जघाक्षे । और ध्वेवचनमें सेट्पक्षके विषे 'सेटो इत्याद्य' इसकर एक जगह ध्वेके स्थानमें ढ्वे करनेसे रूप सिद्ध हुआ ।। जगाहिढ्वे जगाहिध्वे । और जहां इट नहीं हुआ तहां 'हो ढ' इसकर प्रथम रूप स्थित हुआ जगाढ्ध्वे फिर 'आदिजबानां झमान्तस्य०' इसकर आदिके गकारको घकार करनेपर रूप स्थित हुआ जघाढ्ध्वे फिर 'झभि' हुः' इसकर ध्वेके स्थानमें ढ्वे करनेपर 'ढि ढो लोपो०' इसकर रूप सिद्ध हुआ । जघाढ्वे । सीयुडादिकमें सेट्पक्षमें । गाहिषीष्ट । अनिट्पक्षमें 'हो ढ', आदिजबानां० षढो' कस्स' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । घाक्षीष्ट । तादिकमें सेट्पक्षमें । गाहिता । अनिट्पक्षमें 'हो ढ', तथोर्ध झभि०, ढि ढो लोपो०' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । गाढा । लुङ्में सेट्पक्षमें । अगाहिष्ट । और अनिट्पक्षमें 'हो ढ', झसात् तथोर्ध झभि० ढि ढो लो०' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । अगाढ । द्विवचनमें 'हो ढ', आदिजबानां०, षढो' कस्से' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । अघा-क्षाताम् । और ध्वेवचनमें सेट्पक्षमें । अगाहिध्वं, अगाहिढ्वम् । अनिट्पक्षमें 'ध्वे सेर्ले-प' इसकर सिचका लोप किया। फिर 'हो ढ', झभि०, आदिजबानां०, ढि ढो लोपो०' इन कर रूप सिद्ध हुआ । अघाढ्वम् । गृहधातु ग्रहण करनेमें वर्ते है लिट्के ध्वे वचनमें जहां

इट् नहीं हुआ तहां ' हो ढः, आदिजबानां०, ष्टुभिः ष्टुः ' इनकर रूप स्थित हुआ जघृढ्-वे इसमें ' ढि ढो लोपो दीर्घश्च ' इसकर ढकारका लोप तौ हो गया परन्तु पूर्व ऋकारको दीर्घ नहीं हुआ क्योंकि वृत्तिमें ऋकारको दीर्घ होना निषेध किया है तब रूप सिद्ध हुआ । जघृढ्वे । सीष्टादिकमे ' हो ढः, आदिजबानां०, षढोः कस्से, किलात्षः०, सिस्योः' इनकर सिद्ध हुआ । घृक्षीष्ट । तादिकोंमे ' हो ढः, तथोर्धः, ष्टुभिः०, ढि ढ लो० ' इनकर रूप सिद्ध हुआ । गर्ढा । और लुङ्मे जहां अनिट् है तहां ' हशषान्तात्सक् ' इसकर सिके स्थानमें सक् प्रत्यय करनेपर ' हो ढः, आदिजबानां०, षढोः कस्से, किलात्षः० ' इनकर रूप सिद्ध हुआ । अघृक्षत ॥

आति सको लोपः स्वरे ॥ १९४ ॥ आति, सकः, लोपः, स्वरे । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ अघृक्षाताम् अघृक्षत । अघृक्षध्वम् ॥ इत्यात्प्रक्रिया ॥

भाषा—आत्मनेपदके विषैं सक्का लोप होय स्वर पर हुए संते । षष्ठीनिर्दिष्ट होनेसे सक्के अन्त्य अकारका लोप होय । उदाहरण—द्विवचन आतांके विषैं सक् प्रत्ययके अकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अघृक्षाताम् । और बहुवचन अन्तमें ' आतोऽन्तोदनतः ' इसकर सिद्ध हुआ । अघृक्षत ॥ इत्यात्प्रक्रिया समाप्तिमगात् ॥

इति मंगलसेनात्मजकाशिरामप्रपञ्चितपदार्थभाषया भ्वादेरात्मनेपदमावृतम् ।

राजृ दीप्तौ ॥ रेजतुः रराजतुः । रेजे रराजे । अराजीत् अराजिष्टाम् । अराजिष्ट ॥ खनु खनने ॥ चखान चख्नतुः चख्नुः । खायात् खन्यात् । अखानीत् अखनीत् । अखनिष्ट ॥ हृञ् हरणे ॥ जहार । ऋदन्तात्थपो नेट् । जहर्थ । जह्रे । ह्रियात् ॥

भाषा—राजृधातु प्रकाशअर्थमें वर्त्ते है । राजृधातुसे लेकर उभयपद धातु गिनाये हैं । लिट्के अतुस् वचनमें तथा आत्मनेपदके एकवचनमें ' राजृभ्राजृभ्राशृ० ' इसकर विकल्पकरके पूर्वलोप और एकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । रेजतुः, रराजतुः । रेजे, रराजे । लुङ्के परस्मैपदमें । अराजीत् । आत्मनेपदमें । अराजिष्ट । खनुधातु खनन नाम अवदारण अर्थात् खोदनेमें वर्त्ते है । लिट्के परस्मैपदके प्रथमपुरुषके प्रथमवचनमें ' द्विश्च, कुहोश्चुः, झपाना जबचपाः, अत उपधायाः ' इनकर सिद्ध हुआ । चखान । द्विवचनमें ' गमां स्वरे ' इसकर उपधाभूत खनके अकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । चख्नतुः । आत्मनेपदके एवचनमें इसी प्रकार सिद्ध

हुआ । धरुने । यादादिकोंमें 'अनसनसनामात्स्वमनिटि से' इसकर एक जगह सनकी टिके भाकर करनेसे रूप सिद्ध हुआ । स्नायत् । और जहां नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ स्नपात् । उसके परस्मैपदमें 'मतो हलादेर्लघोर्वा वृद्धिः' इसकर एक जगह उपधाको वृद्धि करनेसे रूप सिद्ध हुआ । असानीत् । और एक जगह वृद्धि न करनेसे रूप सिद्ध हुआ असनीत् । आत्मनेपदमें । असनिष्ट । हुधातु हरण अर्थमें वर्ते है । लिट्के परस्मैपदके थपूवचनमें 'ऋत्वन्तात्थपो नेट्' इसकर इट् न होनेसे रूप सिद्ध हुआ । जहर्थ । और आत्मनेपदके एकवचनमें 'ऋर्र' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । जहे । यादादिकोंके विषे 'यादादौ ये' इसकर रिङ् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । ह्रियात् ॥

ऋ ॥ १९५ ॥ ऋ । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ ऋवर्णस्य सिस्योरनिटो न गुणः स्यात् । अहार्षीत् । अहृत ॥ दान आर्जवे ॥ दीदांसति । शीदांसति ॥ शान तेजने ॥ शीशांसते ॥ गुहू संवरणे ॥

भाषा—ऋवर्णको अनिट् सि और सी पर हुए सते गुण नहीं होय । भाव यह है कि ऋवर्णान्त धातुको गुण नहीं होय अनिट् सिप्रत्यय और अनिट् सीप्रत्यय पर हुए सते । उदाहरण—ऋकारान्त हृधातुसे परे अनिट् सिप्रत्यय और अनिट् विद्यमान है इस कारण हृधातुको गुण न होनेसे रूप सिद्ध हुआ । हृषीष्ट । स्यमें 'ऋहनोः स्यस्य' इसकर इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । हरिष्यति । आत्मनेपदमें । हरिष्यते । लुङ्में अनिट् होनेसे परस्मैपदके विषे 'धातोर्नामिन' इसकर सिद्ध हुआ । अहार्षीत् । द्विवचनमें । अहार्ष्टाम् । आत्मनेपदमें 'लोपो ह्रस्वात्' इसकर सिका लोप करनेपर 'ऋ' इसकर गुण न करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अहृत । द्विवचनमें सिद्ध हुआ अहृषाताम् । दान्धातु आर्जव नाम सरलता अर्थमें वर्ते है । 'गुप्तप' इसकर सन्प्रत्यय करनेपर 'य से, मानादीनां पूर्वस्य दीर्घः, नश्चापदान्ते०' इनकर रूप सिद्ध हुआ । दीदांसति और शान्धातु तेजन नाम तीक्ष्ण करनेमें वर्ते है । इसी प्रकार शानधातुके रूप जानने । गुह्धातु संवरण नाम ढकनेमें वर्ते है ॥

गुहेरुपधाया ऊद्गुणहेतौ स्वरे ॥ १९६ ॥ गुहेः, उपधायाः, ऊत्, गुणहेतौ, स्वरे । पञ्चपदमिदं सूत्रम् ॥ जुगूहतुः । जुगुहिथ जुगोढ । जुगुहिवे जुगुह्वे । जुगुहिमे जुगुह्मे । गुहिषीष्ट घुक्षीष्ट । गुहिता गोढा । गुहिष्यति घोक्ष्यति ॥

भाषा—गुह्धातुके उपधाको ऊकार होय गुणके विधान करनेवाला स्वरादि प्रत्यय परे हुए सते । उदाहरण—गुह्धातुसे लिट्में 'अप् कतरि' इसकर अप्

करनेपर स्थित हुआ गुह-अ-ति इसमें गुहधातुसे परे गुणहेतुक अप् प्रत्यय परे होनेसे उपधारूप उकारको ऊकार करनेम रूप सिद्ध हुआ । गूहति । णपूमे सिद्ध हुआ । जुगूह । थप्में इट्पक्षमें सिद्ध हुआ । जुगूहिथ । और अनिट्पक्षमें 'हो ढः, तथोर्धः, ष्टुभि ष्टुः, ढि ढो लोपो० ' इनकर सिद्ध हुआ । जुगोढ । आत्मनेपदके सेवचनमें सेट्पक्षमें सिद्ध हुआ । जुगुहिषे । और अनिट्पक्षमें ' हो ढः, आदिजवानां०, षढोः कस्से 'इत्यादिकर सिद्ध हुआ । जुघुक्षे । और ध्वमे सेट्पक्षमे सिद्ध हुआ । जुगुहिध्वे । जुगुहिढ्वे । और अनिट्पक्षमें ' हो ढः, आदिजवानां०, ष्टुभिः०, ढि ढो लोपो० ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । जुघूढ्वे । इट्पक्षमें । गूहिषीष्ट । अनिट्पक्षमे ' हो ढः, आदिजवानां, षढोः कस्से, सिस्योः ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । घुक्षीष्ट । लुङ्में इट्पक्षमें । अगूहीत् । आत्मनेपदमें । अगूहिष्ट । अनिट्पक्षमे ' हशषान्तात्सक् ' इसकर सक् करनेपर परस्मैपदमें । ' हो ढः, आदिजवानां०, षढोः कस्से ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अघुक्षत् । आत्मनेपदमें अगुह् स-त ऐसा स्थित है ॥

दुहदिहलिहगुहूभ्यः सको लुग्वा वकारतवर्गयोराति ॥ १९७ ॥

दुहदिहलिहगुहूभ्यः, सकः, लुक्, वा, वकारतवर्गयोः, आति । षष्ठपदमिदं सूत्रम् ॥ अगूढ अघुक्षत अघुक्षाताम् अघुक्षन्त । अगूढाः अघुक्षथाः अघुक्षाताम् अगूढ्वम् अघुक्षध्वम् । अघुह्वहि अघुक्षावहि अघुक्षामहि । अगूहिष्ट । अघुक्षत् अगूहीत् ॥ भज सेवायाम् ॥ भाजिथ बभक्थ । भेजे । भक्षीष्ट । अभाक्षीत् । अभक्त ॥ श्रिञ् सेवायाम् ॥ शिश्रियतुः । शिश्रिये । श्रीयात् । श्रयिषीष्ट । श्रयिता । अशिश्रियत् । अशिश्रियत ॥ त्विष दीप्तौ ॥ तित्विषे । तित्विक्षीष्ट । त्वेष्टा । त्वेक्ष्यते । अत्विक्षत् ॥ स्पश बाधनस्पर्शनयोः ॥ पस्पाश । पस्पशे । अस्पशीत् । अस्पाशिष्ट । अस्पाशीत् ॥ लष कान्तौ ॥ लष्यति लषति । लष्यते लषते । लषिता ॥ रञ्ज रागे ॥ रजति । ररजिथ ररङ्क्थ । ररञ्जे । रज्यात् । रङ्क्षीष्ट । अराङ्क्षीत् । अरङ्क्त ॥ भृञ् भरणे ॥ भरति । बभर्थ । बभृव । बभृढ्वे । भर्ता ॥ धृञ् धारणे ॥ दधर्थ दध्रिध्वे दध्रिढ्वे । अधार्षीत् अधृत ॥ णीञ् प्रापणे ॥ निनयिथ निनेथ । निन्ये । अनैषीत् । अनेष्ट ॥ टुयाचृ याच्ञा-

याम् ॥ याचति । ययाचे । अयाचीत् । अयाचिष्ट ॥ यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु ॥ इयजिथ इयष्ठ । अयाक्षीत् । अयष्ट । अयक्षाताम् ॥ डुवप् बीजतन्तुसन्ताने ॥ उवपिथ उवप्थ । ऊपे । उप्यात् । अवाप्सीत् अवाप्ताम् । अवप्त । वह प्रापणे ॥ वहति । उवहिथ उवोढ । ऊहे । उह्यात् । वक्षीष्ट । वोढा । अवाक्षीत् अवोढाम् । अवोढ अवक्षाताम् ॥ वेञ् तन्तुसन्ताने ॥

भाषा—दुह, दिह, लिह और गुह धातु इनसे परे आत्मनेपदके विषैं तकार और थकार पर हुए ऐसे दिकारसकारके सकारका लोप होय । उदाहरण—दुहके आत्मनेपदके तन्वचनमें एक जगह सकका लुक् करनेपर स्थित हुआ । अदुह्+त फिर 'हो ढः झलि', 'झषस्तथोर्धोऽधः', ष्टुना०, 'ढो ढे लोपः०' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । अदुग्ध । और जहां सकका लुक् नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । अधुक्षत । द्विवचनबहुवचनमें 'आति सको लोपः स्वरे' इसकर सिद्ध हुआ । अधुक्षाताम् । अधुक्षन्त । थासमें एक जगह सकका लुक् करनेपर 'हो ढः', 'झषस्तथोर्धोऽधः', ष्टुना०, 'ढि ढो लो०', इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अदुग्धाः । और जहां सकका लुक नहीं हुआ तहां । अधुक्षथाः । ध्वंके विषैं सकका लुक करनेपर 'हो ढः', 'आदिजबानां०', ष्टुना०, 'ढि ढो लोपो०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अघुग्ध्वम् । और एक जगह सकका लुक् न करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अधुक्षध्वम् । वहिमें एक जगह सकका लुक् करनेपर रूप सिद्ध हुआ अदुह्वहि । और जहां सकका लुक् नहीं हुआ तहां 'अतो दीर्घो यञि' इसकर सिद्ध हुआ अधुक्षावहि । महिमें सिद्ध हुआ । अधुक्षामहि । ममधातु सेट् करनेमें वर्ते है । यप्में अकारवान् होनेसे 'स्वरान्ताद्वस्वम०' इसकर एक जगह इट् करनेपर लोप पर्वा० इसकर सिद्ध हुआ । मेजिथ । और जहां इट् नहीं हुआ तहां 'स्वसे चरा ह०, किदात्प०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । ममन्थ । आत्मनेपदमें । मेमे । सीयुडादिकमें 'ष कुः' मक्षीष्ट । लुङमें । अमाक्षीत् । द्विवचनमें 'झलो झलि' इसकर सिका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अमाक्ताम् । बहुवचनमें 'अमाक्षुः' इसकर सिका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । अमक्त । द्विवचनमें । अमक्षाताम् । श्रिञ्धातु सेट् करनेमें वर्ते है । लिट्के मध्यम और एकवचनमें 'शुपातो' इसकर इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । शिश्रियथ । शिश्रिये । यादिकमें ये ,' इसकर सिद्ध हुआ । श्रीयात् । सीयुडादिकमें सेट् होनेसे रूप सिद्ध हुआ । श्रयिषीष्ट । लुङ्के विषैं 'श्रिद्रुस्रुभ्यो ङो धा०' इसकर सिके स्थानमें चङ्-रूप और धातुको द्वित्व करनेपर 'ङुपाता' इसकर रूप सिद्ध हुआ । अशिश्रियत् ।

और आत्मनेपदमे । अशिश्रियत । त्विष्‌धातु प्रकाश अर्थमे वर्त्ते है । लिट्‌में सिद्ध हुआ । तित्वेष । और आत्मनेपदमें । तित्विषे । सीट्यादिकोंमें अनिट् होनेसे 'षढोः कस्से' इसकर ककार करनेपर 'क्लिात्पः०, सिस्योः' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । त्विक्षीष्ट । लुङ्‌मे 'हशपान्तात्सक्' इसकर सक् करनेपर 'षढोः कस्से, क्लिात्पः०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अत्विक्षत् । स्पशधातु बाधा और स्पर्शन अर्थमें वर्त्ते है । लिट्‌में 'द्विश्च, न शसात्खपाः' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । पस्पाश, पस्पशे । लुङ्‌मे 'अतो हसादेर्ले०' । अस्पशीत, अस्पाशीत् । आत्मनेपदमें । अस्पशिष्ट । लषधातु कान्ति नाम इच्छा अर्थमें वर्त्ते है । भ्राशभ्लाशभ्रमु०' इसकर एक जगह यप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । लष्यति, लष्यते । और जहां यप्रत्यय नहीं हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । लषति, लषते । रञ्जधातु रागअर्थमे वर्त्ते है । 'अपिरंजदंश०' इसकर लट्‌में रूप सिद्ध हुआ । रजति, रजते । थप्‌मे अकारवान् होनेसे 'स्वरान्तादत्वतश्च' इसकर एक जगह इट् होनेपर रूप सिद्ध हुआ । ररंजिथ । और जहां इट् नहीं हुआ तहां । 'चोः कुः, खसे चपा०' इनकर ककार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । ररंक्थ । आत्मनेपदमे एकवचनके विषैं । ररंजे । यादादिकमे 'नो लोपः' इसकर रूप सिद्ध हुआ । रज्यात् । सीट्यादिकोंमे अनिट् होनेसे 'खसे चपा०, चोः कुः' इनकर ककार करनेपर 'क्लिा०' इसकर रूप सिद्ध हुआ । रंक्षीष्ट । लुङ्‌मे 'अनिटो नामवतः' इसकर वृद्धि करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अराङ्क्षीत् । द्विवचनमें 'झसात्' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अराङ्क्ताम् । आत्मनेपदमें 'झसात्' इसकर रूप सिद्ध हुआ । अरङ्क्त । भृञ्धातु भरणअर्थमें वर्त्ते है । भरण नाम धारण और पोषण करनेका है । लिट्‌के थप्‌वचनमें 'ऋदन्तात्थपो नेट्' इसकर इट् न होनेपर रूप सिद्ध हुआ । बभर्थ । और आत्मनेपदके ध्वेवचनमें 'क्रादेर्णादेः' इसकर इट् न होनेसे 'नामिनोऽचतुर्णां धो ढः' इसकर ध्वेके स्थानमे ढ्वे करनेपर रूप सिद्ध हुआ बभृढ्वे । लुङ्‌मे । अभार्षीत तन्‌मे 'उः' इसकर गुण न होनेसे 'लोपो ह्रस्वात्' इसकर सिका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अभृत । धृञ्धातु धारण करनेमें वर्त्ते है । थप्‌मे दधर्थ । ध्वेके विषैं इट् करनेपर 'सेटो हलाद्वा' इसकर रूप सिद्ध हुआ । दध्रिध्वे, दध्रिढ्वे । शेष लकारोंमें भृञ्‌के समान रूप जानने । णीञ्धातु प्रापण नाम प्राप्त करनेमें वर्त्ते है । लिट्‌के थप्‌वचनमे 'स्वरान्तादत्वतश्च०' इसकर विकल्पकरके इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । निनयिथ, निनेथ । और लिट्‌के आत्मनेपदके एवचनमें अनेकस्वर असंयोगपूर्व होनेसे 'नुधातोः' इसकर यकार होनेपर रूप सिद्ध हुआ । निन्ये । सेवचनमें इट् कर 'नुधातोः' इसकर यकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । निन्यिसे । सीट्यादिकमे अनिट् होनेसे सिद्ध हुआ । नेषीष्ट । लुङ्‌मे । अनैषीत

द्विवचनमें । अनैष्टाम् । आत्मनेपदमें । अनेष्ट । दुयाचृ धातु भिक्षा करनेमें वर्त्ते है । इसमें टु और अकार इत्संज्ञक हैं । लिट्में । ययाच, ययाचे । लुङ्में । अयाचीत्, अयाचिष्ट । यजधातु देवपूजा नाम यज्ञ करनेम और संगतिकरण नाम मित्रता करनेमें और दानमें वर्त्ते है णप्में ' लिभ्, णबादौ पूर्वस्य, अत उपधायाः ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । इयाज । थप्में अकारवान् होनेसे ' स्वरान्तादत्वतश्र० ' इसकर एक जगह इट् हुआ वहां रूप सिद्ध हुआ । इयजिथ । और इट् नहीं हुआ तहां 'छशषराजादे'०' इसकर जकारके स्थानमें षकार करनेपर ' ष्टुभि'०' इसकर रूप सिद्ध हुआ । इयष्ट । और आत्मनेपदके विषै प्रथम ' णबादौ पूर्वस्य ' इसकर पूर्वके यको इ संप्रसारण किया फिर ' यजां यवराणामिदुदृत' सम्प्रसारणं किति ' इसकर यजके यको इकार सम्प्रसारण करनेपर ' सवर्णे दीर्घ सह ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । ईजे । यादादिकमें संप्रसारण होनेपर रूप सिद्ध हुआ । इज्यात् । अनिट् होनेसे सीडादिकमें ' छशषराजादे'० ' इसकर षकार किया फिर ' षढो' कस्से, किल्स्य'० ' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । यक्षीष्ट । लुङ्में अयज-स-ई-द ऐसा स्थित है 'छशषरा०' इसकर षकार ' षढो' कः से ' इसकर ककार करनेपर ' अत उपधाया' इसकर वृद्धि किया क्योंकि परस्मैपदमें सिकी णित्संज्ञा होने है तब रूप स्थित हुआ अयाक्-ष-ई-द् फिर ' कषसंयोगे० ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । अयाक्षीत् । और द्विवचनमें प्रथम ' झलात् ' इसकर सिका लोप करनेपर 'छशष०, ष्टुभि'० ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अयाष्टाम् । आत्मनेपदमें । अयष्ट और ध्वेवचनमें ' ध्वे सेर्लोप' इसकर सिका लोप किया फिर ' छशष०, ष्टुभि'०, हवे भवा' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अयड्ढ्वम् । डुवप्धातु बीज नाम बोनेमें और गर्भाधान अर्थमें वर्त्ते है और यह धातु छेदन अर्थमेंभी वर्त्ते है । थप्में अकारवान् होनेसे एक जगह इट् हुआ और एक जगह नहीं तब रूप सिद्ध हुआ। उवपिथ, उवप्थ । और आत्मनेपदके एकवचनमें ' णबादौ पूर्वस्य ' इसकर पूर्वको और ' यजां यवराणां० इसकर परको संप्रसारण करनेपर रूप सिद्ध हुआ । ऊपे । यादादिकमें । उप्यात् । सीडादिकमें अनिट् होनेसे सिद्ध हुआ । वप्सीष्ट । लुङ्में ' अत उपधाया' ' इसकर सिद्ध हुआ । अवाप्सीत् । ' द्विवचनमें झलात् ' इसकर सिद्ध हुआ । अवाप्ताम् । आत्मनेपदके विषै । अवप्त । वह धातु प्राप्ति करनेमें वर्त्ते है । थप्में इट्पक्षमें। उवहिथ । और अनिट्पक्षमें ' हो ढ', तथोर्ध', ष्टुभि'० ' इनकर रूप स्थित हुआ उवढ्-ढ फिर ' ढि ढो लोपो० ' इसकर ढकारका लोप पूर्वदीर्घ करनेपर स्थित हुआ उवा-ढ फिर ' सहिवहोरोदवर्णस्य ' इसकर ओकार करनेपर सिद्ध हुआ । उवोढ । आत्मनेपदमें ' णबादौ पूर्वस्य, यजां यव०' इनकर सिद्ध हुआ । ऊहे । यादादिकमें । उह्यात् । सीडादिकमें अनिट् होनेसे ' हो

ढः, पढोः कस्से, क्लि॰' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । वक्षीष्ट । तादिकमें 'हो ढः, तथोर्धः ष्टुभिः॰, ढि ढो लोपो॰, सहिवहोरोदवर्णस्य' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । वोढा । स्यपूर्में । वक्ष्यते । लुङ्मे 'हो ढः, पढोः कस्से, अत उपधायाः' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अवाक्षीत् । द्विवचनमे 'हो ढः, झसात्, तथोर्धः, ष्टुभिः॰, ढि ढो लोपो॰, सहिवहोरोद॰' इनकर सिद्ध हुआ । अवोढाम् । आत्मनेपदमें । अवोढ । द्विवचनमें 'हो ढः, पढोः॰, क्लि॰' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अवक्षाताम् । वेञ्धातु तन्तुओके विस्तार करनेमें वर्त्ते है । तन्तु सन्तान नाम बुननेका है । लुट्में 'अप् कर्त्तरि, ए अय्' इनकर सिद्ध हुआ । वयति, वयते ॥

वेञो णादौ न सम्प्रसारणम् ॥ १९८ ॥ वेञः, णादौ, न, संप्रसारणम् । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ ववौ । ववे ॥

भाषा—णवादिक प्रत्यय पर हुए संते वेञ्धातुको संप्रसारण नहीं होय । उदाहरण—प्रथम 'संध्यक्षराणामानपि' इसकर आकार करनेपर लिट्मे 'द्विश्च, ह्रस्वः' इनकर प्रथम रूप स्थित हुआ ववा-अ फिर 'णवादौ पूर्वस्य' इसकर संप्रसारण नहीं हुआ क्योंकि वेञ्को लिट्में संप्रसारण नहीं होता है तव 'आतो णव् डौ' इसकर सिद्ध हुआ । ववौ । थपूर्में 'स्वरान्तादत्वतश्च॰' इसकर सिद्ध हुआ । ववियथ, ववाथ । आत्मनेपदमें 'आतोऽनपि' इसकर आकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । ववे ॥

वेञो वा वय् णादौ ॥ १९९॥ वेञः, वा, वय् णादौ । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ उवाय ॥

भाषा—वेञ्धातुको वय् आदेश होय लिट्के विषै । उदाहरण—वेञ्धातुको णपूके विषै वय् आदेश करनेपर 'द्विश्च, णवादौ पूर्वस्य, अत उपधायाः' इनकर रूप सिद्ध हुआ । उवाय । द्विवचनमें उवय्-अतुस् ऐसा स्थित है ॥

ग्रहां क्ङिति च ॥ २००॥ ग्रहाम्, क्ङिति, च । त्रिपदमिदं सूत्रम् । ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिवृश्चतिपृच्छतिविचतिभृज्जतीनां सम्प्रसारणं किति ङिति च ॥ वयो यस्य नेत्वम् । ऊयतुः ऊयुः । ऊवयिथ । ऊये ॥

भाषा—ग्रह, ज्या, वय, व्यध, वश्, ओव्रश्च, प्रच्छ, व्यच और भ्रस्ज धातु इन्होको संप्रसारण होय क्ति और ङित्संज्ञक पर हुए संते और वयके यकारको इकार संप्रसारण नहीं होय । उदाहरण—उवय्-अतुस् । इसमें ग्रहादि वय धातुसे परे किप्रत्यय अतुस् विद्यमान है इस कारण वको उ संप्रसारण किया तव 'सवर्णे दीर्घः सह'

इसकर सिद्ध हुआ । ऊयतुः । थप्में नित्य इट् किया क्योंकि वय् वादिकमें थी होता ही नहीं है तब रूप सिद्ध हुआ । उवयिथ । आत्मनेपदमें । ऊये ॥

वयो यस्य किति लिटि वो वा ॥ २०१ ॥ वये , यस्य, किति, लिटि, वः , वा । पदच्छेदमिद सूत्रम् ॥ ऊवतुः । ऊवे । ऊयात् । वासीष्ट । अवासीत् । अवास्त ॥ व्येञ् संवरणे ॥

भाषा—वयके यकारको कित्लिट्के विषें विकल्पकरके वकार होय । उदाहरण—ऊयतुः । इसमें वयके यकारको एक जगह वकार किया क्योंकि कित्संज्ञक अतुस् प्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । ऊवतुः । और जहां नहीं हुआ । तहां यथावत् ऊयतुः रहा इसी प्रकार आत्मनेपदके एकवचनमें वयके यकारको वकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । ऊवे । यादादिकमें संप्रसारण करनेपर रूप सिद्ध हुआ । ऊयात् । और सीष्टादिकमें अनिट् होनेसे रूप सिद्ध हुआ । वासीष्ट । लुङ्के परस्मैपदमें ' यमिरमिनमातां सक् सेरिट् पे ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । अवासीत् । द्विवचनमें । अवासिष्टाम् । आत्मनेपदमें । अवास्त । व्येञ्धातु संवरण नाम ढकनेमें वर्ते है । लट्में । व्ययति व्ययते ॥

व्येञो लिटि नात्वम् ॥ २०२ ॥ व्येञः , लिटि, न, आत्वम् । पदचतुष्टयमिदं सूत्रम् ॥ विव्याय । विव्ययिथ । वीयात् । व्यासीष्ट । अव्यासीत् । अव्यास्त ॥ ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च ॥

भाषा—व्येञ्धातुको लिट्के विषें आकार नहीं होय । उदाहरण—व्येञ्धातुको ' संध्यक्षराणामानपि' इसकर आकार न होनेसे ' द्विः, णबादौ पूर्वस्य ' इत्यादिकर प्रथम पूर्वके वकारउत्तरवर्त्ती यकारको इकार संप्रसारण करनेपर ' ह्रस्वः ' इसकर रूप स्थित हुआ विव्ये अ फिर ' धातोर्नामिनः ' इसकर एकको ऐ वृद्धि करनेपर ' ऐ आय् ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । विव्याय । द्विवचनमें णबादौ पूर्वस्य ' इसकर पूर्वको और 'यजां यवराणां० ' इसकर परको संप्रसारण करनेपर ' नुधातोः ' इसकर सिद्ध हुआ । विव्यतुः । आत्मनेपदमें इसी प्रकार सिद्ध हुआ । विव्ये यादादिकमें ' यजां यवराणां० ' इसकर सिद्ध हुआ । वीयात् । शेष लकारोंमें संध्यक्षराणामानपि इसकर एकारको आकार कर वेञ्धातुके समान रूप जानने ह्वेञ्धातु स्पर्धा करनेमें तथा शब्द करनेमें वर्ते है । लट्में सिद्ध हुआ । ह्वयति, ह्वयते ॥

द्विरुक्तस्य ह्वयतेः सम्प्रसारणम् ॥ २०३ ॥ द्विरुक्तस्य,

ह्वयतेः संप्रसारणम् । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ जुहाव । जुहविथ जुहोथ । जुहुवे । हूयात् । ह्वासीष्ट ॥

भाषा—द्वित्वको प्राप्त हुए ह्वेञ्धातुको संप्रसारण होय । भाव यह है कि, ह्वेञ् धातुके पूर्वरूप तथा पररूप दोनोंको संप्रसारण होय । उदाहरण—णप्मे ह्वेञ्धातुको 'संध्यक्षराणामानपि' इसकर आकार किया फिर द्वित्व कर पूर्व पर दोनों जगह हकारउत्तरवर्त्ती वकारको संप्रसारण करनेपर रूप स्थित हुआ जु हू अ फिर 'ह्रस्वः' 'धातोर्नामिनः' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ । जुहाव । अतुस्में दोनों जगह संप्रसारण होनेके पश्चात् 'नानप्योर्वः' इसकर उव् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । जुहुवतुः । थप्में 'स्वरान्तादत्वतश्च' इसकर विकल्पकरके थप्को इट् होनेपर रूप सिद्ध हुआ । जुहविथ, जुहोथ । इसी प्रकार दोनों जगह संप्रसारण होनेके पश्चात् 'नानप्योर्वः' इसकर सिद्ध हुआ जुहुवे । यादादिकमें । हूयात् । और सीष्टादिकमे व्येञ्के समान रूप जानने ॥

लिपिसिचिह्वयतीनां ङो लुङि वा आति ॥२०३॥ लिपिसिचिह्वयतीनाम् ङः लुङि, वा, आति । पंचपदमिदं सूत्रम् ॥ अह्वत् । अह्वास्त अह्वत ॥ डुपचष् पाके ॥ पचति । पेचिथ पपक्थ । पेचे । अपाक्षीत् अपाक्ताम् अपाक्षुः ॥ षच समवाये ॥ सेचे । असाचीत् । असाचिष्ट ॥ शप आक्रोशे ॥ शेपे । शप्ता । अशाप्सीत् । अशप्त ॥ हिक्क अव्यक्ते शब्दे ॥ जिहिक्के । अहिक्कीत् ॥ अंचु गतौ याचने च ॥ आनंचे । आञ्चीत् ॥ रेटृ परिभाषणे ॥ रिरेटे । अरेटीत् ॥ चते चदे याचने च । चेते । अचेतीत् । चेदे । अचेदीत् । अचेदिष्ट ॥ प्रोथृ पर्याप्तौ ॥ पुप्रोथ । पुप्रोथे । अप्रोथीत् । अप्रोथिष्ट ॥ मिदृ मेदृ मेधाहिंसनयोः ॥ मिमिदे । अमेदीत् । अमेदिष्ट । मिमेदे । अमेदीत् । अमेदिष्ट ॥ मेधृ संगमे च ॥ मिमेधे । मेधिता ॥ णिदृ णेदृ कुत्सासन्निकर्षणयोः ॥ निनेदे । नेदिता ॥ शृधु मृधु क्लेदने ॥ शर्द्धति । शशर्द्ध शशृधतुः । शशृधे । मर्द्धति । ममृधे अमर्द्धीत् । अमर्द्धिष्ट ॥ बुधि् बोधे ॥ बोधति बोधते । अबोधीत् । अबुधत् । अबोधिष्ट ॥ उबुन्दिर् निशामने । बुन्दति । बुबुन्दे । अबुंदत् ।

अक्षुन्दीत् । अक्षुन्दिष्ट ॥ वेणृ गतिज्ञानचिन्तानिशामनवादित्रग्रहणेषु ॥ वेणति वेणते । विवेण । अवेणीत् । अवेणिष्ट । नान्तोऽप्ययम् । वेनति ॥ चीवृ आदानसंवरणयोः ॥ चीवति । चिचीव चिचीवे । अचीवीत् । अचीविष्ट ॥ चायृ पूजानिशामनयोः ॥ चायति । चचाय चचाये । अचायीत् । अचायिष्ट ॥ व्यय गतौ ॥ व्ययति । वव्याय । वव्यये । अव्ययीत् । अव्ययिष्ट ॥ दाशृ दाने ॥ दाशति । ददाश ददाशे । अदाशीत् अदाशिष्ट ॥ भेषृ भ्लेषृ गतौ ॥ भेषति ॥ भेषृ भ्लेषृ गतौ भये च ॥ भेषति । बिभेषे । बिभेष । बिभ्लेष । अभेषीत् । अभेषिष्ट ॥ अस गतिदीप्त्यादानेषु ॥ असति । आस आसे । आसीत् । आसिष्ट । अष पान्तोऽपि । अपति ॥ चष भक्षणे ॥ चचाष चेषतुः । चेषे । अचषीत् । अचषिष्ट ॥ छष हिंसायाम् ॥ छषति छषते । चच्छाष चच्छषे । अच्छाषीत् । अच्छषिष्ट ॥ झष आदानसंवरणयोः ॥ झषति । जझाष जझषे । अझाषीत् अझषीत् । अझषिष्ट ॥ भ्रक्ष म्लक्ष अदने ॥ बभ्रक्षे । अभ्रक्षीत् । अभ्रक्षिष्ट ॥ दासृ दाने ॥ दासते । ददासे ॥ माहृ ॥ माने ॥ ममाह । ममाहिषे । अमाहीत् । अमाहिष्ट इत्युभयपदप्रक्रिया ॥

भाषा—श्लिषु, सिच और हेल धातु इनसे परे लुङ्में सिके एकवचनमें क्सप्रत्यय और आत्मनेपदमें विकल्प करके होय । भाव यह है कि, लुङ्के परस्मैपदमें तो इन धातुओंसे क्सप्रत्यय नित्यही होय और लुङ्के आत्मनेपदमें विकल्पकरके होय । उदाहरण—श्लिषधातुसे लुङ्में परस्मैपदके विषे सिके स्थानमें क्सप्रत्यय करनेपर 'आतोऽन्यापि' इसकर रूप सिद्ध हुआ । आश्लिक्षत् । और आत्मनेपदमें जहां सिके स्थानमें क्सप्रत्यय हुआ तहां सिद्ध हुआ । आश्लिक्षत । और जहां आत्मनेपदमें क्सप्रत्यय नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । आश्लिष्ट । डुपचष् धातु पाक करनेमें वर्ते है । इसमें डु और षकार इत्संज्ञक हैं ॥ लिट्में 'लोपः पचां०' इसकर सिद्ध हुआ । पपाच, पेचे । थल्में 'उपदेशेऽत्वतः०' इसकर एक जगह इट् होनेसे 'लोप पचां०' इसकर रूप सिद्ध हुआ । पेचिथ । और एक जगह सिद्ध हुआ । पपक्थ । सीयुडादिकमें अनिट् होनेसे 'चोः कुः, कि०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । पक्षीष्ट । लुङ्में 'अत उपधायाः' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अपाक्षीत् । और द्विवचनमें

' इसात् ' इसकर सिद्ध हुआ । अपाक्ताम् । और आत्मनेपदमें । अपक्त । पचधातु समवाय नाम संबन्धमे वर्त्ते है । लिट्में ' आदेः ष्णः०, लोपः पचां० ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । सच । इट् होनेपर लुङ्मे सिद्ध हुआ । असचीत्, असाचीत्, असचिष्ट । शप्धातु आक्रोश नाम गाली देनेमे वर्त्ते है अर्थात् शापित करनेमें वर्त्ते है । लिट्में । शेपे । थप्मे । शेपिथ, शशप्थ । सीष्टादिकमें इट् न होनेसे सिद्ध हुआ । शप्सीष्ट । लुङ्में । अशाप्सीत्, अशप्त । हिक्कधातु अप्रकट शब्द करनेमे वर्त्ते है । अंचधातु गति और याचनअर्थमे वर्त्ते है । लिट्मे ' द्विश्च, आम्वोर्णादौ, नुगशाम् ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । आनंचे । यादादिकमें ' नो लोपः ' इसकर सिद्ध हुआ । अच्यात् । रेट्धातु परिभाषणमें वर्त्ते है । परिभाषण नाम निन्दायुक्त उपालम्भका है इसमे ऋकार इत्संज्ञक है । चते और चदे धातु याचन अर्थमें वर्त्ते हैं । लिट्में ' लोपः पचां० ' । चेते । चेदे । लुङ्में । अचेतीत् । अचेदीत् । यहां ' ह्यन्तक्षणजागृ० ' इसकर एकार इत्संज्ञक होनेसे वृद्धि नहीं हुई । प्रोथृधातु पर्याप्ति नाम समाप्तिअर्थमे वर्त्ते हैं । इसमेंभी ऋकार इत्संज्ञक है । मिद और मेद धातु बुद्धि और हिंसा अर्थमें वर्त्ते हैं । इनमेंभी ऋकार इत्संज्ञक है । मेधृधातु संगम करनेमें वर्त्ते है । इसमेभी ऋकार इत् है । णिद और णेद धातु कुत्सा नाम निन्दा और सन्निकर्षसंबन्धमें वर्त्ते हैं । लिट्में । निनिदे । निनेदे । लुट्में । नेदिता । लुङ्में । अनेदीत् । अनेदिष्ट । शृधु और मृधु धातु क्लेदन नाम आर्द्रीभावमें वर्त्ते हैं । शर्द्धति । शशर्द्ध शशृधतुः । शशृधे । बुधिर्धातु बोध नाम जाननेमे वर्त्ते है । लुङ्में ' इरितो वा ' इसकर परस्मैपदमें एक जगह ङप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अबुधत् । और एक जगह सिद्ध हुआ । अबोधीत् । आत्मनेपदमे केवल सिद्ध हुआ । अबोधिष्ट । उबुदि धातु निशामन नाम देखनेमें वर्त्ते है । इसमें उकार और इद् इत्संज्ञक हैं । लट्में । बुन्दति । लिट्में । बुबुन्दे । लुङ्में । ' इरितो वा ' इसकर । अबुन्दीत्, अबुदत् । और आत्मनेपदमें । अबुन्दिष्ट । वेणृधातु गति, ज्ञान, चिन्ता, निशामन नाम दर्शन और वादित्र नाम बजानेके बाजेके ग्रहण करनेमें वर्त्ते है । इसमें ऋकार इत् है । यह धातु नकारान्तभी है । जैसे । वेनाति । चीवृधातु ग्रहण करनेमें तथा ढकनेमें वर्त्ते है । इसमे ऋकार इत् है । चायृधातु पूजा करनेमें तथा निशामन नाम दर्शन करनेमें वर्त्ते है । इसमें ऋकार इत् है । व्ययधातु गतिअर्थमें वर्त्ते है लिट्में । वव्याय, वव्यये । लुङ्में । अव्ययीत् । इसमें यकारान्त होनेसे ' ह्यन्तक्षण० ' इसकर वृद्धि नहीं हुई । आत्मनेपदमे । ' अव्ययिष्ट । दाशृधातु दान अर्थमें वर्त्ते है । इसमेंभी ऋकार इत् है । भ्रेशृ, भ्लेशृ यह दोनों धातु गतिअर्थमें वर्त्ते हैं । इनमे ऋकार इत् है । भेषृ, भ्लेषृ यह दोनों धातु गति और भयअर्थमे वर्त्ते हैं । लट्में । भेषति, भेषते । लिट्में । बिभेष, बिभेषे ।

असधातु गति, प्रकाश और ग्रहण करनेमें वर्त्ते है । असति ॥ लिट्में । आस, आसे ।
लुङ्में । आसीत्, आसिष्ट । यह धातु षकारान्तभी है । चषधातु भक्षण करनेमें
वर्त्ते है । लिट्में अतुस्के विषे 'लोप' पचां०' इसकर सिद्ध हुआ । चषतु ।
आत्मनेपदके एकवचनमें । चेसे । छपधातु हिंसाअर्थमें वर्त्ते है । लिट्में । चच्छाप,
चच्छपे । लुङ्में । अच्छापीत्, अच्छपीत् । अच्छपिष्ट । झपधातु ग्रहण करनेमें
तथा ढकनेमें वर्त्ते है । लट्में । झपति, झपते । लिट्में जझाप, जझपे । लुङ्में ।
अझापीत्, अझपीत् । अझपिष्ट । भ्रस और भ्लक्ष धातु भोजन करनेमें वर्त्ते है ।
लिट्में । बभ्रस, बभ्रसे । लुङ्में । अभ्रसीत् । अभ्रक्षिष्ट । दासृधातु दान अर्थमें
वर्त्ते है । इसमें ऋकार इत् है । माहृधातु मानअर्थमें वर्त्ते है । इसमें ऋकार इत् है ।
लट्में । माहति, माहते । लिट्में । ममाह, ममाहे । थलमें 'सेटो हलादा' इसकर
सिद्ध हुआ । ममाहिथे, ममाहिध्वे । लुङ्में । अमाहीत्, अमाहिष्ट ॥ इति उभयप-
दप्रक्रिया ॥

ऋत जुगुप्सायां कृपायां च ॥
भाषा-ऋतधातु निन्दा करनेमें तथा कृपा करनेमें वर्त्ते है ॥

ऋतेरीयङ् स्वार्थेऽनपि तु वा ॥ २०४ ॥ ऋते, ईयङ्, स्वार्थे, अनपि तु वा षट्पदमिदं सूत्रम् ॥ ऋतीयते । ऋतीयेत । ऋती-
यताम् । आर्तीयत । ऋतीयाञ्चक्रे ऋतीयिषीष्ट । ऋतीयिता ।
ऋतीयिष्यते । आर्तीयिष्यत । आनर्त । अर्त्यात् । अर्तिता । अर्ति-
ष्यति आर्तिष्यत् । आर्तीत् । आर्तीयिष्ट ॥ इति स्वादिप्रक्रिया ॥

भाषा-तीन ऋतधातुसे ईयङ् प्रत्यय होय स्वार्थके विषे और आपके न होनेके
स्थानमें अर्थात् लिट् आदिक छः लकारोंके विषे ऋतधातुसे स्वार्थमें ईयङ् प्रत्यय
विकल्पकरके होय । ऋतधातु जहां ईयङ् प्रत्यय होय तहां 'आदनुदात्तङित०,'
इसकर आत्मनेपद होय । और जहां ईयङ् प्रत्यय नहीं होय तहां 'परतोऽन्यत्'
इसकर परस्मैपद होय उदाहरण-ऋतधातुसे स्वार्थमें ईयङ् प्रत्यय किया फिर
'स धातुः' इसकर धातुसंज्ञा होनेपर 'अप् कर्त्तरि' इसकर लट्में रूप सिद्ध हुआ ।
ऋतीयते । विधिलिङ्में । ऋतीयेत । लोट्में । ऋतीयताम् । लङ्में आर्तीयत ।
लिट्में । ऋतीयाञ्चक्रे । लिङ्में । ऋतीयिषीष्ट । लुट्में । ऋतीयिता । लृट्में ॥ ऋती
यिष्यते । लृङ्में । आर्तीयिष्यत् । लुङ्में । आर्तीयिष्ट और जहां लिट् आदि
कमें एक जगह ईयङ् नहीं हुआ तहां परस्मैपद होनेसे लिट्में 'द्वित्व, नुगागम,
रः, आम्नोर्णादी' इसकर सिद्ध हुआ । आनर्त । द्विवचनमें । आनृतुः । और

आशीर्लिङ्के विषैं 'गुणोर्त्तिसंयोगाद्योः' इसमें ऋधातुके आर्त्तिव्याख्यानमें ऋन-धातुकाभी ग्रहण है तब गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अर्य्यात् । तादिकम । अर्त्तिता । लृट्में । अर्तिष्यति । लङ्में । आर्तिष्यत् । लुङ्में । आर्त्तात् । द्विवचनमें । आर्तिष्टाम् ॥ इति भ्वादिप्रक्रिया समाप्तिमगात् ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामोक्तभाषया । रामाश्रमप्रणीतायां कृतं भ्वादिनिरूपणम् ॥ १ ॥

अद भक्षणे ॥

भाषा—अद्धातु भक्षण करनेमे वर्त्ते है ॥

अदादेर्लुक् ॥२०५॥ अदादेः, लुक् । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ अदादेः परस्यापो लुक् ॥ अत्ति अत्तः अदंति । अत्सि अत्थः अत्थ । अद्मि अद्वः अद्मः । अद्यात् । अत्तु, अत्तात् अत्ताम् अदन्तु ॥

भाषा—अदादिगणसे परे अप्प्रत्ययका लुक् होय । उदाहरण—अद्धातुसे 'अप् कर्त्तरि' इसकर अप् किया, तब तिप्में रूप स्थित हुआ अद्-अ-ति फिर 'अदादेर्लुक्' इसकर अप्प्रत्ययका लुक् करनेपर 'खसे चपा झसानाम्' इसकर सिद्ध हुआ । अत्ति । इसी प्रकार द्विवचन बहुवचनमे सिद्ध हुआ । अत्तः । अदन्ति । मध्यमपुरुषमे सिद्ध हुआ । अत्सि । अत्थः । अत्थ । उत्तमभागमें सिद्ध हुआ । अद्मि । अद्वः । अद्मः । यादादिकमें । अद्यात् । लोट्के प्रथमपुरुषमें । अत्तु, अत्तात् । अत्ताम् । अदन्तु । मध्यमभागके प्रथमवचनमे अद्-हि ऐसा स्थित है ॥

झसोद्धिर्हेः ॥ २०६ ॥ झसात्, धिः, हेः । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ झसाद्धकाराच्च परस्य हेर्द्धिर्भवति ॥ अद्धि अत्तात् अत्तम् अत्त । अदानि अदाव अदाम ॥

भाषा—झसप्रत्याहारसे और हकारसे परे हिको धि आदेश होय । उदाहरण—अद्-हि । झसप्रत्याहारसंबन्धी दकारसे परे हि विद्यमान है इस कारण हिके स्थानमें धि करनेमे रूप सिद्ध हुआ । अद्धि । और जहां हिको तातङ् आदेश हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । अत्तात् । द्विवचन बहुवचनमें 'खसे चपा झसानाम्' इसकर

---

१ कोई आचार्य 'झसाद्धिर्हेः' इस सूत्रमें चार पद करते है सो इस प्रकार है । झसात्, ह्, धिः, हेः । झसात् यह पंचमी प्रथमवचनान्त है । ह् पंचमी प्रथमवचनार्थे प्रथमा प्रथमवचनान्त है । धिः यह प्रथमा प्रथमवचनान्त है । हेः षष्ठी प्रथमवचनान्त है । सन्धि करनेमें 'हो झभाः' इसकर 'झसात्' इसके पश्चात् जो कि हकार है उसको धकार किया फिर 'झबे जबाः' इसकर धकारको हकार किया फिर 'हसात्परस्य झसस्य लोपो वा सवर्णे झसे' इसकर दकारका लोप किया तब हुआ झसाद्धिर्हेः ॥

सिद्ध हुआ । अत्तम् । अत्त । उत्तमभागमें । अदानि। अदाव । अदाम । लङ्के
दिपूवचनमें अ-अद-द् ऐसा स्थित है ॥

अद्रुदादेरट् ॥ २०७ ॥ अद्रुदादे ,। अट् । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥
अदो रुदादेश्च परयोर्दिप्सिपोरडागम ॥ आदत् । आद ॥

भाषा–अद्धातु और रुदादि धातुओंसे परे दिप् और सिप्प्रत्ययको अट्का
आगम होय। उदाहरण–अ-अद-द् । इसमें अद्धातुसे परे दिप्प्रत्यय विद्यमान है
इस कारण दिप्को अट् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । आदत् । द्विवचनमें ।
आत्ताम् । बहुवचनमें । आदन् । सिपूमें सिप्को अट् आगम करनेपर 'सोर्विसर्ग'
इसप्रकार सिद्ध हुआ । आदः । द्विवचन बहुवचनमें । आत्तम् । आत्त । उत्तमभागमें
आदम् । आद्व । आद्म ॥

सिसयोरदेर्घस्ल लिटि तु वा ॥२०८॥ सिसयो , 'अदे', घस्ले,
लिटि, तु, वा । षट्पदमिदं सूत्रम् ॥ जघास । गमो स्वरे । घसा-
देरिति ष । जक्षतु । जघसिथ जक्षथु जक्ष । आद आदतु आदु ।
आदथ । अत्ता । लृदित्त्वात् ङ । अघसत् ॥ प्सा भक्षणे ॥ प्साति ।
प्सायात् । प्सातु । अप्सात् ॥

भाषा–अद्धातुको घस्ल यह आदेश होय सिप्रत्यय और सप्रत्यय पर हुए
सते और लिट्के विषे अद्धातुको घस्ल आदेश विकल्पकरके होय । उदाहरण–
अद्धातुको लिट्में विकल्पकरके घस्ल यह आदेश करनेपर 'द्विम, कुरोश्चुः
झपानां जबचपाः, अत उपधायाः' इसप्रकार रूप सिद्ध हुआ । जघास । द्विवचनमें
'गमो स्वरे' इसप्रकार उपधाका अकारका लोप करनेपर 'खसे चपा०' इसप्रकार
घस्के घकारको ककार किया फिर 'घसादे०' इसप्रकार षकार करनेपर रूप सिद्ध
हुआ । जक्षतुः । थपूमें नित्यही इट् किया क्योंकि घस्का थादिकमें अभाव है
सब रूप सिद्ध हुआ । जघसिथ । और जहां घस्ल आदेश नहीं हुआ वहां णपूमें,
आद-। और अतुसूमें । आदतु और थपूमें 'अस्पर्शिण्पवीनां थपो नित्यमिट्
इसप्रकार नित्य इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । आदिथ । थादिकमें अनिट् होनेसे
सिद्ध हुआ । अत्ता । लुङ्में सिप्रत्यय पर होनेसे घस्ल आदेश करनेमें फर्क है।
पादेके इसप्रकार रूप सिद्ध हुआ । अघसत् । प्साधातु भक्षण करनेमें वर्ते है। विधि–
'आशिरेच्छुङ्' इसप्रकार अपूर्व लुङ् करनेपर लङ्में सिद्ध हुआ । प्साति । विधि–

१ 'अद्रुदेर्दिप्सिपोरट्' इति पाठान्तरम् ।

लिङ्में । प्सायात् । लोट्में । प्सातु । लङ्में । अप्सात् । लङ्के अन्वचनमें अप्सा-अन् ऐसा स्थित है ॥

आदंताद्विषो लङोऽन उस् वा ॥ २०९ ॥ आदन्तात्, द्विषः, लङः, अनः, उस्, वा । षट्पदमिदं सूत्रम् ॥ अप्सुः अप्सान् । पप्सौ । आतोऽनपि । पप्सुः । प्सायात् प्सेयात् । अप्सासीत् ॥ मा माने ॥ माति । अमात् । अमुः । अमान् । ममौ । मेयात् । अमासीत् ॥ या प्रापणे ॥ याति । ययौ । अयासीत् ॥ वा गतिगन्धनयोः ॥ वाति ॥ रा दाने ॥ राति ॥ ला दानग्रहणयोः ॥ लाति । ललौ । अलासीत् ॥ श्रा पाके ॥ श्राति । श्रायात् । श्रेयात् ॥ दा पुवने ॥ दाति । ददौ । दायात् अदासीत् ॥ ख्या प्रकथने । ख्याति । चख्यौ ॥

भाषा–आकारान्त धातु और द्विषधातुसे परे लङ्लकारके अन्वचनको उस् आदेश विकल्पकरके होय । उदाहरण–आकारान्त प्साधातुसे लुङ्के अन्के स्थानमें एक जगह उस् आदेश किया फिर ' उस्यालोपः ' इसकर प्साधातुके आकारका लोप किया तब रूप सिद्ध हुआ । अप्सुः । और जहां अन्को उस् नहीं हुआ तहां ' सवर्णे दी० ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । अप्सान् । लिट्में ' द्विश्च पूर्वस्य हसादिः शेषः, आतो णप् डौ ' इनकर रूप सिद्ध हुआ । पप्सौ । अतुस्में ' आतोऽनपि ' इसकर सिद्ध हुआ । पप्सतुः । थप्में स्वरान्त होनेसे ' स्वरान्तादत्वतश्च० ' इसकर विकल्पकरके इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । पप्सिथ, पप्साथ । यादादिकमें ' संयोगादेरादन्तस्य किति लिङ्येकारो वा ' इसकर सिद्ध हुआ । प्सेयात्, प्सायात् । तादिकमें अनिट् होनेसे सिद्ध हुआ । प्साता । लुङ्में ' यमिरमिनमाता० ' इसकर सिद्ध हुआ । अप्सासीत् । माधातु मानअर्थमें वर्त्ते है । यह धातु अकर्मक है परन्तु उपसर्गवशसे अर्थान्तरमें सकर्मक है । माधातुके रूपभी समस्त लँकारोंमें आशीर्लिङ्को त्यागकर प्साधातुके समान होते हैं । आशीर्लिङ्में ' दादेरे ' इसकर सिद्ध हुआ । मेयात् । याधातु प्रापणअर्थमें वर्त्ते है । यहां प्रापण अर्थ गतिका है । वाधातु गति और गन्धनअर्थमें वर्त्ते है । राधातु दानअर्थमें वर्त्ते है । लाधातु दान और ग्रहणअर्थमें वर्त्ते है इन चारों धातुओंके रूप माधातुके समान जानने परन्तु आशीर्लिङ्के विषै माधातुके समान नहीं जानने । क्योंकि आशीर्लिङ्में जो कि एकार करनेके धातु निश्चित किये हैं उनमें यह नहीं है तब रूप सिद्ध हुआ । यायात् । वायात् । रायात् । लायात् । श्राधातु पाक करनेमें

वर्ते है । आधातुके रूप प्साधातुके समान जानने । ग्पूधातु प्लवन नाम कूदनेमें वर्ते
है । यह धातु षित है इस कारण आशीर्लिङ्में यकार नहीं हुआ । स्म्याधातु विख्यात
करनेमें वर्ते है । लङ्पर्यन्त आधातुके समान रूप जानने ॥

अस्यतिवक्तिख्यातिभ्यो ङो लुङि सेरपवादः ॥ २१० ॥ अस्य-
तिवक्तिख्यातिभ्य , ङे , लुङि, से अपवादे । पञ्चपदमिदं सूत्रम् ॥
अख्यत् ॥ घ्रा कुत्सायाम् ॥ घ्राति । घ्रेयात् घ्रायात् । अघ्रासीत् ॥
पा रक्षणे ॥ पाति । पपौ । पायात् । अपासीत् ॥ भा दीप्तौ ॥ भाति ।
बभौ ॥ ष्णा शौचे ॥ स्नाति स्नायात् ॥ वश कान्तौ ॥ वष्टि उष्टः
उशन्ति । वक्षि उष्ठः उष्ठ । वश्मि उश्वः उश्मः । उश्यात् । वष्टु
उष्टात् उष्टाम् उशन्तु । उड्ढि उष्टम् उष्ट । वशानि वशाव वशाम ॥
भाषा—असु वच और ख्याधातु इनसे परे अप्रत्यय होय लुङ्लकारमें और
सिका अपवाद होय । उदाहरण—ख्याधातुसे सिके स्थानमें अप्रत्यय करनेपर ' आतोऽ-
नपि ' इसकर ख्याके आकारको लोप किया तब रूप सिद्ध हुआ । अख्यत् । घ्राधातु
कुत्सार्थमें वर्ते है । आशीर्लिङ्में ' संयोगादेरातस्य० ' इसकर विकल्पकरके
एकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । घ्रेयात्, घ्रायात् ।। पाधातु रक्षा करनेमें वर्ते है । आ-
शीर्लिङ्में इसको ' दाधेट् ' इसकर एकार नहीं हुआ । क्योंकि तहांपर पा पाने धातु
मिलाया है । भाधातु प्रकाशअर्थमें वर्ते है । इन दोनों धातुओंके रूप समस्त लका-
रोंमें याधातुके समान जानने । ष्णाधातु शौच नाम स्नान करनेमें वर्ते है । ' आदे-
ष्णः० ' इसकर ष्णाके स्थानमें स्ना करनेपर समस्त लकारोंमें याधातुके समान रूप
जानने । वशधातु कान्ति नाम इच्छाअर्थमें वर्ते है । वशधातुसे तिप् प्रत्यय करने-
पर ' व्रश्च० ' इसकर शकारके स्थानमें षकार किया फिर ' ष्टुना० ' इसकर
तिप्के तकारको टकार किया तब रूप सिद्ध हुआ । वष्टि । द्विवचनमें ' ग्रहि
ज्या० ' इसकर वशके वकारको उकार संप्रसारण किया तब रूप सिद्ध हुआ ।
उष्टः । बहुवचनमें ' ग्रहि० ' इसकर संप्रसारण करनेपर सिद्ध हुआ । उशन्ति ।
सिप्में ' व्रश्च० ' इसकर षकार करनेपर ' षढोः कः से ' इसकर ककार किया
फिर ' किस० ' इसकर सिद्ध हुआ । वक्षि । द्विवचन बहुवचनमें । उष्ठः । उष्ठ । मिप्में ।
वश्मि । द्विवचन बहुवचनमें संप्रसारण करनेसे सिद्ध हुआ । उश्वः । उश्मः ।
यासादिकमें । उश्यात् । तुप्में । वष्टु । और यहां तुप्को तातङ् आदेश किया तहां
संप्रसारण करनेसे सिद्ध हुआ । उष्टात् । द्विवचनमें बहुवचनमें । उष्टाम् । उशन्तु ।
हिमें ' ग्रहादि० ' इसकर हिको धि किया । फिर ' व्रश्च० ' इसकर षकार

किया फिर 'ष्टुभिः०' इसकर धिके धकारको ढकार किया फिर 'झवे जबाः' इसकर सिद्ध हुआ । उड्ढि । द्विवचन बहुवचनमे । उष्टम् । उष्ट । उत्तमभागमें वशानि । वशाव । वशाम ॥

दिस्योर्हसात् ॥२११॥ दिस्योः, हसात् । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ हसात्परयोर्दिप्सिपोर्लोपः ॥ अवट्, अवड् औष्टाम् औशन् । अवट्,अवड् औष्टम् औष्ट । औशं औश्व औश्म । उवाश ऊशतुः । उवशिथ । उश्यात् । वशिता । अवाशीत् अवशीत् ॥ हन हिंसागत्योः॥ हन्ति ॥

भाषा–हसप्रत्याहारसे परे दिप् और सिप्प्रत्ययका लोप होय । उदाहरण–लङ्के विषैं वशधातुसे दिप् करनेपर रूप स्थित हुआ अवश्-द् इसमें हसप्रत्याहारसंबन्धी शकारसे परे दिप्प्रत्यय विद्यमान है इस कारण दिप्का लोप करनेपर 'छशष०' इसकर षकार किया फिर 'वावसाने' इसकर सिद्ध हुआ । अवट्, अवड् । द्विवचन बहुवचनमें संप्रसारण होनेके पश्चात् 'स्वरादेः' इसकर द्वितीय अट् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । औष्टाम् । औशन् । सिप्का लोप होनेपर सिद्ध हुआ । अवट् अवड् । द्विवचन बहुवचनमें । औष्टम् । औष्ट । उत्तमभागमें । औशम् । औश्व । औश्म । लिट्में 'द्विश्च णवादौ पूर्वस्य, अत उपधायाः' इनकर सिद्ध हुआ । उवाश । द्विवचनमें 'णवादौ पूर्वस्य' यहां क्ङिति०' इनकर पूर्वपरको संप्रसारण कर रूप सिद्ध हुआ । ऊशतुः । यादादिकमें । उश्यात् । तादिकमें सेट् होनेसे । वशिता । लुङ्में 'अतो हसादेर्लघोर्वृद्धिः' इसकर सिद्ध हुआ । अवशीत्, अवाशीत् । हनधातु हिंसा और गतिअर्थमें वर्त्ते है । तिप्में अप्का लुक् करनेके पश्चात् सिद्ध हुआ । हन्ति । द्विवचनमें हन्-तः ऐसा स्थित है ॥

लोपस्त्वनुदात्ततनाम् ॥ २१२ ॥ लोपः, तु, अनुदात्ततनाम् त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ अनुदात्तानां ञमान्तानां तनादीनां वनतेश्च यमस्य लोपो भवति झसे क्ङिति हकारे च ॥ हतः घ्नन्ति । हन्यात् । हन्तु हतात् हताम् घ्नन्तु ॥

भाषा–ञमप्रत्याहार है अन्तमें जिनके ऐसे अनुदात्त धातु और तन् आदिक धातु और वनति धातु इनके यम्का लोप होय कित्ङित्संज्ञक झसप्रत्याहार[१] और हकार पर हुए संते । भाव यह है कि यमि, रमि, नमि, गमि, हनि, मनि यह

१ 'संयोगान्तस्य लोपः' इसकरही दिप्का लोप होना संभव था फिर यह सूत्र क्यों किया तहां कहते है । 'ससजुषो रुः' इसकर जहां दिप्के आदिमें रकार होगा तहां दिप्का लोप नहीं होगा । इस कारण यह सूत्र कहा है ॥

यमप्रत्याहारान्त ८ अनुदात्त धातु और तनु, षणु, क्षणु, क्षिणु, ऋणु, तृणु, घृणु, मनु, मनु यह तनादिक नव धातु और वनतिधातुके यमका लोप होय कित् ङित्संज्ञक झस और हकार पर होवे तो । उदाहरण-हन् त । इसमें अमान्त अनुदात्त धातु हन्से परे ङित् झसप्रत्याहारसम्बन्धी तकार विद्यमान है इस कारण यमप्रत्याहारसं म्बन्धी नकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । हत । बहुवचनमें 'गमां स्वरे' इसकर उपधाभूत अकारका लोप करनेपर 'हनो घ्ने' इसकर हकारको घकार किया तब रूप सिद्ध हुआ । घ्नन्ति । मध्यमभागमें । हंसि । हथ । हथ । उत्तमभागमें । हन्मि । हन्व । हन्म । व-म झसप्रत्याहारसंबंधी नहीं है । यादादिकमें । हन्यात् । लोट्के प्रथमपुरुषमें । हन्तु, हतात् । हताम् । घ्नन्तु । मध्यमभागके हिवचनमें हन्-हि ऐसा स्थित है ॥

जहोधिशाधि ॥२१३॥ जहोधिशाधि । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ हन्ते र्हिदिरस्तेरेधि शास्ते शाधिर्निपात्यते हिविषये ॥ जहि । हनानि । अहन् अहताम् अघ्नन् ॥

भाषा-हिसहित हन्धातुको जहि और हिसहित असधातुको एधि और हिसहित शासधातुको शाधि आदेश निपातसिद्ध हैं ॥ उदाहरण-हन् हि । इसमें हिसहित हन्धातुको जहि आदेश किया तब रूप सिद्ध हुआ ॥ जहि । द्विवचन बहुवचनमें । हतम् । हत । उत्तमभागमें । हनानि । हनाव । हनाम ॥ दिप्में 'दिस्योर्हसात्' इसकर दिप्का लोप होनेपर रूप सिद्ध हुआ । अहन् । द्विवचनमें । अहताम् । बहुवचनमें 'गमां स्वरे हनो घ्ने' इनकर सिद्ध हुआ । अघ्नन् । सिप्में । अहन । द्विवचन बहुवचनमें । अहतम् अहत । उत्तमभागमें अहनम् । अहन्व । अहन्म ॥ लिट्में 'द्विश्च, कुहोश्चु', 'ह्पामां जबचपाः' इनकर रूप स्थित हुआ ज-हन्-अ फिर ॥

पूर्वाद्धन्तेर्हस्य घ ॥ २१४ ॥ पूर्वात्, हन्ते, र्हस्य, घ । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ जघान जघ्नतु जघ्नु । जघनिथ, जघन्थ ॥

भाषा-द्वित्व होनेपर पूर्वरूपसे परे हन्धातुके हकारको घकार होय । उदाहरण-ज-हन्-अ । इसमें पूर्वरूप जकारसे हन्के हकारको घकार करनेपर 'अत उपधायाः' इसकर सिद्ध हुआ । जघान । द्विवचनमें 'गमां स्वरे' इसकर उपधाभूत अकारका लोप करनेपर 'हनो घ्ने' इसकर रूप सिद्ध हुआ । जघ्नतु । थप्में अनिट्‌ होनेसे 'सृजन्तादन्तवा०' इसकर एक जगह इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । जघनिथ । और जहां इट् नहीं हुआ वहां सिद्ध हुआ । जघन्थ ॥

हनो लुङ्लिङोर्वधो लुङ्यात्मने वा ॥२१५॥ हनः, लुङ्लिङोः, वधः, लुङि, आत्मने, वा । षट्पदमिदं सूत्रम् ॥ वध्यात् । हनिष्यति ॥

भाषा—लुङ् और लिङ् पर हुए संते हन्‌धातुको वध आदेश होय और लुङ्में आत्मनेपदके विषैं विकल्पकरके होय । उदाहरण—हन्‌को आशीर्लिङ्के विषैं वध आदेश करनेपर रूप सिद्ध हुआ । वध्यात् । तादिकमें अनिट् होनेसे सिद्ध हुआ । हन्ता । लृट्लृङ्में ' हनृतः स्यपः ' इनकर सिद्ध हुआ । हनिष्यति । अहनिष्यत् । लुङ्में वध आदेश करनेपर रूप स्थित हुआ । अवध्-इ-स-ई-द् ॥

जनिवध्योर्न वृद्धिः ॥२१६ ॥ जनिवध्योः, न, वृद्धिः । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ अवधीत् ॥ यु मिश्रणे अमिश्रणे च ॥

भाषा—जनधातु और वधधातुको वृद्धि नहीं होय । उदाहरण अवध्-इ-स-ई-द् । इसमें वधधातुको वृद्धि नहीं करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अवधीत । युधातु मिश्रण नाम मिलनेमें और अमिश्रण नाम पृथक् होनेमे वर्त्ते है ॥

औरौ ॥२१७॥ ओः, औ । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ उकारस्याऽद्विरुक्तस्यौकारो भवत्यवादौ पिति ॥ यौति युतः युवन्ति । यौषि । यौमि युवः । युयात् । यौतु । युहि । अयौत् । अयौः । युयाव । युयविथ । यूयात् । यविता । अयावीत ॥ तु गतिवृद्धिहिंसासु ॥

भाषा—नहीं द्वित्वको प्राप्त हुए धातुके उकारको औकार होय पकार इत्‌वाले तकार दकार मकारादि प्रत्यय पर हुए संते लुक्‌विषयमे । उदाहरण—युधातुसे ' अदादेर्लुक् ' इसकर अप्‌का लुक् होनेके पश्चात् उकारको औकार किया क्योंकि वकार इत्‌वाला तकारादि तिप् प्रत्यय परे विद्यमान है तव रूप सिद्ध हुआ । यौति । द्विवचनमें ' औरौ ' इसकर औकार नहीं हुआ क्योंकि पित् प्रत्यय नहीं है तब रूप सिद्ध हुआ । युतः । बहुवचनमें ' नुधातोः ' इसकर उव् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । युवन्ति । मध्यमभागमें । यौषि । युथः । युथ । उत्तमभागमें । यौमि । युवः । युमः । यादादिकमें । युयात् । तुप्‌में । यौतु युतात् । उत्तमभागमें गुण होनेसे रूप सिद्ध हुआ । यवानि । यवाव । यवाम । दिप्‌में । अयौत् । अन्‌मे । अयुवन् । सिप्‌में । अयौः । मिप्‌में । अयम् । लिट्‌में । युयाव । द्विवचनमें । युयुवतुः । यादादिकमें ' ये ' इसकर । यूयात । तादिकमें सेट् होनेसे सिद्ध हुआ । यविता । लुङ्में ' धातोर्नामिनः ' इसकर सिद्ध हुआ । अयावीत् । तुधातु गति वृद्धि और हिंसाअर्थमें वर्त्ते है ॥

तुरुस्तुभ्योऽद्विरुक्तेभ्यो हसादीनां चतुर्णामीड्वा ॥२१८॥ तु-रुस्तुभ्यः, अद्विरुक्तेभ्यः, हसादीनाम्, चतुर्णाम्, ईट्, वा । षट्पद-मिद सप्तम् ॥ तौति तवीति, तुत तुवीत, तुवन्ति । तौषि तवीषि, तुथ तुवीथ, तुथ तुवीथ । तौमि, तवीमि । तुवाव, तुवीवाव । तौतु तवीतु, तुवीवाव तुवीताद्, तुताव् तुताद् । तुहि, तुवीहि । अतौत्, अतवीत् । तुताव । तोता । नोष्यति । अतौपीत् ॥ रु शब्दे ॥ रौति, रवीति रुरविथ । अरावीत् ॥ णु स्तुतौ ॥ नौति नुत । नुनाव । नुनविथ । अनावीत् ॥ टुक्षु शब्दे ॥ क्षौति । चक्षाव । क्षौतु । अक्षौत् । चुक्षविथ । क्षविता । अक्षावीत् ॥ क्ष्णु तेजने ॥ क्ष्णौति । चुक्ष्णविथ अक्ष्णावीत् ॥ ष्णु प्रस्रवणे ॥ स्नौति । सुष्ण-विथ । अस्नावीत् ॥ यु अभिगमने ॥ यौति । युयविथ, युयोथ । अयोपीत् ॥ षु प्रसवैश्वर्ययोः ॥ सौति । सुषाव । सुषविथ, सुषोथ । असौपीत् ॥ कु शब्दे ॥ कौति । चुकविथ, चुकोथ । अकौपीत् ॥ वी गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु ॥ वेति वीतः वियन्ति । वेषि । वेतु । वीहि । अवेत् । अवियन् । विवयिथ, विवेथ । अवे-पीत् । एति इतः । इयाय । ऐत् । ऐयन् । आयन् । अयांचकार । एता । ऐपीत् ॥ इण गतौ । एति इतः ॥

भाषा—नहीं द्वित्वको प्राप्त हुए ऐसे तु रु, स्तु इन धातुओंसे परे हस है आदिमें जिनके ऐसे लट् आदिक चार लकारोंके ईट्का आगम विकल्पकरके होय । उदा-हरण—तुधातुसे हसादि तिप्प्रत्यय विद्यमान है इस कारण तिप्को ईट्का आगम करनेपर रूप स्थित हुआ तु-ई ति फिर 'गुण ओ अव्' इसकर रूप सिद्ध हुआ । तवीति और जहां ईट्का आगम नहीं हुआ वहां ओरौ' इसकर धातुके उकारके औकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । तौति । द्विवचनमें तस्को हसादि होनेसे जहां ईट्का आगम हुआ वहां 'नुधातो' इसकर इय् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । तुवीत' । और जहां ईट्का आगम नहीं हुआ वहां सिद्ध हुआ । तुत' । बहुवचनमें हसादि प्रत्यय होनेसे ईट्का आगम नहीं हुआ किन्तु 'नुधातो' इसकर सिद्ध हुआ । तुवन्ति । फिर हसादि चार लकारोंके विषें एक जगह ईट् आगम और

एक जगह 'ओरौ' इस सूत्रकर उकारको औकार करना चाहिये और अन्य हसादि चार लकारोंके विषै विकल्पकरके ईद् करना चाहिये । पित् स्वरादि चार लकारोके विषैं गुण करना चाहिये और अन्य स्वरादि चार लकारोंके विषैं 'नुधातोः' इसकर उव् करना चाहिये । लिट्में । तुताव । थप्में स्वरान्त होनेसे 'स्वरान्तादत्वतश्च०' इसकर एक जगह इट् और एक जगह अनिद् रखनेसे रूप सिद्ध हुआ । तुतविथ, तुतोथ । तादिकमे । तोता । लुङ्में । अतौषीत् । रुधातु शब्द करनेमें वर्त्ते है । चार लकारोंमे रुधातुके रूप तुधातुके समान जानने । लिट्के थप्वचनमें सेट् होनेसे । रुरविथ । तादिकमें सेट् होनेसे । रविता । लुङ्में । अरावीत् । णुधातु स्तुति करनेमे वर्त्ते है । 'आदेः ष्णः०' इसके प्राप्त होनेके पश्चात् चार लकारोंके युके समान रूप जानने । लिट् आदिकमे सेट् होनेसेभी युधातुके समान रूप जानने । टुक्षुधातु शब्द करनेमें वर्त्ते है । इसमे टु इत्संज्ञक है । क्षुधातुक रूप चार लकारोंमें युधातुके समान जानने । लिट् आदिकमें सेट् होनेसे युधातुके समान जानने । क्ष्णुधातु तीक्ष्ण करनेमे वर्त्ते है और ष्णुधातु प्रस्रवण नाम उत्कंठाअर्थमे वर्त्ते है । इन दोनों धातुओंके रूप चार लकारोंमें युधातुके समान और लिट् आदिकमें सेट् होनेसेभी युधातुके समान जानने । द्युधातु अभिगमन अर्थमें वर्त्ते है और षुधातु प्रसव नाम अभ्यनुज्ञान तथा ऐश्वर्यअर्थमें वर्त्ते है । इन दोनों धातुओंके रूप चार लकारोंमें युके समान और शेष लकारोंमें तुधातुके समान जानने और कुधातु शब्द करनेमे वर्त्ते है । इस धातुकेभी रूप युधातुके समान चार लकारोंमे जानने । लिट् आदिकमें अनिट् होनेसे तुधातुके समान जानने । वी और ई धातु गति, व्याप्ति, प्रजनन नाम गर्भग्रहण, असन नाम क्षेपण और खादन नाम भोजन इन अर्थोंमे वर्त्त हैं । तिप्में 'अदादेर्लुक्' इसकर अप्के लुक् होनेके पश्चात् 'गुणः' इसकर सिद्ध हुआ । वेति । द्विवचनमें । वीतः । बहुवचनमें 'नुधातोः' इसकर इय् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । वियन्ति । लिङ्में । वीयात् । लोट्में । वेतु । लङ्में । अवेत् । अन्में । अवियन् । कोई आचार्य अट् आगम करनेपर अनेक स्वर होनेसे 'नुधातोः' इसकर यकार करते हैं तब रूप सिद्ध हुआ । अव्यन् । लिट्में । विवाय । थप्म । विवयिथ, विवेथ । तादिकमें आनिट् होनेसे वेता । लुङ्में । अवैषीत् । ईधातुके रूप लट्में । एति । ईतः । इयन्ति । लङ्में 'स्वरादेः' इसकर द्वितीय अट् करनेपर । ऐत् । ऐताम् । ऐयन् । अमिप्में गुण करके 'ए अय्' फिर दो अट्की सन्धि करनेपर रूप सिद्ध हुआ । आयम् । लिट्में 'कासादिप्रत्ययादाम्०' इसकर आम् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अयांचकार । तादिकमें । एता । लुङ्मे । ऐषीत् । इण्धातु गतिअर्थमें वर्त्ते है । तिप्में अप्के लुक् होनेके पश्चात् 'गुणः' इसकर सिद्ध हुआ । एति । द्विवचनमें । इतः । बहुवचनमें इ-अन्ति ॥

इण क्ङिति स्वरे य ॥२१९॥ इणे, क्ङिति, स्वरे, ये । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ यन्ति । एपि । इयात् । एतु । यतु यन्तु । इहि । आयन् । आयम् ऐव ऐम । इयाय ॥

भाषा–इणधातुको यकार होय क्ङित् स्वर परे हुए संते । उदाहरण–इ-अन्ति । इसमें इणधातुसे ङित्संज्ञक अन्तिका अकार परे विद्यमान है इस कारण इणको यकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । यन्ति । लिङ्में । इयात् । लोट्में । एतु । उत्तममध्यममें गुण करनेपर 'ए अय्' इसकर सिद्ध हुआ । अयानि । अयाव । अयाम । लङ्में । ऐत । द्विवचनमें । ऐताम् । बहुवचनमें 'इण क्ङिति स्वरे यः' इसकर सिद्ध हुआ । आयन् । लिट्में 'द्विश्च, यावोर्नामिनः, ऐ आय्, असवर्णे स्वरे०' इनकर सिद्ध हुआ । इयाय । द्विवचनमें 'द्विश्च' इसकर द्वित्व होनेके पश्चात् 'इणः क्ङिति स्वरे य' इसकर यकार किया तब रूप स्थित हुआ इय्-अतुस् ॥

इण किति णादौ पूर्वस्य दीर्घः ॥२२०॥ इणे, किति, णादौ, पूर्वस्य, दीर्घः । पञ्चपदमिदं सूत्रम् ॥ ईयतुः ईयुः । इययिथ, इयेथ । इयात् । एता । दादे ये । इण सिलोपे गा । अगात् अगाताम् अगुः ॥ इक् स्मरणे ॥ इङ्किकावध्युपसर्गतो न व्यभिचरतः । अध्येति अधीतः अधियन्ति । अध्यैत्, अध्यैद् ॥

भाषा–इणके पूर्वरूपको दीर्घ होय कित्संज्ञक लिट् पर हुए संते । उदाहरण–इय्-अतुस् । इसमें इणके पूर्वरूप इकारका दीर्घ किया क्योंकि कित्संज्ञक लिट् अकारका अतुस् प्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । ईयतुः । थपमें 'स्वरान्तात्वसवत्०' इसकर विकल्पकरके इट् करनेके पश्चात् 'गुण', असवर्णे स्वरे०' इनकर रूप सिद्ध हुआ । इययिथ इयेथ । आशीर्लिङ्में 'ये' इसकर सिद्ध हुआ । ईयात् । सादिकमें अनिट् होनेसे एता । लुङ्में 'दादेः ये' इसकर सिच्का लोप किया । इणधातुको गा आदेश होय सिच्प्रत्ययका लोप होनेपर । उदाहरण–इणधातुको गा आदेश किया क्योंकि सिच्प्रत्ययका लोप हो, गया है तब रूप सिद्ध हुआ । अगात् । द्विवचनमें । अगाताम् । अन्में 'स्यादिद', उस्या लोप' इनकर सिद्ध हुआ । अगुः । इक्धातु स्मरण करनेमें वर्त्ते है । इङ्धातु और इक्धातु अधि उपसर्गसे नहीं व्यभिचारको प्राप्त होते हैं । भाव यह है कि इङ् और इक् दोनों धातु अधिउपसर्गके विना प्रयुक्त होनेको नहीं योग्य होते हैं ।

उदाहरण—इक्धातुसे अधिउपसर्ग पूर्व युक्त करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अध्येति । द्विवचनमें । अधीतः । वहुवचनमें अधि-इ-अन्ति ऐसा स्थित है ॥

इण्वदिकः ॥ २२१ ॥ इण्वत्, इकः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ अधीयाय । अधीयतु । अधीययिथ । अधीयेथ । अधीयिव । अधीयात् । अध्येता । अध्यगात् ॥ विद ज्ञाने ॥ वेत्ति वित्तः विदन्ति । वेत्सि वित्थः वित्थ । वेद्मि ॥

भाषा—इण्धातुके समान इक्धातुके रूप होते हैं । उदाहरण—जब कि इण्धातुके समान इक् धातु है तो फिर अन्तिके विषैं इको यकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अधियन्ति । लङ्में । अध्यैत्, अध्यैद् । लिट्मे ' द्विश्च, धातोर्नामिनः, असवर्णे स्वरे, ऐ आय् ' इनकर सिद्ध हुआ । अधीयाय । द्विवचनमे ' इणः किति णादौ पूर्वस्य०, इणः क्ङिति स्वरे यः ' इनकर सिद्ध हुआ । अधीयतुः । इसी प्रकार शेष लकारोमें जानने । विद्धातु ज्ञान नाम जाननेमें वर्त्ते है । विदधातुसे तिप्में अप्का लुक् होनेके पश्चात् ' उपधाया लघोः, खसे चपा० ' इनकर गुण और तकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । वेत्ति । द्विवचनमें । वित्तः । वहुवचनमे विदन्ति । मध्यमभागमें । वेत्सि । उत्तमभागमें । वेद्मि । विद्वः । विद्मः ॥

विदो नवानां त्यादीनां णबादिर्नवको वा ॥ २२२ ॥ विदः, नवानाम्, त्यादीनाम्, णबादिः, नवकः वा । षट्पदमिदं सूत्रम् ॥ विदः परेषां त्यादीनां नवानां णबादिर्नवको वा ॥ वेद विदतुः विदुः । वेत्थ विदथुः विद । वेद विद्व विद्म । विद्यात् । वेत्तु । विद्धि ॥

भाषा—विद्धातुसे परे जो कि तिप् आदिक नव प्रत्यय हैं तिनको णप् आदिक नव प्रत्ययोंका आदेश होय । उदाहरण—विद्धातुसे तिप्को णप्, तस्को अतुस्, अन्तिको उस्, सिप्को थप्, थस्को अथुस्, थको अ, आमिप्को णप्, वस्को व और मस्को म आदेश किया । यहां वर्त्तमानार्थ णबादि होनेसे धातुको द्वित्व नहीं हुआ क्योंकि ' द्विश्च ' इस सूत्रकी वृत्तिमें परोक्षार्थ णबादियोंका ग्रहण है तव रूप सिद्ध हुए । वेद विदतुः विदुः । वेत्थ विदथुः विद । वेद विद्व विद्म । विधिलिङ्में । विद्यात् । लोट्में । वेत्तु, वित्तात् । हिमें ' झसाद्धिर्हेः ' इसकर सिद्ध हुआ । विद्धि ॥

वेत्तेर्लोट्याम्गुणाभावः करोत्यनुप्रयोगश्च वा ॥ २२३ ॥ वेत्तेः, लोटि, आम्, गुणाभावः, करोत्यनुप्रयोगः च, वा । सप्तपदमिदं सूत्रम् ॥

भाषा-विद्धातुसे लोट्लकारके विषें विकल्पकरके आम् प्रत्यय होय और गुण होय नहीं और कृधातुका आमुप्रत्ययके पश्चात् प्रयोग होय । उदाहरण-विद्धातुसे तुप्के विषें एक जगह आम् प्रत्यय कर गुण किया नहीं और कृधातु पश्चात् प्रयुक्त किया तब रूप स्थित हुआ विदाम् कृ-तु ॥

तनादेरुप् ॥ २२४ ॥ तनादे , उप् । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ विदांकरोतु॥

भाषा-तन् आदिक धातुओंसे उप् प्रत्यय होय कर्त्ताअर्थमें चार लकार पर हुए संते । उदाहरण-कृञ्धातुको तनादि होनेसे उप्प्रत्यय किया क्योंकि कर्त्ताअर्थवाला चार लकारोंमेंसे तुप् परे विद्यमान है तब रूप स्थित हुआ विदां-कृ-उ-तु फिर ' गुण ' इसकर कृधातुको और ' नुपः ' इसकर उप्प्रत्ययको गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । विदांकरोतु । द्विवचनमें विदां-करु-ताम् ऐसा स्थित है ॥

क्ङित्यद्रु ॥ २२५ ॥ क्ङिति, अतेः उः । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ कृञोऽत उत् क्ङिति ॥ विदांकुरुताम् विदांकुर्वन्तु । अवेत्, अवेद् । स्यादिदः । अविदु ॥

भाषा-क्ङित्संज्ञक प्रत्यय पर हुए संते कृञ्धातुके अकारको उकार होय । उदाहरण-विदां-करु-ताम् । इसमें क्ङित्संज्ञक ताम् प्रत्यय परे विद्यमान है इस कारण कृञ्धातुके गुणभूत आकारको उकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । विदांकुरुताम् । बहुवचनमें ' क्ङित्यद्रुः ' इसकर उकार और ' उवम् ' इसकर उप्प्रत्ययके उकारको वकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । विदांकुर्वन्तु । और । हिमें ' ओर्वा हेः ' इसकर सिद्ध हुआ । विदांकुरु । उत्तमभागमें गुण करनेपर सिद्ध हुआ । विदांकरवाणि । विदांकरवाव । लङ्में विस्योर्दसात् ' इसकर दिप्का लोप करनेपर ' उपाधाया लघोः ' इसकर सिद्ध हुआ । अवेत्, अवेद् । अन्में ' स्यादिदः ' इसकर अन्को उस् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अविदु ॥

द स ॥२२६॥ दे , से । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ पदान्ते दस्य सो वा सिपि ॥ अवे । अवेद् अवेत् ॥

भाषा-पदान्तके विषें दकारको विकल्पकरके सकार होय सिप् पर हुए संते । उदाहरण-सिप्में विस्योर्दसात् ' इसकर सिप्का लोप किया फिर पदान्तमें विद् धातुके दकारको एक जगह सकार किया क्योंकि सिप्प्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । अवेः । और जहां दकारको सकार नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । अवेत अवेद् ॥

आमि विदेर्न गुणः ॥ २२७ ॥ आमि, विदेः, न, गुणः । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ विदाञ्चकार । अवेदीत् ॥ अस भुवि ॥ अस्ति ॥

भाषा–आम् पर हुए संते विद्धातुको गुण नहीं होय । उदाहरण–विद्धातुसे लिट्के विषे ' विद्दरिद्राजाग्रुषा वा ' इसकर एक जगह आम् प्रत्यय करनेपर धातुको गुण न होनेसे रूप सिद्ध हुआ । विदांचकार । और जहां आम् प्रत्यय नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । विवेद । थप्मे । विवेदित । लुङ्मे सेट् होनेसे सिद्ध हुआ । अवेदीत् । असधातु भू नाम सत्ताअर्थमे अर्थात् होनेमात्र अर्थमे वर्त्ते है । तिप्में: अप्का लुक् करनेपर पश्चात् सिद्ध हुआ । अस्ति । द्विवचनमें अस्-तस् ऐसा स्थित है ॥

नमसोऽस्य ॥ २२८ ॥ नमसः, अस्य । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ प्रत्ययस्य नमोऽस्तेश्चाकारस्य लोपो ङिति ॥ स्तः संति ॥

भाषा–नमप्रत्यय और अस्धातुके अकारका लोप होय ङित्संज्ञक प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–अस्-तस् । इसमें अस्धातुके परे ङित्संज्ञक तस् प्रत्यय विद्यमान है इस कारण अस्के अकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । स्तः । बहुवचनमेंभी ' नमसोऽस्य ' इसकर अकारका लोप किया क्योंकि ङित्संज्ञक अन्ति प्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । सन्ति । मध्यमभागके प्रथमवचनमें अस-सि ऐसा स्थित है ॥

सि सः ॥ २२९ सि, सः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ अस्तेः सस्य लोपो भवति सादौ ॥ असि स्थः स्थ । अस्मि स्वः स्मः । स्यात् । अस्तु स्यात् सन्तु । जह्येधिशाधि । एधि । असानि ॥

भाषा–अस्धातुके सकारका लोप होय सकारादि प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–अस-सि । इसमें अस्धातुसे सकारादि सिप् प्रत्यय परे विद्यमान है इस कारण अस्के सकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । असि । द्विवचन बहुवचनमें । स्थः । स्थ । उत्तमभागमें । अस्मि स्वः स्मः । लिङ्में । स्यात् । लोट्में । अस्तु स्तात्, स्तां सन्तु । और हिमें ' जह्येधिशाधि ' इसकर । एधि । सिद्ध हुआ । उत्तमभागमें । असानि असाव असाम ॥

अस्तेरीट् ॥ २३० ॥ अस्तेः, ईट् । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ विद्यमानादस्तेः रुदादेश्च परयोर्दिप्सिपोरीट् ॥ आसीत् आस्ताम् । आसीः । आसम् ॥

भाषा—विद्यमान हुए असधातु और रुदादिक धातुओंसे परे तिप् और सिप्‌के ईट्का आगम होय । उदाहरण—लङ्में असधातुसे तिप्प्रत्यय करनेपर तिप्‌के ईट्का आगम किया तब स्थित हुआ अ-अ-अस्-ई-द् फिर ' सवर्णे दीर्घः सह, स्वरहीन परेण०' इनका सिद्ध हुआ । आसीत् । द्विवचनमें । आस्ताम् । बहुवचनमें । आसन् । उत्तमभागके सिप्‌के ईट्का आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । आसीः । उत्तममागमें । आसम् आस्व आस्म ॥

अस्तेरनपि भूः ॥ २३१ ॥ अस्तेः, अनपि, भूः । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ बभूव । इत्यादि सिद्धम् ॥ मृजू शुद्धौ ॥

भाषा—असधातुको भू आदेश होय लट् आदिक चार लकारवर्जित विषयमें । उदाहरण—लिट्में असधातुको भू आदेश करनेपर पूर्ववत् सिद्ध हुआ । बभूव । मृजू धातु शुद्धिमें वर्ते है ॥

मृजेर्वृद्धिः क्ङिति स्वरे वा ॥ २३२ ॥ मृजेः, वृद्धिः, क्ङिति, स्वरे, वा । पञ्चपदमिदं सूत्रम् ॥ मार्ष्टि मृष्टः मृजन्ति, मार्जन्ति । मार्क्षि । मृज्यात् । मार्ष्टु । मृड्ढि । मार्जानि । अमार्ट्, अमार्ड् । ममार्ज । ममृजतुः ममार्जतुः।ममार्जिथ ममार्ष्ठ । मृज्यात् । मार्जिता, मार्ष्टा । अमार्जीत् अमार्क्षीत् ॥ वच परिभाषणे ॥ वक्ति । नह्विवचिरन्ति पर । वक्षि वक्थ । वच्मि । वच्यात् । वक्तु । वग्धि । अवक्, अवग् । उवाच ऊचतुः । उवचिथ उवक्थ । उच्यात् । वक्ता । वक्ष्यति । अवक्ष्यत् । अस्यतिवक्तीति ङः ॥

भाषा—मृजधातुको वृद्धि होय गुणका अपवाद होय क्ङित्संज्ञक प्रत्ययको त्यागकर अन्य प्रत्यय पर हुए संते और किङित्संज्ञक स्वर हुए संते मृजधातुको विकल्पकरके वृद्धि होय । उदाहरण—मृजधातुको तिप्‌में शप्‌का लुक् करनेके पश्चात् वृद्धि किया फिर ' छशषरा० ' इसकर जकारको षकार कर ' ष्टुभि० ' इसकर तिप्‌के तकारको टकार किया तब रूप सिद्ध हुआ । मार्ष्टि । द्विवचनमें वृद्धि नी हुई नहीं क्योंकि ङित्संज्ञक तस् प्रत्यय परे विद्यमान है फिर ' छशष० ' इसकर षकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । मृष्टः । बहुवचनमें एक जगह वृद्धि किया क्योंकि ङित्संज्ञक स्वर परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । मार्जन्ति । और जहां वृद्धि नहीं हुई तहा सिद्ध हुआ । मृजन्ति । सिप्‌में वृद्धि करनेपर ' छशष०, षढो कस्से, किलात्०' इनकर सिद्ध हुआ । मार्क्षि । द्विवचन बहुवचनमें । मृष्ठः । मृष्ठ । उत्तमभा

गमें। मार्ज्मि। मृज्वः। मृज्मः। लिङ्में। मृज्यात्। लोट्में। मार्ष्टु, मृष्टात्। मृष्टाम्। मार्जन्तु, मृजन्तु। हिमे 'झसाद्धिर्हेः' इसकर हिके स्थानमें धि करनेपर 'छशष०, ष्टुभिः०' इनकर रूप स्थित हुआ मृष्-ढि फिर 'झभे जबाः' इसकर मूर्द्ध स्थान सवर्ण होनेसे षकारको डकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ। मृड्ढि। उत्तमभागमें। मार्जानि। मार्जाव। मार्जाम। लङ्में 'दिस्योर्हस्यात्' इसकर दिप्का लोप किया फिर वृद्धि की फिर 'छशषराजा०' फिर 'वावसाने' इनकर सिद्ध हुआ। अमार्ड्, अमार्ट्। द्विवचनमें। अमृष्टाम्। बहुवचनमें। अमार्जन्, अमृजन्। लिट्में। ममार्ज। अतुस्में। ममृजतुः, ममार्जतुः। थप्में 'ऊदितो वा' इसकर जहां एक जगह इट् हुआ तहां सिद्ध हुआ। ममार्जिथ। और जहां इट् नहीं हुआ तहां 'छशष०, ष्टुभिः०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ। ममार्ष्ठ। तादिकमें जहां इट् हुआ तहां सिद्ध हुआ। मार्जिता। और जहां इट् नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ। मार्ष्टा। लुङ्में इट् पक्षमें। अमार्जीत्। और जहां इट् नहीं हुआ तहां 'छशष०, षढोः कस्से, क्वि०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ। अमार्क्षीत्। द्विवचनमें 'झसात्' इसकर सिका लोप करनेपर 'छशष०, ष्टुभिः०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ। अमार्ष्टाम्। वचधातु परिभाषण नाम कथन करनेमें वर्त्ते है। अप्का लुक् करनेके पश्चात् 'चोः कुः' इसकर सिद्ध हुआ। वक्ति। द्विवचनमें। वक्तः। वच्धातु अन्तिपर नहीं होता है अर्थात् वच्धातुसे अन्ति प्रत्यय नहीं होता है। सिप्में। वक्षि। मिप्में। वच्मि। यात्में। वच्यात्। तुप्में। वक्तु। हिमें 'झसाद्धिर्हेः, चोः कुः, झबे जबाः' इनकर सिद्ध हुआ। वग्धि। दिप्में 'दिस्योर्हसात्' इसकर दिप्का लोप करनेके पश्चात् 'चोः कुः, वावसाने' इनकर सिद्ध हुआ। अवक्, अवग्। लिट्में यजादिक होनेसे 'णबादौ पूर्वस्य' इसकर पूर्वको संप्रसारण करनेसे रूप सिद्ध हुआ। उवाच। द्विवचनमें 'णबादौ पूर्वस्य, यजां यवराणां०' इनकर सिद्ध हुआ। ऊचतुः। थप्में अकारवान् होनेसे 'स्वरान्तादत्वतश्च०' इसकर एक जगह इट् और एक जगह इट् न करनेसे रूप सिद्ध हुआ। उवचिथ, उवक्थ। यादाकिमें। उच्यात्। तादिकमें। वक्ता। लृट्में। वक्ष्यति। लृङ्में। अवक्ष्यत्। लुङ्में। 'अस्यतिवक्तिख्यातिभ्यो०' इसकर सिके स्थानमें ङप्रत्यय किया तब रूप स्थित हुआ अवच्-अ-द्॥

ङे वचेरुम्॥ २३३॥ ङे, वचेः, उम्। त्रिपदमिदं सूत्रम्॥ **अवोचत् अवोचताम् अवोचन्॥ रुदिर् अश्रुविमोचने॥**

भाषा—ङप्रत्यय पर हुए संते वच्धातुको उम्का आगम होय। उदाहरण—अवच्-अ-द्। इसमें वच्धातुसे परे ङप्रत्यय विद्यमान है इस कारण वच्को उम्का

आगम किया तो ' मिदन्त्यात्स्वरात्परो वक्तव्य ' इसकर आगम मकार उत्तरवर्ती अकारसे परे हुआ तब रूप सिद्ध हुआ। अवोचत्। द्विवचनमें। अवोचताम्। रुदिर् धातु अश्रुविमोचन नाम रोदन करनेमें वर्ते है॥

रुदादेश्चतुर्णां हलादे॥ २२४॥ रुदादे, चतुर्णाम्, हलादे। त्रिपदमिदं सूत्रम्॥ रुदादे परस्य सिवादिचतुर्णां मध्ये हकारवलादे प्रत्ययस्येट्। रोदिति रुदित रुदन्ति। रोदिषि रुदिथः रुदिथ। रुद्यात्। रोदितु रुदिहि॥

रुदादेर्दिस्योरीट्टौ॥ २२५॥ रुदादेः, दिस्योः, ईट्टौ। त्रिपदमिदं सूत्रम्॥ अरोदीत्। अरोदत् अरुदिताम् अरुदन्। इरितो वा अरुदत्॥ ञिष्वप् शये॥ स्वपिति। स्वप्यात्। स्वपितु। अस्वपीत्। अस्वपत्। सुष्वाप। स्वप्ता। अस्वाप्सीत्॥ श्वस् प्राणने॥ श्वसिति। श्वस्यात्। श्वसितु। अश्वसत्। अश्वसीत्। शश्वास॥ अन प्राणने॥ अनिति॥

भाषा—रुद्, स्वप्, श्वस्, अन्, जक्ष इन पांच रुदादिक धातुओंसे परे सिवादि चार लकारोंके प्रत्ययोंके मध्यमें हकार और वलप्रत्याहार है आदिमें जिसके ऐसे प्रत्ययको इट्का आगम होय। उदाहरण—रुद्धातुसे तिप्को इट्का आगम किया क्योंकि तिप्प्रत्यय वलप्रत्याहारसंबन्धी तकार आदिवाला है तब रूप सिद्ध हुआ। रोदिति। और द्विवचनमें। रुदितः। और बहुवचनमें अन्ति प्रत्यय वलप्रत्याहार आदिवाला नहीं है इस कारण अन्तिको इट्का आगम नहीं हुआ तब रूप सिद्ध हुआ। रुदन्ति। लिङ्में यात् प्रत्ययभी वलप्रत्याहार आदिवाला नहीं इस कारण इट्का आगम नहीं हुआ तब रूप सिद्ध हुआ। रुद्यात्। लोट् हिके वचनमें हिप्रत्यय हकार आदिवाला है इस कारण हिको इट्का आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ। रुदिहि। और लङ्के दिप् और सिप्को एक जगह ' अड्गार्ग्यगालवयोः ' इसकर अट्का आगम किया तहां सिद्ध हुआ। अरोदत्, अरोदः। और एक जगह ' अस्तेरीट् ' इसकर ईट्का आगम किया तहां सिद्ध हुआ। अरोदीत्। अरोदीः। लिट्में। रुरोद। लिङ्में। रुद्यात्। लुट्में। रोदिता। लुङ्में एक जगह सिप्रत्यय किया तहां सिद्ध हुआ। अरोदीत्। अरोदिष्टाम्। और एक जगह इरितो वा ' इसकर ङप्रत्यय किया तहां सिद्ध हुआ। अरुदत्। ञिष्वप् यह धातु शयन

१ रोदिति स्वपितिश्चैव श्वसिति प्राणितिस्तथा। जक्षितिश्चैव विज्ञेयो रुदादि पञ्चको गणः॥१८

करनेमें वर्त्ते है । इसमें ञि इत्संज्ञक है । ' आदेः' ष्णः० ' इसकर षकारके स्थानमें सकार होनेके पश्चात् चार लकारोंमें रुदधातुके समान रूप जानने । लिट्में ' द्विश्च ' इसकर द्वित्व होनेके पश्चात् ' णवादौ पूर्वस्य, अत उपधायाः, क्लिात्पः० ' इनकर रूप सिद्ध हुआ । सुष्वाप । द्विवचनमें ' णवादौ पूर्वस्य, यजां यवराणां० ' इसकर पूर्व पर रूपको संप्रसारण होकर ' क्लिात्पः०' इसकर सिद्ध हुआ । सुषुपतुः । अकारवान् अनिट् होनेसे थप्में एक जगह सेट् और एक जगह अनिट् रहनेसे रूप सिद्ध हुआ । सुष्वपिथ, सुष्वप्थ । यादादिकमें संप्रसारण करके रूप सिद्ध हुआ । सुप्यात् । तादिकमें अनिट् होनेसे । स्वप्ता । लुङ्में ' अत उपधायाः ' इसकर सिद्ध हुआ । अस्वाप्सीत् । द्विवचनमें ' झसात् ' इसकर सिका लोप कर रूप सिद्ध हुआ । अस्वाप्ताम् । श्वस्‌धातु प्राणन नाम प्राण व्यापार करनेमें अर्थात् श्वास लेनेमें वर्त्ते है । इस धातुके रूप चार लकारोंमें रुदके समान जानने । लिट्में । शश्वास । लुट्में सेट् होनेसे सिद्ध हुआ । श्वसिता । लुङ्मे ' ह्यन्तक्षणश्वस०' इसकर वृद्धि न होनेसे रूप सिद्ध हुआ । अश्वसीत् । अन्‌धातुभी प्राणव्यापार करनेमें वर्त्ते है । चार लकारोंमें इसकेभी रूप श्वस्‌के समान जानने । लिट्में । आन । लिङ्में । अन्यात् । लुट्में । अनिता । लुङ्में आनीत् । आनिष्टाम् ॥

प्रादे रेफादनितेर्नस्य णत्वम् ॥२३६॥ प्रादेः, रेफात्, अनितेः, नस्य, णत्वम् । पंचपदमिदं सूत्रम् ॥ प्राणिति । प्राणिहि । आनीत् । आनत् आन आनतुः । अन्यात् । अनिता । आनीत् ॥ जक्ष भक्षहसनयोः ॥ जक्षिति जक्षितः ॥

भाषा—प्रादि उपसर्गोंके रकारसे अनधातुके नकारको णकार होय । उदाहरण—प्र॰ अनि-ति । इसके पूर्व प्रउपसर्ग प्रयुक्त करनेपर नकारको णकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । प्राणिति । जक्षधातु भक्ष और हसन अर्थमें वर्त्ते है । जक्षधातुसे ' अदादेर्लुक् ' इसकर लुक् करनेके पश्चात तिप्में ' रुदादेश्चतुर्णां ह्रसादेः ' इसकर इट् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । जक्षिति । द्विवचनमें । जक्षितः । बहुवचनमें जक्ष-अन्ति ऐसा स्थित है ॥

जक्षादेरन्तोऽदन उस् ॥२३७॥ जक्षादेः, अन्तः, अत्, अनः, उस् । पंचपदमिद सूत्रम् ॥ जक्षजागृदरिद्राशास्चकासृभ्यः परस्यान्तोऽत् अन उस् स्यात् ॥ जक्षति । जक्ष्यात् । जक्षितु । जक्षिहि । अजक्षीत् । अजक्षत् । जक्षिता ॥ इति रुदादयः ॥ जागृ निद्राक्षये ॥ जागर्ति जागृतः जाग्रति । जागृयात् । जागर्तु । अजागः अजागृताम् ॥

भाषा—जक्ष, जागृ, दरिद्रा, शास् और चकास् धातु इनसे परे अन्तको अत् और अन्को उस् होय । उदाहरण—जक्ष-अन्ति । इसमें जक्षधातुसे परे अन्तिके अन्तको अत् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । जक्षति । लिङ्में जक्ष्यात् । लोट्में । जक्षितु । अन्तुमें । जक्षतु । लङ्में दिप्के विषे 'अदुदादेरट्, अस्तेरीद्' इनकर एक जगह अट् और एक जगह ईद् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अजक्षत्, अजक्षीत् । अन्में । अजक्षुः । लिट्में । जजक्ष । लुट्में । जक्षिता । यह रुदादिक धातु हैं । जागृधातु निद्राक्षय नाम जागनेमें वर्त्ते है । जागृधातु ऋकारान्त है । तिप्में गुण करनेसे सिद्ध हुआ । जागर्ति द्विवचनमें । जागृतः । बहुवचनमें जक्षादि होनेसे अन्तिके स्थानमें अति करनेपर 'ऋरम्' इसकर सिद्ध हुआ । जाग्रति । लिङ्में । जागृयात् । लोट्में । जागर्त्तु । अन्तुवचनमें । जाग्रतु । हिमें । जागृहि । उत्तमभागमें । जागराणि । जागरान । लङ्में दिपके विषे गुण करनेके पश्चात् 'दिस्योर्हसात्' इसकर दिप्का लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अजागः । द्विवचनमें । अजागृताम् । बहुवचनमें 'जक्षादेरन्तोऽन् उस्' इसकर अन्को उस् आदेश करनेपर रूप स्थित हुआ अजागृ-उस् ॥

उसि गुण ॥ २३८ ॥ उसि, गुणं । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ अजागरुः । जजागार ॥

भाषा—उस् पर हुए संते नाम्यन्त धातुको गुण होय । उदाहरण—अजागृ-उस् । इसमें उस् प्रत्यय परे विद्यमान है इस कारण जागृधातुके ऋकारको गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अजागरुः । लिट्में 'सस्वरादिर्द्विरदि', हुस' अत उपधायाः' इनकर सिद्ध हुआ । जजागार । द्विवचनमें जजागृ-अतुस् ऐसा स्थित है ॥

जागर्तेर्वीण्णवृञ्क्ङिन्नेषु गुण ॥ २३९ ॥ जागर्ते, वीण्णवृञ्क्ङिन्नेषु, गुणं । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ जजागरतुः जजागरुः । जजागरिथ । जागराञ्चकार । जागर्य्यात् । जागरिता । जागरिष्यति । अजागरिष्यत् । अजागरीत् ॥ दरिद्रा दुर्गतौ ॥ दरिद्राति ॥

भाषा—वि नाम वकारादि प्रत्यय, इण्प्रत्यय, णप् प्रत्यय तथा क्ङित्संज्ञक प्रत्यय इनसे भिन्न जो प्रत्यय हैं उनके विषे जागृधातुको गुणही होय भाव यह है कि इन प्रत्ययोंसे भिन्न जो कि वृद्धि करनेवाले तथा गुणादिके निषेध करनेवाले प्रत्यय हैं उनके विषे जागृधातुको गुणही होय । उदाहरण—जजागृ अतुस् । इसमें

१ वृद्धिविषयिक गुण यह निमयपयन्त शब्दोंको प्रथम गुणकर पश्चात् 'अत उपधायाः' इसकर वृद्धि नहीं होती है । जैसे—घुप्में । जागरुः । णप्में । जागर । णि । जागरयति ॥

जागृधातुसे वीणणव्ङित्प्रत्ययोसे भिन्न अतुस् प्रत्यय परमें विद्यमान है इस कारण गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । जजागरतुः । थप्मे । जजागरिथ । और जहां ' विद-दरिद्राजागृपां वा ' इसकर आम् प्रत्यय हुआ तहां सिद्ध हुआ । जागरांचकर । आशीर्लिङ्में । जागर्यात् । तादिकमें । जागरिता । लुङ्मे अजागृ-इ-स-ई-द् ऐसा स्थित है । गुण करनेके पश्चात् गकार उत्तरवर्त्ती अकारको ' लान्तस्य ' इसकर वृद्धि होनी चाहिये थी सो ' ह्म्यन्तक्षणश्वसजागृ० ' इसकर नहीं हुई तव रूप सिद्ध हुआ । अजागरीत् । दरिद्राधातु दुर्गतिअर्थमें वर्त्ते है । तिप्में सिद्ध हुआ । दरिद्राति । अतुस्में दरिद्रा-तस् ऐसा स्थित है ॥

दरिद्रातेरिदालोपश्च ङिति ॥ २४० ॥ दरिद्रातेः इत्, आलोपः चं, ङिति । पंचपदमिदं सूत्रम् ॥ दरिद्रातेरातो लोपो ङिति स्वरे इकारश्च ङिति हसे ॥ दरिद्रितः दरिद्रति । दरिद्रियात् । दरिद्रातु । अदरिद्रात् अदरिद्रिताम् अदरिद्रुः ॥

भाषा—दरिद्राधातुके आकारका लोप होय ङित्संज्ञक स्वर परे हुए संते और दरिद्राधातुके आकारको इकार होय ङित्संज्ञक हस पर हुए संते । उदाहरण—दरिद्रा-तस् । इसमें ङित् हसप्रत्याहारसंवन्धी तकार परे विद्यमान है इस कारण आकारको इकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । दरिद्रितः । वहुवचनमें ' जक्षादेरन्तो० ' इसकर अन्तिके स्थानमें अति किया फिर आकारका लोप किया क्योंकि ङित् स्वर अकार परे विद्यमान है तव रूप सिद्ध हुआ दरिद्रति । लिङ्मे आकारको इकार किया क्योंकि ङित् हस यकार परे विद्यमान है तव रूप सिद्ध हुआ । दरिद्रियात् । लोट्में । दरिद्रातु, दरिद्रितात् । दरिद्रिताम् । दरिद्रतु । दरिद्राहि । लङ्मे । अदरिद्रात् । अदरिद्रिताम् । अन्में ' जक्षादेरन्तो० ' इसकर अन्को उस् करनेपर आका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अदरिद्रुः ॥

दरिद्रातेरनप्यालोपः सौ वा णव्वुणनिट्स्यघुट्सु न ॥ २४१ ॥ दरिद्रातेः, अनपि, आलोपः, सौ, वां, णव्वुणनिट्स्यघुट्सु, नं । सप्तपदमिदं सूत्रम् ॥ ददरिद्रौ ददरिद्रतुः । दरिद्राञ्चकार । दरिद्र्यात् ।

---

१ अजागृ-इ-स-ई-द् । इसमें ' ऋरम् ' इस सूत्रका निषेधकर्त्ता ' गुणः ' यह सूत्र है और गुणकी निषेधकर्त्री ' णित्पे० ' इसकर सिकी णित्सज्ञा होनेपर ' धातोर्नामिनः ' इसकर जो कि वृद्धि है सो है और वृद्धिका निषेधकर्त्ता ' जागर्त्तेर्वीण्णव्ङिद्भिन्नेपु गुणः ' इसकर जो कि गुण होता है सो है और गुण करनेपर ' अतो हसादेः ' इसकी विकल्पता दूर कर ' लान्तस्य ' इसकर जो कि वृद्धि होती है उसका निषेधकर्त्ता ' ह्म्यन्तक्षण० ' यह सूत्र है ॥

दरिद्रिता। अदरिद्रीव् अदरिद्रिष्टाम् । अदरिद्रासीव् ॥ शासु अनु शिष्टौ ॥ शास्ति ॥

भाषा—दरिद्राधातुके आकारका लोप होय जहां कि अणुके होनेका विषय नहीं है और सिप्रत्यय पर हुए संते विकल्पकरके होय और णप्प्रत्यय, वुणप्रत्यय, अनिट् समत्यय और युट् प्रत्यय पर हुए संते नहीं होय । उदाहरण—दरिद्रा धातुको णप्के विषें द्वित्व करनेपर ' आतो णप् डौ ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । ददरिद्रौ । अतुसमें ' दरिद्रातेरनप्यालोप ' इसकर आका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । ददरिद्रतु' और ' विदरिद्राजागृपां वा ' इसकर एक जगह आम् प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । दरिद्रांचकार । लिङ्में ' दरिद्रातेरनप्यालोप ' इसकर आकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । दरिद्र्यात् । तादिकमें । दरिद्रिता । लुङ्में एक जगह आकारका लोप किया क्योंकि सिके विषें विकल्पकरके आका लोप होता है वहां रूप सिद्ध हुआ । अदरिद्रीत् । द्विवचनमें । अदरिद्रिष्टाम् । और जहां आकारका लोप नहीं हुआ वहां ' यमिरमिनमातां, सक् सेरिट् पे ' इसकर सक् और सिको इट् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अदरिद्रासीत् । द्विवचनमें । अदरिद्रासिष्टाम् । शासुधातु अनुशिष्टि नाम शिक्षा करनेमें वर्ते है । तिप्में अपूका लुक् करनेके पश्चात् रूप सिद्ध हुआ । शास्ति । द्विवचनमें शास्-तस् ऐसा स्थित है ॥

शासेरि ॥ २४२ ॥ शासे , इ ॥ द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ शासेरातो हसे क्ङिति के च इस्भवति ॥ षसादे' ष । शिष्टः शासति । शास्सि शिष्ठ शिष्ठ । शास्मि । शिष्यात् । शास्तु । जक्षेधिशाधि । शाधि ॥

भाषा—शासुधातुके आकारको इकार होय क्ङित्संज्ञक हस और कप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—शास्-तस् । इसमें क्ङित्संज्ञक हसादि तस्प्रत्ययका सकार है इस कारण शासके आकारको इकार करनेपर ' षसादे' षः ' इसकर षकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । शिष्टः । बहुवचनमें । ' अभ्यादेरन्तो॰ ' इसकर अन्तिके स्थानमें अति करनेसे रूप सिद्ध हुआ । शासति । सिप्में । शास्सि । मिप्में । शास्मि । लिङ्में । शिष्यात् । लोट्में शास्तु, शिष्टात । हिमें । जक्षेधिशाधि ' इसकर सिद्ध हुआ । शाधि । लङ्के दिप्वचनमें आशास् द् ऐसा स्थित है प्रथम दिस्योर्ह॰ ' इसकर दिप्का लोप किया ॥

---

१ आङ् और सति धातुओंके साहचर्यसे परस्मैपदी शासधातुसेही कप्रत्ययका विधान किया है न कि आङ्शासु इच्छायां इस धातुसे । जब कि परस्मैपदी शास धातुसेही कप्रत्यय किया है तो परस्मैपदी शासधातुकेही आकारको इकार होय क्योंकि ' शासेरिः ' इस सूत्रकी वृत्तिमें कप्रत्ययके विषें शासधातुके आकारको इकार करना कहा है ॥

दिपि धातोः ॥२४३॥ दिपि, धातोः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ धातोः सस्य तः स्याद्दिपि ॥ अशाद्, अशात् अशिष्टाम् अशासुः ॥

भाषा–धातुके सकारको तकार होय दिप्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–अशास्-द् । इसमें शास्धातुके सकारको तकार किया क्योंकि 'प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणं न याति' इसकर दिप्प्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । अशात्, अशाद् । द्विवचनमें । अशिष्टाम् । बहुवचनमें 'जक्षादेरन्तो०' इसकर अन्के स्थानमें उस् करने-पर रूप सिद्ध हुआ । अशासुः । सिप्में 'दिस्योर्हे०.' इसकर सिप्का लोप करनेके पश्चात् रूप स्थित है अशास् ॥

सिपि वा धातोः॥२४४॥ सिपि, वा, धातोः । त्रिपदमिदं सूत्रम् । धातोः सस्य वा तः स्यात्सिपि ॥ अशाः अशाद् अशात् । शशास । शिष्यात् । शासिता । अशासिष्यत् । अशिषत् ॥ चकासृ दीप्तौ ॥ चकास्ति चकास्तः चकासति । झसाद्धिर्हेः । धे सलोपः । चकाधि । अचकात् । अचकासुः । अचकाः । अचकात् अचकाद् । चकासा-ञ्चकार । अचकासीत् ॥ इति परस्मैपदम् ॥

भाषा–धातुके सकारको विकल्पकरके तकार होय सिप् प्रत्यय पर हुए संते । उदा-हरण–अशास् । इसमे शासधातुके सकारको विकल्पकरके तकार किया क्योंकि सिप् प्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । अशाः, अशाद्, अशात् । लिट्में । शशास । द्विवचनमें । शशासतुः । लिङ्में 'शासेरिः, घसादेः षः' इनकर सिद्ध हुआ । शिष्यात् । लुट्मे । शासिता । लुङ्में 'सर्त्तिशास्त्यर्त्तिभ्यो ङो लुङि' इसकर ङ प्रत्यय करनेपर 'शासेरिः, घसादेः षः' इनकर सिद्ध हुआ । अशिषत् । चकास्धातु प्रकाशअर्थमें वर्त्ते है । तिप्में । चकास्ति । तस्में । चकास्तः । अन्तिमे 'जक्षादेरन्तो०' इसकर अन्तिको अति करनेपर रूप सिद्ध हुआ । चकासति । हिमें 'झसाद्धिर्हेः' इस-कर हिको धि करनेपर रूप स्थित हुआ चकास्-धि पीछे 'धे सलोपः' इसकर सकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । चकाधि । लङ्में दिप्के विषैं 'दिस्योर्हसात्, दिपि०' इनकर रूप सिद्ध हुआ । अचकात्, अचकाद् । द्विवचनमें । अचकास्ताम् । बहुवचनमें 'जक्षादेरन्तो०' इसकर अन्को उस् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अचकासुः । सिप्में 'दिस्योर्हसात्०, सिपि वा०' इनकर सिद्ध हुआ । अचकाः, अचकात्, अचकाद् । लिट्में अनेक स्वर होनेसे 'कासादिप्रत्ययादाम्०' इसकर आम् करनेपर रूप सिद्ध

हुआ । चकासांचकार । लुङ्में । चकासिता । लृङ्में । अचकासीत् ॥ इति परस्मैपद समाप्तिमगात् ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामेण साधितम् । चंद्रिकोत्तरार्द्धवृत्ती पदादे पं सुभापया ॥

चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि ॥ स्कोरादयोश्च । चष्टे चक्षाते । आतोऽन्तोऽदनतः । चक्षते । चक्षे चक्षाथे चड्ढ्वे । चक्षे चक्ष्वहे चक्ष्महे । चक्षीत चष्टाम् । अचष्ट ॥

भाषा—चक्षिङ् धातु प्रकट कहनेमें वर्त्ते है और देखनेमेंभी वर्त्ते है यह कोई कहते हैं । इसमें इकार ङकार इत्संज्ञक हैं । चक्षधातुसे अपूर्व लुक् करनेके पश्चात् आत्म नेपदके त वचनमें चक्ष्-त ऐसा स्थित है । 'स्कोरादयोश्च' इसकर पूर्वककारका लोप करनेपर रूप स्थित हुआ चष्-त फिर 'ष्टुभिः०' इसकर सिद्ध हुआ । चष्टे । द्विवचनमें । चक्षाते । बहुवचनमें 'आतोऽन्तोऽदनतः' इसकर सिद्ध हुआ । चक्षते । सेवचनमें 'स्कोरादयोश्च' इसकर ककारका लोप करनेके पश्चात् 'षढोः०' इसकर षकारको ककार किया फिर 'किला०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । चक्षे । ध्वेवचनमें 'स्कोरादयोश्च, ष्टुभिः०' इनकर चष् ध्वे ऐसा रूप करनेपर 'झबे जबा' इसकर षकारके स्थानमें मूर्द्ध स्थान सवर्ण होनेसे डकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । चड्ढ्वे । उत्तमभागमें । चक्षे । चक्ष्वहे । चक्ष्महे । लिङ्के आत्मनेपदमें । चक्षीत । लोट्में । चष्टाम् । चक्षाताम् । चक्षताम् । चक्ष्व । चक्षाथाम् चड्ढ्वम् । चक्षै । चक्षावहै । चक्षामहै । लङ्के आत्मने पदमें । अचष्ट । अचक्षाताम् । अचक्षत । अचष्ठाः । अचक्षाथाम् अचड्ढ्वम् । अचक्षि अचक्ष्वहि अचक्ष्महि ॥

चक्षिङोऽनपि ख्याञ्क्शाञौ णादौ तु वा ॥ २४९ ॥ चक्षिङ, अनपि, ख्याञ्क्शाञौ, णादौ, तु, वा । पदपदमिदं सूत्रम् ॥ चख्यौ चख्यतुः । चख्ये चख्याते । चक्शौ । चक्शे । चचक्षे । ख्येयात् ख्यायात् । ख्यासीष्ट । क्शायात् क्शेयात् । अख्यत् अख्यत । अक्शासीत् अक्शास्त ॥ ईर् गतौ कम्पने च ॥ ईर्ते ईराते । ईर्ताम् ईराताम् । ऐर्त । ईराञ्चक्रे । ईरिष्ट । ऐरिष्ट ॥ आङःशासु इच्छायाम् ॥ आशास्ते । आशासाते । आशासिष्ट ॥ कसि गतिशासनयोः ॥ कंस्ते कसाते । अयमनिदिदित्येके । कस्ते । शाल्व्यान्तोऽप्यनिदित् । कष्टे कशाते । कक्षे कड्ढ्वे । अकशिष्ट ॥ णिसि चुम्बने ॥ निंस्ते निंसाते । निंस्से । निंसिता ॥ णिजि शुद्धौ ॥ चोः कुः ।

निंक्ते । निंक्षे । निंजिता ॥ शिजि अव्यक्ते शब्दे ॥ शिंक्ते शिंक्षे ।
शिंजिता ॥ पिजि वर्णे सम्पर्चने च ॥ पिङ्क्ते । पिपिंजे । पिंजिता ॥
पृचि सम्पर्चने ॥ पृङ्क्ते । पपृञ्चे । पृचिता ॥ पृची सम्पर्चने ॥
पृक्ते । पपृचे । अपर्चिष्ट ॥ ईड स्तुतौ ॥ ईट्टे ॥

भाषा—चक्षिङ्धातुको जहां कि अप् होनेका विषय नहीं है तहां ख्याञ् और क्शाञ् आदेश होय और णत्वादि प्रत्ययोंके विषैं विकल्पकरके होय । उदाहरण—चक्षिङ्धातुको जहां ख्याञ् और क्शाञ् यह आदेश हुए तहां ञित् होनेसे ख्याञ् क्शाञ् इनके परस्मैपद आत्मनेपदमें रूप जानने । जैसे णप्के विषैं ' आतो णव् डौ ' इसकर सिद्ध हुआ । चख्यौ, चक्शौ । और आत्मनेपदमे ' आतोऽनपि ' इसकर सिद्ध हुआ । चख्ये, चक्शे । और जहां लिट्मे यह आदेश नहीं हुए तहां सिद्ध हुआ । चचक्षे । और आशीर्लिङ् आदिक लकारोंमे यह आदेश नित्य होनेसे उभयपद होने चाहिये । यादादिकमे ' संयोगादेरादन्तस्य० ' इसकर सिद्ध हुआ । ख्येयात्, ख्यायात्, क्शेयात् क्शायात् । सीष्टादिकमें । ख्यासीष्ट, क्शासीष्ट । लुङ्मे ख्यासे तौ ङप्रत्यय ' अस्यतिवक्तिख्यातिभ्यो० ' इसकर करनेसे सिद्ध हुआ । अख्यत्, अख्यत । और क्शासे सिं प्रत्यय करनेपर परस्मैपदमें ' यमिरमिनमातां० ' इसकर सिद्ध हुआ । अक्शासीत् । आत्मनेपदमें । अक्शास्त । ईर्धातु गतिअर्थ और कम्पन अर्थमें वर्त्ते है । तेमे । ईर्त्ते । अन्तेमें ' आतोऽन्तोऽदनतः ' । ईरते । लिट्में ' कासादिप्रत्ययादाम्० ' इसकर सिद्ध हुआ । ईरांचक्रे । लुङ्में । ऐरिष्ट । आङ् उपसर्गसे शासुधातु इच्छाअर्थमें वर्त्ते है । तेमें सिद्ध हुआ । आशास्ते । अन्तेमें । आशासते । लिट्में । आशशासे । लुङ्में आशासिष्ट । कसिधातु गति और आज्ञा अर्थमें वर्त्ते है । ' इदितो नुम् ' इसकर नुम् आगम करनेपर लट्के विषैं सिद्ध हुआ । कंस्ते । ध्वेमें ' धि सलोपः ' इसकर सिद्ध हुआ । कंध्वे । लिट्में । चकंसे । लुङ्में । अकंसिष्ट । कोई आचार्य इसको इकार इत्वाला नहीं कहते हैं तहां सिद्ध हुआ । कस्ते । और कोई आचार्य इसको तालव्यशकारान्त और अनिदित् कहते हैं तहां ' छशष०, ष्टुभिः० ' इसकर सिद्ध हुआ । कष्टे । सेमें ' छशष०, षढोः कस्से, क्लि० ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । कक्षे । ध्वेमें ' छशष०, ष्टुभिः० , झवे जशः ' इनकर सिद्ध हुआ । कड्ढ्वे । लिट्में । चकशे । लुङ्में । अकशिष्ट । णिसिधातु चुम्बन अर्थमे वर्त्ते है । कसिधातुके समानही निंसिधातुके रूप जानने । णिजि धातु शुद्धिअर्थमें वर्त्ते है । लट्में ' इदितो नुम्, चोः कुः, खसे च० ' इनकर सिद्ध हुआ । निंक्ते । सेमें ' चोः, खसे च०, क्लि० ' इनकर सिद्ध हुआ । निंक्षे । ध्वेमें ' चोः कुः ' इसकर सिद्ध हुआ । निंग्ध्वे ।

लिट्में । निर्निशे ।। लुङ्में अनिजीत् । णिजिधातु अमकट शब्दमें वर्त्ते है और पिजिधातु वर्ण और सम्पर्चन अर्थात् मिश्रीभाव नाम मिलनेमें वर्त्ते है और पृचिधातुभी सम्पर्चन अर्थमें वर्त्ते है । इन तीनों धातुओंके रूप णिजिधातुके समान जानने । पृचीधातुभी सम्पर्चन अर्थमें वर्त्ते है । लट्में । पृक्ते । पृचाते । पृचते । पृक्षे । पृग्ध्वे । लोट्के उत्तमभागमें । पर्चै । पर्चावहै । पर्चामहै । लिट्में । प ... लुङ्में । अप ... । ईड्धातु स्तुति करनेमें वर्त्ते है । लट्में ईड्-से ऐसा [...] ' ष्टुभिः०, सले चपा झसानाम् ' इनकर सिद्ध हुआ ईट्टे । द्विवचनमें ... बहुवचनमें । ईडते । सेवचनमें ईड्-से ऐसा स्थित है ॥

ईडीशिभ्या सध्वयोरिट् ॥ २४६ ॥ ईडीशिभ्याम्, ... इट् । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ ईडिषे । ईडिध्वे ॥

भाषा—ईड्धातु और ईशधातु इनसे परे स और ध्वशब्द इन... होय । उदाहरण—ईड्-से । इसमें ईड्धातुसे परे सेप्रत्ययका सकार... कारण सकारको इट्का आगम करनेसे रूप सिद्ध हुआ । ई... इट्का आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । ईडिध्वे । लिङ्में ... ईडाम् । लङ्में । ऐट्ट । द्विवचन बहुवचनमें । ऐडाताम् । ऐ... ऐड्ढ । द्विवचनमें । ऐडाथाम् । बहुवचनमें अ-अ-ईड्-ध्वम् ...

लङो ध्वस्य नेट् ॥ २४७ ॥ लङः, ध्वस्य, न, इट् ... सूत्रम् ॥ ऐड्ढ्वम् । ईडाञ्चक्रे । ऐडिष्ट ॥ ईश ऐश्वर्ये ॥ ईष्टे । ईशिषे । ईशिध्वे । ईशाञ्चक्रे । ईशितासे ॥ आस उपवेशने ॥ आस्ते । आध्वे । आसाञ्चक्रे ॥ वस आच्छादने ॥ वस्ते । वस्से । अवसिष्ट ॥ षूङ् प्राणिगर्भविमोचने ॥ सूते । सुवाते । सुवते । सुषाम् ॥

भाषा—ईड् और ईशधातुसे परे लङ्के ध्वंवचनको इट्का आगम नहीं होय । उदाहरण—अ अ-ईड्-ध्वम् । इसमें ध्वंको इट् नहीं हुआ तब ' ष्टुभि'०, झसे जबा' इनकर रूप सिद्ध हुआ । ऐड्ढ्वम् । लिट्में ' कासादिप्रत्ययादाम्० इसकर गुरुमान्यादि होनेसे आम् प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । ईडांचक्रे । लुङ्में ऐडिष्ट । ईशधातु ऐश्वर्यअर्थमें वर्त्ते है । लट्के विषै छशष०, ष्टुभि०' इनकर सिद्ध हुआ । ईष्टे । द्विवचन बहुवचनमें । ईशाते । ईशते । सेप्रत्ययके विषै ' ईडीशिभ्यां० ' इसकर सिद्ध हुआ । ईशिषे । ईशिध्वे । लङ्के ध्वंवचनमें इट् न होनेपर छशष०, ष्टु०, झसे जबा' इनकर सिद्ध हुआ । ऐड्ढ्वम् । लिट्में । ईशांचक्रे । लुङ्में । ऐशिष्ट । आसधातु उपवेशन नाम स्थिति अर्थात् बैठनेमें वर्त्ते है । लट्में । आस्ते । ध्वेमें । ' से सलोप'

इसकर । आस्ते । लिट्में 'कासादि०' इसकर सिद्ध हुआ । आसांचक्रे । लुङ्में । आसिष्ट । वसधातु आच्छादन नाम ढकनेमे वर्त्ते है । लट्में । वस्ते । लिट्में । वका-रादि होनेसे एत्वपूर्वलोप नहीं हुआ तब सिद्ध हुआ । ववसे । लुङ्में । अवसिष्ट । षूङ् प्राणिगर्भविमोचन नाम प्रसव करनेमें वर्त्ते है । लट्में । सूते । द्विवचन बहुवचनमें 'नुधातोः' इसकर उव् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । सुवाते । सुवते । लोट्में । सूताम् । सुवाताम् । सुवताम् । उत्तमभागमे सू-ऐ, सू-आवहै, सू-आमहै, ऐसा स्थित है ॥

सुवो न गुणश्चतुर्षु ॥ २४८ ॥ सुवः, न, गुणः, चतुर्षु । चतुष्पद-मिदं सूत्रम् ॥ सुवै सुवावहै सुवामहै । सुषुवे । सविषीष्ट सोषीष्ट । सविता सोता ॥ शीङ् स्वप्ने ॥

भाषा—सूधातुको चार लकारोंके विषैं गुण नहीं होय गुणहेतुक प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—सू-ऐ । इत्यादिकमें गुणहेतुक प्रत्यय परे होनेपरभी गुण न होनेसे 'नुधातोः' इसकर सिद्ध हुआ । सुवै । सुवावहै । सुवामहै । लङ्में । असूत । लिट्में । सुषुवे । 'ऊदितो वा' इसकर सीष्टादिकमें विकल्पकरके इट् होनेसे सिद्ध हुआ । सविषीष्ट, सोषीष्ट । लुङ्में । असविष्ट, असोष्ट । शीङ्धातु स्वप्नअर्थमें वर्त्ते है । स्वप्न नाम आलस्य और निद्राका है ॥

शीङो गुणश्चतुर्षु ॥ २४९ ॥ शीङः, गुणः, चतुर्षु । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ शेते शयाते ॥

भाषा—शीङ्धातुको चार लकारोंके विषैं गुण होय । उदाहरण—शीङ्धातुको तेके विषैं गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । शेते । और द्विवचनमे गुण करनेपर 'ए अय्' इसकर सिद्ध हुआ । शयाते । और बहुवचनमे 'आतोऽन्तोऽदनतः' इस कर अन्तेके स्थानमें अते करनेपर गुण करनेसे प्रथम शे-अते ऐसा स्थित है ॥

शीङोऽतो रुट् ॥ २५० ॥ शीङः, अतः, रुट् । त्रिपदमिदं सूत्रम् शीङः परस्यातो रुडागमः ॥ शेरते । शेताम् । अशेत । अशेरत । शि-श्ये । अशयिष्ट ॥ इङ् अध्ययने ॥ अधिपूर्वः । अधीते अधीयाते । अधीयीत अधीयीयाताम् । अध्ययै । अध्यैत अध्यैयाताम् ॥

भाषा—शीङ्धातुसे परे अन्ते, अन्ताम् , अन्त इनके अत्को रुट्का आगम होय । आगममें उकार उच्चारणार्थ है । उदाहरण—शे-अते । इसमें अन्तेके अतको रुट् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । शेरते । लोट्में । शेताम् । लङ्में । अशेत ।

बहुवचनमें । अशेरत । लिट्में संयोगपूर्व अनेक स्वर होनेसे इकारको यकार कर नेपर रूप सिद्ध हुआ । शिश्ये । सीयुडादिकमें सेद होनेसे रूप सिद्ध हुआ । शायिषीष्ट । लुङ्में । अशयिष्ट । इङ्धातु अध्ययन नाम पढनेमें वर्ते है । अधिउपसर्ग पूर्व करनेसे इङ्धातुका येमें रूप सिद्ध हुआ । अधीते । द्विवचनमें ' नुधातोः ' इसकर इय् आदेश करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अधीयाते । और बहुवचनमें ' आतोऽन्योऽस्वनतः ' इसकर अन्तेको अते आदेश करनेपर ' नुधातो ' इसकर सिद्ध हुआ । अधीयते । लिङ्के प्रथमपुरुषके प्रथमवचनमें । अधीयीत । द्विवचनमें । अधीयीयाताम् । लोट्के उत्तमभागमें गुण करनेपर ' ए अय् ' इसकर सिद्ध हुआ । अध्ययै । लङ्में दो अट् करनेपर सिद्ध हुआ । अध्यैत । द्विवचनमें । अध्यैयाताम् । बहुवचनमें । अध्यैयत ॥

इङो णादौ गाङ् ॥ २९१ ॥ इङः, णादौ, गाङ् । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ अधिजगे । अध्येपीष्ट ॥

भाषा—इङ्धातुको गाङ् आदेश होय णमादि प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—इङ्धातुको गाङ् आदेश किया क्योंकि णवादिकमेंसे एप्रत्यय परे विद्यमान है तब ' द्विश्च, ह्रस्व', कुहोश्चु', आतोऽनपि ' इनकर सिद्ध हुआ । अधिजगे । और सीयुडादिकमें । अध्येपीष्ट । लुट्में । अध्येता । लृट्में । अध्येष्यते ॥

इङो वा गीर्लुङ्लृङोर्गुणाभावश्च ॥ २९२ ॥ इङः, वा, गी लुङ्लृङोः, गुणाभावः, च । षट्पदमिदं सूत्रम् ॥ अध्यगीष्यत अध्येष्यत । अध्यगीष्ट अध्यैष्ट ॥

भाषा—इङ्धातुको विकल्पकरके गी आदेश होय और गुण होवे नहीं लुङ् और लृङ् लकार पर हुए संते । उदाहरण—इङ्धातुको लृङ्के विषैं गी आदेश किया और गुण किया नहीं तब रूप सिद्ध हुआ । अध्यगीष्यत । और जहां गी आदेश नहीं हुआ वहां सिद्ध हुआ । अध्येष्यत । और लुङ्के विषैं जहां गी आदेश हुआ वहां सिद्ध हुआ । अध्यगीष्ट । और जहां गी आदेश नहीं हुआ वहां सिद्ध हुआ । अध्यैष्ट ॥ इत्यात्मनेपदं समाप्तिमगात् ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामसमर्थितभाषया भूषितं सर्वमप्यदादेरात्मनेपदम् ॥

द्विष अप्रीतौ ॥ द्वेष्टि द्विष्टः । द्वेष्टि । द्विड्ढि । अद्वेट् अद्वेड् अद्विष्टाम् अद्विषुः अद्विषन् । दिद्वेषिथ । द्विशीष्ट । अद्विक्षत् ॥ दुह प्रपूरणे ॥ दादेर्घः । तथोर्धः । दोग्धि दुग्ध दुहन्ति । धोक्षि । दुग्धे । दोग्धु ।

दुग्धि । दोहानि । अधोक् अधोग् । दुहोह । धुक्षीष्ट अधुक्षत । अदुग्ध । अधुक्षत । अधुक्षाताम् । अदुग्धाः अधुक्षथाः । अधुग्ध्वम् अधुक्षध्वम् । अदुह्वहि अधुक्षावहि । दिह उपचये ॥ देग्धि ॥ लिह आस्वादने ॥ लेढि लीढः ॥ ष्टुञ् स्तुतौ ॥ स्तौति स्तवीति, स्तुतः स्तुवीतः, स्तुवन्ति । स्तौषि, स्तवीषि । स्तुते स्तुवीते । स्तुवीध्व । अस्तोत् । तुष्टोथ । तुष्टुव तुष्टुम । स्तोषीष्ट ॥

भाषा–द्विष्धातु अप्रीति नाम शत्रुता अर्थमें वर्त्ते है द्विष् आदिक धातु अदादिगणमे उभयपद होते हैं । द्विष्धातुसे अप्का लुक् करनेके पश्चात् तिप्में 'ष्टुभिः०' इसकर सिद्ध हुआ । द्वेष्टि । द्विवचनमें । द्विष्टः । वहुवचनमें । द्विषन्ति । आत्मनेपदमे । द्विष्टे । सेवचनमें 'षढोः कस्से, क्ङि०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । द्विक्षे । ध्वेमे 'ष्टुभिः०, झवे जवाः' इनकर सिद्ध हुआ । द्विड्ढ्वे । लिङ्में परस्मैपदके विषैं द्विष्यात् । आत्मनेपदमे । द्विषीत । लोट्में । द्वेष्टु । आत्मनेपदमें । द्विष्टाम् । लङ्मे 'दिस्योर्हसात्, वावसाने' इनकर सिद्ध हुआ । अद्वेड्, अद्वेट् । 'आदन्ताद्विषोर्लङो न उस् वा' इसकर एक जगह अन्को उस करनेपर सिद्ध हुआ । अद्विषुः और जहां उस् नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । अद्विषन् । आत्मनेपदमे । अद्विष्ट । लिट्में । दिद्वेष । आत्मनेपदमें । दिद्विषे । लिङ्में । द्विष्यात् । आत्मनेपदमें 'षढोः कस्से, क्ङि०, सिस्योः' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । द्विक्षीष्ट । तादिक्में । द्वेष्टा । लुङ्में अनिट् होनेसे 'हशषान्तात्सक्' इसकर सिद्ध हुआ । अद्विक्षत् । आत्मनेपदमें । अद्विक्षत । द्विवचनमें 'आति सको लोपः स्वरे' इसकर सिद्ध हुआ । अद्विक्षाताम् । दुहधातु । प्रपूरण नाम दूहनेका है । दुहधातुसे तिप्रत्यय कर 'दादेर्घः' इसकर हकारको घकार किया फिर 'तथोर्धः' इसकर तिप्के तकारको धकार कर 'झवे जवाः' इसकर सिद्ध हुआ । दोग्धि । द्विवचनमे । दुग्धः । वहुवचनमे । दुहंति । सिप्में 'दादेर्घः' इसकर हकारको घकार करनेके पश्चात् 'आदिजवानां झभान्तस्य०' इसकर दुहके दकारको धकार किया फिर 'उपधाया लघोः' इसकर गुण किया फिर 'खसे चपा झसानाम्' इसकर ककार कर 'क्ङि० कषसंयोगे क्षः' इनकर सिद्ध हुआ । धोक्षि । द्विवचन वहुवचनमे । दुग्धः । दुग्ध । उत्तमभागमें दोह्मि दुह्वः । दुह्मः । आत्मनेपदमें । दुग्धे । द्विवचन वहुवचनमे । दुहाते । दुहते । लोट्में । दोग्धु । हिमें 'झसार्द्धिर्हेः' इसकर हिको धि करनेके पश्चात् 'दादेर्घः, झवे जवाः' इनकर सिद्ध हुआ । दुग्धि । उत्तमपुरुषमें । दोहानि । लङ्में 'दिस्योर्हसात्' इसकर

दिप्का लोप किया फिर ' दादेर्घ', आदिजबानां०, वावसाने ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अधोक्, अधोग् । लिट्में । दुदोह । सीयादिकमें अनिट् होनेसे ' दादेर्घ', आदिजबानां०, खसे च०, कि०, सिस्यो' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । धुक्षीष्ट । यादि कमें । दोग्धा । लुङ्में ' हशषान्तात्सक् ' इसकर सक् प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अधुक्षत् । आत्मनेपदमें तकार तवर्गसंबन्धी प्रत्ययोंके विषें विकल्प करके 'दुहदिहलिह०' इसकर सक्का लुक् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अदुग्ध । और जहां सक्का लुक् नहीं हुआ तहां । अधुक्षत । द्विवचनमें ' आति सको लोप० ' । अधुक्षाताम् । अधुक्षत । अदुग्धाः, अधुक्षथाः । अधुक्षाथाम् । ध्वमें सक्का लुक् करनेके पश्चात् ' दादेर्घ' आदिजबानां०, झबे जबाः ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अधुग्ध्वम् अधुक्षध्वम् । अधुक्षि । अदुह्वहि, अधुक्षावहि । अधुक्षामहि । दिहधातु उपचय नाम वृद्धिअर्थमें वर्त्ते है । दिहधातुके रूप समस्त लकारोंमें दुहधातुके समान जानने । लिहधातु आस्वादन अर्थमें वर्त्ते है । तिप्में ' हो०, तथोर्ध', ष्टुभि० ढि ढो लोपो दीर्घश्च इनकर सिद्ध हुआ । लेढि । द्विवचनमें ढकारका लोप कर पूर्वको दीर्घ करनेसे सिद्ध हुआ । लीढः । बहुवचनमें । लिहन्ति । सिप्में ' हो ढ', आदिजबा नां०, षढो कस्से किप्रत्यय स ' इनकर सिद्ध हुआ । लेक्षि । आत्मनेपदमें ' हो ढ', तथोर्ध', ष्टुभि०, ढि ढोलोपो दीर्घश्च' इनकर सिद्ध हुआ । लीढे । द्विवचन बहुवचनमें । लिहाते । लिहते । सेमें 'हो ढ' षढो०, कि०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । लिक्षे । द्विवचनमें । लिहाथे । बहुवचनमें ' हो ढः, ष्टु , ढि ढो०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । लीढ्वे । लिङ्में । लिह्यात्, लिहीत । लोट्में । लेढु । हिमें 'हुझल्भ्यो हेर्धिः, हो ढः, ष्टुभि० ढि ढो०' इनकर सिद्ध हुआ । लीढि । आत्मनेपदमें । लीढाम् । लङ्में । अलेट्, अलेड् । अलीढाम् । अलिहन् । आत्मनेपदमें । अलीढ । लिट्में । लिलेह । लिलिहे । लिङ्में । लिह्यात् । आत्मनेपदमें ' हो ढ', षढो कस्से, कि० सिस्यो' इन कर सिद्ध हुआ । लिक्षीष्ट । लुङ्में हशषान्तात्सक् ' इसकर सिद्ध हुआ । अलिक्ष त् । आत्मनेपदमें त और तवर्गके विषें 'दुहदिह०' इसकर जहां सक्का लुक् किया तहां 'हो ढः तथोर्धः, ष्टुभि०, ढि ढो०' इनकर सिद्ध हुआ । अलीढ । और जहां नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । अलिक्षाताम् । अलिक्षत । मध्यमभागमें थास्के विषें जहां सक्का लुक् हुआ तहां सिद्ध हुआ । अलीढाः । और जहां नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । अलिक्षथाः । द्विवचनमें । अलिक्षाथाम् । बहुवचनमें । अलीढ्वम्, अलिक्ष ध्वम् । उत्तमभागमें । अलिक्षि । अलिह्वहि अलिक्षावहि । अलिक्षामहि । ष्टुञ्धातु स्तुति करनेमें वर्त्ते है तिप्में एक जगह तो ' ओतौ इसकर सिद्ध हुआ । स्तौति । और एक जगह तुरुस्तुशम्योऽऽहलिरुचेभ्यो हलादीनां सार्वधातुकानामीड्वा ' इसकर ईट् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । स्तवीति । आत्मनेपदमें एक जगह ईट् करनेपर

"नुधातोः" इसकर सिद्ध हुआ। स्तुवीते। और एक जगह सिद्ध हुआ। स्तुते। लङ्पर्यन्त स्तुधातुके रूप तु गतिवृद्धिहिंसासु धातुके समान जानने लुङ्के परस्मैपदमें अ-स्तु-स्-ई-द् ऐसा स्थित है॥

स्तुसुधूञ्भ्यां पे सेरिट् ॥२९३॥ स्तुसुधूञाम्, पे, सेः, इट् । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ अस्तावीत् अस्तोष्ट ॥ ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि ॥

भाषा–स्तु, सु और धूञ्धातु इन्होंके परस्मैपदमें सिप्रत्ययको इट्का आगम होय और आत्मनेपदमें नहीं होय। उदाहरण–अ-स्तु-स्-ई-द् । इसमें स्तुधातुके परस्मैपदका सिप्रत्यय परे विद्यमान है इस कारण सिको इट् किया फिर 'धातोर्नामिनः' इसकर स्तुधातुको वृद्धि कर 'औ आव्, इट ईटि' इनकर सिद्ध हुआ। अस्तावीत्। और आत्मनेपदमे सिद्ध हुआ। अस्तोष्ट। ब्रूञ्धातु स्पष्ट कहनेमें वर्त्ते है॥

अबादौ पिति त्रिस्म ॥ २९४ ॥ अबादौ, पिति, त्रिस्म। त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ ब्रूञ् ईप्रत्ययोऽबादौ पिति त्रिस्म ॥ ब्रवीति ब्रूतः ब्रुवन्ति॥

भाषा–ब्रूञ्धातुसे ई प्रत्यय होय चार लकारोंके विषैं पकार इत्वाले तकार दकार सकार-मकारादि प्रत्यय-परे हुए संते। उदाहरण–ब्रूञ्धातुसे अप्का लुक् करनेके पश्चात् ईप्रत्यय किया क्योंकि चार लकारोंके विषैं संबन्ध रखनेवाला पित् तकारादि तिप्प्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप स्थित हुआ ब्रू-ई-ति फिर 'गुणः, ओ अव्' इनकर सिद्ध हुआ। ब्रवीति। द्विवचनमें। ब्रूतः। बहुवचनमें 'नुधातोः' इसकर उव् किया तब रूप सिद्ध हुआ। ब्रुवन्ति॥

ब्रुव आहश्च पञ्चानाम् ॥ २९५ ॥ ब्रुवः, आहः, च, पञ्चानाम्। चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ ब्रुवः परेषां पञ्चानां तिबादीनां णबादयः पंचादेशा वा स्युः। ब्रुव आहश्च ॥ आह आहतुः आहुः ॥

भाषा–ब्रूञ्धातुसे परे पांच तिप् आदिक प्रत्ययोंके पांच णप् आदिक प्रत्यय क्रमसे आदेश होंय विकल्पकरके और ब्रूञ्धातुको आह आदेश होय। उदाहरण–ब्रूञ्धातुसे परे तिप् प्रत्यय विद्यमान है इस कारण तिप्को एक जगह णप् आदेश किया और ब्रूञ्को आह आदेश किया तव रूप सिद्ध हुआ। आह। यहांपर वर्त्तमानार्थ णप् है इस कारण द्वित्व नहीं हुआ है। द्विवचनमें ब्रूञ्धातुको आह, तस्को अतुस् आदेश करनेपर सिद्ध हुआ। आहतुः। बहुवचनमें ब्रूको आह और अन्तिको उस् आदेश करनेपर सिद्ध हुआ। आहुः। और सिप्को थप् आदेश करनेपर रूप स्थित हुआ आह् थ ॥

तस्थे ॥ २५६ ॥ ते , थे । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ आहो ह्रस्य तस्थे परे ॥ आत्थ आहथुः । ब्रूते । ब्रवीतु । अब्रवीत् ॥

भाषा—आहधातुके हकारको तकार होय थकार परे हुए संते । उदाहरण—आह्‌थ इसमें आहके हकारको तकार किया क्योंकि परमें थकार विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । आत्थ । द्विवचनमें थस्‌के अथुस् आदेश करनेपर रूप सिद्ध हुआ । आहथुः । आत्मनेपदमें सिद्ध हुआ । ब्रूते । लिङ्‌में । ब्रूयात् । आत्मनेपदमें ' बुवातो ' इसकर सिद्ध हुआ । ब्रुवीत । लोट्‌में । ब्रवीतु । आत्मनेपदमें । ब्रूताम् । लङ्‌में । अब्रवीत् । आत्मनेपदमें । अब्रूत ॥

ब्रुवोऽनपि वच् ॥ २५७ ॥ ब्रुवः , अनपि, वच् । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ उवाच । ऊचे । अवोचत् अवोचत । आदाथ ई । अवोचेताम् अवोचन्त । अवोचथाः अवोचेथां अवोचध्वम् । अवोचे अवोचावहि अवोचामहि ॥ ऊर्णुञ् आच्छादने ॥

भाषा—ब्रूधातुको वच् आदेश होय जहां कि अप् होनेका विषय नहीं है । उदाहरण—ब्रूधातुको वच आदेश किया क्योंकि परे णप् प्रत्यय विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । उवाच । लिङ्‌में । उच्यात्, वक्षीष्ट । लुङ्‌में ' अस्यतिवक्तिख्यातिभ्यो० ' इस कर अप्रत्यय करनेपर ' वे वचेरुम् ' इसकर सिद्ध हुआ । अवोचत् । आत्मनेपदमें । अवोचत । द्विवचनमें ' आदाथ ईः ' इसकर सिद्ध हुआ । अवोचेताम् । बहुवचनमें । अवोचन्त । ऊर्णुञ्‌धातु आच्छादन नाम आवरण अर्थात् ढकनेमें वर्ते है । यह, धातु उकारान्त है ॥

ऊर्णोतेर्वा वृद्धिर्हसादौ पिति चतुर्षु ॥ २५८ ॥ ऊर्णोतेः, वा, वृद्धिः, हसादौ, पिति, चतुर्षु । षट्पदमिदं सूत्रम् ॥ ऊर्णौति ऊर्णोति ऊर्णुतः ऊर्णुवन्ति । ऊर्णुते । ऊर्णुयात् ऊर्णुवीत । ऊर्णौतु ऊर्णोतु । ऊर्णुहि ॥

भाषा—ऊर्णुधातुको विकल्पकरके वृद्धि होय चार लकारोंके विषैं हसादि पकार इत्‌वाला प्रत्यय परे हुए संते अर्थात् ' ओरौ ' इस सूत्रकी भांति विकल्पकरके होय । उदाहरण—ऊर्णुधातुको एक जगह वृद्धि की क्योंकि चार लकारोंमें संबन्ध रखनेवाला हसादि पित् तिप्‌प्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । ऊर्णौति । और जहां वृद्धि नहीं हुआ तहां ' गुण ' इसकर गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ ।

ऊर्णोति । द्विवचनमें । ऊर्णुतः । बहुवचनमे । ऊर्णुवन्ति । आत्मनेपदमें । ऊर्णुते । लिङ्में । ऊर्णुयात् । आत्मनेपदमे । ऊर्णुवीत । लोट्में । ऊर्णौतु, ऊर्णोतु । आत्मनेपदमें । ऊर्णुताम् ॥

ऊर्णोतेर्गुणो दिस्योः ॥२५९॥ ऊर्णोतेः, गुणः, दिस्योः । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ वृद्धेरपवादः ॥ और्णोत् और्णोः ॥

भाषा–दिप् और सिप् प्रत्यय पर हुए संते ऊर्णधातुको गुणही होय और वृद्धि नही होय । उदाहरण–लङ्के दिप् और सिप्वचनमे ऊर्णुधातुको गुण करनेपर रूप सिद्ध हुआ । और्णोत् और्णोः ॥

ऊर्णोतेराम्न ॥ २६० ॥ ऊर्णोतेः, आम्, न । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥

भाषा–ऊर्णुधातुसे आम् प्रत्यय नहीं होय । भाव यह है कि अनेक स्वर होनेसे 'कासादिप्रत्ययादाम्०' इसकर आम् प्रत्यय होना चाहिये सो नहीं हुआ ॥

स्वरादेः परः ॥ २६१ ॥ स्वरादेः, परः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥

स्वरादेर्धातोर्द्वितीयोऽवयवोऽद्विरुक्तः सस्वरो द्विर्भवति ॥

स्वरात्परास्संयोगादयो वनदरा द्विर्न ॥ २६२ ॥ स्वरात्, पराः, संयोगादयः वनदराः, द्विः, न । षट्पदमिदं सूत्रम् ॥ ऊर्णुनाव ऊर्णुनुवतुः ॥

भाषा–स्वर है आदिमें जिसके ऐसे धातुका नही द्वित्वको प्राप्त हुआ जो दूसरा अवयव है वह स्वरसहित द्वित्वको प्राप्त होय । भाव यह है कि अनेक स्वर स्वरादि धातुका आदि अवयव स्वर द्वित्वको नही प्राप्त हो किन्तु जो पूर्व किसी विधिकर नही द्वित्वको प्राप्त हुआ है ऐसा दूसरा अवयव स्वरसहित द्वित्वको प्राप्त होय द्वित्वहेतुक प्रत्यय पर हुए संते और स्वरसे परे संयोगादि वकार नकार दकार रकार द्वित्वको नहीं प्राप्त होय । भाव यह है कि यदि स्वरसे परे संयोगसंज्ञाके आदिमें जो वकार वा नकार वा दकार वा रकार अक्षर होवे तो वकार नकार दकार रकार अक्षरको द्वित्व नहीं होय किन्तु इन अक्षरोंसे परे जो अक्षर है वह स्वरसहित द्वित्व होय । उदाहरण–ऊर्णुधातुसे णप् किया तब 'द्विश्च' इसकर द्वित्वकी प्राप्ति होनेपर 'सस्वरादिर्द्विरद्विः' इसकर ऊको द्वित्व होना चाहिये था सो 'स्वरादेः परः' इसकर ऊको तो द्वित्व हुआ नहीं किन्तु द्वितीय अवयव रकारको स्वरसहित द्वित्व होना चाहिये सो रकारकोभी द्वित्व नहीं हुआ । क्योंकि रकार स्वरसे परे संयोगसंज्ञाके आदिमें विद्यमान है तब नकारको स्वरसहित द्वित्व किया तब रूप स्थित

हुआ। ऊर्णु-नु-स्य फिर 'धातोर्नामिनः, औ आव्' इसकर सिद्ध हुआ । ऊर्णुनाव । द्विवचन बहुवचनमें 'नानप्योर्वे' इसकर उव् करनेपर सिद्ध हुआ । ऊर्णुनुवतु । ऊर्णुनुवुः । थप्में ऊर्णु-नु-इ-थ ऐसा स्थित है ॥

ऊर्णोतेरिडादिप्रत्ययो वा ङित् ॥ २६३ ॥ ऊर्णोतेः, इडादि प्रत्यय, वा, ङित् । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ ऊर्णुनुविथ ऊर्णुनविथ । ऊर्णुविता ऊर्णविता ॥

भाषा—ऊर्णुधातुसे इट् है आदिमें जिसके ऐसा प्रत्यय ङित्संज्ञक विकल्पकरके होता है । उदाहरण—ऊर्णु-नु-इ-थ । इसमें ऊर्णुधातुसे इट् आदिवाला थप् प्रत्यय परे विद्यमान है इस कारण एक जगह ङित् होनेसे गुण नहीं हुआ, किन्तु 'नुधातो' इसकर उव् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । ऊर्णुनुविथ । और जहां ङित्संज्ञक नहीं है वहां गुण करनेसे सिद्ध हुआ । ऊर्णुनविथ । तादिकमें एक जगह ङित् होनेसे । ऊर्णुविता । और एक जगह । ऊर्णविता ॥

ऊर्णोतेर्वा वृद्धिस्सौ पे ॥ २६४ ॥ ऊर्णोते, वा, वृद्धि, सौ, पे । पञ्चपदमिदं सूत्रम् ॥ पक्षे वा गुणः ॥ और्णवीत् और्णाविष्टाम् । और्णवीत् और्णुवीत् और्णुविष्टाम् । और्णविष्ट और्णुविष्ट ॥ इत्यदादयः ॥

भाषा—ऊर्णुधातुको विकल्पकरके वृद्धि होय परस्मैपदके विषे सिप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—सिमें अ-अ-ऊर्णु-स् स्-ई-त् ऐसा स्थित है एक जगह वृद्धि करनेपर 'औ आव्, इट ईटि' इसकर रूप सिद्ध हुआ । और्णावीत् । द्विवचनमें । और्णाविष्टाम् । और जहां वृद्धि नहीं हुआ वहां एक जगह सिको इट् आदिवाला होनेसे ङित्संज्ञा होनेपर 'नुधातो' इसकर उव् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । और्णुवीत् । और जहां ङित्संज्ञा नहीं हुई वहां गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । और्णवीत् । और आत्मने पदमें जहां इडादि होनेसे सि ङित्संज्ञक हुआ वहां 'नुधातोः' इकसर उव् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । और्णुविष्ट । और जहां ङित्संज्ञक नहीं है वहां सिद्ध हुआ । और्णविष्ट ॥ इत्यास्ते ॥ मंगलसेनात्मजश्रीब्रह्मशिरामोत्कभाषया । चन्द्रिकोत्त रार्द्धेशुभादादिगण आशुभः ॥ १ ॥

हु दानादनयोः ॥

भाषा—हुधातु दान अर्थात् हवन करनेमें तथा अदन भोजन करनेमें वर्त्ते है ॥

ह्वादेर्द्विश्च ॥ २६५ ॥ ह्वादेः, द्विः, च । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ हु इत्यादेरुत्पन्नस्यापो लुक् धातोश्च द्वित्वम् ॥ जुहोति जुहुतः ॥

भाषा–हु आदिक धातुओंके अप्प्रत्ययका लुक् होय और अप्का लुक् हुए संते ह्वादि धातुको द्वित्व होय । उदाहरण–हुधातुसे तिप्के विषैं अप्का लुक् किया फिर लुक् होनेके पश्चात् धातुको द्वित्व किया फिर 'कुहोश्चुः' इसकर पूर्व हकारको झकार कर 'झपानां जबचपाः' इसकर जकार किया तदनन्तर 'गुणः' इसकर उकारको ओकार गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । जुहोति । द्विवचनमे । जुहुतः । वहुवचनमे जुहु-अन्ति ऐसा स्थित है ॥

द्वेः ॥ २६६ ॥ द्वेः । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ द्विरुक्तात्परस्यान्तोऽत् ॥ जुह्वति । जुहोषि जुहुथः जुहुथ । जुहोमि जुहुवः जुहुमः । जुहुयात् ।

भाषा–द्वित्वको प्राप्त हुए धातुसे परे अन्त्को अत् होय । उदाहरण–जुहु-अन्ति । इसमें द्वित्वको प्राप्त हुए हुधातुसे अन्ति प्रत्यय परे विद्यमान है इस कारण अन्तिके अन्त्के स्थानमें अत् करनेसे 'हुन्वोरेवापि' इसकर उकारको वकार कर रूप सिद्ध हुआ । जुह्वति । मध्यमपुरुषमें । जुहोषि । जुहुथः । जुहुथ । उत्तमपुरुषमें । जुहोमि । जुहुवः । जुहुमः । लिङ्में । जुहुयात् । लोट्में । जुहोतु, जुहुतात् । जुहुताम् । जुह्वतु । इम जुहु-हि ऐसा स्थित है ॥

जुहोतेर्हेर्धिः ॥ २६७ ॥ जुहोतेः, हेः, धिः । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ जुहुधि अजुहोत् ॥

भाषा–द्वित्वको प्राप्त हुए हुधातुसे परे हिको धि होय । उदाहरण–जुहि-हि । इसमें द्वित्वको प्राप्त हुए हुधातुसे हि प्रत्यय परे विद्यमान है इस कारण हिके स्थानमें धि करनेसे रूप सिद्ध हुआ । जुहुधि । उत्तमभागमें । जुहवानि । लङ्में । अजुहोत् । द्विवचनमें । अजुहुताम् । वहुवचनमें अजुहु-अन् ऐसा स्थित है ॥

अन उस् ॥ २६८ ॥ अनेः, उस् । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ द्विरुक्तादन उस् ॥ उसि गुणः । अजुहवुः । जुहाव ॥

भाषा–द्वित्वको प्राप्त हुए हु धातुसे परे अन्को उस् आदेश होय । उदाहरण-अजुहु-अन् । इसमें द्वित्वको प्राप्त हुए हुधातुसे परे अन्को उस् किया फिर 'उसि गुणः' इसकर नाम्यन्त हुधातुको गुण करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अजुहवुः । लिट्में 'द्विश्च' इत्यादि सूत्रकर सिद्ध हुआ । जुहाव । द्विवचनमें 'नानप्योर्वः' इसकर उव् करनेपर

रूप सिद्ध हुआ । जुहुवतः । यहाँमें 'स्वरान्तादस्वतम०' इसकर सिद्ध हुआ । जुहोथ, जुहविथ ॥

भीह्रीभृहुवामाम्वा स च लुग्वत् ॥२६९ ॥ भीह्रीभृहुवाम्, आम्, वा, सं, चं, लुग्वत् । पदच्छेदमिदं सूत्रम् ॥ जुहवांचकार । ये । हूयात् । होता । होष्यति । अहौषीत् ॥ ञिभी भये ॥ बिभेति ॥

भाषा—भी, ह्री, भृ और हु धातु इन चारोंसे विकल्पकरके आम् प्रत्यय होय लिट्के विषै और यह आम् प्रत्यय लुग्वत् होय । भाव यह है कि जिस प्रकार कि श्लुके हुए होनेपर जो कि द्वित्वादिक कार्य होता है तिसी प्रकार आम् प्रत्यय परे संतेमी धातुके द्वित्वादिक कार्य होय । उदाहरण—हुधातुसे लिट्के विषै आम प्रत्यय किया फिर आमको लुक् मानकर धातुको द्वित्व किया और उकारको 'गुण' इसकर गुण किया तब रूप सिद्ध हुआ । जुहवांचकार । आशीर्लिङ्में 'ये' इसकर दीर्घ करनेपर सिद्ध हुआ । हूयात् । वासिकमें अनिट् होनेसे सिद्ध हुआ । होता । लुङ्में 'धातोर्नामिन' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अहौषीत् । ञिभी धातु भयमें अर्थात् डरपनेमें वर्ते है इसमें ञिकार उचारणार्थ है । लट्में 'हाश्रीदिम' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । बिभेति । द्विवचनमें बिभी-तस् ऐसा स्थित है ॥

क्ङिति हसे भीह्राकोरिद्वा ॥ २७० ॥ क्ङिति, हसे, भीह्राकोः, इत्, वा । पदच्छेदमिदं सूत्रम् ॥ बिभीतः बिभितः बिभ्यति । बिभीयात् बिभियात् । बिभेतु बिभीतात् बिभितात् । अबिभयुः । बिभयांचकार । बिभाय । भीयात् ॥ ह्री लज्जायाम् ॥ जिह्रेति । अजिह्रयुः । जिह्रयांचकार जिह्राय । ह्रीयात् । ह्रेता । अह्रैषीत् ॥ पॄ पालनपूरणयोः ॥

भाषा—क्ङित्सञ्ज्ञक हस पर हुए संते भीधातु और हाक्धातुके स्वरको विकल्पकरके इकार होय । उदाहरण—बिभी-तस् । इसमें ङित्सञ्ज्ञक हस प्रत्याहारसंबन्धी तस् प्रत्यय परे विद्यमान है इस कारण भीधातुके ईकारको एक जगह इकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । बिभितः । और एक जगह । बिभीतः । बहुवचनमें 'ह्रे.' इसकर अन्तिके स्थानमें अति कर अनेक स्वर असंयोग पूर्व होनेसे इकारको यकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । बिभ्यति । लिङ्में । बिभियात्, बिभीयात् । लोट्में । बिभेतु । हिमें । बिभीहि, बिभिहि । लङ्में । अबिभेद् । अनुको उस् करनेपर गुण करनेसे सिद्ध हुआ । अबिभयुः । लिट्में एक जगह

'भीह्रीभृ०' इसकर आमु करनेपर सिद्ध हुआ । बिभयांचकार । और एक जगह सिद्ध हुआ । बिभाय । द्विवचनमें । बिभ्यतुः । लिङ्में । भीयात् । लुट्में अनिट् होनेसे सिद्ध हुआ । भेता । लुङ्में । अभैषीत् । ह्रीधातु लज्जा करनेमें वर्त्ते है । तिप्में । जिहेति । द्विवचनमें । जिह्रीतः । बहुवचनमें अति करनेपर 'नुधातोः' इसकर संयोगपूर्व होनेसे इय् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । जिह्रियति । लोट्में 'उत्त॰ मभागमें । जिहयाणि । लङ्में अन्के विषे । अजिह्रयुः । लिट्में 'भीह्रीभृ०' इसकर एक जगह । जिह्रयांचकार । और एक जगह । जिहाय । द्विवचनमें । जिह्रियतुः । लिङ्में । ह्रीयात् । लुङ्में । अह्रैषीत् । पृधातु पालन और पूर्तिअर्थमें वर्त्ते है ॥

अर्त्तिपिपर्त्योश्च ॥ २७१ ॥ ऋप्रोः, इः, पूर्वस्य । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ ऋप्रोः पूर्वस्यात इत् लुकि ॥ पिपर्ति ॥

भाषा—ऋधातु और पृधातुके पूर्वरूपके स्वरको इकार होय लुक् हुए संते । उदाहरण—पृधातुसे तिप्में लुक् होनेपर द्वित्व कर 'रः' इसकर प्रथम स्थित हुआ प-पृ ति फिर पूर्वरूपके अकारको इकार करनेपर 'गुणः' इसकर रूप सिद्ध हुआ । पिपर्ति । द्विवचनमें पि-पृ-तस् ऐसा स्थित है ॥

पोरुर् ॥ २७२ ॥ पोः, उर् । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ पवर्गात् वकाराच्च ऋत उर् अगुणवृद्धौ प्रत्यये ॥ य्वोर्विहसे । पिपूर्तः पिपुरति । पिपूर्यात् । पिपूर्ताम् । पिपुरतु । दिस्योर्हसात् । अपिपः । पपार पपरतुः । पपरिथ । पूर्यात् । परिता परीता । परिष्यति परीष्यति । अपारीत् ॥ पॄ पालनपूरणयोः । पिपर्ति पिपृतः पिप्रति । पिपृयात् । पिपर्तु पिपृतात् पिपृताम् पिप्रतु । पिपृहि पिपृतात् पिपृतम् पिपृत । पिपराणि पिपराव पिपराम । अपिपः अपिपृताम् । पपार पप्रतुः पप्रुः । पपर्थ । प्रियात् । पर्त्ता । परिष्यति । अपरिष्यत् । अपार्षीत् अपार्ष्टाम् ॥ ओहाक् त्यागे ॥ जहाति ॥

भाषा—पवर्ग और वकारसे उत्तर ऋकारको उर् होय जिसमें गुणवृद्धि नहीं होती है ऐसा प्रत्यय पर हुए सते । उदाहरण—पि-पृ-तस् । इसमें पकारसे परे ऋकार विद्यमान है इस कारण ऋकारके स्थानमें उर् किया क्योंकि गुणवृद्धिप्रतिषेधक ङित् तस् प्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप स्थित हुआ पि-पुर्-तस् फिर 'य्वोर्विहसे' इसकर सिद्ध हुआ । पिपूर्त्तः । बहुवचनमें अन्तिको अति कर 'पोरुर्'

इसकर सिद्ध हुआ । पिपुराति । लिङ्में । पिपूर्यात् । लोट्में । पिपर्तु । लङ्में गुण करनेके पश्चात् 'दिस्योर्हसात्' इसकर सिद्ध हुआ । अपिपः । अनूमें उस् करनेपर गुण करनेसे सिद्ध हुआ । अपिपरुः । लिट्में । पपार । द्विवचनमें 'ऋसंयोगाण्णादिरकित्' इसकर अतुस् अकित् होनेसे गुण करनेपर रूप सिद्ध हुआ । पपरतुः । थप्में सेट् होनेसे नित्य इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । पपरिथ । याद्यादिकमें पोरुर्' इसकर उर् कर य्वोर्विहसे 'इसकर सिद्ध हुआ । पूर्यात् । शेष लकारोंमें तृधातुके समान रूप जानने । पृधातु पालन और पूरण अर्थमें वर्ते है । पृधातुको ऋकारान्त तथा ॠकारान्त होनेसे 'ऋमोरि' पूर्वस्य' इस सूत्रमें ऋकारान्त तथा ॠकारान्त दोनों ग्रहण किये गये हैं । तिप्में 'हादेर्द्विश्च, ऋमोरि' पूर्वस्य, गुण' इनकर सिद्ध हुआ । पिपर्ति द्विवचनमें । पिपृतः । बहुवचनमें 'ढेः' इसकर अन्तिके स्थानमें अति कर सिद्ध हुआ । पिप्रति । लिङ्में । पिपृयात् । लोट्में । पिपर्तु । लङ्में गुण करनेके पश्चात् 'दिस्योर्हसात्' इसकर दिप्का लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अपिपः । लिट्में । पपार । द्विवचनमें । पप्रतुः । थप्में 'ऋदन्तात्यपो नेट्' इसकर थप्को इट् न करनेसे रूप सिद्ध हुआ । पपर्थ । लिङ्में 'यादादी ये' इसकर ऋकारको रिङ् करनेपर रूप स्थित हुआ । प्रियात् । वादिकमें अनिट् होनेसे सिद्ध हुआ । पर्ता । स्यप्में 'ऋतः स्यप' इसकर सिद्ध हुआ । परिष्यति । लुङ्में 'धातोर्नामिन' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अपार्षीत् । ओहाक् धातु त्यागनेमें वर्ते है । इसमें ओकार ककार इत् हैं । तिप्में लुक करनेके पश्चात् सिद्ध हुआ । जहाति ॥

द्वेस्तो ॥२७२॥ द्वे, तौ । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ द्विरुक्तस्य धातोरातो लोप ङिति स्वरे ईकारश्च ङिति हसे ॥ जहीत जहित जहति । जहातेर्यादावालोप । जह्यात् ॥

भाषा-द्वित्वको प्राप्त हुए धातुके आकारका लोप होय ङित्संज्ञक स्वर पर हुए सते और ङित्संज्ञक हस पर हुए सते द्वित्वको प्राप्त हुए धातुके आकारको ईकार होय । उदाहरण-द्वित्वको, प्राप्त हुए ओहाक्धातुसे परे ङित्संज्ञक हसरूप थी तस् प्रत्यय परे विद्यमान है इस कारण धातुके आकारको ईकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । जहीतः । और 'ङिति हसे, भीह्रात्योरिडा' इनकर इकार हुआ तहां सिद्ध हुआ । जहितः । बहुवचनमें अन्तिके स्थानमें अति कर धातुके आकारका लोप किया क्योंकि ङित्संज्ञक स्वर परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । जहति । जहाति अर्थात् हाक्धातुके आकारका लोप होय याद्यादिक पर हुए संते । उदाहरण-

यादादिमें हाक्धातुके आकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । जह्यात् । लोट्में । जहातु, जहीतात जहितात् । जहीताम्, जहीताम् । जहतु ॥

ईर्वा हौ ॥ २७४ ॥ ईः, वा, हौ । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ जहातेर्हौ परे इकार ईकारश्च वा ॥ जहिहि जहीहि जहाहि । अजहात् अजहिताम् अजहीताम् अजहुः । जहौ । दादेरे । हेयात् । अहासीत् ॥ ऋ गतौ ॥ असवर्णे स्वरे इय् । इयर्ति इयृतः इय्रति । इयृयात् । इयर्तु । ऐयः ऐयृताम् ऐयरुः । आर आरतुः आरुः । अत्यर्तिव्ययतीनामितीट् । आरिथ । आरत् ॥ सृ गतौ ॥ ससर्ति । ससर्थ । स्रियात् । असरत् ॥ इति परस्मैपदम् ॥

भाषा—जहाति अर्थात् ओहाक्धातुके आकारको हि पर हुए संते इकार और ईकार विकल्पकरके होय अर्थात् एक जगह इकार और एक जगह ईकार और एक जगह आकार होय । उदाहरण—ओहाक्धातुके आकारको एक जगह इकार और एक जगह ईकार और एक जगह आकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । जहिहि, जहीहि, जहाहि । उत्तमभागमे । जहानि । लङ्में । अजहात् । द्विवचनमे । अजहिताम्, अजहीताम् । बहुवचनमें अन्को उस् कर ' उस्यालोपः ' इसकर सिद्ध हुआ । अजहुः । लिट्मे ' आतो णब् डौ ' इसकर सिद्ध हुआ । जहौ । द्विवचनमें ' आतोऽनापि ' इसकर सिद्ध हुआ । जहतुः । थप्में । जहाथ, जहिथ । यादादिक्में ' दादेरे ' इसकर सिद्ध हुआ । हेयात् । तादिक्में । हाता । लुङ्में 'यमिरमिनमातां०' इसकर सिद्ध हुआ । अहासीत् । द्विवचनमें । अहासिष्टाम् । ऋधातु गतिअर्थमे वर्त्ते है । ' ह्वादेर्द्विश्च ' इसकर द्वित्व किया तब तिप्में रूप स्थित हुआ अ-ऋ-ति फिर ' ऋप्रोरिः पूर्वस्य ' इसकर पूर्वको इकार किया तब रूप स्थित हुआ इ-ऋ-ति फिर ' गुणः' इसकर रूप स्थित हुआ इ-अर्ति फिर ' असवर्णे स्वरे ' इसकर इय् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । इयर्ति । द्विवचनमें । इयृतः । बहुवचनमे । इय्रति । यादादिकमें । इयृयात् । लोट्में । इयृतात् । इयर्त्तु । लङ्मे गुण करनेके पश्चात् ' दिस्योर्हसात् ' इसकर दिप्का लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । ऐयः । द्विवचनमें । ऐयृताम् । बहुवचनमें अन्को उस् कर ' डसि गुणः ' इसकर गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । ऐयरुः । लिट् आदिकमे भ्वादिगणके ऋधातुके समान जानने । सृधातु गतिअर्थमें वर्त्ते है । सृधातुसे अप्का लुक् करनेके पश्चात् ' ह्वादेर्द्विश्च, रः, गुणः' इनकर सिद्ध हुआ । ससर्त्ति । द्विवचनमें । ससृतः । बहुवचनमें । सस्रति । लिङ्मे । स्रियात् । लोट्मे । ससर्त्तु । लङ्में । असरः । लिट् आ-

दिकर्म भ्वादिगणके सुधातुके समान रूप जानने ॥ इति पप्रक्रिया समाप्ता ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामेण भूषितम् । चन्द्रिकोत्तरार्द्धवृत्तौ भाषया ह्वादिपपदम् ॥

ओहाङ् गतौ ॥

भाषा—ओहाङ् धातु गतिअर्थमें वर्त्ते है । इसमें ओकार और ङकार इत्संज्ञक हैं ॥

भृञां लुकि ॥ २७५ ॥ भृञोम्, श्लौकि । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ डुभृञ्हाङ्माङ्मां पूर्वस्यात इत् लुकि ॥ जिहीते जिहाते जिहते । जहे । अहास्त ॥ माङ् माने ॥ मिमीते । ममे । अमास्त ॥ इत्यादि ॥

भाषा—डुभृञ् धातु और हाङ्धातु और माङ्धातु इनके पूर्वरूपके अकारको इकार हो लुक् हुए सते । उदाहरण—हाङ्धातुसे अपूका लुक् करनेके पश्चात् आत्मनेपदके तेवचनमें 'ह्वादेर्द्विः' इसकर द्वित्व किया फिर 'ह्रस्व' इसकर पूर्व हकारसंबन्धी आकारको अकार किया फिर 'भृञां लुकि' इसकर पूर्वके आकारको इकार किया फिर 'हेस्ती इसकर आकारको ईकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । जिहीते । द्विवचन बहुवचनमें 'हेस्ती' इसकर स्विस्वर परे होनेसे आकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । जिहाते । जिहते । लिट्में । जिहीत । लोट्में । जिहीताम् । लङ्में । अजिहीत । लिट्में । जहे । लिङ्में । हासीष्ट । लुङ्में । अहास्त । माङ्धातु मानअर्थमें वर्त्ते है । इसी प्रकार तेवचनमें । मिमीते । द्विवचनमें । मिमाते । बहुवचनमें ' द. ' इसकर अन्तेके स्थानमें अते आदेश करनेपर रूप सिद्ध हुआ । मिमते । इसी प्रकार हाङ्धातुके समान रूप समस्त लकारोंमें जानने ॥ इति आत्मनेपदप्रक्रिया ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामसमार्द्दितभाषया भूषितं सर्वं ह्वादेरात्मनेपदम्॥

डुभृञ् धारणपोषणयोः ॥ बिभर्ति बिभृतः बिभ्रति । बिभृयात् । बिभर्तु । अबिभः । बिभरांचकार । बभर्थ । बभृव बभृम । बभ्रे । बभृषे । भृषीष्ट । अभार्षीत् । अभृत ॥ डुदाञ् दाने ॥ ददाति ॥

भाषा—डुभृञ् धातु धारण और पोषण अर्थमें वर्त्ते है । इसमें डु और अकार इत्संज्ञक हैं । डुभृञ् धातुका लुक् करनेके पश्चात् ह्वादेर्द्विः, भृञां लुकि' इत्यादिक सूत्रों तिप्में रूप सिद्ध हुआ । बिभर्ति । आत्मनेपदमें । बिभृते । लिट्में । बिभृयात् । बिभ्रीत । लोट्में । बिभर्तु । बहुवचनमें । बिभ्रतु । आत्मनेपदमें । बिभृताम् । बहुवचनमें ' टे ' इसकर अन्ताम्के स्थानमें अताम् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । बिभ्रताम् । लङ्में गुण करनेके पश्चात् 'दिस्योर्हसात् इसकर सिद्ध हुआ ।

अबिभः । बहुवचनमें । अबिभरुः । लिट्में । बभार । बभ्रे । 'भीह्रीभृहुवाम्वा०' इसकर एक जगह । बिभरांचकार । बिभरांचक्रे । आत्मनेपदके सेवचनमें 'क्रादेर्णादेः' इसकर सिद्ध हुआ । बभृषे । ध्वेवचनमे 'क्रादेर्णादेः, नामिनोऽचतुर्णां धो ढः' इनकर रूप सिद्ध हुआ । बभृढ्वे । यादादिकमे 'यादादौ पे' इसकर सिद्ध हुआ । भ्रियात् । सीष्टादिकमें 'इः' इसकर गुण न होनेसे सिद्ध हुआ । भृषीष्ट । तादिकमें । भर्त्ता । ऌट्में 'हनृतः०' इसकर इट् करनेसे सिद्ध हुआ । भरिष्यति । भरिष्यते । लुङ्में परस्मैपदमें 'धातोर्नामिनः' इसकर सिद्ध हुआ । अभार्षीत् । और आत्मनेपदमें 'उः, लोपो ह्रस्वात्' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अभृत । द्विवचनमें । अभृषाताम् । डुदाञ्धातु दान करनेमे वर्त्ते है । इसमें डु और ञकार इत्संज्ञक हैं । तिप्में 'ह्वादेर्द्विश्च, ह्रस्वः' इनकर सिद्ध हुआ । ददाति । द्विवचनमे ददा-तस् ऐसा स्थित है ॥

दादेः ॥ २७६ ॥ दादेः । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ द्विरुक्तानामपि-दाधामातो लोपो ङिति ॥ दत्तः ददति । दत्ते । ददातु ॥

भाषा—द्वित्वको प्राप्त हुआ ऐसा यकार इत्वर्जित दाधातु और धाधातु इनके आकारका लोप होय ङित्संज्ञक प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—ददा-तस् । इसमें दाधातुके आकारका लोप किया क्योंकि ङित्संज्ञक तस् प्रत्यय परे विद्यमान है तब 'खसे चपा झसानाम्' इसकर दकारको तकार कर रूप सिद्ध हुआ । दत्तः । बहुवचनमें 'द्वेः' इसकर अन्तिके स्थानमें अति कर 'दादे०' इसकर दाधातुके आकारका लोप कर रूप सिद्ध हुआ । ददति । आत्मनेपदमें । दत्ते । लिङ्मे । दद्यात् । ददीत । लोट्में । ददातु । द्विवचनमें । दत्ताम् । बहुवचनमें । ददतु । हिके विषें ददा-हि ऐसा स्थित है ॥

दां हौ ॥ २७७ ॥ दाम्, हौ । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ अपिद्दाधामेत्वं पूर्वस्य च लोपो हौ ॥ देहि । अददात् । ददौ । ददिथ ददाथ । देयात् । अदात् । अदित अदिषाताम् ॥ डुधाञ् धारणपोषणयोः ॥ दधाति ॥

भाषा—नहीं है पकार इत् जिसका ऐसा दाधातु और धाधातु इनके आकारको एकार और पूर्वका लोप होय हिप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—ददा-हि । इसमें दाधातुके आकारको एकार और पूर्वका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । देहि । लङ्में । अददात् । द्विवचनमें । अदत्ताम् । बहुवचनमें अन्को उस् कर 'उस्यालोपः' इसकर सिद्ध हुआ । अददुः । लिट्में 'आतो णव् डौ' इसकर सिद्ध हुआ ।

ददौ । द्विवचनम । ' आतोऽनापि ' इसकर सिद्ध हुआ । ददतु । थपमें ' स्वरान्ता-त्स्वतस्य० ' इसकर विकल्प कर इट् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । ददाथ, ददिथ । आत्मनेपदमें । ददे । लिङ्के परस्मैपदमें ' दादेरे ' इसकर सिद्ध हुआ । देयात् । सीष्यादिकमें अनिट् होनेसे सिद्ध हुआ । दासीष्ट । लुङ्में ' दादे' पे ' इसकर परस्मैपदमें सिका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अदात् । द्विवचनमें । अदाताम् । बहुवचनमें ' स्याविद्', उस्यालोप ' इनकर सिद्ध हुआ । अदुः । आत्मनेपदके विषै ' अपिदाधास्थामित्त्वेर्डित्स्वमावि ' इसकर दाधातुके आकारका इकार और सिको ङित्संज्ञा करि तब ' लोपो ह्रस्वात् ' इसकर सिका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अदित । द्विवचनमें । अदिषाताम् । बहुवचनमें सिका लोप करनेके पश्चात् ' नामिनोऽपगुणी घो द ' इसकर सिद्ध हुआ । अदिषत । डुधाञ् धातु धारण करनेमें तथा पोषण करनेमें वर्ते है । तिपमें । दधाति । तसमें ' दार्धेर्द्वित्व, ह्रस्व', दादे'० ' इनकर रूप स्थित हुआ दध्-तस् ॥

पूर्वस्य ङिति झसे ध ॥२७८॥ पूर्वस्य, ङिति, झसे, धे । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ धाञ्पूर्वस्य दकारस्य धो भवति ङिति झसे परे ॥ धत्त दधति । धत्ते । धेहि । अधात् । धेयात् । अधित । अधिषाताम् ॥ णिजिर् शौचपोषणयोः ॥

भाषा–धाञ्धातुके पूर्व दकारको धकार होय ङित्संज्ञक झसप्रत्याहार पर हुए संते । उदाहरण–दध्-तस् । इसमें धाञ्धातुके पूर्व दकारको धकार किया क्योंकि ङित्संज्ञक झसप्रत्याहारसंबन्धी तस् प्रत्यय परे विद्यमान है तब ' झसे चपा झसानाम् ' इसकर सिद्ध हुआ । धत्तः । बहुवचनमें । दधति । आत्मनेपदमें । धत्ते । लिङ्में । दध्यात् । दधीत । लोट्में । दधातु, धत्तात् । द्विवचन बहुवचनमें । धत्ताम् । दधतु । हिमें 'दां ही' । धेहि । उत्तमभागमें । दधानि । दधाम । दधाम । लङ्में । अदधात् । अन्में । अदधुः । आत्मनेपदमें । अधत्त । लिङ् आदिकमें डुदाञ्धातुके समान रूप जानने । णिजिर्धातु शुद्धि तथा पुष्टि करनेमें वर्त्ते है । णिजिर्धातुको ' आदेः ष्णः स्नः ' इसकर रूप हुआ निजि इस धातुका इर् इत्संज्ञक है । ' दादेर्द्वित्व ' इसकर प्रथम रूप स्थित हुआ निनिज् ति ॥

निजां गुण ॥ २७९॥ निजाम्, गुणं । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ णिजिविजिविषां पूर्वस्य गुणो लुकि ॥ नेनेक्ति नेनिक्तः नेनिजति। नेनेक्षि । नेनिक्ते । नेनिज्यात् । नेनेक्तु । नेनिग्धि ॥

भाषा–णिजू विजि और विष्लृ धातु इन्होंके पूर्वरूपको गुण होय लुक् हुए संते । उदाहरण–नि-निज्-ति । इसमें निजधातुके पूर्वरूप निको गुण किया क्योंकि ह्वादि होनेसे अपृक्ता लुक् हुआ है तब ‘ उपधाया लघोः ’ इसकर रूप सिद्ध हुआ । नेनेक्ति । द्विवचनमे । नेनिक्तः । बहुवचनमें । नेनिजति । आत्मनेपदमे । नेनिक्ते । लिङ्में । नेनिज्यात्, नेनिजीत । लोट्मे । नेनक्तु, नेनिक्तात् । नेनिक्ताम् । नेनिजतु । हिमें ‘ झलाद्धिर्हेः ’ इसकर हिको धि किया । फिर ‘ चो कुः ’ इसकर सिद्ध हुआ । नेनिग्धि । उत्तमभागमे ने-निज्-आनि ऐसा स्थित है ॥

द्वेः स्वरेऽपि नोपधाया गुणः ॥ २८० ॥ द्वेः, स्वरे, अपि, न, उपधायाः, गुणः । षट्पदमिदं सूत्रम् ॥ द्विरुक्तस्य धातोः पिति विषये स्वरे परे उपधाया गुणो न ॥ नेनिजानि । अनेनेक् अनेनेग् । निनिजिषे । निनेज निनिजे । निजीष्ट । अनिजत् । अनैक्षीत् । अनैक्ताम् । अनिक्त ॥ विजिर् पृथग्भावे ॥ वेवेक्ति । विवेजिथ विक्षीष्ट । अविजत् । अवैक्षीत् । अविक्त ॥ विष्लृ व्याप्तौ ॥ वेवेष्टि । विविषीध्वे । विक्षीष्ट । अविषत् । तनि हशषान्तात्सक् । अविक्षत् । अविक्षत ॥ आति सको लोपः स्वरे । अविक्षाताम् अविक्षन्त ॥ इत्युभयपदप्रक्रिया ॥ इति जुहोत्यादयः ॥

भाषा–द्वित्वको प्राप्त हुए धातुके उपधाको गुण नहीं होय पकार है इत् जिसका ऐसा स्वरादि प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–ने-निज्-आनि । इसमे निज धातुसे परे पित् स्वरादि प्रत्यय विद्यमान है इस कारण उपधाभूत इकारको गुण नहीं हुआ तब रूप सिद्ध हुआ । नेनिजानि । द्विवचन बहुवचनमें । नेनिजाव । नेनिजाम । आत्मनेपदमें । नेनिक्ताम् । उत्तमभागमें । नेनिजै । नेनिजावहै । नेनिजामहै । लङ्मे ‘ दिस्योर्हसात्, चोः कुः, वावसाने ’ इनकर सिद्ध हुआ । अनेनेक्, अनेनेग् । अमिप्में । अनेनिजम् । लिट्मे । निनेज । द्विवचनमें । निनिजतुः । आत्मनेपदमें । निनिजे । यादादिकमें । निज्यात् । सीष्टादिकमे ‘ चोः कुः, खसेः चपा झसानाम्, सिस्योः ’ इत्यादिकर सिद्ध हुआ । निक्षीष्ट । तादिकमें । नेक्ता । लुङ्के परस्मैपदमे ‘ इरितो वा ’ इसकर एक जगह ङप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अनिजत् । और सिके विषैं ‘ चोः कुः, खसे०, क्षि०, अनिटो नामिवतः ’ इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अनैक्षीत् । द्विवचनमे ‘ झसात् ’ इसकर सिका लोप करनेके पश्चात् ‘ चोः कुः, खसे०, अनिटो नामि० ’ इनकर सिद्ध हुआ । अनैक्ताम् ।

आत्मनेपदमें ' सिस्यो ' इसकर गुण न करनेपर ' क्सात्, चो कुः, ससे० ' इन-कर सिद्ध हुआ । अविक्त । द्विवचनमें ' सिस्यो कुः, ससे षु०, क्रि० ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अविक्षाताम् । विज्लिर्धातु । पृथक् होनेम वर्त्ते है । इसी प्रकार समस्त लकारोंमें विजधातुके रूप जानने । विष्लधातु व्याप्तिअर्थमें वर्त्ते है । विषधातुके तिपूर्में ' ह्रादेर्द्विश्च, निजां गुण , ह्रामि' ष्ट्र, उपधाया लघो ' इनकर सिद्ध हुआ । वेवेष्टि । द्विवचन । बहुवचनमें वेविष्ट । वेविषति । आत्मनेपदमें । वेविष्टे । लिङ्में । वेविष्यात् वेविषीत । लोट्में वेवेष्टु । उत्तममागमें ' ह्रेः स्वरेऽपि, मोपधाया गुण ' इसकर । वेविषाणि । लङ्में । अवेवेट् अवेवेड् । अवेविष्ट । विवेष । विविषे । लिङ्में । विष्यात् । सीयादिमें ' सिस्यो', षढो' कस्से, क्रि० ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । विक्षीष्ट । लुङ्में ' ल्दित्पुषादेङ ' इसकर परस्मैपदमें अप्रत्यय करने पर रूप सिद्ध हुआ । अविषत् । और आत्मनेपदमें ' इगुपान्तात्सक् ' इसकर सक् प्रत्यय करनेपर ' षढो' कस्से, क्रि० ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अविक्षत । द्विवचनमें ' आति सको लोप स्वरे ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ अविक्षाताम् ॥ इत्यादि ॥ इति ह्रादिगण ॥ मंगलसेनारामअश्रीकविशिरोमणिभाषया । चन्द्रिकोत्तरार्द्धस्थो ह्रादिधातुगणो कृतः ॥ १ ॥

दिवु क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु ॥

भाषा—दिवुधातु क्रीडा करनेमें, विजिगीषा नाम जीतनेकी इच्छामें, व्यवहारमें, द्युति प्रकाशमें, स्तुतिमें, आनन्द करनेमें, मद करनेमें, शयन करनेमें, कान्ति नाम इच्छाअर्थमें और गतिअर्थमें वर्त्ते है ॥

दिवादेर्यः ॥ २८१॥ दिवो देः, यं । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ कर्त्तरि चतुर्षु ॥ अपोऽपवादः । य्वोर्विहसे । दीव्यति । दीव्येत् । दिदेव । दीव्यात् । अदेवीत् ॥ षिवु तन्तुसन्ताने ॥ सीव्यति । सिवादे रड्व्यवाये वा प । न्यषेवीत् न्यसेवीत् ॥ ष्ठिवु गतिशोषणयोः ॥ सीव्यति । सिषेव ॥ ष्ठिवु निरसने ॥ ष्ठीव्यति ॥ ष्णुसु अदनादानदर्शनेषु ॥ सुष्णोस ॥ ष्णसु निरसने ॥ ष्णस्यति ॥ क्नसु कौटिल्ये दीप्तौ च ॥ चक्नसिथ । अक्नासीत् अक्नसीत् ॥ व्युष प्लुष दाहे ॥ वुव्योष ॥ नृती गात्रविक्षेपे ॥ नृत्यति । ननर्त ॥

भाषा—दिव आदिक धातुसे यप्रत्यय होय कर्त्ताअर्थमें चार लकारोंके विषे

और अपूका अपवाद होय । उदाहरण—दिव्धातुसे अपूके स्थानमें यप्रत्यय किया क्योंकि कर्त्रर्थे चार लकारोंमेंसे परे तिप् प्रत्यय विद्यमान है तब रूप स्थित हुआ दिव्-य-ति फिर ' र्वोर्विहसे ' इसकर इकारको दीर्घ करनेपर रूप सिद्ध हुआ। दीव्यति । द्विवचन बहुवचनमें । दीव्यतः । दीव्यन्ति । लिङ्में । दीव्येत् । लोट्में दीव्यतु । लङ्में । अदीव्यत् । लिट्में । दिदेव । लिङ्मे । दीव्यात् । लुट्में । देविता । लृट्लङ्में । देविष्यति । अदेविष्यत् । लुङ्में । अदेवीत् । षिवुधातु तन्तुओंके विस्तार करनेमें वर्त्ते है । षिवुधातुके रूपभी समस्त लकारोंके विषैं दिवधातुके समान जानने । सिव् आदिक धातुओंके सकारको अट् कर अन्तर हुए संते विकल्पकरके षकार होय । भाव यह है कि प्रादिक उपसर्गमे स्थित हुए कवर्ग इलप्रत्याहाररूप निमित्तसे सिवादि धातुके सकारको षकार विकल्पकरके होय जो निमित्त और सकारके मध्यमें अट् होवे तो । उदाहरण—नि-अ-सेवीत् । इसमें निउपसर्गमें स्थित हुए इल्प्रत्याहारसंबन्धी इकार निमित्त और सिवधातुके सकारके मध्यमें अट् विद्यमान है इस कारण सकारके स्थानमें विकल्पकरके सकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । न्यषेवीत्, न्यसेवीत् । सिवुधातु गति और शोषणअर्थमे वर्त्ते है । ष्ठिवुधातु निरसन नाम थूकनेमे वर्त्ते है । ' नामधातुष्वष्कष्ठिवां सत्वं न ' इसकर सकार न होनेसे सिद्ध हुआ । ष्ठीव्यति । चार लकारोंमे दिव्के समान जानना । और लिट् आदिकमे भ्वादिगणके ष्ठिवुधातुके समान जानना । ष्णुसुधातु भोजन तथा ग्रहण और दर्शन करनेमें वर्त्ते है । ' आदेः ष्णः स्नः ' इसकर षकारको सकार कर ' दिवादेर्यः ' इसकर सिद्ध हुआ । स्नुस्यति । ट्मे । सुष्णोस । ष्णसुधातुभी निरसन अर्थमें वर्त्ते है । ' आदेः ष्णः स्नः, दिवादेर्यः ' इनकर सिद्ध हुआ । स्नस्यति । क्नसुधातु कुटिलता तथा प्रकाशअर्थमें वर्त्ते है । क्नस्यति । थप्में । चक्नसिथ । लुङ्मे । ' अतो हसादेर्लघोर्वा० ' इसकर । अक्नासीत्, अक्नसीत् । व्युषु और प्लुषुधातु दाह नाम जलानेमें वर्त्ते हैं । व्युष्यति । लिट्मे । वुव्योष । नृतीधातु गात्रप्रक्षेप अर्थात् नृत्य करनेमें वर्त्ते है । इसमें ईकार इत्संज्ञक है । ' दिवादेर्यः ' इसकर यप्रत्यय करनेसे पश्चात् सिद्ध हुआ । नृत्यति । लिट्मे । ननर्त्त । लुट्में । नर्त्तिता ॥

नृततृदक्ष्वृदच्वृतकृतृभ्योऽसेस्सादेरिड्वा ॥ २८२ ॥ नृत—कृतृभ्यः, असेः, सादेः, इट्, वा । पंचपदमिदं सूत्रम् ॥ नर्तिष्यति नर्त्स्यति । अनर्तीत् ॥ त्रसी उद्वेगे ॥ भ्राशम्लाशेति वा यः । त्रस्यति त्रसति । तत्रास तत्रसतुः ॥ कुथ पूतीभावे ॥ कुथ्यति । चुकोथ । चुकोथिथ ॥ पुथ हिंसायाम् ॥ पुथ्यति । अपोथीत् ॥ गुध परिवे-

ष्टने ॥ गुध्यति । अगोधीत् ॥ क्षिप प्रेरणे ॥ क्षिप्यति क्षेप्ता । अक्षैप्सीत् ॥ पुष्प विकसने ॥ पुष्प्यति । पुपुष्प ॥ तिम तीम ष्टिम ष्टीम आर्द्रीभावे ॥ तिम्यति । तीम्यति । तितेम । तितीम ॥ व्रीड लज्जायाम् ॥ व्रीड्यति । विव्रीड ॥ इष गतौ ॥ इष्यति । इयेष इषतुः । एषिता एष्टा । ऐषीत् ॥ षह षुह तृप्तौ ॥ सह्यति । ससाह सेहतुः सेहुः । असहीत् । सुह्यति ॥ जॄष् झॄष वयोहानौ ॥ जीर्यति । जजार जजरतुः जेरतुः । जीर्यात् । जरिता जरीता । ऋच्छत्यॄतामिति गुणः । अजरत् । अजारीत् । झीर्यति । जझरतुः । अझारीत् ॥ शो तनूकरणे ॥

भाषा—वृत, वृद, शृध् स्यन्द् और कृपधातु इनसे परे सिमप्रत्ययसे भिन्न जो सकारादि प्रत्यय है तिनको विकल्प करके इट् आगम होय । उदाहरण—वृतधातुसे सकारादि स्यप् प्रत्ययको विकल्पकरके इट् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । नर्तिष्यति, नर्त्स्यति । और लुङ्में नित्यही इट् होय क्योंकि सिमप्रत्ययको सूत्रमें त्याग दिया है तब रूप सिद्ध हुआ । अनर्तीत् । त्रसधातु उद्वेग नाम त्रासको प्राप्त होनेमें वर्त्ते है । 'भ्राशभ्लाशभ्रमुक्रमुक्लमुत्रसि०' इसकर विकल्पकरके यप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । त्रसति । लिट्में । तत्रास । द्विवचनमें । तत्रसतुः । और एक जगह 'फणराजृभ्राजभ्लाजस्यमुस्वन्‌ग्रप्रभुत्रसामेत्वपूर्वलोपौ वा' इसकर पूर्वलोप और एकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । त्रेसतुः । त्रेसिथ । आदिकर्में । त्रसिता । लुङ्में 'अतो हलादेर्लघोर्वा०' इसकर सिद्ध हुआ । अत्रासीत्, अत्रसीत् । कुपधातु पवित्र होनेमें वर्त्ते है । लट्में । कुप्यति । लिट्में । चुकोप । लुङ्में । अकोपीत् । पुष हिंसा अर्थमें । वर्त्ते लट्में । पुष्यति । लिट्में पुपोष । लुङ्में । अपोषीत् । गुधधातु परिवेष्टन नाम लपेटनेमें वर्त्ते है । लट्में । गुध्यति । लिट्में । जुगोध । लुङ्में । अगोधीत् । क्षिपधातु प्रेरणा करनेमें वर्त्ते है । लट्में क्षिप्यति । लिट्में । द्वित्व करनेपर 'कुहोश्चु' इसकर सिद्ध हुआ । चिक्षेप । लुट्में अनिट् होनेसे सिद्ध हुआ । क्षेप्ता । लुङ्में अनिटो नामिवतः' इसकर वृद्धि करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अक्षैप्सीत् । द्विवचनमें अक्षैप्ताम् इसकर सिद्ध हुआ । अक्षैप्सुः । पुष्पधातु विकसन नाम प्रफुल्लित होनेमें वर्त्ते है । लट्में । पुष्प्यति । लिट्में । पुपुष्प । लुङ्में । अपुष्पीत् । तिम्, तीम् ष्टिम् और ष्टीम् धातु आर्द्रीभाव नाम गीला होनेमें वर्त्ते हैं । लट्में । तिम्यति । तीम्यति । स्तिम्यति । स्तीम्यति । लिट्में । तितेम । तितीम । तिष्टेम । तिष्टीम । लुङ्में । अतेमीत् । अतीमीत् । अस्तेमीत् । अस्तीमीत् ।

व्रीडधातु लज्जाअर्थमे वर्त्ते है । कोई आचार्य प्रेरणअर्थमे कहते है । लट्मे । व्रीडच-ति । लिट्मे । विव्रीड । लुङ्मे । अव्रीडीत् । इषधातु गति अर्थमे वर्त्ते है । लट्में इष्यति । लिट्मे । द्वित्व और गुण करनेके पश्चात् ' असवर्णे स्वरे० ' इसकर सिद्ध हुआ । इयेष । द्विवचनमे द्वित्व करनेके पश्चात् ' सवर्णे दीर्घः सह ' इसकर सिद्ध हुआ । ईषतुः । तादिकमे 'इषुसहलुभारिषरुषामनपि तस्येड्वा ' इसकर एक जगह । एष्टा । और एक जगह । एषिता । लुङ्मे । ऐषीत् । षह षुह धातु तृप्तिअर्थमे वर्त्ते हैं । ' आदेः ष्णः स्नः ' इसकर सकार करनेके पश्चात् लट्मे । सह्यति । सुह्यति । लिट्में । ससाह । द्विवचनमे ' लोपः पचां० ' इसकर सिद्ध हुआ । सेहतुः । और षुहका लिट्के विषैं रूप हुआ । सुषोह । तादिकमें ' इषुसहलुभ० ' इसकर विकल्प-करके इट् नहीं होय किन्तु नित्यही होय क्योंकि अपूकर निर्देश होनेसे सह मर्षणे धातुकाही ग्रहण है तव रूप हुआ । सहिता । सोहिता । लुङ्मे ' ह्मन्तक्षणश्वस्-जागृ० ' इसकर सिद्ध हुआ । असहीत् । असोहीत । जपिर् झॄष् धातु वयोहानि नाम आयुकी हानि अर्थात् जीर्णतामे वर्त्ते है । जपिर्मे षकार और इर् इत्संज्ञक हैं और झॄषूमे षकार इत्संज्ञक है । ' दिवादेर्यः ' इसकर यप्रत्यय करनेके पश्चात् ' ऋत इर्, य्वोर्विहसे' इनकर सिद्ध हुआ । जीर्यति । झीर्यति । लिट्मे । जजार । द्विवचनमे ' फणराजॄभ्राशृभ्लाशॄ० ' इसकर एक जगह एत्वपूर्वलोप करनेपर सिद्ध हुआ । जेरतुः । एक जगह । जजरतुः । लिट्में झॄषूधातुका रूप हुआ । जझार । ज-झरतुः । तादिकमे ' वृङ्वृञृॠदन्तानां वा ' इसकर । जरिता, जरीता । झरिता, झरीता । स्यपूमें । जरिष्यति, जरीष्यति, झरिष्यति, झरीष्यति । लुङ्मे एक ज-गह ' इरितो वा, ऋवर्णदृशोर्ङे गुणः ' इनकर सिद्ध हुआ । अजरत् । सिमें ' धा-तोर्नामिनः ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अजारीत् । द्विवचनमे । अजारिष्टाम् । झॄष-धातुका रूप सिद्ध हुआ । अझारीत् । शोधातु तनूकरण नाम सूक्ष्म करनेमें अर्थात् छीलनेमें वर्त्ते है ॥

य्योः ॥ २८३ ॥ यि, ओः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ यप्रत्यये परे धातोरोतो लोपः ॥ श्यति । शशौ । शाता । अशात् । अशासीत् ॥ छो छेदने ॥ छ्यति । अच्छात् । अच्छासीत् ॥ षो अन्तकर्मणि ॥ स्यति । सेयात् । असात् । असासीत् ॥ दोऽवखंडने ॥ द्यति । देयात् । अदात् ॥ राध साध संसिद्धौ ॥

भाषा–धातुके ओकारका लोप होय दिवादिगणका यप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–शोधातुसे ' दिवादेर्यः ' इसकर यप्रत्यय करनेपर धातुके ओकारका लोप

करनेसे रूप सिद्ध हुआ । शयति । लिट्में । शशौ । लिङ्में । शायात् । लुङ्में । शाता लृङ्में ' शाच्छासाह्वाव्यावेटां वा ' इसकर विकल्पकरके सि किया सो जहां सि नहीं हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । अशात् । द्विवचनमें । अशाताम् । बहुवचनमें । अशुः । और जहां सिमत्यय हुआ तहां ' यमिरमिनमातां सक्० ' इसकर सिद्ध हुआ । अशासीत् । द्विवचनमें । अशासिष्टाम् । छोधातु छेदनअर्थमें वर्त्ते है । शोधातुके समानही समस्त लकारोंमें छोधातुके रूप जानने । षोधातु अन्तकर्म नाम नाश करनेमें वर्त्ते है । ' धात्वादेः षः सः ' इसकर सकार करनेके पश्चात् ' श्योः ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । स्यति । लिट्में । ससौ । लिङ्में ' दादेरे ' इसकर सिद्ध हुआ । सेयात् । लुङ्में एक जगह ' दादेः पे ' इसकर सिद्ध हुआ । असात् । और एक जगह ' यमिरमिनमातां० ' इसकर सिद्ध हुआ । असासीत् । दोधातु अवखण्डनअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । द्यति । लिट्में । ददौ । लिङ्में ' दादेरे' इसकर सिद्ध हुआ । देयात् । लुङ्में ' दादेः पे ' इसकर सिद्ध हुआ । अदात् । राध और साध यह दोनों धातु संसिद्धिमें वर्त्ते हैं ॥

राधोऽकर्मकादेव य ॥ २८४ ॥ राधेः, अकर्मकात्, एव, ये । चतुष्पदमिदं सुगमम् ॥ राध्यति । रराधिथ । राद्धा । रात्स्यति । अरात्सीत् ॥ व्यध ताडने ॥ ग्रहां किति च । विध्यति । विव्याध विविधतुः । विव्यधिथ विव्यद्ध । व्यद्धा । अव्यात्सीत् ॥ पुष पुष्टौ ॥ पुष्यति । पुपोषिथ । पोष्टा । पोक्ष्यति । पुषादित्वात् ङः । अपुषत् ॥ शुष शोषणे ॥ शोष्टा । शोक्ष्यति । अशुषत् ॥ तुष तुष्टौ ॥ तोष्टा । तोक्ष्यति । अतुषत् ॥ दुष वैकृत्ये ॥ दोष्टा । अदुषत् ॥ श्लिष् आलिंगने ॥ श्लेष्टा ॥

भाषा—अकर्मकही राधधातुसे यप्रत्यय होय सकर्मक राधधातुसे यप्रत्यय नहीं होय । उदाहरण—अकर्मक राधधातुसे यप्रत्यय करनेपर लट्में रूप सिद्ध हुआ । राध्यति । लिट्में । रराध । लुट्में अनिट् होनेसे ' तथोर्धः , झबे जबाः ' इनकर सिद्ध हुआ । राद्धा । लृङ्में 'सवे चपा झशानाम्' इसकर सिद्ध हुआ । अरात्सीत् । द्विवचनमें झसात् ' इसकर सिका लोप करनेपर ' तथोर्धः, झबे जबाः ' इनकर सिद्ध हुआ । अराद्धाम् । व्यधधातु ताडन करनेमें वर्त्ते है । यप्रत्यय करनेके पश्चात् ' ग्रहां किति च ' इसकर यकारे इ संप्रसारण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । विध्यति । लिट्में णबादौ पूर्वस्य ' इसकर पूर्व यको इ संप्रसारण किया । ' ग्रहां रकेति च ' इसकर पर यको इ संप्रसारण किया तब रूप सिद्ध हुआ । विविधतुः ।

थपूमें 'स्वरान्तादत्वतश्च०' इसकर एक जगह इट् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । वि-व्यधिथ । और जहां इट् नहीं हुआ तहां 'तथोर्धः, झषे जवाः' इनकर सिद्ध हुआ । विव्यद्ध । लिङ्में । विध्यात् । लुट्में । व्यद्धा । लुङ्मे 'अत उपधायाः' इसकर वृद्धि करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अव्यात्सीत् । पुषधातु पुष्टिअर्थमें वर्त्ते है । लट्में पुष्यति । लिट्में । पुपोष । लुट्में । पोष्टा । लट्में 'षढोः कस्से, कि०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । पोक्ष्यति । लुङ्में पुषादिक होनेसे ङप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अपुषत् । शुषधातु शोषण अर्थमें वर्त्ते है । लट्में । शुष्यति । लिट्में । शुशोष । लुट्में । शोष्टा । लुङ्में पुषादिक होनेसे ङप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अशुषत् । तुषधातु तुष्टि अर्थमें वर्त्ते है । लट्में तुष्यति । लिट्मे । तुतोष । लुट्में । तोष्टा । लुङ्में पुषादिक होनेसे ङप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अतुषत् । दुषधातु वैकृत्य नाम दुष्टता करनेमें वर्त्ते है । लट्में । दुष्यति । लिट्में । दुदोष । लुट्मे । दोष्टा । लुङ्में । अदुषत् । श्लिषधातु आलिंगनअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । श्लिष्यति । लिट्में । शिश्लेष । लुट्मे । श्लेष्टा ॥

आलिङ्गने श्लिषः सक् ॥ २८९ ॥ आलिंगने, श्लिषः, सक् । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ ङोऽपवादः ॥ अश्लिक्षत्कन्यां चैत्रः । अनालिंगने तु, समश्लिषज्जतु काष्ठम् ॥ ञिष्विदा गात्रप्रक्षरणे ॥ स्वेत्ता । अस्विदत् ॥ क्रुध क्रोधे ॥ क्रोद्धा । अक्रुधत् ॥ क्षुध बुभुक्षायाम् ॥ क्षोद्धा । अक्षुधत् ॥ शुध शौचे ॥ शोद्धा । अशुधत् ॥ षिधु संराद्धौ ॥ सेद्धा । असिधत् ॥ रध हिंसायां च ॥ रध्यति । ररन्ध ररन्धतुः ररन्धिथ ररद्ध । ररन्धिव रेध्व । ररन्धिम रेध्म ॥

भाषा—अनिट् श्लिषधातुसे सक् प्रत्यय होय आलिंगनअर्थके विषैं और अन्य अर्थके विषैं नहीं होय और पुषादिक होनेसे जो कि ङप्रत्यय होता है उसका अपवाद होय । उदाहरण—आलिंगनअर्थमें श्लिषधातुमे सिके स्थानमें सक् प्रत्यय करनेपर 'षढोः कः से, कि०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अश्लिक्षत् । कन्याको चैत्र आलिंगन करता है और जहां आलिंगन अर्थ नहीं है तहां पुषादिक होनेसे ङप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । समश्लिषत् । ञिष्विदाधातु गात्रप्रक्षरण अर्थात्

---

१ दिवादि अनिट् श्लिषधातुसेही सक् होता है न कि सेट् भौवादिक श्लिष दाहे धातुसे । यदि कहो कि 'हशषान्तात्सक्' इसकर सक् प्रत्यय सिद्ध होता है फिर सक्का विधान क्यों किया तहां 'लित्पुषादेर्ङः' इसकर पुषादिक होनेसे ङप्रत्ययका निषेध इस कथनकर किया है और जहां आलिंगन अर्थ नहीं है तहां कर्ममें जो कि आत्मनेपद होता है उसमें सक् नहीं होता है किन्तु सिप्रत्ययही होता है ॥

घर्मस्रुति अर्थात् स्वेदको प्राप्त होनेमें वर्त्ते है । इसमें भिकार और आकार इत्-संज्ञक हैं । 'धात्वादेः ष्णः स्नः' इसकर सकार करनेके अनन्तर श्यप्रत्यय करनेसे लट्में रूप सिद्ध हुआ । स्विद्यति । लिट्में । सिष्वेद । लुङ्में । स्वेत्ता । लुङ्में पुषादिक होनेसे ङप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अस्विदत् । क्रुधधातु क्रोध करनेमें वर्त्ते है । लट्में । क्रुध्यति । लिट्में । चुक्रोध । लुट्में । क्रोद्धा । लुङ्में । अक्रुधत् । क्षुधधातु भोजन करनेकी इच्छामें वर्त्ते है । लट्में । क्षुध्यति । लिट्में । चुक्षोध । लुट्में । क्षोद्धा । लुङ्में । अक्षुधत् । शुधधातु शौच नाम पवित्र होनेमें वर्त्ते है । लट्में । शुध्यति । लिट्में । शुशोध । लुट्में । शोद्धा । लुङ्में । अशुधत् । षिधुधातु सराद्धि नाम निष्पत्ति अर्थात् सिद्ध अर्थमें वर्त्ते है । 'धात्वादेः ष्णः स्नः' इसकर सकार करनेके अनन्तर लट्में । सिध्यति । लिट्में । सिषेध । लुट्में । सेद्धा । लुङ्में असिधत् । रधधातु हिंसा अर्थमें वर्त्ते है । लट्में । रध्यति । लिट्में स्वरके परे होनेसे 'रधिजभो स्वरे नुम्' इसकर नुमागम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । ररंध । द्विवचनमें । ररंधतुः । थप्में 'ऋदिवो वा' इसकर एक जगह इट् हुआ वहां 'रधिजभो स्वरे नुम्' इसकर सिद्ध हुआ । ररंधिथ । और जहां इट् नहीं हुआ वहां सिद्ध हुआ । ररद्ध । उत्तमभागके द्विवचन बहुवचनमें जहां इट् आगम हुआ वहां तौ 'रधिजभो स्वरे०' इसकर नुमागम करनेसे रूप सिद्ध हुआ । ररंधिव । ररंधिम । और इट् आगम नहीं हुआ वहां 'लोपः पचां किल्ये चास्य' इसकर सिद्ध हुआ । रेध्व । रेध्म ॥

लिङ्वर्जिते इटि रधेर्नुम् ॥ २८६ ॥ लिङ्वर्जिते, इटि, रधे, नुम्, न । पदच्छेदमिदं सूत्रम् ॥ रधिता रद्धा । रधिष्यति रत्स्यति । अरधत् ॥ णश् अदर्शने ॥ नश्यति । ननाश नेशतुः । नेशिथ ॥

भाषा—लिङ्वर्जित इट्के विषैं रधधातुको नुम् नहीं होय । भाव यह है कि रधधातुको इट् पर हुए सते नुम् आगम नहीं होय । और लिट्लकारसम्बन्धी इट् पर हुए संते नुम् आगम होय । उदाहरण—लादिकमें इट्विषयमें नुम् आगम न होनेसे सिद्ध हुआ । रधिता । अनिट्पक्षमें । रद्धा । स्यप्में सेट्पक्षमें । रधिष्यति । अनिट्पक्षमें 'खसे चपा झसानाम्' इसकर सिद्ध हुआ । रत्स्यति । लुङ्में पुषादिक होनेसे ङप्रत्यय करनेपर नुमागमका 'नोऽलोपः' इसकर लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अरधत् । णशधातु अदर्शन नाम नाशको प्राप्त होनेमें वर्त्ते है । लट्में । नश्यति । लिट्में । ननाश । द्विवचनमें 'लोपः पचां किल्ये चास्य' इसकर पूर्वलोप और अकारको एकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । नेशतुः । थप्में 'ऋदिवो वा' इसकर एक जगह इट् किया वहां सिद्ध हुआ । नेशिथ ।

और इट् नहीं किया तहां ' छशषराजादेः षः' इसकर षकार कर पश्चात् ' ष्टुभिः० ' इसकर थकारको ठकार करनेसे रूप स्थित हुआ नन-ष्-ठ ॥

मस्जिनशोर्झसे नुम् ॥२८७॥ मस्जिनशोः, झसे, नुम् । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ ननंष्ठ । नेशिव नेश्व । नेशिम नेश्म । नशिता नंष्टा । नशिष्यति नंक्ष्यति । अनशत् ॥ तृप प्रीणने ॥ तृप्यति । ततर्पिथ तत्रप्थ ततर्प्थ । तर्पिता त्रप्ता तर्प्ता । तर्पिष्यति त्रप्स्यति तर्प्स्यति । अतृपत् अतर्पीत् अत्राप्सीत् अतार्प्सीत् ॥ दृप् हर्षगर्वयोः ॥ दृप्यति । अद्राप्सीत् । अदृपत् ॥ द्रुह जिघांसायाम् ॥ दुद्रोहिथ दुद्रोढ दुद्रोग्ध । दुद्रुहिव दुद्रुह्व । दुद्रुहिम दुद्रुह्म । दुद्रोहिथ । द्रोग्धा द्रोढा । द्रोहिष्यति ध्रोक्ष्यति । अद्रुहत् ॥ मुह वैचित्त्ये ॥ मुह्यति । मुमोहिथ मुमोढ मुमोग्ध ॥ ष्णुह उद्गिरणे ॥ स्नुह्यति । सुष्णोहिथ सुष्णोढ सुष्णोग्ध ॥ ष्णिह प्रीतौ ॥ सिष्णेग्ध ॥ शमु उपशमे ॥

भाषा—मस्ज धातु और णशधातु इन दोनोंको नुम्‌का आगम होय झसप्रत्याहार पर हुए संते । उदाहरण—ननष्-ठ । इसमें नश्‌धातुको नुम्‌का आगम किया क्योंकि झसप्रत्याहारसंबन्धी परे ठकार विद्यमान है तब नुम्‌का आगम ' मिदन्त्यात्स्वरात्परो वक्तव्यः ' इसकर नकारउत्तरवर्ती अकारसे परे हुआ तब रूप सिद्ध हुआ । ननंष्ठ । उत्तमभागके द्विवचन बहुवचनमें इट् और सेट् पक्ष दोनोंमें ' लोपः पचां कित्ये चास्य ' इसकर सिद्ध हुआ । नेश्व, नेशिव । नेश्म, नेशिम । तादिकमें सेट्पक्षमें । नशिता । अनिट्पक्षमें ' मस्जिनशोर्झसे नुम् ' इसकर नुम् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । नंष्टा । स्यप्में सेट्पक्षमें । नशिष्यति । अनिट्पक्षमें । नंक्ष्यति । लुङ्में पुषादिक होनेसे ङप्रत्यय करनेके पश्चात् सिद्ध हुआ । अनशत् । तृप्‌धातु तृप्तिमें वर्त्ते है । लट्में । तृप्यति लिट्में । ततर्प । द्विवचनमें । ततृपतुः । थप्में ' ऊदितो वा ' इसकर विकल्पकरके इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । ततर्पिथ । और जहा इट् नहीं हुआ तहां गुण करनेके पश्चात् ' कृपादीनां वा ' इसकर एक जगह अरके स्थानमें र करनेपर रूप सिद्ध हुआ । तत्रप्थ । और जहां अरको र नहीं हुआ तहा सिद्ध हुआ । ततर्प्थ । तादिकमें सेट्पक्षके विषै । तर्पिता । अनिट्पक्षमें ' कृपादीनां वा ' इसकर सिद्ध हुआ । त्रप्ता, तर्प्ता । लुङ्में पुषादिक होनेसे ङप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अतृपत् । और ' कृषस्पृशमृशतृपदृपां वा सिः' इसकर एक जगह विकल्पकरके सि करनेपर सेट्पक्षमें

धर्मेऽनुवि अर्थात् स्वेदको प्राप्त होनेमें वर्ते है । इसमें ञिकार और आकार इत्संज्ञक है । 'आदेः ष्णः स्नः' इसकर सकार करनेके अनन्तर श्यन्प्रत्यय करनेसे लट्में रूप सिद्ध हुआ । स्विद्यति । लिट्में । सिष्वेद । लुट्में । स्वेत्ता । लुङ्में पुषादिक होनेसे ङप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अस्विदत् । क्रुधधातु क्रोध करनेमें वर्ते है । लट्में । क्रुध्यति । लिट्में । चुक्रोध । लुट्में । क्रोद्धा । लुङ्में । अक्रुधत् । क्षुधधातु भोजन करनेकी इच्छामें वर्ते है । लट्में । क्षुध्यति । लिट्में । चुक्षोध । लुट्में । क्षोद्धा । लुङ्में । अक्षुधत् । शुधधातु शौच नाम पवित्र होनेमें वर्ते है । लट्में । शुध्यति । लिट्में । शुशोध । लुट्में । शोद्धा । लुङ्में । अशुधत् । षिधुधातु संराद्धि नाम निष्पत्ति अर्थात् सिद्धअर्थमें वर्ते है । 'आदेः ष्णः स्नः' इसकर सकार करनेके अनन्तर लट्में । सिध्यति । लिट्में । सिषेध । लुट्में । सेद्धा । लुङ्में असिधत् । रधधातु हिंसाअर्थमें वर्ते है । लट्में । रध्यति । लिट्में स्वरके परे होनेसे 'रधिजभो स्वरे नुम्' इसकर नुमागम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । ररंध । द्विवचनमें । ररंधतुः । थप्में 'क्रादितो वा' इसकर एक जगह इट् हुआ वहां 'रधिजभो स्वरे नुम्' इसकर सिद्ध हुआ । ररंधिथ । और जहां इट् नहीं हुआ वहां सिद्ध हुआ । ररद्ध । उत्तमभागके द्विवचन बहुवचनमें जहां इट् आगम हुआ वहां तो 'रधिजभो स्वरे०' इसकर नुमागम करनेसे रूप सिद्ध हुआ । ररंधिव । ररंधिम । और इट् आगम नहीं हुआ तहां 'लोपः पचां कित्ये चास्य' इसकर सिद्ध हुआ । रेध्व । रेध्म ॥

लिड्वर्जिते इटि रधेर्नुम् ॥ २८६ ॥ लिड्वर्जिते, इटि, रधे, र्नुम्, न । पञ्चपदमिदं सूत्रम् ॥ रधिता रद्धा । रधिष्यति रत्स्यति । अरधत् ॥ णश अदर्शने ॥ नश्यति । ननाश नेशतुः । नेशिथ ॥

भाषा—लिड्वर्जित इट्के विषे रधधातुको नुम् नहीं होय । भाव यह है कि रधधातुको इट् पर हुए संते नुम् आगम नहीं होय । और लिड्लकारसंबन्धी इट् पर हुए संते नुम् आगम होय । उदाहरण—तादिकमें इट्विषयमें नुम् आगम न होनेसे सिद्ध हुआ । रधिता । अनिट्पक्षमें । रद्धा । स्यपमें सेट्पक्षमें । रधिष्यति । अनिट्पक्षमें 'खसे चपा झसानाम्' इसकर सिद्ध हुआ । रत्स्यति । लुङ्में पुषादिक होनेसे ङप्रत्यय करनेपर नुमागमका 'नोऽलोपः' इसकर लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अरधत् । णशधातु अदर्शन नाम नाशको प्राप्त होनेमें वर्ते है । लट्में । नश्यति । लिट्में । ननाश । द्विवचनमें 'लोपः पचां कित्ये चास्य' इसकर पूर्वलोप और अकारको एकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । नेशतुः । थप्में 'क्रादितो वा' इसकर एक जगह इट् किया वहां सिद्ध हुआ । नेशिथ ।

बभ्राम भ्रेमतुः बभ्रमतुः । अभ्रमत् ॥ क्षमू सहने ॥ क्षाम्यति । चक्ष-मिथ चक्षन्थ । अक्षमत् । क्लमु ग्लानौ ॥ भ्राशभ्लाशेति यो वा । क्लाम्यति । ष्ठिवुक्लम्वाचमां दीर्घोऽपि । क्लामति ॥ मदी हर्षे ॥ माद्यति । मेदिथ । अमदत् । शमादयोऽष्टौ ॥ असु क्षेपणे ॥ अस्यति । अस्येत् । आस आसतुः । आसिथ ॥

भाषा—शम् आदिक आठ धातुओंको दीर्घ होय कर्त्ता अर्थके विषैं यप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—शमधातुसे 'दिवादेर्यः' इसकर यप्रत्यय करनेके पश्चात् दीर्घ करनेसे रूप सिद्ध हुआ । शाम्यति । लिङ्में । शाम्येत् । लोट्में । शाम्यतु । लङ्में । अशाम्यत् । लिट्मे । शशाम । द्विवचनमें 'लोपः पचां०' इसकर पूर्वलोप और एकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । शेमतुः । तादिकमे सेट् होनेसे सिद्ध हुआ । शमिता । लुङ्में पुषादिक होनेसे ङप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । अशमत् । तमुधातु कांक्षा करनेमें वर्त्ते है । यप्रत्यय करनेके पश्चात् शमादिक होनेसे दीर्घ करनेपर रूप सिद्ध हुआ । ताम्यति लिट्मे । तताम । थप्में 'लोपः पचां०' इसकर सिद्ध हुआ । तेमिथ । तादिकमे । तामिता । लुङ्में । अतमत् । दमुधातु शमना नाम दमन अर्थमें वर्त्ते है । इसी प्रकार दमुधातुके रूप जानने । श्रमुधातु तपस् नाम तपस्या करनेमें तथा खेदको प्राप्त होनेमें वर्त्ते है । लट्में । श्राम्यति । लिट्में । शश्राम । लुङ्में । अश्रमत् । भ्रमुधातु अनवस्थिति अर्थात् भ्रमण करनेमें वर्त्ते है । लट्में 'भ्राशभ्लाशभ्रमुक्रमु०' इसकर विकल्पकरके जहां यप्रत्यय हुआ तहां 'शमां दीर्घः' इसकर दीर्घ करनेसे सिद्ध हुआ । भ्राम्यति । और जहां यप्रत्यय नहीं हुआ तहां अप्प्रत्यय होनेपर रूप सिद्ध हुआ । भ्रमति । लिट्में । बभ्राम । द्विवचनमें 'फणराजृभ्राजृभ्राशृभ्लाशृस्यमुस्वनजॄषूभ्रमुक्रमामेत्वपूर्वलोपौ वा' इसकर सिद्ध हुआ । भ्रेमतुः, बभ्रमतुः । तादिकमे । भ्रमिता । लुङ्में अभ्रमत् । क्षमूधातु सहन नाम क्षमा अर्थमें वर्त्ते है । लट्में । क्षाम्यति । लिट्में । चक्षाम । थप्में 'ऊदितो वा' इसकर एक जगह इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । चक्षमिथ । और जहां इट् नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । चक्षंथ । उत्तमभागके द्विवचन बहुवचनमें अनिट्पक्षके विषैं 'मो नो धातोः' इसकर मकारको नकार करनेपर 'षुर्नो णोऽनन्ते' इसकर सिद्ध हुआ । चक्षण्वहि । चक्षण्महि । तादिकमें सेट्पक्षके विषै । क्षमिता । अनिट्पक्षके विषैं । क्षन्ता । लुङ्में । अक्षमत् । क्लमुधातु ग्लानिअर्थमें वर्त्ते है । 'भ्राशभ्लाशभ्रमुक्रमुक्लमु०' इसकर विकल्पकरके एक जगह यप्रत्यय करनेपर लट्में 'शमां दीर्घः' इसकर दीर्घ करनेसे रूप सिद्ध हुआ । क्लाम्यति । और जहा यप्रत्यय नहीं हुआ तहां अप्प्रत्यय

अवर्पीत् । द्विवचनमें । मवर्पिष्टाम् । और अनिट्पक्षमें ' अनिटो नामिवतः ' इसकर वृद्धि करनेके पश्चात् ' कृपादीनां वा ' इसकर विकल्पकरके आरके स्थानमें रा करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अवार्प्सीत्, अत्राप्सीत् । द्विवचनमें ' ससात् ' इसकर सिद्ध हुआ । अवार्ष्टाम्, अत्राप्ताम् । दृप्धातु दर्प और गर्व करनेमें वर्त्ते है । लट्में । दृप्यति । लिट्में । ददर्प । शेष लकारोंमें तृप्धातुके समान रूप जानने । द्रुहधातु जिघांसा अर्थात् मारनेकी इच्छामें अर्थात् द्रोह करनेमें वर्त्ते है । लट्में । द्रुह्यति । लिट्में । दुद्रोह । थप्में ' स्वरतिसूतिसूयति०' इसकर विकल्पकरके इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । दुद्रोहिथ । और अनिट्पक्षमें ' द्रुहादीनां घत्वढत्वे वा ' इसकर एक जगह हकारको घकार किया वहां ' तयोर्घ', झबे जबाः' इसकर सिद्ध हुआ । दुद्रोग्ध । और जहां हकार हुआ वहा ' तयोर्ध' इसकर थकारको धकार किया फिर ' ष्टुभि०' इसकर ढकार करनेके पश्चात् रूप स्थित हुआ दुद्रोढ-ढ फिर ' ढि ढो लोपो दीर्घश्च ' इसकर ढकारका लोप करनेके पश्चात् रूप सिद्ध हुआ । दुद्रोढ । उत्तमभागके द्विवचन बहुवचनके विषे सेट्पक्षमें । दुद्रुहिव । अनिट्पक्षमें । दुद्रुह्व । दुद्रुहिम, दुद्रुह्म । तादिकमें ' द्रुहादीनां घत्वढत्वे वा ' इसकर अनिट्पक्षमें । द्रोग्धा, द्रोढा । और सेट्पक्षमें । द्रोहिता । लृट्में सेट्पक्षके विषें । द्रोहिष्यति । और अनिट्पक्षके विषें जहां हकारको घकार किया वहां ' आदिजबानां झमान्तस्य० खसे चपा झसानाम्, कि०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । ध्रोक्ष्यति । और जहां हकारको ढकार किया वहां ' आदिजबानां०, षढोः कस्से, कि०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । ध्रोक्ष्यति । और लुङ्में पुषादिक होनेसे ङप्रत्यय करनेके पश्चात् रूप सिद्ध हुआ । अद्रुहत् । मुहधातु वैचित्य नाम अविवेक अर्थात मोहको प्राप्त होनेमें वर्त्ते है । मुहधातुके रूपभी द्रुहधातुके समान जानने । ष्णुहधातु उद्गिरण नाम वमन करनेमें वर्त्ते है । ' आदेः ष्ण स' इसकर सकार करनेके पश्चात् रूप द्रुहधातुके समान जानने और ष्णिहधातु प्रीति करनेमें वर्त्ते है । इस धातुके रूपभी द्रुहधातुके समान जानने । शमुधातु उपशम नाम शान्तिको प्राप्त होनेमें वर्त्ते है ॥

शमां दीर्घः ॥ २८८ ॥ शमाम्, दीर्घः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ शमादीनां दीर्घः कर्त्तरि ये । शाम्यति । शमिता । अशमत् ॥ तमु कांक्षायाम् ॥ ताम्यति । तताम तेमतुः । अतमत् ॥ दमु उपशमने ॥ दाम्यति । देमतुः । अदमत् ॥ श्रमु तपसि खेदे च ॥ श्राम्यति । शश्राम शश्रमतुः । अश्रमत् ॥ भ्रमु अनवस्थाने ॥ भ्राम्यति भ्रमति ।

अकृशत् ॥ ञितृष् पिपासायाम् ॥ तृष्यति । ततर्षिथ । अतृषत् ॥ हृष् तुष्टौ ॥ हृष्यति । जहर्षिथ । अहृषत् । रुष् रिष् हिंसायाम् ॥ रुष्यति । रोषिता रोष्टा । अरुषत् । रिष्यति । रेषिता रेष्टा । अरिषत् । डिप क्षेपे ॥ डिप्यति । अडिपत् ॥ कुप् क्रोधे ॥ कुप्यति । अकुपत् ॥ गुप् व्याकुलत्वे ॥ गुप्यति । अगुपत् ॥ युप् रुप् लुप् विमोहने ॥ युप्यति । युयोपिथ । अयुपत् । रुप्यति । रुरोपिथ । अरुपत् । लुप्यति । लुलोपिथ । अलुपत् ॥ लुभ आकांक्षायाम् ॥ लुभ्यति । लुलोभ । लोभिता लोब्धा । अलुभत् ॥ क्षुभ संचलने ॥ क्षुभ्यति । चुक्षोभ । अक्षुभत् ॥ क्लिदू आर्द्रीभावे ॥ क्लिद्यति । चिक्लेद । क्लेत्ता । अक्लिदत् ॥ ञिमिदा स्नेहने ॥

भाषा—नहीं है उपसर्ग पूर्व जिसके और सं उपसर्ग है पूर्व जिसके ऐसे यस धातुसे यप्रत्यय विकल्पकरके होय । उदाहरण—विना उपसर्गवाले यसधातुसे एक जगह यप्रत्यय किया तहा सिद्ध हुआ । यस्यति । और जहा यप्रत्यय नही हुआ तहां अप्प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । यसति । और संपूर्ण यस्धातुसेभी विकल्पकरके यप्रत्यय किया जाता है तहाभी ऐसेही रूप जानने । और उपसर्ग पूर्व होनेसे यसधातुसे नित्यही यप्रत्यय होय । जैसे उपसर्गको पूर्वकर यसधातुसे यप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । प्रयस्यति । लिट्में । ययास । थप्में । येसिथ । लुट्में । यसिता । लुङ्में । अयसत् । जसुधातु मोक्षण अर्थमें वर्त्त है लट्में । जस्यति । लिट्में । जजास । थप्में । जेसिथ । लुट्में । जसिता । लुङ्में । अजसत् । तसु और दसु यह दोनों धातु उपक्षय नाम नाशमें वर्त्त हैं । लट्में । तस्यति । दस्यति । लिट्में । ततास । ददास । थप्में । तेसिथ । देसिथ । लुङ्में । अतसत् । अदसत् । वसुधातु स्तम्भ नाम रोकनेमें वर्त्त है । लट्में । वस्यति । लिट्में । ववास । द्विवचनमें वकारादि होनेसे ' शशददवादिगुणभूता० ' इसकर सिद्ध हुआ । ववसतुः । लुङ्में । अवसत् । विस्धातु प्रेरण नाम प्रवृत्त करनेमें वर्त्त है । लट्में । विस्यति । लिट्में । विवेस । लुङ्में । अविसत् । कुशधातु संश्लेषण नाम भली प्रकार मिलनेमें वर्त्त है । लट्में । कुश्यति । लिट्में । चुकोश । लुङ्में । अकुशत् । बुसधातु उत्सर्ग नाम त्याग करनेम वर्त्त है । लट्में । बुस्यति । लिट्में । बुबोस । लुङ्में । अबुसत् । मुसधातु खण्डन करनेमें वर्त्त है । लट्में । मुस्यति । लिट्में । मुमोस । लुङ्में । अमुसत् । मसी और ममी यह दोनो धातु परिणाम नाम विकारमें वर्त्त हैं । लट्में ।

करनेपर ‘ ष्ठिवुक्लम्वाचमां दीर्घोऽपि ’ इसकर दीर्घ करनेसे रूप सिद्ध हुआ । क्लामति । लिङ्में । क्लाम्येत्, क्लमेत् । लिट्में । चक्लाम । लुट्में । क्लमिता लुङ्में । अक्लमत् । मदीधातु हर्षको प्राप्त होनेमें वर्त्ते है । इसमें ईकार इत्संज्ञक है । लट्में । माद्यति । लिट्में । ममाद । द्विवचनमें ‘ लोप पचां० ’ इसकर सिद्ध हुआ । मेदतु: । लुट्में । मदिता । लुङ्में । अमदत् । यह शमादिक आठ धातु हैं । असुधातु क्षेपण नाम फेंकनेमें वर्त्ते है । लट्में । अस्यति । लिङ्में अस्येत् । लिट्में आस । द्विवचनमें । आसतु: । थप्में । आसिथ । तादिकमें । असिता । लुङ्में अ-अ-अस् अ-द् ऐसा स्थित है ॥

अस्यतेस्थुक् ङे ॥ २८९ ॥ अस्यते , थुक्, ङे । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ आस्थत् ॥ यसु प्रयत्ने ॥

भाषा—असधातुको थुक् आगम होय ङप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—अ-अ-अस्-अ-द् । इसमें असधातुको थुक्का आगम किया क्योंकि परे ङप्रत्यय विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । आस्थत्, आस्थद् । यसुधातु प्रयत्न करनेमें वर्त्ते है ॥

अनुपसर्गाद्यसस्संपूर्वाच्च यो वा ॥ २९० ॥ अनुपसर्गात्, यसेः, संपूर्वात्, च , ये , वा । षट्पदमिदं सूत्रम् ॥ यस्यति यसति । संयस्यति संयसति । ययास । येसिथ । अयसत् । उपसर्गे तु प्रयस्यति ॥ जसु मोक्षणे ॥ जस्यति । जजास । जेसिथ । अजसत् ॥ तसु दसु उपक्षये ॥ तस्यति । दस्यति । ददास । देसिथ । अदसत् ॥ वसु स्तम्भे ॥ वस्यति । ववास ववसतु: । अवसत् ॥ बिस प्रेरणे ॥ बिस्यति । बिबेस । अबिसत् ॥ कुस संश्लेषणे ॥ कुस्यति । चुकोश । कोशिता । अकुशत् ॥ बुस उत्सर्गे ॥ बुस्यति बुबोस । बोसिता । अबुसत् ॥ मुस खण्डने ॥ मुस्यति । मोसिता । अमुसत् ॥ मसी परिणामे ॥ मस्यति मेसिथ । अमसत् ॥ लुठ् विलोडने ॥ लुठ्यति । लोठिता । अलुठत् ॥ उच समवाये ॥ उच्यति । उवोच ऊचतु: । औचत् । भृशु भ्रंशु अध पतने ॥ भृश्यति । बभर्शिथ । अभृशत् । भ्रश्यति । बभ्रंश । अभ्रशत् ॥ वृश वरणे ॥ वृश्यति । ववर्शिथ । अवृशत् ॥ कृश् तनूकरणे ॥ कृश्यति । चकर्शिथ

मेद्यति । मिमेद । मिद्यात् । अमिदत् ॥ ञिक्ष्विदा स्नेहनमोचनयोः ॥ क्ष्वेदिता । अक्ष्विदत् ॥ ऋधु वृद्धौ ॥ ऋध्यति । आर्ध्यत् । आनर्द्ध । ऋध्यात् । आर्द्धत् ॥ गृधु अभिकांक्षायाम् ॥ गृध्यति । जगर्द्धिथ । अगृधत् ॥ इति पुषादयः ॥ इति परस्मैपदम् ॥

भाषा–मिद्धातुको गुण होय दिवादिगणकृत यप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–मिद्धातुसे 'दिवादेर्यः' इसकर यप्रत्यय करनेके पश्चात् गुण करनेपर रूप सिद्ध हुआ । मेद्यति लिट्में । मिमेद । लुङ्में । अमिदत् । ञिक्ष्विदा धातुभी स्नेहन और मोचनअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । क्ष्विद्यति । लिट्मे । चिक्ष्वेद । तादिकमें । क्ष्वेदिता । लुङमें । अक्ष्विदत् । ऋधुधातु वृद्धिअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । ऋध्यति । लिट्में । द्वित्व करनेके पश्चात् 'रः, आभ्वोर्णादौ, नुगशाम्, उपधाया लघोः' इनकर सिद्ध हुआ । आनर्द्ध । द्विवचनमें । आनृधतुः । लिङ्में ऋध्यात् । लुङ्में । आर्द्धत् । गृधुधातु सब प्रकार कांक्षा करनेमें वर्त्ते है । लट्में । गृध्यति । लिट्में । जगर्द्ध । थपूमें । जगर्द्धिथ । लुङ्म । अगृधत् ॥ इति परस्मैपदक्रिया समाप्ता ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामोक्तभाषया । चन्द्रिकोत्तरार्द्धवृत्तौ दिवादिपं विभूषितम् ॥

षूङ् प्राणिप्रसवे ॥ सूयते । सुषुवे । सुषुविषे । सविता । असविष्ट ॥ दूङ् परितापे ॥ दूयते । दुदुविढ्वे दुदुविध्वे । अदविष्ट ॥ दीङ् क्षेपे ॥ दीयते ॥

भाषा–षूङ्धातु प्राणीकी उत्पत्तिमें वर्त्ते है । 'आदनुदात्तङितः' इसकर आत्मनेपद करनेपर 'दिवादेर्यः' इसकर यप्रत्यय करनेसे लट्में रूप सिद्ध हुआ । सूयते । द्विवचनमें 'आदाथ ईः' इसकर ईकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । सूयेते । बहुवचनमें 'अदेः' इसकर अकारका लोप करनेके पश्चात सिद्ध हुआ । सूयन्ते । लिट्में द्वित्व करनेके पश्चात् 'नानप्योर्वः' इसकर उव् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । सुषुवे । सेमें 'स्वरतिसूतिसूयतिधूञां किति वसादेर्णादेर्नित्यमिट् स्यात्' इसकर नित्य इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । सुषुविषे । ध्वेवचनमें इट् करनेके पश्चात् 'सेटो हलाद्वा' इसकर सिद्ध हुआ । सुषुविढ्वे, सुषुविध्वे । सीष्टादिकमें सेट्पक्षमें सविषीष्ट । अनिट्पक्षमें । सोषीष्ट । लुङ्में सेट्पक्षमें । असविष्ट । और अनिट्पक्षमें । असोष्ट । दूङ्धातु परिताप नाम संताप करनेमें वर्त्ते है । लट्में । दूयते । लिट्में ध्वेवचनके विषै 'सेटो हलाद्वा' इसकर सिद्ध हुआ । दुदुविढ्वे । दुदुविध्वे । सीष्टादिकमें ऊकारान्त होनेसे सेट् होनेपर रूप सिद्ध हुआ । दविषीष्ट । लुङ्में । अदविष्ट । दीङ्धातु क्षेप नाम प्रेरणाअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । दीयते ॥

मस्यति । सम्यति । ममास । समाम । थपूर्में । मेमिथ । सेमिथ । लुङ्में । अमसत् । असमत् । लुठधातु विलोडन नाम विलोवनेमें वर्त्ते है । लट्में । लुठयति । लिट्में । लुलोठ । लुङ्में । अलुठत् । उचधातु समवाय नाम इकट्ठा करनेमें वर्त्ते है । लट्में । उच्यति । लिट्में । गुण करनेके पश्चात् ' असवर्णे स्वरे ' इसकर सिद्ध हुआ । उवोच । द्विवचनमें । ऊचतुः । लुङ्में । औचत् । भृशु भ्रंशु धातु नीचे गिरनेमें वर्त्ते हैं । लट्में । भृश्यति । लिट्में । बभर्श । द्विवचनमें । बभृशतु । लुङ्में । अभृशत् । भ्रंशधातुका लट्में रूप सिद्ध हुआ ' नोलोपः ' इसकर । भ्रश्यति । लिट्में । बभ्रंश । द्विवचनमें । बभ्रंशतु । लिङ्में । भ्रश्यात् । लुङ्में ' नोलोपः ' इसकर सिद्ध हुआ । अभ्रशत् । वृशधातु वरण करनेमें वर्त्ते है । लट्में । वृश्यति । लिट्में । ववर्श । ववर्शिथ । लुङ्में । अवृशत् । कृशधातु तनूकरण नाम सूक्ष्म करनेमें वर्त्ते है । लिट्में कृश्यति । लिट्में । चकर्श । थपूर्में । चकर्शिथ । लुङ्में । अकृशत् । त्रितृष् धातु पिपासा नाम जलपान करनेकी इच्छामें वर्त्ते है । इसमें त्रिकार इत्संज्ञक है । लट्में । तृष्यति । लिट्में । ततर्ष । लुङ्में । अतृषत् । हृषधातु तुष्टिको प्राप्त होनेमें वर्त्ते है । लट्में । हृष्यति । लिट्में । जहर्ष । थपूर्में । जहर्षिथ । रुष और रिष धातु हिंसा करनेमें वर्त्ते हैं । लट्में । रुष्यति । रिष्यति । लिट्में । रुरोष । रिरेष । लुङ्में ' इषुसहलुभरुषरिषामनपि तस्येड्वा ' इसकर विकल्पकरके इट् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । रोषिता, रोष्टा । रेषिता, रेष्टा । लुङ्में अरुषत् । अरिषत् । डिपधातु क्षेप नाम प्रेरणअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । डिप्यति । लिट्में । डिडेप । लुङ्में । अडिपत् । कुपधातु क्रोध करनेमें वर्त्ते है । लट्में । कुप्यति । लिट्में । चुकोप । लुङ्में । अकुपत् । गुपधातु व्याकुलता अर्थमें वर्त्ते है लट्में । गुप्यति । लिट्में । जुगोप । लुङ्में । अगुपत् । युप् रुप् लुप् धातु विमोह मोह करनेमें वर्त्ते हैं । लट्में । युप्यति । रुप्यति । लुप्यति । लुङ्में । अयुपत् । अरुपत् । अलुपत् । लुभधातु आकांक्षा नाम अतीव कांक्षा करनेमें वर्त्ते है । लट्में । लुभ्यति । लिट्में लुलोभ । तादिकमें इषुसहलुभ० ' इसकर विकल्पकरके इट् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । लोभिता, लोब्धा । लुङ्में । अलुभत् । क्षुभधातु क्षोभको प्राप्त होनेमें वर्त्ते है । लट्में । क्षुभ्यति । लिट्में । चुक्षोभ । लुङ्में । अक्षुभत् । क्लिदधातु आर्द्रीभाव नाम गीले होनेमें वर्त्ते है । यह धातु ऊदित है । लट्में । क्लिद्यति । लिट्में । चिक्लेद । थपूर्में पक्षमगह ' ऊदितो वा ' इसकर इट् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । चिक्लेदिथ चिक्लेत्थ । तादिकमें सेट्पक्षके विषे । क्लेदिता । अनिट्पक्षमें । क्लेत्ता । लुङ्में । अक्लिदत् । त्रिमिदा धातु स्नेहन और मोचनअर्थमें वर्त्ते है । इसमें त्रिकार आकार इत्संज्ञक हैं ॥

मिदेर्गुणो ये ॥ २९१ ॥ मिदे र्गुणं ये । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥

लाता लेता । अलास्त अलेष्ट ॥ व्रीङ् वरणे॥ व्रीयते । विव्रिये । व्रेष्यते । अव्रेष्ट ॥ स्वादय ओदितः ॥ पीङ् पाने ॥ पीयते । अपेष्ट ॥ माङ् माने ॥ मायते । ममे । अमास्त अमासाताम् ॥ ईङ् गतौ ॥ ईयते । अयाञ्चक्रे ॥ प्रीङ् प्रीतौ ॥ प्रीयते । पिप्रिये । अप्रेष्ट ॥ जनी प्रादुर्भावे ॥

भाषा–लीधातु और लीङ्धातु इन दोनोंको विकल्पकरके आकार होय गुणवृद्धि करनेवाला प्रत्यय पर हुए संते और क्यप् पर हुए संते । उदाहरण–लीङ्धातुके ईकारको विकल्पकरके आकार किया क्योंकि गुणविषयक सीष्टादिक प्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । लासीष्ट । और जहां आकार नहीं हुआ तहां गुण करनेपर ' क्ङि० ' इसकर सिद्ध हुआ । लेषीष्ट । तादिकमें । लाता । लेता । लुङ्में । अलास्त । अलेष्ट । व्रीङ्धातु वरण नाम स्वीकार करनेमें वर्त्ते है । लट्में । व्रीयते । लिट्में ' नुधातोः ' इसकर इय् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । विव्रिये । सीष्टादिकमें । व्रेषीष्ट । लुङ्में । अव्रेष्ट । यह स्वादिक धातु ओकार इत्वाले हैं । पीङ्धातु पान करनेमें वर्त्ते है । लट्में । पीयते । लिट्में । पिप्ये । सीष्टादिकमें । पेषीष्ट । लुङ्में । अपेष्ट । माङ्धातु मानअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । मायते । लिट्में । ममे । लुङ्में । अमास्त । अमासाताम् । ईङ्धातु गतिअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । ईयते । लिट्में गुरुनाम्यादि होनेसे आम् प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अयांचक्रे । सीष्टादिकमें । एषीष्ट । लुङ्में । ऐष्ट । प्रीङ्धातु प्रीतिअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । प्रीयते । लिट्में । पिप्रिये । लुङ्में । अप्रेष्ट । जनीधातु प्रादुर्भाव नाम प्रकट होनेमें वर्त्ते है ॥

ज्ञाजनोर्जा ॥ २९५ ॥ज्ञाजनोः, जा । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ कर्तरि चतुर्षु ॥ जायते । गमां स्वरे । जज्ञे । जनिता । दीपजनेति इण् । जनिवध्योर्न वृद्धिः । अजनि अजनिष्ट ॥ तूरी गतित्वरणहिंसनयोः॥ तूर्यते । तुतूरिषे ॥ दीपि दीप्तौ ॥ दीप्यते । अदीपि अदीपिष्ट ॥पूरी आप्यायने ॥ अपूरि अपूरिष्ट ॥ तप ऐश्वर्ये ॥ तप्यते । तेपे । तप्ता । अतप्त ॥ वावृतु वरणे ॥ वावृत्यते । वावर्त्ताञ्चक्रे ॥पद गतौ॥ पेदे । पत्ता ॥

भाषा–ज्ञाधातु और जनधातु इन दोनोंको जा आदेश होय कर्त्ता अर्थमें चार

दीङो युट् क्ङिति स्वरस्य ॥२९२॥ दीङः, युट्, क्ङिति, स्वरस्य ।
चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ दिदीये ॥

भाषा–दीङ्धातुसे परे कित्ङित्संज्ञक स्वरादिप्रत्ययको युट्का आगम होय । उदाहरण–लिट्में 'दिदी' इसप्रकार द्वित्व करनेके पश्चात् कित्संज्ञक स्वरादि एप्रत्ययको युट् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । दिदीये । द्विवचनमें । दिदीयाते । बहुवचनमें । दिदीयिरे । थासमें इट् करनेके पश्चात् स्वरादि प्रत्यय से होनेसे युट्का आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । दिदीयिषे । ध्वेमें । दिदीयिढ्वे, दिदीयिध्वे ॥

मीनातिमिनोतिदीङां गुणवृद्धिविषये क्यपि चात्वम् ॥२९३॥
मीनातीति–लुप्तषष्ठ्यन्तम्, गुणवृद्धिविषये, क्यपि, च, आत्वम् । पञ्चपदमिदं सूत्रम् ॥ दासीष्ट । दाता । दास्यते । अदास्त ॥ डीङ् विहायसा गतौ ॥ डीयते । डयिष्यते । अडयिष्ट ॥ धीङ् धारणे ॥ धीयते । दिध्यिढ्वे दिध्यिध्वे । अधेष्ट ॥ मीङ् प्राणवियोगे ॥ मीयते । मेता ॥ रीङ् स्रवणे रीयते । रिर्ये । अरेष्ट । लीङ् श्लेषणे ॥ लीयते । लिल्ये ॥

भाषा–मीञ्, डुमिञ् और दीङ्धातु इनोंको आकार होय गुणवृद्धि करनेवाला प्रत्यय पर हुए सते और क्यप् प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–सीयुडादिकमें दी धातुके ईकारको आकार किया क्योंकि गुणविधायक सीयुट्प्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप हुआ । दासीष्ट । तासिमें । दाता । और लुङ्में । अदास्त । डीङ्धातु आकाशकर गमन करनेमें वर्ते है । लट्में । डीयते । और लिट्में 'डुडा-यो' इसप्रकार अनेक स्वर असंयोग पूर्व होनेसे यकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । डिड्ये । सीयुडादिकमें सेट् होनेसे सिद्ध हुआ । डयिषीष्ट । लुङ्में । अडयिष्ट । धीङ् धातु धारण करनेमें वर्ते है । धीयते लिट्में । दिध्ये । ध्वेमें । दिध्यिढ्वे, दिध्यिध्वे । सीयुडादिकमें अनिट् होनेसे सिद्ध हुआ । धेषीष्ट । लुङ्में । अधेष्ट । मीङ्धातु प्राण वियोग अर्थात् प्राणोंसे वियुक्त होनेमें वर्ते है । लट्में । मीयते । लिट्में । मिम्ये । सीयुडादिकमें मेषीष्ट । लुङ्में । अमेष्ट । रीङ्धातु स्रवण नाम चिचानेमें वर्ते है । लट्में । रीयते । लिट्में । रिर्ये । सीयुडादिकमें । रेषीष्ट । लुङ्में । अरेष्ट । लीङ्धातु श्लेषण नाम मिलनेमें वर्ते है । लट्में । लीयते । लिट्में । लिल्ये ॥

लीलीङोरात्वं वा गुणवृद्धिविषये क्यपि च ॥२९४॥ लीलीङोः, आत्वम्, वा, गुणवृद्धिविषये, क्यपि, च । षट्पदमिदं सूत्रम् ॥

खेत्ता । लुङ्में ' झसात्, सिस्योः ' इनकर सिद्ध हुआ । आखित्त । विद्धातु सत्ता नाम विद्यमान होनेमें वर्त्ते है । लट्में । विद्यते । लिट्में । विविदे । सीष्टादिकमें अनिट् होनेसे ' सिस्योः ' इसकर गुण न होनेसे सिद्ध हुआ वित्सीष्ट । लुट्में । वेत्ता । लुङ्में ' झसात् , सिस्योः ' इनकर सिद्ध हुआ । अवित्त । बुधधातु अवगमन नाम जाननेमें वर्त्ते है । लट्में । बुध्यते । लिट्में । बुबुधे । सीष्टादिकमें प्रथम ' आदिजबानां० ' इसकर भकार कर पश्चात् ' खसे चपा झसानाम् ' इसकर तकार किया फिर ' सिस्योः ' इसकर सिद्ध हुआ । भुत्सीष्ट । लुङ्में ' दीपजनबुध० ' इसकर एक जगह इण् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अबोधि । और जहां इण् नहीं हुआ तहां ' झसात् , तथोर्धः , सिस्योः, झबे जबाः ' इनकर सिद्ध हुआ । अबुद्ध । द्विवचनमें ' आदिजबानां० ' इसकर भकार किया फिर ' सिस्योः, खसे चपा झसानाम् ' इनकर सिद्ध हुआ । अभुत्साताम् । युधधातु संप्रहार नाम युद्ध करनेमें वर्त्ते है । लट्में । युध्यते । लिट्में । युयुधे । सीष्टादिकमें । युत्सीष्ट । लुङ्में । अयुद्ध ॥

अनोरुध कामे ॥२९७॥ अनुरुध्यते । अनुरुरुधे । अनुरुत्सीष्ट । अनुरोद्धा । अन्वरुद्ध ॥ मन ज्ञाने ॥ मन्यते । मेने । मेनिषे । मन्ता । अमंस्त ॥ युज् समाधौ ॥ युज्यते । योक्ता । अयुक्त ॥ सृज विसर्गे ॥ सृज्यते । रारो झसे दृशाम् । स्रष्टा । असृष्ट असृक्षाताम् । लिश अल्पीभावे ॥ लिश्यते । लिक्षीष्ट । लेष्टा । अलिक्षत अलिक्षाताम् ॥ इत्यादि ॥

भाषा—अनुउपसर्गसे रुधधातु काम नाम इच्छाअर्थके विषैं वर्त्ते है । लट्मे । अनुरुध्यते । लिट्में । अनुरुरुधे । सीष्टादिकमें । अनुरुत्सीष्ट । लुङ्में । अन्वरुद्ध । द्विवचनमें । अन्वरुत्साताम् । युज्धातु समाधिमें वर्त्ते है । समाधि नाम चित्तवृत्तिके रोकनेका है । लट्में । युज्यते । लिट्में । युयुजे । सीष्टादिकमें ' चोः कुः, खसे चपा०, क्ङि०, सिस्योः ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । युक्षीष्ट । लुङ्में ' झसात्, सिस्योः ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अयुक्त । द्विवचनमें ' चोः कुः, खसे चपा०, सिस्योः ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अयुक्षाताम् । सृजधातु विसर्ग नाम त्यागअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । सृज्यते । लिट्में । ससृजे । सीष्टादिकमें ' सिस्योः ' इसकर गुण न होनेसे सिद्ध हुआ । सृक्षीष्ट । तादिकमें गुण करनेके पश्चात् ' रारो झसे दृशाम् ' इससे अर्को र किया फिर ' छशषराजादेः०, ष्टुभिः० ' इनकर सिद्ध हुआ । स्रष्टा । लुङ्में ' झसात्, सिस्योः, छशष०, ष्टुभिः० ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । असृष्ट । द्विवचनमें ' सिस्योः ' इसकर गुण न करनेके पश्चात् ' छशष०, षढोः कस्से, क्ङि० ' इत्यादि-

त्वकार पर हुए सते । उदाहरण–यमस्यय करनेके पश्चात् जन्धातुको जा आदेश किया क्योंकि कर्त्रर्थ चार लकारोंमेंसे वे परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । जायते । लिट्में 'गमा स्वरे' इसकर उपधाका लोप किया फिर 'स्वो' श्चुमि' श्चुः' इसकर नकारको ञकार करनेके पश्चात् 'जज्ञे' इसकर रूप सिद्ध हुआ । जज्ञे । सीयादिकमें सेट् होनेसे सिद्ध हुआ । जनिषीष्ट । लुङ्में 'दीपजनबुधपूरितायि प्यायिभ्यो वा॰' इसकर तन्के विषे विकल्प करके इण् किया 'जनिवध्योर्न वृद्धिः, लुक्' इसकर सिद्ध हुआ । अजनि । और जहां इण् नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । अजनिष्ट । तूरीधातु गतिकी शीघ्रतामें तथा हिंसा करनेमें वर्त्ते है । लट्में । तूर्यते । लिट्में । तुतूरिषे । सीयादिकमें । तूरिषीष्ट । लुङ्में । अतूरिष्ट । दीपीधातु दीप्तिअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । दीप्यते । लिट्में । दिदीपे । सीयादिकमें । दीपिषीष्ट । 'दीपजनपूरि॰' इसकर जहां इण हुआ तहां । अदीपि । और जहां इण् नहीं हुआ वहां सिद्ध हुआ । अदीपिष्ट । पूरीधातु आप्यायन नाम प्रीणन करनेमें वर्त्ते है । लट्में । पूर्यते । लिट्में । पुपूरे । लुङ्में 'दीपजनबुधपूरितायिप्यायिभ्यो वा इण् तनि कर्त्तरि' इससे एक जगह इण् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अपूरि । और एक जगह सिद्ध हुआ । अपूरिष्ट । तपधातु ऐश्वर्य अर्थमें वर्त्ते है । लट्में । तप्यते । लिट्में । 'लोप' पचां किल्ये चास्य' इसकर पूर्वलोप और अकारको एकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । तेपे । लुट्में अनिट् होनेसे । तप्ता । लुङ्में 'झसात्' इसकर सिद्ध हुआ । अतप्त । द्विवचनमें । अतप्साताम् । वावृतु धातु वरण अर्थमें वर्त्ते है । वावृत्यते । लिट्में । वावृतांचक्रे । लुङ्में । अवावर्तिष्ट । पदधातु गति अर्थमें वर्त्ते है । लट्में । पद्यते । लिट्में । पेदे । लुट्में । पत्ता ॥

पदोऽण्तानि ॥ २९६॥ पदेः, इण्, तनि । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ अपादि अपत्साताम् ॥ खिद दैन्ये ॥ खेत्ता ॥ विद सत्तायाम् ॥ विद्यते । वित्सीष्ट । वेत्ता । अवित्त ॥ बुध अवगमने ॥ बुध्यते । भुत्सीष्ट । दीपजनेति इण् । अबोधि । अबुद्ध ॥ युध सम्प्रहारे ॥ युध्यते । युयुधे । युत्सीष्ट । अयुद्ध ॥

भाषा–पदधातुसे कर्त्तामर्थमें इण् प्रत्यय होय तन् पर। हुए संते और सिका अपवाद होय । उदाहरण–पदधातुसे सिके स्थानमें इण् प्रत्यय करनेपर 'अत उपधायाः' लुक् इसकर सिद्ध हुआ । अपादि । और जहां इण् नहीं हुआ तहां 'झसात्' इसकर सिद्ध हुआ । अपत्त । द्विवचनमें । अपत्साताम् । खिद्धातु दीनता अर्थमें वर्त्ते है । लट्में । खिद्यते । लिट्में । चिखिदे । लुट्में अनिट् होनेसे ।

खेत्ता । लुङ्में ' झसात्, सिस्योः ' इनकर सिद्ध हुआ । आखित्त । विद्धातु सत्ता नाम विद्यमान होनेमें वर्त्ते है । लट्में । विद्यते । लिट्में । विविदे । सीष्टादिकर्में अनिट् होनेसे ' सिस्योः ' इसकर गुण न होनेसे सिद्ध हुआ वित्सीष्ट । लुट्में । वेत्ता । लुङ्में ' झसात् , सिस्योः ' इनकर सिद्ध हुआ । अवित्त । बुधधातु अवगमन नाम जाननेमें वर्त्ते है । लट्में । बुध्यते । लिट्में । बुबुधे । सीष्टादिकर्में प्रथम ' आदिजबानां० ' इसकर भकार कर पश्चात् ' खसे चपा झसानाम् ' इसकर तकार किया फिर ' सिस्योः ' इसकर सिद्ध हुआ । भुत्सीष्ट । लुङ्में ' दीपजनबुध० ' इसकर एक जगह इण् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अबोधि । और जहां इण् नहीं हुआ तहां ' झसात् , तथोर्धः , सिस्योः, झबे जबाः ' इनकर सिद्ध हुआ । अबुद्ध । द्विवचनमें ' आदिजबानां०' इसकर भकार किया फिर ' सिस्योः, खसे चपा झसानाम् ' इनकर सिद्ध हुआ । अभुत्साताम् । युधधातु संप्रहार नाम युद्ध करनेमें वर्त्ते है । लट्में । युध्यते । लिट्में । युयुधे । सीष्टादिकर्में । युत्सीष्ट । लुङ्में । अयुद्ध ॥

अनोरुध कामे ॥२९७॥ अनुरुध्यते । अनुरुरुधे । अनुरुत्सीष्ट । अनुरोद्धा । अन्वरुद्ध ॥ मन ज्ञाने ॥ मन्यते । मेने । मेनिषे । मन्ता । अमंस्त ॥ युज् समाधौ ॥ युज्यते । योक्ता । अयुक्त ॥ सृज विसर्गे ॥ सृज्यते । रारो झसे दृशाम् । स्रष्टा । असृष्ट असृक्षाताम् । लिश अल्पीभावे ॥ लिश्यते । लिक्षीष्ट । लेष्टा । अलिक्षत अलिक्षाताम् ॥ इत्यादि ॥

भाषा—अनुउपसर्गसे रुधधातु काम नाम इच्छाअर्थके विषैं वर्त्ते है । लट्में । अनुरुध्यते । लिट्में । अनुरुरुधे । सीष्टादिकर्में । अनुरुत्सीष्ट । लुङ्में । अन्वरुद्ध । द्विवचनमें । अन्वरुत्साताम् । युज्धातु समाधिमें वर्त्ते है । समाधि नाम चित्तवृत्तिके रोकनेका है । लट्में । युज्यते । लिट्में । युयुजे । सीष्टादिकर्में ' चोः कुः, खसे चपा०, क्ङि०, सिस्योः ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । युक्षीष्ट । लुङ्में ' झसात्, सिस्योः ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अयुक्त । द्विवचनमें ' चोः कुः, खसे चपा०, सिस्योः ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अयुक्षाताम् । सृजधातु विसर्ग नाम त्यागअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । सृज्यते । लिट्में । ससृजे । सीष्टादिकर्में ' सिस्योः ' इसकर गुण न होनेसे सिद्ध हुआ । सृक्षीष्ट । तादिकर्में गुण करनेके पश्चात् ' रारो झसे दृशाम् ' इससे अर्को र किया फिर ' छशषराजादेः०, ष्टुभिः० ' इनकर सिद्ध हुआ । स्रष्टा । लुङ्में ' झसात्, सिस्योः, छशष०, ष्टुभिः० ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । असृष्ट । द्विवचनमें ' सिस्योः ' इसकर गुण न करनेके पश्चात् ' छशष०, षढोः कस्से, क्ङि० ' इत्यादि-

कर सिद्ध हुआ । अशुक्षाताम् । शिशधातु । अल्पीभाव नाम बहुतका थोडा होना इस अर्थमें वर्ते है । लृट्में । शिश्यति । लिट्में । शिशिशे । सीयादिकमें ' सिस्योः, ढ्रापष०, षढो ०, कि० ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । शिक्षीष्ट । लुङ्में । ' इगुपान्त्या त्सक् ' इसकर सिद्ध हुआ । अशिक्षत । द्विवचनमें ' आति सकं लोप स्वरे ' इस कर सिद्ध हुआ । अशिक्षाताम् ॥ इत्यात्मनेपदप्रक्रिया समाप्ता ॥, मगङ्ग्सेनात्मजश्रीकाशिरामोक्तभाषया । चंद्रिकोत्तरार्द्धवृत्ती दिवाद्यात्पदमासृतम् ॥

मृष तितिक्षायाम् ॥ मृष्यति । मृष्यते । ममर्ष । ममृषे । अमर्षीत् । अमर्षिष्ट ॥ ईशुचिर् क्लेदने ॥ शुच्यति । शुच्यते । अशुचत् । अशोचीत् । अशोचिष्ट ॥ रञ्ज रागे ॥ अपिरञ्जदशेति नलोप ॥ रज्यते । रज्यति । अराङ्क्षीत् । अरक्त ॥ शप् आक्रोशे ॥ शप्यति । शप्यते । शेपतु । शेपे । शप्ता । अशाप्सीत् । अशप्त ॥ शक् मर्षणे ॥ शेकिथ शशक्थ । पुषादित्वात् ङ । अशकत् । अशक्त । सेट्कोऽयमित्येके । शकिता ॥ णह बन्धने ॥ नह्यति । नह्यते । नेहिथ ननद्ध । नत्सीष्ट । नद्धा । अनात्सीत् । अनद्ध ॥

इति दिवादय ॥

भाषा—मृषधातु तितिक्षा नाम क्षमा अर्थमें वर्ते है । मृषादि धातु उभयपद हैं । लट्में परस्मैपदके विषैं ' दिवादेर्यः ' इसकर यप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ मृष्यति । आत्मनेपदके विषैं । मृष्यते । लिट्में । ममर्ष । आत्मनेपदमें । ममृषे । लिङ्में । मृष्यात् । आत्मनेपदमें । मर्षिषीष्ट । लुङ्में । अमर्षीत् । आत्मनेपदके विषैं । अमर्षिष्ट । ईशुचिर् धातु क्लेदन अर्थमें वर्ते है । क्लेदन नाम जलादिसे जो कि शुद्धि होवे है उसका है । यह धातु इरित है । लट्में । शुच्यति, शुच्यते । लिट्में । शुशोच, शुशुचे । तादिकमें । शोचिता । लुङ्में परस्मैपदके विषैं एक जगह सिद्ध हुआ ' इरितो वा इसकर । अशुचत् । और एक जगह । अशोचीत् । आत्मनेपदमें । अशोचिष्ट । रञ्जधातु रागअर्थमें वर्ते है । लट्में ' अपिरञ्जदशसंजस्वजाम् इसकर नकारका लोप करनेके पश्चात् सिद्ध हुआ । रज्यति । आत्मनेपदमें । रज्यते । लिट्में । ररञ्ज । आत्मनेपदमें । ररञ्जे । लिङ्में ' नोलोप । रज्यात् । आत्मनेपदके विषैं । रङ्क्षीष्ट । लुङ्में । अनिटो नामि यत', चो' कु' खसे च०, कि०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अराङ्क्षीत् । द्विवचनमें ' हसात्, चो' कु, खसे च० ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अराङ्क्ताम् । आत्मनेपदके

विषैं । अरङ्क्त । शप्धातु आक्रोश नाम गाली देनेमें वर्त्ते है । लट्में । शप्यते । लिट्में । शशाप । आत्मनेपदमें एत्वपूर्वलोप करनेसे सिद्ध हुआ । शेपे । लुट्में अनिट् होनेसे सिद्ध हुआ । शप्ता । लुङ्में 'अत उपधायाः' । अशाप्सीत् । आत्मनेपदमें 'झसात्' इसकर सिद्ध हुआ । अशप्त । शक्धातु मर्षण नाम सहन करनेमें वर्त्ते है । लट्मे । शक्यति । शक्यते । लिट्में । शशाक । आत्मनेपदके विषैं । शेके । तादिकमें । शक्ता । लुङ्मे पुषादिक होनेसे परस्मैपदके विषैं सिद्ध हुआ । अशकत् । आत्मनेपदके विषैं 'झसात्' इसकर सिद्ध हुआ । अशक्त । द्विवचनमे । अशक्षाताम् । यह शक्धातु सेट् है ऐसा कोई आचार्य कहते हैं । णहधातु वन्धअर्थमें वर्त्ते है । 'आदेः ष्णः स्नः' इसकर नकार करनेके पश्चात् लट्में सिद्ध हुआ । नह्यति । नह्यते । लिट्में । ननाह । थप्मे एक जगह इट् करनेसे सिद्ध हुआ । नेहिथ । और जहां इट् नहीं हुआ । तहां 'नहो धः, तथोर्धः, झषे जवाः' इनकर सिद्ध हुआ । ननद्ध । आत्मनेपदमें । नेहे । लिङ्में । नह्यात् । आत्मनेपदमें 'नहो धः, खसे च०' इनकर सिद्ध हुआ । नत्सीष्ट । लुङ्में । 'नहो धः, अत उपधायाः' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अनात्सीत् । द्विवचनमे 'नहो धः, झसात, तयोर्धः, झषे जवाः' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अनाद्धाम् । आत्मनेपदमें । अनद्ध ॥ इति दिवादिप्रक्रिया समाप्ता ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामोक्तभाषया । चन्द्रिकोत्तरार्द्धवृत्तौ दिवादिगणमावृतम् ॥ ४ ॥

षुञ् अभिषवे ॥

भाषा—षुञ्धातु अभिषव अर्थमें वर्त्ते है । अभिषव नाम स्नान, स्नपन, पीडन और मदिराके खींचनेका है । 'ञित्स्वरितेत उभे' इसकर इस धातुसे दोनो पद होने चाहिये ॥

स्वादेर्नुः ॥२९८॥ स्वादेः, नुः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ कर्तरि चतुर्षु ॥ **नूपः ॥२९९॥** नूपः । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ नुप्रत्ययस्य उप्रत्ययस्य च गुणो भवति पिति ॥ सुनोति । सुनुते । ओर्म्वोर्वा लोपः । सुन्वः सुनुवः । सुनोति । ओर्वा हेः । सुनु । सुनवानि । सुनवै । असुनोत् असुनुताम् । सुषाव सुषुवतुः । सोषीष्ट । असावीत् । स्तुसुधूञ्भ्यां पे सेरिट् । असोष्ट ॥ षिञ् वन्धने ॥ सिनोति । सिनुते । सिसाय । सिष्ये । सेष्यति । असैषीत् । असेष्ट ॥ शिञ् निशाने ॥

शेता । अशेष्ट ॥ डुमिञ् प्रक्षेपे ॥ मीनातिमिनोतीत्यात्वम् । ममौ मिम्यतुः । ममिथ ममाथ । मिम्ये । अमासीत् । अमास्त ॥ चिञ् चयने ॥ चिनोमि ॥

भाषा–षुञादिक धातुओंसे नुप्रत्यय होय कर्तार्थवाले लट् आदिक चार लकार पर हुए संते । अप्प्रत्ययका अपवाद होय । उदाहरण–षुञ्धातुसे 'आदेः ष्णः सः' इसकर सकार करनेसे अनन्तर नुप्रत्यय करनेपर लट्में तिप्के विषै "नुपः" इस सूत्रकर गुण करनेपर रूप सिद्ध हुआ । सुनोति । आत्मनेपदके विषै । सुनुते । द्विवचनमें 'हुश्नुवोरेवापि' इसकर वकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । सुन्वाते । बहुवचनमें । 'आतोऽनन्तोऽप्यनत' इसकर अते करनेपर रूप सिद्ध हुआ । सुन्वते । वहे महे प्रत्ययोंके विषै 'ओर्म्वोर्वा लोपः' इसकर सिद्ध हुआ । सुन्वहे, सुनुवहे । सुन्महे, सुनुमहे । लोट्में । सुनोतु, सुनवात् । हिके विषै 'ओर्वा हेः' इसकर सिद्ध हुआ । सुनु । उत्तमभागमें गुण करनेके अनन्तर 'ओ अव्' इसकर सिद्ध हुआ । सुनवानि । सुनवाव । सुनवाम । लङ्में । असुनोत् । द्विवचनमें । असुनुवाम् । बहुवचनमें । असुन्वन् । आत्मनेपदके विषै । असुनुत । लिट्में । सुषाव । द्विवचनमें 'नानप्योर्वे' इसकर सिद्ध हुआ सुषुवतुः । आत्मनेपदमें । सुषुवे । लिङ्में । सुयात्, सोषीष्ट । लुङ्में 'स्तुसुधूञ्भ्यः पे सेरिट्' इसकर परस्मैपदके विषै इट् करनेपर "धातोर्नामिन" इसकर सिद्ध हुआ । असावीत् । द्विवचनमें । असाविष्टाम् । आत्मनेपदके विषै । असोष्ट । षिञ्धातु बन्धनअर्थमें वर्त्ते है । 'स्वादेर्नुः' इसकर नुप्रत्यय करनेके अनन्तर तिप्में 'नुपः' इसकर रूप सिद्ध हुआ । सिनोति । आत्मनेपदमें । सिनुते । शेष वचनोंमें सुधातुके समान रूप जानने । लिट्में । सिषाय । द्विवचनमें 'नुधातो' इसकर यकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । सिष्यतुः । आत्मनेपदमें । सिष्ये । लिङ्में 'ये' इसकर सिद्ध हुआ । सियात् । आत्मनेपदमें । सेषीष्ट । लुङ्में 'धातोर्नामिनः' इसकर वृद्धि करनेपर रूप सिद्ध हुआ । असैषीत् । आत्मनेपदमें । असेष्ट । शिञ्धातु निशान नाम तीक्ष्ण करनेमें वर्त्ते है । लट्में । शिनोति । शिनुते । समस्त लकारोंमें सिधातुके समान रूप जानने । डुमिञ् प्रक्षेपअर्थमें वर्त्ते है । इसमें डुकार और अकार इत्संज्ञक है । लट्में । मिनोति । मिनुते । लिट्में णप्के विषै 'मीनातिमिनोतिदीङां गुणवृद्धिविषये क्यपि चात्वम्' इसकर आकार करनेके अनन्तर द्वित्व करनेके पश्चात् 'अतो णप् औ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । ममौ । द्विवचनमें । मिम्यतुः । थप्में आकार करनेके अनन्तर एक जगह इट् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । ममिथ, ममाथ । आत्मनेपदके विषै । मिम्ये । लिङ्में । मीयात् । सीयुडादिकमें आकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । मासीष्ट । लुङ्में

विषैं परस्मैपदमें 'यमिरमिनमातां सक् सेरिट् पे' इसकर सिद्ध हुआ। अमासीत्। आत्मनेपदके विषैं। अमास्त। चिञ्धातु चयन नाम रचनाविशेषमें वर्त्ते है। लट्में। चिनोति। चिनुते॥

चिनोतेः सणादौ किर्वा॥ २००॥ चिनोतेः सणादौ, किः, वा। चतुष्पदमिदं सूत्रम्॥ चिकाय चिचाय। चिच्यतुः। अचैषीत्। अचेष्ट॥ स्तृञ् आच्छादने॥ स्तृणोति स्तृणुतः स्तृण्वन्ति। तस्तार। गुणोऽर्तिसंयोगाद्योः। तस्तरतुः। ऋदन्तात्थपो नेट्। तस्तर्थ। तस्तरे। स्तर्यात्॥

भाषा–चिञ्धातुको कि आदेश होय लिट् और सप्रत्यय पर हुए संते। उदाहरण–चिधातुको णप्के विषैं कि आदेश करनेपर 'द्विश्च, कुहोश्चुः, धातोर्नामिनः' इत्यादिकर सिद्ध हुआ। चिकाय। द्विवचनमें अनेक स्वर असंयोगपूर्व होनेसे इकारको यकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ। चिक्यतुः। आत्मनेपदके विषैं चिक्ये। लिङ्में। चीयात्। आत्मनेपदमें। चेषीष्ट। लुङ्में। अचैषीत्। आत्मनेपदमे। अचेष्ट। स्तृञ् धातु आच्छादन नाम ढकनेमें वर्त्ते है। लट्में। स्तृणोति। स्तृणुतः। स्तृण्वन्ति। स्तृणोषि। स्तृणुथः। स्तृणुथ। स्तृणोमि। स्तृणुवः, स्तृण्वः। स्तृणुमः, स्तृण्मः। आत्मनेपदमें। स्तृणुते। लिट्में। तस्तार। द्विवचनमें 'गुणोऽर्त्तिसंयोगाद्योः' इसकर सिद्ध हुआ। तस्तरतुः। थप्में 'ऋदन्तात्थपो नेट्' इसकर इट् न होनेसे रूप सिद्ध हुआ। तस्तर्थ। आत्मनेपदम। तस्तरे। लिङ्में 'गुणोऽर्तिसंयो०' इसकर सिद्ध हुआ। स्तर्यात्। आत्मनेपदमे स्तृ-सीष्ट ऐसा स्थित है।

ऋदन्तात्संयोगादेः सिस्योरिड्वाति॥ २०१॥ ऋदंतात्, संयोगादेः, सिस्योः, इट्, वा, आति। षट्पदमिदं सूत्रम्॥ स्तरिषीष्ट स्तृषीष्ट। अस्तारीत्। अस्तरिष्ट। अस्तृत। लोपो ह्रस्वाज्झसे॥ कृञ् हिंसायाम्॥ कृणोति कृणुते। चकर्थ। चकृवहे। अकार्षीत्। अकृत॥ वृञ् वरणे॥ ववार वव्रतुः॥

भाषा–संयोगसंज्ञा है आदिमें जिसके ऐसा ऋकारान्त धातुसे परे सिपत्यय और सीको विकल्पकरके इट् होय आत्मनेपदके विषैं। उदाहरण–स्तृ-सीष्ट। इसमें संयोगादि ऋकारान्त स्तृधातुसे परे सीष्टप्रत्यय विद्यमान है इस कारण एक जगह इट् करनेपर 'गुणः, ऋ अर्' इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ। स्तरिषीष्ट। और जहां इट् नहीं

शेता । अशेष्ट ॥ डुमिञ् प्रक्षेपे ॥ मीनातिमिनोतीत्यात्वम् । ममौ मिम्यतुः । ममिथ ममाथ । मिम्ये । अमासीत् । अमास्त ॥ चिञ् चयने ॥ चिनोमि ॥

भाषा—षुञादिक धातुओंसे नुप्रत्यय होय कर्त्ताअर्थवाले लट् आदिक चार लकार पर हुए संते । अप्प्रत्ययका अपवाद होय । उदाहरण—षुञ्धातुसे 'धात्वादेः षः सः' इसकर सकार करनेसे अनन्तर नुप्रत्यय करनेपर लट्में तिप्के विषै 'नूपः' इस सूत्रकर गुण करनेपर रूप सिद्ध हुआ । सुनोति । आत्मनेपदके विषैं । सुनुते । द्विवचनमें 'ह्न्वोरेवापि' इसकर वकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । सुन्वाते । बहुवचनमें । 'आतोऽन्तोऽदनतः' इसकर अते करनेपर रूप सिद्ध हुआ । सुन्वते । वहे महे प्रत्ययोंके विषैं 'मोर्व्मोर्वा लोपः' इसकर सिद्ध हुआ । सुन्वहे, सुनुवहे । सुन्महे, सुनुमहे । लोट्में । सुनोतु, सुनुतात् । हिके विषैं 'ओर्वा हेः' इसकर सिद्ध हुआ । सुनु । उत्तमभागमें गुण करनेके अनन्तर 'ओ अव्' इसकर सिद्ध हुआ । सुनवानि । सुनवाव । सुनवाम । लङ्में । असुनोत् । द्विवचनमें । असुनुताम् । बहुवचनमें । असुन्वन् । आत्मनेपदके विषैं । असुनुत । लिट्में । सुषाव । द्विवचनमें 'नानप्योर्वे' इसकर सिद्ध हुआ सुषुवतुः । आत्मनेपदमें । सुषुवे । लिङ्में । सुयात्, सोषीष्ट । लुङ्में 'स्तुसुधूञ्भ्यो पे सेरिट्' इसकर परस्मैपदके विषैं इट् करनेपर 'धातोर्नामिनः' इसकर सिद्ध हुआ । असावीत् । द्विवचनमें । असाविष्टाम् । आत्मनेपदके विषैं । असोष्ट । षिञ्धातु बन्धनअर्थमें वर्त्ते है । 'स्वादेर्नुः' इसकर नुप्रत्यय करनेके अनन्तर तिप्में 'नूप' इसकर रूप सिद्ध हुआ । सिनोति । आत्मनेपदमें । सिनुते । शेष वचनोंमें सुधातुके समान रूप जानने । लिट्में । सिषाय । द्विवचनमें 'नुधाचोः' इसकर यकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । सिष्यतुः । आत्मनेपदमें । सिष्ये । लिङ्में 'ये' इसकर सिद्ध हुआ । सियात् । आत्मनेपदमें । सेषीष्ट । लुङ्में 'धातोर्नामिनः' इसकर वृद्धि करनेपर रूप सिद्ध हुआ । असैषीत् । आत्मनेपदमें । असेष्ट । शिञ्धातु निशान नाम तीक्ष्ण करनेमें वर्त्ते है । लट्में । शिनोति । शिनुते । समस्त लकारोंमें सिधातुके समान रूप जानने । डुमिञ् प्रक्षेपअर्थमें वर्त्ते है । इसमें डुकार और ञकार इत्संज्ञक है । लट्में । मिनोति । मिनुते । लिट्में णप्के विषैं 'मीनातिमिनोतिदीङां गुणवृद्धिविषये क्यपि चात्वम्' इसकर आकार करनेके अनन्तर द्वित्व करनेके पश्चात् 'आतो णप् डौ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । ममौ । द्विवचनमें । मिम्यतुः । थप्में आकार करनेके अनन्तर पक्षमें इट् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । ममिथ, ममाथ । आत्मनेपदके विषैं । मिम्ये । लिङ्में । मीयात् । सीयादिकमें आकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । मासीष्ट । लुङ्के

प्रत्ययको एक जगह इट्का आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । वरिषीष्ट । और जहां इट् आगम नहीं हुआ तहां ' उः ' इसकर गुण न होनेपर सिद्ध हुआ । वृषीष्ट । तादिकमें ' वृङ्वृञ्ऋदन्तानां वा ' इसकर एक जगह सिद्ध हुआ । वरीता । और जहां दीर्घ नहीं हुआ तहां । वरिता । लृट्मे । वरीष्यति । वरिष्यते । परस्मैपदमें सेट् होनेसे ' धातोर्नामिनः ' इसकर सिद्ध हुआ । अवारीत् । द्विवचनमे ' पे सेरिटो न दीर्घः ' इसकर दीर्घ न होनेसे सिद्ध हुआ । अवारिष्टाम् । आत्मनेपदमे एक जगह इट् हुआ तहां सिद्ध हुआ । अवरिष्ट । और जहां दीर्घ हुआ तहां सिद्ध हुआ । अवरीष्ट । और जहा ' वृङ्वृञ्ऋदन्तात्सिस्योरिड्वाति ' इसकर इट् नहीं हुआ । तहां ' उ ' इसकर दीर्घ न होनेसे रूप सिद्ध हुआ । अवृत । धुञ्धातु कंपन-अर्थमें वर्त्ते है । लट्मे । धुनोति । धुनुते । लिट्में । दुधाव । द्विवचनमें ' नानप्योर्विः ' इसकर सिद्ध हुआ । दुधुवतुः । थप्मे । दुधविथ, दुधोथ । आत्मनेपदमें । दुधुवे । लिङ्मे । धूयात् । धोषीष्ट । लुङ्मे । अधौषीत् । अधोष्ट । यह धातु दीर्घान्तभी है । लट्में । धूनोति । धूनुते । लिट्में । दुधाव । द्विवचनमें । दुधुवतुः । थप्में ' स्वरतिसूतिसूयतिधूञां० ' इसकर विकल्पकरके इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । दुधोथ, दुधविथ । उत्तमभागमें ' स्वरतिसूतिसूयतिधूञां किद्वसादेर्णादेर्नित्यमिट् ' इसकरके नित्य इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । दुधुविव । दुधुविम । आत्मनेपदमे । दुधुवे । लिङ्मे । धोषीष्ट, धविषीष्ट । लुङ्म परस्मैपदके विषे ' स्तुसुधूञां पे सेरिट् ' इसकर सिद्ध हुआ । अधावीत् । द्विवचनमें । अधाविष्टाम् । आत्मनेपदके विषें इट्पक्षमे । अधविष्ट । और अनिट्पक्षमें । अधोष्ट ॥ इत्युभयपदं समाप्तम् ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामोक्तभाषया । चंद्रिकोत्तरार्द्धवृत्तौ स्वाद्यात्पपदमावृतम् ॥

टुदु उपतापे ॥ दुनोति । दुदाव दुदुवतुः । अदौषीत् । हि गतौ वृद्धौ च ॥ हिनोति ॥

भाषा—टुदुधातु उपताप नाम संतापअर्थमे वर्त्ते है । इसमे टु इत्संज्ञक है । लट्मे ' स्वादेर्नुः, नूपः ' इनकर सिद्ध हुआ । दुनोति । द्विवचनमें । दुनुतः । बहुवचनमें । दुन्वन्ति । लिट्में ' द्विश्च ' इसकर द्वित्व करनेके अनन्तर ' कुहोश्चुः, झपानां जबचपाः ' इनकर रूप स्थित हुआ जि-हि-अ ॥

पूर्वाद्धिनोतेर्हस्य घो न त्वङि ॥ २०४ ॥ पूर्वात् हिनोतेः हस्य, घः न तु अङि । सप्तपदमिदं सूत्रम् ॥ जिघाय जिघ्यतुः । अहैषीत् ॥ आप्लृ व्याप्तौ ॥ आप्नोति आप्नुवन्ति । आप्नोमि आप्नुवः आप्नुमः । आप्नुहि । आप आपतुः । आप्ता । आपत् ॥ शक्लृ शक्तौ ॥

हुआ वहां 'उः' इसकर गुण न होनेसे रूप सिद्ध हुआ । स्तृसीष्ट । आदिकमें । स्तर्ता लृट्में इन्नृत स्यप' इसकर । स्तरिष्यति । स्तरिष्यते । लुङ्में परस्मैपदमें 'धातोर्नामिन' इसकर सिद्ध हुआ । अस्तार्षीत । आत्मनेपदमें जहां 'ऋदन्तात्सयोगादेः०' इसकर इट् हुआ । अस्तरिष्ट । और जहां इट् नहीं किया वहां 'उः' इसकर गुण न कर 'लोपो ह्रस्वात्' इसकर सिद्ध हुआ । अस्तृत । द्विवचनमें । अस्तृषाताम् । कृञ् धातु हिंसा अर्थमें वर्त्ते है । लट्में । कृणोति । कृणुते । लिट्में । चकार । द्विवचनमें चकतुः । थप् अकारान्त होनेसे इट् नहीं होनेपर रूप सिद्ध हुआ । चकर्थ । उत्तम भागके द्विवचन बहुवचनमें 'क्र्यादिर्णोर्ते' इसकर इट् न करनेपर रूप सिद्ध हुआ । चकृव । चकृम । आत्मनेपदमें । चक्रे । लिङ्में 'ऋतो रिङ्' इसकर सिद्ध हुआ । क्रियात् । सीष्टादिकमें 'उः' इसकर गुण न होनेसे रूप सिद्ध हुआ । कृषीष्ट । लुङ्में अकार्षीत् । आत्मनेपदमें 'उः' 'लोपो ह्रस्वात्' इसकर सिद्ध हुआ । अकृत । द्विवचनमें । अकृषाताम् । वृञ्धातु वरणअर्थमें वर्त्ते है । वृञ्धातुके रूप चार लकारोंमें वृधातुके समान जानने । लिट्में । ववार । द्विवचनमें ववतुः । थप्में ववृ-थ ऐसा स्थित है ॥

वृञस्थप इट् ॥ २०२ ॥ वृञः, थपः, इट् । त्रिपदमिदं सूत्रम् । ववरिथ ।

भाषा—वृञ्धातुसे परे थप्को इट् होय । उदाहरण—ववृ-थ । इसमें थप्को इट् आगम करनेपर गुण करनेके पश्चात् रूप सिद्ध हुआ । ववरिथ । आत्मनेपदमें । वव्रे । लिङ्में । व्रियात् । आत्मनेपदमें वृ-सीष्ट ऐसा स्थित है ॥

वृङ्वृञ्ऋदन्तात्सिस्योरिड्वाति ॥ २०३ ॥ वृङ्वृञ्ऋदन्तात्, सिस्योः, इटः, वा, आति । पञ्चपदमिदं सूत्रम् ॥ वरिषीष्ट वृषीष्ट । वरिता वरीता । वरिष्यति वरीष्यति । अवारीत् अवारिष्टाम् । अवरिष्ट अवरीष्ट । अवृत ॥ धुञ् कम्पने ॥ धुनोति धुनुते । दुधाव दुधुवहे । धोष्यति । अधौषीत् । अधोष्ट । दीर्घान्तोऽप्ययम् । धूनोति । स्तुसुधूञ्भ्यामितीट् । अधावीत् । स्वरतिसूतीति वेट् । अधविष्ट अधोष्ट ॥ इति स्वादयः ॥

भाषा—वृङ् वृञ् और ऋकारान्त धातु इनसे परे सिच्स्य और सीको विकल्पकरके इट् होय आत्मनेपदके विषे । उदाहरण—वृ-सीष्ट । इसमें वृञ्धातुसे परे सीको

प्रत्ययको एक जगह इट्का आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ। वरिषीष्ट। और जहां इट् आगम नहीं हुआ तहां 'उः' इसकर गुण न होनेपर सिद्ध हुआ। वृषीष्ट। तादिकमें 'वृङ्वृञ्ऋदन्तानां वा' इसकर एक जगह सिद्ध हुआ। वरीता। और जहां दीर्घ नहीं हुआ तहां। वरिता। लट्में। वरीष्यति। वरिष्यते। परस्मैपदमें सेट् होनेसे 'धातोर्नामिनः' इसकर सिद्ध हुआ। अवारीत्। द्विवचनमें 'पे सेरिटो न दीर्घः' इसकर दीर्घ न होनेसे सिद्ध हुआ। अवारिष्टाम्। आत्मनेपदमें एक जगह इट् हुआ तहां सिद्ध हुआ। अवरिष्ट। और जहां दीर्घ हुआ तहां सिद्ध हुआ। अवरीष्ट। और जहा 'वृङ्वृञ्ऋदन्तात्सिस्योरिङ्वाति' इसकर इट् नहीं हुआ। तहां 'उ' इसकर दीर्घ न होनेसे रूप सिद्ध हुआ। अवृत। धुञ्धातु कंपन-अर्थमें वर्त्ते है। लट्मे। धुनोति। धुनुते। लिट्मे। दुधाव। द्विवचनमें 'नानप्योर्वः' इसकर सिद्ध हुआ। दुधुवतुः। थप्मे। दुधविथ, दुधोथ। आत्मनेपदमे। दुधुवे। लिङ्मे। धूयात्। धोषीष्ट। लुङ्मे। अधौषीत्। अधोष्ट। यह धातु दीर्घान्तभी है। लट्में। धूनोति। धूनुते। लिट्में। दुधाव। द्विवचनमे। दुधुवतुः। थप्में 'स्वरति-सूतिसूयतिधूञां०' इसकर विकल्पकरके इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ। दुधोथ, दुध-विथ। उत्तमभागमें 'स्वरतिसूतिसूयतिधूञां किद्वसादेर्णादेर्नित्यमिट्' इसकरके नित्य इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ। दुधुविव। दुधुविम। आत्मनेपदमे। दुधुवे। लिङ्मे। धोषीष्ट, धविषीष्ट। लुङ्म परस्मैपदके विषैं 'स्तुसूधूञां पे सेरिट्' इसकर सिद्ध हुआ। अधावीत्। द्विवचनमें। अधाविष्टाम्। आत्मनेपदके विषैं इट्पक्षमें। अधविष्ट। और अनिट्पक्षमें। अधोष्ट॥ इत्युभयपदं समाप्तम्॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामो-क्तभाषया। चंद्रिकोत्तरार्द्धवृत्तौ स्वाद्यात्पंपदमावृतम्॥

टुदु उपतापे॥ दुनोति। दुदाव दुदुवतुः। अदौषीत्। हि गतौ वृद्धौ च॥ हिनोति॥

भाषा—टुदुधातु उपताप नाम संतापअर्थमें वर्त्ते है। इसमे टु इत्संज्ञक है। लट्में 'स्वादेर्नुः, नूपः' इनकर सिद्ध हुआ। दुनोति। द्विवचनमें। दुनुतः। बहुव-चनमें। दुन्वान्ति। लिट्में 'द्विश्च' इसकर द्वित्व करनेके अनन्तर 'कुहोश्चुः, झपानां जबचपाः' इनकर रूप स्थित हुआ जि-हि-अ॥

पूर्वाद्धिनोतेर्हस्य घो न त्वङि॥ ३०४॥ पूर्वात् हिनोतेः हस्य, घः न तु अङि। सप्तपदमिदं सूत्रम्॥ जिघाय जिघ्यतुः। अहेषीत्॥ आप्लृ व्याप्तौ॥ आप्नोति आप्नुवन्ति। आप्नोमि आप्नुवः आप्नुमः। आप्नुहि। आप आपतुः। आप्ता। आपत्॥ शक्लृ शक्तौ॥

शक्नोति । शशाक । शेकतु । शक्ता । अशकत् ॥ राध साध स-
सिद्धौ ॥ राध्नोति । राध्नुवन्ति ॥

भाषा–द्वित्व होनेपर पूर्वरूपसे पर हिधातुके हकारको घकार होय । उदाहरण–जि हि–अ । इसमें पूर्वरूपसे हिधातुके हकारको घकार करनेके अनन्तर 'मावोर्नामिन', ऐ आय्' इनकर सिद्ध हुआ । जिघाय । द्विवचनमें असंयोग पूर्व होनेसे यकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । जिघ्यतु । थप्में । जिघयिथ, जिघेथ । लिङ्में । हीयात् । लुङ्में । अहैषीत् । आप्लृधातु व्याप्तिअर्थमें वर्त्ते है । इसमें लृकार इत्संज्ञक है । लट्में । आप्नोति । बहुवचनमें संयोगपूर्व होनेसे 'नुधातो' इसकर उव् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । आप्नुवन्ति । उत्तमभागके द्विवचन बहुवचनमें संयोगपूर्व होनेसे 'मोर्व्मोर्वा लोप' इसकर उकारका लोप नहीं होनेपर रूप सिद्ध हुआ । आप्नुव । आप्नुम । लोट्में । आप्नोतु । हिमें संयोगपूर्व होनेसे हिका लोप न होनेसे रूप सिद्ध हुआ । आप्नुहि । लिट्में । आप । लुट्में अनिट् होनेसे सिद्ध हुआ । आप्ता । लुङ्में 'लिपुद्यादेर्ङः' इसकर ङप्रत्यय करनेसे रूप सिद्ध हुआ । आपत् । शक्लृधातु शक्तिअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । शक्नोति । शक्नुतः । शक्नुवन्ति । लिङ्में । शक्नुयात् । लोट्में । शक्नोतु, शक्नुतात् । शक्नुताम् । शक्नुवन्तु । शक्नुहि । लङ्में । अशक्नोत् । अशक्नुताम् । अशक्नुवन् । लिट्में । शशाक । द्विवचनमें 'लोपः पचां॰' इसकर सिद्ध हुआ । शेकतु । थप्में मकारवान् होनेसे विकल्पकरके इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । शेकिथ, शशक्थ । लिङ्में । शक्यात् लुट्में । शक्ता । लुङ्में 'लिपुद्यादेर्ङः' इसकर सिद्ध हुआ । अशकत् । राध साध संसिद्धि अर्थमें वर्त्ते हैं । लट्में । राध्नोति । बहुवचनमें । राध्नुवन्ति । लिङ्में । राध्नुयात् । लोट्में । राध्नोतु । लङ्में । अराध्नोत् । लिट्में । रराध । द्विवचनमें रराधअतुस् ऐसा स्थित है ॥

राधो हिंसायामेत्वपूर्वलोपौ किति लिटि सेटि थपि च ॥ २०५ ॥

राधः, हिंसायाम्, एत्वपूर्वलोपौ, किति, लिटि, सेटि, थपि, च । अष्टपदमिदं सूत्रम् ॥ रराध रेधतुः । रेधिथ । अरा त्सीत् ॥ ञिधृषा प्रागल्भ्ये ॥ धृष्णोति । दधर्ष । अधर्षीत् ॥ दम्भु दम्भे । दभ्नोति ॥

भाषा–हिंसा अर्थमें राधधातुको एकार और पूर्वलोप होय कित्संज्ञक लिट्प्रत्यय तथा सेट् थप् पर हुए सते । उदाहरण–राध् अतुस् । इसमें राधधातुका पूर्वलोप तथा एकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । रेधतुः । थप्में । रेधिथ । लुङ्में ।

अनिट् होनेसे ' तथोर्धः, झबे जबाः ' इनकर सिद्ध हुआ । राद्धा । लुङ्में ' अत उपधायाः, खसे चपा झसानाम् ' इनकर सिद्ध हुआ । अरात्सीत् । द्विवचनमें ' झसात्, तथोर्धः, झबे जबाः' इनकर सिद्ध हुआ । आराद्धाम् । ञिधृषधातु प्रागल्भ्य अर्थमें वर्त्ते है । प्रागल्भ्य नाम धृष्टताका है इसमे ञिकार और आकार इत्संज्ञक हैं । लट्में । धृष्णोति । लिट्मे । दधर्ष । द्विवचनमें । दधृषतुः । थप्‌मे दधर्षिथ । लुट्में । धर्षिता । लुङ्में । अधर्षीत् । द्विवचनमे । अधर्षिष्टाम् । दम्भुधातु दम्भ करनेमे वर्त्ते है । दम्भ नाम लोकोंके ठगनेके लिये विहित कर्मके अनुष्ठानका है । दम्भधातुसे नुप्रत्यय करनेके अनन्तर ' नोलोपः ' इसकर सिद्ध हुआ । तिप्‌मे । दभ्नोति । लिट्में ॥

श्रन्थिग्रन्थिदम्भिभ्यो लिटः कित्त्वं वा ॥३०६॥ श्रन्थिग्रन्थिदम्भिभ्यः, लिटः, कित्त्वं, वा । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ दम्भेर्लिटःचेत्वपूर्वलोपौ । ददम्भ । देभतुः ददम्भतुः । देभिथ ददम्भिथ । अदम्भीत् ॥ ऋधु वृद्धौ ॥ आनर्द्ध । नुगशाम् । आनृधतुः । अर्द्धिता ॥ क्षि हिंसायाम् ॥ क्षिणोति क्षिण्वन्ति । क्षेता । अक्षैषीत् ॥ इति पम् ॥

भाषा—श्रन्थि, ग्रन्थि और दम्भिधातु इनसे परे लिट्को विकल्पकरके किद्भाव होता है दम्भधातुको किन्‌लिट्के विषै एकार पूर्वलोप होय । उदाहरण—लिट्के प्रथमवचनमें जहां कित्संज्ञा हुई तहां पूर्वलोप एकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । देभ । और जहा कित्संज्ञा नहीं हुई तहा सिद्ध हुआ । ददम्भ । द्विवचनमें कित्संज्ञा होनेपर ' नोलोपः ' इसकर नकारका लोप करनेके अनन्तर एकार पूर्वलोप कर रूप सिद्ध हुआ । देभतुः । और कित्संज्ञा नहीं हुई तहां सिद्ध हुआ । ददम्भतुः । थप्‌में कित्संज्ञा होनेपर सिद्ध हुआ । देभिथ । और जहां कित्संज्ञा नहीं हुई तहां सिद्ध हुआ । ददम्भिथ । लिङ्मे । दभ्यात् । लुट्में । दम्भिता । लुङ्में अदम्भीत् । ऋधुधातु वृद्धि अर्थमे वर्त्ते है । लट्में । ऋध्नोति । लिट्मे ' आभ्यासेर्णादौ, नुगशाम् ' इनकर पूर्वको नुगागम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । आनर्ध । द्विवचनमें । आनृधतुः । तादिकमे । अर्धिता । लुङ्में । आर्द्धीत् । क्षिधातु हिंसा अर्थमें वर्त्ते है । लट्में । क्षिणोति । बहुवचनमें । क्षिण्वन्ति । उत्तमभागमें । क्षिणोमि । क्षिणुवः, क्षिण्वः । क्षिणुमः , क्षिण्मः । लिङ्मे । क्षिणुयात् । लोट्में । क्षिणोतु । हिमें ' ओर्वा हेः ' इसकर सिद्ध हुआ । क्षिणु । लङ्में । अक्षिणोत् । लिट्में । चिक्षाय । द्विवचनमे संयोगपूर्व होनेसे । चिक्षियतुः । लुट्में । क्षेता । लुङ्में । अक्षैषीत् ॥ इति पंप्रक्रिया समाप्ता ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामोक्तभाषया । चन्द्रिकोत्तरार्द्धवृत्तौ स्वादिपंपदमावृतम् ॥

अशूङ् व्याप्तौ सघाते च ॥ अश्नुते । नुगशाम् । आनशे । अशिपीष्ट । अक्षीष्ट । अशिता अष्टा । आशिष्ट आक्षाताम् ॥ ष्टिघ आस्कन्दने ॥ स्तिघ्नुते स्तिघ्नुवाते । तिष्टिघिध्वे । अस्तेघिष्ट ॥ इति स्वादयः ॥

भाषा—अशूङ्धातु व्याप्ति और सघात नाम समूहअर्थमें वर्त्ते है । इसमें ऊकार इत्संज्ञक है ङित् होनेसे आत्मनेपद करनेपर 'स्वादेर्नुः' इसकर रूप सिद्ध हुआ । अश्नुवे । द्विवचनमें संयोगपूर्व होनेसे उव् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अश्नुवाते । बहुवचनमें 'आतोन्तोऽदनतः' इसकर अन्तेके स्थानमें अते करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अश्नुवते । लिट्में 'नुगशाम्' इसकर पूर्वको नुक् करनेपर 'आम्वोर्णोदी' इसकर रूप सिद्ध हुआ । आनशे । सेवचनमें 'ऊदितो वा' इसकर एक जगह इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । आनशिषे । और जहां इट् नहीं हुआ वहां 'छशषराजादे०, षढो०, कि०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । आनक्षे । ध्वेवचनमें इट्पक्षमें । आनशिध्वे । अनिट्पक्षमें 'छशषरा०, धुमि०' इनकर रूप स्थित हुआ आनष् है फिर 'झबे जबा' इसकर मूर्धस्थान सवर्ण होनेसे षकारको डकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । आनड्ढ्वे । सीयादिकमें सेट्पक्षमें । अशिपीष्ट । अनिट्पक्षमें 'छशष०, षढोः०, कि०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अक्षीष्ट । लुङ्में इट्पक्षमें । आशिष्ट । आशिषाताम् । और अनिट्पक्षमें 'ससात्, छशष०, धुमि०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । आष्ट । द्विवचनमें 'छशष०, षढो०, कि०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । आक्षाताम् । ष्टिघधातु आस्कन्दन नाम संग्राम करनेमें वर्त्ते है । 'आदेः ष्णः स्नः' इसकर सकार करनेके अनन्तर लट्में । रूप सिद्ध हुआ । स्तिघ्नुते । स्तिघ्नुवाते । स्तिघ्नुवते । लिट्में । तिष्टिघे । सेमें । तिष्टिघिषे । ध्वेमें । तिष्टिघिध्वे । सीयादिकमें सेट् होनेसे । स्तेघिषीष्ट । लुङ्में । अस्तेघिष्ट ॥ इति स्वादयः ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामोक्तभाषया । चान्द्रिकोत्तरार्द्धवृत्ती स्वादेरु-त्पदमावृतम् ॥ ५ ॥

रुधिरावरणे ॥

भाषा—रुधिर् धातु आवरण नाम ढकनेमें वर्त्ते है । यह धातु इर् इत्वाला है ॥

रुधादेर्नम् ॥२०७॥ रुधादेः, नम् । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ रुधादेर्नम् कर्तरि चतुर्षु ॥ रुणद्धि । नमसोऽस्य । रुन्धः रुन्धन्ति । रुणत्सि । रुन्धे रुन्धाते । अरुधत् अरुत्सीत् ॥ भिदिर् विदारणे ॥ अभिदत् अभैत्सीत् अभित्त ॥ छिदिर् द्वैधीकरणे ॥ अच्छिदत् अच्छैत्सीत् अच्छित्त ॥

उकार इत् इत्संज्ञक हैं । छृद्धातुके समानही तृद्धातुके रूप जानने ॥ इत्युभयपदप्रक्रिया समाप्ता ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामेण साधितम् । चान्द्रिकोत्तरार्द्धवृत्तौ रुधादेरुभयात्मकम् ॥

शिष्लृ विशेषणे ॥ शिनष्टि शिंष्टः शिंषन्ति । शेष्टा शेक्ष्यति । अशिषत् ॥ पिष्लृ सञ्चूर्णने ॥ पिनष्टि । पेक्ष्यति । अपिषत् ॥ भञ्जो आमर्दने ॥ भनक्ति । बभञ्जिथ बभंक्थ । भङ्क्ता । अभाङ्क्षीत् ॥ भुज पालनाभ्यवहारयोः ॥ भुनक्ति भुङ्क्तः । अभुनक् अभुनग् । अभौक्षीत् ॥ तृह हिंसि हिंसायाम् ॥

भाषा–शिष्लधातु विशेषता करनेमे वर्त्ते है । इसमें लकार इत् है । 'रुधादेर्नम्' इसकर नम् प्रत्यय करनेके अनन्तर 'ष्टुभिः' इसकर सिद्ध हुआ । शिनष्टि । द्विवचनमे 'नमसोऽस्य' इसकर अकारका लोप करनेके अनन्तर रूप सिद्ध हुआ । शिंष्टः । वहुवचनमे । शिंषन्ति । मध्यमभागमे 'षढोः, क्रि०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । शिनक्षि । शिंष्ठः । शिंष्ठ । उत्तमभागमे । शिनष्मि । शिंष्वः । शिंष्मः । लिङ्में । शिंष्यात् । लोट्मे । शिनष्टु । हिमें 'झसाद्धिर्हेः' इसकर हिको धि किया फिर 'ष्टुभिः०' इसकर ढकार किया फिर 'झबे जवाः' इसकर स्थानसवर्ण होनेसे षकारके स्थानमें डकार करनेपर 'ष्टुभिः' इसकर नकारको णकार किया फिर 'हसात्परस्य झसस्य लोपो वा सवर्णे झसे' इसकर रूप सिद्ध हुआ । शिण्ड्ढि, शिण्ढि । लङ्मे । 'दिस्योर्हसात्' इसकर दिप्का लोप करनेके अनन्तर 'वावसाने' इसकर रूप सिद्ध हुआ । अशिनड्, अशिनट् । लिट्मे । शिशेष । लुट्मे । शेष्टा । लट्में । शेक्ष्यति लुङ्मे 'लित्पुषादेर्ङः' इसकर ङप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अशिषत् । पिष्लधातु चूर्ण करनेमें वर्त्ते है । इसी प्रकार पिष्लधातुके रूप जानने । भञ्जोधातु आमर्दन नाम टुकडा २ करनेमे वर्त्ते है । इसमें ओकार इत्संज्ञक है । समृप्रत्यय करनेके अनन्तर 'नमः' इसकर उपधाभूत नकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । भनक्ति । द्विवचनमें । भंक्त । वहुवचनमें । भञ्जन्ति । मध्यमभागमें । भनक्षि भङ्क्थः भङ्क्थ । उत्तमभागमें भनज्मि । भंज्वः भंज्मः । लिङ्में । भंज्यात् । लोट्में । भनक्तु । लङ्में । अभनक्, अभनग् । लिट्मे । बभंज । द्विवचनमें । बभञ्जतुः । थप्में । बभञ्जिथ, बभङ्क्थ । लिङ्में 'नो लोपः' इसकर सिद्ध हुआ । भज्यात् । लुट्में भङ्क्ता । लट्में । भंक्ष्यति । लुङ्मे 'अनिट्' 'अनिटो नामिवतः, चोः कुः, खसे च०, क्रि०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अभाङ्क्षीत् । भुजधातु पालन और अभ्यवहार नाम

'झलात्, सिस्यो', सपोर्धः। झषे जशा' इनकर सिद्ध हुआ। अभद्र। द्विवचनमें 'सिस्यो', खसे च०' इनकर सिद्ध हुआ। अभुत्साताम्। भिदिर्धातु विदारण नाम विदीर्ण करनेमें वर्त्ते है। लट्में 'रुधादेर्नम्, खसे च०' इनकर सिद्ध हुआ। भिनत्ति। आत्मनेपदमें 'नमसोऽस्य' इसकर सिद्ध हुआ। भिंते। लिट्में बिभेद। आत्मनेपदमें। बिभिदे। लिङ्में। भिद्यात्। आत्मनेपदमें। भित्सीष्ट। शादिकमें। भेत्ता। लुङ्में। अभिदत्, अभैत्सीत्। आत्मनेपदमें। अभित्त। छिदिर्धातु द्वैधीभाव नाम टुकडा करनेमें वर्त्ते है। भिदिर्धातुके समान छिदिर्धातुके रूप समस्त लकारोंमें जानने। रिचिर्धातु विरेचन नाम बर्जनार्थमें वर्त्ते है। नमूप्रत्यय करनेके अनन्तर चो' कुः' इसकर सिद्ध हुआ। रिणक्ति। आत्मनेपदमें 'नमसोऽस्य' इसकर नमूप्रत्ययके अकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ। रिंक्ते। लिङ्में। रिच्यात्। आत्मनेपदमें। रिंक्षीत। लोट्में रिणक्तु। हिमें झलादिर्हि' इसकर धकार करनेके अनन्तर 'झषे जशा' इसकर सिद्ध हुआ। रिंग्धि। उत्तम मागमें। रिणचानि। रिणचाव। रिणचाम। लङ्में 'दिस्योर्हसात्' इसकर दिपूका लोप करनेके अनन्तर 'चावसाने' इसकर सिद्ध हुआ। अरिणक्, अरिणग्। लिट्में। रिरेच। आत्मनेपदमें। रिरिचे। लिङ्में। रिच्यात्। सीयादिकमें अनिट् होनेसे 'सिस्यो', चो' कुः, कि० इत्यादिकर सिद्ध हुआ। रिक्षीष्ट। शादिकमें। रेक्ता। लुङ्में परस्मैपदके विषे 'इरितो वा' इसकर एक जगह सिद्ध हुआ। अरिचत्। और एक जगह 'अनिटो नामिवत्', चो' कुः कि०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ। अरैक्षीत्। आत्मनेपदमें 'झलात् सिस्यो' 'चो कुः' इनकर सिद्ध हुआ। अरिक्त। विचिर् धातु पृथग्भावमें वर्त्ते है। रिचिर्धातुके समानही विचिर्धातुके रूप जानने। क्षुदिर्धातु संपेषण नाम पीसनमें वर्त्ते है। नमूप्रत्यय करनेके अनन्तर 'पुर्नो णोऽन्ते' इसकर णकार करनेपर लट्में रूप सिद्ध हुआ। क्षुणत्ति। शेष रूप छिदिर् धातुके समान जानने। युजिर्धातु योग करनेमें वर्त्ते है। नमूप्रत्यय करनेके अनन्तर 'चो' कुः, खसे च०' इनकर सिद्ध हुआ। युनक्ति। आत्मनेपदमें 'नमसोऽस्य' इसकर अकारका लोप करनेके अनन्तर चो' कुः, खसे च०' इनकर रूप सिद्ध हुआ। युंक्ते। इसी प्रकार शेष लकारोंमें रूप जानने। उच्छृदिर् धातु दीप्ति नाम प्रकाश और देवन नाम विलास करनेमें वर्त्ते है। इसमें उकार और इर् इत्संज्ञक है। क्षुदिर्धातुके समान चार लकारोंमें रूप जानने। लिट्में। चच्छर्द। लिङ्में। छृद्यात्। आत्मनेपदमें 'घृतदच्छृदतृदृदृपोऽस्ये सादेरिङ्वा' इसकर एक जगह इट् न करनेसे 'सिस्यो' इसकर रूप सिद्ध हुआ। छृत्सीष्ट। और एक जगह छर्दिषीष्ट। लट्में। छर्त्स्यति। छर्दिष्यते। लुङ्में। अछृदत्, अच्छर्दीत्। आत्मनेपदमें। अछर्दिष्ट। उतृदिर् धातु हिंसा और अनादरमर्थमें वर्त्ते है। इसमेंभी

नमूप्रत्ययसे परे नुमूका नकार विद्यमान है इस कारण नकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । हिनस्ति । द्विवचन बहुवचनमें ' नमसोऽस्य, नमः ' इनकर सिद्ध हुआ । हिंस्तः । हिंसन्ति । लोट्में । मध्यमभागके प्रथमवचनमें ' झसाद्धिर्हेः ' इसकर हिको धि किया फिर ' धे सलोपः' इसकर सकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । हिन्धि । लङ्में ' दिस्योर्हसात्, दिपि ' इनकर सिद्ध हुआ । अहिनत्, अहिनद् । सिप्में ' दिस्योर्हसात्, सिपि वा ' इनकर सिद्ध हुआ । अहिनः अहिनत् अहिनद् । लिट्में । जिहिंस । लिङ्मे ' इदितो नलोपो न ' इसकर सिद्ध हुआ । हिंस्यात् । लुङ्मे । अहिंसीत् । उन्दीधातु गीला होनेमें वर्त्ते है । नमूप्रत्यय करनेके अनन्तर ' नमः ' इसकर नकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । उनत्ति । द्विवचनमें ' नमसोऽस्य, नमः ' इनकर सिद्ध हुआ । उन्तः । सिप्मे । उनत्सि । लिङ्में । उन्द्यात् । लोट्मे । उनत्तु । लङ्में दिपूका लोप करनेके अनन्तर सिद्ध हुआ । औनत्, औनद् । लिट्मे । उन्दांचकार । लुङ्में । औन्दीत् । अञ्जूधातु व्यक्ति नाम विवेचन, म्रक्षण नाम स्निग्धता, कान्ति नाम इच्छा और गति इन अर्थोंमें वर्त्ते है । नमूप्रत्यय करनेके पश्चात् ' नमः ' इसकर नकारका लोप किया, फिर ' चोः कुः, खसे च० ' इनकर रूप सिद्ध हुआ । अनक्ति । द्विवचनमें ' नमसोऽस्य, नमः ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ अङ्क्तः । बहुवचनमें । अञ्जन्ति । सिप्मे ' चोः कुः खसे च०, क्रि० ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अनक्षि । लिङ्मे । अञ्ज्यात् । लोट्मे । अनक्तु । लङ्में । आनक्, आनग् । लिट्मे ' नुगशाम्, आभ्भोर्णादौ ' इनकर सिद्ध हुआ । आनञ्ज । थप्में । आनञ्जिथ । और जहां ' ऊदितो वा ' इसकर इट् नहीं हुआ तहां ' चोः कुः खसे च० ' । आनङ्क्थ । तादिक्रमें । अञ्जिता, अङ्क्ता ॥

अञ्जेस्सेर्नित्यमिट् ॥३०९॥ अञ्जः, सेः, नित्यम्, इट् । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ आञ्जीत् ॥ तञ्चु संकोचने ॥ तनक्ति । अतञ्चीत् अतांक्षीत् ॥ ओविजी भयचलनयोः ॥ विनक्ति ॥

भाषा—अञ्जधातुसे सिप्रत्ययको नित्यही इट् आगम होय । उदाहरण—अञ्ज धातुसे सिप्रत्ययको इट् आगम करनेसे रूप सिद्ध हुआ । आञ्जीत् । तञ्चुधातु संकोच करनेमें वर्त्ते है । नमूप्रत्यय करनेके अनन्तर नकारका लोप किया फिर ' चोः कुः ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । तनक्ति । द्विवचनमें । तङ्क्तः । बहुवचनमें । तञ्चन्ति । सिप्में ' चोः कुः ' इसकर सिद्ध हुआ । तनक्षि । लिङ्में । तञ्च्यात् । लोट्में । तनक्तु । लङ्में । अतनक् अतनग् । लिट्में । ततञ्च । थप्में । ततञ्चिथ । और जहां ' ऊदितो वा ' इसकर इट् नहीं हुआ तहां ' चोः कुः ' इसकर सिद्ध हुआ । तत-

भोजन करनेमें वर्त्ते है । लङ्में । भुनक्ति द्विवचनमें । भुङ्क्तः । लिङ्में । भुञ्ज्यात् । लोट्में भुनक्तु । लङ्में । अभुनक् , अभुनग् । लिट्में । बुभोज । लिङ्में । भु-ज्यात् । लुट्में । भोक्ता । लृट्में । भोक्ष्यति । लुङ्में । अभौक्षीत् । तृह और हिंसि धातु हिंसा करनेमें वर्त्ते हैं ॥

तृहो नमि कृते इमागम पिति हसे ॥ ३०८ ॥ तृहे, नमि, कृते, इमागम , पिति, हसे । पदपदमिदं सूत्रम् ॥ तृणेढि । अतृणेट् । इदितो नुम् ॥

भाषा—तृहधातुको नम् प्रत्यय करनेपर इम् आगम होय पकार है इत जिसका ऐसा हसादि प्रत्यय पर हुए सते । भाव यह है कि तृहधातुसे प्रथम नम् प्रत्यय होय पश्चात् इम् आगम होय यदि हसादि पित्प्रत्यय परे होवें तो । उदाहरण—तृहधातुसे ' रुधादेर्नम् ' इसकर नम् प्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ तृ-न-ह्-ति फिर इम् आगम किया तो मित् होनेसे नकारउत्तरवर्ती अकारसे परे 'इम् आगम करनेपर रूप स्थित हुआ तृ-न-इ-ह्-ति फिर ' हो ढः, तथोर्धः, ष्टुना० ' इनकर रूप स्थित हुआ तृ-न-इ-ढ्-ढि फिर ' ढि ढो लोपो०, आद्गुणः, पुनो णोऽनन्ते ' इनकर रूप सिद्ध हुआ । तृणेढि । द्विवचनमें नम्प्रत्यय करनेपर ' नमस्तोऽस्य ' इसकर नम् प्रत्ययके अकारका लोप किया फिर यहां इम् आगम नहीं हुआ, क्योंकि पित्प्रत्यय परे नहीं है तब ' हो ढः, तथोर्धः, ष्टुना०, ढि ढो लोपो० इनकर रूप सिद्ध हुआ तृण्ढः । बहुवचनमें । तृंहन्ति । लिट्में नम्प्रत्यय इम् आगम करनेके अनन्तर ढ , ढो० ०, कि० ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । तृणक्षि । लिङ्में । तृंह्यात् । लोट्में । तृणेढु । लङ्में । अतृणेड् अतृणेट् । लिट्में । ततर्ह । लुङ्में सेट् होनेसे । अतर्हीत् । हिंसधातुसे नम् प्रत्यय करनेके अनन्तर ' इदितो नुम् ' इसकर नुम् आगम किया तब रूप स्थित हुआ हि-न-स्-ति ॥

नम ॥ ३०८ ॥ नमः । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ नम्प्रत्ययात् परस्य नस्य लोपः ॥ हिनस्ति हिंस्तः हिंसन्ति । धे सलोपः । हिन्धि । अहिनः । जिहिंस । अहिंसीत् ॥ उन्दी क्लेदने ॥ उनत्ति उन्तः उन्दन्ति । औनत् । औन्दन् । उन्दाञ्चकार । औन्दीत् ॥ अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु ॥ अनक्ति । अञ्जन्ति । आनञ्ज । अञ्जिता अङ्क्ता ॥

भाषा—नम्प्रत्ययसे परे नकारका लोप होय । उदाहरण—हिनस्-ति । इसमें

नमूप्रत्ययसे परे नुमूका नकार विद्यमान है इस कारण नकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । हिनस्ति । द्विवचन बहुवचनमे ' नमसोऽस्य, नमः ' इनकर सिद्ध हुआ । हिंस्तः । हिंसन्ति । लोट्में । मध्यमभागके प्रथमवचनमें ' झसाद्धिर्हेः ' इसकर हिको धि किया फिर ' धे सलोपः' इसकर सकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । हिन्धि । लङ्में ' दिस्योर्हसात्, दिपि ' इनकर सिद्ध हुआ । अहिनत्, अहिनद् । सिपूर्मे ' दिस्योर्हसात्, सिपि वा ' इनकर सिद्ध हुआ । अहिनः अहिनत् अहिनद् । लिट्में । जिहिंस । लिङ्मे ' इदितो नलोपो न ' इसकर सिद्ध हुआ । हिंस्यात् । लुङ्मे । अहिंसीत् । उन्दीधातु गीला होनेमें वर्त्ते है । नमूप्रत्यय करनेके अनन्तर ' नमः ' इसकर नकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । उनत्ति । द्विवचनमे ' नमसोऽस्य, नमः ' इनकर सिद्ध हुआ । उन्तः । सिपूर्मे । उनत्सि । लिङ्में । उन्द्यात् । लोट्में । उनत्तु । लङ्में दिपूका लोप करनेके अनन्तर सिद्ध हुआ । औनत्, औनद् । लिट्मे । उन्दांचकार । लुङ्मे । औन्दीत् । अञ्जूधातु व्यक्ति नाम विवेचन, म्रक्षण नाम स्निग्धता, कान्ति नाम इच्छा और गति इन अर्थोंमे वर्त्ते है । नमूप्रत्यय करनेके पश्चात् ' नमः ' इसकर नकारका लोप किया फिर ' चोः कुः, खसे च० ' इनकर रूप सिद्ध हुआ । अनक्ति । द्विवचनमें ' नमसोऽस्य, नमः ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ अङ्क्तः । बहुवचनमें । अञ्जन्ति । सिपूमे ' चोः कुः खसे च०, क्रि० ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अनक्षि । लिङ्मे । अञ्ज्यात् । लोट्में । अनक्तु । लङ्में । आनक्, आनग् । लिट्मे ' नुगशाम्, अभ्भोर्णादौ ' इनकर सिद्ध हुआ । आनञ्ज । थपूमे । आनञ्जिथ । और जहां ' ऊदितो वा ' इसकर इट् नहीं हुआ तहां ' चोः कुः खसे च० ' । आनङ्क्थ । तादिक्रमे । अञ्जिता, अङ्क्ता ॥

अञ्जेस्सेर्नित्यमिट् ॥३०९॥ अञ्जः, सेः, नित्यम्, इट् । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ आञ्जीत् ॥ तञ्चु संकोचने ॥ तनक्ति । अतञ्चीत् अतांक्षीत् ॥ ओविजी भयचलनयोः ॥ विनक्ति ॥

भाषा—अञ्जधातुसे सिप्रत्ययको नित्यही इट् आगम होय । उदाहरण—अञ्ज धातुसे सिप्रत्ययको इट् आगम करनेसे रूप सिद्ध हुआ । आञ्जीत् । तञ्चुधातु संकोच करनेमें वर्त्ते है । नमूप्रत्यय करनेके अनन्तर नकारका लोप किया फिर ' चोः कुः ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । तनक्ति । द्विवचनमे । तङ्क्तः । बहुवचनमें । तञ्चन्ति । सिपूमें ' चोः कुः ' इसकर सिद्ध हुआ । तनक्षि । लिङ्में । तञ्च्यात् । लोट्में । तनक्तु । लङ्में । अतनक् अतनग् । लिट्में । ततञ्च । थपूमें । ततञ्चिथ । और जहां ' ऊदितो वा ' इसकर इट् नहीं हुआ तहां ' चोः कुः ' इसकर सिद्ध हुआ । तत-

रूपम् । तादिकमें । तस्त्वा, सविता । लुङ्में सेट्पक्षमें अतक्षीत् । अनि ट्पक्षमें 'षो' कुः, कि०, अनिटो नामिवत' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अतांक्षीत । द्विवचनमें 'हसात्, षो' कुः' इनकर सिद्ध हुआ । अतांक्ताम् । ओविजी धातु भय और चलनेमें वर्त्ते है । इसम ओकार और ईकार इत्संज्ञक हैं । नम्प्रत्यय करनेके अनन्तर 'चो कुः, सचे ष०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । विनक्ति । द्विवचनमें 'नमसोऽस्य' इसकर सिद्ध हुआ । विङ्क्तः । लिट्में । विवेज । थपमें विविज्+इ+थ ऐसा स्थित है ॥

विजेरिडादिप्रत्ययो ङित् ॥ ३१० ॥ विजेः, इडादिर्प्रत्यय', ङिद्' । त्रिपदमिद सूत्रम् ॥ विविजिथ विजिता अविजीद ॥ वृजी वर्जने ॥ वृणक्ति । अवर्जीत् ॥ पृची सपर्के ॥ पृणक्ति । अपर्चीत्॥

भाषा–विजधातुसे इडादि प्रत्यय ङित्संज्ञक होता है । उदाहरण–विविज्+इ+थ । इसमें इडादि प्रत्यय थप् ङित्संज्ञक होनेसे गुण न होनेपर रूप सिद्ध हुआ । विविजिथ । तादिकमें । विजिता । लुङ्में । अविजीत् । वृजीधातु वर्जन अर्थमें वर्त्ते है । लट्में । वृणक्ति । लिट्में । ववर्ज । लुङ्में । अवर्जीत् । पृचीधातु सपर्क नाम सयोग अर्थमें वर्त्ते है । लट्में पृणक्ति । द्विवचनम । पृंक्त । लिट्में । पपर्च । लुङ्में अपर्चीत ॥ इति पमक्रिया ॥ मगल्सेनात्मजश्रीकाशिरामोक्तभाषया । चन्द्रिकोत्तरार्द्धवृत्ती रुधादे' पंपदं युतम् ॥

ञिइन्धी दीप्तौ ॥ इन्धे । इन्धीत । ऐंध । इन्धाञ्चक्रे । ऐन्धिष्ट ॥ खिद दैन्ये ॥ खिन्ते । खित्सीष्ट । अखित्त ॥ विद विचारणे ॥ विन्ते । वित्सीष्ट अवित्त ॥ इति रुधादय ॥

भाषा–ञिइन्धी धातु दीप्तिअर्थमें वर्त्ते है इसम ञिकार ईकार इत्संज्ञक हैं । नम्प्रत्यय करनेके अनन्तर 'नमसोऽस्य, नम' इनकर नम्प्रत्ययके अकारका और नकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । इन्धे । लिङ्में । इन्धीत । लोट्में । इंधाम् । लङ्में । ऐन्ध । लिट्में गुरुनाम्यादि होनेसे आम् प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । इन्धाचक्रे । लिङ्में । इन्धिषीष्ट । लुट्में । इन्धिता । लुङ्में । ऐन्धिष्ट । खिद्धातु दीनता अर्थमें वर्त्ते है । नम्प्रत्यय करनेके अनन्तर 'नमसोऽस्य' इसकर रूप सिद्ध हुआ । खिंते । लिङ्में । खिन्दीत । लोट्में । खिंताम् । लङ्में । अखिं-त । लिट्में । चिखिदे । लिङ्में अनिट् होनेसे 'खिस्यो' इसकर सिद्ध हुआ । खित्सीष्ट । तादिकमें । खेत्ता । लुङ्में । 'खिस्यो' हसात्' इनकर सिद्ध हुआ । अखित्त । विद्धातु विचार करनेमें वर्त्ते है । नम्प्रत्यय करनेके अनन्तर नमसोऽ-

स्य ' इसकर सिद्ध हुआ । विंते । लिङ्में । विन्दीत । लोट्में । विंताम् । लङ्मे । अविंत । लिट्में । विविदे । सीष्टादिकमें ' सिस्योः ' । वित्सीष्ट । तादिकमे । वेत्ता । लुङ्मे ' सिस्योः, झसात् ' इनकर सिद्ध हुआ । अवित्त ॥ इति रुधादयः ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामोक्तभाषया । चन्द्रिकोत्तरार्द्धवृत्तौ रुधादेरात्पदं युतम् ॥६॥

तनु विस्तारे ॥

भाषा—तनुधातु विस्तारअर्थमें वर्त्ते है इसमे उकार इत्संज्ञक है ॥

तनादेरुप् ॥ ३११ ॥ तनादेः, उप् । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ तनादेरुप्रत्ययः कर्तरि चतुर्षु ॥ नूपः । तनोति तनुतः तन्वन्ति । ओर्म्वोर्वा लोपः । तनुवः तन्वः । तनुते । ततान तेनतुः । तेने । अतानीत् अतनीत् ॥

भाषा—तनु आदिक धातुओंसे उप्प्रत्यय होय कर्त्ताअर्थमें चार लकार पर हुए संते । तन्धातुसे लट्में उप् प्रत्यय करनेके अनन्तर तिप्के विषें ' नूपः ' इसकर गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । तनोति । द्विवचनमें । तनुतः । बहुवचनमे सिद्ध हुआ । तन्वन्ति । मध्यमभागमें । तनोषि । तनुथः । तनुथ । उत्तमभागमे । तनोमि । द्विवचन बहुवचनमें ' ओर्म्वोर्वा लोपः ' इसकर सिद्ध हुआ । तनुवः, तन्वः । तनुमः, तन्मः । आत्मनेपदमे । तनुते । लिङ्मे । तन्यात् । आत्मनेपदमें । तन्वीत । लोट्में । तनोतु । आत्मनेपदमे । तनुताम् । लङ्में । अतनोत् । आत्मनेपदमे । अतनुत । लिट्मे । ततान । आत्मनेपदमे ' लोपः पचां० ' इसकर सिद्ध हुआ । तेने । लिङ्में । तन्यात् । आत्मनेपदमें सेट् होनेसे । तनिषीष्ट । लुङ्में ' अतो हसादेर्लघोर्वा वृद्धिः ' इसकर सिद्ध हुआ । अतानीत्, अतनीत् । आत्मनेपदमें अतन्-इ-स्-त ऐसा स्थित है ॥

तनादेस्तथासोर्वा सेर्लुक् ॥ ३१२ ॥ तनादेः, तथासोः, वा, सेः, लुक् । पंचपदमिदं सूत्रम् ॥

लोपस्त्वनुदात्ततनाम् ॥ ३१३ ॥ लोपः, तु, अनुदात्ततनाम् । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ अतत अतनिष्ट । अतथाः अतनिष्ठाः ॥ षणु दाने ॥ सनोति सनुते । सेनतुः । सेने । जनसनखनामात्वमिति । सायात् सन्यात् । असात् असनिष्ट । असाथाः असनिष्ठाः ॥ क्षणु

क्षिणु हिंसायाम् ॥ क्षणोति । ह्मयन्तक्षणेति न वृद्धिः । अक्षणीत् । अक्षत अक्षणिष्ट । अक्षथाः अक्षणिष्ठाः ॥

भाषा—तनादिक धातुओंसे सिच्प्रत्ययका लुक् होय विकल्पकरके तत् और थास् प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—अतन् इ-स्-त । इसमें एक जगह सिचका लुक् किया फिर 'लुकि न तन्निमित्तम्' इसकर इट्भी न होनेसे रूप सिद्ध हुआ। अतन्-त फिर 'लोपस्त्वनुदात्ततनाम्' इसकर नकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ। अतत। और जहां सिच्प्रत्ययका लुक् नहीं हुआ वहां सिद्ध हुआ। अत निष्ट। इसी प्रकार थास्में सिद्ध हुआ। अतथाः, अतनिष्ठाः। षणुधातु दानअर्थमें वर्त्ते है। 'आदेः ष्णः सः' इसकर सकार करनेपर उप् करनेके पश्चात् 'नृप' इसकर सिद्ध हुआ । सनोति । चार लकारोंमें तनधातुके समान रूप जानने । लिट् में । ससान । आत्मनेपदमें । सेने । लिङ्में 'जनसनखनामात्वं०' इसकर एक जगह आकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ। सायात् । और एक जगह। सन्यात्। शेष लकारोंमें तनधातुके समान रूप जानने। क्षणुधातु और क्षिणुधातु हिंसाअर्थमें वर्त्ते हैं। लट्में। क्षणोति, क्षणुते। लिट्में। क्षणुयात् क्षण्वीत । लोट्में। क्षणोतु, क्षणुताम् । लङ्में । अक्षणोत्, अक्षणुत। लिट्में। चक्षाण, चक्षणे। लिङ्में। क्षण्यात्, क्षणिषीष्ट। लुङ्में । परस्मैपदके विषे ह्मयन्तक्षण०' इसकर वृद्धि न होनेपर रूप सिद्ध हुआ । अक्षणीत्। आत्मनेपदमें तनधातुके समान रूप जानने । क्षिण धातुसे उप्रत्यय करनेपर लट्में रूप सिद्ध हुआ क्षिण-उ-ति ॥

तनादेरुपधाया गुणो वोपि ॥३१४॥ तनोदेः, उपधायाः, गुणः, वा, उपि । पञ्चपदमिदं सूत्रम् ॥ क्षिणोति क्षेणोति । अक्षेणीत् । अक्षित अक्षेणिष्ट । अक्षिथाः अक्षेणिष्ठाः ॥ ऋणु गतौ ॥ ऋणोति अर्णोति । ऋणुतः। आनार्ण आनृणे। आर्णोत् । आर्त आर्णिष्ट । आर्थाः आर्णिष्ठाः ॥ तृणु अदने ॥ तृणोति तर्णोति तृणुते तर्णुते । अतर्णीत् अतृत अतर्णिष्ट । अतृथाः अतर्णिष्ठाः ॥ घृणु दीप्तौ ॥ घृणोति घर्णोति । अघर्ण । अघर्णीत् । अघृत अघर्णिष्ट । अघृथाः अघर्णिष्ठाः ॥ डुकृञ् करणे ॥ करोति । क्स्यिदु । कुरुतः ॥

भाषा—तनादि धातुओंके उपधाको विकल्पकरके गुण होय उप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—क्षिण-उ-ति । इसमें तनादिक क्षिणधातुकी उपधाभूत इकारको विकल्पकरके गुण किया, क्योंकि उप्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ।

क्षिणोति, क्षेणोति । आत्मनेपदमें । क्षिणुते, क्षेणुते । लिट्में । चिक्षेण, चिक्षिणे । लिङ्में । क्षिण्यात्, क्षेणिषीष्ट । लुट्में । क्षेणिता । लुङ्में । अक्षेणीत् । आत्मनेपदमें तन् थास्के विषे विकल्पकरके सिका लुक् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अक्षित, अक्षेणिष्ट । अक्षिथाः, अक्षेणिष्ठाः । ऋणुधातु गतिअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । ऋणोति । गुण करनेपर । अर्णोति । आत्मनेपदमें । ऋणुते, अर्णुते । लिट्में 'द्विश्च, रः, आभ्योर्णादौ, नुगशाम्' इनकर सिद्ध हुआ । आनर्ण । आत्मनेपदमें । आनृणे । लिङ्में । ऋण्यात् । आत्मनेपदमें । अर्णिषीष्ट । लुङ्में । आर्णीत् । द्विवचनमें । आर्णिष्टाम् । आत्मनेपदमें तन्के विषे एक जगह सिका लुक् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । आर्त्त । और एक जगह सिद्ध हुआ । आर्णिष्ट । तृणुधातु अदन नाम भोजन करनेमें वर्त्ते है लट्में । तृणोति, तर्णोति । आत्मनेपदमें । तृणुते, तर्णुते । लिट्में । ततर्ण । आत्मनेपदमें । ततृणे । लुङ्में । अतर्णीत् । द्विवचनमें । अतर्णिष्टाम् । आत्मनेपदमें तन्के विषे सिका लुक् करनेपर सिद्ध हुआ । अतृत । और एक जगह । अतर्णिष्ट । घृणुधातु दीप्तिअर्थमें वर्त्ते है । तृणधातुके समानही घृणुधातुके रूप जानने । कृञ्धातु करण नाम करनेमें वर्त्ते है । तिप्में कृञ्धातुसे उप् प्रत्यय करनेके अनन्तर गुण करनेपर रूप सिद्ध हुआ । करोति । द्विवचनमें करु-तस् ऐसा स्थित है । 'ङित्यदुः' इसकर कृञ्धातुके अकारको उकार किया क्योंकि ङित्संज्ञक प्रत्यय तस् परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । कुरुतः । बहुवचनमें 'ङित्यदुः' 'उवम्' इनकर रूप सिद्ध हुआ । कुर्वन्ति । यहांपर 'य्वोर्विहसे' इसकर दीर्घ नहीं होय ॥

कुरछुरोर्न दीर्घः ॥ ३१५ ॥ कुर्छुरोः, न, दीर्घः । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ कुर्वन्ति ॥

भाषा–कृञ्धातुके कुर्रूपको और छुर्धातुको दीर्घ नहीं होय । मध्यमभागमें सिद्ध हुआ । करोषि । कुरुथः । कुरुथ । उत्तमभागमें । करोमि । द्विवचन बहुवचनमें कुरु-वः, कुरु-मः ऐसा स्थित है ॥

कृञो नित्यं वमोरुलोपः ॥ ३१६ ॥ कृञः, नित्यम्, वमोः, उलोपः । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ कुर्वः । कुर्मः ॥

भाषा–कृञ्धातुसे परे उप्रत्ययका लोप नित्यही होय वकार मकारादि प्रत्यय परे हुए संते । उदाहरण–कुरु-वः, कुरु-मः । इसमें कृञ्धातुसे परे उप्रत्ययका लोप किया क्योंकि वकार मकारादि वस् मस् प्रत्यय परे विद्यमान हैं तब रूप सिद्ध हुआ । कुर्वः । कुर्मः । आत्मनेपदमें । कुरुते । द्विवचनमें 'उरम्'। कुर्वाते । बहुवचनमें 'आतोऽन्तोऽदनतः' इसकर सिद्ध हुआ । कुर्वते । लिङ्में कुरु-यात् ऐसा स्थित है ॥

कृञो ये ॥ २१७ ॥ कृञः, ये । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ कृञ उप्र-यस्य लोपो यि ॥ कुर्यात् । चकर्थ । फादेर्नेट् । यादादौ ये । क्रि-यात् कृषीष्ट । अकार्षीत् अकृत । अकृथा ॥

भाषा—कृञ्धातुके उप्रत्ययका लोप होय यकार पर हुए सते । उदाहरण—कुरु+यात् । इसमें कृञ्धातुके 'उप्रत्ययका लोप हुआ । क्योंकि यात् प्रत्ययका यकार परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । कुर्यात् । लोट्में । करोतु । हिमें 'ओवा हे ' इसकर सिद्ध हुआ । कुरु । उत्तमपुरुषमें । करवाणि । करवाम । करवाम । लङ्में । अकरोत् । लिट्में । चकार । थप्में ' फादेर्नादे ' इसकर इट् न होनेपर सिद्ध हुआ । चकर्थ । यादादिकमें ' यादादौ ये ' इसकर सिद्ध हुआ । क्रियात् । सीयादिकमें उ इसकर गुण न होनेसे सिद्ध हुआ । कृषीष्ट । लुट्में । कर्त्ता । लृट्में । करिष्यते । लुङ्में । अकार्षीत् । द्विवचनमें । अकार्ष्टाम् । आत्मनेपदमें सन्‌धातुके विषै सनादेस्वधासोर्वा० ' इसकर सिका लुक् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अकृत । और दूसरी जगह ' उ, लोपो हस्वात् ' इनकर सिद्ध हुआ अकृत । द्विवचनमें । अकृषाताम् । बहुवचनमें । अकृषत ॥

सपर्युपेभ्यः करोतेर्भूषणे सुट् ॥ २१८ ॥ सपर्युपेभ्यः करोते, भूषणे, सुट् । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ संस्करोति । अड्द्वित्वव्यव-धानेऽपि कात् पूर्वं सुट् । समस्करोत् । सञ्चस्कार ॥

भाषा—संउपसर्ग परिउपसर्ग और उपउपसर्ग इनसे परे कृञ्धातुको सुट् आगम होय । उदाहरण—संउपसर्ग पूर्व होनेसे कृञ्धातुको सुट् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । संस्करोति । यदि सं परि, उप इन उपसर्ग और कृञ्धातुके मध्यमें अट् और द्वित्वरूप होवे तो सुट् आगम कृञ्धातुके ककारसेही पूर्व होय । उदाहरण—सं अ करोत् । इसमें संउपसर्ग और कृञ्धातुके मध्यमें अट् है इस कारण सुट् आगम कृञ्धातुके ककारसे पूर्व करनेपर रूप सिद्ध हुआ । समस्करोत् । सं चकार इसमें सं उपसर्ग और कृञ्धातुके मध्यमें द्वित्वरूप है इस कारण सुट् आगम कृञ्के ककारसे पूर्व करनेपर रूप सिद्ध हुआ । संचस्कार ॥

ससुट् कृञो लिटि इट् ॥ २१९ ॥ ससुट्, कृञः, लिटि, इट् । चतुष्पदमिदं सूत्रम् सञ्चस्करिथ । सञ्चस्करिव । संस्क्रियात् । संस्कृषीष्ट । एवं परिष्कुरुते । उपस्कुरुते । परिष्करिष्यते । पर्य-स्कार्षीत् पर्यष्कार्षीत् ॥ इत्यादि ॥

भाषा–सुट्आगमयुक्त कृञ्धातुसे परे वसादि लिट्प्रत्ययको इट् होय। उदाहरण–सुट्आगमयुक्त कृञ्धातुसे परे वसादि लिट्प्रत्यय थप्को इट् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ। संचस्करिथ। इसी प्रकार सिद्ध हुआ उत्तमभागके द्विवचनमें संचस्करिव । लिङ्में । संस्क्रियात् , संस्कृषीष्ट । इसी प्रकार । परिष्कुरुते । उपस्कुरुते । परिष्करिष्यते । पर्यस्कार्षीत् । पर्यष्कार्षीत् । इत्यादिक जानने ॥ इत्यात्पे ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामेण साधितम् । चन्द्रिकोत्तरार्द्धवृत्तौ तनादेरुभयात्मकम् ॥

वनु याचने ॥ ववने । अवनिष्ट । परस्मैपद्ययमित्येके । वनोति । शशदद इति । ववान । ववनिथ । अवानीत् ॥

भाषा–वनुधातु याचनाअर्थमें वर्त्ते है । आत्मनेपदी होनेसे उप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ। वनुते। द्विवचन बहुवचनमें। वन्वाते। वन्वते । लिट्में। ववने। वकारादि होनेसे एत्व पूर्व लोप नहीं हुआ। लुङ्में । अवनिष्ट, अवत। कोई आचार्य इस धातुको परस्मैपदी कहते हैं। तिप्में। वनोति। लिट्में। ववान। लुङ्में। अवानीत्॥ इति पंप्राक्रिया ॥

मनु अवबोधने ॥ मनुते। मेने । मनिषीष्ट । अमत अमनिष्ट ॥ इति तनादयः ॥

भाषा–मनुधातु अवबोधन नाम जाननेमें वर्त्ते है । आत्मनेपदी होनेसे तेमें रूप सिद्ध हुआ। मनुते। लिट्में 'लोपः पचां०' इसकर सिद्ध हुआ। मेने। सीष्टादिकमें। मनिषीष्ट। लुङ्में तन्के विषै 'तनादेस्तथासोर्वा०' इसकर सिका लुक् करनेपर रूप सिद्ध हुआ। अमत। और एक जगह। अमनिष्ट। द्विवचनमें। अमनिषाताम् ॥ इति तनादयः ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामोक्तभाषया। चंद्रिकोत्तरार्द्धवृत्तौ तनादिगणमावृतम् ॥ ७ ॥

तुद व्यथने ॥

भाषा–तुदधातु व्यथाअर्थमें वर्त्ते है ॥

तुदादेरः ॥ ३२० ॥ तुदादेः, अः। द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ तुदादेरप्रत्ययः कर्तरि चतुर्षु ॥ तुदति तुदते । तुत्सीष्ट । अतौत्सीत् अतुत्त ॥ णुद प्रेरणे ॥ नुदति । नुत्सीष्ट । अनौत्सीत् अनुत्त ॥ दिश अतिसर्जने ॥ दिशति । दिक्षीष्ट । अदिक्षत् ॥ भ्रस्ज पाके ॥ ग्रहां

कृञो ये ॥ ३१७ ॥ कृञः, ये । द्विपदमिद सूत्रम् ॥ कृञ उप्प्रत्ययस्य लोपो यि ॥ कुर्यात् । चकर्थ । कादेर्नेट् । यादादौ पे । क्रियात् कृषीष्ट । अकार्षीत् अकृत । अकृथा ॥

भाषा—कृञ्धातुके उप्प्रत्ययका लोप होय यकार पर हुए संते । उदाहरण—कुरु-यात् । इसमें कृञ्धातुके उप्प्रत्ययका लोप हुआ । क्योंकि यात् प्रत्ययका यकार परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । कुर्यात् । लोट्में । करोतु । हिमें 'ओर्वा हे' इसकर सिद्ध हुआ । कुरु । उत्तममार्गमें । करवाणि । करवाव । करवाम । लङ्में । अकरोत् । लिट्में । चकार । थप्में 'कादेर्णादेः' इसकर इट् न होनेपर सिद्ध हुआ । चकर्थ । यादादिकमें 'यादादौ पे' इसकर सिद्ध हुआ । क्रियात् । सीयादिकमें 'ऋ' इसकर गुण न होनेसे सिद्ध हुआ । कृषीष्ट । लुट्में । कर्ता । लृट्में । करिष्यते । लुङ्में । अकार्षीत् । द्विवचनमें । अकार्ष्टाम् । आत्मनेपदमें सन्यासके विषे 'सनादेस्सयासोर्वा०' इसकर सिका लुक् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अकृत । और दूसरी जगह 'उ, लोपो ह्रस्वात्' इनकर सिद्ध हुआ अकृथ । द्विवचनमें । अकृषाताम् । बहुवचनमें । अकृषत ॥

सपर्युपेभ्य करोतिभूषणे सुट् ॥ ३१८ ॥ सपर्युपेभ्यः करोते, भूषणे, सुट् । चतुष्पदमिद सूत्रम् ॥ संस्करोति । अड्व्यवधानेऽपि कात् पूर्वं सुट् । समस्करोत् । सञ्चस्कार ॥

भाषा—सउपसर्ग, परिउपसर्ग और उपउपसर्ग इनसे परे कृञ्धातुको सुट् आगम होय । उदाहरण—संउपसर्ग पूर्व होनेसे कृञ्धातुको सुट् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । संस्करोति । यदि सं, परि, उप इन उपसर्ग और कृञ्धातुके मध्यमें अट् और द्वित्वरूप होवे तो सुट् आगम कृञ्धातुके ककारसेही पूर्व होय । उदाहरण—सं अ-करोत् । इसमें संउपसर्ग और कृञ्धातुके मध्यमें अट् है इस कारण सुट् आगम कृञ्धातुके ककारसे पूर्व करनेपर रूप सिद्ध हुआ । समस्करोत् । सं चकार इसमें स उपसर्ग और कृञ्धातुके मध्यमें द्वित्वरूप है इस कारण सुट् आगम कृञ्के ककारसे पूर्व करनेपर रूप सिद्ध हुआ । संचस्कार ॥

ससुटः कृञो लिट इट् ॥ ३१९॥ ससुटः, कृञः, लिटः, इट् । चतुष्पदमिद सूत्रम् सञ्चस्करिथ । सञ्चस्करिव । संस्क्रियात् । संस्कृषीष्ट । एवं परिष्कुरुते । उपस्कुरुते । परिष्करिष्यते । पर्यष्कार्षीत् पर्यष्कार्षीत् ॥ इत्यादि ॥

भाषा—सुट्आगमयुक्त कृञ्धातुसे परे वसादि लिट्प्रत्ययको इट् होय । उदाहरण—सुट्आगमयुक्त कृञ्धातुसे परे वसादि लिट्प्रत्यय थप्को इट् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । संचस्करिथ । इसी प्रकार सिद्ध हुआ उत्तमभागके द्विवचनमें संचस्करिव । लिङ्में । संस्क्रियात् , संस्कृषीष्ट । इसी प्रकार । परिष्कुरुते । उपस्कुरुते । परिष्करिष्यते । पर्यस्कार्षीत् । पर्यष्कार्षीत् । इत्यादिक जानने ॥ इत्यात्पे ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामेण साधितम् । चन्द्रिकोत्तरार्द्धवृत्तौ तनादेरुभयात्मकम् ॥

वनु याचने ॥ ववने । अवनिष्ट । परस्मैपदत्रयमित्येके । वनोति । शशदद इति । ववान । ववनिथ । अवानीत् ॥

भाषा—वनुधातु याचनाअर्थमें वर्त्ते है । आत्मनेपदी होनेसे उप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । वनुते । द्विवचन बहुवचनमें । वन्वाते । वन्वते । लिट्मे । ववने । वकारादि होनेसे एत्व पूर्व लोप नहीं हुआ । लुङ्में । अवनिष्ट, अवत । कोई आचार्य इस धातुको परस्मैपदी कहते हैं । तिप्में । वनोति । लिट्में । ववान । लुङ्में । अवानीत् ॥ इति पंप्राक्रिया ॥

मनु अवबोधने ॥ मनुते । मेने । मनिषीष्ट । अमत अमनिष्ट ॥ इति तनादयः ॥

भाषा—मनुधातु अवबोधन नाम जाननेमें वर्त्ते है । आत्मनेपदी होनेसे तेमें रूप सिद्ध हुआ । मनुते । लिट्में 'लोपः पचां०' इसकर सिद्ध हुआ । मेने । सीष्टादिकमें । मनिषीष्ट । लुङ्में तन्के विषै 'तनादेस्तथासोर्वा०' इसकर सिका लुक् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अमत । और एक जगह । अमनिष्ट । द्विवचनमें । अमनिषाताम् ॥ इति तनादयः ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामोक्तभाषया । चंद्रिकोत्तरार्द्धवृत्तौ तनादिगणमावृतम् ॥ ७ ॥

तुद व्यथने ॥

भाषा—तुदधातु व्यथाअर्थमें वर्त्ते है ॥

तुदादेरः ॥ ३२० ॥ तुदादेः, अः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ तुदादेरप्रत्ययः कर्तरि चतुर्षु ॥ तुदति तुदते । तुत्सीष्ट । अतौत्सीत् अतुत्त ॥ णुद प्रेरणे ॥ नुदति । नुत्सीष्ट । अनौत्सीत् अनुत्त ॥ दिश अतिसर्जने ॥ दिशति । दिक्षीष्ट । अदिक्षत् ॥ भ्रस्ज पाके ॥ ग्रहां क्ङिति च । इवे जवाः भृज्जते ॥

भाषा—तुदआदिक धातुओंसे शप्रत्यय होय कर्त्तामर्थमें चार लकार पर हुए सत आर अपृक्त अपवाद होय । उदाहरण—तुदधातुसे शप्प्रत्ययके स्थानमें शप्रत्यय करनेपर लट्में रूप सिद्ध हुआ । तुदति । आत्मनेपदमें । तुदते । लिट्में । तुतोद । आत्मनेपदमें । तुतुदे । लिङ्में । तुद्यात् । आत्मनेपदमें अनिट् होनेसे 'सिस्यो' ' इसकर सिद्ध हुआ । तुत्सीष्ट । लुट्में । तोत्ता । लुङ्में परस्मैपदके विषै ' अनिटो नामिवत ' इसकर सिद्ध हुआ । अतौत्सीत् । आत्मनेपदमें ' सिस्यो', झसात् ' इनकर सिद्ध हुआ । अतुत्त । द्विवचनमें । अतुत्साताम् । णुद् धातु प्रेरणा करनेमें वर्त्ते है । ' आदे' ष्णा' स्न' ' इसकर नकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । नुदति । आत्मनेपदमें नुदते । शेष लकारोंमें तुदधातुके समान रूप जानने । दिशधातु अतिसर्जन नाम दान करनेमें वर्त्ते है । लट्में । दिशति, दिशते । लिङ्में दिशेत, दिशेत । लोट्में । दिशतु, दिशताम् । लङ्में । अदिशत, अदिशत । लिट्में । दिदेश, दिदिशे । लिङ्में । दिश्यात् । आत्मनेपदमें ' छश-पराआदे'०, षढोः०, किः०, सिस्योः ' इनकर सिद्ध हुआ । दिक्षीष्ट । ताद्विकर्में । देष्टा । लुङ्में ' इशपान्तात्सक् ' इसकर सिद्ध हुआ । अदिक्षत् । आत्मनेपदमें । अदिक्षत । द्विवचनमें आति सको लोप' स्वरे ' । अदिक्षाताम् । भ्रस्ज-धातु पाक नाम मर्जनरूप पाकमें वर्त्ते है । शप्रत्यय करनेके अनन्तर ' ग्रहां क्ङिति च ' इसकर रको ऋकार संप्रसारण करनेपर रूप स्थित हुआ भृस्ज-श-ति फिर ' स्तो' श्चुभिः० ' इसकर सकारको शकार किया फिर ' झबे जबाः ' इसकर स्थानसवर्णे होनेसे शकारके स्थानमें जकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । भृज्जति । आत्मनेपदमें । भृज्जते । लिङ्में । भृज्जेत, भृज्जेत । लोट्में । भृज्जतु, भृज्जताम् । लङ्में । अभृज्जत, अभृज्जत ॥

भ्रस्जोरसो रमनापि वा ॥ ३२१ ॥ भ्रस्ज , रसोः, रम्, अपि, वा । पञ्चपदमिदं सूत्रम् ॥ बभर्ज बभ्रज्ज । बभर्जतु: बभ्रज्जतुः । बभर्जिथ बभ्रज्जिथ, बभर्ष्ठ बभ्रष्ठ । स्वरान्तादत्सवध्वेति वेट् । क्ङिति सम्प्रसारण बाधकम् । भृज्ज्यात् । अभाक्षीत् अभार्क्षीत् । अभ्रष्ट अभर्ष्ट ॥ क्षिप प्रेरणे ॥ क्षिप्सीष्ट । अक्षैप्सीत् अक्षिप्त ॥ कृष विलेखने । कृक्षीष्ट । क्रष्टा कर्ष्टा । अक्राक्षीत् अकार्क्षीत् । अकृक्षत अकृक्षाताम् अकृक्षन्त ॥ मिल सगमे ॥ मिलति । मिमिले । अमेलीत् । अमेलिष्ट ॥ मुच्लृ मोचने ॥

भाषा—भ्रस्जधातुके रकार और सकारके स्थानमे रम् आगम होय विकल्प-करके जहां कि अप्रत्यय होनेका विषय नहीं है । भाव यह है कि भ्रस्जधातुका रकार और सकारका लोप होय और रम् आगम होय विकल्पताकर और चार लकारोंके विषैं नहीं होय । उदाहरण—लिट्मे भ्रस्जधातुका रकार सकार दूर कर रम् आगम किया तौ आगम मित् होनेसे भकारउत्तरवर्त्ती अकारसे परे हुआ तब रूप सिद्ध हुआ । बभर्ज । और जहां भ्रस्जधातुके रेफसकारका लोप और रम् आगम नही हुआ तहां ' स्तोः श्चुभः०, झवे जवाः ' इनकर सकारको जकार करने पर रूप सिद्ध हुआ । बभ्रज्ज । द्विवचनमें ' ऋसंयोगाण्णादिरक्कित् ' इसकर अतु-सूकी अक्कित् संज्ञा होनेसे संप्रसारण तौ हुआ नही किन्तु एक जगह ' भ्रस्जो रसोः रमनापि० ' इसकर सिद्ध हुआ । बभर्जतुः । और जहा रेफसकारके स्थानमें रम् आगम नही हुआ तहां ' स्तोः श्चुभिः०, झवे जवाः ' इनकर सिद्ध हुआ । बभ्र-ज्जतुः । थप्मे ' स्वरान्तादत्वतश्च० ' इसकर एक जगह इट् करनेपर ' भ्रस्जो रसोः रमनापि वा ' इसकर सिद्ध हुआ । बभर्जिथ, बभ्रज्जिथ । और जहां इट नहीं हुआ तहां रम् आगम करनेपर ' छजषराजादेः०, ष्टुभिः०' इनकर सिद्ध हुआ । बभर्ष्ठ । आर जहां रम् आगम नहीं हुआ तहा ' छशषराजादेः० ' इसकर जकारको षकार करनेपर ' स्कोराद्योश्च ' इसकर सकारका लोप कर ' ष्टुभिः० ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । बभ्रष्ठ । आत्मनेपदमे । बभ्रज्जे, बभर्जे । कित्ङित्प्रत्यय पर हुए संते रम् आगमका बाधा करनेवाला संप्रसारण होनेसे रूप सिद्ध हुआ । भृज्ज्यात् । सीष्टादि-कमें एक जगह रम् आगम किया तहां ' छशष०, षढोः०, कि०' इनकर सिद्ध हुआ भर्क्षीष्ट । और जहां रम् आगम नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । भ्रक्षीष्ट । तादिकमें रमागमम । भर्ष्टा । और जहां रमागम नही हुआ तहां ' छशष०, स्कोः०, ष्टुभिः० इनकर सिद्ध हुआ भ्रष्टा । लुङ्में जहां रम् आगम हुआ तहां ' छशष०, षढोः०, कि०, अनिटो नामिवतः ' इनकर सिद्ध हुआ । अभार्क्षीत् । और एक जगह अभ्राक्षीत् । द्विवचनमें ' झसात्, छशष०' इत्यादिकर रम् आगममें । अभार्ष्टाम् । और एक जगह । अभ्राष्टाम् । आत्मनेपदमें रमागममें । अभर्ष्ट । और एक जगह अभ्रष्ट । क्षिपधातु प्रेरणअर्थमे वर्त्ते है । लट्में । क्षिपति, क्षिपते । लिट्में चिक्षेप, चिक्षिपे । लिङ्में । क्षिप्यात् । आत्मनेपदमे ' सिस्योः ' इसकर सिद्ध हुआ क्षिप्सीष्ट । लुट्में । क्षेप्ता । लुङ्में । अक्षैप्सीत् । आत्मनेपदमें ' सिस्योः, झसात् ' इनकर सिद्ध हुआ । आक्षिप्त । कृषधातु विलेखन नाम खोदनेमें वर्त्ते है । लट्में । कृषति, कृषते । लिट्में । चकर्ष, चकृषे । लिङ्में । कृष्यात् । आत्मनेपदमें ' सिस्योः, षढोः०, कि० ' इनकर सिद्ध हुआ । कृक्षीष्ट । तादिकमे ' कृषादीनां वा ' इसकर

एक जगह । फशा । और एक जगह । फर्शौ । छुड्में ' स्पृशमृशकृष० ' इसकर एक जगह सिचप्रत्यय करनेपर ' कृपादीनां वा ' इसकर । अस्प्राक्षीत, अस्पार्क्षीत् । और एक जगह ' हलपान्तात्सस ' इसकर सिद्ध हुआ । अस्पृक्षत । आत्मनेपदमें सिचे विषै ' सिस्यो', शसात् । अस्पृष्ट । और एक जगह सकप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अस्पृक्षत । द्विवचनमें ' झाति सको लोप' ० ' इसकर सिद्ध हुआ । अस्पृक्षातास् । मिलधातु सगमें वर्ते है लट्में । मिलति । लिट्में । मिमेल । छुड्में । अमेलीत, अमेलिष्ट । मुच्लधातु मोचन नाम छोडनेमें वर्ते है ॥

मुचादेर्मुम् ॥ ३२१ ॥ मुंचादि', मुंमें । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ मुचलुपविदलिपषिचकृतपिशसिञ्चामप्रत्यये मुम् ॥ मुञ्चति । मुचीष्ट । लित्पुषादेर्ङ । अमुचत् । अमुच ॥ लुप्लृ छेदने ॥ लुम्पति । लुलोप । लुप्सीष्ट । अलुपत् अलुप्त ॥ विद्लृ लाभे ॥ विन्दति । अविदत् । अवेदिष्ट । अनिडयमित्येके । वेत्ता । अवित्त ॥ लिप उपदेहे ॥ लिम्पति । लिपिसिचीति ङ' । अलिपत् । अलिपत अलिप्त ॥ षिच क्षरणे ॥ सिञ्चति । सिषिचिषे । असिचत् । असिचत असिक्त ॥ इत्यादि ॥

भाषा-मुच, लुप विद, लिप षिच, कृत, पिश, सिद् इन धातुओंको अप्रत्यय पर हुए संते मुम् आगम होय । उदाहरण-मुचधातुसे अप्रत्यय करनेके अनन्तर मुम् आगम किया तो मकारउचारवर्ती उकार स्वरसे परे होनेसे लट्में रूप स्थित हुआ मु-म्-च् अ ति फिर मो नो धातो ' इसकर मकारके स्थानमें नकार करने-पर स्तो' श्चुभि' ० इसकर रूप सिद्ध हुआ । मुञ्चति । आत्मनेपदमें मुञ्चते । लिट्में । मुमोच मुमुचे । लिङमें मुच्यात् । आत्मनेपदमें ' सिस्यो', षो' कुः इनकर सिद्ध हुआ मुक्षीष्ट । छुड्में परस्मैपदके विषै ' लित्पुषादेर्ङः ' इसकर सिद्ध हुआ । अमुचत् । आत्मनेपदमें ' सिस्यो शसात् इनकर सिद्ध हुआ । अमुक्त । लुप्लृधातु छेदन नाम काटनेमें वर्ते है । मुम् आगम कर ' मो नो धातो', नश्चापदान्ते झले यमा यपेऽस्य वा ' इनकर रूप सिद्ध हुआ । लुम्पति । समस्त लकारोंमें मुचधातुके समान रूप जानने । विद्लृधातु लाभअर्थमें वर्ते है । मुम् आगम कर मो नो धातो नश्चापदान्ते यमा यपे० इनकर सिद्ध हुआ । विन्दति लिट्में । विवेद । लिङमें । विद्यात् वेदिषीष्ट । छुड्में । अविदत् । आत्मनेपदमें । अवेदिष्ट । कोई आचार्य इसको अनिट् कहते हैं तहाँ सीष्टादिकोंमें । वित्सीष्ट ।

लुङ्में आत्मनेपदमे । अलिप्त । लिपधातु उपदेह नाम वृद्धि अर्थमें वर्त्ते है । लट्में । लिम्पति । शेष लकारोंमे लुप धातुके समान रूप जानने । लुङ्में 'लिपिसिचिह्वय- तीना ङो लुङि वा आति' इसकर परस्मैपदमे नित्य ङप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ। अलिपत् । आत्मनेपदमें विकल्पकरके ङप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अलिपत । एक जगह 'सिस्योः, झसात्' इनकर सिद्ध हुआ । अलिप्त । षिचधातु क्षरण नाम सेचन करनेमें वर्त्ते है । लट्मे । सिञ्चति । लिट्मे । सिषेच । लिङ्में । सिच्यात् । आत्म- नेपदमे 'सिस्योः, चोः कुः, क्ङि०' इनकर सिद्धहुआ । सिक्षीष्ट । लुङ्मे लिप्के समान सिद्ध हुआ । असिचत्, असिचत, असिक्त ॥ इत्यात्पे ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरा- मोक्तभाषया । चन्द्रिकोत्तरार्द्धवृत्तौ तुदाद्यात्पपदं युतम् ॥

ऋषी गतौ ॥ ऋषति । आनर्ष ॥ ओव्रश्चू छेदने ॥ वृश्चति वव्रश्च वव्रश्चतुः वव्रश्चुः । वव्रश्चिथ वव्रष्ठ । व्रश्चिता व्रष्टा । व्रश्चिष्यति व्रक्ष्यति । अव्रश्चीत् अव्राक्षीत् अव्राष्टाम् ॥ व्यच व्याजीकरणे ॥ विचति । विव्याच विविचतुः । विच्यात् । व्यचिता । व्यचिष्यति । अव्याचीत् अव्यचीत् ॥ उछि उंछे ॥ उंछति । उञ्छाञ्चकार । औञ्छीत् ॥ उच्छी विवासे ॥ उच्छति उच्छाञ्चकार । औच्छीत् ॥ ऋच्छ गतींद्रियप्रलयमूर्तिभावेषु ॥ ऋच्छति ॥

भाषा—ऋशीधातु गतिअर्थमें वर्त्ते है । लट्मे 'तुदादिरः' इसकर अप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । ऋषति । लिट्में 'नुगशाम्, आभ्नोर्णादौ' इनकर रूप सिद्ध हुआ। आनर्ष । द्विवचनमें । आनृषतुः । लुङ्में । आर्षीत् । ओव्रश्चू धातु छेदन करनेमें वर्त्ते है । इसमें ओकार ऊकार इत्संज्ञक हैं । अप्रत्यय करनेपर 'ग्रहा क्ङिति च' इसकर संप्रसारण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । वृश्चति । लिङ्मे । वृश्चेत् । लोट्में । वृश्चतु । लङ्में अवृश्चत् । लिट्में द्वित्व करनेके अनन्तर 'णवादौ पूर्वस्य' इसकर पूर्व रको ऋकार संप्रसारण करनेपर रूप स्थित हुआ वृ-व्रश्च-अ फिर वृको उ संप्रसारण नहीं हुआ 'न संप्रसारणे संप्रसारणम्' इसकर तब 'रः' इस सूत्रकर सिद्ध हुआ । वव्रश्च । द्विवचनमें अकित् होनेसे व्रश्चको संप्रसारण न होनेपर रूप सिद्ध हुआ । वव्र- श्चतुः । थप्में 'ऊदितो वा' इसकर एक जगह इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । वव्र- श्चिथ । और अनिट्पक्षमें 'छशष०' इसकर चकारको षकार किया । फिर 'निमि- त्ताभावे नैमित्तिकस्याभावः' इसकर शकारके स्थानपर सकार रहनेपर 'स्कोः०' इस- कर सकारका लोप किया फिर 'ष्टुभिः०' इसकर सिद्ध हुआ । वव्रष्ठ । लिट्में संप्-

सारण करनेसे सिद्ध हुआ । वृश्च्यात् । वादिकमें सेट्पक्षम । व्रश्चिता । अनिट्पक्षमें ' छ्वशप०, स्कोः ०, झ्रमि ०' इसकर सिद्ध हुआ । व्रष्टा । लुङ्में सेट्पक्षमें । अव्रश्चीत् । अनिट्पक्षमें ' छ्वशप०, स्कोः ०, षढो०, कि०, अनिटो नामिवत ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अव्राक्षीत् । द्विवचनमें ' हसाद, छ्वशप० स्कोः०, झ्रमि ०, अनिटो नामिवत' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अव्राष्टाम् । व्यचधातु व्याजीकरण नाम छल करनेमें वर्त्ते है । अप्रत्यय करनेके अनन्तर ' ग्रहां क्ङिति च ' इसकर संप्रसारण करनेपर रूप सिद्ध हुआ । विचति । लिट्म ' णपाद्रौ पूर्वस्य ' इसकर सिद्ध हुआ । विव्याच । द्विवचनमें ' ग्रहां क्ङिति च इसकर सिद्ध हुआ । विविचतुः । लुट्में । व्यचिता । लुङ्में ' अतो हसादेर्ले०' इसकर सिद्ध हुआ । अव्याचीत् अव्यचीत् । उछिधातु उञ्छ नाम अन्नादिके चुननेमें वर्त्ते है । इदितो नुम् ' इसकर नुम् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । उञ्छति । लिट्म गुरुनाम्यादि इानसे आम् प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । उञ्छांचकार लुङ्में । औञ्छीत् । ऋच्छीधातु विवासअर्थमें वर्त्ते है । विवास नाम स्वदेश त्याग परदेश गमनका है । लुट्में । उच्छति । लिट्में । उच्छांचकार लुङ्में । औच्छीत् । मुर्च्छ धातु गति और इन्द्रियप्रलय नाम स्वाप और मूर्तिभाव नाम मूर्च्छामें वर्त्ते है । लट्में । मूर्च्छति ॥

ऋच्छेर्नाम् ॥ ३२२ ॥ ऋच्छे, न, आम् । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥

ऋच्छेर्लिटि गुणः ॥ ३२३ ॥ ऋच्छेः, लिटि गुणः । त्रिपदमिदं सूत्रम् । नुगशाम् । आनर्छ आनर्छतुः । ऋच्छिता ॥ उज्ज आर्जवे ॥ उज्जाञ्चकार ॥ उज्झ त्यागे ॥ उज्झाञ्चकार ॥ लुभ विमोहने ॥ लुभति । लोभिता लोब्धा । अलोभीत् । तृप तृम्फ तृफ तृम्फ तृप्तौ ॥ तृपति । अतर्पीत् ॥

भाषा—ऋच्छधातुसे आम्प्रत्यय नहीं होय । ऋच्छधातुको गुण होय लिट्के विषें । उदाहरण—लिट्में द्वित्व करनेके पश्चात् नुगशाम् र', आम्नोणोदी इसकर गुण कर जैसे सिद्ध हुआ । आनर्छ । द्विवचनमें । आनर्छतुः । लुट्में । आर्छीत् । उज्जधातु आर्जव नाम कोमलतामें वर्त्ते है । लिट्में । उज्जांचकार । उज्झधातु त्यागअर्थमें वर्त्ते है । लुभधातु विमोहनमें वर्त्ते है । लट्में लुभति । लिट्में । लुलोभ । वादिकमें इषु-सहलुभ० इसकर सिद्ध हुआ । लोभिता लोब्धा । लुङ्में । अलोभीत् । तृप तृम्फ तृफ तृम्फ तृप्तिअर्थमें वर्त्ते है । लट्में तृपति । लुङ्में । सेट् होनेसे सिद्ध हुआ । अतर्पीत्

तृम्फादीनाममत्यये नुम् । तृम्फति । ततृम्फ । अतृम्फीत् ॥ तुप तुम्प तुफ तुम्फ हिंसायाम् ॥ तुपति । तुतोप । अतोपीत् । तुम्पति । अतुम्पीत् । तुफति । तुतोफ । अतोफीत् तुम्फति । तुतुम्फ । अतुम्फीत् ॥ दृप दृम्फ उत्क्लेशे ॥ दृपति । दृम्फति ॥ ऋफ ऋम्फ हिंसायाम् ॥ ऋफति । ऋम्फति । ऋम्फाञ्चकार ॥ गुफ गुम्फ ग्रन्थे ॥ गुफति । गुम्फति । अगुम्फीत् ॥ उभ उम्भ पूरणे ॥ उभति । उवोभ । औभीत् । उम्भति । उम्भाञ्चकार । औम्भीत् ॥ शुभ शुम्भ शोभार्थे ॥ शुभति । अशोभीत् । शुम्भति । अशुम्भीत् ॥ दृभी ग्रन्थे ॥ दृभति । अदर्भीत् ॥ चृती हिंसाग्रन्थनयोः ॥ चृतति । नृततृद्चृतेतीड्वा । चर्तिष्यति चर्त्स्यति । अचर्तीत् ॥ विध विधाने ॥ विधति । वेधिता । लिख अक्षरविन्यासे ॥ लिखति लेखिता ॥ कुट कौटिल्ये ॥ कुटति । चुकोट ॥

भाषा—नकार है उपधामें जिनके ऐसे तृम्फादिक धातुओंको अप्रत्यय पर हुए संते नुम् आगम होय । उदाहरण—तृंफधातुसे अप्रत्यय करनेपर 'नोलोपः' इसकर रूप स्थित हुआ । तृफ-अ-ति फिर नुम् आगम करनेपर 'नश्चापदान्ते झले' इसकर रूप सिद्ध हुआ । तृम्फति । लिट्में । ततृम्फ । लिङ्में 'नोलोपः' इसकर नकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । तृफ्यात् । लुङ्मे । अतृम्फीत् । तुप तुम्प तुफ तुम्फ धातु हिंसाअर्थमें वर्त्ते हैं । इनमें जिन धातुओंके उपधाभूत नकार है उन धातुओंको अप्रत्ययके विषैं नुम् आगम होय । दृप दृम्फ धातु उत्क्लेश नाम पीडाअर्थमें वर्त्ते हैं । ऋफ ऋम्फ धातु हिंसाअर्थमें वर्त्ते हैं । गुफ गुम्फ धातु ग्रन्थ नाम गुम्फनअर्थमें वर्त्ते हैं । उभ उम्भ धातु पूरणअर्थमें वर्त्ते हैं । लट्में । उभति उम्भति । लिट्में 'असवर्णे स्वरे०' । उवोभ । 'कासादिप्रत्ययादाम्' । उम्भाचकार । शुभ शुम्भ शोभार्थेमें वर्त्ते हैं । इन तृम्फधातुसे लेकर शुम्भधातुपर्यन्त धातुओंके उपधामें जो कि नकार है उसका लोप कर दूसरा नुम् आगम कर रूप साधने योग्य हैं । दृभीधातु ग्रन्थ नाम गुम्फनअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । दृभति । लिट्में । ददर्भ । द्विवचनमें । ददृभतुः । लुङ्में । अदर्भीत् । चृतीधातु हिंसा और ग्रन्थन नाम गांठ देनेमें वर्त्ते है । लट्में । चृतति । लिट्में । चचर्त्त । लृट्लृङ्में 'नृततृदकृदचृतकृद्धचोऽसेस्सादेरिड्वा' इसकर एक जगह सिद्ध हुआ । चर्त्तिष्यति । और एक जगह । चर्त्स्यति । लुङ्मे । अचर्त्तीत् । विधधातु विधान

करनेमें वर्त्ते है । लिखधातु अक्षरोंके चिह्न करनेमें अर्थात् लिखनेमें वर्त्त है । कुट-धातु कुटिलताम वर्त्ते है । छद्में । कुटासि । लिट्में । चुकोट ॥

कुटादेर्ङ्णिद्वर्जं प्रत्ययो ङित् ॥ ३२४ ॥ कुटादेः , ञ्णिद्वर्ज , प्रत्ययः , ङित् । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ चुकुटिथ । कुटिता । अकुटीत् ॥ पुट संश्लेषणे ॥ पुटति । पुपोट । अपुटीत् ॥ कुच संकोचने ॥ कुचति । चुकोच । अकुचीत् ॥ गुज शब्दे ॥ गुजति । गुजिता । अगुजीत् ॥ गुड रक्षायाम् ॥ गुडति । गुडिता । अगुडीत् ॥ कुड शब्दे ॥ कुडति । कुडिता ॥ डिप क्षेपे ॥ डिपति । डिपिता ॥ छुर च्छेदे ॥ कुर्छुरोर्न दीर्घः । छुर्यात् । छुरिता ॥ स्फुट विकसने ॥ स्फुटति ॥ मुट आक्षेपप्रमर्दनयोः । मुटति । मुमोट । मुटिता ॥ त्रुट छेदे ॥ त्रुट्यति त्रुटति । तुत्रोट । त्रुटिता ॥ तुट कलहकर्मणि ॥ तुटति । तुटिता । तुटिष्यति ॥ छुट चुट छेदे ॥ छुटति । छुटिता । चुटिता ॥ जुट बन्धने ॥ जुटति । जुटिता ॥ कड मदे ॥ कडति । अकडीत् ॥ लुठ संश्लेषणे ॥ लुठति । लुठिता ॥ कुड घनत्वे ॥ कुडिता ॥ कुड बाल्ये ॥ कुडति ॥ पुड उत्सर्गे ॥ पुडिता ॥ मुड प्रतीघाते ॥ मुडिता । स्फुर स्फुरणे ॥ स्फुरिता ॥ स्फुल संचलने ॥ स्फुलिता ॥

भाषा—कुट आदिक धातुओंसे परे प्रत्यय ङित्संज्ञक होता है ञ्णित् और णित् इनको त्याग करके । भाव यह है कि ञित्प्रत्यय और णित्प्रत्ययको त्यागकर अन्य प्रत्यय कुटादिकसे ङित्संज्ञक होता है । थल्में इट् करनेसे गुण नहीं हुआ क्योंकि थल्प्रत्यय ङित्संज्ञक है तब रूप सिद्ध हुआ । चुकुटिथ । तासिकमें तासिक प्रत्यय ङित् होनेसे गुण न होनेपर रूप सिद्ध हुआ । कुटिता । लुङ्में । अकुटीत् । पुट धातु संश्लेषण नाम संयोगमें वर्त्ते है । कुचधातु संकोच नाम समेटनेमें वर्त्ते है । गुजधातु शब्द करनेमें वर्त्ते है । गुडधातु शब्द करनेमें वर्त्ते है । डिपधातु क्षेप नाम प्रेरणअर्थमें वर्त्ते है । छुरधातु छेदनअर्थमें वर्त्ते है । लट्म । छुरति । लिट्में । चुच्छोर । लिङ्म ' कुर्छुरोर्न दीर्घः ' इसकर सिद्ध हुआ । छुर्यात् । तासिकमें । छुरिता । लुङ्में । अच्छुरीत् । स्फुटधातु विकसन नाम प्रफुल्लित होनेमें वर्त्ते है । मुटधातु आक्षेप और अत्यन्त मर्दन करनेमें वर्त्ते है । त्रुटधातु छेदनअर्थमें वर्त्ते है । ' भ्राशभ्लाशभ्रमुक्रमुक्लमुत्रसित्रुटिलषः श्यन् वा ' इसकर एक जगह । त्रुट्यति ।

और एक जगह । त्रुटति । लिट्में । तुत्रोट । लुट्में । त्रुटिता । तुटधातु कलहकर्ममें वर्त्ते है । छुट चुट धातु छेदनअर्थमें वर्त्ते हैं । जुटधातु बांधनेमें वर्त्ते है । कडधातु मदअर्थमे वर्त्ते है । लुङ्मे ङित् होनेसे वृद्धि न होनेपर रूप सिद्ध हुआ । अकडीत् । लुठधातु संश्लेषण नाम संयोगमे वर्त्ते है । कृडधातु घनत्व नाम घने होनेमें वर्त्ते है । लुट्में । कृडिता । कुडधातु बाल्य नाम अज्ञतामें वर्त्ते है । पुडधातु उत्सर्ग नाम त्यागअर्थमें वर्त्ते है । घुटधातु प्रतीघात नाम हिंसाअर्थमें वर्त्ते है । स्फुरधातु स्फुरण नाम फरकनेमें वर्त्ते है । लुङ्में । अस्फुरीत् । स्फुलधातु भली प्रकार चलनेमें वर्त्ते है । लुङ्मे । अस्फुलीत् ॥

निर्निविभ्यः स्फुरतिस्फुलत्योस्सस्य षो वा ॥ २२८ ॥ निर्निविभ्यः, स्फुरतिस्फुलत्योः, सस्य, षः, वा । पंचपदमिदं सूत्रम् ॥ निःष्फुरति निस्स्फुरति निःस्फुरति निष्फुरति निस्फुरति । निःष्फुलति निःस्फुलति निष्फुलति निस्फुलति ॥ णू स्तवने ॥ अनुवीत् ॥ धू विधूनने ॥ अधुवीत् ॥ गु पुरीषोत्सर्गे ॥ जुगुविथ जुगुथ । गूयात् । गोता ॥ ध्रु गतिस्थैर्ययोः ॥ ध्रुता । अध्रुवीत् ॥ इति कुटादयः ॥

भाषा—निर्उपसर्ग, निउपसर्ग और विउपसर्ग इनसे परे स्फुरधातु और स्फुलधातुके सकारको षकार विकल्पकरके होय । उदाहरण—निर्उपसर्गसे स्फुरधातुके सकारको षकार करनेपर 'खरोर्विसर्गः' इसकर सिद्ध हुआ । निःष्फुरति । और जहां नहीं हुआ तहां । निस्स्फुरति । निःस्फुरति । इसी प्रकार निउपसर्ग और विउपसर्गसे सिद्ध हुए रूप जानने । नूधातु स्तुति करनेमे वर्त्ते है । लट्में अप्रत्यय करनेके अनन्तर 'नुधातोः' इसकर उव् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । नुवति । लिट्में । नुनाव । थप्में । नुनविथ । तादिकमें । नुविता । लुङ्मे सेट् होनेसे । अनुवीत् । धूधातु विधूनन नाम कम्पनअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । धुवति । लिट्में । दुधाव । लुङ्में कुटादिक होनेसे 'नुधातोः' इसकर उव्के करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अनुवीत् । गुधातु विष्ठाके त्यागनेमें वर्त्ते है । लट्में अप्रत्यय ङित् परे होनेसे गुण न होनेपर 'नुधातोः' इसकर सिद्ध हुआ । गुवति । लिट्में जुगाव । थप्में कुटादि होनेसे गुण नहीं होनेपर इट्पक्षमें 'नुधातोः' इसकर सिद्ध हुआ । जुगुविथ । अनिट्पक्षमें । जुगुथ । लिङ्मे । गूयात् । तादिकमें । गुता । लुङ्में । अगुषीत् । अगुष्टाम् । ध्रुधातु गति और स्थिरताअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । ध्रुवति । लिट्मे । दुध्राव । थप्में 'स्वरान्तादत्वतश्च' इसकर एक जगह इट् करनेपर थप्को ङित् होनेसे 'नुधातोः' इसकर सिद्ध हुआ । दुध्रुविथ । और

करनेमें वर्त्ते है। लिखधातु अक्षरोंके चिह्न करनेमें अर्थात् लिखनेमें वर्त्ते है। कुट-धातु कुटिलतामें वर्त्ते है। छद्में। कुटति। लिट्में। चुकोट॥

कुटादेर्ञ्णिद्वज्जे प्रत्ययो ङित् ॥ ३२४ ॥ कुटादेः, ञ्णिद्वर्जे, प्रत्ययः, ङित्। चतुष्पदमिदं सूत्रम्॥ चुकुटिथ। कुटिता। अकुटीत्॥ पुट संश्लेषणे॥ पुटति। पुपोट। अपुटीत्॥ कुच संकोचने॥ कुचति। चुकोच। अकुचीत्॥ गुज शब्दे॥ गुजति। गुजिता। अगुजीत्॥ गुड रक्षायाम्॥ गुडति। गुडिता। अगुडीत्॥ कुड शब्दे॥ कुडति। कुडिता॥ डिप क्षेपे॥ डिपति। डिपिता॥ छुर च्छेदे॥ कुरच्छुरोर्न दीर्घ। छुर्यात्। छुरिता॥ स्फुट विकसने॥ स्फुटति॥ मुट आक्षेपप्रमर्दनयोः। मुटति। मुमोट। मुटिता॥ त्रुट छेदे॥ त्रुट्यति त्रुटति। तुत्रोट। त्रुटिता॥ तुट कलहकर्मणि॥ तुटति। तुटिता। तुटिष्यति॥ छुट चुट छेदे॥ छुटति। छुटिता। चुटिता॥ जुट बन्धने॥ जुटति। जुटिता॥ कड मदे॥ कडति। अकडीत्॥ लुठ संश्लेषणे॥ लुठति। लुठिता॥ कृड घनत्वे॥ कृडिता॥ कुड बाल्ये॥ कुडति॥ पुड उत्सर्गे॥ पुडिता॥ घुट प्रतीघाते॥ घुटिता। स्फुर स्फुरणे॥ स्फुरिता॥ स्फुल सञ्चलने॥ स्फुलिता॥

भाषा—कुट आदिक धातुओंसे परे प्रत्यय ङित्संज्ञक होता है ञित और णित्‌को त्याग करके। भाव यह है कि ञित्प्रत्यय और णित्प्रत्ययको त्यागकर अन्य प्रत्यय कुटादिकसे ङित्संज्ञक होता है। थप्में इट् करनेसे गुण नहीं हुआ क्योंकि थप्प्रत्यय ङित्संज्ञक है तब रूप सिद्ध हुआ। चुकुटिथ। तासिकमें तासिप्रत्यय ङित् होनेसे गुण न होनेपर रूप सिद्ध हुआ। कुटिता। लुङ्में। अकुटीत्। पुट धातु संश्लेषण नाम संयोगमें वर्त्ते है। कुचधातु संकोच नाम समेटनेमें वर्त्ते है। गुजधातु शब्द करनेमें वर्त्ते है। कुडधातु शब्द करनेमें वर्त्ते है। डिपधातु क्षेप नाम प्रेरणअर्थमें वर्त्ते है। छुरधातु छेदनअर्थमें वर्त्ते है। लट्में। छुरति। लिट्में। चुच्छोर। लिङ्में 'कुरच्छुरोर्न दीर्घ' इसकर सिद्ध हुआ। छुर्यात्। तासिकमें। छुरिता। लुङ्में। अच्छुरीत्। स्फुटधातु विकसन नाम प्रफुल्लित होनेमें वर्त्ते है। मुटधातु आक्षेप और अत्यन्त मर्दन करनेमें वर्त्ते है। त्रुटधातु छेदनअर्थमें वर्त्ते है। 'भ्राशभ्लाशभ्रमुक्रमुक्लमुत्रसित्रुटिलषः श्यन्वा' इसकर पक्ष जगह। त्रुट्यति।

इर् किया फिर ' ग लो वा ' इसकर गधातुके स्था में उत्पन्न हुए रकारको विकल्पकरके लकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । गिराति । गिलति । लिट्में । जगार । जगाल । तादिकमें ऋकारान्तको सेट् होनेसे गुण करनेपर एक जगह ' गृ ' लो वा ' इसकर सिद्ध हुआ । गलिता । और एक जगह । गरिता । ' वृङ्वृञ्ऋदन्तानां वा ' इसकर दीर्घ करनेसे रूप सिद्ध हुआ । गलीता । गरीता । लुङ्में ' अनिटो नामिवतः ' इसकर वृद्धि करनेपर ' ग लो वा ' इसकर सिद्ध हुआ । अगारीत् । अगालीत् । स्पृशधातु स्पर्श करनेमें वर्त्ते है । लट्मे । स्पृशति । लिट्में । पस्पर्श । थप्में । पस्पर्शिथ । लिङ्मे । स्पृश्यात् । तादिकमें गुण करनेके पश्चात् ' कृषादीनां वा ' इसकर एक जगह । स्प्रष्टा । और एक जगह । स्पर्ष्टा । लृट्मे ' छशष०, षढोः०, कृपादीनां वा ' । प्रक्ष्यति, पर्क्ष्यति । लुङ्मे वृद्धि करनेके पश्चात् ' छशष०, षढो०, कृषादीना वा ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अप्राक्षीत्, अपार्क्षीत् । द्विवचनमें ' झसात् ' इसकर सिप्रत्ययका लोप करनेपर ' छशष०, ष्टुभिः०, कृषादीनां वा ' । अप्राष्टाम्, अपार्ष्टाम् । और जहा ' कृषस्पृशमृशतृपदृपा वा ' इसकर सि नहीं हुआ तहां ' हशषान्तात्सक् ' इसकर सक् प्रत्यय करनेपर ' छशष०, षढोः०, कि० ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अस्पृक्षत् । प्रच्छधातु जाननेकी इच्छामें अर्थात् नहीं जाने हुए इतिहासादिक पूंछनेमें वर्त्ते है । प्रच्छधातुसे अप्रत्यय करनेके अनन्तर ' ग्रहा ङ्किति च ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । पृच्छति । लिट्मे ' णबादो पूर्वस्य ' इसकर पूर्वको संप्रसारण करनेपर ' रः ' इसकर सिद्ध हुआ । पप्रच्छ । द्विवचनमें ' ऋसंयोगाण्णादिरकित् ' इसकर अकित् होनेसे संप्रसारण न होनेपर सिद्ध हुआ । पप्रच्छतुः । थप्मे ' स्वरान्तादत्वतश्च० ' इसकर इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । पप्रच्छिथ । और जहां इट् नहीं हुआ तहा ' छशषराजादेः०, ष्टुभिः० ' इनकर सिद्ध हुआ । पप्रष्ठ । लिङ्में संप्रसारण होनेपर सिद्ध हुआ । पृच्छ्यात् । तादिकमें अनिट् होनेसे ' छशष०, ष्टुभिः० ' इनकर सिद्ध हुआ । प्रष्टा । लृट्मे । प्रक्ष्यति । लुङ्मे ' अनिटो नामिवतः, छशष०, षढोः०, कि० ' इनकर सिद्ध हुआ । अप्राक्षीत् । द्विवचनमे ' झसात् ' इसकर सिद्ध हुआ । अप्राष्टाम् । सृजधातु विसर्ग नाम रचनामें वर्त्ते है । लट्में । सृजति । लिट्में । ससर्ज । थप्में ' सृजिदृशोस्थपो वेट् ' इसकर विकल्पकरके इट् करनेपर सिद्ध हुआ । ससर्जिथ । और अनिट्पक्षमें गुण करनेके पश्चात् ' रारो झसे दृशाम् ' इसकर अर्के स्थानमें र करनेपर ' छशष० ष्टुभिः० ' इनकर सिद्ध हुआ । सस्रष्ठ । लिङ्में । सृज्यात् । तादिकमे गुण करनेके पश्चात् ' रारो झसे दृशाम् ' इसकर सिद्ध हुआ । स्रष्टा । लृट्मे ' छशष०, षढोः०, रारो झसे दृशाम् ' इनकर सिद्ध हुआ । स्रक्ष्यति । लुङ्में ' छशष०, षढोः०, कि० अनिटो नामिवतः, रारो झसे दृशाम् ' इनकर सिद्ध हुआ । अस्राक्षीत् । द्विवचनमें ।

जहां इट् नहीं हुआ वहां यप्प्रत्ययको 'कुट्यादेर्ङ्णिदर्शे' इसकर ङित् होनेसे सिद्ध हुआ । दुधुव । धाविष्यन्त । धुवा । छुक्में सिप्प्रत्ययको ङित् होनेसे वृद्धि न होनेपर रूप सिद्ध हुआ । अधुवीत् । यह कुटादिक धातु है ॥

कृती छेदने ॥ मुचादेर्नुम् । कृन्तति । नृतवृदक्षुद्धृतकृन्तयोऽसेस्सा-देरिट्वा । कर्तिष्यति कर्त्स्यति । अकर्तीत् ॥ गृ निगरणे ॥

भाषा—कृतीधातु छेदन नाम काटनेमें वर्त्ते है । मुचादिक होनेसे नुम् आगम करनेपर रूट्में रूप सिद्ध हुआ । कृन्तति । लिट्में । चकर्त । थ् में । चकर्तिथ ' लृट्म ' नृतवृदक्षुद्धृतकृन्तयोऽसेस्सादेरिट्वा' इसकर एक जगह इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । कर्तिष्यति । और एक जगह । कर्त्स्यति । लङ्में । अकर्तीत् । गृधातु निगरण नाम निगलनेमें वर्त्ते है ॥

गृ लो वा ॥ ३२६ ॥ 'गृ' 'ले, वा । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ गिरते स्वरे रस्य लो वा ॥ अन इट् । गिरति गिलति । गरिता गरीता, गलिता गलीता । अगारीत् अगालीत् ॥ स्पृश स्पर्शने ॥ स्प्रष्टा स्पर्ष्टा । अस्प्राक्षीत् अस्पार्क्षीत् । अस्पृक्षत् ॥ प्रच्छ ज्ञीप्सायाम् ॥ ग्रहा क्ङिति च । पृच्छति । पप्रच्छिथ पप्रष्ठ । अप्राक्षीत् ॥ सृज विसर्गे ॥ सृजति । सृजिदृशोरथगो वेट् । सस्रजिथ सस्रष्ट । स्रष्टा । अस्राक्षीत् ॥ टुमस्जो शुद्धौ । मज्जति । मस्जिनशोर्झसे नुम् । ममज्जिथ ममङ्क्थ । मङ्क्ता । अमाङ्क्षीत् ॥ विच्छ गतौ ॥ आय । विच्छायति । विच्छायाञ्चकार । विविच्छ ॥ इषु इच्छायाम् ॥ गमादछ । इच्छति । इच्छेत् । इच्छतु । ऐच्छत् । इयेष । इये-षिथ । एषिता एष्टा । ऐषीत् ॥ विश प्रवेशने ॥ वेष्टा । अविक्षत् । मृश आमर्शने ॥ अम्राक्षीत् । अमार्क्षीत् अमृक्षत् ॥ रि पि गतौ ॥ रियति । पियति । रेता । पेता । धि धारणे ॥ धियति ॥ क्षि निवा-सगत्योः क्षियति ॥ षू प्रेरणे ॥ सुवति । सविता ॥ कृ विक्षेपे ॥ किरति चकार चकरतु चकरु ॥

भाषा—निगरणार्थ गधातुके रकारको विकल्पकरके लकार होय स्वर पर हुए सन्ते । उदाहरण—गधातुसे अन्प्रत्यय करनेसे अनन्तर 'अन इट्' इसकर अकारको

अमृक्षत् । रिधातु और पिधातु गतिअर्थमें वर्त्ते हैं । अप्रत्यय करनेके अनन्तर 'नुधातोः' इसकर इय् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । रियति । लिट्में । रिराय । थप्मे । रिरेथ, रिरयिथ । तादिकमे । रेता । लुङ्मे । अरैषीत् । इसी प्रकार पिधातुके रूप जानने । धिधातु धारणअर्थमें वर्त्ते है । लट्मे । धियति । लिट्मे । दिधाय । द्विवचनमे अनेक स्वर असंयोग पूर्व होनेसे इकारको यकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । दिध्यतुः । तादिकमें । धेता । लुङ्मे । अधैषीत् । क्षिधातु निवास और गतिअर्थमे वर्त्ते है । लट्मे क्षियति । लिट्मे । चिक्षाय । द्विवचनमें संयोगपूर्व होनेसे इकारको इय् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । चिक्षियतुः । तादिकमे । क्षेता । लुङ्मे । अक्षैषीत् । षुधातु प्रेरणअर्थमे वर्त्ते है । अप्रत्यय करनेपर 'आदेः ष्णः स्नः' इसकर सकार और 'नुधातोः' इसकर उव् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । सुवति । लिट्में । सुषाव । द्विवचनमे 'नानप्योर्वः' इसकर सिद्ध हुआ । सुषुवतुः । तादिकमे । सोता । लुङ्मे । असौषीत् । कृधातु विक्षेप करनेमें वर्त्ते है । अप्रत्यय करनेके अनन्तर 'ऋत इर्' इसकर ऋकारको इर् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । किरति । लिट्मे । चकार । द्विवचनमे 'ऋसंयोगाण्णादिरकित्' इसकर अनुस्की अकित्संज्ञा होनेपर गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । चकरतुः । चकरुः । थप्मे । चकरिथ । तादिकमे 'वृङ्वृञ्ॠदन्ताना वा' इसकर एक जगह इट्को दीर्घ करनेपर रूप सिद्ध हुआ । करीता । और एक जगह । करिता । लट्में । करीष्यति करिष्यति । लुङ्मे 'धातोर्नामिनः' इसकर वृद्धि करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अकारीत् । द्विवचनमे । अकारिष्टाम् । वहुवचनमे । अकारिषुः ॥

उपात् किरतेस्सुट् छेदेऽर्थे ॥ ३२७ ॥ उपात्, किरतेः, सुट्, छेदे, अर्थे । पंचपदमिदं सूत्रम् ॥

हिंसायां प्रतेश्च ॥ ३२८ ॥ हिंसायाम्, प्रतेः, च । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ उपस्किरति । प्रत्यस्किरत् ॥ रुजो भंगे ॥ अरौक्षीत् अरौक्ताम् ॥ भुजो कौटिल्ये ॥ भोक्ता । अभौक्षीत् अभौक्ताम् ॥ छुप स्पर्शे ॥ छोप्ता । अच्छौप्सीत् ॥ रुश रिश हिंसायाम् ॥ रोष्टा रोष्टासि । अरुक्षत् । रेष्टा । अरिक्षत् ॥ लिश गतौ ॥ लेष्टा । अलिक्षत् ॥ खिद परिघाते ॥ मुचादेर्नुम् खिन्दति । खेत्ता । अखैत्सीत् ॥ पिश् अवयवे ॥ पिंशति । पेशिता ॥ इति पम् ॥

ममज्ञाथाम् । टुमस्जो धातु शुद्धि अर्थमें वर्त्ते है । इसमें टु और ओकार इत्संज्ञक है 'स्वो' झुमि०' इसकर सकार कर पश्चात् 'झषे जशः' इसकर तालुस्थान सवर्ण होनेसे जकार करनेपर ल्टमें रूप सिद्ध हुआ । मज्जति । लिट्में । ममज्ज । थपमें 'स्वरान्तादसवत्स०' इसकर इट् एक जगह करनेपर रूप सिद्ध हुआ । ममज्जिथ । और जहां इट् नहीं हुआ वहां 'मस्जिनशोर्झले नुम्' इसकर नुम् आगम करनेपर रूप स्थित हुआ ममन् स्ज्-थ फिर 'स्कोः०' इसकर सकारका लोप किया फिर 'स्वो' झुमि ०' इसकर नकारको ञकार किया फिर 'घो कुः' इसकर ञकारको ङकार और जकारको गकार किया फिर 'खसे चपा झसानाम्' इसकर सिद्ध हुआ । ममङ्क्थ । लिङ्में । मज्ज्यात् । तादिकमें अनिट् होने-पर 'मस्जिनशोर्झले नुम्, स्कोः०, स्वो' झुमि'०, घो' कु' खसे च०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । मङ्क्ता । ल्टमें । मङ्क्ष्यति । लुङ्में 'अनिटो नामिवत्', मस्जिनशोर्झले नुम्, स्कोः० स्वो झुमि'०, घो कुः, खसे च०, क्षि०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अमाङ्क्षीत् । द्विवचनमें 'झसात्' इसकर सिका लोप करनेपर तादिकके समान रूप सिद्ध हुआ । अमाङ्क्ताम् । विच्छधातु गतिअर्थमें वर्त्ते है । 'आय' इसकर सिद्ध हुआ । विच्छायति । लिट्में विकल्पकरके आयप्रत्यय होनेपर सिद्ध हुआ । विच्छायांचकार । और एक जगह । विविच्छ । लुङ्में । अविच्छायीत, अविच्छीत् । इषधातु इच्छा अर्थमें वर्त्ते है । 'गमां छः' इसकर षकारको छकार आदेश करनेपर रूप सिद्ध हुआ । इच्छति । लिट्में द्वित्व कर गुण करनेके पश्चात् 'असवर्णे स्वरे' इसकर सिद्ध हुआ । इयेष । द्विवचनमें । ईषतुः । तादिकमें 'इषुसहलुभरुषरिषां०' इसकर एक जगह । एष्टा और एक जगह । एषिता । लुङ्में । ऐषीत । विशधातु प्रवेश करनेमें वर्त्ते है । ल्टमें । विशति । लिट्में । विवेश । तादिकमें अनिट् होनेसे 'छशष० झुमि'०' इनकर सिद्ध हुआ । वेष्टा । ल्टमें 'छशष०, षढो'०, क्षि०' इनकर सिद्ध हुआ । वेक्ष्यति । लुङ्में 'हशपान्तात्सक्' इसकर सक् प्रत्यय करनेके अनन्तर 'छशष०, षढो ०, क्षि०' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अविक्षत् । मृशधातु आमर्शन नाम स्पर्शअर्थमें वर्त्ते है । ल्टमें । मृशति । लिट्में । ममर्श । लिङ्में । मृश्यात । तादिकमें अनिट् होनेसे गुण होनेपर 'सृपादीनां वा' इसकर सिद्ध हुआ । म्रष्टा मर्ष्टा । ल्टमें । म्रक्ष्यति, मर्क्ष्यति । लुङ्में 'स्पृशमृशकृषतृपदृपां०' इसकर एक जगह सिप्रत्यय करनेपर 'अनिटो नामिवत्' इसकर वृद्धि करनेके पश्चात् 'सृपादीनां वा' इसकर सिद्ध हुआ । अम्राक्षीत, अमार्क्षीत् । द्विवचनमें सिका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । अम्राष्टाम्, अमार्ष्टाम् । और जहां सिप्रत्यय नहीं हुआ वहां 'हशपान्तात्सक्' इसकर सक् प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ ।

विज इट् ॥ ३२९ ॥ विजेः इट् । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ विजेः पर इडादिप्रत्ययो ङित् ॥ विजिता ॥ ओलजी ओलस्जी व्रीडे ॥ लेजे । ललज्जे ॥ पृङ् व्यायामे ॥

भाषा–विजधातुके परे इट् आदिवाला प्रत्यय ङित्संज्ञक होता है । उदाहरण– विजधातुसे इट् आदिवाला तादिक प्रत्यय ङित् होनेसे गुण न होनेपर रूप सिद्ध हुआ । विजिता । लुङ्में । अविजीत् । यहां ओ विजी तुदादि रुधादि ग्रहण किया है न कि विजिर् पृथग्भावे । ओलजी, ओलस्जी यह दोनों धातु व्रीड नाम लज्जा करनेमें वर्त्ते हैं । इनमें ओकार ईकार इत्संज्ञक हैं । लट्में । लजते । लज्जते । लिट्में । लेजे । ललज्जे । तादिकमें । लजिता । लज्जिता । पृङ्धातु व्यायाम नाम व्यापार अर्थमें वर्त्ते है । बहुधा यह धातु व्याङ्पूर्व होता है । लट्में पृ-अ-ते ऐसा स्थित है ॥

अयकि ॥ ३३० ॥ अयकि । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ ऋतो रिङ् भवत्य- कारे प्रत्यये यकि च ॥ नुधातोः । व्याप्रियते । व्यापप्रे । व्यापृषीष्ट । व्यापर्ता । व्यापरिष्यते । व्यापृत व्यापृषाताम् मृङ् प्राणोत्सर्गे ॥

भाषा–धातुके ऋकारको रिङ् होय अप्रत्यय और यक्प्रत्यय पर हुए संते । उदा० हरण–पृ-अ-ते । इसमे पृधातुके ऋकारको रिङ् किया फिर ' नुधातोः ' इसकर इयङ् किया तब व्याङ्उपसर्ग पूर्व करनेसे रूप सिद्ध हुआ । व्याप्रियते । लिट्में । व्यापप्रे । सीष्टादिकमे ' उः ' इसकर गुण न होनेसे रूप सिद्ध हुआ । व्यापृषीष्ट । लुङ्में ' उः, लोपो ह्रस्वात् ' इनकर सिद्ध हुआ । व्यापृत । द्विवचनमें । व्यापृषाताम् । मृङ्धातु प्राणोंके त्यागनेमे वर्त्ते है । ' आदनुदात्तङितः ' इसकर आत्मनेपद करने- पद ' अयकि ' इसकर सिद्ध हुआ । म्रियते ॥

म्रियतेर्लुङ्लिङोश्चतुर्ष्वेवात् ॥ ३३१ ॥ म्रियतेः, लुङ्लिङोः, चतुर्षु, एव, आत् । पंचपदमिदं सूत्रम् ॥ म्रियते । ममार । ममर्थ । मृषीष्ट । अमृत ॥ दृङ् आदरे ॥ आद्रियते । आदद्रे । आदृषीष्ट । अदर्ता । अदृत । धृङ् अवस्थाने ॥ ध्रियते । अध्रियत । लोपो ह्रस्वात् झसे । अधृत ॥ इति तुदादयः ॥

भाषा–मृङ्धातुसे लट् आदिक चार लकार और लुङ् और लिङ् इनके विषेंही आत्मनेपद होय और शेष लकारोंमें परस्मैपद होय अर्थात् लिट्, लुट्, लृट्, लृङ् इनके विषें परस्मैपद होय । उदाहरण–लिट्में परस्मैपद करनेसे रूप रूप सिद्ध हुआ ।

भाषा—उपउपसर्गसे परे किरतिधातुको सुट् आगम होय छेदनअर्थ वाच्य होनेपर और उपउपसर्ग तथा । प्रतिउपसर्गसे परे किरति धातुको सुट् आगम होय हिंसाअर्थ वाच्य होनेपर । उदाहरण—उपउपसर्गसे छेदन अर्थमें किरतिधातुको सुट् आगम करने पर रूप सिद्ध हुआ । उपस्किरति । और हिंसाअर्थमें उप और प्रति उपसर्गसे सुट् आगम करनेपर सिद्ध हुआ । उपस्किरति । प्रतिस्किरति अट् और द्वित्वरूप मध्यमें होनेसेभी सुट् आगम किरतिधातुको होनेपर सिद्ध हुआ । उपास्किरत् । प्रत्यस्किरत् । प्रतिचस्कार । उपचस्कार । रुजोधातु भग करनेमें वर्त्ते है । इसमें ओकार इत् है । लट्में रुजति । लिट्में । रुरोज । तादिकमें अनिट् होनेसे ' चो' कु:, खसे च० ' इनकर सिद्ध हुआ । रोक्ता । लुङ्में ' अनिटो नामिवत' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अरौक्षीत् । द्विवचनमें । अरौक्ताम् । भुजोधातु कौटिल्य नाम कुटिलतामें वर्त्ते है । इसमें ओकार इत् है । लट्में । भुजति । लिट्में । बुभोज । तादिकमें अनिट् होनेसे सिद्ध हुआ । भोक्ता । लुङ्म । अभौक्षीत् । छुपधातु स्पर्श करनेमें वर्त्ते है । लट्में । छुपति । लिट्में । चुच्छोप । तादिकमें अनिट् होनेसे सिद्ध हुआ । छोप्ता । लुङ्में । अच्छौप्सीत् । रुश रिश धातु हिंसाअर्थमें वर्त्ते हैं । लट्में । रुशति । रिशति । लिट्में । रुरोश । रिरेश । तादिकमें अनिट् होनेसे छशप०, द्रुभि०' इनकर सिद्ध हुआ रोष्टा । रेष्टा । लुङ्म इशपान्तात्सक् ' । अरुक्षत् । अरिक्षत् । लिशधातु गतिअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । लिशति । लिट्में । लिलेश । तादिकमें अनिट् होनेसे ' छशप०, द्रुभि०' इनकर सिद्ध हुआ । लेष्टा । लुङ्में इशपान्तात्सक् ' इसकर सिद्ध हुआ । अलिक्षत् । खिदधातु परिघात नाम हिंसाअर्थमें वर्त्ते है । प्रत्यय करनेके अनन्तर ' मुचादेर्मुम् ' इसकर मुमागम करनेपर मो नो धातो' इसकर रूप सिद्ध हुआ । खिन्दति । लिट्में । चिखेद । तादिकमें अनिट् होनेपर ' खसे च० ' इसकर सिद्ध हुआ । खेत्ता । लुङ्में । अखैत्सीत् । पिशधातु अवयवार्थमें वर्त्ते है । प्रत्यय करनेपर ' मुचादेर्मुम्, मो नो धातो' नश्चापदान्ते झसे ' इनकर सिद्ध हुआ । पिंशति । लिट्में । पिपेश । लुट्में सेट् होनेसे सिद्ध हुआ । पेशिता । लुङ्में । अपेशीत् ॥ इति पम्र ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामोक्तभाषया । चन्द्रिकोत्तरार्धे पंचम गुतम् ॥

जुषी प्रीतिसेवनयो ॥ जुषते ॥ ओविजी भयचलनयो ॥ विजते ॥

भाषा—जुषीधातु प्रीति और सेवा करनेमें वर्त्ते है इसमें ईकार इत्संज्ञक है । प्रत्यय करनेपर लट्के विषे आत्मनेपदमें रूप सिद्ध हुआ । जुषते । लिट्में । जुजुषे । लुङ्में सेट् होनेसे सिद्ध हुआ । अजोषिष्ट । ओविजी धातु भय और चलनेमें वर्त्ते है । इसमें ओकार ईकार इत्संज्ञक है । लट्में । विजते । लिट्में । विविजे ॥

विज इट् ॥ ३२९ ॥ विजेः इट् । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ विजेः पर इडादिप्रत्ययो ङित् ॥ विजिता ॥ ओलजी ओलस्जी व्रीडे ॥ लेजे । ललज्जे ॥ पृङ् व्यायामे ॥

भाषा–विजधातुके परे इट् आदिवाला प्रत्यय ङित्संज्ञक होता है । उदाहरण–विजधातुसे इट् आदिवाला तादिक प्रत्यय ङित् होनेसे गुण न होनेपर रूप सिद्ध हुआ । विजिता । लुङ्में । अविजीत् । यहां ओ विजी तुदादि रुधादि ग्रहण किया है न कि विजिर् पृथग्भावे । ओलजी, ओलस्जी यह दोनों धातु व्रीड नाम लज्जा करनेमें वर्त्ते हैं । इनमें ओकार ईकार इत्संज्ञक हैं । लट्में । लजते । लज्जते । लिट्मे । लेजे । ललज्जे । तादिकमें । लजिता । लज्जिता । पृङ्धातु व्यायाम नाम व्यापार अर्थमें वर्त्ते है । बहुधा यह धातु व्याङ्पूर्व होता है । लट्मे पृ-अ-ते ऐसा स्थित है ॥

अयङि ॥ ३३० ॥ अयङि । एकपदमिदं सूत्रम् ॥ ऋतो रिङ् भवत्यकारे प्रत्यये यकि च ॥ नुधातोः । व्याप्रियते । व्यापप्रे । व्यापृषीष्ट । व्यापर्ता । व्यापरिष्यते । व्यापृत व्यापृषाताम् मृङ् प्राणोत्सर्गे ॥

भाषा–धातुके ऋकारको रिङ् होय अप्रत्यय और यक्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–पृ-अ-ते । इसमे पृधातुके ऋकारको रिङ् किया फिर ' नुधातोः ' इसकर इयङ् किया तब व्याङ्उपसर्ग पूर्व करनेसे रूप सिद्ध हुआ । व्याप्रियते । लिट्में । व्यापप्रे । सीष्टादिकमे ' उः ' इसकर गुण न होनेसे रूप सिद्ध हुआ । व्यापृषीष्ट । लुङ्में ' उः, लोपो ह्रस्वात् ' इनकर सिद्ध हुआ । व्यापृत । द्विवचनमें । व्यापृषाताम् । मृङ्धातु प्राणोंके त्यागनेमे वर्त्ते है । ' आदनुदात्तङितः ' इसकर आत्मनेपद करनेपद ' अयङि ' इसकर सिद्ध हुआ । म्रियते ॥

म्रियतेर्लुङ्लिङोश्चतुर्ष्वेवात् ॥ ३३१ ॥ म्रियतेः, लुङ्लिङोः, चतुर्षु, एवं, आत् । पंचपदमिदं सूत्रम् ॥ म्रियते । ममार । ममर्थ । मृषीष्ट । अमृत ॥ दृङ् आदरे ॥ आद्रियते । आदद्रे । आदृषीष्ट । अदर्ता । अदृत । धृङ् अवस्थाने ॥ ध्रियते । अध्रियत । लोपो ह्रस्वात् झसे । अधृत ॥ इति तुदादयः ॥

भाषा–मृङ्धातुसे लट् आदिक चार लकार और लुङ् और लिङ् इनके विषैंही आत्मनेपद होय और शेष लकारोंमें परस्मैपद होय अर्थात् लिट्, लुट्, लृट्, लृङ् इनके विषैं परस्मैपद होय । उदाहरण–लिट्में परस्मैपद करनेसे रूप रूप सिद्ध हुआ ।

ममार । द्विवचनमें । मम्रतु । थप्में 'ऋदन्तात्स्थपो नेट्' इसकर इट् न होनेपर रूप सिद्ध हुआ । ममर्थ । लिङ्में आत्मनेपद होनेपर 'उ' इसकर सिद्ध हुआ । मृषीष्ट । लुट्में परस्मैपद होनेसे सिद्ध हुआ । मर्ता । लट् लङ्में 'हनृत स्यप' इसकर सिद्ध हुआ । मरिष्यति अमरिष्यत् । लुङ्में 'उ, लोपो ह्रस्वात्' इनकर सिद्ध हुआ । अमृत । दृङ्धातु आदर करनेमें वर्त्ते है । लट्में । 'अपकि, भुधातो' इनकर सिद्ध हुआ । आद्रियते । लिट्में । आद्द्रे । लिङ्में । आदृषीष्ट । लुङ्में । आदृत । धृङ्धातु अवस्थितिअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । ध्रियते । लिट्में । दध्रे । लिङ्में । धृषीष्ट । लुङ्में । अधृत ॥ इति तुदादयः ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामोक्तमाषया । चन्द्रिकोत्तरार्द्धवृत्तौ तुदादिगणभाषावृत्तम् ॥ ८ ॥

डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये ॥

भाषा—डुक्रीञ्धातु द्रव्यके विनिमय नाम परीवर्त्त अर्थात् द्रव्यके क्रयविक्रयादि कर्मद्वारा अदलबदल करनेमें वर्त्ते है । इसमें डु और अकार इत् हैं । 'ञित्स्वरितेत उभे' इसकर यह धातु उभयपदी है ॥

ना क्र्यादेः ॥ २३२ ॥ 'नां क्र्यादेः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ क्र्यादेः नाप्रत्यय कर्त्तरि परस्मै ॥ क्रीणाति ॥

भाषा—क्री आदिक धातुओंसे ना प्रत्यय होय कर्त्ताअर्थमें चार लकार पर हुए सते । उदाहरण—क्रीधातुसे ना प्रत्यय करनेपर लट्में 'पुर्नो॰' इसकर रूप सिद्ध हुआ । क्रीणाति । द्विवचनमें क्री-ना-तस् ऐसा स्थित है ॥

ई हसे ॥ २३३॥ ई, हसे । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ ना इत्यस्याकारस्य ई क्ङिति हसे ॥ क्रीणीतः ॥

भाषा—ना इस प्रत्ययके आकारको ईकार होय क्ङित्संज्ञक हसादि प्रत्यय पर हुए सते । उदाहरण—क्री-ना-तस् । इसमें नाके आकारको ईकार किया क्योंकि क्ङित्संज्ञक हसादि तस् प्रत्यय परे विद्यमान है तब 'पुर्नो॰' इसकर सिद्ध हुआ । क्रीणीतः । बहुवचनमें क्री-ना अन्ति ऐसा स्थित है ॥

नात ॥ २३४ ॥ नां, आतः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ ना इत्यस्याकारस्य लोपो क्ङिति स्वरे ॥ क्रीणन्ति । क्रीणाति । चिक्रयिथ चिक्रेथ । अक्रैषीत् । अक्रेष्ट ॥ प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च ॥ पिप्रिये ॥ श्रीञ् पाके ॥ अश्रैषीत् ॥ मीञ् हिंसायाम् ॥ मीनातिमिनोति-

त्यात्वम् । ममौ । मिम्यतुः । ममिथ ममाथ । मासीष्ट । माता । अमासीत् ॥ स्कुञ् आप्रवने ॥

भाषा—नाप्रत्ययके आकारका लोप होय ङित्संज्ञक स्वरादि प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—क्री-ना-अन्ति । इसमें नाप्रत्ययके आकारका लोप किया क्योंकि ङित्संज्ञक स्वरादि अन्ति प्रत्यय परे विद्यमान है तब 'घुर्नो०' इसकर सिद्ध हुआ । क्रीणन्ति । इसी प्रकार सिद्ध हुआ आत्मनेपदमें क्रीणीते । द्विवचनमें । क्रीणाते । बहुवचनमें 'आतोऽन्तोऽदनतः, नातः' इनकर सिद्ध हुआ । क्रीणते । लिट्में । चिक्राय । द्विवचनमें 'नुधातोः' इसकर सिद्ध हुआ । चिक्रियतुः । थप्में 'स्वरान्तादत्वतश्च०' इसकर सिद्ध हुआ । चिक्रयिथ, चिक्रेथ । आत्मनेपदमें । चिक्रिये । लिङ्में । क्रीयात्, क्रेषीष्ट । तादिकमें । क्रेता । लुङ्में । अक्रैषीत् । प्रीञ्धातु तृप्ति और इच्छाअर्थमें वर्त्ते है । श्रीञ्धातु पाक करनेमें वर्त्ते है । क्रीधातुके समानही इन दोनो धातुओंके रूप जानने । मीञ्धातु हिंसाअर्थमें वर्त्ते है । चार लकारोंमें क्रीधातुके समान रूप जानने । लिट्में णप्के विषै 'मीनातिमिनोतिदीङा गुणवृद्धिविषये क्यपि चात्वम्' इसकर आकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । ममौ । द्विवचनमें अनेकस्वर असंयोगपूर्व होनेसे ईकारको यकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । मिम्यतुः । थप्में 'स्वरान्तादत्वतश्च०' इसकर सिद्ध हुआ । ममिथ, ममाथ । आत्मनेपदमें । मिम्ये । लिङ्में । मीयात् । आत्मनेपदमें । मासीष्ट । लुङ्में परस्मैपदके विषै 'यमिरमिनमातां०' इसकर सिद्ध हुआ । अमासीत् । आत्मनेपदमें । अमास्त । स्कुञ्धातु आप्लवन नाम उद्धरण अर्थमें वर्त्ते है ॥

स्तम्भुस्तुम्भुस्कम्भुस्कुम्भुस्कुञ्भ्यो नुर्ना च ॥३३९॥ स्तम्भुस्तुम्भुस्कम्भुस्कुम्भुस्कुञ्भ्यः, नुः, ना, च । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ स्कुनोति स्कुन्वन्ति । स्कुन्वीत । स्कुनुताम् । स्कुनाति । अस्कुनीत । चुस्कुविषे । अस्कोषीत् । अस्कोष्ट ॥ स्तुम्भु स्कम्भु रोधने ॥ एते पमंतः । वेः स्तम्भादीनां सस्य षः स्यात् । विष्टभ्नोति विष्टभ्नाति । व्यष्टभ्नात् । वितष्टम्भ वितष्टम्भतुः ॥

भाषा—स्तम्भु, स्तुम्भु, स्कम्भु, स्कुम्भु, स्कुञ् इन धातुओंमें नुप्रत्यय तथा नाप्रत्यय दोनों होते हैं । उदाहरण—स्कुञ्धातुसे नुप्रत्यय करनेपर 'नूपः' इसकर रूप सिद्ध हुआ । स्कुनोति । द्विवचनमें । स्कुनुतः । बहुवचनमें 'हुन्वोरेवापि' इसकर उकारको वकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । स्कुन्वन्ति । आत्मनेपदमें । स्कुनुते । द्विवचनमें । स्कुन्वाते । बहुवचनमें । स्कुन्वते । और नाप्रत्यय करनेपर

तिपूर्मे । स्कुनाति । द्विवचनमें ' ई हसे ' इसकर सिद्ध हुआ । स्कुनीतः । बहुवचनमें ' नातः ' इसकर सिद्ध हुआ । स्कुनन्ति । लिट्में । चुस्काव । आत्मनेपदमें ' नानप्योर्वे ' इसकर उव् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । चुस्कुवे । लिङ्में । स्कूयात्, स्कोषीष्ट । लुङ्में । अस्कौषीत् । आत्मनेपदमें । अस्कोष्ट । स्तम्भु स्कम्भु दोनों धातु रोधन नाम रोकनेमें वर्त्ते हैं । यह स्तम्भु आदिक चारों धातु रोधनार्थ और सौत्र हैं । यह सब चारों धातु परस्मैपदी हैं । स्तम्भ और स्कम्भ धातुसे नुप्रत्यय करनेपर ' नो लोप ' इसकर तिपूर्मे रूप सिद्ध हुआ । स्तम्नोति । स्कम्नोति । द्विवचनमें । स्तम्नुतः । स्कम्नुतः । बहुवचनमें संयोगपूर्व होनेसे ' नुधातो ' इसकर उव् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । स्तम्नुवन्ति । स्कम्नुवन्ति । नाप्रत्यय करनेपर तिपूर्मे सिद्ध हुआ । स्तभ्नाति । द्विवचनमें । स्तभ्नीतः । स्तभ्नन्ति । स्कभ्नाति । स्कभ्नीतः स्कभ्नन्ति । विउपसर्गसे स्तम्भ आदिक धातुओंके सकारको षकार होय । उदाहरण—विउपसर्गम पूर्व होनेसे स्तम्भ धातुके सकारको षकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । विष्टभ्नोति । अट्हिस्यव्यवधानमें विउपसर्गसे स्तम्भधातुके सकारको षकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । व्यष्टभ्नोत् । व्यष्टभ्नात् । विष्टम्भ । हिमें नुप्रत्यय करनेपर संयोगपूर्व होनेसे हिका लोप न होनेपर सिद्ध हुआ । स्तम्नुहि । और नाप्रत्यय करनेपर स्तम-ना-हि ऐसा स्थित है ॥

हसादान ह्रो ॥ २२६ ॥ हसोर्दि, आन , ह्रौ । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥
हसान्ताद्धातोर्नास्थाने आन स्यात् ह्रौ परे । स्तभान । स्कभान । अस्तभत् अस्तम्भीत् ॥

भाषा—हसान्तधातुसे पर नाप्रत्ययके स्थानमें आन होय हिप्रत्यय पर हुए सते । उदाहरण—स्तभ ना-हि । इसमें हसान्त स्तम्भधातुसे परे नाप्रत्यय है इस कारण नाके स्थानमें आन किया क्योंकि परे हिप्रत्यय विद्यमान है तब ' अतः ' इसकर हिका लुक् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । स्तभान । इसी प्रकार सिद्ध हुआ । स्कभान । लिट्में । तस्तम्भ । चस्कम्भ । लिङ्में । स्तभ्यात् । स्कभ्यात् । लुङ्में । यह चारों धातु इरित होनेसे एक जगह ' इरितो वा ' इसकर सिद्ध हुआ । अस्तभत् । और एक जगह । अस्तम्भीत् ॥

युञ् बन्धने ॥ युनाति । योता ॥ पूञ् पवने ॥

भाषा—युञ्धातु बन्धनअर्थमें वर्त्ते । ना श्रयादेः ' इसकर ना प्रत्यय करनेपर तिपूर्मे रूप सिद्ध हुआ । युनाति । द्विवचनमें ' ई हसे ' इसकर सिद्ध हुआ । युनीतः । बहुवचनमें ' नातः ' इसकर सिद्ध हुआ । युनन्ति । आत्मनेपदमें ।

युनीते । लिट्में । युयाव । तादिकर्मे । योता । लुङ्में । अयौपीत् । पूञ्धातु पवन नाम पवित्रता करनेमें वर्त्ते है ॥

प्वादेर्ह्रस्वः ॥ २३७ ॥ प्वादेः, ह्रस्वः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ प्वादेर्ह्रस्वो भवति कर्तरि चतुर्षु ॥ पुनाति । अपावीत् ॥ लूञ् छेदने ॥ लुनाति । अलावीत् ॥ स्तॄञ् आच्छादने ॥ स्तृणाति । तस्तार तस्तरतुः । स्तीर्यात् । स्तरिषीष्ट स्तीर्षीष्ट । अस्तारीत अस्तरीष्ट अस्तीर्ष्ट ॥ कॄञ् हिंसायाम् ॥ कृणाति । चकरे । करिषीष्ट कीर्षीष्ट । अकरिष्ट अकरीष्ट अकीर्ष्ट । पे सेरिटो न दीर्घः सीष्टादेश्च ॥ वॄञ् वरणे ॥ वृणाति । वूर्यात् वरिषीष्ट वूर्षीष्ट । अवरीष्ट अवूर्ष्ट ॥ धूञ् कंपने ॥ धुनाति । दुधविथ दुधोथ । धविता धोता । अधावीत् । अधविष्ट अधोष्ट ॥ ग्रह उपादाने ॥ गृह्णाति । गृहाण । जग्राह जगृहतुः । ग्रहीषीष्ट । ग्रहीता । अग्रहीत् अग्रहीष्ट ॥ इत्यात्पे ॥

भाषा—पू आदिक धातुओंको ह्रस्व होय कर्त्ताअर्थमें चार लकारोंके विषैं । उदाहरण—पूधातुसे 'ना क्र्यादेः' इसकर ना प्रत्यय करनेके अनंतर ह्रस्व करनेपर लट्में रूप सिद्ध हुआ । पुनाति । द्विवचनमें । पुनीतः । बहुवचनमें । पुनन्ति । लिट्में । पुपाव । द्विवचनमें । पुपुवतुः । तादिकर्मे सेट् होनेसे सिद्ध हुआ । पविता । लुङ्में । अपावीत् । आत्मनेपदमें । अपविष्ट । लूञ् धातु छेदनअर्थमे वर्त्त है । लट्में । लुनाति । लुङ्में । अलावीत् । स्तञ्धातु आच्छादन नाम ढकनेमें वर्त्ते है । ना प्रत्यय करनेके अनन्तर ह्रस्व करनेपर 'षुर्णो०' इसकर सिद्ध हुआ । स्तृणाति आत्मनेपदमें 'ई हसे' । स्तृणीते । बहुवचनमे । स्तृणते । लोट्मे हिके विषैं । स्तृणीहि । उत्तमभागमें । स्तृणानि । स्तृणाव । स्तृणाम । लिट्में । तस्तार । आत्मनेपदमें 'ऋसंयोगाण्णादिरकित्' इसकर अकित् होनेसे गुण करनेपर सिद्ध हुआ । तस्तरे । लिङ्में 'ऋत इर्' इसकर इर् करनेपर 'य्वोर्विहसे' इसकर सिद्ध हुआ । स्तीर्यात् । आत्मनेपदमें 'वृङ्वृञ्ऋदन्तातिसस्योरिङ्वाति' इसकर एक जगह इट् न करनेके अनन्तर 'उः' इसकर गुण न करनेसे 'ऋत इर्, य्वोर्वि० हसे' इनकर सिद्ध हुआ । स्तीर्षीष्ट । और जहां इट् हुआ तहां गुण करनेके अनन्तर रूप सिद्ध हुआ । स्तरिषीष्ट । तादिकर्मे 'वृङ्वृञ्ऋदन्ताना वा' इसकर विकल्पकरके इट्को दीर्घ करनेपर रूप सिद्ध हुआ । स्तरिता, स्तरीता । लुङ्में परस्मैपदके विषैं वृद्धि करनेके अनन्तर सिद्ध हुआ । अस्तारीत् । द्विवचनमें । अस्तारि-

थाम् । आत्मनेपदमें एक जगह ' वृङ्वृञ्भ्यामिदन्तात्सिस्योरिड्वा ' इसकर इट् न करनेके अनन्तर ' उः', अश्व इट्, ग्योर्विहसे ' इनकर सिद्ध हुआ । अस्तीष्ट । द्विवचनमें । अस्तीर्षाताम् । और जहां इट् हुआ वहां ' वृङ्वृञ्भ्यामिदन्तानां वा ' इसकर सिद्ध हुआ । अस्तरीष्ट, अस्तरिष्ट । कृञ्धातु हिंसाअर्थमें वर्त्ते है । स्तृधातुके समान कृधातुके रूप जानने । वृञ्धातु वरणअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । वृणाति । लिट्में । ववार । आत्मनेपदमें । ववरे । लिङ्में ' पोरुः ' इसकर ऋकारको उर् करनेपर ' ग्योर्विहसे ' इसकर सिद्ध हुआ । वूर्यात् । आत्मनेपदमें एक जगह इट् होनेसे सिद्ध हुआ । वरिषीष्ट । और जहां ' वृङ्वृञ्भ्यामिदन्तात्सिस्योरिड्वा० ' इसकर इट् न होनेके अनन्तर ' उः ' इसकर गुण न होनेसे ' पोरुः, ग्योर्विहसे ' इनकर सिद्ध हुआ । वूर्षीष्ट । और तादिकमें वृङ्वृञ्भ्यामिदन्तानां वा ' इसकर सिद्ध हुआ वरिता, वरीता । लुङ्में परस्मैपदके विषै । अवारीत् । आत्मनेपदमें ' वृङ्वृञ्भ्यामिदन्तात्सिस्योरिड्वा०' इसकर इट् न होनेसे ' उः ' इसकर गुण न होनेपर ' पोरुः, ग्योर्विहसे ' इनकर सिद्ध हुआ । अवूर्ष्ट । और इट् होनेपर ' वृङ्वृञ्भ्यामिदन्तानां वा ' इसकर विकल्पकरके इट्को दीर्घ करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अवरिष्ट, अवरीष्ट । धूञ्धातु कम्पनअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । धुनाति । लिट्में । दुधाव । थप्में ' स्वरतिसूतिसूयतिधूञ्० ' इसकर विकल्पकरके इट् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । दुधविथ, दुधोथ । उत्तमभागके द्विवचन बहुवचनमें ' स्वरतिसूतिसूयतिधूञ्भ्यां क्रिद्वादेर्णादेर्नित्यमिट् स्यात् ' इसकर नित्य इट् करनेपर ' नानप्योर्व ' इसकर सिद्ध हुआ । दुधुविव । दुधुविम । आत्मनेपदमें । दुधुवे । लिङ्में । धूयात् । तादिकमें । धोता, धविता । लुङ्में 'स्तुसुधूञ्भ्यां पे सेरिट्' इसकर सिद्ध हुआ । अधावीत् । आत्मनेपदमें अधविष्ट, अधोष्ट । ग्रहधातु उपादान नाम ग्रहण करनेमें वर्त्ते है । नामस्यय करनेके अनन्तर ' ग्रहां क्विति च ' इसकर संप्रसारण करनेपर रूप सिद्ध हुआ । गृह्णाति । द्विवचनमें । गृह्णीतः । बहुवचनमें । गृह्णन्ति । लोट्में हिके विषै ' हलश्नाः शानज्झौ ' इसकर सिद्ध हुआ । गृहाण । लङ्में । अगृह्णात् । अगृह्णन् । लिट्में । जग्राह । द्विवचनमें संप्रसारण करनेके अनन्तर सिद्ध हुआ । जगृहतुः । आत्मनेपदमें । जगृहे । लिङ्में । गृह्यात् । सीआदिकमें ' इटो ग्रहाम् ' इसकर नित्य दीर्घ करनेपर सिद्ध हुआ । ग्रहीषीष्ट । तादिकमें । ग्रहीता । लुङ्में ' ह्म्यन्तक्षण०' इसकर वृद्धि न होनेपर इट्को नित्य दीर्घ होनेसे रूप सिद्ध हुआ । अग्रहीत । अग्रहीष्टाम् । आत्मनेपदमें । अग्रहीष्ट ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामोक्तभाषया । चंद्रिकोत्तरार्द्धे क्र्यादी मार्त्तं मैत्यादेर्विभूषितम् ॥

शॄ हिंसायाम् ॥ शृणाति ॥

भाषा—शॄधातु हिंसाअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । शृणाति । लिट्में । शशार । द्विवचनमें ॥

शॄदॄप्रां ह्रस्वो वा किति लिटि ॥ ३३८ ॥ शॄदॄप्राम्, ह्रस्वः, वा, किति, लिटि । पंचपदमिदं सूत्रम् ॥ शशरतुः शश्रतुः । शीर्यात् । शरिता शरीता ॥ पॄ पालनपूरणयोः ॥ पृणाति । पपरतुः पप्रतुः । पूर्यात् ॥ वॄ वरणे ॥ वृणाति । ववरतुः । वूर्यात् । भॄ भर्त्सनभरणयोः॥ भृणाति॥ मॄ हिंसायाम् ॥ मृणाति ॥ दॄ विदारणे॥ दृणाति। ददरतुः दद्रतुः ॥ जॄ वयोहानौ ॥ जृणाति ॥ नॄ नये ॥ नृणाति ॥ कॄ हिंसायाम् ॥ कृणाति ॥ ऋ गतौ ॥ ऋणाति । अराञ्चकार । ईर्यात् । अरिता अरीता । आरीत् ॥ गॄ शब्दे ॥ गृणाति ॥ ज्या वयोहानौ ॥ ग्रहां क्ङिति च । जिनाति । जिज्यौ जिज्यतुः । जीयात् । अज्यासीत् ॥ री गतिरेषणयोः ॥ रिणाति । रीयतुः ॥ ली श्लेषणे ॥ लिनाति । ललौ । लिलाय लिल्यतुः । ललिथ ललाथ, लिलयिथ लिलेथ । लाता लेता । अलैषीत् अलासीत् ॥ व्ली वरणे ॥ व्लिनाति ॥ प्ली गतौ ॥ प्लिनाति ॥ इति प्वादयः ॥

भाषा—शॄ, दॄ और पॄधातु इनको विकल्पकरके ह्रस्व होय कित्संज्ञक लिट् पर हुए संते । द्विवचनमें कित्संज्ञक अतुस् परे विद्यमान होनेसे जहां ह्रस्व हुआ तहां 'ऋ रम्' इसकर सिद्ध हुआ । शश्रतुः । और जहां दीर्घ रहा तहां अतुस्को अकित् होनेसे सिद्ध हुआ । शशरतुः । थप्में । शशरिथ । लिङ्में 'ऋत इद्, य्वोर्विहसे' इनकर सिद्ध हुआ । शीर्यात् । तादिकमें । शरिता, शरीता । लुङ्में । अशारीत् । पॄधातु पालन और पूरणअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । पृणाति । लिट्में पपार । द्विवचनमें । पपरतुः । 'शॄदॄप्रां ह्रस्वो वा किति लिटि' इसकर ह्रस्व होनेसे सिद्ध हुआ । पप्रुः । लिङ्में 'पोरुर्, य्वोर्विहसे' इनकर सिद्ध हुआ। पूर्यात् । तादिकमें । परिता, परीता । लुङ्में । अपारीत् । वधातु वरणअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । वृणाति । लिट्में । ववार । द्विवचनमे । ववरतुः । लिङ्में । वूर्यात् । लुट्में । वरिता, वरीता, । लुङ्में । अवारीत् । भधातु भर्त्सन नाम तिरस्कार और भरण पोषण अर्थमें वर्त्ते है । वधातुके समान भॄधातुके रूप जानने । मधातु हिंसाअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । मृणाति । शेष लकारोंमें भधातुके समान रूप जानने । दॄधातु विदारण नाम विदीर्णता करनेमें वर्त्ते है । समस्त

क्र्यादिकोंमें मृधातुके समान रूप जानने। जृधातु वयोहानि नाम आयुकी हानिमें वर्त्ते है। लट्में। जृणाति। लिट्में। जजार। द्विवचनमें। जजरतुः। लिङ्में। जीर्यात्। लुट्में। जरिता, जरीता। लुङ्में। अजारीत्। नृधातु नय नाम नीतिमें वर्त्ते है। कृधातु हिंसाअर्थमें वर्त्ते है। इन दोनों धातुओंके रूप मृधातुके समान जानने। ऋधातु गतिअर्थमें वर्त्ते है। लट्में। ऋणाति। लिट्में गुरुनाम्यादि होनेसे आम्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। अरांचकार। लिङ्में। ईर्यात्। तादिकमें। अरिता, अरीता। लुङ्में आरीत्। गृधातु शब्द करनेमें वर्त्ते है। लट्में। गृणाति। लिट्में। जगार। द्विवचनमें। जगरतुः। लिङ्में। गीर्यात्। ज्याधातु वयोहानि नाम आयुकी हानिमें वर्त्ते है। नाप्रत्यय करनेके अनन्तर 'ग्रहां क्ङिति च' इसकर संप्रसारण करनेसे रूप स्थित हुआ जी-ना-ति फिर 'प्वादेर्ह्रस्वः' इसकर ह्रस्व करनेपर सिद्ध हुआ। जिनाति। लिट्में 'णकादौ पूर्वस्य' इसकर पूर्वको संप्रसारण करनेपर 'ह्रस्व', आतो णप डौ' इसकर सिद्ध हुआ। जिज्यौ। द्विवचनमें 'णकादौ पूर्वस्य, ग्रहां क्ङिति च' इनकर पूर्वपरको संप्रसारण करनेपर 'नुधातो' इसकर असंयोगपूर्व होनेसे ईकारको यकार कर रूप सिद्ध हुआ। जिज्यतुः। थपमें। जिज्याथ, जिज्यिथ। लुङ्में। जीयात्। लुङ्में 'यमिरमिनमातां सक् सेरिट् पे' इसकर सिद्ध हुआ। अज्यासीत्। रीधातु गति और रेषण नाम वृकशब्दमें वर्त्ते है। लट्में। रिणाति। लिट्में। रिराय। द्विवचनमें। रिरियतुः। लुङ्में अरैषीत्। लीधातु श्लेषण नाम संधिअर्थमें वर्त्ते है। लट्में लिनाति। लिट्में लीलीङोरात्व वा गुणवृद्धिविषये क्यपि च इसकर एक जगह आकार करनेपर 'आतो णप डौ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ। ललौ। और एक जगह। लिलाय। द्विवचनमें। लिल्यतुः। थपमें एक जगह आकार करनेसे सिद्ध हुआ। ललिथ, ललाथ। और जहां आकार नहीं हुआ वहां। लिलयिथ, लिलेथ। लिङ्में। लीयात्। तादिकमें। लाता, लेता। लुङ्में। अलासीत्, अलैषीत्। द्विवचनमें। अलासिष्टाम्, अलैष्टाम्। ब्लीधातु वरणअर्थमें वर्त्ते है। लट्में। ब्लिनाति। लिट्में। बिब्लाय। द्विवचनमें संयोगपूर्व होनेसे ईकारको इय् करनेपर रूप सिद्ध हुआ। बिब्लियतुः। तादिकमें ब्लेता। लुङ्में। अब्लैषीत्। प्लीधातु गतिअर्थमें वर्त्ते है। लट्में प्लिनाति। लिट्में। पिप्लाय। द्विवचनमें। पिप्लियतुः। तादिकमें। प्लेता। लुङ्में। अप्लैषीत्॥ इति प्वादयः॥

मी वरणे॥ मीनाति॥ भी भयभरणयो॥ भीणाति॥ क्षीष् हिंसायाम्॥ एषां नयाणां वा ह्रस्व॥ ज्ञा बोधने॥ ज्ञाजनोर्जा। जानाति। जज्ञौ। ज्ञायात् ज्ञेयात्। अज्ञासीत्॥ बन्ध बन्धने॥ बध्नाति। बबन्ध।

वबंध । वंद्धा ॥ भन्त्स्यति । अभान्त्सीत् । सकारलोप आदेश इति न तु वर्णमात्रविधौ । तेन अबान्धाम् ॥ मन्थ विलोडने ॥ मथ्नाति । मथान ॥ श्रन्थ ग्रंथ संदर्भे ॥ श्रथ्नाति । शश्रंथ । जग्रंथ । श्रन्थि- ग्रन्थीत्यादीनां वा लिटः क्त्विम् । शश्राथ । जग्राथ ॥ कुथ कुंथ संश्लेषणसंक्लेशनयोः ॥ चुकोथ । चुकुन्थ । मृद मृड क्षोदे ॥ मृदान । मृडान ॥ गुध रोषे ॥ गुध्नाति ॥ कुष निष्कर्षे ॥ कुषाण ॥

भाषा–व्रीधातु वरणअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । व्रीणाति । लिट्में । विव्राय । लुङ्में । अव्रैषीत । भ्रीधातु भय और भरणअर्थमे वर्त्ते है । लट्में । भ्रीणाति । लिट्में । बिभ्राय । लुङ्में । अभ्रैषीत् । क्षीण्धातु हिंसाअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । क्षीणाति । लिट्में । चिक्षाय । द्विवचनमें । चिक्षियतुः । इन तीनो धातुओंको विकल्पकरके ह्रस्व होय चार लकारोंके विषैं । जैसे व्रिणाति, भ्रिणाति, क्षिणाति । ज्ञाधातु बोधन नाम जाननेमें वर्त्ते है । 'ज्ञाजनोर्जा' इसकर जा आदेश करनेके अनन्तर सिद्ध हुआ । जानाति । लिट्में 'द्विश्च, ह्रस्वः, आतो णव् डौ' इत्या- दिकर सिद्ध हुआ । जज्ञौ । द्विवचनमें 'आतोऽनपि' इसकर सिद्ध हुआ । जज्ञतुः । लिङ्में 'संयोगादेरादन्तस्य किति लिङ्येकारो वा' इसकर सिद्ध हुआ । ज्ञेयात्, ज्ञायात् । लुङ्में 'यमिरमिनमातां०' इसकर सिद्ध हुआ । अज्ञासीत् । वन्धधातु बन्धन करनेमें वर्त्ते है । लट्में 'नो लोपः' इसकर नकारलोप करनेपर सिद्ध हुआ । वध्नाति । लोट्के हिवचनमें 'हसादान हौ' इसकर नाके स्थानमें आन करनेपर 'अतः' इसकर हिका लुक् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । वधान । लिट्में । बबन्ध । थप्में 'स्वरान्तादृत्वतश्च' इसकर इट्पक्षमे बवन्धिथ । अनिट्पक्षमें । 'तथोर्धः, झबे जबाः' इनकर सिद्ध हुआ । ववंध । लिङ्में 'नो लोपः' इसकर नकारका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । वध्यात् । तादिकमे अनिट् होनेसे 'तथोर्धः, झबे जबाः' इनकर सिद्ध हुआ । वंद्धा । लट्में 'आदिजबाना झभान्तस्य०' इसकर पूर्व वकारको भकार कर 'खसे च०' इसकर सिद्ध हुआ । भन्त्स्यति । लुङ्मे 'अनिटो नामिवतः, आदिजबानां०, खसे च०' इनकर सिद्ध हुआ । अभान्त्सीत् । द्विवचनमें 'झसात्' इसकर सिका लोप करनेपर 'तथोर्धः, झबे जबाः' इनकर सिद्ध हुआ । अवांद्धाम् । यहां वकारको भकार नहीं हुआ क्योंकि आदेश वर्णमात्र विधिमें तद्वत् नहीं होता है । मन्थ्धातु विलोडन अर्थमें वर्त्ते है । 'नो लोपः' इसकर नकारका लोप करनेपर लट्में सिद्ध हुआ । मथ्नाति । हिमें 'हसादान हौ' इसकर सिद्ध हुआ । मथान । लिट् आदिकमें भ्वादिवत् जानना ।

ग्रन्थधातु और ग्रन्थधातु संदर्भ नाम ग्रन्थि देनेमें वर्त्ते है। लट्में। ग्रथ्नाति। ग्रथ्नाति। ग्रन्थि ग्रन्थि इत्यादिक धातुओंसे विकल्पकरके लिट्को कित्भाव होय। इसकर एक जगह लिट्को कित्भाव होनेपर 'नो लोप' इसकर नकारका लोप करनेपर 'अत उपधाया' इसकर णप्में सिद्ध हुआ। जग्राथ। जग्राथ। और एक जगह। जग्रंथ। जग्रंथ। द्विवचनमें। जग्रथतुः। जग्रंथतुः। लुङ्में अग्रंथीत्। अग्रंथीत्। कुन्थधातु और कुन्थधातु संक्लेषण नाम संयोग और संक्लेसनअर्थमें वर्त्ते हैं। लट्में। कुथ्नाति। लिट्में चुकोथ, चुकुन्थ। मृद मृड धातु क्षोद नाम चूर्णताअर्थमें वर्त्ते हैं लट्में। मृद्नाति। और मृड्धातुसे नाप्रत्यय करनेपर 'क्षुभि०' इसकर सिद्ध हुआ। मृड्णाति। हिमें 'हलःशान हौ' इसकर सिद्ध हुआ। मृदान। मृडान। लिट्में। ममर्द। ममर्ड। लुङ्में। अमर्दीत्। अमर्डीत्। गुधधातु रोष नाम क्रोधमें वर्त्ते है। लट्में। गुध्नाति। हि गुधान। लिट्में। जुगोध। लुङ्में। अगोधीत्। कुषधातु निष्कर्षअर्थमें वर्त्ते है। निष्कर्ष नाम अन्तर्गतको बाहिर निकासनेका है। नाप्रत्यय करनेपर 'क्षुभ्नादि०' इसकर सिद्ध हुआ। कुष्णाति। हिमें। कुषाण। लिट्में। चुकोष। थप्में 'क्रादिनियमात्' इसकर नित्य इट् होनेसे सिद्ध हुआ। चुकोषिथ॥

निर कुषो वसादेरनपीश ॥ ३३९ ॥ नि' रेः, कुषे, वसादि, अनपि, इट्, वा। पदपदमिद सूत्रम् ॥ निष्कोषिता निष्कोष्टा। क्षुभाण ॥ णभ तुभ हिंसायाम् ॥ नभ्नाति। तुभ्नाति ॥ क्लिशू विबाधने॥ क्लिश्नाति। अक्लेशीत्। अक्लिक्षत् ॥ अश भोजने ॥ अश्नाति। आशीत् ॥ उध्रस् उञ्छे ॥ ध्रस्नाति। उकारो धात्ववयव इत्येके। उध्रसाञ्चकार। औध्रासीत् औध्रसीत् ॥ षिष विप्रयोगे ॥ विषाण वेष्टा। अविक्षत् ॥ पुष् पुष्टौ ॥ पोषिता ॥ मुष् स्तेये ॥ खच खव हिंद भूतप्रादुर्भावे ॥ खच्नाति ॥

भाषा–निर्उपसर्गसे परे जो कुषधातु उससे परे वसादि प्रत्ययको विकल्प करके इट् होय। उदाहरण–निर्उपसर्ग पूर्व होनेसे कुष्धातुसे वसादि तादिक प्रत्ययको विकल्पकरके इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ। निष्कोषिता, निष्कोष्टा। लुङ्में। निरकोषीत्। और जहां इट् नहीं हुआ वहां 'शल इगुपधादनिटः क्सः' इसकर सिद्ध हुआ। निरकुक्षत्। क्षुभधातु संचलनअर्थमें अर्थात् क्षोभअर्थमें

वर्त्ते है । क्षुभ्नादिकोंके विषैं नकारको णकारता नहीं होय । क्षुभधातुसे नाप्रत्यय करनेपर ' षुर्नो णोऽनन्ते ' इसकर नकारको णकार नहीं होनेसे रूप सिद्ध हुआ । क्षुभ्नाति । हिमें । क्षुभान । लिट्में । चुक्षोभ । लुङ्में । अक्षोभीत् । णभ और तुभ धातु हिंसा अर्थमें वर्त्ते हैं । हिमे । नभान । तुभान । लुङ्में । अनभीत्, अनाभीत् । अतोभीत् । क्लिशूधातु विशेषबाधा अर्थमें वर्त्ते है । यह धातु ऊदित है । लट्में क्लिशू-ना-ति ऐसा स्थित है । ' नशात् ' इसकर नकारको ञकार न होनेपर सिद्ध हुआ । क्लिश्नाति । हिमें । क्लिशान । लिट्में । चिक्लेश । तादिकमे ' ऊदितो वा ' इसकर विकल्पकरके इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । क्लेशिता, क्लेष्टा । लुङ्में इट्पक्षमें । अक्लेशीत् । अनिट्पक्षमें ' हशषान्तात्सक् ' इसकर सिद्ध हुआ । अक्लिक्षत् । अशधातु भोजन करनेमें वर्त्ते है । लट्में अश्नाति । लिट्में । आश । लुङ्में । आशीत् । उध्रस्धातु उञ्छ नाम हूछनेमें वर्त्ते है । लट्में । ध्रस्नाति । हिमें । ध्रसान । लिट्मे । दध्रास । कोई आचार्य उकारकोभी धातुका अवयव कहते हैं । तहां अनेक स्वर होनेसे आम्प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । उध्रसाञ्चकार । विषधातु विप्रयोग नाम विप्रलम्भअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । विष्णाति । हिमें । विषाण । लिट्में । विवेष । लुङ्मे अनिट् होनेसे ' हशषान्तात्सक् ' इसकर सिद्ध हुआ । अविक्षत् । पुषधातु पुष्टिअर्थमे वर्त्ते है । अनिट्कारिकामे पुष्यति कहनेसे दिवादि पुषधातुही अनिट् है न कि क्र्यादि । लट्में । पुष्णाति । लिट्मे । पुपोष लुट्में । पोषिता । लुङ्मे । अपोषीत् । मुषधातु स्तेय नाम चोरी करनेमे वर्त्ते है । लट्में । मुष्णाति । हिमें । मुषाण । लिट्में । मुमोष । लुङ्में । अमोषीत् । खच, खव और हिठ धातु प्रादुर्भाव नाम प्रकट होनेमें वर्त्ते है । लट्मे खच्धातुसे नाप्रत्यय करनेपर ' स्तोः श्चुभिः० ' इसकर नकारको ञकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । खच्ञाति । हिमें खचान । लिट्में । चखाच । लुङ्में । अखचीत्, अखाचीत् ॥

खवो वस्य औ ने ॥ ३४० ॥ खवः, वस्य, औ, ने । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ खौनाति । हिठ्नाति ॥ इति पम् ॥

भाषा—खव्धातुके वकारको औकार होय नाप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—खव्धातुके वकारको औकार किया क्योंकि लट्में नाप्रत्यय परे विद्यमान है तब ' ओऔ औ ' इसकर सिद्ध हुआ । खौनाति । हिमें हसान्त न होनेसे नाको आन न होनेपर ' ई हस ' इसकर सिद्ध हुआ । खौनीहि । लिट्में । चखाव । लुङ्में । अखवीत्, अखावीत् । हिठधातुसे नाप्रत्यय करनेपर ' ष्टुभिः० ' इसकर सिद्ध हुआ । हिठ्णाति । लिट्में । जिहेठ । लुङ्में । अहेठीत् ॥ इति पंप्रक्रिया ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामोक्तभाषया । चंद्रिकोत्तरार्द्धवृत्तौ क्र्यादिपंपदमावृतम् ॥

वृङ् संभक्तौ ॥ वृणीते । वव्रे । वरिषीष्ट वृषीष्ट । अवरिष्टं अवृत ॥

इति क्र्यादयः ॥

भाषा–वृङ्धातु संभक्ति नाम भजन करनेमें वर्ते है । 'भाद्नुदात्तङित:' इसकर आत्मनेपद होनेपर नाप्रत्यय करनेसे रूप सिद्ध हुआ । वृणीते । लिट्में । वव्रे । मध्यमभागमें 'क्र्यादेर्णादेः' इसमें 'वृङ् संभक्तौ' धातुका ग्रहण होनेसे इट् न होनेपर रूप सिद्ध हुआ । वव्रृषे । सीयादिकमें 'वृङ्वृञ्भ्रस्न्वास्तिस्योरिङादि' इसकर एक जगह इट् न होनेपर 'उ' इसकर सिद्ध हुआ । वृषीष्ट । और इट् पक्षमें । वरिषीष्ट । तादिकमें 'वृङ्वृञ्भ्रवृन्तानां वा' इसकर सिद्ध हुआ । वरीता, वरिता । लुङ्में अनिट्पक्षमें । 'उ', लोपो ह्रस्वात्' इसकर सिद्ध हुआ । अवृत । और सेट्पक्षमें । अवरीष्ट, अवरिष्ट ॥ इत्यात्मप्रक्रिया । मंगलसेनात्मजश्रीकृष्णशिरमोक्तभाषया । चन्द्रिकोत्तरार्द्धवृत्ती क्र्यादेरात्पदमासृतम् ॥ ९ ॥

चुर स्तेये ॥

भाषा–चुरधातु स्तेय नाम चोरी करनेमें वर्ते है ॥

चुरादे स्वार्थे णि ॥२४१॥ चुरादे, स्वार्थे, ञिः । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ चोरयति । चोरयते । चोरयांचकार । चोर्यात् । अचूचुरत् ॥ चिति स्मृत्याम् ॥ चिन्तयति । अचिचिन्तत् । चुरादेर्णिर्वेति केचित् । चिन्तति ॥ यत्रि संकोचने ॥ यन्त्रयति । अययन्त्रत् ॥ ओलडि उत्क्षेपे ॥ ओलण्डयति ओलण्डति । ओलण्डाचकार । औलण्डत् । औलण्डीत् । ओकार इदित्येके । लण्डयति । अललण्डत् । लण्डति ॥ पीड् अवगाहे ॥ पीडयति । पीडयते । पीडाञ्चक्रे ॥

भाषा–चुरादिगणसे स्वार्थमें ञिप्रत्यय होय । उदाहरण–चुरधातुसे स्वार्थमें ञिप्रत्यय करनेपर 'उपधाया लघोः' इसकर गुण करनेपर रूप स्थित हुआ चोरि फिर सधातुः इसकर स्पन्द चोरिकी धातुसंज्ञा होनेपर 'धातुर्वाणि नादय' ञिदित् होनेसे उभयपद करनेपर रूप स्थित हुआ चोरि-ति फिर अप्कर्तरि इसकर अप्प्रत्यय करनेपर 'गुणः' इसकर सिद्ध हुआ । चोरयति । आत्मनेपदमें चोरयते । लिङ्में । चोरयेत् । आत्मनेपदमें । चोरयेत । लोट्में । चोरयतु । आत्मनेपदमें । चोरयताम् । लङ्में । अचोरयत् । आत्मनेपदमें । अचोरयत । लिट्में अनेकस्वर होनेसे आम्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । चोर

-यांचकार । आत्मनेपदमें । चोरयांचक्रे । ' आमो भ्वसोर्नात्कर्त्तरि ' इसकर । चोरयामास, चोरयांबभूव । लिङ्में ' ञेः ' इसकर ञिका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । चोर्यात् । आत्मनेपदमें इट् करनेपर ञिका लोप ' न त्विडामन्ताल्वाय्येत्न्विष्णुषु ' इसकर न करनेसे सिद्ध हुआ । चोरयिषीष्ट । तादिकमें । चोरयिता । लुङ्में ' ञेरङ् द्विश्च ' इसकर अङ्प्रत्यय करनेपर तथा धातुको द्वित्व करनेपर । अचुचोरि-अ-द् ऐसा स्थित हुआ फिर ' ञेः ' इसकर ञिका लोप कर ' अङि लघौ, ह्रस्व उपधायाः ' इसकर ह्रस्व करनेपर रूप स्थित हुआ अचुचुर्-अ-द् फिर ' लघोर्दीर्घः ' इसकर सिद्ध हुआ । अचूचुरत् । चितिधातु स्मृति अर्थमें वर्त्ते है ' इदितो नुम् ' इसकर नुम आगम करनेके अनन्तर ञिप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । चिन्तयति । लिट्में । चिन्तयांचकार । लिङ्में ' ञेः ' इसकर ञिप्रत्ययका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । चिन्त्यात् । तादिकमे । चिन्तयिता । लुङ्में ' ञेरङ् द्विश्च ' इसकर धातुको द्वित्व और अङ्प्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ अचिचिन्ति-अ-द् फिर ' ञेः ' इसकर ञिका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । अचिचिन्तत् । चुरादिगणसे ञिप्रत्यय विकल्पकरके होता है ऐसा कोई एक आचार्य कहते हैं । जहां चुरधातुसे ञिप्रत्यय स्वार्थमे नहीं हुआ तहां ' अप्कर्त्तरि, उपधाया लघोः ' इनकर सिद्ध हुआ । चोरति । लिट्मे । चुचोर । लिङ्में । चूर्यात् । लुङ्में । अचोरीत् । चितिधातुसे जहां ञिप्रत्यय नहीं हुआ तहां ' अप्कर्त्तरि ' इसकर सिद्ध हुआ । चिन्तति । लिट्में । चिचिन्त । लुङ्में । अचिन्तीत् । यत्रिधातु संकोचन नाम संकुचित करनेमे वर्ते है । लट्में । यंत्रयति । लिट्में । यंत्रयांचकार । लिङ्में । यंत्रयिषीष्ट । लुङ्में ' ञेरङ् द्विश्च ' इसकर अङ् और द्वित्व करनेपर रूप स्थित हुआ अययंत्रि-अ द् फिर ' ञेः ' इसकर ञिका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अययंत्रत् । ओलडि धातु उत्क्षेप नाम आक्षेप करनेमें वर्त्ते है । लट्में ओलण्डयति । लिट्में । ओलण्डयांचक्रे । लिङ्में । ओलण्ड्यात् । लुट्में । ' ञेरङ् द्विश्च ' इसकर अङ् और धातुको द्वित्व ' स्वरादेः परः ' इसकर करनेपर रूप स्थित हुआ अ-अ-ओललण्डि-अ-द् फिर ' ञेः ' इसकर ञिका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । औललण्डत् । और जहां ञिप्रत्यय नहीं हुआ तहां ' अप् कर्त्तरि ' इसकर सिद्ध हुआ । ओलण्डति । लिट्में अनेक स्वर होनेसे आमुप्रत्यय

१ यदि कहो कि चिन्त ऐसा क्यों नहीं किया । क्योंकि ञिप्रत्यय करनेपर तो किसी प्रकार नकारका लोप होताही नहीं है फिर इदित् क्यों किया तहां यह समाधान है कि इदित् करना ञिप्रत्ययकी विकल्पता जनाता है । क्योंकि इदित् करनेसे यह प्रतीत होता है कि जहां ञिप्रत्यय नहीं होगा तहां नकारके लोपका विषय होनेपरभी ' इदितो नलोपो न ' इसकर नकारका लोप नहीं होगा । जैसे-चिन्त्यात् । चिन्त्यते । इत्यादिकमें ' नो लोपः ' इसकर नकारका लोप नहीं होता ॥

करनेपर रूप सिद्ध हुआ। मौलण्डांचकार। लुङ्में। मौलण्डीत्। कोई आचार्य ओकार इत्संज्ञक कहते हैं। णिपक्षमें। लण्डयति। लुङ्में। मललण्डत्। और जहां णि नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ। लण्डति। पीडधातु अवगाहन करनेमें वर्ते है। लट्में। पीडयति। आत्मनेपदमें। पीडयते। लिट्में। पीडयाञ्चकार। लिङ्में। पीडयात्। पीडयिषीष्ट। लुट्में। पीडयिता। लुङ्में 'श्रेरङ् द्विश्च' इसकर स्थित हुआ अपिपीडि-अ-द्॥

भ्राजभासभाषदीपजीवमीलपीडां णोपधाया ह्रस्वोऽङ्परे णौ ॥ ३४२ ॥ भ्राजे-पीडाम्, णौ, उपधायाः, ह्रस्वः अङ्परे, णौ।

षट्पदमिदं सूत्रम् ॥ अपिपीडत् अपीपिडत्॥ प्रथ् प्रख्याने ॥ प्राथयति ॥

भाषा-भ्राज्, भास, भाष, दीपी, जीव, मील और पीड धातु इनकी उपधाको विकल्पकरके ह्रस्व होय यदि अङ् है परे जिससे ऐसा णिप्रत्यय परे होवे तो। उदाहरण-अपिपीडि-अ-द्। इसमें पीडधातुकी उपधारूप ईकारको एक जगह ह्रस्व किया क्योंकि अङ् है परे जिसके ऐसा णिप्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप स्थित हुआ अपिपिडि-अ-द् फिर 'णेः' इसकर णिका लोप करनेपर 'लघो दीर्घः' इसकर पूर्वरूपको दीर्घ किया क्योंकि परे धातुका लघु अक्षर विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ। अपीपिडत्। और जहां उपधाको ह्रस्व नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ। अपिपीडत्। और जहां णिप्रत्यय नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ। पीडति। लुङ्में। अपीडीत्। प्रथधातु प्रख्यान नाम कथन अर्थमें वर्ते है। प्रथधातुसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर 'अत उपधायाः' इसकर वृद्धि करनेपर रूप सिद्ध हुआ प्राथयति। लिट्में। प्राथयाञ्चकार। लिङ्में। प्राथ्यात्, प्राथयिषीष्ट। लुङ्में 'श्रेरङ् द्विश्च' इसकर स्थित हुआ अप्रप्राथि-अ-द्॥

स्मृदृत्वरप्रथम्रदस्तृस्पशां पूर्वस्यादङ्परे णौ ॥ ३४३ ॥ स्मृ-स्पृशाम्, पूर्वस्य, अत्, अङ्परे, णौ। पंचपदमिदं सूत्रम् ॥ इत्वापवादः ॥ अपप्रथत् ॥ पृथ प्रक्षेपे ॥ पर्थयति ॥

भाषा-स्मृ, दृ, त्वर प्रथ, म्रद, स्तृ और स्पृश धातु इन्होंके पूर्वको अकारही होय इकारका अपवाद होय। अङ्परवाला णिप्रत्यय परे हुए संते। उदाहरण-अप्राथि-अ-द्। इसमें 'णे', अङ्कि ण्यौ ह्रस्व उपधाया' इनकर णिका लोप और उपधाको ह्रस्व करनेपर पूर्वको इकार करना चाहिये था सो इकारके स्थानमें अकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ। अपप्रथत्। पृथधातु प्रक्षेप अर्थमें वर्ते है। णिप्रत्यय करने पर रूप सिद्ध हुआ। पर्थयति। लुङ्में अपपार्थि-अ द् ऐसा स्थित है।

उपधाया ऋवर्णस्य ऋद्वाङ्परे ञौ ॥ ३४४ ॥ उपधायाः, ऋवर्णस्य, ऋत्, वा, अङ्परे, ञौ । षट्पदमिदं सूत्रम् ॥ इररारामपवादः ॥ अपीपृथत् अपपर्थत् ॥ भक्ष अदने ॥ अबभक्षत् ॥ श्रण दाने ॥ विश्राणयति । अशिश्रणत् अशश्राणत् ॥ तड आघाते ॥ अतीतडत् ॥

भाषा—ऋवर्ण है उपधामें जिसके ऐसे धातुके उपधाको विकल्पकरके ऋकार, होय और इर्, अर् आर्का अपवाद होय अङ्परवाला ञिप्रत्यय परे विद्यमान होवे तौ । उदाहरण—अपपर्थि-अ-द् । इसमें ऋकार उपधावाले पृथधातुके उपधामें विद्यमान हुए अर्के स्थानमें ऋकार करनेपर रूप स्थित हुआ अपपृथि-अ-द् फिर । 'ञेः' इसकर ञिका लोप करनेके अनन्तर 'अङि लघौ ह्रस्व उपधायाः' इसकर पूर्वके अकारको इकार करनेपर 'लघोर्दीर्घः' इसकर सिद्ध हुआ । अपीपृथत । और जहां पृथधातुके उपधारूप अर्के स्थानमें ऋकार नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । अपपर्थत् । भक्षधातु । भोजन करनेमें वर्त्ते है । लट्में । भक्षयति । लुङ्मे । अबभक्षत् श्रणुधातु दानअर्थमें वर्त्ते है । ञिप्रत्यय करनेके अनन्तर 'अत उपधायाः' इसकर सिद्ध हुआ। विश्राणयति । लुङ्में । अशश्राणि-अ-द् ऐसा स्थित है फिर 'कण-रणभणश्रणलुपहेठिह्वेञ्वाणिलोटिलोठिलोपीनां वा ह्रस्वोऽङि' इसकर ञिका लोप करनेके अनन्तर उपधाको जहां ह्रस्व किया तहां 'अङि लघौ ह्रस्व उपधायाः' इस-कर पूर्वके अकारको इकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अशिश्रणत् । और जहां उप-धाको ह्रस्व नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । अशश्राणत् । तड्धातु आघात नाम प्रहार करनेमें वर्त्ते है । लट्में । ताडयति । लुङ्में 'ञेरङ् द्विश्च' इसकर रूप स्थित हुआ अतताडि-अ-द्- फिर 'ञेः' इसकर ञिका लोप किया फिर 'अङि लघौ ह्रस्व उपधायाः' इसकर उपधाको ह्रस्व और पूर्वको इकार करनेपर रूप स्थित हुआ अतितडत् फिर 'लघोर्दीर्घः' इसकर सिद्ध हुआ । अतीतडत् ॥

ज्ञप ज्ञानज्ञापनयोर्मित् ॥

भाषा—ज्ञपधातु ज्ञान और ज्ञापन नाम जतानेरूप अर्थमे ञिप्रत्ययको प्राप्त होय और मित्संज्ञक होय ॥

मितां ह्रस्वः ॥ ३४५ ॥ मिताम्, ह्रस्वः । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ मितां धातूनामुपधाया ह्रस्वो ञौ ॥ ज्ञपयति । अजिज्ञपत् ॥

करनेपर रूप सिद्ध हुआ । मीलय्याञ्चकार । लुङ्में । मीलय्मीत् । कोई आचार्य मीलयाम् इसप्रकार कहते हैं । णिपक्षमें । लप्स्यति । लुङ्में । अलम्बत् । और जहां णि नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । लप्स्यति । पीडधातु अवगाहन करनेमें वर्त्ते है । लट्में । पीडयति । आत्मनेपदमें । पीडयते । लिट्में । पीडयाञ्चकार । लिङ्में । पीड्यात् । पीडयिषीष्ट । लुट्में । पीडयिता । लुङ्में ' अरेद् द्विश्च ' इसप्रकार स्थित हुआ अपिपीडि-अ-त् ॥

भ्राजभासभाषदीपजीवमीलपीडां वोपधाया ह्रस्वोऽद्धपरे णौ ॥ ३४२ ॥ भ्राजे-पीडाम्, वा, उपधायाः, ह्रस्वः, अद्धपरे, णौ ।

षट्पदमिदं सूत्रम् ॥ अपिपीडत् अपीपिडत् ॥ मथ प्रस्याने ॥ माथयति ॥

भाषा—भ्राज्, भास, भाष, दीपी, जीव, मील और पीड धातु इनकी उपधाको विकल्पकरके ह्रस्व होय यदि अद्द है परे जिससे ऐसा णिप्रत्यय परे होवे तौ । उदाहरण—अपिपीडि-अ-त् । इसमें पीडधातुकी उपधारूप ईकारको एक जगह ह्रस्व किया क्योंकि अद्द है परे जिसके ऐसा णिप्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप स्थित हुआ अपिपिडि-अ-त् फिर ' णेः ' इसकर णिका लोप करनेपर ' लघो दीर्घः ' इसकर पूर्वरूपको दीर्घ किया क्योंकि परे धातुका लघु अक्षर विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । अपीपिडत् । और जहां उपधाको ह्रस्व नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । अपिपीडत् । और जहां णिप्रत्यय नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । पीडति । लुङ्में । अपीडीत् । मथधातु प्रस्थान नाम कथन अर्थमें वर्त्ते है । मथधातुसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर ' अत उपधायाः ' इसकर वृद्धि करनेपर रूप सिद्ध हुआ माथयति । लिट्में । माथयाञ्चकार । लिङ्में । माथ्यात्, माथयिषीष्ट । लुङ्में ' अरेद् द्विश्च ' इसकर स्थित हुआ अमथाथि-अ-द् ॥

स्मृद्दत्वरप्रथम्रदस्तृस्पृशां पूर्वस्यादद्धपरे णौ ॥ ३४३ ॥ स्मृ-स्पृशाम्, पूर्वस्य, अत्, अद्धपरे, णौ । पंचपदमिदं सूत्रम् ॥ इत्वापवादः ॥ अपप्रथत् ॥ पृथ प्रक्षेपे ॥ पर्थयति ॥

भाषा—स्मृ, दृ, त्वर प्रथ म्रद, स्तृ और स्पृश धातु इन्होंके पूर्वको अकारादेश होय इकारका अपवाद होय । अद्दपरवाला णिप्रत्यय परे हुए संते । उदाहरण—अपप्राथि अ-त् । इसमें ' णे अद्धि लघौ ह्रस्व उपधायाः ' इसकर णिका लोप और उपधाको ह्रस्व करनेपर पूर्वको इकार करना चाहिये था सो इकारके स्थानमें अकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अपप्रथत् । पृथधातु प्रक्षेप अर्थमें वर्त्ते है । णिप्रत्यय करने पर रूप सिद्ध हुआ । पर्थयति । लुङ्में अपपार्थि-अ-द् ऐसा स्थित है ।

ऋधातोरादंतस्य च पुक् ञौ ॥ चपयति । अचीचपत् । चययति ।
अचीचयत् ।

भाषा—ऋधातु और आकारान्त धातुको पुक् आगम होय ञिप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—चा-इ-अ-ति । इसमे आकारान्त चाधातुको पुक् आगम करनेके अनन्तर 'मितां ह्रस्वः' इसकर ह्रस्व करनेपर रूप सिद्ध हुआ । चपयति । लुङ्में 'ञेरङ् द्विश्च, ञः' इनकर रूप स्थित हुआ अचचप्-अ-द् फिर 'आङ लघौ ह्रस्व उपधायाः' इसकर पूर्वअकारको इकार करनेपर 'लघोर्दीर्घः' इसकर सिद्ध हुआ । अचीचपत् । और जहां चिधातुके स्वरको आकार नहीं हुआ तहां 'धातोर्नामिनः' इसकर वृद्धि करनेके पश्चात् 'मितां ह्रस्वः' इसकर ह्रस्व करनेपर रूप सिद्ध हुआ । चययति । लुङ्में । अचीचयत् ॥

स्वार्थे ञौ ज्ञपादिभ्योऽन्ये मितो न ॥ कृत संशब्दने ॥

भाषा—स्वार्थमें ञिप्रत्यय हुए संते ज्ञपादिक जो सात धातु हैं उनसे अन्यधातु मित् नहीं हैं इस कथनसे यह जनाया कि ज्ञपादिकही सात धातु मित् हैं । और स्वार्थके विषें ञिप्रत्यय होनेपर शमादिक अमन्त होनेपरभी मित्संज्ञक नहीं हैं किन्तु प्रेरणअर्थमें ञिप्रत्यय होनेपर शमादिक अमन्त होनेसे मित्संज्ञक हैं । कृतधातु संशब्दन नाम कीर्त्तन करनेमें वर्त्ते है ॥

धातोरुपधाया ऋत इर ॥ ३४८॥ धातोः, उपधायाः, ऋतः, इर् । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥ कीर्तयति । अचीकृतत् अचिकीर्तत् ॥

भाषा—धातुके उपधारूप ऋकारको इर् होय । उदाहरण—कृतधातुके उपधारूप ऋकारको इर् करनेपर 'र्वोर्विहसे' इसकर दीर्घ कर स्वार्थमें ञिप्रत्यय करनेसे लट्में रूप सिद्ध हुआ । कीर्त्तयति । लुङ्में 'उपधाया ऋवर्णस्य, ऋद्वाङ्परे ञौ' इसकर कृतधातुके उपधारूप ऋकारके स्थानमें उत्पन्न हुए इर्को ऋकार करनेपर 'लघोर्दीर्घः' इसकर सिद्ध हुआ । अचीकृतत् । और जहां कृतधातुके उपधाको ऋकार नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । अचिकीर्तत् ॥

आकुस्मादात्मनेपदिनः॥ चित् सञ्चेतने ॥ चेतयते । अचीचितत ॥ दंशि दंशने ॥ दंशयते । अददंशत । आकुस्मीयमात्मनेपदं ञिसन्नियोगेनैव । दंशति । नलोपो न संजिसाहचर्य्यात् । श्वादेरेव तत्र ग्रहणात् ॥ तत्रि कुटुम्ब धारणे ॥ तन्त्रयते । कुटुम्बयते । अततन्त्रत । अचुकुटुम्बत् । अचूकुटुम्बत् । मत्रि गुप्तभाषणे ॥ मन्त्रयते ॥

भाषा—मकार है इत् जिनका ऐसे मित्संज्ञक धातुओंके उपधाको ह्रस्व होय णिप्रत्यय पर हुए सते । उदाहरण—ज्ञपधातु णि करनेपर ' अत उपधायाः ' इसकर वृद्धि करनेके पश्चात् ज्ञपधातुको मित् होनेसे ह्रस्व करनेसे रूप सिद्ध हुआ । ज्ञपयति । लिट्में । ज्ञपयांचके । लुङ्में । अज्ञप्यत् । लुङ्में ' श्रेरङ् द्विश्च, श्रे ' इस- कर रूप स्थित हुआ अजज्ञप्-अन्द् फिर ' अदि लघौ ह्रस्व उपधायाः ' इस- कर पूर्व अकारको इकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अजिज्ञपत् ॥

यम वेष्टने मित् ॥ यमयति । अयीयमत् ॥

भाषा—यमधातु वेष्टन नाम लपटने रूप अर्थमें मित् संज्ञक है । यमधातु मित्संज्ञक होनेसे ' मितां ह्रस्वः ' इसकर ह्रस्व करनेपर सिद्ध हुआ । यमयति । लुङ्में ' श्रेरङ् द्विश्च, श्रे ' इसकर रूप स्थित हुआ ययमम्-अन्द् फिर ' अदि लघौ ह्रस्व उपधायाः ' इसकर पूर्वको इकार करनेपर ' लघोर्दीर्घः ' इसकर सिद्ध हुआ । अयीयमत् ॥

चह चप परिकल्कने मित् ॥ चहयति । अचीचहत् । चपयति । अचीचपत् ॥

भाषा—चहधातु और चपधातु परिकल्पन नाम दम्भ अर्थमें मित्संज्ञक हैं लट्में । चहयति । लुङ्में । अचीचहत् । चपयति । अचीचपत् ॥

रह त्यागे मित् ॥ रहयति । अरीरहत् ॥

भाषा—रहधातु त्यागअर्थमें मित्संज्ञक है । लट्में । रहयति । लुङ्में । अरीरहत् ॥

बल प्राणने मित् ॥ बलयति । अबीबलत् ॥

भाषा—बलधातु प्राणनअर्थमें मित्संज्ञक है । लट्में । बलयति । लुङ्में । अबीबलत् ॥

चिञ् चयने मित् ॥

भाषा—चिञ्धातु चयन नाम रचनाअर्थमें मित् है ॥

चिस्फुरोर्णावात्त्व वा ॥२४६॥ चिस्फुरो , ओ, आत्वम्, वा । चतुष्पदमिदं सूत्रम् ॥

भाषा—चिधातु और स्फुरधातुके स्वरको विकल्पकरके आकार होय णिप्रत्यय पर हुए सते । उदाहरण—चिञ्धातुके इकारको विकल्पकरके आकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ चा-इ णिर ॥

रातो णौ पुक् ॥ २४७ ॥ रातेः , ओ, पुक् । त्रिपदमिदं सूत्रम्

विदधातु चेतन और आख्यानकथन और निवासअर्थमें वर्त्ते है । लट्‌में । वेदयते । लुङ्‌में । अवीविदत ॥

कुस्मनाम्नो वा ॥ २४९ ॥ कुस्मनाम्नः, वा । द्विपदमिदं सूत्रम् ॥ कुस्मेति धातुः कुत्सितस्मयने अथवा कुस्मेति नाम ततो णिः ॥ कुस्मयते । अचुकुस्मत ॥ कण निमीलने ॥ काणयति । अचीकणत्, अचकाणत् ॥

भाषा–कुस्म नाम संज्ञासेभी विकल्पकरके णिप्रत्यय होता है कुस्म यह धातुभी है सो कुत्सितस्मयन नाम भयानक मंदहास करनेमें वर्त्ते है नाम और धातुसे णिप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । कुस्मयते । लुङ्‌में ' णेरङ् द्विश्च, णेः ' इनकर सिद्ध हुआ । अचुकुस्मत । कणधातु निमीलन नाम एक नेत्रके मीचनेमें वर्त्ते है । णिप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । काणयति । लुङ्‌में ' णेरङ् द्विश्च, णेः ' इनकर रूप स्थित हुआ अचकाण्-अ-द् फिर ' कणरणभणश्रणलुपहेठिह्वेञ्वाणिलोटिलोठिलोपीनां वा ह्रस्वोऽङि ' इसकर एक जगह उपधाको ह्रस्व करनेपर ' अङि लघौ० ' इसकर पूर्व अकारको इकार करनेसे ' लघोर्दीर्घः ' इसकर सिद्ध हुआ । अचीकणत । और जहां उपधाको ह्रस्व नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । अचकाणत् ॥

नवगणयामुक्तेभ्यो हिंसार्थेभ्यः स्वार्थे णिः ॥ २५० ॥ नवगण्याम्, उक्तेभ्यः, हिंसार्थेभ्यः, स्वार्थे णिः । पंचपदमिदं सूत्रम् ॥ हिसि हिंसायाम् ॥ हिंसयति । अजिहिंसत् ॥ ज्ञा नियोगे ॥ ज्ञापयति । अजिज्ञपत् ॥ भू मिश्रीकरणचिन्तनयोः ॥ भावयति । अबीभवत् ॥ लोक लोचृ परिभाषणे ॥ लोकयति । लोचयति ॥

भाषा–भ्वादिसे लेकर क्र्यादिपर्यन्त नवगणोंमें कहे हुए हिंसाअर्थवाले धातुओंसे स्वार्थमें णिप्रत्यय होय । उदाहरण–हिंसार्थ हिसिधातुसे स्वार्थमें णिप्रत्यय करनेपर लट्‌में रूप सिद्ध हुआ । हिंसयति । लुङ्‌में ' णेरङ् द्विश्च, णेः ' इनकर रूप सिद्ध हुआ । अजिहिंसत । हिंसार्थ हन्धातुसे स्वार्थमे णिप्रत्यय करनेपर ' हनो घत ' इसकर लट्‌में रूप सिद्ध हुआ । घातयति । लुङ्‌में । अजीघतत् । ज्ञाधातु नियोग नाम आज्ञा करनेमें वर्त्ते है । ज्ञाधातुसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर ' रातो णौ पुक् ' इसकर पुक् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । ज्ञापयाति । लुङ्‌में ' णेरङ् द्विश्च, णेः ' इनकर रूप स्थित हुआ अजज्ञाप्-अ-द् फिर ' अङि लघौ० ' इसकर उपधाको ह्रस्व और पूर्व आकारको इकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ ।

शम लक्ष आलोचने ॥ शामयते । लक्षयते । अशशिमत । अललक्षत ॥ दिवु परिकूजने ॥ देवयते ॥ गृ विज्ञाने ॥ गारयते । अजीगरत ॥ विद चेतनाख्याननिवासेषु ॥ वेदयते । अवीविदत ॥

भाषा–कुत्सधातु पर्यन्त जो कि धातु गिने हैं वे आत्मनेपदी होते हैं । चित्धातु संचेतन अर्थमें वर्त्ते है । संचेतन नाम उसका है जो कि मूर्च्छादिक अवस्थाओंके निवृत्तिके उत्तरकालमें जो कि ज्ञान होता है । णिप्रत्यय करनेपर आत्मनेपद करनेसे लट्में सिद्ध हुआ । चेतयते । लुङ्में ' णेरङ् द्विश्च, अे', आदि लघौ ह्रस्व उप०, लघोर्दीर्घः ' इनकर सिद्ध हुआ । अचीचितत । दशधातु दंशन नाम डसनेमें वर्त्ते है । णिप्रत्यय करनेपर आत्मनेपद करनेसे लट्में रूप सिद्ध हुआ । दंशयते । लुङ्में ' णेरङ् द्विश्च ' इसकर द्वित्व और अङ् करनेपर ' अे' इसकर सिद्ध हुआ । अददशत । णिप्रत्ययके संयोगसेही कुत्सधातु पर्यन्त आत्मनेपद होता है और जहां णिप्रत्ययका संयोग नहीं है तहां परस्मैपद होता है । जहां णिप्रत्यय नहीं हुआ तहां ' अप् कर्त्तरि ' इसकर अप्प्रत्यय करनेपरभी ' आपिरञ्जदंशसञ्जस्वञ्जाम् ' इसकर नकारका लोप नहीं हुआ क्योंकि सजधातुका सहचरी होनसे तहां भ्वादिगणके दंशधातुका ग्रहण है न कि चुरादिगणके दंशधातुका तब रूप सिद्ध हुआ । दंसति । तन्त्रिधातु और कुटुम्बधातु धारणअर्थमें वर्त्ते है । ' इदितो नुम् ' इसकर नुम् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । तन्त्रयते । कुटुम्बयते । लुङ्में । ' णेरङ् द्विश्च, अे ' इनकर सिद्ध हुआ । अततन्त्रत । अचुकुटुम्बत । मन्त्रिधातु गुप्तभाषण करनेमें वर्त्ते है । ' इदितो नुम् ' इसकर नुम् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । मन्त्रयते । लुङ्में । अममन्त्रत । शमधातु और लक्षधातु आलोचन नाम देखनेमें वर्त्ते है । लट्में । शामयते । लुङ्में ' णेरङ् द्विश्च, अे ' इनकर प्रथम स्थित हुआ अशशाम्-अ-ङ् फिर ' आदि लघौ ह्रस्व उपधायाः ' इसकर उपधाको ह्रस्व और पूर्वअकारको इकार करनेपर ' लघोर्दीर्घः ' इसकर सिद्ध हुआ । अशीशमत । और लक्षधातुका लट्में रूप सिद्ध हुआ । लक्षयते । और लुङ्में सिद्ध हुआ । अललक्षत् । दिवुधातु परिकूजन नाम विलाप करनेमें वर्त्ते है । लट्में णिप्रत्यय करनेके अनन्तर ' उपधाया लघो ' इसकर सिद्ध हुआ । देवयते । लुङ्में ' णेरङ् द्विश्च अे', आदि लघौ ह्रस्व उपधायाः, लघोर्दीर्घः ' इनकर सिद्ध हुआ अदीदिवत । गृधातु विज्ञानअर्थमें वर्त्ते है । णिप्रत्यय करनेके अनन्तर ' धातोर्नामिन' इसकर वृद्धि करनेपर सिद्ध हुआ । गारयते । लुङ्में ' णेरङ् द्विश्च, अे ' इनकर स्थित हुआ अजगार् अ-ङ् फिर ' आदि लघौ० ' इसकर उपधाको ह्रस्व और पूर्वअकारको इकार करनेपर लघोर्दीर्घ ' इसकर सिद्ध हुआ । अजीगरत ।

नहीं होय अर्थात् अकारका लोप बलवान् होनेसे 'धातोर्नामिनः' इसकर जो कि अकारको वृद्धिकी प्राप्ति होवे है उसकी बाधा करता है अथवा अकारका लोप होने-पर कथादिकमे जो कि मध्यमें आकार है उसको उपधारूप होनेसे 'अत उपधायाः' इसकर वृद्धि प्राप्त होवे है सो अकारका लोप होनेपरभी अकारको तहांही विद्यमान होनेसे कथादिकोंमें 'अत उपधायाः' इसकर वृद्धि नही होय तव रूप सिद्ध हुआ । कथयति । लिट्में । कथयाञ्चकार । लिङ्मे कथ्यात् । लुङ्मे 'ञेरङ् द्विश्च, ञेः' इनकर रूप सिद्ध हुआ अचकथ्-अ-द् ॥

अग्वृल्लोपिनो नाङ्कार्यम् ॥ ३९३ ॥ अग्वृल्लोपिनः, न, अङ्कार्यम् । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ अचकथत् ॥ वर ईप्सायाम् ॥ वरयति । अववरत् ॥ गण संख्याने ॥ गणयति । गणेः पूर्वस्य ईद्वाङ्परे ञौ । अजीगणत् ॥ स्तनगदी देवशब्दे । स्तनयति । गदयति । अतस्तनत् । अजगदत् ॥ पत गतौ ॥ वा ञ्यन्तः । पतयति पतति । पतयांचकार पताञ्चकार । अपपतत् । अपतीत् । वादन्त इत्येके । पातयति । अपीपतत् । रच प्रतियत्ने ॥ रचयति ॥ सूत्र वेष्टने ॥ सूत्रयति । असुसूत्रत् ॥ मूत्र प्रस्रवणे ॥ मूत्रयति ॥ कल गतौ संख्याने च ॥ कलयति ॥ स्पृह ईप्सायाम् ॥ स्पृहयति ॥ अपस्पृहत् ॥ भाम क्रोधे ॥ भामयति । अबभामत् ॥ सूच पैशुन्ये ॥ सूचयति॥ऊन परिहानौ ॥ ऊनयति । ञिनिमित्तः स्वरादेशो द्वित्वे कर्तव्ये स्थानिवत् । औननत् ॥ अर्थङ् याचने ॥ अर्थयते । आर्तथत् ॥ संग्राम युद्धे ॥ असंग्रामत् ॥ अन्ध दृष्ट्युपघाते ॥ अन्धयते । अन्धयति । आन्दधत् ॥ अङ्क अङ्ग पदे लक्षणे च ॥ आञ्चकत् । आञ्जगत् ॥ इति चुरादयः ॥

भाषा–जिसके अवर्ण, इवर्ण, उवर्ण और ऋवर्णका लोप होता है उस धातुको वह कार्य नहीं होता है जिस कार्यके होनेका कि अङ्प्रत्यय निमित्त कारण है । उदाहरण–अचकथ्-अ-द् । इसमे 'आडि लघौ०' इसकर पूर्वको इकार और 'लघोर्दीर्घः' इसकर पूर्वको दीर्घ नही होय क्योंकि यह दोनों कार्य अङ्प्रत्ययके परे विद्यमान होनेसे होते हैं तब रूप सिद्ध हुआ । अचकथत् । वरधातु ईप्सा नाम आप्तिकी इच्छामें वर्त्त है । लट्में । वरयति लुङ्में । अववरत् । गणधातु संख्यान

अभिक्षपत् । इसमें 'लघोर्दीर्घः' इसकी प्राप्ति नहीं हुई क्योंकि पूर्वका इकार संयोगपर होनेसे लघु नहीं किन्तु गुरु है । भूधातु मिश्रीकरण और चिन्तन नाम विचार करनेमें वर्त्ते है णिप्रत्यय करनेके अनन्तर 'धातोर्नामिन' इसकर वृद्धि करनेसे रूप सिद्ध हुआ । भावयति । लुङ्में 'णेरङ् द्विश्च में' इनकर रूप स्थित हुआ अभाव्-अ-द् फिर 'अङि लघौ०' इसकर उपधाको ह्रस्व और पूर्वको इकार करनेपर 'लघोर्दीर्घः' इसकर सिद्ध हुआ । अबीभवत् । लोकृधातु और लोचृधातु परिमाणम नाम अवलोकनअर्थमें वर्त्ते हैं । णिप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । लोकयति । लोचयति । लुङ्में 'णेरङ् द्विश्च, में' इनकर रूप स्थित हुआ । अलुलोक्-अ-द् ॥

न रित ॥ २५१ ॥ न, रितं । द्विपदमिदं सूत्रम् ऋदित् धातो- श्चाण्युपधाया ह्रस्वो न ॥ अलुलोकत् ॥ अलुलोचत् । धूञ् कम्पने ॥

भाषा—ऋकार इत् जिसका ऐसे धातुकी और शास्धातुकी उपधाको ह्रस्व नहीं होय अङ् पर हुए सते । उदाहरण—अलुलोक्-अ-द् । इसमें ऋकार इत्वाले लोकृधातुकी उपधाको ह्रस्व न करनेसे सिद्ध हुआ । अलुलोकत् । इसी प्रकार सिद्ध हुआ । अलुलोचत् । धूञ्धातु कम्पनअर्थमें वर्त्ते है ॥

धूञ्प्रीञोर्नुक् णौ ॥ २५२ ॥ धूञ्प्रीञो, नुक् णौ । त्रिपदमिदं सूत्रम् ॥ धूनयति । अदूधुनत् ॥ प्रीञ् तर्पणे ॥ प्रीणयति । अपि- प्रीणत् ॥ अथादन्ता ॥ कथ वाक्यप्रबन्धने ॥ यतः । अल्लोपस्या- नित्वेन न वृद्धिः । कथयति ॥

भाषा—धूञ्धातु और प्रीञ्धातुको नुक्का आगम होय णिप्रत्यय पर हुए सते । उदाहरण—धूञ्धातुके णिप्रत्यय करनेके अनन्तर नुक् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । धूनयति । लुङ्में 'णेरङ् द्विश्च में' इनकर स्थित हुआ अदुधून्-अ-द् फिर 'अङि लघौ०' इसकर उपधाको ह्रस्व करनेपर रूप स्थित हुआ अदुधुन्-अ द् फिर 'लघोर्दीर्घः' इसकर सिद्ध हुआ । अदूधुनत् । प्रीञ्धातु तृप्तिअर्थमें वर्त्ते है । नुक् आगम करनेपर सिद्ध हुआ । प्रीणयति । लुङ्में । अपिप्रिणत् । इसके अनन्तर अकारान्त धातु कहे हैं । भाव यह है कि आगारी कहे जानेवाले धातुओंके विषे जो कि अन्तमें अकार विद्यमान है वह धातुकाही अवयव है न कि उच्चारणार्थ है । कथधातु वाक्यप्रबंध अर्थात् वाक्यका विस्तार करनेमें वर्त्ते है । कथधातुसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर यतः' इसकर अकारका लोप किया फिर अकारके लोपको स्थानधारीके तुल्य होनेसे वृद्धि

अवयव यकारको द्वित्व करनेपर वह स्वर पूर्वमें युक्त किया जिसका कि णिप्रत्ययके विद्यमान होनेसे लोप हो गया था तब 'झपानां जबचपाः' इसकर रूप स्थित हुआ आर्तथि-अ-द् फिर 'ञेः' इसकर रूप सिद्ध हुआ । आर्तथत् । संग्रामधातु युद्ध करनेमे वर्त्ते है । लट्में । संग्रामयाति । लुङ्में । अससंग्रामत् । अन्धधातु दृष्टिके उपघात करनेमें वर्त्ते है । लट्मे । अन्धयते । लुङ्में तृतीय अवयव द्वित्व करनेपर सिद्ध हुआ । आन्दधत् । अङ्क, अङ्ग धातु पदस्थिति और लक्षण चिह्न करनेमें वर्त्ते है । लट्मे । अङ्कयति । अङ्गयति । लुङ्में तृतीय अवयव द्वित्व करनेपर रूप सिद्ध हुआ । आञ्चकत् । आञ्जगत् ॥ इति चुरादयः ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामोक्तभाषया । चन्द्रिकोत्तरार्द्धवृत्तावेषा दशगणी वृता ॥ १० ॥

धातोः प्रेरणे ॥ ३५४ ॥ धातोः प्रयोजकव्यापारेऽर्थे ञिप्रत्ययः ॥ भवंतं प्रेरयति भावयते । भावयाञ्चकार ॥

भाषा-प्रयोजक नाम उसका है जो कि किसीको किसी कार्यमें प्रवृत्त करता है उस प्रयोजकका जो कि व्यापार अर्थात् किसीको कार्यमें प्रवृत्त करना उसी अर्थमें धातुसे ञिप्रत्यय होता है । जैसे-'देवदत्तो भवन्तं प्रेरयति' यहा जो कि होनेवाला है उसको देवदत्त होनेकी आज्ञा देता है । उदाहरण-भूधातुसे प्रेरणअर्थमें ञिप्रत्यय करनेपर 'सधातुः' इसकर धातुसंज्ञा होनेसे 'अप् कर्त्तरि' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । भावयाति । 'ञित्स्वरितेत उभे' इससे उभयपदी होनेसे आत्मनेपदमें सिद्ध हुआ । भावयते । लिङ्में । भावयेत् । भावयेत । लोट्में । भावयतु । भावयताम् । लङ्मे । अभावयत् । अभावयत । लिट्में अनेक स्वर होनेसे आम् प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । भावयाञ्चकार । भावयाञ्चक्रे । आशीर्लिङ्में परस्मैपदके

---

१ शाकटायन आचार्य अकारान्त समस्त कथआदि धातुओंसे ञिप्रत्यय करनेपर 'धातोर्नामिनः' इसकर अकारको आकार वृद्धि कर 'रातो ञौ पुक्' इसकर पुक् आगम कर लट्में । कथापयति । गणापयति । लुङ्में । अचीकपयत् । अजीगणयत् । रूप साधते हैं ॥

२ प्रयोजक कहीं सिद्धरूप होता हे और कहीं फलरूप होता है 'देवदत्तः पाचयति' यहां सिद्धरूप है क्योंकि स्वयं देवदत्त पाक करता ह 'भिक्षा वासयति' यहा फलरूप ह क्योंकि भिक्षा फल है उसीके निमित्त वास करता है इस कारण यहां भिक्षाही प्रयोजक है ॥

३ यदि कहो कि धातुसे प्रेरणअर्थमें ञिप्रत्यय और लोट् दोनों होते हैं तौ क्या ञिप्रत्ययके स्थानमें लोट् और लोट्के स्थानमें ञिप्रत्यय करनेसे दोनोंका अर्थ समान होता है । जैसे 'पृच्छतु भवान्' इस कथनमें 'पृच्छयाति भवान्' ऐसा प्रयुक्त हो सक्ता है ? नहीं नहीं; क्योंकि ञिप्रत्ययका अर्थ भिन्न है सो इस प्रकार है । 'प्रयोज्यप्रवृत्त्युपहिता या प्रयोजकनिष्ठप्रवृत्तिः सा ञिप्रत्ययस्यार्थः' अर्थ-प्रयोज्यप्रवृत्तिके विषें रक्खी हुई जो कि प्रयोजकनिष्ठप्रवृत्ति है वह ञिप्रत्ययका अर्थ है ॥

-नाम गिननेमें वर्त्ते है । लट्में । गणयति । लुङ्में अजगणि मन्द् ऐसा स्थित है । गणधातुके पूर्वरूपको विकल्पकरके ईकार होय अङ् परे है जिसके ऐसा णिप्रत्यय पर हुए सेते । उदाहरण—अजगणि-अन्द् । इसमें गणधातुके पूर्वको ईकार विकल्प करके किया क्योंकि अङ्परवाला णिप्रत्यय परे विद्यमान है तब ' णेः ' इसकर णिका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अजीगणत् । और एक जगह । अजगणत् । स्तनधातु और गदधातु देवशब्दोंमें वर्त्ते है । लट्में । स्तनयति । गदयति । लुङ्में । अतस्तनत् । अजगदत् । पतधातु गतिअर्थमें वर्त्ते है । पतधातु विकल्पकरके णिप्रत्ययान्त होता है जहां णिप्रत्यय हुआ तहां लट्में सिद्ध हुआ । पतयति । लुङ्में । अपपतत् । और जहा णिप्रत्यय नहीं हुआ तहां । अप्कर्तरि ' इसकर अप्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' अदे ' इसकर अकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । पतति । लिट्में अनेक स्वर होनेसे सिद्ध हुआ । पतयांचकार । लुङ्में । अपतीत् । कोई आचार्य पतधातुको विकल्पकरके अकारान्त मानते हैं । जहां अकारान्त नहीं है तहां णिप्रत्यय करनेपर ' अत उपधायाः ' इसकर उपधाकी वृद्धि करनेसे रूप सिद्ध हुआ । पातयति । लुङ्में ' णेरङ् द्विश्च, णेः ' इसकर रूप स्थित हुआ अपपात-अन्द् फिर अर्द्धि लघौ०, लघोर्दीर्घः ' इनकर सिद्ध हुआ । अपीपतत् । रचधातु प्रतियत्न नाम रचना करनेमें वर्त्ते है । लट्में । रचयति । लुङ्में । अर रचत् । सुत्रधातु वेष्टन नाम लपेटनेमें वर्त्ते है । लट्में । सुत्रयति । लुङमें ' णेरङ् द्विश्च, णेः इनकर सिद्ध हुआ । असुसुत्रत् । मूत्रधातु प्रस्रवण नाम मूत्र करनेमें वर्त्ते हैं । लट्में । मूत्रयति । लुङ्में । अमुमूत्रत् । कलधातु गति और संख्या करनेमें वर्त्ते है । लट्में । कलयति । लुङ्में । अचकलत् । स्पृहधातु ईप्सा नाम स्पृहा करनेमें वर्त्ते है । मामधातु क्रोध करनेमें वर्त्ते है । लट्में । भामयति । लुङ्में अबभामत् । सूचधातु पैशुन्य नाम सूचन करनेमें वर्त्ते है । लट्में । सूचयति । लुङ्में । असुसूचत् । ऊनधातु परिहानि नाम हीनता करनेमें वर्त्ते है । लट्में । ऊनयति । णिप्रत्यय है निमित्त जिसका ऐसा जो स्वरस्थानमें आदेश सो द्वित्व-कर्तव्यमें स्थानधारीके तुल्य होता है । उदाहरण—लुङ्में ' णेरङ् द्विश्च ' इसकर णिप्रत्ययान्त ऊनिधातुको द्वित्वका योग होनेसे स्वरादे पर ' इसकर द्वितीय अवयव निको द्वित्व करनेपर पूर्वमें मद स्वरयुक्त हुआ । जिसका कि णिके विद्य मान होनेसे लोप हो गया था इस कारण पूर्वअवयवमें अकारयुक्त करनेपर रूप स्थित हुआ औनानि-अन्द् फिर णेः ' इसकर णिका लोप करनेपर अस्यूलोपिनो नाज्स्वर्पम् ' इसकर सिद्ध हुआ । औननत् । अर्थधातु याच्ञा करनेमें वर्त्ते है । लट्में । अर्थयते । लुङ्में द्वित्व करनेपर ' स्वरादे' पर इसकर रफारका द्वित्व-प्राप्ति हुई सो ' स्वरात्परास्संयोगादयो धनदरा द्विर्न ' इसकर नहीं हुई तब तृतीय

प्रवत् । अपिप्लवत् । अपुप्लवत् । अचिच्यवत् अचुच्यवत् । न रितः । अशशासत् । अडुढौकत् ॥

भाषा—स्रु, श्रु, द्रु, प्रुङ्, प्लुङ् और च्युङ् इन धातुओंके पूर्वके उकारको विकल्प-करके इकार होय अवर्ण है परे जिमके ऐसा धातुका अक्षर पर हुए संते अङ् और सप्रत्ययके विषैं । उदाहरण—लुङ्के विषैं अङ्प्रत्यय करनेके अनन्तर स्रुधातुको द्वित्व करनेपर रूप स्थित हुआ असुस्रावि-अ-द् फिर ' णेः ' इसकर णिप्रत्ययका लोप किया तब रूप स्थित हुआ असुस्राव्-अ-द् फिर ' अङि लघौ० ' इसकर उपधाको ह्रस्व करनेपर रूप स्थित हुआ असुस्रव्-अ-द् फिर एक जगह पूर्वके उकारको इकार किया क्योंकि अकार है परे जिससे ऐसा सकार रकार धातुका अक्षर परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । असिस्रवत् । और एक जगह । असुस्रवत् । इसी प्रकार श्रु, द्रु, प्रुङ् । प्लुङ् और च्युङ् धातुओंके रूप सिद्ध करने चाहिये । ' शासु अनुशिष्टौ ' धातु और ' ढौकृ गतौ ' धातुके लुङ्में ' न रितः ' इसकर उपधाको ह्रस्व न होनेसे रूप सिद्ध हुआ । अशशासत् । अडुढौकत् ॥

ण्यन्तात् णिः ॥ ३८७ ॥ चोरयति । अचूचुरत् ॥

भाषा—स्वार्थके विषैं रचा हुआ णिप्रत्यय है अन्तमे जिसके ऐसे धातुसेभी प्रेरण-अर्थमे णिप्रत्यय होय । उदाहरण—चुरधातुसे स्वार्थमें णिप्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ चोरि फिर ण्यन्त चोरिधातुसे प्रेरणअर्थमें णिप्रत्यय करनेपर प्रथम णिप्रत्ययका लोप किया तब रूप स्थित हुआ चोर्-इ फिर ' अप् कर्त्तरि ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । चोरयति । लुङ्में ' णेरङ् द्विश्व, णेः, अङि लघौ ह्रस्व उपधायाः, लघोर्दीर्घः ' इनकर सिद्ध हुआ । अचूचुरत् ॥

हनो घत् ॥ ३८८॥ हन्तेर्घदादेश इण्वर्ज्जिते ञ्णिति ॥ घातयति । अजीघतत् ॥

भाषा—हन्धातुको घत् आदेश होय ञकार इत्वाला तथा णकार इत्वाला प्रत्यय पर हुए संते परन्तु इण्प्रत्यय पर हुए संते नही होय । उदाहरण—णिप्रत्यय करनेपर हन्को घत आदेश करनेसे रूप सिद्ध हुआ । घातयति । लुङ्में । ' णेरङ्० ' द्विश्व, कुहोश्चुः, झपानां जबजपाः, णेः, अङि लघौ०, लघोर्दीर्घः ' इनकर सिद्ध हुआ । अजीघतत् ॥

शेरगतौ तो णौ ॥ ३८९ ॥ शातयति । अशीशतत् । गतौ तु, शादयति । अशीशदत् । रातेः णौ पुक् ॥

सिर्प ' भे ' इसकर णिप्रत्ययका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । माव्यात् । आत्म- नेपदमें । मावयिषीष्ट । लुट्में । मावयिता । लृट् लङ्में । मावयिष्यति । मावयि ष्यते । अमावयिष्यत् । अमावयिष्यत । लुङ्में ' णेरङ् द्वित्व ' इसकर अङ्प्रत्यय और द्वित्व करनेपर रूप सिद्ध हुआ अमूमावी-अ-द् फिर ' हलादिः शेषः ', ह्रस्वः, णे', अचि श्नुधातु ह्रस्व उपधायाया' ' इनकर स्थित हुआ अमुमव्-अ-द् फिर ॥

अङ्सयो पूर्वस्योकारस्येत्व पवर्गयणजकारेष्ववर्णपरेषु परत ॥ ३९९ ॥ अमीभवत् ॥ मुङ् म बन्धे ॥ मावयति । अमीमवत् । यावयति । अयीयवत् । रावयति । अरीरवत् । लावयति । अलीलवत् । जावयति । अजीजवत् ॥

मापा—अङ्प्रत्यय और सन्प्रत्यय पर हुए सते पूर्वके उकारको इकार होय जो अवर्ण स्वर है परे जिनसे ऐसे पवर्ग और यण्प्रत्याहार तथा जकार परे होवे तो । भाव यह है अङ् और सन्प्रत्यय परे यदि विद्यमान हो तो पूर्वरूपसंबन्धी उकारको इकार होय परन्तु उस उकारसे यदि पवर्ग और यण्प्रत्याहार तथा जकार परे होवे और इन पवर्ग और यण्प्रत्याहार तथा जकारसे परे अवर्ण स्वर होवे तो । उदाहरण— अमुमव्-अ-द् । इसमें अङ्प्रत्यय परे विद्यमान है और पूर्वसम्बन्धी उकारसे पवर्ग संबन्धी मकार और मकारसे परे अकार स्वर विद्यमान है इस कारण पूर्वसम्बन्धी उकारके स्थानमें इकार करनेपर ' लघोर्दीर्घः ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । अमीभवत् । इसी प्रकार ' मूङ् म बन्धे ' धातुसे प्रेरणअर्थमें णिप्रत्यय करनेपर लट्में रूप सिद्ध हुआ । मावयति । और लुङ्में । अमीमवत् । और ' यु मिश्रणे ' धातुसे प्रेरणअर्थमें णिप्रत्यय करनेपर लट्में । यावयति । और लुङ्में । अयीयवत् । और ' रु शब्दे ' धातुसे णिप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । रावयति । लुङ्में यण्प्रत्याहारसंबन्धी अकार स्वरपरवाला रकार परे होनेसे पूर्वके उकारको इकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अरीरवत् । ' लूञ् छेदने ' धातुसे णिप्रत्यय करनेपर लट्में । लावयति । लुङ्में । अलीलवत् । ' जु गतौ ' धातुसे णिप्रत्यय करनेपर लट्में । जावयति । लुङ्में अकार परे जिसके ऐसा जकार परे होनेसे पूर्वके उकारको इकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अजीजवत् ॥

स्रवतिशृणोतिद्रवतिप्रवतिप्लवतिच्यवतीनामङ्सयो ॥३९६॥ पूर्वस्येत्व वाऽवर्णपरे धात्वक्षरे परे ॥ असिस्रवत् असुस्रवत् । अशिश्रवत् अशुश्रवत् । अदिद्रवत् अदुद्रवत् । अपिप्रवत् अपु

भाषा–पिबतिधातुके पूर्वरूपको ईकार और उपधाका लोप होय । उदाहरण–अपपायि-अ-द् । इसमें 'णेः' इसकर णिप्रत्ययका लोप करनेपर पूर्वरूपके स्वरको ईकार और उपधा आकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अपीप्यत् । शो आदिक धातुओंके ओकारको 'संध्यक्षराणामानपि' इसकर आकार करनेके अनन्तर युक् आगम करनेसे रूप सिद्ध हुआ । शाययति । आदिक और लुङ्के विषे 'णेरङ् द्विश्च, णेः, आङि लघौ०, लघोर्दीर्घः' इनकर सिद्ध हुआ । अशीशयत् । और छोधातुका रूप द्वित्व करनेके अनन्तर 'ह्रस्वः' इसकर ह्रस्व करनेसे 'छः' इसकर प्रथम स्थित हुआ अचच्छायि-अ-द् फिर 'णेः, आङि लघौ०' इनकर सिद्ध हुआ । अचिच्छयत् । इसमें पूर्वस्वरको ह्रस्व न होनेसे 'लघोर्दीर्घः' इसकर दीर्घ नहीं हुआ । सोधातुका रूप सिद्ध हुआ । साययति । लुङ्में । असीसयत् । ह्वेञ्धातुका सिद्ध हुआ । ह्वाययति ॥

ह्वयतेर्ण्यन्तस्याङ्सयोस्सम्प्रसारणं युगभावश्च ॥ ३६४ ॥ अजूहवत् । अजुहावत् । व्याययति । अविव्ययत् । वाययति । अवीवयत् ॥

भाषा–णिप्रत्ययान्त ह्वेञ्धातुको सम्प्रसारण होय अङ् और सप्रत्यय पर हुए संते । और युक् आगमका अभाव होय । उदाहरण–ह्वायि । इससे अङ्प्रत्यय करनेके अनन्तर। ह्वाको ह संप्रसारण किया और युक् आगमका अभाव किया फिर धातुको द्वित्व कर 'ह्रस्वः, कुहोश्चुः, झपानां जबचपाः' इनकर रूप स्थित हुआ । अजहू-इ-द् फिर 'धातोर्नामिनः' इसकर वृद्धि करनेपर रूप स्थित हुआ अजुहावि-अ-द् 'फिर णेः' इसकर णिका लोप करनेपर 'आङि लघौ०, लघोर्दीर्घः' इनकर सिद्ध हुआ । अजूहवत् । और जहां 'कणरणभणश्रण०' इसकर उपधाको ह्रस्व नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । अजुहावत् । व्येञ्धातुका सिद्ध हुआ । व्याययति । लुङ्में । अविव्ययत् । वेञ्धातुका सिद्ध हुआ । वाययति । लुङ्में । अवीवयत् ॥

पातेर्णौ लुक् ॥ ३६५ ॥ पालयति । अपीपलत् ॥

भाषा–'पा रक्षणे' धातुको लुक् आगम होय और पुक्का अपवाद होय णिप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–'पा रक्षणे' धातुसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर लुक् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । पालयति । लुङ्मे । अपीपलत् ॥

प्रयोजकात्स्मये णौ स्मयतेरात्वम् ॥ ३६६ ॥

भाषा–प्रयोजकसे विस्मय होवे तौ स्मिङ्धातुके अंत्यको आकार होय णिप्रत्यय पर हुए संते । भाव यह है कि विस्मयका उत्पन्न करनेवाला जो प्रयोजक होवे तौ स्मिङ्धातुके अंत्यको आकार होय णिप्रत्यय पर हुए संते ॥

भाषा–शद्धातुके दकारको तकार आदेश होय णिप्रत्यय पर हुए संते परन्तु गतिअर्थमें शद्धातुके दकारको तकार आदेश नहीं होय । उदाहरण–शद्धातुसे णिप्रत्यय करनेपर अन्त्यको तकार आदेश करनेपर रूप सिद्ध हुआ । शातयति । लुङ्में । अशीशतत् । और गतिअर्थमें । शादयति । अशीशदत् । ऋधातुसे णिप्रत्यय करनेपर 'रातो स्री पुक्' इसकर पुक् आगम करनेसे रूप स्थित हुआ ऋप्-इ-अन्ति ॥

पुकि गुणः ॥ २६० ॥ अर्पयति । आर्पिपत् । दापयति । अदीद-पत् । धापयति । अदीधपत् । स्थापयति ॥

भाषा–पुक् आगम पर हुए संते गुण होय । उदाहरण–ऋप्-इ-अन्ति । इसमें ऋधातुसे पुक् आगम परे विद्यमान है इस कारण धातुको गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अर्पयति । लुङ्में 'स्वरादेः परः' इसकर मिलित्रि पकारको द्वित्व करनेपर रूप स्थित हुआ आर्पिपि-अ-द् फिर 'णेः' इसकर णिप्रत्ययका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ अर्पयति । डुदाञ् दाने और डुधाञ् धातुसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर 'रातो स्री पुक्' इसकर पुक् आगम करनेसे रूप सिद्ध हुआ । दापयति । धाप यति । लुङ्में । अदीदपत् । अदीधपत् । ष्ठाधातुसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर पुक् आगम करनेसे रूप सिद्ध हुआ । स्थापयति ॥

तिष्ठतेरङ्युपधाया इत् ॥ २६१ ॥ अतिष्ठिपत् ॥

भाषा–स्थाधातुके उपधाको इकार होय अङ् प्रत्यय पर हुए संते । स्थाधातुके साथ तिप्के निर्देशसे यङ्लुक्के विर्षे स्थाधातुके उपधाको इकार नहीं होय । उदाहरण–लुङ्में अस्थापि अ-द् । इसके विर्षे अङ् परे होनेसे पुक् आगमयुक्त स्थाप धातुके उपधाभूत आकारको इकार करनेपर द्वित्व करनेसे 'न झसास्तपा झपानां जबचपाः' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । अतिष्ठिपत् ॥

पादेर्युक् ॥ २६२॥ पाशोच्छोसोह्वेञ्व्येञ्वेञां युक् णौ ॥ पाययति ॥

भाषा– पा पाने' धातु और शो, छो, सो, ह्वेञ्, व्येञ्, वेञ् इन धातुओंको युक् आगम होय णिप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–'पा पाने' धातुसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर युक् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । पाययति । लुङ्में अपायि अ-द् ऐसा स्थित है ॥

पिबतेरङि पूर्वस्येकार उपधालोपश्च ॥ २६३ ॥ अपीप्यत् । शाययति । अशीशयत् । छाययति । अचिच्छयत् । साययति । असीषयत् । ह्वाययति ॥

भाषा—पिबतिधातुके पूर्वरूपको ईकार और उपधाका लोप होय । उदाहरण—अपपायि-अ-द् । इसमें 'णेः' इसकर णिप्रत्ययका लोप करनेपर पूर्वरूपके स्वरको ईकार और उपधा आकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अपीप्यत् । शो आदिक धातुओंके ओकारको 'संध्यक्षराणामानापि' इसकर आकार करनेके अनन्तर युक् आगम करनेसे रूप सिद्ध हुआ । शाययति । आदिक और लुङ्के विषै 'णेरङ् द्विश्च, णेः, आडि लघौ०, लघोर्दीर्घः' इनकर सिद्ध हुआ । अशीशयत् । और छोधातुका रूप द्वित्व करनेके अनन्तर 'ह्रस्वः' इसकर ह्रस्व करनेसे 'छः' इसकर प्रथम स्थित हुआ अचच्छायि-अ-द् फिर 'णेः, आडि लघौ०' इनकर सिद्ध हुआ । अचिच्छयत् । इसमें पूर्वस्वरको ह्रस्व न होनेसे 'लघोर्दीर्घः' इसकर दीर्घ नहीं हुआ । सोधातुका रूप सिद्ध हुआ । साययति । लुङ्में । असीसयत् । ह्वेञ्धातुका सिद्ध हुआ । ह्वाययति ॥

ह्वयतेर्ण्यन्तस्याङ्सयोस्सम्प्रसारणं युवभावश्च ॥ २६४ ॥ अजूहवत् । अजुहावत् । व्याययति । अविव्ययत् । वाययति । अवीवयत् ॥

भाषा—णिप्रत्ययान्त ह्वेञ्धातुको सम्प्रसारण होय अङ् और सप्रत्यय पर हुए संते । और युक् आगमका अभाव होय । उदाहरण—ह्वायि । इससे अङ्प्रत्यय करनेके अनन्तर ह्वाको हु संप्रसारण किया और युक् आगमका अभाव किया फिर धातुको द्वित्व कर 'ह्रस्वः, कुहोश्चुः, झपाना जवचपाः' इनकर रूप स्थित हुआ । अजहू-इ-द् फिर 'धातोर्नामिनः' इसकर वृद्धि करनेपर रूप स्थित हुआ अजुहावि-अ-द् 'फिर णेः' इसकर णिका लोप करनेपर 'आडि लघौ०, लघोर्दीर्घः' इनकर सिद्ध हुआ । अजूहवत् । और जहां 'कणरणभणश्रण०' इसकर उपधाको ह्रस्व नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । अजुहावत् । व्येञ्धातुका सिद्ध हुआ । व्याययति । लुङ्में । अविव्ययत् । वेञ्धातुका सिद्ध हुआ । वाययति । लुङ्में । अवीवयत् ॥

पातेर्णौ लुक् ॥ २६५ ॥ पालयति । अपीपलत् ॥

भाषा—'पा रक्षणे' धातुको लुक् आगम होय और पुक्का अपवाद होय णिप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—'पा रक्षणे' धातुसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर लुक् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । पालयति । लुङ्मे । अपीपलत् ॥

प्रयोजकात्स्मये णौ स्मयतेरात्वम् ॥ २६६ ॥

भाषा—प्रयोजकसे विस्मय होवे तौ स्मिङ्धातुके अंत्यको आकार होय णिप्रत्यय पर हुए संते । भाव यह है कि विस्मयका उत्पन्न करनेवाला जो प्रयोजक होवे तौ स्मिङ्धातुके अंत्यको आकार होय णिप्रत्यय पर हुए संते ॥

भीस्मिभ्यां ण्यन्ताभ्यामात् प्रयोजकाच्चेद्भयस्मयौ ॥ २६७ ॥
जटिलो विस्मापयते । व्यासिष्मपत । णिय स्वरस्यात्व वा ।
तदभावे पुक्रूरूपे । हेतोर्भेमयम् । मुण्डो भापयते । भीपयते ।
अबीभपत । अबीभिपत ॥

भाषा–भय और विस्मयका उत्पन्न करनेवाला जो प्रयोजक होवे तौ णिप्रत्ययान्तमी धातु और स्मिङ्धातुसे आत्मनेपद होय । उदाहरण–विस्मयजनक प्रयोजक होनेसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर स्मिङ्धातुके अन्त्यको आकार करनेपर 'रातो श्री पुक्' इसकर रूप स्थित हुआ स्मापि फिर आत्मनेपद् किया क्योंकि विस्मयजनक प्रयोजककर्त्ता विद्यमान है तब विउपसर्ग पूर्व करनेसे रूप सिद्ध हुआ । विस्मापयते । छुङ्में 'णेरङ् द्विश्, चे' इसकर रूप स्थित हुआ व्य सस्माप्-अ-त फिर 'अङि ख्यौ०' इसकर पूर्वके इकार और उपधाको ह्रस कर नेसे रूप सिद्ध हुआ । व्यासिष्मपत । इसमें विउपसर्गसे स्मिङ्धातुके सकारको षकार नहीं हुआ क्योंकि स्मिङ्धातु स्वादिकोंमें नहीं है । भीधातुके स्वरको आकार होय विकल्पकरके और जहां आकारका अभाव होय वहांभी धातुको पुक्का आगम होय णि पर हुए सते जो प्रयोजकसे भय होवे तौ । भाव यह है कि यदि भयके उत्पन्न करनेवाला प्रयोजककर्त्ता प्रयुक्त होवे तोभी धातुके स्वरको आकार होय विकल्पकरके णि पर हुए सते और जहां भीधातुके स्वरको आकार नहीं होय वहां भीधातुको पुक्का आगम होय । उदाहरण–भयजनक प्रयोजक होनेसे भीधातुको आ करनेपर 'रातो श्री पुक्' इसकर सिद्ध हुआ । भापयते । और जहां भीधातुका आकार नहीं हुआ वहां पुक् आगम करनेसे रूप सिद्ध हुआ । भीपयते । छङ्में । अबीभपत । अबीभिपत ॥

रुहेर्णौ पो वा ॥ २६८ ॥ रोपयति । अरूरुपत् । रोहयति । अरूरुहत् । कल्पयति । अचीक्लृपत् अचकल्पत् । वर्तयति । अवीवृतत् अववर्तत् । मार्जयति । अमीमृजत् अममार्जत् ॥

भाषा–रुहधातुके हकारको विकल्पकरके पकार होय णिप्रत्यय पर हुए सते । उदाहरण–रुहधातुसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर हकारको पकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । रोपयति । और जहां पकार नहीं हुआ वहां सिद्ध हुआ । रोहयति । छङ्में । अरूरुपत् । अरूरुहत् । क्लृप्धातुसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर 'कृपो रो लः' इसकर सिद्ध हुआ । कल्पयति । लुङ्में उपधाया ऋवर्णस्य ऋकारस्वरे जी' इसकर एक जगह उपधारूप ऋकारको ऋकार करनेपर कृपो रो लः' इत्यादिकर

सिद्ध हुआ । अचीक्लृपत् । और एक जगह सिद्ध हुआ । अचकल्पत् । वृतुधातुसे णिप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । वर्तयति । लङमें 'उपधाया ऋवर्णस्य०, अडि लघौ०, लघोर्दीर्घः' इनकर सिद्ध हुआ । अवीवृतत् । और एक जगह । अववर्त्तत् । मृजुषूधातुसे णिप्रत्यय करनेपर 'मृजेर्वृद्धिः किति स्वरे वा' इसकर वृद्धि करनेपर रूप सिद्ध हुआ । मार्जयति । लुङ्मे । अमीमृजत् । और एक जगह । अममार्जत् ॥

इङ्क्रीजीनामात्वं णौ ॥ २६९ ॥ अध्यापयति । अध्यापिपत् ॥

भाषा—इङ् डुक्रीञ् और जिधातु इनके स्वरको आकार होय णिप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—इङ्धातुसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर आकार करनेपर 'रातो णौ पुक्' इसकर पुक् आगम किया फिर अधिउपसर्ग पूर्व करनेपर रूप सिद्ध हुआ। अध्यापयति । लुङ्मे अङ् प्रत्यय करनेपर 'स्वरादेः परः' इसकर णिसंबन्धि स्वरयुक्त पिको द्वित्व करनेपर रूप स्थित हुआ अध्यापिपि-अ-द् फिर 'णेः' इसकर णिका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अध्यापिपत् ॥

अङ्सपरे णौ ॥ २७० ॥ इङो गाङ् वा ॥ अध्यजीगपत् । क्रापयति । अचिक्रपत् । जापयति । अजीजपत् ॥

भाषा—अङ् और सप्रत्यय परे है जिससे ऐसा णिप्रत्यय पर हुए संते इङ्धातुको विकल्पकरके गाङ् आदेश होय । उदाहरण—लुङ्में एक जगह इङ् धातुको गाङ् आदेश किया क्योंकि अङ्प्रत्यय परवाला णिप्रत्यय परे विद्यमान है तब 'रातो णौ पुक्' इसकर पुक् आगम किया और धातुको द्वित्व किया तब रूप स्थित हुआ अध्यजगापि-अ-द् फिर 'णेः, अडि लघौ०, लघोर्दीर्घः' इनकर सिद्ध हुआ । अध्यजीगपत् । डुक्रीञ्धातुसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर स्वरको आकार करनेपर 'रातो णौ पुक्' इसकर पुक् आगम करनेसे रूप सिद्ध हुआ । क्रापयति । लुङ्में । अचिक्रपत् । जिधातुका । जापयति । लुङ्में । अजीजपत् ॥

ह्रीव्लीरीक्नूयीक्ष्मायीनां णौ पुक् ॥ २७१ ॥ ह्रेपयति । अजिह्रिपत् । व्लेपयति । अविव्लिपत् । रेपयति । अरीरिपत् ॥

भाषा—ह्री, व्ली, रीङ्, क्नूयी, क्ष्मायी इन धातुओंको पुक् आगम होय णिप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—ह्री, व्ली, रीङ् इन तीन धातुओंसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर पुक् आगम करनेसे 'पुकि गुणः' इसकर गुण किया तब रूप सिद्ध हुआ । ह्रेपयति । व्लेपयति । रेपयति । लुङ्में । अजिह्रिपत् । अविव्लिपत् । अरीरिपत् । क्नूयी और क्ष्मायी धातुसे णिप्रत्यय करनेके अनंतर पुक् आगम करनेसे रूप स्थित हुआ क्नूय् प्-इ-ति, क्ष्माय्-इ-प्-ति ॥

यवयोर्वसे हकारे च लोपः ॥२७२॥ क्नोपयति । अचुक्नुपत् । क्ष्मापयति । अचिक्ष्मपत् ॥

भाषा—यकार और वकारका लोप होय वस् प्रत्याहार तथा हकार पर हुए संते। उदाहरण—क्नूय् प् इ ति, क्ष्माय् प् इ ति। इसमें यकारसे परे वसप्रत्याहारसंज्ञ भी पकार परे विद्यमान है इस कारण यकारका लोप करनेपर 'पुकि गुणः' इसप्रकार सिद्ध हुआ। क्नोपयति। क्ष्मापयति। लुङ्में। अचुक्नुपत्। अचिक्ष्मपत् ॥

दुपेर्णौ दीर्घः ॥ २७३ ॥ दूपयति । अदूदुपत् ॥

भाषा—दुप्धातुको दीर्घ होय णिप्रत्यय पर हुए संते। अर्थात्—दुप्धातुके उपधाको ऊकार होय णिप्रत्यय पर हुए संते। उदाहरण—दुप्धातुसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर उपधाको दीर्घ करनेपर रूप सिद्ध हुआ। दूपयति। लुङ्में। अदूदुपत् ॥

स्फायो वः ॥ २७४ ॥ ओ ॥ स्फावयति । अपिस्फवत् ॥ अड्ड उद्यमे ॥ अड्डयति । आड्डिडत् ॥ अर्च पूजायाम् ॥ अर्चयति । आर्चिचत् ॥ उन्दी क्लेदने ॥ उन्दयति । औन्दिदत् ॥ उब्ज आर्जवे ॥ उब्जयति । औब्जिजत् । घ्रापयति । अजिघ्रपत् ॥

भाषा—स्फायीधातुके यकारको वकार होय णिप्रत्यय पर हुए संते। उदाहरण—स्फाय्धातुसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर यकारको वकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ। स्फावयति। लुङ्में। अपिस्फवत्। अड्डधातु उद्यमअर्थमें वर्त्ते है। लट्में। अड्डयति। लुङ्में। स्वरादेः पर 'इसप्रकार दकारको द्वित्व नहीं हुआ किन्तु णिच् सम्बन्धी स्वरयुक्त डिको द्वित्व करनेपर प्रथम रूप स्थित हुआ आड्डिडत्-अब फिर 'ष्टुमि'० इसप्रकार दकारको डकार किया फिर णेः' इसप्रकार णिका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ। आड्डिडत्। अर्च पूजायाम्' धातुका सिद्ध हुआ लुङ्में। आर्चिचत्। 'उन्दी क्लेदने' धातुका सिद्ध हुआ। औन्दिदत्। 'उब्ज आर्जवे' धातुका सिद्ध हुआ लुङ्में। औब्जिजत्। घ्रा कुत्सायाम्' धातुसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर पुक् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ। घ्रापयति। लुङ्में। अजिघ्रपत् ॥

रभिलभो स्वरे नुम् न त्वपुलिटोः ॥ २७५ ॥ रभ रामस्ये ॥ रम्भयति। अररम्भत् ॥ डुलभष् प्राप्तौ ॥ लम्भयति। लम्भयते। अललम्भत्। हापयति। हापयते। अजीहपत्। स्मारयति। स्मारयते। असस्मरत्। दारयति। दारयते। अददरत् ॥

भाषा—रभधातु और डुलभष् धातु इन दोनोंको नुम् आगम होय स्वर पर

हुए संते परन्तु अप्प्रत्यय और लिट्संवन्धी स्वर परे होवे तो नुम् आगम नहीं होय। रभधातु राभस्यअर्थमें वर्त्ते है। और डुलभष् धातु प्राप्तिअर्थमें वर्त्ते है। इसमें। डु और षकार इत्संज्ञक हैं। रभ्, लभ् इन दोनो धातुओंको नुम् आगम किया क्योंकि परे ञिप्रत्ययसंवन्धी स्वर विद्यमान है तव रूप सिद्ध हुआ। रम्भयति। लम्भयति। लुङ्में। अररम्भत्। अललम्भत्। 'हि गतौ वृद्धौ च' इस धातुसे ञिप्रत्यय करनेपर वृद्धि कर आय् आदेश करनेसे रूप सिद्ध हुआ। हाययति। लुङ्में। अजीहयत्। इसमें 'पूर्वाद्धिनोतेर्हस्य घो न त्वङि' इसकर परको घकार नहीं हुआ क्योंकि सूत्रमें अङ्प्रत्ययके विषें निषेध किया है। स्मृधातुसे ञिप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। स्मारयति लुङ्में 'स्मृदृत्वरप्रथम्रदस्तॄस्पृशां पूर्वस्याऽदङ्परे णौ' इसकर पूर्वको अकारही करनेसे रूप सिद्ध हुआ। असस्मरत्। 'दॄ विदारणे' धातुकाभी इसी प्रकार लट्में सिद्ध हुआ। दारयति। लुङ्में। अददरत्॥

वेष्टिचेष्टयोः पूर्वस्यात्वं वाङि॥ ३७६॥ अविवेष्टत् अववेष्टत्। अचिचेष्टत् अचचेष्टत्॥ भ्राजृ दीप्तौ॥ भ्राजयति। भ्राजयते। अविभ्रजत् अवभ्राजत्॥

भाषा—वेष्टधातु और चेष्टधातु इन दोनोंके पूर्वको अकार होय अङ्प्रत्यय पर हुए संते। उदाहरण—वेष्ट-चेष्टधातुसे ञिप्रत्यय करनेके अनन्तर लुङ्मे 'णेरङ् द्विश्च' इसकर अङ् और द्वित्व करनेपर रूप स्थित हुआ अविवेष्टि-अ-द्, अचिचेष्टि-अ-द् फिर एक जगह पूर्वको अकार और ञिप्रत्ययका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ। अववेष्टत्। अचचेष्टत्। और एक जगह। अविवेष्टत्। अचिचेष्टत्। 'भ्राजृ दीप्तौ' धातुसे ञिप्रत्यय' करनेके अनन्तर सिद्ध हुआ। भ्राजयति, भ्राजयते। लुङ्में द्वित्व करनेसे पश्चात् 'भ्राजभासभाषदीपजीवमीलपीडां वोपधाया ह्रस्वऽङ्परे णौ' इसकर एक जगह उपधाको ह्रस्व हुआ तहां 'अङि लघौ०' इसकर पूर्वको इकार किया तव रूप सिद्ध हुआ। अविभ्राजत्। और जहां उपधाको ह्रस्व नहीं हुआ तहा सिद्ध हुआ। अवभ्राजत्।

कणरणभणश्रणलुपहेठिह्वेञ्बाणिलोटिलोठिलोपिनां वा ह्रस्वोऽङि॥ ३७७॥ अचीकणत् अचकाणत्। व्यशिश्रणत् व्यशश्राणत्। अलूलुपत्। अलुलोपत्। अजीहिठत् अजिहेठत्। अजूहवत् अजुहावत्। अबीबणत् अबबाणत्। अलुलुटत् अलुलोटत्। अलूलुठत् अलुलोठत्॥

भाषा—कण, रण, भण, श्रण, लुप, हेठि, हेड्, याणि, लोटि, लोठि, लोपि इन्होंकी उपधाको विकल्पकरके, ह्रस्व होय अङ् पर हुए सते । उदाहरण—'कण निमीलने रण शब्दे, भण शब्दे, श्रण दाने, लुप्ल छेदने, हेठ विबाधने हेड् स्पर्धायाम्, याणिर्ध्यन्त' शब्दे, लुट प्रतिघाते, लुठ छेदने, लोपिर्ध्यन्त' विमोहने ' इन धातुओंको लुङ्में द्वित्व करनेके अनन्तर एक जगह उपधाको ह्रस्व किया वहां ' आङि ल्वी०, लघोर्दीर्घ ' इन दोनोंकी अथवा यथास्थान एककी प्राप्तिसे रूप सिद्ध करने चाहिये । जैसे—अचीकणत् आदिक । और जहां उपधाको ह्रस्व नहीं हुआ वहां ' आङि ल्वी०, लघोर्दीर्घ ' इन दोनोंकीभी प्राप्ति नहीं हुई । जैसे—अचकाणत् आदिक ॥

स्वापे सम्प्रसारणमङि ॥ ३७८ ॥ असूषुपत् ॥

भाषा—'ञिष्वप् शये' धातुसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर अङ्प्रत्ययमें सम्प्रसारण होय । उदाहरण—णिप्रत्यययुक्त स्वापिधातुको अङ् प्रत्यय परे होनेसे संप्रसारण कर द्वित्व करनेपर रूप स्थित हुआ असुसुपि-अ-द् फिर ' आङि ल्वी० ' इसकर उपधाको ह्रस्व किया फिर ' लघोर्दीर्घ ' इसकर पूर्वको दीर्घ किया तब रूप सिद्ध हुआ ' किलात्पः० ' इसकर असूषुपत् ॥

श्वयतेर्ण्यन्तस्य सम्प्रसारण वाऽङ्सयोः ॥ ३७९ ॥ अशूशवत् अशिश्वयत् ॥

भाषा—णिप्रत्ययान्त श्विधातुको विकल्पकरके संप्रसारण होय अङ् और सप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—श्विधातुसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर अङ्में सम्प्रसारण करनेपर रूप स्थित हुआ अशुशु-इ-अ-द् फिर ' धातोर्नामिन', औ आव् ' इनकर रूप स्थित हुआ अशुशावि अ-द् फिर णे ' इसकर णिप्रत्ययका लोप किया फिर आङि ल्वी ह्रस्व उपधायाः ' इसकर उपधाको ह्रस्व कर पश्चात् लघोर्दीर्घः ' इसकर सिद्ध हुआ । अशूशवत् । और जहां संप्रसारण नहीं हुआ वहां धातुको द्वित्व करनेपर रूप सिद्ध हुआ अशिश्वायि-अ द् फिर ' णे ' ' आङि ल्वी० ' इनकर सिद्ध हुआ । अशिश्वयत । यहां पूर्व इकारको गुरु होनेसे दीर्घ नहीं हुआ ॥

जिघ्रतेरुपधाया इद्वाङि ॥ ३८० ॥ अजिघ्रिपत् अजिघ्रपत् ॥

भाषा—घ्राधातुको उपधाको विकल्पकरके इकार होय अङ् पर हुए संते । उदाहरण—घ्राधातुसे णिप्रत्यय परे होनेसे पुक् आगम करनेपर अङ्में उपधाके आकारको इकार करनेसे रूप स्थित हुआ अजघ्रिपि-अ-द् फिर ' णे ' इसकर णिका लोप किया और आङि ल्वी० ' इसकर पूर्व आकारको इकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अजिघ्रिपत् और एक जगह ' आङि ल्वी० ' इसकर उपधाको ह्रस्व पूर्वका इकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अजिघ्रपत् ॥

सिध्यतेरैहलौकिकेऽर्थे स्वरस्यात्वं णौ ॥ ३८१ ॥ अन्नं साधयति । असीषधत् । अन्यत्र । तपः सेधयति । असीषिधत् ॥

भाषा—दिवादिगणीय षिधुधातुके स्वरको आकार होय णिप्रत्यय पर हुए संते यदि इस लोकमें होनेवाला कोई अर्थ होवे तो । उदाहरण—दिवादि षिधुधातुके स्वर इकारको आकार किया णिप्रत्यय परे होनेसे तब लट्में रूप सिद्ध हुआ । साधयति । लुङ्मे । असीषधत् । 'अन्नं साधयति' अन्नको सिद्ध कराता है । अन्नका सिद्ध कराना इस लोकमें होनेवाला अर्थ है इस कारण षिधधातुके स्वरको आकार हुआ है और जहा ऐहलौकिक अर्थ नहीं होगा तहां सिद्ध हुआ । सेधयति । लुङ्में । असीषिधत् ॥

प्रजने वीयतेरात्वं वा णौ ॥ ३८२ ॥ वापयति वाययति वा गाः पुरोवातः । गर्भं ग्राहयतीत्यर्थः । चित्तविरागे । दुषेर्दीर्घो वा णौ । चित्तं दूषयति दोषयति वा कामः ॥

भाषा—अदादि वीधातुके स्वरको विकल्पकरके आकार होय प्रजनन नाम गर्भ ग्रहण अर्थमे णिप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—प्रजननअर्थके विषै 'वी गतिव्याप्तिप्रजननकान्त्यसनखादनेषु' धातुसे णिप्रत्यय करनेपर एक जगह आकार करनेसे 'रातो णौ पुक्' इसकर सिद्ध हुआ । वापयति । और जहां आकार नहीं हुआ तहां । वाययति । पुरोवात गौओंको गर्भ ग्रहण कराता है चित्तविराग नाम अप्रीतिता-अर्थमें दुषधातुको विकल्पकरके दीर्घ होय णिप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—चित्तविरागअर्थमें दुषधातुसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर एक जगह दीर्घ करनेपर रूप सिद्ध हुआ । दूषयति । और जहां नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । दोषयति । 'चित्तं दूषयति दोषयति वा कामः' काम चित्तको दूषित करता है । यहां चित्तकी अप्रीतिअर्थ है । लुङ्में । अदूदुषत् ॥

इणो णौ वा गमिरबोधने ॥ ३८३ ॥ गमयति । अजीगमत् । बोधने तु । आययति । आयियत् । घटादयो मितः ॥ घट चेष्टायाम् ॥ मितां ह्रस्वः । घटयति । व्यथयति । अविव्यथत् । प्रथयति । अपप्रथत् ॥ प्रस विस्तारे ॥ प्रसयति ॥ म्रद मर्दने ॥ म्रदयति । अमम्रदत् ॥ स्खद विद्रावणे ॥ स्खदयति । अचिस्खदत् ॥ त्वरयति । अतत्वरत् ॥ ज्वर रोगे ॥ ज्वरयति ॥ नट नृत्तौ ॥

नटयति । अनीनटत् ॥ चक तृप्तौ ॥ चकयति ॥ लगे संगे ॥ लगयति ॥ ज्वल दीप्तौ ॥ प्रज्वलयति ॥ स्मृ आध्याने ॥ स्मरयति । असस्मरत् ॥ दृ भये ॥ दरयति । अददरत् ॥ नॄ नये ॥ नरयति । अनीनरत् ॥ श्रा पाके ॥ श्रपयति । अशिश्रपत् ॥

भाषा—बोधनअर्थसे भिन्नअर्थमें इण्धातुको गम् आदेश होय णिप्रत्यय पर हुए सते । उदाहरण—बोधनअर्थवर्जितमें इण्धातुको णिप्रत्यय पर होनेसे गम् आदेश करनेपर रूप स्थित हुआ गम् इ-अ-ति फिर गम्धातुको अमन्त होनेसे मित् होनेकर वृद्धि नहीं हुई तब रूप सिद्ध हुआ । गमयति लुङ्में । अजीगमत् । बोधनअर्थमें इण्धातुसे णिप्रत्यय करनेपर ' धातोर्नामिन', ऐ आय् ' इनकर सिद्ध हुआ । आययति । लुङ्में । अअ आयि-अ-द् ऐसा स्थित है इसमें ' स्वरादेः परः ' इसकर पर अवयव यिको द्वित्व करनेपर रूप सिद्ध हुआ । आयियत् । घट् आदिक धातु मित्संज्ञक हैं । घट्धातु चेष्टाअर्थमें मित् है । घट्धातुसे णिप्रत्यय करनेपर ' अत उपधायाः ' इसकर वृद्धि करनेपर ' मितां ह्रस्व ' इसकर ह्रस्व किया तब रूप सिद्ध हुआ । घटयति । लुङ्में । अजीघटत् । ' व्यथ दुःखभयचलनयोः ' इस धातुका सिद्ध हुआ । व्यथयति । लुङ्में ' स्मृदृत्वरप्रथम्रदस्तृस्पशां पूर्वस्यात्सन्वद्भावे ' इसकर पूर्वको अकारही करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अवव्यथत् । ' प्रस विस्तारे ' धातुका लुङ्में । प्रसयति । लुङ्में । अपिप्रसत् । ' म्रद मर्दने ' धातुका लुङ्में । म्रदयति । लुङ्में ' स्मृदृत्वरप्रथम्रद० ' इसकर सिद्ध हुआ । अमम्रदत् । ' स्खद विदारणे धातुका लुङ्में । स्खदयति । लुङ्में । अचिस्खदत् । ' त्वर संभ्रमे ' लुङ्में । त्वरयति । लुङ्में । स्मृदृत्वर० इसकर सिद्ध हुआ । अतत्वरत् । 'ज्वर रोगे' लुङ्में । ज्वरयति लुङ्में । अजिज्वरत् । ' नट नृत्तौ ' लुङ्में । नटयति । लुङ्में अनीनटत् । ' चक तृप्तौ ' लुङ्में । चकयति । लुङ्में । अचीचकत् । ' लगे संगे ' लुङ्में । लगयति । लुङ्में । अलीलगत् । ' ज्वल दीप्तौ ' लुङ्में । प्रज्वलयति । लुङ्में प्राजिज्वलत् । ' स्मृ आध्याने ' आध्यान नाम उत्कंठापूर्वक स्मरण करनेका है । लुङ्में । स्मरयति । लुङ्में ' स्मृदृ० ' इसकर सिद्ध हुआ । अससमरत् । ' दृ भये ' लुङ्में । दरयति । लुङ्में स्मृदृ० इसकर सिद्ध हुआ । अददरत् । ' नॄ नये लुङ्में । नरयति । लुङ्में । अनीनरत् । श्रा पाके ' लुङ्में घटादिक होनेसे ह्रस्व करनेपर सिद्ध हुआ । श्रपयति । लुङ्में । अशिश्रपत् । ये धातु जिस अर्थमें मूलमें दिखाये हैं उसी अर्थमें मित हैं न कि अन्य अर्थोंमें ॥

मारणतोषणनिशामनेषु ज्ञा ॥ ३८४ ॥ ज्ञपयति ॥ कम्पने

चलिः ॥ चलयति शाखां वायुः । अन्यत्र । शीलं चालयति ॥ मदी हर्षदैन्ययोः ॥ मदयति । हर्षदैन्ययोः किम् । मादयति ॥ ध्वन शब्दे ॥ मित् । ध्वनयति । अदिध्वनत् ॥

भाषा–मारण और तोषण और निशामन नाम चाक्षुषज्ञान इन अर्थोंके विषैं ज्ञाधातु मित्संज्ञक है । ज्ञाधातुसे ञिप्रत्यय करनेके अनन्तर पुक् आगम करनेपर ' मितां ह्रस्वः ' इसकर ह्रस्व करनेपर रूप सिद्ध हुआ । ज्ञपयति । लुङ्में । अजिज्ञपत् । कम्पनअर्थके विषैं चलिधातु मित्संज्ञक है । उदाहरण–कम्पन अर्थमें चलधातुसे ञिप्रत्यय करनेके अनन्तर वृद्धि और ह्रस्व करनेसे रूप सिद्ध हुआ । चलयति । वायु शाखाको चलाता है यहां कम्पन अर्थ है और कम्पनअर्थसे अन्यत्र मित् न होनेसे सिद्ध हुआ । चालयति । शीलको अन्यथा करता है । मदीधातु हर्ष और दैन्यअर्थमें मित् है । उदाहरण–मदधातुसे ञिप्रत्यय करनेके अनन्तर वृद्धि ह्रस्व करनेसे रूप सिद्ध हुआ । मदयति । और जहां हर्ष दैन्य अर्थ नहीं हुआ तहां मित् न होनेसे सिद्ध हुआ । मादयति । ध्वन धातु शब्दअर्थमेंही मित् संज्ञक है और जगह मित्संज्ञक नही है । ध्वनधातुसे शब्दअर्थमें ञिप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । ध्वनयति । और शब्दअर्थसे भिन्नअर्थमें ञिप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । ध्वानयति ॥

जनीजॄष्क्नसुरंजोऽमन्ताश्च ॥ ३८५ ॥ जनयति । जरयति ॥ क्नसु कौटिल्ये दीप्तौ च ॥ क्नसयति ॥

भाषा–जनी, जॄष्, क्नसु, रञ्ज और अमन्त अर्थात् शम, क्रम, गम आदिक धातु मित्संज्ञक हैं । उदाहरण–'जनी प्रादुर्भावे' धातुसे ञिप्रत्यय करनेके अनन्तर वृद्धि ह्रस्व करनेसे रूप सिद्ध हुआ । जनयति । लुङ्में । अजीजनत् । ' जॄष् वयोहानौ ' धातुसे ञिप्रत्यय करनेके अनन्तर वृद्धि कर पश्चात् उपधाके आकारको ह्रस्व करनेसे रूप सिद्ध हुआ । जरयति । लुङ्में । अजीजरत् । क्नसुधातु कुटिलता तथा दीप्तिअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । क्नसयति । लुङ्में । अचिक्नसत् ॥

रंजेर्णौ मृगरमणे नलोपः ॥ ३८६ ॥ रजयति मृगान् । अरीरजत् । अन्यत्र । वस्त्रं रंजयति । अररञ्जत् । शमयति । दमयति ॥

भाषा–मृगरमण नाम आखेटअर्थमें रञ्जधातुके नकारका लोप होय ञिप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–रञ्जधातुसे ञिप्रत्यय करनेके अनन्तर आखेट अर्थमें नकारका लोप करनेपर रूप स्थित हुआ रज-इ-अ-ति फिर वृद्धि और ह्रस्व करनेसे रूप सिद्ध हुआ । रजयति । लुङ्में । अरीरजत् । मृगरमण ऐसा क्यों कहा, तहां ' रञ्जयति पक्षिणः ' यहां नकारका लोप नहीं हुआ । अन्यअर्थके विषैं नकारका

लोप नहीं होय । जस-' रञ्जयति वस्त्रम् ' । अरञ्जत । यहां नकारका लोप नहीं हुआ । शम् दम् यह दोनों धातु अमन्त हैं इस कारण ह्रस्व होनेसे सिद्ध हुआ । शमयति । दमयति लुङ्में । अशीशमत् । अदीदमत् ॥

ज्वलह्वलह्मलनमामनुपसर्गाद्वा ॥३८७॥ ज्वलयति ज्वालयति ॥ ह्वल ह्मल चलने ॥ ह्वलयति । ह्वालयति । ह्मलयति ह्मालयति । नमयति ॥ नामयति । उपसर्गे तु । प्रज्वलयति ॥

भाषा-ज्वल ह्वल, ह्मल, नम् इन धातुओंको विकल्पकरके मित्‌भाव होय और उपसर्ग पूर्व होनेसे नित्यही मित्‌भाव होय । उदाहरण-ज्वलधातुसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर विकल्पकरके मित् होनेसे एक जगह ह्रस्व हुआ तहां रूप सिद्ध हुआ । ज्वलयति । और एक जगह मित् न होनेसे ह्रस्व नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । ज्वालयति । ह्वल और ह्मल यह दोनों धातु संचलनअर्थमें वर्त्ते हैं । एक जगह ह्वलयति । ह्मलयति । और एक जगह । ह्वालयति । ह्मालयति । नमधातुका एक जगह । नमयति । और एक जगह । नामयति । और उपसर्ग पूर्व होनेसे यह चारों धातु नित्यही मित् हैं । जैसे-प्रज्वलयति ॥

ग्लास्नावनुवमां च ॥ ३८८ ॥ ग्लापयति ग्लपयति स्नापयति स्नपयति । वानयति वनयति । वामयति वमयति ॥

भाषा-ग्ला, स्ना, वनु, वम् इन धातुओंकोभी विकल्पकरके मित्‌भाव होय । उदाहरण-' ग्लै हर्षक्षये ' धातुसे णिप्रत्यय करके अनन्तर पुक् आगम करनेपर विकल्पकरके मित् होनेसे रूप सिद्ध हुआ ग्लापयति, ग्लपयति । ' स्ना शौचे ' धातुका सिद्ध हुआ । स्नापयति स्नपयति । ' वनु याचने ' धातुका । वानयति, वनयति । ' टुवम् उद्गिरणे ' धातुका । वामयति, वमयति ॥

न कम्यमिचमाम् ॥ ३८९॥ कामयति ॥ अम गत्याम् ॥ आमयति । आमिमत् । चामयति । अचीचमत् ॥

भाषा-कम्, अम् और चम् इन धातुओंको अमन्त होनेपरभी मित्‌भाव नहीं होय । उदाहरण-इन तीनों धातुओंकी मित्संज्ञा न होनेसे ह्रस्व नहीं हुआ । लट्में । कामयति । लुङ्में । अचीकमत् । अमधातु । गतिअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । आमयति । लुङ्में ' स्वरादे पर ' इसपर णिप्रत्ययसंयुक्त द्वितीय अवयव मिको द्वित्व करनेसे सिद्ध हुआ । आमिमत् । चमुधातुका सिद्ध हुआ । चामयति । लुङ्में । अचीचमत् ॥

शाम्यविदर्शने मिन्न ॥ ३९० ॥ निशामयति रूपम् ॥

भाषा-दिवादिगणीय शमधातु दर्शनअर्थमें मित् नहीं होता है । उदाहरण-धातुओंके अनेक अर्थ होनेसे शमधातु दर्शनअर्थमें अमन्त होनेसेभी मित् नहीं है तब णिप्रत्यय करनेपर ह्रस्व न होनेसे सिद्ध हुआ । निशामयति ॥

यच्छतिर्भोजनतोऽन्यत्र मिन्न ॥ ३९१ ॥ आयामयति । भोजने तु । यमयति विप्रान् ॥

भाषा-भ्वादि यमधातु भोजनअर्थसे अन्य अर्थोंके विषैं मित् नहीं है किन्तु भोजन अर्थमें मित् है । उदाहरण-यमधातुके भोजनसे अन्य अर्थमें मित् न होनेसे ह्रस्व न करनेपर सिद्ध हुआ । आयामयति । और भोजनअर्थके विषैं मित् होनेसे ह्रस्व करनेपर सिद्ध हुआ । यमयति । अर्थ-ब्राह्मणोंको जिमाता है ॥

स्खदिरवपरिभ्यां मिन्न ॥ ३९२ ॥ अवस्खादयति । परिस्खादयति ॥ ईर्ष्य अक्षान्तौ ॥ ईर्ष्ययति ॥

भाषा-अव और परि उपसर्गसे स्खदधातु मित् नहीं होता है । उदाहरण-' स्खद विद्रावणे ' धातुसे पूर्व अव और परि उपसर्ग युक्त किया तब मित् न होनेसे ह्रस्व न होनेपर सिद्ध हुआ । अवस्खादयति । परिस्खादयति । लुङ्में । अवाचिस्खदत् । पर्यचिस्खदत् । ईर्ष्यधातु अक्षान्ति नाम असहनमें वर्त्ते है ॥

ईर्ष्यतेस्तृतीयो द्विः ॥ ३९३॥ तृतीयो हस एकस्वरो वा ॥ ऐर्ष्यिय-यत् । अङि तु स्वरादेः परः । ऐर्षिष्यत् । द्वितीयपक्षे सान्ते । ईर्ष्यि-षिषति । तृतीय एकस्वरपक्षे सान्ते प्रवर्तते । ण्यन्ते तु तृतीय एक-स्वराभावादित्यर्थः ॥ इति ण्यन्तप्रक्रिया ॥

भाषा-ईर्ष्यतिधातुका तृतीय अवयव द्वित्वको प्राप्त होय । ईर्ष्यतिधातुका तृतीय हस एक स्वर विकल्पकरके होता है । उदाहरण-ईर्ष्यधातुसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर अङ्में द्वित्व करनेसे तृतीय हस णिप्रत्ययसम्बंधी स्वरसे युक्त होकर द्वित्वको प्राप्त हुआ तब रूप स्थित हुआ अअईर्ष्ययियि-अ-द् फिर ' णेः ' इसकर णिका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । ऐर्ष्यियत् । अङ्के विषैं ' स्वरादेः परः ' इसकर स्वरयुक्त षकारको द्वित्व करनेसे सिद्ध हुआ । ऐर्षिष्यत् । द्वितीयपक्ष अर्थात् ईर्ष्यतिधातुका तृतीय हस एकस्वर रहनेके पक्षमे सान्तमें रूप सिद्ध हुआ । ईर्ष्यिषिषति । तात्पर्य यह है कि ईर्ष्यतिधातुका तृतीय हस एकस्वर पक्षमे सान्त-केही विषैं प्रवृत्त होता है न कि ण्यन्तमें क्योंकि ण्यन्तमें एकस्वरका अभाव है ॥ इति ण्यन्तप्रक्रिया समाप्ता ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामोक्तभाषया । चन्द्रिकोत्तरार्द्ध-वृत्तौ भाषया ण्यन्तसाधनम् ॥ १ ॥

लोप नहीं होय । जस-' रञ्जयति वस्त्रम् ' । अररञ्जत । यहां नकारका लोप नहीं हुआ । शम् दम् यह दोनों धातु अमन्त हैं इस कारण ह्रस्व होनेसे सिद्ध हुआ । शमयति । दमयति लुङ्में । अशीशमत् । अदीदमत् ॥

ज्वलह्वलह्मलनमामनुपसर्गाद्वा ॥ २८७ ॥ ज्वलयति ज्वालयति ॥ ह्वल ह्मल चलने ॥ ह्वलयति । ह्वालयति । ह्मलयति ह्मालयति । नयमति ॥ नामयति । उपसर्गे तु । मज्वलयति ॥

भाषा-ज्वल ह्वल, ह्मल, नम् इन धातुओंको विकल्पकरके मित्भाव होय और उपसर्ग पूर्व होनेसे नित्यही मित्भाव होय । उदाहरण-ज्वलधातुसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर विकल्पकरके मित् होनेसे एक जगह ह्रस्व हुआ वहां रूप सिद्ध हुआ । ज्वलयति । और एक जगह मित् न होनेसे ह्रस्व नहीं हुआ वहां सिद्ध हुआ । ज्वालयति । ह्वल और ह्मल यह दोनों धातु संचलनअर्थमें वर्त्ते हैं । एक जगह ह्वलयति । ह्वालयति । और एक जगह । ह्मलयति । ह्मालयति । नमधातुका एक जगह । नमयति । और एक जगह । नामयति । और उपसर्ग पूर्व होनेसे यह चारों धातु नित्यही मित् हैं । जैसे-मज्वलयति ॥

ग्लास्नावनुवमां च ॥ २८८ ॥ ग्लापयति ग्लपयति स्नापयति स्नपयति । वानयति वनयति । वामयति वमयति ॥

भाषा-ग्ला, स्ना, वनु, वम् इन धातुओंकोभी विकल्पकरके मित्भाव होय । उदाहरण-' ग्लै हर्षक्षये ' धातुसे णिप्रत्यय करके अनन्तर पुक् आगम करनेपर विकल्पकरके मित् होनेसे रूप सिद्ध हुआ ग्लापयति, ग्लपयति । ' स्ना शौचे ' धातुका सिद्ध हुआ । स्नापयति, स्नपयति । ' वनु याचने ' धातुका । वानयति, वनयति । ' टुवम् उद्गिरणे ' धातुका । वामयति, वमयति ॥

न कम्यमिचमाम् ॥ २८९॥ कामयति ॥ अम गत्याम् ॥ आमयति । आमिमत् । चामयति । अचीचमत् ॥

भाषा-कम्, अम और चम इन धातुओंको अमन्त होनेपरभी मित्भाव नहीं होय । उदाहरण-इन तीनों धातुओंकी मित्संज्ञा न होनेसे ह्रस्व नहीं हुआ । लट्में । कामयति । लुङ्में । अचीकमत् । अमधातु । गतिअर्थमें वर्त्ते है । लट्में । आमयति । लुङ्में ' स्वरादे पर ' इसकर णिप्रत्ययुक्त द्वितीय अवयव मिको द्वित्व करनेसे सिद्ध हुआ । आमिमत् । चमुधातुका सिद्ध हुआ । चामयति । लुङ्में । अचीचमत् ॥

शाम्यतिर्दर्शने मित्र ॥ २९० ॥ निशामयति रूपम् ॥

इनकर रूप स्थित हुआ तितीर्ष फिर धातुसंज्ञा होनेके अनन्तर लट्में रूप सिद्ध हुआ। तितीर्षति । 'गुह संवरणे' धातुसे सप्रत्यय करनेके अनन्तर द्वित्व करनेपर 'वुः से' इसकर इट् तो हुआ नहीं तब 'हो ढः, आदिजवानां०, षढोः०' क्रि०' इनकर सिद्ध हुआ । जुघुक्षति । कृधातुसे सप्रत्यय करनेके अनन्तर 'वुस्से' इसकर इट् न होनेसे 'नानिटि से' इसकर गुण नहीं हुआ किन्तु सप्रत्यय पर होनेसे दीर्घ होनेपर 'ऋत इर्' इसकर इर् किया पश्चात् द्वित्व कर 'य्वोर्विहसे, क्लिात्पः०' इनकर सिद्ध हुआ । चिकीर्षति । 'चिञ् चयने' धातुसे सप्रत्यय करनेपर अनिट् होनेसे इट् और 'नानिटि से' इसकर गुण न होनेपर दीर्घ कर रूप सिद्ध हुआ । चिचीषति । और जहां 'चिनोतेः सणादौ किर्वा' इसकर कि आदेश हुआ तहां सिद्ध हुआ । चिकीषति । इसी प्रकार 'जि जये' धातुका सिद्ध हुआ । जिजीषति । 'डुपचष् पाके' धातुको अनिट् होनेसे इट् न होनेपर 'यस्से' इसकर पूर्वको इकार कर रूप सिद्ध हुआ। पिपक्षति । 'पा पाने' धातुका सप्रत्यय करनेपर 'यस्से' इसकर सिद्ध हुआ । पिपासति । 'मृ हिंसायाम्' धातुसे सप्रत्यय किया फिर 'वुः से, नानिटि से' इनकर इट् गुण न होनेपर 'पोरुर्' इसकर उर् कर पश्चात् द्वित्व किया फिर 'य्वोर्विहसे, क्लि०' इनकर सिद्ध हुआ । मुमूर्षति ॥

रुदविदमुषग्रहिस्वपिप्रच्छिभ्यः सः कित् ॥३९८॥ रुरुदिषति । विविदिषति । मुमुषिषति । हो ढः । आदिजवानामिति षढोः कः से ॥ ग्रह उपादाने ॥ ग्रहीतुमिच्छति जिघृक्षति । सुषुप्सति ॥

भाषा—रुद, अदादि विद, मुष, ग्रह, स्वप् और प्रच्छ धातु इनसे परे सप्रत्यय कित्संज्ञक होता है । उदाहरण—रुद, विद, मुष इन तीन धातुओंसे सप्रत्यय किया फिर द्वित्व किया और तीनो धातुओंको सेट् होनेसे 'सिसतासीस्यपामिट्' इसकर इट् किया फिर सप्रत्ययकी कित्संज्ञा होनेसे 'उपधाया लघोः' इसकर गुण न होनेपर रूप सिद्ध हुआ । रुरुदिषति । विविदिषति । मुमुषिषति । ग्रहधातुसे सप्रत्यय करनेके अनन्तर 'वुः से' इसकर इट् नहीं हुआ किन्तु सकी कित्संज्ञा होनेसे 'ग्रहां क्विति च' इसकर संप्रसारण किया पश्चात् धातुको द्वित्व कर 'रः' इसकर पूर्वसंबन्धी ऋकारको अ किया तत्पश्चात् 'यः से' इसकर इकार कर रूप स्थित हुआ जिगृहस फिर 'हो ढः, आदिजवानां०, षढोः०, क्लि०' इत्यादिकर रूप स्थित हुआ जिघृक्ष तदनन्तर धातुसंज्ञा होनेपर लट्में रूप सिद्ध हुआ । जिघृक्षति । स्वप्धातुसे सप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको अनिट् होनेसे इट् तौ हुआ नहीं किन्तु सकी कित्संज्ञा होनेसे 'यजां यवराणामिदुद्दतः' इसकर धातुको संप्रसारण कर पश्चात् द्वित्व किया तब धातुसंज्ञा होनेपर रूप सिद्ध हुआ । सुषुप्सति ॥

इच्छायामात्मन' स ॥ २९४ ॥ धातोरात्मन इच्छाया सप्रत्ययो भवति ॥

भाषा—आत्माकी इच्छाके विर्षे धातुसे सप्रत्यय होय । भाव यह है कि इच्छा करनेवाला जय कि इच्छितवस्तुको आपही सम्बन्धी होकर इच्छा करे तौ धातुसे सप्रत्यय होता है । अपनेसे भिन्न होकर शिष्योंदिकोंके पठनादिकी इच्छा करे तौ सप्रत्यय नहीं होता है ॥

द्विश्च ॥ २९५ ॥आत्मन भवितुमिच्छति बुभूषाञ्चकार । अबुभूषीत् ॥

भाषा—सप्रत्ययान्त धातुको द्वित्व होय । उदाहरण–' आत्मनो भवितुमिच्छति ' इसमें इच्छा करनेवाला अपनेही होनेकी इच्छा करता है इस कारण भूधातुसे इच्छा अर्थमें सप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको द्वित्व करनेसे रूप स्थित हुआ बुभू-स फिर ' सिसवासीस्यपामिट् ' इसकर इट् होना चाहिये था सो नहीं हुआ ॥

युस्से ॥ २९६ ॥ उवर्णान्तादवर्णान्ताद्ग्रहिगुहिभ्या च परस्य सस्य नेट् ॥

भाषा—उवर्णान्त धातु तथा ऋवर्णान्त धातु और ग्रह और गुहधातु इनसे परे सप्रत्ययको इट् नहीं होय । उदाहरण–बुभू-स । इसमें ऊकारान्त भूधातुसे परे सप्रत्यय है इस कारण सप्रत्ययको इट् नहीं हुआ । ' किलास्य'० ' इसकर पकार किया फिर ' स धातु' ' इसकर सप्रत्ययान्त । बुभूषकी धातुसंज्ञा होनेपर लट्में रूप सिद्ध हुआ । बुभूषति । लिट्में । बुभूषेत । लोट्में । बुभूषतु । लङ्में । अबुभूषत् । लिट्में अनेक स्वर होनेसे आम् प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । बुभूषाञ्चकार । लिङ्में ' यत' इसकर अकारका लोप करनपर रूप सिद्ध हुआ । बुभूष्यात् । लुङ्में । अबुभूषीत् । द्विवचनमें । अबुभूषिषाम् ॥

नाऽनिटि से ॥ २९७ ॥ इड्वर्जिते सप्रत्यये गुणो न ॥ से दीर्घ' । ऋत इर् । तितीर्षति । जुघुक्षति । चिकीर्षति । चिचीषति चिकीषति । यरसे । पिपक्षति । पिपासति । मुमूर्षति ॥

भाषा—इड्वर्जित सप्रत्यय परे हुए संते धातुको गुण नहीं होय सप्रत्यय पर हुए सते स्वरान्तधातुको दीर्घ होय । उदाहरण–आत्मेच्छाके विर्षे तधातुके सप्रत्यय करनेके अनन्तर ' युस्से ' इसकर इट् तो हुआ नहीं फिर इट् न होनेसे ' नानिटि से ' इसकर गुणभी नहीं हुआ तब ' ऋत इर् ' इसकर इर् करनेके अनन्तर द्वित्व करनेपर रूप स्थित हुआ तितिर् स फिर ' ग्वोर्विसे, तिस्यत'० '

१ यहां पष्ठयर्थमें सप्तमी है ॥

इनकर रूप स्थित हुआ तितीर्ष फिर धातुसंज्ञा होनेके अनन्तर लट्में रूप सिद्ध हुआ। तितीर्षति । 'गुहू संवरणे' धातुसे सप्रत्यय करनेके अनन्तर द्वित्व करनेपर 'वुः से' इसकर इट् तौ हुआ नही तब 'हो ढः, आदिजबानां०, षढोः० क्वि०' इनकर सिद्ध हुआ । जुघुक्षति । कृधातुसे सप्रत्यय करनेके अनन्तर 'वुस्से' इसकर इट् न होनेसे 'नानिटि से' इसकर गुण नहीं हुआ किन्तु सप्रत्यय पर होनेसे दीर्घ होनेपर 'ऋत इर्' इसकर इर् किया पश्चात् द्वित्व कर 'य्वोर्विहसे, क्लिातषः०' इनकर सिद्ध हुआ । चिकीर्षति । 'चिञ् चयने' धातुसे सप्रत्यय करनेपर अनिट् होनेसे इट् और 'नानिटि से' इसकर गुण न होनेपर दीर्घ कर रूप सिद्ध हुआ । चिचीषति । और जहां 'चिनोतेः सणादौ किर्वा' इसकर कि आदेश हुआ तहां सिद्ध हुआ । चिकीषति । इसी प्रकार 'जि जये' धातुका सिद्ध हुआ । जिजीषति । 'डुपचष् पाके' धातुको अनिट् होनेसे इट् न होनेपर 'यस्से' इसकर पूर्वको इकार कर रूप सिद्ध हुआ। पिपक्षति । 'पा पाने' धातुका सप्रत्यय करनेपर 'यस्से' इसकर सिद्ध हुआ । पिपासति । 'मृ हिंसायाम्' धातुसे सप्रत्यय किया फिर 'वुः से, नानिटि से' इनकर इट् गुण न होनेपर 'पोरुर्' इसकर उर् कर पश्चात् द्वित्व किया फिर 'य्वोर्विहसे, क्वि०' इनकर सिद्ध हुआ । मुमूर्षति ॥

रुदविदमुषग्रहिस्वपिप्रच्छिभ्यः सः कित् ॥३९८॥ रुरुदिषति । विविदिषति । मुमुषिषति । हो ढः । आदिजबानामिति षढोः कः से ॥ ग्रह उपादाने ॥ ग्रहीतुमिच्छति जिघृक्षति । सुषुप्सति ॥

भाषा—रुद, अदादि विद, मुष, ग्रह, स्वप् और प्रच्छ धातु इनसे परे सप्रत्यय कित्संज्ञक होता है । उदाहरण—रुद, विद, मुष इन तीन धातुओसे सप्रत्यय किया फिर द्वित्व किया और तीनो धातुओंको सेट् होनेसे 'सिसतासीस्यपामिट्' इसकर इट् किया फिर सप्रत्ययकी कित्संज्ञा होनेसे 'उपधाया लघोः' इसकर गुण न होनेपर रूप सिद्ध हुआ । रुरुदिषति । विविदिषति । मुमुषिषति । ग्रहधातुसे सप्रत्यय करनेके अनन्तर 'वुः से' इसकर इट् नहीं हुआ किन्तु सकी कित्संज्ञा होनेसे 'ग्रहां क्ङिति च' इसकर संप्रसारण किया पश्चात् धातुको द्वित्व कर 'रः' इसकर पूर्वसंबन्धी ऋकारको अ किया तत्पश्चात् 'यः से' इसकर इकार कर रूप स्थित हुआ जिगृहस फिर 'हो ढः, आदिजबानां०, षढोः०, क्लि०' इत्यादिकर रूप स्थित हुआ जिघृक्ष तदनन्तर धातुसंज्ञा होनेपर लट्में रूप सिद्ध हुआ । जिघृक्षति । स्वप्धातुसे सप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको अनिट् होनेसे इट् तौ हुआ नहीं किन्तु सकी कित्संज्ञा होनेसे 'यजां यवराणामिदुदृतः' इसकर धातुको संप्रसारण कर पश्चात् द्वित्व किया तब धातुसंज्ञा होनेपर रूप सिद्ध हुआ । ॥

कॄगृदृधृप्रच्छिभ्य सस्येट् ॥ ३९९ ॥ चिकरिषति । जिगरिषति । जिगलिषति । दिदरिषते । दिधरिषते । पिपृच्छिषति । अत्तुमिच्छति जिघत्सति ॥

भाषा—'कॄ हिंसायाम्, गॄ निगरणे, दृङ् आदरे, धृङ् अनवस्थाने, प्रच्छ ज्ञीप्सायाम्' इन धातुओंसे परे सप्रत्ययको इट् आगम होय । उदाहरण—कॄ गॄ धातुसे सम्प्रत्यय करनेके अनन्तर पश्चात् सप्रत्ययको इट् और द्वित्व करनेपर रूप सिद्ध हुआ । चिकरिषति । जिगरिषति । एक जगह ' गॄ लो वा ' इसकर सिद्ध हुआ । जिगलिषति । दृङ् और धृङ् धातुओंसे सप्रत्यय कर पश्चात् सप्रत्ययको इट् और द्वित्व किया तदनन्तर ' पः से ' इसकर पूर्वको इकार और परको गुण करनेसे रूप स्थित हुआ दिदरिष, दिधरिष पश्चात् धातुसंज्ञा होनेपर दृङ् धृङ् धातुको ङित् होनेसे आत्मनेपद युक्त कर रूप सिद्ध हुआ । दिदरिषते । दिधरिषते । प्रच्छधातुसे सप्रत्यय किया पश्चात् इट् किया तदनन्तर प्रच्छधातुसे सको कित्संज्ञा होनेसे सम्प्रसारण किया फिर द्वित्व कर ' पः से ' इसकर सिद्ध हुआ । पिपृच्छिषति । अदधातुसे सप्रत्यय करनेके अनन्तर ' सिसयोरदेर्घस्लृ० ' इसकर अदको घस् आदेश किया पश्चात् द्वित्व कर ' यस्से ' इसकर रूप स्थित हुआ जिघस्-स । पश्चात् ' सस्तोऽस्यपि ' इसकर सकारको तकार कर रूप सिद्ध हुआ । जिघत्सति । यह धातु अनिट् है इस कारण इट् नहीं हुआ । जो धातु अनिट् है उसके लिये ' सिसखासीस्यपामिट् ' इसकर सको इट् नहीं होता है ॥

हनिङोः से दीर्घ ॥ ४०० ॥ जिघांसति ॥

भाषा—हनधातु और इङ्धातुको सप्रत्यय पर हुए संते दीर्घ होय । उदाहरण—हनधातुसे सप्रत्यय करनेके अनन्तर द्वित्व करनेपर ' पूर्वाद्धन्तेर्हस्य घ ' इसकर रूप स्थित हुआ जिघन्-स् फिर हनधातुके स्वर अकारको दीर्घ कर ' नश्चापदान्ते इसकर सिद्ध हुआ । जिघांसति ॥

इङस्से गम् ॥ ४०१ ॥

भाषा—इङ्धातुको सप्रत्यय पर हुए संते गम् आदेश होय । उदाहरण—इङ् धातुको सप्रत्यय करनेके अनन्तर गम् आदेश करनेपर द्वित्व कर ' यस्से ' इसकर रूप स्थित हुआ अधिजिगम्-स फिर ' हनिङोस्से दीर्घ , नश्चापदान्ते स्से ' इनकर रूप स्थित हुआ अधिजिगांस पश्चात् धातुसंज्ञा होनेपर ङदमें आत्मनेपद किया ॥

सान्तात्पूर्ववदात् ॥ ४०२ ॥ अधिजिगांसते ॥

भाषा—सप्रत्ययान्तसेभी पूर्ववत् आत्मनेपद होता है । भाव यह है जो कि धातु आत्मनेपदी है वह सान्त होकरभी आत्मनेपदी होता है । उदाहरण—इङ्धातु आत्मनेपदी है इस कारण सप्रत्ययान्त इङ्धातुसे आत्मनेपद करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अधिजिगासते ॥

गमेः सस्येड् नाति ॥ ४०३ ॥ जिगमिषति ॥

भाषा—गमधातुसे सप्रत्ययको इट् आगम होय और आत्मनेपदके विषै गमधातुसे सप्रत्ययको इट् नहीं होय । उदाहरण—गमधातुसे सप्रत्यय करनेके अनन्तर इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । जिगमिषति ॥

इस्से ॥ ४०४ ॥ अपिद्दाधारभलभशकपतपदमिमीमाङ्मेङा स्वरस्येस् अनिटि से परे पूर्वस्य च लोपः ॥ दित्सति । धित्सति ॥ रभ राभस्ये ॥ स्कोराद्योश्च । खसे चपा झसानाम् । रिप्सते । लिप्सते । शिक्षति । पित्सते ॥

भाषा—नहीं है पकार इत् जिसका ऐसा दारूप धातु, धारूप धातु, रभ, डुलभष्, शक, रूपधातु, पत्ऌ, पद, डुमिञ्, मीरूप, मारूप धातु और मङ्धातु इन्होंके स्वरको इस् होय अनिट् सप्रत्यय पर हुए संते और पूर्वका लोप होय इन धातुओंमें जो आत्मनेपदी होय वे सान्त होकरभी आत्मनेपदी होय और जो परस्मैपदी तथा उभयपदी हो वे सान्त होकरभी परस्मैपदी तथा उभयपदी होय । उदाहरण—डुदाञ्धातुसे सप्रत्यय करनेपर स्वरको इस् पूर्वलोप करनेसे ' सस्तोऽनपि ' इसकर सिद्ध हुआ । दित्सति । उभयपदी होनेसे आत्मनेपदमें सिद्ध हुआ । दित्सते । इसी प्रकार अन्य अपित् दारूप धातु सिद्ध करने योग्य हैं । इसी प्रकार धाञ् धातुका सिद्ध हुआ । धित्सति । धित्सते । इसी प्रकार अन्य धारूप धातु सिद्ध करने योग्य हैं । रभधातुके स्वरको इस् पूर्वलोप करनेपर रूप स्थित हुआ रिइस् स फिर ' स्कोराद्योश्च, खसे चपा झसानाम् ' इनकर सिद्ध हुआ । रिप्सते । इसी प्रकार डुलभष्धातुका सिद्ध हुआ । लिप्सते । यह दोनों धातु आत्मनेपदी हैं । शक्ऌधातुके स्वरको इस् पूर्वलोप करनेपर ' स्कोराद्योश्च, कि० ' इनकर सिद्ध हुआ । शिक्षति । इसी प्रकार अन्य शकरूप धातु सिद्ध करने योग्य हैं परन्तु आत्मनेपदी परस्मैपदीका ध्यान रखना क्योंकि यहाभी उसी प्रकार पदव्यवस्था है । पदधातुका सिद्ध हुआ । पित्सते ॥

पततनदरिद्राभ्यः सस्येड्वा ॥ ४०५ ॥ पिपतिषति पित्सति ॥ डुमिञ् प्रक्षेपणे ॥ मित्सति मित्सते ॥ मीञ् हिंसायाम् ॥ मित्सति

मित्सते ॥ मा माने ॥ मित्सति॥ मेङ् प्रणिदाने॥ माङ्मेङो । मित्सते॥

भाषा–पतल, सन और दरिद्राधातु इनसे परे सप्रत्ययको विकल्पकरके इट् होय । उदाहरण–पतलधातुसे सप्रत्ययको एक जगह इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । पिपतिषति । और जहां इट् नहीं हुआ तहां 'इस्से' इसकर सिद्ध हुआ । पित्सति । 'डुमिञ् प्रक्षेपणे' धातुको 'इस्से' इसकर सिद्ध हुआ । मित्सति । मित्सते । 'मीञ् हिंसायाम्' धातुका सिद्ध हुआ । मित्सति । मित्सते । इसी प्रकार अन्य मी॰ रूपधातुके रूप जानने । मा माने' धातुका सिद्ध हुआ । मित्सति । इसी प्रकार अन्य मारूप धातुके रूप जानने । 'मेङ् प्रणिदाने' धातुका सिद्ध हुआ । मित्सते ॥

आप्नोतेरात ईस्से पूर्वलोपश्च ॥४०६॥ ईप्सति ॥

भाषा–आप्लृधातुके आकारको ईकार होय सप्रत्यय पर हुए संते और पूर्वका लोप होय । उदाहरण–सप्रत्यय परे होनेसे आप्लृधातुके आकारको ईकार और पूर्वलोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । ईप्सति ॥

अशेरनायो वा ॥ ४०७ ॥ अशेरिच्छायां वानायप्रत्ययः ॥ सस्यापवादः । अशनायति । अशिशिषति । तितनिषति । तनेरनिटि से वा दीर्घः । तितांसति । तितंसति । दिदरिद्रिषति दिदरिद्रासति ॥

भाषा–अशधातुसे इच्छाअर्थमें विकल्पकरके अनाय प्रत्यय होय और सप्रत्ययका अपवाद होय । उदाहरण–अशधातुसे इच्छाअर्थमें अनाय प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अशनायति । और जहां अनाय प्रत्यय नहीं हुआ तहां सप्रत्यय करनेपर इट् कर पश्चात् अनेकस्वर होनेसे 'स्वरादे' पर इसकर इट्युक्त शिको द्वित्व किया तब रूप सिद्ध हुआ । अशिशिषति । तनधातुसे सप्रत्ययको जहां इट् हुआ तहां सिद्ध हुआ । तितनिषति । तन्धातुके विकल्पकरके दीर्घ होय अनिट् सप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–तनधातुसे सप्रत्ययको जहां इट् नहीं हुआ तहां विकल्पकरके दीर्घ किया क्योंकि अनिट् सप्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । तितांसति । और जहां दीर्घ नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ तितंसति । और जहां दरिद्राधातुसे सप्रत्ययको इट् नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । दिदरिद्रिषति । और जहां इट् नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । दिदरिद्रासति ॥

दम्भिज्ञपिभ्यां सस्य वेट् ॥ ४०८ ॥ दम्भु दम्भे ॥ दिदम्भिषति । जिज्ञपयिषति । ज्ञपेस्स्वरस्यानिटि से ईत्पूर्वलोपश्च । ज्ञीप्सति ॥

भाषा–दम्भुधातु और ज्ञपिधातु इनसे परे सप्रत्ययको विकल्पकरके इट् आगम होय । उदाहरण–'दम्भु दम्भे' धातुसे सप्रत्ययको इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ ।

दिदम्भिषति । और ज्ञपधातुसे स्वार्थमे णिकर पश्चात् सप्रत्ययको इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । जिज्ञपयिषति । ज्ञपधातुके स्वरको ईकार होय अनिट् सप्रत्यय पर हुए संते और पूर्वका लोप होय । उदाहरण—ज्ञपिधातुसे जहां सप्रत्ययको इट्का आगम नहीं हुआ तहां 'णेः' इसकर णिका लोप किया और ज्ञपधातुके स्वर अकारको ईकार और पूर्वका लोप किया तब रूप सिद्ध हुआ । ज्ञीप्सति ॥

दम्भेरिच्च ॥ ४०९ ॥ धिप्सति धीप्सति ॥

भाषा—दम्भधातुके स्वरको इकार तथा चकारसे ईकार होय और पूर्वका लोप हो । उदाहरण—दम्भधातुसे जहां सप्रत्ययको इट् नहीं हुआ तहां 'अनिटि से उपधाया नस्य लोपः' इसकर नकारका लोप किया स्वरको इकार तथा ईकार किया और पूर्वका लोप किया फिर 'आदिजबाना झभान्तस्य०' इसकर दकारको धकार किया फिर 'खसे च०' इसकर भकारको पकार किया तब रूप सिद्ध हुआ । धिप्सति, धीप्सति ॥

इवन्तऋधभ्रस्जश्रिस्वृयूर्णुभृसनिभ्यः सस्येड्वा ॥ ४१० ॥ दिदेविषति ॥

भाषा—इव् है अन्तमे जिनके ऐसे धातुओंसे और ऋध, भ्रस्ज, श्रि, स्वृ, यु, ऊर्णु, भृ, सन् इन धातुओंसे सप्रत्ययको विकल्प करके इट् आगम होय । उदाहरण—दिव्धातु इवन्त है इस कारण दिव्धातुसे सप्रत्ययको जहा इट् किया तहा रूप सिद्ध हुआ । दिदेविषति और जहां इट् नहीं हुआ तहां रूप स्थित हुआ दिदिव्-स इसमें 'नानिटि से' इसकर गुण तो हुआ नहीं ॥

वस्यानिटि से ऊः ॥ ४११ ॥ दिद्यूषति । अर्दिधिषति ॥

भाषा—वकारको ऊकार होय अनिट् सप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—दिदिव्-स । इसमें वकारको ऊकार किया क्योंकि अनिट् सप्रत्यय परे विद्यमान है तब 'इयं स्वरे, से दीर्घः' इनका सिद्ध हुआ । दिद्यूषति । ऋधधातुसे जहां सप्रत्ययको इट् हुआ तहां गुण करनेपर रूप स्थित हुआ आर्धि-स फिर धातुको द्वित्व किया तो अनेकस्वर होनेसे 'स्वरादेः परः' इसकर इट्युक्त धिको द्वित्व करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अर्दिधिषति । और जहां इट् नहीं हुआ तहां ॥

ऋधेरनिटि से स्वरस्य इर्द्वित्वलोपश्च ॥ ४१२ ॥ ईर्त्संति । बिभ्रज्जिषति बिभर्जिषति । बिभ्रक्षति बिभर्क्षति । शिश्रयिषति शिश्रीषति । सिस्वरिषति सुस्वूर्षति । यियविषति युयूषति । ऊर्णुनुविषति ऊर्णुनविषति ऊर्णुनूषति । बिभरिषति बुभूर्षति ॥

भाषा–ऋधधातुके स्वरको इर् होय और द्वित्वका लोप होय अनिट् सप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–ऋधधातुके स्वर ऋकारको इर् किया और पूर्वका लोप किया क्योंकि अनिट् सप्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप स्थित हुआ ईर्ध्-स फिर 'ग्वोर्विहसे, खसे चपा झ०' इनकर सिद्ध हुआ । ईर्त्सति । भ्रस्जधातुसे जहां सप्रत्ययको इट् हुआ तहां 'भ्रस्जो रसो रमनपि वा' इसकर एक जगह भर् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । बिभर्जिषति । और जहां भ॰ नहीं हुआ तहां 'स्तोः श्चुभिः॰' इसकर सकारको शकार और 'झबे जबाः' इसकर झकारको जकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । बिभ्रज्जिषति । और जहां भ्रस्जधातुसे सप्रत्ययको इट् नहीं हुआ तहां 'स्कोः॰ छशप॰, षढो॰, कि॰' इनकर सिद्ध हुआ । बिभ्रक्षति । और जहां 'भ्रस्जो रसो॰' इसकर भर् हुआ तहां 'छशप॰, षढो॰, कि॰' इनकर सिद्ध हुआ । बिभर्क्षति । श्रिञ्धातुसे जहां सप्रत्ययको इट् हुआ तहां गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । शिश्रयिषति । और जहां इट् नहीं हुआ तहां गुणभी नहीं हुआ किन्तु 'से दीर्घ' इसकर दीर्घ करनेपर सिद्ध हुआ । शिश्रीषति । और स्वृधातुसे इट् करनेपर सिद्ध हुआ । सिस्वरिषति । और जहां इट् नहीं हुआ तहां 'से दीर्घः' इसकर दीर्घ कर पश्चात् 'पोरुर्' इसकर उर् किया फिर द्वित्व कर 'ग्वोर्विहसे' इसकर सिद्ध हुआ । सुस्वूर्षति । युधातुका इट्पक्षमें सिद्ध हुआ । यियविषति । अनिट्पक्षमें । युयूषति । ऊर्णुधातुसे सप्रत्यय करनेके अनन्तर 'स्वरादेः परः' इसकर द्वित्व नुको कर पश्चात् इट् करनेपर 'ऊर्णोतेरिडाशिप्रत्ययो वा क्ङित्' इसकर एक जगह गुण और एक जगह उब् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । ऊर्णुनविषति । और इट् नहीं हुआ तहां 'से दीर्घ' इसकर दीर्घ करनेपर रूप सिद्ध हुआ । ऊर्णुनविषति ऊर्णुनुविषति । और इट् नहीं हुआ तहां 'से दीर्घः' इसकर दीर्घ करनेपर रूप सिद्ध हुआ । ऊर्णुनूषति । 'मृ मर्षनमरणयोः' धातुसे जहां सप्रत्ययको इट् हुआ तहां सिद्ध हुआ । मिमरिषति । और जहां इट् नहीं हुआ तहां 'पोरुर्' इसकर उर् कर पश्चात् द्वित्व किया फिर 'ग्वोर्विहसे' इसकर सिद्ध हुआ । मुमूर्षति ॥

स्तौतिण्यन्तयोरेव पे पूर्वात् सस्य ष ॥ ४१३ ॥ तुष्टूषति । साधयितुमिच्छति सिषाधयिषति सिषेधयिषति । सुष्वापयिषति । स्तौतिण्यन्तयोरिति किम् सिसनिषति । पे इति किम् । सिषासति । निष्ठासति ॥

भाषा–स्तुञ् और णिप्रत्ययान्त धातुकेही पूर्वरूपसे परे सकारको षकार होय षरूपको प्राप्त हुआ सप्रत्यय पर हुए संते । और अन्यके सकारको षकार नहीं होय । उदाहरण–ष्टुञ्धातुसे सप्रत्यय करनेपर 'आदेः ष्णः सः' इसकर रूप

हुआ स्तुस फिर द्वित्व किया फिर 'से दीर्घः' इसकर पूर्वको दीर्घ किया पश्चात् 'कि०' इसकर सप्रत्ययके सकारको सकार किया तत्पश्चात् पूर्वनिमित्त इलमत्याहारसंबन्धी उकार ष्टुञ्धातुके सकारको षकार किया क्योंकि षरूप सप्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । तुष्टूषति । और साधधातुसे ञिप्रत्यय करनेके अनन्तर सप्रत्यय किया पश्चात् द्वित्व इट् करनेपर रूप स्थित हुआ सिसाधयिषति फिर ञिप्रत्ययान्त होनेसे पूर्वरूपसे सकारके स्थानमें षकार किया क्योंकि षरूप सप्रत्यय विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । सिषाधयिषति । इसी प्रकार षिधधातुसे ञिप्रत्यय करनेके अनन्तर सप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । सिषेधयिषति । स्तौति ञ्यन्तकेही पूर्वरूप निमित्तसे सकारको षकार होय षरूप सप्रत्यय पर हुए संते ऐसा क्यों कहा तहा ऐसा जानना जैसा कि सनधातुसे जहां सप्रत्ययको इट् करनेपर षरूप सप्रत्यय तौ परे विद्यमान है परन्तु ष्टुञ् ञ्यन्तमें सनधातु नहीं इस कारण पूर्वरूपसे सको ष न होनेसे सिद्ध हुआ । सिसानिषति । और जहां । सन्धातुसे सप्रत्ययको इट् नहीं हुआ तहां 'जनसनखनामात्वमानिटि से' इसकर टिको आकार करनेपर रूप स्थित हुआ सिसासति इसमे पूर्वरूप निमित्तसे सकारको षकार किया क्योंकि परे सप्रत्ययका षरूप नही है तब रूप सिद्ध हुआ । सिषासति । इसी प्रकार स्थाधातुका सिद्ध हुआ । तिष्ठासति ॥

अनिटि से उपधाया नस्य लोपः ॥ ४१४ ॥ तृहू हिंसायाम् ॥ तितृंहिषति तितृक्षति ॥

भाषा—अनिट् सप्रत्यय पर हुए संते उपधाभूत नकारका लोप होय । उदाहरण—'तृंहू हिसायाम्' धातुसे सप्रत्ययको जहां 'ऊदितो वा' इसकर इट् आगम हुआ तहां सिद्ध हुआ । तितृंहिषति । और जहां इट् आगम नहीं हुआ तहां उपधाभूत नकारका लोप किया क्योंकि अनिट् सप्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप स्थित हुआ तितृह्-स फिर 'हो ढः, षढोः कस्से०, कि' इनकर सिद्ध हुआ । तितृक्षति ॥

इणः से गमबोधने ॥ ४१५ ॥ एतुमिच्छति जिगमिषति । बोधने तु । प्रतीषिषति । इण्वदिकः । अधिजिगमिषति । बोधने तु । अधीषिषति ॥

भाषा—इण्धातुको गम् आदेश होय सप्रत्यय पर हुए संते और बोधनअर्थके विषै इण्धातुको गम् आदेश नहीं होय । उदाहरण—इण्धातुको सप्रत्यय पर होनेसे गम् आदेश करनेपर 'गमेः सस्येट्' इसकर सप्रत्ययको इट् आगम करनेसे रूप सिद्ध हुआ । जिगमिषति । और बोधनअर्थमे गम् आदेश नहीं हुआ तहां इण्

धातुसे सम्प्रत्यय कर पश्चात् सम्प्रत्ययान्तको ' स्वरादे पर० ' इसकर सके द्वित्व करनेपर स्थित हुआ इस-स फिर ' यः से ' इसकर पूर्व सकारसंबन्धी अकारको इकार करनेपर क्विलात्य०' इसकर सकारको षकार किया फिर प्रतिउपसर्ग पूर्व युक्त करनेसे सिद्ध हुआ । प्रतीपिषति । इण्धातुके समानही इक्धातु होता है । जैसे गम् आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । अधिजिगामिषति । और बोधनअर्थमें अधीपिपति ॥

इवर्णोवर्णोपधाद्धसादेरसान्ताद्धान्ताच्च क्त्वासौ सेटौ वा क्तितौ ॥ ४१६ ॥ द्युतिपते दिद्योतिपते । रुरुचिपते रुरोचिपते । लि-लिखिपति लिलेखिपति । सिस्निहिपति सिस्नेहिपति सिस्निक्षति ॥ राधो हिंसायाम् ॥ इस् से द्वित्वलोपश्च । रित्सति । अन्यत्र । आरिरात्सति गुरुम् ॥

भाषा—इवर्ण तथा उवर्ण है उपधामें जिसके ऐसा जो हसादि और रसम्प्रत्याहारान्त तथा हकारान्त धातु उससे परे इट्युक्त क्त्वाप्रत्यय और इट्युक्त सम्प्रत्यय दोनों विकल्पकरके कित्संज्ञक होय । उदाहरण—द्युतधातुसे सम्प्रत्यय करनेपर धातुको सेट् होनेसे सम्प्रत्ययको इट् किया पश्चात् द्वित्व करनेपर ' सः द्युते' पूर्वस्य संप्रसारणम् ' इसकरके रूप स्थित हुआ दिद्युत्-इ-स फिर द्युतधातुसे पर इट्युक्त सम्प्रत्यय एक जगह कित्संज्ञक हुआ क्योंकि द्युतधातुके उपधामें उकार है तथा आदिमें हसमप्रत्याहारसम्बन्धी दकार और अन्तमें रसम्प्रत्याहारसंबन्धी तकार है तब सम्प्रत्ययको कित् होनेपर गुण न होनेसे रूप सिद्ध हुआ । दिद्युतिषते । और जहां सम्प्रत्यय कित्संज्ञक नहीं हुआ तहां गुण करनेसे सिद्ध हुआ । दिद्योतिषते । इसी प्रकार रुच लिखधातुको सम्प्रत्ययमें एक जगह गुण और एक जगह नहीं गुण करना चाहिये । स्निहधातुसे सम्प्रत्यय करनेपर एक जगह ' स्वरतिसूतिसूयति धूञूदितो वा० ' इसकर इट् करनेपर एक जगह गुण और एक जगह नहीं गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । सिस्निहिषति, सिस्नेहिषति । और जहां इट् नहीं हुआ वहां नानिटि से इसकर गुण भी हुआ नहीं किन्तु ' हो ढः, षढोः०, कि० ' इनकर सिद्ध हुआ । सिस्निक्षति । हिंसाअर्थमें राधधातुके स्वरको इस् होय और द्वित्वका लोप होय सम्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—हिंसाअर्थवाचक राधधातुसे सम्प्रत्यय करनेपर राधके स्वरको इस् और पूर्वलोप करनेपर रूप स्थित हुआ रिस्-ध्-स फिर धातुको अनिट् होनेसे इट् भी हुआ नहीं किन्तु ' खसे०' इसकर सकारका लोप किया और ' खसे च० ' इसकर धकारको तकार किया तब रूप सिद्ध हुआ ।

रित्सति । और हिंसाअर्थसे अन्यअर्थके विषैं राधधातुके स्वरको इस् और पूर्वका लोप सप्रत्ययके विषैं न होनेसे सिद्ध हुआ । आरिरात्सति । यहां आराधन अर्थ है ॥

मुचोऽकर्मकस्य गुणो वा से द्वित्वलोपश्च ॥ ६१७ ॥ मोक्षते मुमुक्षते वा वत्सः स्वयमेव । अकर्मकेति किम् । मुमुक्षति वत्सं कृष्णः । विवर्तिषते । विवृत्सति । निनर्तिषति । निनृत्सति । वृङ्-वृञ्ॠदन्तात्सस्येड्वा । तितरिषति तितरीषति तितीर्षति । विवरिषते विवरीषते वुवूर्षते । विवरिषति विवरीषति वुवूर्षति ॥ ध्वृ कौटिल्ये ॥ दुध्वूर्षति ॥

भाषा-अकर्मक मुचधातुको विकल्पकरके गुण होय सप्रत्यय पर हुए संते और द्वित्वका लोप होय । अकर्मक मुचधातुसे सप्रत्यय करनेपर एक जगह मुचधातुको गुण और द्वित्वलोप किया तब रूप स्थित हुआ मोच्-स फिर धातुको अनिट् होनेसे इट् तौ हुआ नहीं किन्तु 'चोः कुः, कि०' इनकर सिद्ध हुआ । मोक्षते । और जहां गुण नहीं हुआ तहां द्वित्वका लोप न होनेसे सिद्ध हुआ । मुमुक्षते । यहां अकर्मकधातुसे सप्रत्यय हुआ है क्योंकि वत्स स्वयं मुक्त होना चाहता है । और अकर्मक ऐसा क्यों कहा तहा कहते हैं कि सकर्मक मुचधातुको गुण और द्वित्वलोप नहीं होय । और वृतुधातुसे सप्रत्यय करनेपर 'वृतादिभ्यः स्यसयोर्वा पस्मैपदेऽनिट्त्वं च' इसकर जहा परस्मैपद किया तहां अनिट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । विवृत्सति । और जहा परस्मैपद नहीं हुआ तहां इट् करनेपर गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । विवर्तिषते । और नृतीधातुसे सप्रत्यय करनेपर 'नृततृदकृदचृतकृञ्योऽसेस्सादेरिड्वा' इसकर एक जगह इट् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । निनर्त्तिषति । और जहा इट् नहीं हुआ तहां 'नानिटि से' इसकर गुणभी न होनेसे सिद्ध हुआ । निनृत्सति । वृङ्, वृञ् और ॠकारान्त धातुके सप्रत्ययको विकल्प करके इट् नहीं हुआ । उदाहरण-वृङ्धातुसे सप्रत्ययको जहां इट् किया तहां गुण किया तत्पश्चात् 'वृङ्वृञॄदन्तानां वा' इसकर एक जगह इट्को दीर्घ किया और एक जगह यथावत् रहनेसे सिद्ध हुआ । विवरिषते, विवरीषते । और जहां इट् नही हुआ तहा 'नानिटि से' इसकर गुण नहीं हुआ किन्तु 'से दीर्घः' इसकर दीर्घ कर पश्चात् 'पोरुर्' इसकर उर् किया तदनन्तर द्वित्व किया फिर 'य्वोर्विहसे' इसकर सिद्ध हुआ । वुवूर्षते । इसी प्रकार वृञ्धातुके रूप जानने परन्तु वृञ्धातु उभयपदी होनेसे उभयपद प्रयुक्त करने चाहिये । 'ध्वृ कौटिल्ये' धातुसे सप्रत्यय करनेपर धातुको अनिट् होनेसे इट् तौ हुआ नहीं इस कारण

गुणभी नहीं हुआ किन्तु ' से दीर्घ ' इसकर दीर्घ हुआ फिर ' पोरुर् ' इसकर उर् कर तदनन्तर द्वित्व किया फिर ' य्वोर्मिहसे ' इसकर सिद्ध हुआ हुआ । शुभूर्षति ॥

स्मिङ्पूङ्रञ्ज्वशूभ्य सस्येट् ॥ ४१८ ॥ सिस्मयिषते । पिपविषते । अरिरिषति । अञ्जिजिषति । अशिशिषते । उच्छिशिषति । अधिजिगापयिषति । अध्यापिपयिषति । शिश्वायिषति । शुशाव-यिषति । जुहावयिषति । पुस्फारयिषति । पुस्फोरयिषति । पिपावयि-षति । पिप्यावयिषति । पियावयिषति । रिरावयिषति । लिलावयि षति । सिस्रावयिषति । सुस्रावयिषति ॥

भाषा–स्मिङ्, पूङ्, ऋ, अञ्जू और अशूङ्धातु इनसे परे समत्ययको इट् आगम होय । उदाहरण–स्मिङ्धातुसे समत्ययको इट् कर गुण करनेसे सिद्ध हुआ सिस्मयिषते । यहां पूर्वनिमित्तसे सकारको षकार नहीं हुआ क्योंकि इण् और ष्यन्तसे वर्जित है । पूङ्धातुसे समत्ययको इट् और द्वित्व कर रूप स्थित हुआ पुप-विष फिर अङ्सयो' पूर्वस्योकारस्येत्वं पवर्गयणजकारेष्ववर्णपरेषु परत ' इसकर पूर्व उकारको इकार किया क्योंकि परे अकारान्त पवर्गसंबन्धी पकार विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । पिपविषते । ऋधातुसे समत्ययको इट् और धातुको गुण कर रूप स्थित हुआ अरिष फिर स्वरादे परः ' इसकर रिको द्वित्व करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अरिरिषति । और अञ्जूधातुसे नित्यही समत्ययको इट् करनेपर ' स्वरादे परः ' इसकर जिको द्वित्व करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अञ्जि-जिषति । और अशूङ्धातुसे समत्ययको इट् करनेपर ' स्वरादेः परः ' इसकर शिको द्वित्व करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अशिशिषते । उछ उंछे इसमें ' छ इसकर छकारको द्वित्व कर पश्चात् ' खसे च० ' इसकर चकार कर उच्छ ऐसा बनाय समत्ययको इट् और धातुको ' स्वरादेः परः ' इसकर द्वित्व किया तब रूप सिद्ध हुआ । उचिच्छिषति । ' इङ् अध्ययने ' धातुसे ञिमत्यय करनेके पश्चात् समत्यय करनेसे ' अङ्सपरे औ इङो गाङ् वा ' इसकर इङ्धातुको गाङ् आदेश किया क्योंकि समत्यय है परे जिसके ऐसा ञिमत्यय परमें विद्यमान है तब रूप स्थित हुआ गा-इ-स फिर ' रातो औ पुक् ' इसकर पुक् आगम और धातुको द्वित्व तथा समत्ययको इट् और गुण करनेपर रूप स्थित हुआ । जिगापयिष फिर धातुसंज्ञा होनेपर अधिउपसर्ग पूर्व युक्त करनेसे सिद्ध हुआ । अधिजिगाप यिषति । और जहां ' अङ्सपरे औ ' इसकर गहां इङ्को गाङ् आदेश नहीं हुआ वहां इङ्क्रीजीनामात्वं औ इसकर आकार कर पश्चात् पुक् कर रूप

स्थित हुआ आ-पू-इ-स फिर धातुको द्वित्व किया तौ 'स्वरादेः परः' इसकर ञिप्रत्यय युक्त पकारको द्वित्व कर पश्चात् सप्रत्ययको इट् और धातुको गुण किया तब रूप स्थित हुआ आपिपयिष फिर धातुसंज्ञा होनेपर अधिउपसर्ग पूर्व युक्त करनेसे रूप सिद्ध हुआ। अध्यापिपयिषति। श्विधातुसे ञिप्रत्यय करनेके पश्चात् सप्रत्यय करनेपर 'श्वयतेर्ञ्यन्तस्य सम्प्रसारणं वा' इसकर पूर्व धातुको संप्रसारण किया पश्चात् द्वित्व करनेपर रूप स्थित हुआ शुशु-इ-स फिर धातुको वृद्धि किया तदनन्तर सप्रत्ययको इट् कर ञिप्रत्ययसम्बन्धी स्वर इकारको गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ। शुशावयिषति। और जहां संप्रसारण नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ। शिश्वाययिषति। और ह्वेञ्धातुसे ञिप्रत्यय करनेके अनन्तर सप्रत्यय करनेपर 'ह्वयतेर्ञ्यन्तस्याङ्सयोः सम्प्रसारणं युगभावश्च' इसकर पूर्व ह्वेञ्धातुको संप्रसारण किया और युक्का अभाव किया तब रूप स्थित हुआ हू-इ-स फिर द्वित्व और धातुको वृद्धि कर पश्चात् सको इट् किया तदनन्तर ञिप्रत्ययसम्बन्धी स्वर इकारको गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ। जुहावयिषति। 'स्फुर विकसने' धातुसे ञिप्रत्यय कर 'चिस्फुरोर्ञावात्वं वा' इसकर स्फुरधातुके स्वरको आकार किया तब रूप स्थित हुआ स्फारि फिर सप्रत्यय करनेपर द्वित्व करते समय 'द्वित्वे कर्त्तव्ये स्थानिवत्' इस विधिसे द्विरूपमें वह स्वरयुक्त किया जो कि पहले उकार था फिर सप्रत्ययको इट् और गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ। पुस्फारयिषति। और जहा ञिप्रत्यय पर होनेसे स्फुरधातुके स्वरका आकार नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ। पुस्फोरयिषति। 'पूङ् पवने' धातुसे ञिप्रत्यय करनेके पश्चात् सप्रत्यय करनेपर द्वित्व करनेसे 'अङ्सयोः पूर्वस्योकारस्येत्वं०' इसकर पूर्व उकारको इकार किया क्योंकि परे पवर्गसम्बन्धी पकार आकारान्त विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ। पिपावयिषति। इसी प्रकार भूधातुसे ञिप्रत्यय करनेके पश्चात् सप्रत्यय करनेसे सिद्ध हुआ। बिभावयिषति। युधातुसे ञिप्रत्यय करनेके पश्चात् सप्रत्यय करनेपर पूर्वउकारको इकार किया क्योंकि यलप्रत्याहारसम्बन्धी यकार आकारान्त परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ। यियावयिषति। 'रु शब्दे, लूञ् छेदने' धातुसे ञिप्रत्यय करनेके पश्चात् सप्रत्यय करनेसे सिद्ध हुआ। रिरावयिषति। लिलावयिषति। स्रुधातुसे ञिप्रत्यय करनेके पश्चात् सप्रत्यय करनेपर द्वित्व किया फिर 'स्रवतिशृणोतिद्रवतिप्लवतिच्यवतीनामङ्सयोः पूर्वस्येत्वं वावर्णे परे' इसकर एक जगह पूर्वके उकारको इकार किया तब रूप सिद्ध हुआ। सिस्रावयिषति। और एक जगह सिद्ध हुआ। सुस्रावयिषति॥

सान्तात्सो न ॥ ४१९ ॥ चिकीर्षितुमिच्छति। स्वार्थसान्तात्तु स्यादेव। जुगुप्सिषते ॥ इति सान्तप्रक्रिया ॥

भाषा—सन्प्रत्ययान्तसे फिर सन्प्रत्यय नहीं होता है। भाव यह है कि इच्छार्थवाचक सन्प्रत्ययान्तसे फिर इच्छार्थवाचक सन्प्रत्यय नहीं होता है और स्वार्थवाचक सन्प्रत्ययान्तसे इच्छार्थवाचक सन्प्रत्यय होता है। उदाहरण—कृञ्धातुसे इच्छा अर्थमें सन्प्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ चिकीर्ष अब इससे फिर इच्छाअर्थमें सन्प्रत्यय नहीं हुआ किन्तु पुनः इच्छाअर्थ होवे तौ तुमुन्के परमें युक्त कर इषुधातुका प्रयोग कर्त्तव्य है। जैसे—चिकीर्षितुमिच्छति। और स्वार्थ सन्प्रत्ययान्त गुप्सधातुसे इच्छार्थ सन्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। जुगुप्सिषते॥ इति सान्तप्रक्रिया समाप्ता॥ मङ्गलसेनात्मजश्रीकाशिरामोक्तभाषया। चंद्रिकोत्तरार्द्धेऽभूत्संस्कृतं सान्तसाधनम्॥ २॥

अतिशये हसादेर्यङ् द्वित्वं च॥ ४२०॥ हसादेरेकस्वराद्धातोरतिशयार्थे पौनःपुन्ये च यङ्प्रत्ययो भवति द्वित्वं च॥

भाषा—हस है आदिमें जिसके ऐसे एकस्वरवाले धातुसे अतिशय और पौनःपुन्य अर्थके विषें यङ्प्रत्यय होय और यङ्प्रत्ययान्त धातुको द्वित्व होय। उदाहरण—भूधातु हसादि और एक स्वर है इस कारण अतिशय तथा पौनःपुन्य अर्थमें भूधातुसे यङ्प्रत्यय किया और यङन्त भूधातुको 'सस्वरादिर्द्विः' इस कर द्वित्व करनेपर रूप स्थित हुआ बुभूय॥

यङि॥ ४२१॥ यङि यङ्लुकि च पूर्वस्य नामिनो गुणः॥ सधातुः। ङित्त्वादात्। भृशं पुनः पुनर्वा भवति। बोभूयते। बोभूयाञ्चक्रे। बोभूयिषीष्ट। अबोभूयिष्ट। बोभुज्यते॥

भाषा—यङ्प्रत्यय पर हुए सते और यङ्का लुक् हुए संते पूर्वनाम्यन्त रूपको गुण होय। उदाहरण—बुभूय। इसमें यङ्प्रत्यय परे विद्यमान है इस कारण पूर्वरूपके नामिस्वर उकारको गुण करनेपर रूप स्थित हुआ बोभूय फिर 'सधातुः' इसकर धातुसंज्ञा करनेपर धातुको ङित्संज्ञक होनेसे लट् आदिक लकारोंका भी

---

१ शैषिकान्मतुबर्थीयाच्छैषिको मतुबर्थिकः। सरूपः प्रत्ययो नेष्टः सन्नन्तान्न सनिष्यते॥ भाषा—शैषिकसे सदृश शैषिक प्रत्यय नहीं होता है और मतुप्प्रत्ययके समान अर्थ है जिसका ऐसे प्रत्ययसे सदृश मतुप्प्रत्ययके समान अर्थवाला प्रत्यय नहीं होता है और सन्प्रत्ययान्तसे सदृश सन्प्रत्यय नहीं होता है। उदाहरण—शालीये भवः। इस वाक्यमें तद्धित ईयप्रत्ययान्त शालीयशब्दसे सदृश तद्धित ईयप्रत्यय नहीं हुआ किन्तु असदृश तद्धित प्रत्यय हुआ 'धनवानस्यास्ति' इस वाक्यमें मतुप्रत्ययान्तसे सदृश मतुप्रत्यय नहीं हुआ। 'दण्डिनोऽस्यां सन्ति' इस वाक्यमें, इन्प्रत्ययान्त दण्डिनशब्दसे सदृश प्रत्यय नहीं हुआ किन्तु असदृश मतुप् प्रत्यय करनेसे रूप सिद्ध दण्डिमती शाला। 'चिकीर्षितुमिच्छति' इसमें इच्छार्थ सन्प्रत्ययान्तसे इच्छार्थ सन्प्रत्यय नहीं हुआ॥

त्मनेपद करनेपर रूप सिद्ध हुआ । बोभूयते । अतिशयकर वारंवार जो होता है ऐसे स्थानमे बोभूयते क्रिया युक्त होती है । लिङ्मे । बोभूयेत । लोट्में । बोभूयताम् । लङ्मे । अबोभूयताम् । लिट्में अनेक स्वर होनेसे 'कासादिप्रत्ययादाम्०' इसकर आम्प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । बोभूयाञ्चक्रे । लिङ्में 'यतः' इसकर अकारका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । बोभूयिषीष्ट । लुट्मे । बोभूयिता । लृट्में । बोभूयिष्यते । लृङ्में । अबोभूयिष्यत । लुङ्मे । अबोभूयिष्ट । भुज धातुसे अतिशय तथा पौनःपुन्य अर्थमें यङ् प्रत्यय करनेके पश्चात् द्वित्व कर 'यङि' इसकर पूर्वको गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । बोभुज्यते । लिट्में आम् करनेपर रूप स्थित हुआ बोभुज्य-आम्-चकृ-ए ऐसा स्थित हुआ ।

अप्यपि च हलात् ॥ ४२२ ॥ हलात्कुत्तरस्य यस्य लोपो भवत्यनपि विषये ॥ बोभुजाञ्चक्रे । बोभुजिता । मोमुह्यते । मोमुहाञ्चक्रे । लेलिह्यते । जोहूयते । वेविद्यते ॥

भाषा—हलसे उत्तर यङ्प्रत्ययके यकारका लोप होय अप्प्रत्यय न होनेके स्थानमे अर्थात् चार लकार त्याग शेष लकारोंके विषै । उदाहरण—बोभुज्य-आम् चकृ-ए है । इसमे हलप्रत्याहारसंबन्धी यकारसे परे यङ्प्रत्ययका यकार विद्यमान है इस कारण यकारका लोप कर दिया और 'यतः' इसकर अकारका लोप कर दिया तब रूप सिद्ध हुआ । बोभुजांचक्रे । सीष्टादिकमें यङ्प्रत्ययके यकार और अकारका लोप करनेके पश्चात् धातुको अनेक स्वर होनेसे इट् किया फिर अल्लोपको स्थानधारीके तुल्य होनेसे उपधाको गुण न करनेसे रूप सिद्ध हुआ । बोभुजिषीष्ट । तादिकमें । बोभुजिता । लुङ्में । अबोभोजीत् । इसी प्रकार 'मुह वैचित्ये' धातुका सिद्ध हुआ । मोमुह्यते । 'लिह आस्वादने' का सिद्ध हुआ । लेलिह्यते । 'हु दानादनयोः' इसका सिद्ध हुआ । जोहूयते । लिट्में । जोहूयांचक्रे । विद्धातुका सिद्ध हुआ । वेविद्यते । लिट्में । वेविदांचक्रे । डुपचष् धातुसे यङ्प्रत्यय करनेपर द्वित्व करनेसे रूप स्थित हुआ पपच्य ॥

आतः ॥ ४२३ ॥ यङि यङ्लुकि च पूर्वस्यात आकारः ॥ पापच्यते । पापठ्यते ॥

भाषा—यङ्प्रत्यय पर हुए संते और यङ्प्रत्ययका लुक् हुए संते पूर्वके अकारको आकार होय । उदाहरण—पपच्य । इसमें पूर्वके अकारको आकार किया क्योंकि यङ्प्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप स्थित हुआ पापच्य फिर धातुसंज्ञा होनेपर रूप सिद्ध हुआ । पापच्यते । इसी प्रकार पठधातुसे यङ् प्रत्यय करनेके अनन्तर सिद्ध हुआ । पापठ्यते ॥

सिचो यङि न प ॥ ४२४ ॥ सेसिच्यते ॥

भाषा–सिचधातुके सकारको षकार नहीं होय यङ्प्रत्यय पर हुए संते। उदाहरण–' षिच क्षरणे ' धातुसे यङ्प्रत्यय करनेके अनन्तर द्वित्व किया फिर ' यङि ' इसकर पूर्वको गुण किया तब सिद्ध हुआ। सेसिच्यते। इसमें पूर्वनिमित्त इण्प्रत्याहारसंबन्धी एकारसे सिचके सकारको षकार नहीं हुआ ॥

सूचिसूत्रिमूत्र्यट्यर्त्यशूर्णोतिभ्यो यङ् ॥ ४२५ ॥ सोसूच्यते। सोसूत्र्यते। मोमूत्र्यते ॥

भाषा–सूच, सूत्र, मूत्र, अट्, ऋ, अशूङ् और ऊर्णुञ्धातु इनसेभी यङ्प्रत्यय होय। सूत्रधातु अकारान्त है इस कारण इससे यङ्प्रत्यय नहीं होना चाहिये था सो ' सूचिसूत्रि० ' इसकर यङ्प्रत्यय करनेपर द्वित्व कर ' यङि ' इसकरके गुण किया पश्चात् ' यत ' इसकर चकार उत्तरवर्ती अकारका लोप किया तब रूप सिद्ध हुआ। सोसूच्यते। इसी प्रकार सूत्र और मूत्रधातुओंके रूप सिद्ध करने चाहिये। लिट्में। सोसूचांचक्रे ॥

यकारपररेफस्य न द्वित्वनिषेध ॥४२६ ॥ अराय्यते। अरारा-ञ्चक्रे। अशाश्यते। ऊर्णोनूयते ॥

भाषा–यकार है परे जिससे ऐसे रकारको द्वित्व होनेका निषेध नहीं है। भाव यह है कि जिस रकारसे यकार परे होवे सो उस रकारको द्वित्व होवे द्वित्वकी प्राप्ति होवे तो। उदाहरण–ऋधातुसे यङ्प्रत्यय करनेपर ' गुणोर्तिसंयोगाद्यो ' इसकर गुण करनेसे रूप हुआ अर्य्य फिर द्वित्वकी प्राप्ति होनेपर ' स्वरादेः पर ' इसकर द्वितीय अवयव रकारको सस्वर द्वित्व किया क्योंकि रकारसे परे यकार विद्यमान है तब रूप स्थित हुआ अर्य्य फिर ' आत ' इसकर पूर्वअकारको आकार करनेपर धातुसंज्ञा होनेसे सिद्ध हुआ। अराय्यते। लिट्में ' अनपि च इत्यादि यतः ' इनकर यकार अकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ। अरारांचक्रे। अशूङ्धातुसे यङ्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। अशाश्यते। और ऊर्णुधातुसे यङ्प्रत्यय करनेपर द्वित्व किया तब नुको द्वित्व करनेसे रूप स्थित हुआ ऊर्णुनुय फिर ' यङि ' इसकर पूर्वको गुण और ' ये ' इसकर दीर्घ किया फिर धातुसंज्ञा होनेपर रूप सिद्ध हुआ। ऊर्णोनूयते ॥

गत्यर्थात्कौटिल्ये एव यङ् ॥ ४२७ ॥ कुटिलमटति अटाट्यते। कुटिलं व्रजति वाव्रज्यते ॥

भाषा–गतिअर्थवाले धातुसे कुटिलता अर्थमें यङ्प्रत्यय होय। भाव यह है

कि जिस धातुका अर्थ गति होय उस धातुसे वक्रगत्यनुकूल व्यापारमें यङ्प्रत्यय होता है । उदाहरण–वक्रगत्यनुकूल व्यापारमें गत्यर्थ अट्धातुसे यङ्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' स्वरादेः परः ' इसकर द्वितीय अवयव सस्वर टकारको द्वित्व करनेपर रूप स्थित हुआ अटट्य फिर ' आतः ' इसकर पूर्वको आकार किया पश्चात् धातुसंज्ञा होनेपर सिद्ध हुआ । अटाट्यते । इसी प्रकार व्रजधातुसे यङ्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । वाव्रज्यते । टेढा चलता है इस अर्थमे वाव्रज्यसे क्रिया प्रयुक्त होवे है ॥

लुपसदचरजपजभदहदंशगॄभ्यो धात्वर्थगर्हायामेव यङ् ॥ ४२८ ॥ गर्हितं लुम्पति लोलुप्यते । सासद्यते ॥

भाषा–लुप्लृ, सद, चर, जप, जभी, दह, दंश, गॄधातु इनसे यङ्प्रत्यय होय धातुके अर्थकी निन्दामें । भाव यह है कि यदि लुप्लृ आदि धातुका अर्थ निन्दायुक्त होवे तो लुप्लृ आदिक धातुओंसे यङ्प्रत्यय होय । उदाहरण–गर्हितं लुम्पति । कुत्सित रीतिसे वनको काटता है । यहां लुप्लृधातुका अर्थ निन्दायुक्त है इस कारण लुप्लृधातुसे यङ्प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । लोलुप्यते । लिट्में । लोलुपांचक्रे । सदधातुसे यङ्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । सासद्यते ॥

ञमजपां नुक् ॥ ४२९ ॥ ञमान्तस्य जपजभदहदंशभञ्जपसचरफलां च पूर्वस्य नुग् यङ्यङ्लुकोः ॥

भाषा–ञमप्रत्याहारान्त धातुके और जप, जभी, दह, दंश, भञ्जो, पस, चर और फलरूप धातु इनके पूर्वरूपको नुक् आगम होय यङ्प्रत्यय पर हुए संते तथा यङ्का लुक् हुए संते । उदाहरण–चरधातुसे यङ्प्रत्यय करनेके अनंतर द्वित्व करनेके पश्चात ' ञमजपा नुक् ' इसकर नुक् आगम किया तब रूप स्थित हुआ चन्चर्य फिर ॥

चरफलोः पूर्वात्परस्यात उद्यङ्लुकोः ॥ ४३० ॥ चञ्चूर्यते । चञ्चुराञ्चक्रे । पम्फुल्यते । नुगित्यनेनाऽनुस्वारो लक्ष्यते । स च पदान्तवत् । जञ्जप्यते । जंजप्यते ॥

भाषा– चर और फल इन दोनों धातुओंके पूर्वरूपसे परे पररूपके अकारको उकार होय यङ्प्रत्यय पर हुए संते और यङ्लुक् हुए संते । उदाहरण–चन्चर्य । इसमें चरधातुके पूर्व रूपसे परे पररूपके चकारउत्तरवर्ती अकारको उकार करनेपर ' र्वोर्विहसे ' इसकर रूप स्थित हुआ चन्चूर्य फिर ' ञमजपां० ' इसकर किये नुक् आगमके नकारको अनुस्वारही भाष्यादिकमें लक्षित होता है सो पदान्तवत्

होता है। इस कथनसे नुकके नकारको अनुस्वार किया फिर यह अनुस्वार पदान्तवत् होनेसे 'वा पदान्तस्य' इसकर स्थित हुआ चञ्चूर्य, चंचूर्य फिर धातुसंज्ञा होनेपर सिद्ध हुआ। चञ्चूर्यते, चंचूर्यते। लिट्में 'अनपि च इसात्' इसकर सिद्ध हुआ। चंचुरांचक्रे। फलधातुसे यङ्प्रत्यय करनेपर द्वित्व करनेके अनन्तर 'जपजभ्रा नुक्' इसकर पूर्वको नुक् किया पश्चात् 'चरफलोः पूर्वोत्परस्य०' इस अकारको उकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ। पम्फुल्यते, पंफुल्यते। इसी प्रकार जपधातुका सिद्ध हुआ। जञ्जप्यते जंजप्यते॥

गिरते रेफस्य लत्वं यङि॥ ८३१॥ जेगिल्यते। यँय्यम्यते, यंयम्यते॥ दीङ् क्षये॥ देदीयते। ओप्यायी वृद्धौ॥ पेपीयते। वँव्वम्यते। वंवम्यते। चाखायते। चङ्खन्यते। चङ्क्यते। तन्तन्यते। जञ्जाप्यते। दन्दह्यते। ददश्यते। मम्मज्यते॥ पस बन्धनग्रथनयो॥ पंपस्यते॥

भाषा–गृधातुके रकारको लकार होय यङ्प्रत्यय पर हुए सते। उदाहरण–गृधातुसे यङ्प्रत्यय करनेके अनन्तर 'ऋत इर्' इसकर इर् किया पश्चात् रकारको लकार करनेसे रूप स्थित हुआ गिल्य फिर द्वित्व करनेके पश्चात् 'यङि' इसकर पूर्वको गुण किया तदनन्तर धातुसंज्ञा होनेपर रूप सिद्ध हुआ। जेगिल्यते। 'यम उपरमे' धातुसे यङ्प्रत्यय करनेके पश्चात् द्वित्व करनेपर 'जपजभ्रा नुक्' इसकर पूर्वको नुक् आगम किया फिर 'वा पदान्तस्य' इसकर एक जगह अनुस्वारको सानुनासिक यकार किया तब रूप सिद्ध हुआ। यँय्यम्यते। और एक जगह सिद्ध हुआ। यंयम्यते। 'दीङ् क्षये' धातुका सिद्ध हुआ। देदीयते। 'ओप्यायी वृद्धौ' धातुसे यङ्प्रत्यय करनेके अनन्तर 'लिड्यङोः प्याय पी' इसकर पी आदेश किया पश्चात् द्वित्व किया तब रूप सिद्ध हुआ। पेपीयते। 'टुवमु उद्गिरणे' धातुसे यङ्प्रत्यय करनेके अनन्तर द्वित्व कर 'जपजभ्रा नुक्' इसकर पूर्वको नुक् आगम किया पश्चात् 'वा पदान्तस्य' इसकर एक जगह अनुस्वारको सानुनासिक वकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ। वँव्वम्यते। एक जगह। वंवम्यते। चखुधातुका सिद्ध हुआ। चंचम्यते। और खनधातुसे यङ्प्रत्यय करनेके अनन्तर 'जनसनखनामात्व सनिटि से' इसकर आकार कर पश्चात् द्वित्व करनेसे रूप सिद्ध हुआ। चाखायते। और एक जगह। चंखन्यते, चङ्खन्यते। कण धातुका सिद्ध हुआ। चङ्क्यते। 'तनु विस्तारे' धातुका सिद्ध हुआ। तन्तन्यते। दहधातुका सिद्ध हुआ। दन्दह्यते। और दंशधातुका सिद्ध हुआ। ददश्यते। ममधातुका सिद्ध हुआ। मम्मम्यते। 'पस बन्धनग्रंथनयोः' धातुका सिद्ध हुआ। पंपस्यते॥

रीगृदुपधस्य ॥ ४३२ ॥ ऋत्वतो धातोर्यङि परे पूर्वस्य रीक् ॥ नरीनृत्यते । वरीवृत्यते । जरीगृह्यते । वरीवृश्च्यते । परीपृच्छ्यते । चलीक्लृप्यते ॥

भाषा—ऋकार है उपधारूप जिसका ऐसे धातुके पूर्वरूपको रीक् आगम होय । उदाहरण—' नृती गात्रविक्षेपे ' धातुका उपधाभूत ऋकार है इस कारण यङ्प्रत्यय करनेपर पूर्वको रीक् आगम किया तव रूप सिद्ध हुआ । नरीनृत्यते । इसी प्रकार ' वृतु वर्त्तने ' धातुका सिद्ध हुआ । वरीवृत्यते । ग्रह, ओव्रश्चू, प्रच्छ इन तीनों धातुसे यङ् करनेके अनन्तर संप्रसारण कर पश्चात् द्वित्व किया फिर ग्रहधातुमें तो संप्रसारण करनेपर उपधाभूत ऋकार हो गया और ओव्रश्चू और प्रच्छधातुमें संप्रसारण करनेपर ऋकार उपधाभूत नहीं हुआ परन्तु योगविभागसे उपधाभूतही ऋकार मानकर पूर्वको रुक् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुए । जरीगृह्यते । वरीवृश्च्यते । परीपृच्छ्यते । ' कृपू सामर्थ्ये ' धातुसे यङ्प्रत्यय कर पूर्वको रीक् आगम कर पश्चात् ' कृपो रो लः ' इसकर दोनों जगह लकार कर रूप सिद्ध हुआ । चलीक्लृप्यते ॥

वशोर्यङि न संप्रसारणम् ॥ ४३३ ॥ वावश्यते ॥

भाषा—यङ्प्रत्यय पर हुए संते वशधातुको संप्रसारण नहीं हो । उदाहरण—वशधातुसे यङ्प्रत्यय करनेपर संप्रसारण न होनेसे पूर्वको ' आतः ' इसकर आकार किया तव रूप सिद्ध हुआ । वावश्यते ॥

श्वयतेर्वा ॥ ४३४ ॥ शोशूयते शेश्वीयते । सास्मर्यते ॥

भाषा—यङ्प्रत्यय पर हुए संते श्विधातुको विकल्पकरके संप्रसारण होय । उदाहरण—' टुओश्विइर् गतिवृद्ध्योः ' धातुसे यङ्प्रत्यय करनेके अनन्तर एक जगह संप्रसारण करनेके पश्चात् पूर्वको गुण करनेसे ' ये ' इसकर सिद्ध हुआ । शोशूयते । और जहां संप्रसारण नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । शेश्वीयते । ' स्मृ चिन्तायाम् ' धातुसे यङ्प्रत्यय करनेपर ' गुणोर्त्तिसंयोगाद्योः ' इसकर गुण किया पश्चात् द्वित्व करनेपर ' आतः ' इसकर पूर्वअकारको आकार किया तव रूप सिद्ध हुआ । सास्मर्यते ॥

कवतेः पूर्वस्य न चुत्वं यङि ॥ ४३५ ॥ कोकूयते ॥

भाषा—' कुङ् शब्दे ' धातुके पूर्वरूपको चवर्ग नहीं होय यङ्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—' कुङ् शब्दे ' धातुसे यङ्प्रत्यय करनेपर द्वित्व करनेके पश्चात् ' कुहोश्चुः ' इसकर पूर्वककारको चकार नहीं किया किन्तु ' यङि ' इसकर गुण और ' ये ' इसकर परउकारको दीर्घ किया तव रूप सिद्ध हुआ । कोकूयते ॥

वञ्चुस्रंसुध्वंसुभ्रंसुकसपतपदस्कन्दाम् ॥ ४२६ ॥ यङि यङ्लुकि च पूर्वस्य नीक् ॥ वनीवच्यते । सनीस्रस्यते । दनीध्वस्यते । बनीभ्रस्यते । चनीकस्यते । पनीपत्यते । पनीपद्यते । चनीस्कद्यते ॥

भाषा—वञ्चु, स्रंसु, ध्वंसु, भ्रंसु, कस, पत, पद, स्कन्दिर् इन धातुओंके पूर्वरूपको नीक् आगम होय यङ्प्रत्यय पर हुए संते तथा यङ्प्रत्ययका लुक् हुए संते । उदाहरण—वञ्चुधातुसे यङ्प्रत्यय करनेपर द्वित्व और 'नो लोपः' इसकर नकारका लोप किया फिर पूर्वको नीक् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । वनीवच्यते । इसी प्रकार शेषधातुओंके पूर्वको नीक् आगम कर रूप सिद्ध करने चाहिये ॥

ऋतो रिः ॥४२७॥ येऽनपि ॥ चेक्रीयते । जेह्रीयते । वेव्रीयते ॥

भाषा—ऋकारको रि होय अपूविषयवर्जित यप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—कृधातुसे यङ्प्रत्यय करनेपर ऋकारको रिकार किया फिर द्वित्व किया तदनन्तर पूर्वको गुण और परको 'ये' इसकर दीर्घ करनेसे रूप सिद्ध हुआ । चेक्रीयते । इसी प्रकार 'हृञ् हरणे' और वृङ् वृञ् इन धातुओंके रूप सिद्ध हुए । जेह्रीयते । वेव्रीयते ॥

दादेरिः ॥ ४२८ ॥ अपिदाधामागैहाक्पियतिसामिकारः क्ङिति हसे अनपि ॥ देदीयते । मेमीयते । जेगीयते । जेहीयते । पेपीयते । सेषीयते । तेष्ठीयते ॥

भाषा—पकारइत्वर्जित दारूप धातु, धारूप, मारूप धातु, गैधातु, ओहाक्धातु, पा पाने धातु, षो अन्तकर्मणि धातु इन्होंके आकारको इकार होय किद्ङित्संज्ञक हस पर हुए संते जो अप् होनेका विषय न होवे तो । उदाहरण—डुदाञ् धातुसे यङ्प्रत्यय करनेके अनन्तर धातुके आकारको इकार किया क्योंकि ङित्संज्ञक हसप्रत्यय यङ् परे विद्यमान है तत्पश्चात् द्वित्व किया फिर 'यङि' इसकर पूर्वको गुण और 'ये' इसकर परको दीर्घ करनेसे रूप सिद्ध हुआ । देदीयते । इसी प्रकार मारूप धातुका सिद्ध हुआ । मेमीयते । 'गै शब्दे' धातुका सिद्ध हुआ । जेगीयते । ओहाक् धातुका सिद्ध हुआ । जेहीयते । 'पा पाने' धातुका सिद्ध हुआ । पेपीयते । षो धातुके षकारको सकार किया पश्चात् यङ्प्रत्यय और आकारको इकार कर द्वित्व किया तदनन्तर पूर्वको गुण और परको दीर्घ किया फिर 'क्रियात्प॰' इसकर परसकारको षकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । सेषीयते । इसी प्रकार ष्ठाधातुका सिद्ध हुआ । तेष्ठीयते ॥

आप्प्योरीयङि ॥ ४२९ ॥ जेघ्रीयते । देध्मीयते ॥

भाषा–घ्रा और ध्मा इन दोनोंके अकारको ईकार होय यङ्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–घ्रा और ध्माधातुके यङ् प्रत्यय करनेके अनन्तर आकारको ईकार किया पश्चात् द्वित्व किया फिर पूर्वको गुण किया तब रूप सिद्ध हुआ । जेघ्रीयते । देध्मीयते ॥

हन्तेर्हिंसायां घ्नीभावः ॥ ४४० ॥ जेघ्नीयते जंघन्यते ॥

भाषा–हिंसाअर्थके विषैं हन्धातुको घ्नीभाव होय । यङ्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–हिंसाअर्थमें हन्धातुके स्थानमें घ्नी आदेश किया क्योंकि यङ्प्रत्यय परे विद्यमान है तदनन्तर द्वित्व कर पूर्वको गुण किया तब रूप सिद्ध हुआ । जेघ्नीयते । और जहां हिंसाअर्थ नहीं हुआ तहां हन्धातुसे यङ् करनेके अनन्तर द्वित्व किया फिर पूर्वको ' जपजभदहदशभञ्जपशां च ' इसकर नुक् आगम किया पश्चात् ' पूर्वोद्धन्तेर्हस्य घः ' इसकर पर हकारको घकार किया तब रूप सिद्ध हुआ । जंघन्यते ॥

स्वपिस्यमिव्येञां यङि संप्रसारणम् ॥ ४४१ ॥ सोषुप्यते । सेसिम्यते । वेवीयते ॥

भाषा–ञिष्वप्, स्यमु और व्येञ् धातु इनको यङ्प्रत्यय पर हुए संते संप्रसारण होय । उदाहरण–ष्वप्धातुके षकारको सकार किया तब हुआ स्वप् फिर यङ्प्रत्यय करनेके अनन्तर संप्रसारण किया तो स्वर अकारसहित वकारको उकार संप्रसारण हुआ फिर द्वित्व किया तत्पश्चात् पूर्वको गुण और परसकारको ' कि० ' इसकर षकार किया तब रूप सिद्ध हुआ । सोषुप्यते । और स्यमुधातुसे यङ्प्रत्यय करनेपर स्वरसहित यकारको इकार संप्रसारण किया पश्चात् द्वित्व और पूर्वको गुण करनेपर रूप सिद्ध हुआ । सेसिम्यते । और व्येञ्धातुसे यङ्प्रत्यय करनेके अनन्तर एकारस्वरसहित यकारको दीर्घ ईकार संप्रसारण किया पश्चात् द्वित्व और पूर्वको गुण किया तब रूप सिद्ध हुआ । वेवीयते ॥

चायः कीर्यङि ॥ ४४२ ॥ चेकीयते । जञ्जन्यते । शीङोऽयङ् ये क्ङिति । शाशय्यते । डोढौक्यते । तोत्रौक्यते ॥ इति यङंतप्रक्रिया ॥

भाषा–यङ्प्रत्यय पर होनेसे चायृधातुको की आदेश होय यहां दीर्घ की करना यङ्लुक्के अर्थ है । उदाहरण–यङ्प्रत्यय पर होनेसे चायृधातुको की आदेश कर द्वित्व किया पश्चात् पूर्वको गुण किया तब रूप सिद्ध हुआ । चेकीयते । ' जनी प्रादुर्भावे ' धातुसे यङ्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' जनसनखनामात्वं० ' इसकर टिको आकार किया पश्चात् द्वित्व किया तदनन्तर ' आतः ' इसकर पूर्व अकारको

---

१ यदि कहो कि घ्रा ध्मा धातुके आकारको यङ् पर हुए संते ईकार क्यों किया क्योंकि इकार करनेसेही ' ये ' इसकर दीर्घ होकर कार्यसिद्धि हो जाती तहां यह जानना कि ईकारका करना यङ्लुक्के अर्थ है ॥

आकार किया तब सिद्ध हुआ । जामायते । और जहां टिको आकार नहीं हुआ । वहां ' अमजर्पा नुक् ' इसकर पूर्वको नुक् आगम करनेपर सिद्ध हुआ। जञ्जन्यते । क्वित्क्तिसंज्ञक य पर हुए सते शीङ्धातुको अयङ् आदेश होय। उदाहरण–क्ङित्संज्ञक यङ्प्रत्ययसम्बन्धी यकार पर होनेसे शीङ्धातुको अयङ् आदेश किया तो अयङ् आदेश ङित् होनेसे अन्त्यको हुआ तब रूप स्थित हुआ शय्-य फिर द्वित्व किया तत्पश्चात् ' आत ' इसकर पूर्वको आकार किया तब रूप सिद्ध हुआ । शाशय्यते । ढौकृ त्रौकृ धातुसे यङ्प्रत्यय करनेके अनन्तर द्वित्व किया फिर ' ह्रस्व ' इसकर पूर्वसम्बन्धी स्वर औकारको उकार किया पश्चात् ' यङि ' इसकर गुण किया तब रूप सिद्ध हुआ । डोढौक्यते । तोत्रौक्यते ॥ इति यङन्तप्रक्रिया समाप्ता । भगवत्सेनात्मजश्रीकाशिरामेण भाषया । चन्द्रिकोत्तरार्द्धस्यैषी कृतं यङन्तसाधनम् ॥

चान्यत्र ॥ ४४३ ॥ ऊकप्रत्ययसयोगं विना यङो वा लुक् ॥ यङ्-लुगन्तात्सम् । अदादौ बोध्यम् । अदादित्वाच्छपो लुक् यङ्लुकि सति ॥

भाषा–ऊकप्रत्ययके संयोगके विना यङ्प्रत्ययका विकल्पकरके लुक् होता है । भाव यह है कि ऊकप्रत्ययके संयोगमें यङ्प्रत्ययका लुक् होता है परन्तु और जगह विकल्पकरके यङ्प्रत्ययका लुक् होता है । जिस धातुके अन्तमें यङ्प्रत्ययका लुक् हुआ है उस धातुसे परस्मैपद होता है और वह यङ्लुगन्तधातु अदादिगणमें जानने योग्य है । अदादि होनेसे शप्प्रत्ययका लुक् हो जाता है ॥

पिति त्सिम वेट् ॥ ४४४ ॥ बोभवीतु बोभोतु । अबोभवीत् अबोभोत् । अबोभूताम् । अबोभवुः । बोभवाञ्चकार । गुण बाधित्वा नित्यत्वाद्वुक् । अबोभोव् अबोभूवीत् । अबोभूवुः । अबोभूवी । अबोभो अबोभुवम् । पापचीति पापक्ति । पापक्तः । पापचति । अपापचीत् अपापक् अपापग् । अपापचुः । पापचांचकार । पापचिता । अपापाचीत् । अपापचीत् । द्वे स्वरेऽपि नो पधाया गुण । बोभुजीति बोभोक्ति । बोभुक्तः । बोभुजति । अबोभुजीत् अबोभोक् । बोभोजिता । अबोभोजीत् । वावदीति वावत्ति । वावदीतु वावत्तु । वावद्धि । वावदाव । जाघटीति जाघट्टि । जाघटीषि । द्रुमि द्रु । जाघट्टपि । अजाघटीत् ॥ सर्प सर्प ॥

पास्पर्द्धीति पास्पार्द्धि । पास्पर्द्धः । पास्पर्धति । हौ । पास्पर्द्धि ।
अपास्पर्द्धीत् । अपास्पर्त् अपास्पर्द् । सिपि । अपास्पर्द्धीः । अपास्पाः
अपास्पर्त् अपास्पर्द् ॥ गाधृ प्रतिष्ठालिप्सयोर्ग्रन्थे च ॥. जागाधीति
जागाद्धि । जागाद्धः । आदिजबानामिति । जाघात्सि । अजागाधीत्
अजाघात् । सिपि । अजाघाः अजाघात् ॥ नाथृ ॥ नानाथीति
नानात्ति । नानात्तः । नानाथति ॥ दध ॥ दादधीति दादद्धि । दाध-
त्सि । अदादधीत् । अदादद्धाम् । अदादधुः । अदाधः अदादधीः ।
दादधिता । अदादधीत् ॥ मुद ॥ मोमुदीति मोमोत्ति ॥ कुर्द खुर्द
गुर्द गुद क्रीडायामेव ॥ चोकूर्दीति चोकूर्ति । चोकूर्त्तः । अचोकूर्त् ।
सिपि । अचोकूः । ऋदन्तानामृदुपधानां च यङ्लुकि पूर्वस्य रुक्-
रिक्रीकः । चर्करीति चरिकरीति चरीकरीति । चर्कर्ति चरिकर्ति ।
चरीकर्ति । चर्कृतः चरिकृतः चरीकृतः । चर्क्रति चरिक्रति
चरीक्रति । अचर्करीत् अचरिकरीत् अचरीकरीत् । अचर्कः अ-
चरिकः अचरीकः । चर्करिता । वर्वृतीति वरिवृतीति वरीवृतीति ।
वर्वर्त्ति वरिवर्ति वरीवर्ति । वर्वर्त्तामास । वर्वर्तिता । वर्वर्तिष्यति ।
अवर्वर्तिष्यत् । वनीवञ्चीषि वनीवङ्क्षि । वनीवच्यात् । वनीवञ्चीतु
वनीवङ्क्तु । वनीवङ्क्ताम् । अवनीवञ्चीत् । संयोगान्तस्य लोपः ।
अवनीवन् । जङ्गमीति जङ्गन्ति । लोपस्त्वनुदात्ततनाम् । जङ्गतः ।
गमां स्वरे । जङ्ग्मति । जङ्गमीमि । जंगन्वः । जंगन्मः । जंगमीतु
जंगन्तु । हौ । जंगहि । अजंगमीत् । अजंगन् । अजंगताम् ।
गमां स्वरे । अजंग्मुः । जंगमिता । अजंगमीत् । हिंसायान्तु ।
जेघ्नयीति जेघ्नेति जंघनीति जंघंति । लोपस्त्वनुदात्ततनाम् । जं-
घतः । जंघ्नति । अजंघनीत् । अजंघन् । आशिषि । वध्यात् ।
अवधिष्ट । चञ्चुरीति । चञ्चूर्तः चञ्चुरति । चञ्चूर्यात् ।
चञ्चुरीतु चञ्चूर्तु चञ्चूर्तात् । चञ्चूर्ताम् । चञ्चूर्हि । अचञ्चु-

रीव । अचञ्चुः । चोस्कुन्दीति चोस्कुन्ति । चोस्कुन्त । चो-
स्कुन्दति । चोस्कुन्याव् । चोस्कुदीतु चोस्कुतु । चोस्कुताम् ।
अचोस्कुन्दीव् । अचोस्कुन् । अचोस्कुन्ताम् । अचोस्कुन्दुः ।
सिपि । अचोस्कुन्दीः अचोस्कुन् । चसनीति चसन्ति । चसातः ।
चंस्नति । चसनीपि चससि । चंसाथः । चसनीमि चसन्मि ।
चसन्वः । चसन्मः । चसायाव् चसन्याव् । चसनीतु चसन्तु
चसाताव् । चंसाताम् । चस्नतु । चसाहि । अचसनीव् अच-
सानीव् । अचसानिष्टाम् । योपवीति योपोति । योयुत । योयु-
याव् । योपवीतु योपोतु । अयोपवीव् । नोनवीति नोनोति । नो-
नुतः । नोनुयाव । नोनवीतु नोनोतु । अनोनवीव् अनोनोव् ।
सिपि । अनोनवी अनोनोः । जाहेति जाहाति । द्वेस्तौ । जाहीतः ।
जाहीयाव् । जाहेतु जा॰॰तु जाहीताव् । जाहीताम् । अजाहेव्
अजाहाव् अजाहीव् । अजाहीताम् । अजाहुः । जाहीयाव् । जा-
हिथा । आतोऽनपि । अजाहासीव् । अजाहासिष्टाम् । दादेति
दादाति । दाच । दादति । दादेपि दादासि । दात्थः । दात्थ । दाद्वः
दाम । द्वौ । देहि । दादेयाव् । आतोऽनपि । ददिता । दादे पे ।
अदादेव् अदादाव् । अदाताम् ॥ एवं धेट् ॥ दाधेति दाधाति ।
दाद्ध । दाधति । दाध्याव् । धेहि । दाधेयाव् । अदाधासीव् ।
अदाधव् अदाधाव् । अदाधव् । अदाधताम् । अदाधन् ॥ डुधाञ् ।
दाधेति दाधाति । धाच । धात्थ । धादे । दाध्वः । दाध्म । लङि ।
अदाधाव् अदाधेव । पितोस्तु ॥ दैप् शोधने । दाप् लवने ॥ दादेति
दादाति । दादीतः दादति । दादीयाव् । दादेतु दादातु दादीताव् ।
दादीहि । अदादेव् अदादाव् । अदादीताम् । दादायाव् । अदा-
दासीव् । सास्वपीति सास्वति । सास्वप्व । सास्वपति । ह्रौ ।
सास्वब्धि । असास्वपीव् असास्वप् । सास्वप्याद् । असास्वापीव्
असास्वपीव् ॥ कॄ विक्षेपे ॥ चाकरीति चाकर्ति । चाकीर्तं ।

चाकिरति । चाकरिता चाकरीता । तातरीति तातर्ति । तातीर्तः । तातिरति । तातरीतु तातर्तु । ऋत इत् । तातीर्तात् । तातीर्हि । अतातरीत् अतातः अतातारीत् । अतातारिष्टाम् । अर्तेर्यङ्लुकि द्वित्वे पूर्वस्य र इत्यत्वम् । रुग्रिग्रीकोस्तु पूर्वस्यासवर्ण इयङ् । अररीति अरियरीति अरीयरीति, अरर्ति अरियर्ति अरीयर्ति । अर्ऋत अरियृतः अरीयृतः । रुको रिलोप इति लोपः । आरति अरीग्रति । अर्ऋयात् अरियृयात् अरीयृयात् । अररीतु अरियरीतु अरीयरीतु, अरर्तु अरियर्तु अरीयर्तु, आरतु अरियतु अरीयतु । अरिग्रतु । आररीत् आरियरीत् आरीयात् । आरः आरियः आरीयः । आररुः आरियरुः आरीयरुः । सिपि । आररीः आरियरीः आरीयरीः । आरः आरियः आरीयः । लिङि । यादादाविति रिङ् । आरियात् अरीग्रियात् । अररिता अरियरिता अरीयरिता । लुङि । आरारीत् आरियरीत् ॥ गृहू ॥ जगृहीति जरिग्रहीति । जर्गढि । जगृढः । जर्गृहति । जर्गृहीतु जर्गढु जर्गढात् । हौ । जर्गृढि । अजर्गृहीत् । अजर्घट् अजर्घड् ॥ ग्रह ॥ जाग्रहीति जाग्राढि । तसादौ ङिन्निमित्तं सम्प्रसारणम् । तस्य बहिरंगत्वेनासिद्धत्वान्न रुगादयः । जागृढः । जागृहति । जाग्रहीषि जाग्रक्षि जागृढि । जाग्रहिता ॥ गृधु ॥ जर्गृधीति जर्गर्धि । जर्गृद्धः । जर्गृधति । जर्गृधीषि जर्घर्त्सि । अजर्गृधीत् अजर्घर्त् । सिपि । अजर्गृधीः अजर्घाः । अजर्गर्धीत् । अजर्गर्धिष्टाम् । पाप्रच्छीति पाप्रष्टि । तसादौ न सम्प्रसारणम् । श्तिपानिर्देशात् ॥

भाषा—यङ्प्रत्ययका लुक् हुए संते पित्संज्ञक तकार दकार सकार मकारादि प्रत्ययोंको विकल्पकरके ईट् आगम होय । उदाहरण—भूधातुसे यङ्प्रत्ययका लुक् किया पश्चात् प्रत्ययलक्षण कर धातुको द्वित्व किया तदनन्तर ' याङि ' इसकर पूर्वको गुण किया पश्चात् यङन्त होनेसे धातुसंज्ञामें तिबादिक किये फिर ' अप् कर्त्तरि ' इसकर अप्प्रत्यय किया पश्चात् यङ्लुगन्तको अदादि होनेसे अप्का लुक्

क्रिया पश्चात् तिप्‌को पिकल्पकरके ईट् क्रिया क्योंकि यङ्‌का लुक् हुआ है और पित् तकारादि प्रत्यय है, तब रूप स्थित हुआ बोभू इ ति फिर भूधातुको गुण क्रिया पश्चात् ओ अव्' इसकर सिद्ध हुआ। बोभवीति। और जहां ईट्‌का आगम नहीं हुआ तहां धातुको गुण करनेसे सिद्ध हुआ। बोभोति। द्विवचनमें ईट् गुण दोनोंके न होनेका विषय होनेसे सिद्ध हुआ। बोभूतः। बहुवचनमें 'झेः' इसकर अन्तिमप्रत्ययके स्थानमें अति किया पश्चात् 'नु धातो' इसकर उव् किया तब रूप सिद्ध हुआ। बोभुवति। लिङ्में। बोभूयात्। लोट्में। बोभवीतु, बोभोतु। हिमें। बोभूहि। उत्तमभागमें। बोभवानि। लङ्में। अबोभवीत्, अबोभोत्। लिट्में 'कासादिप्रत्ययादाम्०' इसकर आम् प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। बोभवांचकार। लिङ्में। बोभूयात्। लुट्में। बोभविता। लृट् लृङ्में बोभविष्यति। अबोभविष्यत्। लुङ्में 'दादे' पे' इसकर सिप्रत्ययका लुक् किया पश्चात् 'यङ्लुकि सति पिति तिस्म वेट्' इसकर तिप्‌को विकल्पकरके ईट् किया पश्चात् गुणको बाधित किया क्योंकि भूधातुको स्वरादिप्रत्यय परे होनेसे वुक् आगम नित्य होता है इस कारण 'भुवा सिलोपे स्वरे वुक्' इसकर वुक् आगम किया तब रूप सिद्ध हुआ। अबोभूवीत्। और जहां ईट् आगम नहीं हुआ तहां गुण करनेसे सिद्ध हुआ। अबोभोत्। द्विवचनमें। अबोभूताम्। बहुवचनमें 'अन उस्' इसकर अन्‌के स्थानमें उस् करनेपर भूधातुको वुक् आगम किया तब रूप सिद्ध हुआ। अबोभूवुः। अमिप्प्रत्ययमें वुक् आगम करनेपर सिद्ध हुआ। अबोभुवम्। डुपचष् धातुसे यङ्‌का लुक् करनेपर पूर्वको 'आत' इसकर आकार किया तदनन्तर एक जगह 'पिति तिस्म वेट्' इसकर तिप्‌को एक जगह ईट् किया तब रूप सिद्ध हुआ। पापचीति। और जहां ईट् आगम नहीं हुआ तहां 'चो कुः' इसकर सिद्ध हुआ। पापक्ति। लोट्‌के द्विवचनमें 'झसादिदेः' इसकर सिद्ध हुआ। पापग्धि। लङ्में जहां ईट् आगम हुआ तहां सिद्ध हुआ। अपापचीत्। और जहां ईट् आगम नहीं हुआ तहां 'दिस्योर्हसात्' इसकर दिप्‌का लोप किया तब सिद्ध हुआ। अपापक्, अपापग्। लिट्में आम्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। पापचांचकार। लिङ्में। पापच्यात्। लुट्में अनेकस्वर होनेसे इट् किया तब रूप सिद्ध हुआ। पापचिता। लुङ्में। अपापचीत्। एक जगह

१ यदि कहो कि पच्धातु तो अनिट् है फिर तादि॰में इट् कैसे किया है? तहां यह जानना कि एकस्वर पचधातुही अनिट् है न कि अनेक स्वर सो लिखाभी है। तिपाशपानुब न्धेन निर्दिष्टं यद्गणेन च। यत्रैकाज्ग्रहणं चैव पंचैतानि न यङ्लुकि॥ अर्थ-तिपूप्रत्यय काके जो कार्य कहा है अथवा शप्प्रत्ययकरके जो कार्य कहा है अथवा अनुबन्ध नाम इत्संज्ञा करके जो कार्य कहा है अथवा गणकरके जो कार्य कहा है और जिसमें एकही स्वरका ग्रहण है सो यह पांच कार्य यङ्लुक्के विषे नहीं प्राप्त होते हैं। जैसे-

'अतो हलादेर्लघोर्वा वृद्धिः' इसकर वृद्धि किया तब सिद्ध हुआ । अपापाचीत् । भुजधातुसे यङ्लुक् करनेपर 'यङि' इसकर पूर्वको गुण किया पश्चात् 'यङ्लुकि सति पिति तिस्मि वेट्' इसकर तिप्को एक जगह ईट् आगम किया तब रूप स्थित हुआ बोभुज्-ई-ति फिर 'द्वेः स्वरेऽपि नोपधाया गुणः' इसकर उपधाभूत उकारको गुण नहीं हुआ तब रूप सिद्ध हुआ । बोभुजीति । और जहां ईट् नहीं हुआ तहां गुण किया तब रूप सिद्ध हुआ । बोभोक्ति । द्विवचनमें । बोभुक्तः । बहुवचनमें । बोभुजति । लिट्में । बोभोजांचकार । लिङ्मे । बोभुज्यात् । लुट्में । बोभोजिता । लुङ्मे । अबोभोजीत् । वदधातुसे यङ्लुक् करनेपर 'आतः' इसकर पूर्वको आकार और तिप्को एक जगह ईट् आगम किया तब रूप सिद्ध हुआ । वावदीति । और एक जगह ईट् आगम नहीं हुआ तहां 'खसे चपा०' इसकर सिद्ध हुआ । वावत्ति । लिट्में । वावदाञ्चकार । लुङ्मे 'वदिव्रज्योः सौ नित्यं वृद्धिः' इसकर नित्य वृद्धि करनेपर सिद्ध हुआ । अवावादीत् । 'घट चेष्टायाम्' धातुसे यङ्लुक् करनेपर तथा तिप्प्रत्ययको एक जगह ईट् करनेपर सिद्ध हुआ । जाघटीति । और जहां तिप्प्रत्ययको ईट् नहीं हुआ तहां 'ष्टुभिः ष्टुः' इसकर तिप्के तकारको टकार किया तब सिद्ध हुआ । जाघट्टि । सिप्मे एक जगह ईट् हुआ तहां सिद्ध हुआ । जाघटीषि । और जहां ईट् नहीं हुआ तहां 'ष्टुभिः०' इसकर सिद्ध हुआ । जाघट्षि । लुङ्मे । अजाघटीत्, अजाघाटीत् । स्पर्धधातु संघर्ष नाम दूसरेके तिरस्कार करनेकी इच्छामें वर्त्ते है । जहां ईट् आगम हुआ तहां सिद्ध हुआ । पास्पर्द्धीति । और जहां ईट् आगम तिप्प्रत्ययको नहीं हुआ तहां 'तथोर्धः' इसकर तिप्के तकारको धकार किया पश्चात् 'झबे जबाः' इसकर सिद्ध हुआ । पास्पर्द्धि । सिप्मे जहां ईट् नहीं हुआ तहां 'खसे चपा झसानाम्' इसकर सिद्ध हुआ । पास्पर्त्सि । हिमे 'झसाद्धिर्हेः' इसकर हिके स्थानमें धि किया फिर 'झबे जबाः' इसकर धकारको दकार किया तब सिद्ध हुआ । पास्पर्द्धि । और एक जगह 'हसात्परस्य झसस्य लोपः सवर्णे झसे' इसकर दकारका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । पास्पार्धि । लङ्में जहां दिप्को ईट् आगम हुआ तहां सिद्ध हुआ । अपास्पर्द्धीत् । और जहां ईट् आगम नहीं हुआ तहां

'गदनदपत०' इस सूत्रमें अप्प्रत्यय और शितप्प्रत्यय धातुओंके अन्तमें करके आदिउपसर्गसे निके नकारको णकार करना कहा है इस कारण यङ्लुङ्में आदिउपसर्गसे गदनदादि धातु पर हुए सते निके नकारको णकार नहीं होगा । जैसे–प्रनिजागदीति । अनिजघंति । 'लित्पुषाद्यर्डः' इस सूत्रमें ल जो इत्सञ्ज्ञक है । उसकर डप्रत्ययका होना विधान किया सो यङ्लुङ्में डप्रत्यय नहीं होय । जैसे–अजगमीत् । और पुषादि गणसे डप्रत्ययका विधान किया इस कारण यङ्लुङ्में डप्रत्यय नहीं हुआ । जैसे–अपोपोषीत् । और 'नैकस्वरादनुदात्तात्' इसमें एकस्वरसे इट्निषेध किया है इस कारण यङ्लुङ्के विषे इट्का निषेध नहीं ॥

'दिस्योर्हसात्' इसकर दिपूका लोप करनेपर 'बावसाने' इसकर सिद्ध हुआ। अपास्पर्त्, अपास्पर्द् । सिपूमें जहां ईद् हुआ वहां सिद्ध हुआ । अपास्पर्दी । और जहां ईद् नहीं हुआ वहां एक जगह बावसाने' इसकर धकारको जहां दकार किया। वहां 'द' स' 'इसकर दकारको सकार किया फिर 'वोर्वा र' इसकर सकारको रकार किया फिर रिलोपो दीर्घश्च 'इसकर रकारका लोप और पूर्वको दीर्घ किया तब 'खोर्विसर्गः' इसकर सिद्ध हुआ । अपास्पा । और एक जगह सिद्ध हुआ । अपास्पत्, अपास्पर्द् । थिप्में । पास्पर्धांचकार । लिङ्में । पासद्ध्यो-त् । लुङ्में । पास्पर्धिता । लृङ्में । अपास्पर्धीत् । गाधृधातुसे यङ्लुक् करनेपर एक जगह तिपूको ईद् आगम किया वहां सिद्ध हुआ । जागाधीति । और एक जगह जहां ईद् नहीं हुआ वहां सयोध', झबे जबाः 'इनकर सिद्ध हुआ। जागाद्धि । द्विवचन बहुवचनमें । जागाः । जागाधति । सिपूमें प्रथम 'आदि जयार्नां०' इसकर गकारको घकार किया पश्चात् खसे चपा०' इसकर धकारको तकार किया तब रूप सिद्ध हुआ । जाघात्सि । लङ्में दिपूको जहां ईद् आगम किया वहा सिद्ध हुआ । अजागाधीत् । और जहां ईद् आगम नहीं हुआ वहां 'दिस्योर्हसात्' इसकर दिपूका लोप किया पश्चात् 'आदिजबानां०' इसकर गकारको घकार किया फिर बावसाने इसकर सिद्ध हुआ । अजाघात्। सिपूमें ईद पक्षमें । अजागाधी । और एक पक्षमें सिपूका लोप और 'आदिजबानां०' इसकर गकारको घकार किया पश्चात् 'बावसाने' इसकर दकार किया तब 'द' स' इसकर दकारको सकार कर 'खोर्विसर्गः' इसकर सिद्ध हुआ । अजाघा' । एक जगह । अजाघात् अजाघाद् । माधृधातुका तिपूमें ईद्पक्षमें सिद्ध हुआ । नानाधीति । और एक जगह खसे च० ' इसकर सिद्ध हुआ । नानात्ति । द्विव-चनमें । नानात्त' । बहुवचनमें । नानाधति । दधधातुसे यङ्लुक् करनेपर ईद् आगम किया तब सिद्ध हुआ । दादधीति । और ईद् आगम नहीं हुआ वहां 'सयोर्ध', झबे जबा 'इनकर सिद्ध हुआ । दादद्धि । सिपूमें । दाधत्सि । लङ्में । अदाद धीत्, अदाधत्, अदाधद् । सिपूमें ईद्पक्षमें सिद्ध हुआ । अदादधी' । और जहां ईद् नहीं हुआ वहां 'दिस्योर्ह०' इसकर सिपूका लोप किया फिर 'आदिजबानां० इसकर दकारको धकार किया पश्चात् 'बावसाने' इसकर एक जगह दकार और एक जगह सकार किया जहां दकार किया वहां एक जगह द' स' इसकर दकारको सकार किया तब रूप सिद्ध हुआ । अदाधः, अदाधत्, अदा धद् । लुङ्में । अदादधीत्, अदादाधीत् । मुदधातुसे यङ्लुक् करनेपर तिपूको जहां इद् किया वहां सिद्ध हुआ । मोमुदीति । और एक जगह । मोमोत्ति । लङ्के/ सिप्‌वचनमें । अमोमुदीः, अमोमो., अमोमोद्, अमोमोत् । लिङ्में । मोमोदांचकार ।

लुङ्मे । अमोमोदीत् । कुर्द्धातुसे यङ्लुक् करनेपर तिप्को ईट् किया फिर 'खो-र्विहसे' इसकर ककारउत्तरवर्त्ती उकारको दीर्घ किया तव रूप सिद्ध हुआ । चोकूर्दीति । और जहां इट् आगम नहीं हुआ तहां 'खोर्विहसे, खमे चपा०' इनकर सिद्ध हुआ । चोकूर्त्ति । द्विवचनमें । चोकूर्त्तः । चोकूर्दति । लङ्में इट्पक्षमें सिद्ध हुआ । अचोकूर्दीत् । और जहां इट् आगम दिप्को नहीं हुआ तहा 'दिस्योर्हि०' इसकर दिप्का लोप किया पश्चात् 'खोर्विहसे, वावसाने' इनकर सिद्ध हुआ । अचोकूर्त, अचोकूर्द । सिप्में इट्पक्षमे । अचोकूर्दीः । और एक जगह 'दः सः' इसकर दकारको सकार किया फिर 'रात्सस्य' इसकर सकारका लोप किया तदनन्तर 'खोर्विहसे' इसकर दीर्घ किया तव सिद्ध हुआ । अचोकूः । और एक जगह । अचोकूर्त, अचोकूर्द । लुङ्में । अचोकूर्दीत् । 'डुकृञ् करणे' धातुसे यङ्लुक् करनेके अनन्तर चकृ-ति ऐसा रूप स्थित हुआ । ऋकार है अन्तमें जिनके तथा ऋकार है उपधारूप जिनका ऐसे धातुओंके पूर्वरूपको रुक्, रिक् और रीक् यह आगम होय यङ्प्रत्ययका लुक् हुए संते । उदाहरण—चकृ-ति । इसमें यङ्प्रत्ययका लुक् हुआ है इस कारण पूर्वको रुक्का आगम किया और एक जगह तिप्को ईट् आगम किया तव सिद्ध हुआ । चर्करीति । और जहा रिक्का आगम हुआ तहां सिद्ध हुआ । चरिकरीति । और जहां रिक्का आगम हुआ तहां सिद्ध हुआ । चरीकरीति । और जहां तिप्को ईट् नहीं हुआ तहां तीनों आगम करनेसे सिद्ध हुआ । चर्कर्त्ति, चरिकर्त्ति, चरीकर्त्ति । द्विवचनमें । चर्कृतः, चरिकृतः चरीकृतः । वहुवचनमें अन्तिके स्थानमें 'द्वेः' इसकर अति करनेपर तीनों आगम करनेसे सिद्ध हुआ । चर्क्रति, चरिक्रति, चरीक्रति । लङ्में जहां दिप्को ईट् आगम हुआ तहां तीनों आगम करनेसे सिद्ध हुआ । अचर्करीत्, अचरिकरीत्, अचरीकरीत् । और जहां दिप्को ईट् आगम नहीं हुआ तहां गुण करनेके पश्चात् 'दिस्योर्हसात्' इसकर दिप्का लोप किया फिर तीनों आगम करनेसे 'स्नोर्विसर्गः' इसकर सिद्ध हुआ । अचर्कः, अचरिकः, अचरीकः । लिट्में । चर्करांचकार । लिङ्में 'यादादौ पे' इसकर ऋकारके स्थानमें रि करनेपर सिद्ध हुआ । चर्क्रियात् । लुङ्में सिकी णित्संज्ञा होनेसे नित्य वृद्धि करनेपर सिद्ध हुआ । अचर्कारीत् । द्विवचनमें । अचर्कारिष्टाम् । 'वृतु वर्त्तते' धातुसे यङ्लुक् होनेके अनन्तर ऋकार उपधारूप होनेसे पूर्वको रुक् आदिक तीनोंका आगम ईट्पक्षमें किया तव रूप स्थित हुआ वर्वृत्-ई-ति, वरिवृत्-ई-ति, वरीवृत्-ई-ति । फिर 'द्वेः स्वरेऽपि नोपधाया गुणः' इसकर गुण तो हुआ नहीं तव सिद्ध हुआ । वर्वृतीति, वरिवृतीति, वरीवृतीति । और जहां ईट् नहीं हुआ तहां तीनों आगम करनेसे सिद्ध हुआ । वर्वर्त्ति, वरिवर्त्ति, वरीवर्त्ति । लुङ्में ईट्पक्षमें । अवर्वृतीत्, अवरिवृतीत्,

अवरीवृतीत् । और जहां ईट् नहीं हुआ तहां । अवर्वेत, अवरिवर्त, अवरीवर्त् । लिट्में । वर्वर्ताचकार । लिङ्में । वर्वृत्यात् । लुट्में । वर्वर्तिता । लृट्में । वर्वर्तिष्यति । लुङ्में । अवर्वर्तीत् । 'वञ्चु वचने' धातुसे यङ्लुक् किये सते 'वंचुसंसुध्वंसु०' इसकर पूर्वको नीक् आगम किया और एक जगह तिप्को ईट् किया तब सिद्ध हुआ । वनीवञ्चीति । और जहां ईट् आगम नहीं हुआ तहां 'चो' कु' इसकर सिद्ध हुआ । वनीवङ्क्ति । द्विवचनमें 'चो , कुः नोलोप' । वनीवक्तः । बहुवचनमें । वनीवचति । सिप्में जहां ईट् हुआ तहां सिद्ध हुआ । वनीवंचीषि । और जहां ईट् नहीं हुआ तहां 'चोः कुः, किशात्य ०' इनकर सिद्ध हुआ । वनीवङ्क्षि । लङ्में ईट् आगम करनेपर सिद्ध हुआ । अवनीवञ्चीत् । और जहां ईट् आगम नहीं हुआ तहां 'दिस्योर्ईसात्, संयोगान्तस्य लोप' इनकर दिप् चकारका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । अवनीवन् । लिट्में । वनीवञ्चांचकार । लिङ्में । वनीवच्यात् । लुट्में । वनीवञ्चिता लृट्में । अवनीवञ्चीत् । गम्लृधातुसे यङ्लुक् करनेपर पूर्वको 'यमजपां नुक' इसकर नुक् आगम किया और एक जगह तिप्को ईट् किया तब सिद्ध हुआ । जंगमीति । और जहां ईट् नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । जगन्ति । द्विवचनमें 'लोपस्त्वनुदात्तवनाम्' इसकर मकारका लोप किया तब सिद्ध हुआ । जंगत' । बहुवचनमें 'गमां स्वरे' इसकर उपधारूपा अकारका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । जंगमति । मिप्में 'मो नो धातो' इसकर सिद्ध हुआ । जगन्मि । हिमें । जंगहि । लङ्में दिप्को ईट् आगम करनेपर सिद्ध हुआ । अजंगमीत् । ईट् आगम नहीं हुआ तहां 'दिस्योर्ईसात्' इसकर दिप्का लोप किया फिर 'मो नो धातो' इसकर मकारको नकार करनेपर सिद्ध हुआ । अजंगन् और लिट्में । जंगमांचकार । लुङ्में अनुबन्धनिर्दिष्ट होनेसे ङप्रत्यय नहीं हुआ किन्तु सिप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । अजंगमीत् । 'ह्यन्तक्षणश्वस०' इसकर वृद्धि नहीं हुई । हन्धातुसे हिंसार्थमें यङ्लुक् करनेपर भी आदेश किया फिर पूर्वके गुण और तिप्को ईट् आगम किया पश्चात् गुण और 'ए अय्' इसकर सिद्ध हुआ । जेघ्रयीति । और जहां ईट् तिप्को नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । जेघ्रेति । द्विवचनमें । जेघ्रीत' । बहुवचनमें 'नुधातो' इसकर इय् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । जेघ्रियति । लिट्में । जेघ्रयांचकार । और जहां हिंसा अर्थ नहीं हुआ तहां हन्धातुसे यङ्लुक करनेपर 'यमजपां नुक्' इसकर पूर्वको नुक् और 'पूर्वाद्धन्तेर्हस्य घ' इसकर घकार किया पश्चात् तिप्को ईट् आगम किया तब सिद्ध हुआ । जंघनीति । और ईट् नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । जघन्ति । द्विवचनमें 'लोपस्त्वनुदात्तवनाम्' इसकर नकारका लोप किया तब सिद्ध हुआ । जंघत' । बहुवचनमें 'गमां स्वरे' इसकर सिद्ध हुआ । जंघ्नति । लङ्में दिप्को ईट् आगम किया तहां सिद्ध हुआ ।

अजंघनीत्। और एक जगह 'दिस्योर्हसात्' इसकर दिप्का लोप किया तव सिद्ध हुआ। अजंघन्। लिट्में। जंघनांचकार। लिङ्में यङ्लुगन्तको वध आदेश होनेसे सिद्ध हुआ। वध्यात्। लुट्मे। जंघनिता। लुङ्मे 'हनो लुङ्लिङोर्वधो। लुङ्व्याति वा' इसकर यङ्लुगन्तको वध आदेश करनेपर सिद्ध हुआ। अवधीत्। चरधातुसे यङ्लुक् करनेके अनन्तर पूर्वको नुक् किया और परे अकारको 'चरफलोः पूर्वात्परस्य०' इसकर उकार किया तव तिप्को ईट् आगम करनेसे सिद्ध हुआ। चञ्चुरीति। और जहां तिप्प्रत्ययको ईट् आगम नहीं हुआ तहां 'र्वोर्विहसे' इसकर दीर्घ करनेसे सिद्ध हुआ। चञ्चूर्ति। द्विवचनमें। चञ्चूर्तः। वहुवचनमें। चञ्चुरति। लिङ्मे। चञ्चूर्यात्। लोट्मे। चञ्चुरीतु, चञ्चूर्तु, चञ्चूर्त्तात्। चञ्चूर्हि। लङ्मे। अचञ्चुरीत्। और जहा तिप्का इट आगम नहीं हुआ तहां 'दिस्योर्हसात्' इसकर तिप्का लोप किया पश्चात् 'र्वोर्विहसे, स्रोर्विसर्गः' इनकर सिद्ध हुआ। अचञ्चूः। लिट्मे।। चञ्चुरांचकार। स्कुदिधातुसे यङ्लुक् करनेके अनन्तर पूर्वको गुण और तिप्को इट् करनेपर सिद्ध हुआ। चोस्कुन्दीति। और जहा ईट् आगम नहीं हुआ तहा सिद्ध हुआ। चोस्कुन्ति। द्विवचनमें। चोस्कुन्तः। वहुवचनमें। चोस्कुन्दति। लिङ्में। चोस्कुन्द्यात्। तिप्में एक जगह। अचोस्कुन्दीत्। और एक जगह 'दिस्योर्हसात्' इसकर तिप्का लोप किया फिर 'संयोगान्तस्य लोपः' इसकर दकारका लोप किया तव रूप सिद्ध हुआ। अचोस्कुन्। खनधातुसे यङ्लुक् करनेपर 'जमजपा नुक्' इसकर पूर्वको नुक् आगम किया और तिप्को इट् आगम किया तव सिद्ध हुआ। चंखनीति। और जहां तिप्को ईट् नहीं हुआ तहा सिद्ध हुआ। चंखन्ति। द्विवचनमे 'जनसनखनमात्व०' इसकर आकार करनेपर सिद्ध हुआ। चंखातः। वहुवचनमे 'गमां स्वरे' इसकर उपधाका लोप करनेपर सिद्ध हुआ। चंख्नाति। लिङ्में विकल्पकरके आकार करनेसे सिद्ध हुआ। चंखन्यात्, चंखायात्। लोट्में। चंखनीतु, चंखन्तु। हिमें। चंखाहि। उत्तमभागमें। चंखनानि। लङ्में। अचंखनीत्, अचंखन्। लिट्में। चंखनांचकार। लुङ्में अचंखनीत्, अचंखानीत्। अचंखानिष्टाम्। 'यु मिश्रणेऽमिश्रणे च' इस धातुसे यङ्लुक् करनेपर पूर्वको गुण और तिप्को ईट् आगम कर धातुको गुण किया तव सिद्ध हुआ। योयवीति। और एक जगह। योयोति। द्विवचनमें। योयुतः। वहुवचनमें। योयुवति। लङ्में। अयोयवीत्। अयोयोत्। लिट्में। योयवांचकार। लिङ्में 'ये' इसकर दीर्घ करनेपर सिद्ध हुआ। योयूयात्। लुङ्में। अयोयावीत्। इसी प्रकार 'णु स्तुतौ' धातुका लट्में सिद्ध हुआ। नोनवीति, नोनोति। लुङ्में। नोनुयात्। लङ्में। अनोनवीत्, अनोनोत्। लिट्में। नोनवांचकार।

लिङ्में नोनूयात। शाङ्प धातुसे यङ्लुक् करनेपर पूर्वको 'आतः' इसकर आकार किया और एक जगह तिप्को ईट् किया तब सिद्ध हुआ। शाशेति, शाशाति। द्विवचनमें 'ह्रेस्वी' इसकर आकारको ईकार करनेपर सिद्ध हुआ। शाशीतः। बहुवचनमें आकारका लोप करनेसे सिद्ध हुआ। शाशति। लिङ्में। शाशीयात्। लङ्में तिप्के विषे ईट् करनेपर सिद्ध हुआ। अशाशेत्। और एक जगह। अशाशात्। द्विवचनमें अशाशीताम्। बहुवचनमें 'अन उस्, उस्याल्लोपः' इसकर सिद्ध हुआ। अशाशुः। लिङ्में। अशाशाञ्चकार। लिङ्में 'दादेरे' इसकर एकार नहीं हुआ क्योंकि वृत्तिमें अनुबन्धयुक्त शब्द गिनाया है तब 'ह्रेस्वी' इसकर सिद्ध हुआ। शाशीयात्। लुङ्में इट् करनेके पश्चात् 'आतोऽनपि' इसकर आकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ। शाशिता। लुङ्में 'यमिरमिनमातां सक् सेरिट् पे' इसकर सिद्ध हुआ। अशाशासीत्। द्विवचनमें। अशाशासिष्टाम्। 'डुदाञ् दाने' धातुसे यङ्लुक् करनेपर पूर्वको 'आतः' इसकर आकार किया और एक जगह तिप्को ईट् करनेपर सिद्ध हुआ। दादेति। और एक जगह। दादाति। द्विवचनमें 'दादेः' इसकर आकारका लोप किया दकारको 'खसे च०' इसकर तकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ। दात्तः। बहुवचनमें। दादति। लिङ्में। दादयात्। हिमें 'दा हौ' इसकर पूर्वका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ। देहि। लङ्में। अदादेत्, अदादात्। अन्में। अदादुः। लिङ्में। दादाञ्चकार। लिङ्में 'दादेरे' इसकर सिद्ध हुआ। दादेयात्। लुङ्में दादिकको इट् करनेपर 'आतोऽनपि' इसकर सिद्ध हुआ। दादिता। लुङ्में 'दादेः पे' इसकर सिच्प्रत्ययका लोप करनेपर एक जगह ईट् करनेसे सिद्ध हुआ। अदादेत्। और एक जगह। अदादात्। द्विवचनमें। अदादाताम्। धेट्धातुसे यङ्लुक् करनेके अनन्तर डुदाञ्धातुके समान सिद्ध हुआ। दाधेति, दाधाति। द्विवचनमें 'दादे०' इसकर आकारका लोप किया फिर 'दधोर्धः' इसकर तस्के तकारको धकार किया पश्चात् 'हवे जवा' इसकर सिद्ध हुआ। दाद्धः। बहुवचनमें। दाधति। लिङ्में। दाध्यात्। लोट्के द्विवचनमें 'दा हौ' इसकर सिद्ध हुआ। धेहि। आशीर्लिङ्में 'दादेः पे' इसकर एकार करनेपर सिद्ध हुआ। दाधेयात्। लुङ्में 'घ्राधासाच्छा-धेटां वा' इसकर एक जगह सिच्का लोप हुआ तहां सिद्ध हुआ। अदाधेत्, अदाधात्। और एक जगह 'यमिरमिनमातां सक् सेरिट् पे' इसकर सिद्ध हुआ। अदाधासीत्। और एक जगह 'धेटो मृतमात्रे दिवादिपरो ङो वा द्वित्वं च' इसकर ङप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। अदाधत्। अदाधता। बहुवचनमें अदाधन्। कोई आचार्य ङप्रत्ययका निषेध करते हैं क्योंकि अनुबन्धयुक्त धेट् धातुका ग्रहण किया है। डुधाञ्धातुसे यङ्लुक् करनेपर तिप्में सिद्ध हुआ।

दाधाति, दाधोति । द्विवचनमें 'दादेः०' इसकर आकारका लोप किया फिर 'तथोर्धः' इसकर तस्के तकारको धकार नहीं हुआ क्योंकि वृत्तिम डुधाञ्धातुका निषेध किया तब 'खसे च०' इसकर धकारको तकार और 'पूर्वस्य ञिति झसे धः' इसकर पूर्व दकारको धकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । धात्तः । वहुवचनमे । दाधाति । लिङ्में । दाध्यात् । लिङ्में । दाधेयात् । लुङ्में सिप्रत्ययका लोप किया तब सिद्ध हुआ । अदाधात, अदाधेत् । दैप् दाप् धातुसे यङ्लुक् करनेपर सिद्ध हुआ । दादाति, दादेति । द्विवचनमें 'द्वेस्तौ' इसकर सिद्ध हुआ । दादीतः । वहुवचनमे दादाति । लिङ्में । दादीयात । हिमें । दादीहि । लिट्में । दादाञ्चकार । लिङ्में । दादायात् । लुट्में । दादिता । लुङ्में 'यमिरमिनमातां०' इसकर सिद्ध हुआ । अदादासीत् । 'ञिष्वप् शये' धातुसे यङ्लुक् करनेपर पूर्वको 'आतः' इसकर आकार करनेपर इट्पक्षमें । सास्वपीति । और अनीट्पक्षमें । सास्वप्ति । द्विवचनमें । सास्वप्तः । वहुवचनमें । सास्वपति । लिङ्में । सास्वप्यात । हिमें 'झसाद्धिर्हिः, झबे जबाः' इनकर सिद्ध हुआ । सास्वब्धि । लिङ्में । असास्वपीत, असास्वप् । लिट्में सास्वपाञ्चकार । लिङ्में 'यजां०' इसकर संप्रसारण करनेपर रूप सिद्ध हुआ । सासुप्यात् । लुट्में । सास्वपिता । लुङ्में । असास्वापीत, असास्वपीत । 'कृ विक्षेपे' धातुसे यङ्लुक् करनेपर इट्पक्षमें । चाकरीति । और एक जगह । चाकर्त्ति । द्विवचनमें 'ऋत इर्' इसकर इर् कर पश्चात् 'र्वोर्विहसे' इसकर सिद्ध हुआ । चाकीर्त्तः । वहुवचनम 'ऋत इर्' इसकर सिद्ध हुआ । चाकिराति । लिङ्में चाकीर्यात् । लङ्में अचाकरीत् । और जहां ईट् नहीं हुआ तहां गुण करनेके पश्चात् 'दिस्योर्हसात्' इसकर दिप्का लोप किया फिर 'स्रोर्विसर्गः' इसकर सिद्ध हुआ । अचाकः । वहुवचनमें । अचाकरुः । लिट्में । चाकरांचकार । लिङ्में । चाकीर्यात् । लुट्में । चाकरिता । लुङ्में । अचाकारीत् । इसी प्रकार 'तॄ प्लवनसंतरणयोः' धातुके रूप जानने । तातरीति, तातर्ति । तातीर्तः । तातिराति । इत्यादि । ऋधातुको यङ्लुक्क विषै द्वित्व करनेपर 'रः' इसकर पूर्वको अकार करनेके अनन्तर 'ऋकारान्तानामृदुपधानां च' इसकर इट्पक्षमें रुक् आगम किया तहां गुण करनेसे सिद्ध हुआ । अररीति । और जहां रिक् रीक् आगम हुआ तहां स्थित हुआ । अरिअरीति, अरीअरीति । फिर 'असवर्णे स्वरे०' इसकर दोनोंमें इय् करनेसे सिद्ध हुआ । अरियरीति, अरीयरीति । और जहां ईट् नहीं हुआ तहां पूर्वको रुक, रिक्, रीक् आगम करनेपर सिद्ध हुआ । अरर्त्ति, अरियर्त्ति, अरीयर्त्ति । द्विवचनमें । अर्ऋतः । रिक्, रीक् आगम करनेपर 'असवर्णे स्वरे०' इसकर इय् करनेपर सिद्ध हुआ । अरियृतः, अरीयृतः । वहुवचनमें 'ऋ रम्' इसकर रकार किया और पूर्वको रुक आगम किया तब रूप स्थित हुआ

अर्-र् अ-ति फिर ' रिलोपो दीर्घश्च ' इसकर रकारका लोप और पूर्वको दीर्घ किया तब सिद्ध हुआ । आराति । और जहां रिक् रीक् आगम हुए वहां ' असवर्णे स्वरे० ' इसकर इय् करनेके पश्चात् ' अर ' इसकर सिद्ध हुआ । अरियर्ति, अरीयर्ति । ऌङ्में इट्पक्षमें । आररीत्, आरियरीत्, अरीयरीत् । और जहां इट् नहीं हुआ वहां 'धातुको गुण करनेके पश्चात् रुक् आगममें ' खरविसर्गे ' ' इसकर सिद्ध हुआ । आरः । और रिक् रीक् आगममें ' असवर्णे स्वरे० ' इसकर इय् करनेसे सिद्ध हुआ । आरियः, अरियः । लिट्में । अरांचकार, अरियरांचकार । लिङ्में ' यादादौ पे ' इसकर ऋधातुके स्थानमें रिङ् किया पश्चात् पूर्वको रुक् आगम किया तब रूप स्थित हुआ । अर्-रियात् । फिर ' रिलोपो दीर्घश्च ' इसकर रकारका लोप और पूर्वको दीर्घ करनेपर रूप सिद्ध हुआ । आरियात् । और जहां रिक् रीक् आगम हुए वहां सिद्ध हुआ । अरिरियात्, अरीरियात् । लुट्में । अरिता, अरियरीता, अरीयरिता । लृङ्में । आगरीत्, आरियारीत्, आरीयारीत् । आरियारिष्यम् । गृह्धातुसे यङ्लुक् करनेपर पूर्वको, रुक्, रिक्, रीक् यह आगम किया फिर तिप्को एक जगह ईट् आगम किया पश्चात् ' ढेः स्वरेऽपि नोपधाया गुण ' इसकर गुण न किया तब सिद्ध हुआ । जर्गृहीति, जरिगृहीति, जरीगृहीति । और इंट् आगम नहीं हुआ वहां ' हो ढ', तयोर्धः, ष्टुमि ०, ढि ढो लोपो दीर्घश्च, उपधाया लघो ' इनकर सिद्ध हुआ । जर्गाढि । द्विवचनमें । जगृढः, जरिगृढः, जरीगृढः । बहुवचनमें । जगृहति । सिप्में उपधाया लघो , हो ढः, आदिजबानां०, षढोः कस्से कि० ' इनकर सिद्ध हुआ । जर्घोक्षि । लिङ्में । जर्गृह्यात् । लोट्में । जर्गृहीतु, जगर्ढु । हिमें ' हुझल्भ्यो हेर्धिः' हो ढ', ष्टुमि० , ढि ढो लोपो दीर्घश्च ' इनकर सिद्ध हुआ । जगृढि । ऌङ्में इट्पक्षमें । अजगृहीत् । और इट् नहीं हुआ वहां ' हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् ' इसकर तिप्का लोप किया फिर हो ढ ' इसकर हकारका ढकार किया । फिर ' आदिजबानां० ' इसकर गकारको घकार किया ' उपधाया लघो ' इसकर गुण करनेपर ' वावसाने ' इसकर सिद्ध हुआ । अजर्घट् अजर्घड् । द्विवचनमें । अजगृढाम् । बहुवचनमें । अजगृहुः । लिट्में । जगर्हांचकार । लिङ्में । जर्गृह्यात् । लुट्में । जर्गर्हिता । लृङ्में । अजगर्हीत् । ' प्रइ उपादाने ' धातुसे यङ्लुक् करनेपर पूर्वको ' आत ' इसकर आकार किया फिर ईट् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । जाग्रहीति । और जहां इट् नहीं हुआ वहां ' हो ढ', तयोर्ध' ष्टुमि०, ढि ढो लोपो दीर्घश्च ' इनकर सिद्ध हुआ । जाग्राढि । तस्में संप्रसारण किया क्योंकि सम्प्रसारण होनेका ङित्संज्ञक निमित्त है तब सम्प्रसारणको ' असिद्धं बहिरंगमन्तरंगे ' इसकर असिद्ध होनेसे रुक् रिक् रीक् यह आगम पूर्वको नहीं हुए तब हो ढ', तयोर्ध', ष्टु०, ढि ढो० ' इनकर सिद्ध हुआ । जा-

गृढः । बहुवचनमें । जागृहति । सिप्में । इट्पक्षमें । जाग्रहीषि । और इट् नहीं हुआ तहां 'हो ढः, आदिजबानां०, षढोः, कि०' इनकर सिद्ध हुआ । जाघ्राक्षि । लङ्में इट्पक्षमें । अजाग्रहीत् । और जहां इट् नहीं हुआ तहां 'दिस्योर्हे०, हो ढः, आदिजबानां०, वावसाने' इनकर सिद्ध हुआ । अजाग्रट्, अजाग्रड् । द्विवचनमें । अजागृढाम् । बहुवचनमें । अजागृहुः । लिट्में । जाग्रहांचकार । लिङ्में । जागृह्यात् । लुट्में 'इटो ग्रहाम्' इस सूत्रके विषै एक स्वर ग्रहधातुका ग्रहण होनेसे यङ्लुक्में दीर्घ नहीं होय । माधव दीर्घ होना कहते हैं वह भाष्यविरुद्ध है तब सिद्ध हुआ । जाग्रहिता । लुङ्में 'ह्म्यन्तक्षण०' इसकर वृद्धि नहीं होनेसे सिद्ध हुआ । अजाग्रहीत् । गृधुधातुसे यङ्लुक् करनेपर 'ऋदन्तानामृदुपधानां च' इसकर पूर्वको रुक् रिक्, रीक् यह आगम करनेपर इट्पक्षमें । जर्गृधीति, जरिगृधीति, जरीगृधीति । और जहां इट् नहीं हुआ तहां 'उपधायाः, तथोर्धः, झबे जबाः' इनकर सिद्ध हुआ । जर्गर्द्धि । द्विवचनमें । जर्गृद्धः । बहुवचनमें । जर्गृधति । सिप्में इट्पक्षमें । जर्गृधीषि । और जहां इट् नहीं हुआ तहां 'उपधाया लघोः, आदिजबानां०, खसे च०' इनकर सिद्ध हुआ । जर्घर्त्सि । लिङ्में । जर्गृध्यात् । लङ्में इट्पक्षमें । अजर्गृधीत् । और जहां इट् नहीं हुआ तहां 'उपधाया लघोः' इसकर गुण किया फिर 'दिस्योर्हे०' इसकर दिप्का लोप फिर 'आदिजबानां०' इसकर गकारको घकार किया फिर 'वावसाने' इसकर सिद्ध हुआ । अजर्घर्त्, अजर्घर्द् । द्विवचनमें । अजर्गृद्धाम् । बहुवचमें । अजर्गृधुः । सिप्में इट्पक्षमें । अजर्गृधीः । और इट् नहीं हुआ तहां 'उपधाया लघोः, दिस्योर्हे०, आदिजबानां०, वावसाने' इसकर सिद्ध हुआ । अजर्घर्त् । और जहां 'वावसाने' इसकर एक जगह दकार हुआ तहां 'दः सः' इसकर दकारको सकार किया फिर 'दोषां रः' इसकर रकार किया तब रूप स्थित हुआ अजर्घर्-र् फिर 'रिलोपो दीर्घश्च' इसकर रकारका लोप और पूर्व दीर्घ करनेपर सिद्ध हुआ । अजर्घाः । और एक जगह । अजर्घर्द् । लिट्में । जर्गर्द्धांचकार । लिङ्में । जर्गृध्यात् । लुट्में । जर्गर्धिता । लुङ्में । अजर्गर्धीत् । 'प्रच्छ ज्ञीप्सायाम्' धातुसे यङ्लुक् करनेपर पूर्वको 'आतः' इसकर आकार करनेपर इट्पक्षमें सिद्ध हुआ । पाप्रच्छीति । और इट्के अभावमें 'छशष०' इसकर छकारको षकार करनेपर 'ष्टुभिः०' इसकर सिद्ध हुआ । पाप्रष्टि । द्विवचनमें तस्प्रत्यय प्रयुक्त करनेपर 'ग्रहां क्ङिति च' इसकर संप्रसारण नहीं हुआ क्योंकि वृत्तिमें पृच्छधातु शितप्प्रत्यय करके कहा है तब रूप स्थित हुआ । पाप्रच्छ-तस् ॥

क्ङिति झसे कौ भभे च च्छस्य शो वस्य ऊः ॥ ३९८ ॥ पाप्रष्टः ।

पामच्छति । पामस्सि । पामतच्छः । पामश्श ॥ दध् गतौ जाहयीति । यस्पोर्वसे इकारे च लोपः । जाहति । जाहतः । जाहयति । जाहयीषि जाहसि । जाहामि । जाहाव । जाहाम । अजाहयीत् अजाहत् । जाहय्यात् ॥ हर्य गतिकान्त्योः ॥ जाहर्यीति जाहर्ति । जाहर्तः । जाहर्यति । जाहर्हि । अजाहर्यीत् अजाहः । अजाहर्ताम् । अजाहर्युः ॥

भाषा—विसर्गान्तसंज्ञक झसप्रत्याहारसंबंधी प्रत्यय पर हुए सते और क्विप् और झमप्रत्याहारसम्बंधी प्रत्यय पर हुए संते छकारको शकार और वकारको ऊकार होय । उदाहरण—पामच्छ-तस् । इसमें विसर्गसंज्ञक झसप्रत्याहारसम्बन्धी तस् प्रत्यय परे विद्यमान है इस कारण छकारको शकार करनेपर ' छशष० ' इसप्रकार षकार किया फिर ' ष्टुभि० ' इसप्रकार सिद्ध हुआ । पामष्टः । बहुवचनमें । पामच्छति । सिप्में ' छशष०, षढो कस्से, कि० ' इसप्रकार सिद्ध हुआ । पामक्षि । मिप्में ' छिवि छसे को अमे च०' इसप्रकार शकार करनेपर सिद्ध हुआ । पामश्मि । द्विवचनमें । पामश्वः । बहुवचनमें । पामश्म । लिङ्में । पामच्छ्यात् । हिमें ' झसादिर्हे ' इसप्रकार हिको धि किया फिर छकारको शकार किया ' छशष० ' इसप्रकार षकार किया तत्पश्चात् ' ष्टुभि० ' इसप्रकार धिको ढि किया फिर ' झबे जबाः ' इसप्रकार स्थानसवर्ण होनेसे धकार करनेपर सिद्ध हुआ । पामड्ढि । लङ्में इट्पक्षमें अपामच्छीत् । और ईट्के अभावमें ' विस्योर्द०, छशष०, वावसाने ' इसप्रकार सिद्ध हुआ । अपामट्, अपामड् । द्विवचनमें । अपामष्टाम् । बहुवचनमें । अपामच्छुः । लिट्में । पामच्छाञ्चकार । लिङ्में । पामच्छ्यात् । लुट्में । पामच्छिता । लुङ्में । अपामच्छीत् । ' दध् गतौ ' धातुसे यङ्लुक् करनेपर ईट्पक्षमें । पूर्वको ' आत ' इसप्रकार आकार करनेपर सिद्ध हुआ । जाहयीति । और ईट्के अभावमें यकार और वकारका लोप होय वसप्रत्याहार तथा इकार पर हुए सते । उदाहरण—जाहय्-न्ति । इसमें यकारका लोप किया क्योंकि वसप्रत्याहारसंबन्धी तिप् प्रत्यय परे है तब रूप सिद्ध हुआ । जाहति । द्विवचनमें यकारका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । जाहतः । बहुवचनमें । जाहयति । मिप्के विषै यकारका लोप करनेके अनन्तर ' ष्योरा ' इसप्रकार सिद्ध हुआ । जाहामि । लिङ्में । जाहय्यात् । हिमें । जाहहि । लङ्में ईट्पक्षमें । अजाहयीत् । और ईट्के अभावमें यकारका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । अजाहत् । द्विवचनमें । अजाहताम् । बहुवचनमें । अजाहयुः । लिट्में । जाहयाञ्चकार । लिङ्में । जाहय्यात् । लुट्में । जाह

यिता । लुङ्में 'ह्म्यन्तक्षण०' इसकर वृद्धि नहीं होनेसे सिद्ध हुआ । अजाहयीत् । हर्यधातुसे यङ्लुक् करनेपर ईट्पक्षमें । जाहर्यीति । और इट्के अभावमें यकारका लोप करनेसे सिद्ध हुआ । जाहर्त्ति । द्विवचनमें । जाहृर्त्तः । बहुवचनमें । जाहर्यति । मिप्में । जाहर्मि । जाहर्वः । जाहर्मः । लिङ्में । जाहर्य्यात् । हिमें । जाहर्हि । लङ्में ईट्पक्षमें । अजाहर्यीत् । और इट्के अभावमें यकारका लोप करनेके अनन्तर 'दिस्योर्ह०' इसकर दिप्का लोप किया फिर "खरवसानयोर्विसर्गः" इसकर सिद्ध हुआ । अजाहः । लिट्में । जाहर्याचकार । लिङ्में । जाहर्य्यात् । लुट्में । जाहर्यियता । लुङ्में । अजाहर्यीत् ॥

ज्वरत्वरस्रिव्यविमवामुपधायाश्च ॥ ४९६ ॥ क्वौ झलादौ अमादौ हकारे च प्रत्यये परे ॥ जाज्वरीति । जाजूर्ति । जाजूर्तः । जाज्वरति । जाजूर्वः जाजूर्मः । अजाज्वरीत् अजाजूः । तात्वरीति तातूर्ति । अतात्वरीत् अतातूः । सेस्रिवीति सेस्रोति । सेस्रोव्यात् । असेस्रिवीत् असेस्रोत् ॥ मव बन्धने ॥ मामवीति मामोति । मामूतः । मामवति । मामवः । मामूमः । मामूहि । मामवानि । अमामवीत् अमामोत् । सिपि । अमामवीः अमामोः । अमामवम् । अमामाव । अमामूम ॥ तुर्वी थुर्वी दुर्वी धुर्वी हिंसायाम् ॥ तोतुर्वीति ॥

भाषा—ज्वर, त्वर, स्रिव, अव, मवधातु इनके उपधा और वकार दोनोंके स्थानमें ऊ होय क्विप्रत्यय तथा झलप्रत्याहारादि प्रत्यय तथा अमप्रत्याहारादि प्रत्यय तथा हकारादि प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—'ज्वर रोगे' धातुसे यङ्लुक् करनेपर पूर्वको "आतः" इसकर आकार किया तब ईट्पक्षमें सिद्ध हुआ । जाज्वरीति । और ईट्के अभावमें झलप्रत्याहारादि तिप्प्रत्यय परे होनेसे ज्वरधातुके उपधारूप अकार और वकार दोनोंके स्थानमें ऊ करनेपर रूप सिद्ध हुआ । जाजूर्ति द्विवचनमें । जाजूर्त्तः । बहुवचनमें । जाज्वरति । मिप्में ईट्पक्षमें । जाज्वरीमि । ईट्के अभावमें । जाजूर्मि । द्विवचनमें । जाजूर्वः । लिङ्में । जाज्वर्यात् । लङ्में ईट्पक्षमें । अजाज्वरीत् । इट्के अभावमें उपधावकारको ऊ किया और 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' 'दिस्योर्ह०' इसकर दिप्का लोप किया तब 'खरवसानयोर्विसर्गः' इसकर सिद्ध हुआ । अजाजूः । लिट्में । जाज्वरांचकार । लिङ्में । जाज्वर्यात् । लुट्में । जाज्वरिता । लुङ्में । अजाज्वरीत्, अजाज्वारीत् । 'ञित्वरा संभ्रमे' धातुसे यङ्लुक् करनेपर ज्वरधातुके समानही रूप जानने । तात्वरीति, तातूर्त्ति । तातूर्त्तः । स्रिवुधातुसे यङ्लुक् करनेपर

ईट्पक्षमें सिद्ध हुआ । सेसिवीति और इट्के अभावमें सिव्धातुके उपधारूप इकार और वकार दोनोंके स्थानमें ऊकार करनेपर पश्चात् गुण किया तब सिद्ध हुआ । सेस्योति । द्विवचनमें उपधावकारको ऊकार करनेपर सिद्ध हुआ । सेस्यूत । बहुवचनमें । सेसिव्यति । मिपूमें । सेसिवीमि । इट्के अभावमें वकार इकारको ऊकार कर गुण करनेपर सिद्ध हुआ । सेस्योमि । द्विवचनमें 'यवयोर्वसे इकारे च लोपः' इसकर वकारका लोप किया तब सिद्ध हुआ । सेस्विः । बहुवचनमें अमप्रत्याहारादि प्रत्यय पर होनेसे उपधावकारके स्थानमें ऊकार करनेसे सिद्ध हुआ । सेस्यूमः । लिङ्में 'य्वोर्विङ्से' इसकर दीर्घ करनेपर सिद्ध हुआ । सेसीव्यात् । लङ्में ईट्पक्षमें । असेसिवीत् । इट्के अभावमें उपधावकारको ऊकार कर पश्चात् गुण करनेपर सिद्ध हुआ । असेस्योत् । लिट्में । सेसेवांचकार । लिङ्में सेसीव्यात् । लुट्में । सेसेविता । लुङ्में । असेसेवीत् । 'मव बन्धने' धातुसे यङ्लुक् करनेपर ईट्पक्षमें । मामवीति । और इट्के अभावमें झलमप्रत्याहारादि विमत्यय पर होनेसे उपधावकारके स्थानमें ऊकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । मामोति । द्विवचनमें । मामूतः । यहां क्लिप्रत्यय पर होनेसे गुण नहीं हुआ । बहुवचनमें । मामवति । मिपूमें । मामवीमि । इट्के अभावमें उपधावकारको ऊकार कर गुण करनेपर सिद्ध हुआ । मामोमि । द्विवचनमें 'यवयोर्वसे इकारे च लोपः' इसकर वकारका लोप किया फिर 'म्वोरा' इसकर पूर्व अकारको आकार किया तब सिद्ध हुआ । मामावः । बहुवचनमें । मामूमः । लिङ्में मामव्यात् । लिङ्में । मामूहि । लङ्में ईट्पक्षमें । अमामवीत् । इट्के अभावमें उपधावकारको ऊकार कर गुण करनेपर सिद्ध हुआ अमामोत् । लिट्में । मामवांचकार । लिङ्में । मामव्यात् । लुट्में । मामविता । लुङ्में । अमामावीत्, अमामवीत् । तुर्वी धातुमें इकार इत्संज्ञक है । इस धातुसे यङ्लुक् करनेपर ईट्पक्षमें 'य्वोर्विङ्से' इसकर दीर्घ करनेसे, सिद्ध हुआ । तोतूर्वीति । इट्के अभावमें तोतूर्वति ऐसा स्थित है ॥

रेफाच्छ्वोर्लोपः ॥४४७॥ च्छ्वोः झसादौ अमादौ हे च प्रत्यये ॥ तोतोर्ति । तोतूर्त । तोतूर्वति । तोतूर्वीषि तोतोर्षि । तोतूर्व । तोतूर्म । तोतूर्ति । अतोतूर्वी अतोतो । तोतोर्षि । तोतूर्त तोतोर्ति । तोतो-र्ति ॥ मूर्च्छा मोहसमुच्छ्राययोः ॥ मोमूर्च्छीति मोमोर्ति । मोमूर्तः । मोमूर्च्छति । मोमूर्मः । अमोमूर्च्छीत् ॥ इति यङ्लुगन्तप्रक्रिया ॥

भाषा-रेफात्से धातुके छकार और वकार दोनोंका लोप होय झिप्रत्यय पर हुए रहे तथा झलमप्रत्याहारादि तथा अमप्रत्याहारादि तथा हप्रत्ययादि प्रत्यय पर हुए रहे । उदाहरण-तोतूर्ति । इसमें झलमप्रत्याहारादि विप्रत्यय परे विद्यमान

है और रकारसे परे धातुका वकार विद्यमान है इस कारण वकारका लोप करनेपर 'उपधाया लघोः' इसकर गुण किया तव सिद्ध हुआ। तोतोर्ति । द्विवचनमें 'रेफाच्छोर्लोपः' इसकर वकारका लोप किया फिर 'य्वोर्विहसे' इसकर सिद्ध हुआ। तोतूर्तः। वहुवचनमें । तोतूर्वति । मिपूमें । तोतूर्वीमि, तोतोर्मि । द्विवचनमें 'यमयोर्वसे' इसकर वकारका लोप किया फिर 'य्वोर्विहसे' इसकर सिद्ध हुआ। तोतूर्वः। वहुवचनमें। तोतूर्मः। लिङ्में। तोतूर्व्यात् । लङ्मे ईट्पक्षमें । अतोतूर्वीत्। और ईट्के अभावमें 'रेफाच्छोर्लोपः' इसकर वकारका लोप किया फिर 'उपधाया लघोः' इसकर गुण किया 'दिस्योर्ह०' इसकर दिप्का लोप किया 'स्रोर्वि०' इसकर रकारको विसर्ग किया तव सिद्ध हुआ। अतोतोः। लिट्में। तोतूर्वांचकार। लिङ्में। तोतूर्व्यात्। लुट्म । तोतूर्विता। लुङ्में अतोतूर्वीत्। इसी प्रकार तुर्वी थुर्वी धुर्वी धातुओंके रूप सिद्ध करने चाहिये । मूर्च्छाधातुसे यङ्लुक् करनेपर ईट्पक्षमें 'य्वोर्विहसे' इसकर दीर्घ करनेपर सिद्ध हुआ। मोमूर्च्छीति । और ईट्के अभाममें 'रेफाच्छोर्लोपः' इसकर छकारका लोप किया फिर 'उपधाया लघोः' इसकर गुण किया तव सिद्ध हुआ। मोमोर्त्ति । द्विवचनभ । छकारका लोप करनेपर 'य्वोर्विहसे' इसकर सिद्ध हुआ। मोमूर्त्तः। वहुवचनमें । मोमूर्च्छति । मिपूमें। मोमूर्च्छीमि । ईट्के अभावमे । मोमोर्मि । मोमूर्छः। वहुवचनमें। मोमूर्मः। लिङ्में। मोमूर्छ्यात्। लङ्में ईट्पक्षमें । अमोमूर्छीत् । ईट्के अभावमे 'रेफाच्छोर्लोपः' इसकर छकारका लोप किया फिर 'उपधाया लघोः, दिस्योर्ह०, स्रोर्विसर्गः' इनकर सिद्ध हुआ। अमोमोः। लिट्में । मोमूर्छाचकार । लिङ्में। मोमूर्छ्यात्। लुट्मे । मोमूर्छिता। लुङ्में। अमोमूर्छीत् ॥ इति यङ्लुगन्तप्रक्रिया ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामेण भाषया। कृतं गुरुपदं ध्यात्वा यङ्लुगन्तप्रसाधनम् ॥ ४ ॥

नाम्नो य ई चाऽस्य ॥ ४४८ ॥ नाम्न इच्छायामर्थे यप्रत्ययो भवत्यवर्णस्य च ईकारः ॥ आत्मनः पुत्रमिच्छति पुत्रीयति। क्वचित्स्वरवद्यकारः । गामिच्छति गव्यति । गव्याञ्चकार । नाव्यति । नाव्याञ्चकार । त्वामिच्छति त्वद्यति ॥

भाषा—आत्मसंवन्धिनी इच्छा हुए संते कर्मसंज्ञामें वर्त्तमान हुए नामसे यप्र-

---

१ यद्यपि 'यवयोर्वसे०' इसकर वकारका लोप सिद्ध होता है तथापि तोतूर्त्तः इत्यादिकमें वकारके लोप करनेके अर्थ 'रेफाच्छोर्लोपः यह सूत्र रक्खा है क्योंकि यदि यह विशेष सूत्र न होता तो 'यवयोर्वसे०' इस सूत्रका विधान किये वकारकेलोपको बाधित कर 'क्विडति झसे क्वि०, अमे च०' इसकर वकारका ऊकार हो जाता ॥

त्यय होय और यप्रत्यय पर हुए संते अवर्णको ईकार होय । उदाहरण—आत्मनः पुत्रमिच्छति । इसमें आत्मसंबन्धी इच्छा अर्थ वर्त्तमान है इस कारण कर्मसंज्ञक पुत्रनाममें यप्रत्यय किया तब रूप स्थित हुआ पुत्र+य फिर यप्रत्यय पर होनेसे अकारको ईकार किया तब रूप स्थित हुआ पुत्रीय फिर ' सधातु ' इसकर नामसंज्ञा होनेपर ' धातुत्यादिवाद्य ' इसकर तिप्में सिद्ध हुआ । पुत्रीयति । लिट्में । पुत्रीयाञ्चकार । लिङ्में ' यतः ' इसकर अकारका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । पुत्रीय्यात् । लादिकर्में । पुत्रीयिता । लुङ्में । अपुत्रीयीत् । कहीं मयोगान्तरोंमें स्वरके समान मकार माना जाता है अर्थात् जो कार्य स्वर पर हुए संते होता है वही कार्य कहीं मयोगान्तरोंमें यकार पर हुए संते होता है । उदाहरण—गामिच्छति । इसमें आत्मसम्बन्धी इच्छा वर्त्तमान है इस कारण गोशब्दसे यप्रत्यय किया फिर स्वरके समान मकार होनेसे ' ओ अव् ' इसकर रूप स्थित हुआ गव्य फिर धातु संज्ञा होनेपर सिद्ध हुआ । गव्यति । लिट्में आम्प्रत्यय करनेपर ' इहायस्य लोपो वाऽनपि नामधातो ' इसकर यकारका लोप नहीं हुआ क्योंकि स्वरके स्थानमें यकार विधान किया तब रूप सिद्ध हुआ । गव्याञ्चकार । लुट्में । गव्यिता । नौशब्दसे यप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । नाव्यति । लिट्में । नाव्याञ्चकार । त्वामिच्छति इसमें एकवचनार्थ युष्मद्शब्दसे यप्रत्यय करनेपर ' त्वन्मदेकत्वे ' इसकर युष्मद् शब्दको त्वद्आदेश किया तब धातुसंज्ञा होनेपर सिद्ध हुआ । त्वद्यति ॥

इहायस्य लोपो वाऽनपि नामधातो ॥ ४४९ ॥ त्वदांचकार । त्वद्याचकार । मामिच्छति मद्यति । युष्मद्यति । अस्मद्यति ॥

भाषा—नामकी धातुसंज्ञा होनेपर इससे यप्रत्ययके यकारका लोप होय विकल्पकरके अप्विषयवर्जितमें । उदाहरण—लिट्में आम्प्रत्यय करनेपर ' यतः ' इसकर यप्रत्ययके अकारका लोप किया फिर ' इहायस्य लोपो वा ' इसकर एक जगह यकारका लोप किया तब सिद्ध हुआ । त्वदांचकार । और एक जगह । त्वद्याञ्चकार । मामिच्छति इसमें एकवचनार्थ अस्मद्शब्दसे यप्रत्यय करनेपर ' त्वन्मदेकत्वे ' इसकर अस्मद्शब्दको मद् आदेश किया तब सिद्ध हुआ । मद्यति । लिट्में । मदांचकार, मद्याञ्चकार । और जहां एकवचनार्थ नहीं होय तहां ' त्वन्मदेकत्वे ' इसकर युष्मद्के स्थानमें त्वद् और अस्मद्के स्थानमें मद् आदेश नहीं होय किन्तु युष्मद् अस्मद्शब्दसे यप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । युष्मद्यति । अस्म

काम्यश्च ॥ ४५० ॥ पुत्रकाम्यांचकार ॥

भाषा—आत्मसंबन्धी इच्छाअर्थमें कर्मके विषें वर्त्तमान हुए नामसे काम्यप्रत्यय होता है । उदाहरण—पुत्रशब्दसे इच्छाअर्थमें काम्यप्रत्यय करनेपर ' सधातु '

इसकर धातुसंज्ञा होनेसे सिद्ध हुआ । पुत्रकाम्यति । लिट्में । पुत्रकाम्याञ्चकार । लुट्में ' यतः ' इसकर अकारका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । पुत्रकाम्यिता । यहां परभी यकारका लोप नहीं हुआ क्योंकि परिभाषावचन है । ' अर्थवद्ग्रहणे नानर्थकस्य ग्रहणम् ' इति ॥

धनस्य नेकारोऽगार्द्धे ॥४९१॥ धनायति । अन्यत्र । धनीयति ॥

भाषा—अतितृष्णायुक्त इच्छा अर्थमें धनशब्दके अकारको ईकार नहीं होय यप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—धने सत्यपि पुनर्धनमिच्छति । इसमें अति तृष्णायुक्त इच्छाअर्थ विद्यमान है क्योंकि धन विद्यमान है पर तबभी धनकी इच्छा करता है इस कारण यप्रत्यय करनेपर धनके अकारको ईकार नहीं हुआ तब ' ये ' इसकर दीर्घ कर सिद्ध हुआ । धनायति । और जहां अतितृष्णायुक्त इच्छाअर्थ नहीं किन्तु साधारण इच्छाअर्थ है तहां यप्रत्यय पर होनेसे धनशब्दके अकारको ईकार होय । उदाहरण—यश्च दरिद्रः सन् धनमिच्छति । इसमें साधारण इच्छाअर्थ है इस कारण यप्रत्यय करनेपर धनशब्दके अकारको ईकार करनेपर सिद्ध हुआ । धनीयति ॥

उदकस्योदन् पिपासायाम् ॥ ४९२ ॥ उदन्यति । अन्यत्रोदकीयति । गीर्य्यति । गिरांचकार । गीर्य्याञ्चकार । पूर्य्यति । दिवमिच्छति दिव्यति । असुमिच्छति अदस्यति । ऋतोरिः । कर्त्रीयति ॥

भाषा—पान करनेकी इच्छाके विषैं उदकशब्दको उदन् आदेश होय यप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—यश्च सद्य एव उदकं पातुमिच्छति । इसमें तत्कालही पान करनेकी इच्छा विद्यमान है इस कारण यप्रत्यय करनेके अनन्तर उदकशब्दको उदन् आदेश करनेपर रूप सिद्ध हुआ । उदन्यति । और एक जगह उदकशब्दसे यप्रत्यय करनेपर अकारको ईकार करनेसे सिद्ध हुआ । उदकीयति । गिरशब्दसे इच्छाअर्थमें यप्रत्यय करनपर ' य्वोर्विहसे ' इसकर सिद्ध हुआ । गीर्यति । लिट्में ' हसाद्यस्य लोपो० ' इसकर विकल्पकरके यकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । गिरांचकार, गीर्यांचकार । इसी प्रकार पुरशब्दसे इच्छाअर्थमें यप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । पूर्यति । दिव्शब्दसे इच्छाअर्थमें यप्रत्यय करनेपर ' य्वोर्विहसे ' इसकर दीर्घ नहीं हुआ क्योंकि दिव्शब्द क्विबन्त नहीं किन्तु डिवन्त है जो क्विबन्त होता है वह धातुसंज्ञक होता है धातुसंज्ञक न होनेसे ' य्वोर्विहसे ' इसकर दीर्घ न होनेसे रूप सिद्ध हुआ । दिव्यति । कर्तृशब्दसे इच्छाअर्थमें यप्रत्यय करनेपर ' ऋतोरिः ' इसकर ऋकारको रिकार किया फिर ' ये ' इसकर दीर्घ करनेपर सिद्ध हुआ । कर्त्रीयति ॥

हलात्तद्धितस्य लोपो ये च्वौ च ॥ ४५३ ॥ गार्गीयति । वाच्यति । कवीयति । समिध्यति । समिध्याञ्चकार । समिधिता ॥

भाषा–हलसे उत्तर तद्धित प्रत्ययके यकारका लोप होय यप्रत्यय और च्विप्रत्यय पर हुए सते । उदाहरण–गार्ग्यशब्दसे इच्छाअर्थमें यप्रत्यय किया तब यप्रत्यय पर होनेसे तद्धित प्रत्यय ष्यके यकारका लोप किया फिर अकारको इकार किया तब सिद्ध हुआ । गार्गीयति । वाच्शब्दसे यप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । वाच्यति । कविशब्दसे यप्रत्यय करनेपर ' ये ' इसकर दीर्घ किया तब सिद्ध हुआ । कवीयति । समिध्शब्दसे यप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । समिध्यति । क्विदूमें ' हलाद्यस्य लोपो वानपि ' । समिध्याञ्चकार, समिधाञ्चकार ॥

मान्ताव्ययाभ्यां यो न ॥ ४५४ ॥ किमिच्छति । इदमिच्छति । स्वरिच्छति । उच्चैरिच्छति ॥

भाषा–मकारान्त नामसे और अव्ययसंज्ञक नामसे इच्छाअर्थमें यप्रत्यय नहीं होता है । उदाहरण–किम्शब्द मकारान्त है इस कारण इच्छाअर्थमें यप्रत्यय नहीं हुआ । स्वर्शब्द अव्ययसंज्ञक है इस कारण इच्छाअर्थमें यप्रत्यय नहीं हुआ ॥

अश्ववृषयोर्मे सुक् मैथुनेच्छायाम् ॥४५५॥ अश्वस्यति वडवा । वृषस्यति गौ ॥

भाषा–यप्रत्यय पर हुए संते मैथुनसम्बन्धिनी इच्छामें अश्व और वृषशब्द को सुक् आगम होय । उदाहरण–अश्ववृषशब्दसे मैथुनेच्छामें यप्रत्यय करनेके अनन्तर सुक् आगम करनेपर सिद्ध हुआ । अश्वस्यति । वृषस्यति । मैथुनार्थमश्वमिच्छति वडवा । मैथुनार्थं वृषमिच्छति गौ । यह अर्थ हुआ ॥

क्षीरलवणयोर्लालसायाम् ॥ ४५६ ॥ सुक् ॥ क्षीरस्यति बालः । लवणस्यत्युष्ट्रः ॥

भाषा–अतितृष्णायुक्त इच्छाअर्थमें यप्रत्यय पर हुए संते क्षीर और लवणशब्द दोनोंको सुक् आगम होय । उदाहरण–अतितृष्णायुक्त इच्छाअर्थमें क्षीरलवणशब्दसे यप्रत्यय पर हुए संते सुक् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । क्षीरस्यति । लवणस्यति ॥

नाम्नो ये लालसायां सुगसुकौ ॥ ४५७॥ दधिस्यति दध्यस्यति । मधुस्यति मध्वस्यति । यशस्काम्यति ॥

' अव्ययीभावात्त्रियम् ' इस सूत्रमें ' चपा अबे जबाः ' इस सूत्रकी प्राप्ति नहीं हुई इसीसे यहाँ आगममें पदकार्य न होनेसे वाच्यतिरूपमें ' चोः कुः ' इसकी प्राप्ति नहीं हुई ॥

भाषा-अतितृष्णायुक्त इच्छाअर्थके विषै यप्रत्यय पर हुए संते नामसे सुक् और असुक् दोनों आगम होंय । उदाहरण-अतितृष्णायुक्त इच्छाअर्थमें दधि मधुशब्दसे यप्रत्यय करनेके अनन्तर प्रथम सुक् आगम किया तब सिद्ध हुआ । दधिस्यति । मधुस्यति । यहांपर विपरीत निर्देशसे ' किलात्षः०' इसकर षकार नहीं हुआ । और जहां असुक् आगम किया तहां क्रमसे ' इयङ् ' और ' उवङ् ' इनकर सिद्ध हुआ । दध्यस्यति । मध्वस्यति ॥

मान्ताव्ययाभ्यां काम्यः ॥४५८॥ किंकाम्यति । स्वःकाम्यति । उच्चैस्काम्यति ॥

भाषा-मकारान्त नाम और अव्ययसंज्ञक नाम इन दोनोंसे इच्छा अर्थमें काम्यप्रत्यय होता है । उदाहरण-किम् मकरान्त नाम और स्वर् उच्चैस् अव्ययसंज्ञक नामसे इच्छाअर्थमें काम्यप्रत्यय कर 'सधातुः' इसकर धातुसंज्ञा होनेपर सिद्ध हुआ । किंकाम्यति । स्वःकाम्यति । उच्चैस्काम्यति ॥

करणे च नाम्नः ॥ ४५९ ॥ करणेऽर्थे यः ॥ तपस्यति । तपश्चरतीत्यर्थः ॥ नमसःपूजायाम् ॥ नमस्यति देवान् । पूजयतीत्यर्थः ॥ वरिवसः परिचर्यायाम् ॥ वरिवस्यति गुरुम् शुश्रूषयतीत्यर्थः ॥

भाषा-नामसे करण अर्थमें यप्रत्यय होय अर्थात् करता है इस अर्थमें नामसे यप्रत्यय होय । उदाहरण-तपःकरोति । इसमें करणअर्थ विद्यमान है इस कारण तपस्शब्दसे यप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । तपस्यति । नमस्शब्दसे पूजा अर्थमें यप्रत्यय होय । उदाहरण-नमस्शब्दसे पूजाअर्थमें यप्रत्यय करनेसे सिद्ध हुआ । नमस्यति । वरिवस्शब्दसे शुश्रूषाअर्थमे यप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । वरिवस्यति ॥

शब्दादिभ्यो यङ् ॥४६०॥ शब्दायते । वैरायते । कलहायते । आम्रायते । मेघायते ॥

भाषा-कर्मके विषै वर्त्तमान हुए शब्दआदिक शब्दोंसे करणअर्थमें यङ्प्रत्यय होय । उदाहरण-शब्दं करोति । इसमें करणअर्थ विद्यमान है इस कारण शब्दशब्दसे यङ्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' ये ' इसकर पूर्वको दीर्घ किया पश्चात् धातुसंज्ञा होनेपर ' आदनुदात्तङितः' इसकर आत्मनेपद किया तब सिद्ध हुआ । शब्दायते । इसी प्रकार । वैरायते । कलहायते । आम्रायते । मेघायते । यह सिद्ध हुए जानने ॥

कष्टाय क्रमणे ॥ ४६१ ॥ कष्टायते ॥

भाषा-चतुर्थ्यन्त कष्टशब्दसे उत्साहअर्थमें यङ्प्रत्यय होय । उदाहरण-कष्टाय क्रमते । इसमें उत्साहअर्थ विद्यमान है इस कारण चतुर्थ्यन्त कष्टशब्दसे यङ्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । कष्टायते । पाप कर्ममुत्सहते इत्यर्थः ॥

ऊष्मवाष्पधूमेभ्य उद्वमने ॥ ४६२ ॥ ऊष्मायते । बाष्पायते । धूमायते ॥

भाषा-ऊष्म, बाष्प और धूम इन शब्दोंसे उद्वमनअर्थमें यङ्प्रत्यय होय । उदाहरण-ऊष्माणमुद्वमति । इसमें उद्वमनअर्थ विद्यमान है इस कारण कर्मसंज्ञक ऊष्मन्शब्दसे यङ्प्रत्यय करनेपर ' नाम्नो नो लोपश० ' इसकर नकारका लोप किया फिर ' ये ' इसकर दीर्घ किया तब सिद्ध हुआ । ऊष्मायते । इसी प्रकार बाष्प और धूम इन दोनोंसे यङ्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । बाष्पायते । धूमायते ॥

ञिर्डित्करणे ॥ ४६३ ॥ नाम्नो ञिप्रत्ययः करणेऽर्थे चाचक्षणेऽर्थे स च डित् ॥ घटं करोति घटयति । घटयते । अजघटत् । पटयति । पटयते । अपपटत् । अप्लुलोपिनो नाङ्कार्यम् । महान्तं करोति महयति । अममहत् । युवानं करोति युवयति । अयूयवत् । कनयति । अचीकनत् ॥

भाषा-नामसे करणअर्थमें वा आचक्षणअर्थमें ञिप्रत्यय होय और वह ञिप्रत्यय डित्संज्ञक होय । उदाहरण-घटं करोति । इसमें करणअर्थ विद्यमान है इस कारण घटशब्दसे ञिप्रत्यय किया तब रूप स्थित हुआ घट-इ फिर ' डिति टेः ' इसकर टिका लोप किया तब रूप स्थित हुआ घट्-इ इसमें अल्लोपको स्थानिवत्के तुल्य होनेसे वृद्धि नहीं हुई तब रूप स्थित हुआ घटि पश्चात् ' सधातु ' इसकर धातुसंज्ञा होनेपर ' ञित्स्वरितेत उभे ' इसकर सिद्ध हुआ । घटयति घटयते । लुङ्में ' चेरङ् द्विश्च ' इसकर द्वित्व और ' ञे ' इसकर ञिका लोप करनेपर ' अप्लुलोपिनो नाङ्कार्यम् ' इसकर अङ्कार्य कुछ न होनेसे सिद्ध हुआ । अजघटत् । ' पटुमाचष्टे ' इसमें आचक्षण अर्थ विद्यमान है इस कारण पटुशब्दसे ञिप्रत्यय करनेके अनन्तर टिका लोप करनेपर धातुसंज्ञामें सिद्ध हुआ । पटयति । लुङ्में । अपपटत् । ' महान्तं करोति ' इसमें महत्शब्दसे ञिप्रत्यय करनेके अनंतर टिका लोप कर ' अत उपधाया ' इसकर वृद्धि करनेपर रूप सिद्ध हुआ । महयति । लुङ्में ' अप्लुलोपिनो नाङ्कार्यम् ' इसकर अङ्कार्य न होनेसे सिद्ध हुआ । अममहत् । युवानं करोति इसमें युवन्शब्दसे ञिप्रत्यय करनेके अनन्तर

युवन्शब्दको युव् और कन् आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । युवयति । कनयति । यहां 'ञ्णिडित्करणे' इस सूत्रमें वहुलग्रहण कर्त्तव्य है तिसीसे 'अत उपधायाः' इसकर वृद्धि नहीं हुई लुङ्में वृद्धि होनेके पश्चात् 'अडि लघौ०, लघोर्दीर्घः' इनकर सिद्ध हुआ । अयूयवत् । अचीकनत् ॥

आविष्ठवत्कार्य्यम् ॥ ४६४ ॥ स्फिरं करोति स्फापयति । अपिस्फपत् । उरुं वरयति । अवीवरत् । वहुलं वंहयति । अववंहत् । वृद्धं वर्षयति । अववर्षत् । तृप्रं त्रपयति । अतित्रपत् । दीर्घं द्राघयति । अदद्राघत् । वृन्दारकं वृन्दयति । अववृन्दत् । अन्तिकं नेदयति । अनिनेदत् । स्थलं स्थवयति । अतुस्थवत् । दूरं दवयति । अदूदवत् । ह्रस्वं ह्रस्वयति । अजह्रसत् । क्षिप्रं क्षेपयति । अचिक्षेपत् । क्षुद्रं करोति क्षोदयति । अचुक्षोदत् । प्रियं करोति प्रापयति । अपिप्रयत् । गुरुं करोति गरयति । अजीगरत् । स्थिरं करोति स्थापयति । अतिस्थपत् । ऊढिं करोति ऊढयति । ञेरङ् द्विश्च । स्वरादेः परः । औडिढत् ॥

भाषा—ञिप्रत्ययके विषैं इष्ठप्रत्ययके समान काय होता है । भाव यह है कि इष्ठप्रत्यय पर हुए संते जो कार्य होता है वहही कार्य ञिप्रत्यय पर हुए संते होता है जैसे इष्ठप्रत्यय पर हुए संते विन्, वतु, मतु इनका लोप होता है और ऋकारको रभाव होता है और गुरुआदिक शब्दोंको गर आदिक आदेश और टिलोप होता है तैसेही यह सब कार्य ञिप्रत्यय पर हुए संते होता है । उदाहरण—स्फिरशब्दसे करणअर्थमें ञिप्रत्यय किया तो स्फिरशब्दको स्फ आदेश हुआ क्योंकि इष्ठप्रत्ययमें स्फिरशब्दको स्फ आदेश हुआ है और टिका लोप हुआ नहीं क्योंकि इष्ठप्रत्ययमेंभी गरादिकोंकी टिका लोप नहीं होता है तव 'धातोर्नामिनः' इसकर वृद्धि किया पश्चात् 'रातो ञौ पुक्' इसकर पुक् आगम करनेपर सिद्ध हुआ । स्फापयति । लुङ्में । अपिस्फपत् । उरुशब्दको वर् आदेश करनेपर 'ञ्णिडित्करणे' इस सूत्रमें वहुलग्रहणसे वृद्धि न होनेसे सिद्ध हुआ । वरयति । लुङ्में । अवीवरत् । वहुलशब्दको वंह् आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । वंहयति । लुङ्में । अववंहत् । वृद्धशब्दको वर्ष् आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । वर्षयति । लुङ्में । अववर्षत् । तृप्रशब्दको त्रप् आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । त्रपयति । लुङ्में वृद्धि करनेके पश्चात् 'अडि लघौ०' इसकर सिद्ध हुआ । अतित्रपत् । दीर्घशब्दको द्राघ आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । द्राघयति । लुङ्में । अदद्राघत् । वृन्दारकको वृन्द अकारान्त आदेश करनेपर द्विस्वर होनेसे 'यस्य

कष्टाय क्रमणे ॥ ४६१ ॥ कष्टायते ॥

भाषा—चतुर्थ्यन्त कष्टशब्दसे उत्साहअर्थमें यङ्प्रत्यय होय । उदाहरण—कष्टाय क्रमते । इसमें उत्साहअर्थ विद्यमान है इस कारण चतुर्थ्यन्त कष्टशब्दसे यङ्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । कष्टायते । पाप कर्तुमुत्सहते इत्यर्थः ॥

ऊष्मबाष्पधूमेभ्य उद्वमने ॥ ४६२ ॥ ऊष्मायते । बाष्पायते । धूमायते ॥

भाषा—ऊष्म, बाष्प और धूम इन शब्दोंसे उद्वमनअर्थमें यङ्प्रत्यय होय । उदाहरण—ऊष्माणमुद्वमति । इसमें उद्वमनअर्थ विद्यमान है इस कारण कर्मसंज्ञक ऊष्मन् शब्दसे यङ्प्रत्यय करनेपर 'नाम्नो नो लोपश॰' इसकर नकारका लोप किया फिर 'ये' इसकर दीर्घ किया तब सिद्ध हुआ । ऊष्मायते । इसी प्रकार बाष्प और धूम इन दोनोंसे यङ्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । बाष्पायते । धूमायते ॥

णिर्डित्करणे ॥ ४६३ ॥ नाम्नो ञिप्रत्ययः करणेऽर्थे चाचक्षणेऽर्थे स च डित् ॥ घटं करोति घटयति । घटयते । अजघटत् । पटयति । पटयते । अपपटत् । अग्लोपिनो नाङ्कार्यम् । महान्तं करोति महयति । अममहत् । युवानं करोति युवयति । अयुयवत् । कनयति । अचीकनत् ॥

भाषा—नामसे करणअर्थमें वा आचक्षणअर्थमें ञिप्रत्यय होय और वह ञिप्रत्यय डित्संज्ञक होय । उदाहरण—घटं करोति । इसमें करणअर्थ विद्यमान है इस कारण घटशब्दसे ञिप्रत्यय किया तब रूप स्थित हुआ घट-इ फिर 'डिति टेः' इसकर टिका लोप किया तब रूप स्थित हुआ घट्-इ इसमें अल्लोपको स्थानिवत्के तुल्य होनेसे वृद्धि नहीं हुई तब रूप स्थित हुआ घटि पश्चात् 'सनाद्यः' इसकर धातुसंज्ञा होनेपर 'ञित्स्वरितेत उभे' इसकर सिद्ध हुआ । घटयति घटयते । लुङ्में 'ञेरङ् द्विश्च' इसकर द्वित्व और 'ञे' इसकर ञिका लोप करने पर 'अग्लोपिनो नाङ्कार्यम्' इसकर अङ्कार्य कुछ न होनेसे सिद्ध हुआ । अजघटत् । 'पटुमाचष्टे' इसमें आचक्षण अर्थ विद्यमान है इस कारण पटुशब्दसे ञिप्रत्यय करनेके अनन्तर टिका लोप करनेपर धातुसंज्ञामें सिद्ध हुआ । पटयति । लुङ्में । अपपटत् । 'महान्तं करोति' इसमें महत्शब्दसे ञिप्रत्यय करनेके अनंतर टिका लोप कर 'अत उपधायाः' इसकर वृद्धि करनेपर रूप सिद्ध हुआ । महयति । लुङ्में 'अग्लोपिनो नाङ्कार्यम्' इसकर अङ्कार्य न होनेसे सिद्ध हुआ । अममहत् । 'युवानं करोति' इसमें युवन्शब्दसे ञिप्रत्यय करनेके अनन्तर

करनेपर सिद्ध हुआ। पण्डितायते। 'एनी इवाचरति' इसमें उपमानकर्तृवाचक एनीशब्दसे यङ्प्रत्यय करनेपर 'यङ्मानिनोः पुंवत्' इसकर यङ्प्रत्यय पर होनेसे पूर्व स्त्रीलिंगको पुँल्लिंग किया तब हुआ एतय फिर 'ये' इसकर दीर्घ करनेसे रूप सिद्ध हुआ। एतायते॥

यङि वा सलोपः॥ ४६७॥ पयायते पयस्यते वा तक्रम्॥

भाषा—उपमानकर्तृवाचक सकारांतनामके सकारका लोप विकल्पकरके होय यङ्प्रत्यय पर हुए संते। उदाहरण—पयस्शब्दसे यङ्प्रत्यय करनेपर एक जगह सकारका लोप करनेपर 'ये' इसकर दीर्घ करनेपर सिद्ध हुआ। पयायते। और एक जगह सिद्ध हुआ। पयस्यते॥

अप्सरसो जस् सुमनसां नित्यम्॥४६८॥ अप्सरायते। ओजायते दुर्बलः। सुमनायते॥

भाषा—उपमानकर्तृवाचक अप्सरस्, ओजस्, सुमनस् इनके सकारका नित्यही लोप होय यङ्प्रत्यय पर हुए संते। उदाहरण—अप्सरस्शब्दसे यङ्प्रत्यय करनेपर सकारका लोप करनेसे 'ये' इसकर पूर्वको दीर्घ किया तब सिद्ध हुआ। अप्सरायते। इसी प्रकार ओजस् सुमनस्शब्दसे यङ्प्रत्यय करनेके अनन्तर सकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ। ओजायते। सुमनायते॥

नाम्न आचारे क्विब्॥ ४६९॥ कृष्ण इवाचरति कृष्णति। अकृष्णत्। अ इवाचरति अति अतः अन्ति। ऐत् ऐताम् ऐयुः। अतु अतात् अताम अन्तु। आत् आन् आः। लिटि। औ अतुः उः। इथ। यात्। इता। आसीत् आसिटाम्। मालेवाचरति मालाति। मालायात्। मालाहि। अमालात्। मालाञ्चकार। मालिता। अमालासीत्। कविरिवाचरति कवयति। अकवयत्॥

भाषा—उपमानकर्तृवाचक नामसे क्विप्प्रत्यय होय आचरणअर्थके विषें। उदाहरण—कृष्ण इवाचरति। इसमें आचरण अर्थ विद्यमान है इस कारण उपमानकृष्णशब्दसे क्विप् प्रत्यय करनेपर 'वेः' इसकर क्विप्का लोप किया तब हुआ कृष्ण फिर 'सधातुः' इसकर धातुसंज्ञा करनेपर 'अप्' अप् प्रत्यय किया 'अदे' इसकर अकारका लोप किया तब सिद्ध। बहुवचनमें। कृष्णान्ति। लङ्में। अकृष्णत्। लिट्में। कृष्णां-

लोप' इसकर अकारका लोप किया तब सिद्ध हुआ । वृन्दयति । लुङ्में । अव वृन्दत् । अन्तिकको नेद आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । नेदयति । लुङ्में । अनिनेदत् । स्थूलको स्थो आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । स्यवयति । लुङ्में । अतुस्यवत् । दूरको दो आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । दवयति । लुङ्में । अदूदवत् । ह्रस्वको ह्रस आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । ह्रसयति । लुङ्में । अजह्रसत् । माधवके मतमें अजिह्रसत् । क्षिप्रको क्षेप् आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । क्षेपयति । लुङ्में । अचिक्षेपत् । क्षुद्रको क्षोद आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । क्षोदयति । लुङ्में । अचुक्षोदत्, अचुक्षुदत् । ऐसाभी कोई आचार्य कहते हैं । प्रियको प्र आदेश करनेपर ' धावोर्नोमिन', रावो भी पुक् ' इनकर सिद्ध हुआ । प्रापयति । लुङ्में । अपिप्रपत् । गुरुको गर् आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । गरयति । लुङ्में । अजीगरत् । स्थिरको स्थ आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । स्थापयति । लुङ्में । अतिस्थपत् । ऊढिशब्दसे णिच्प्रत्यय करनेके अनन्तर टिका लोप होनेपर ' स्वरादे परः ' इसकर परमवयवको द्वित्व किया द्वित्व करनेके समय ' णिनिमित्त स्वरादेशो द्वित्वे कर्त्तव्ये स्थानिवत् ' इसकर उस स्वरका ग्रहण किया जिसका कि णिच्प्रत्ययके होनेसे लोप हो गया था तब रूप सिद्ध हुआ । औडिडत् ॥

अढि पूर्वस्य जो वा ॥ ४६८ ॥ औजिढत् औडिढत् । ऊढ करोति ऊढयति । औजढत् औडढत् ॥

भाषा—पूर्वरूपमें स्थित हुए डकारको विकल्पकरके जकार होय अड्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—ऊढिशब्दसे णिच्प्रत्यय करनेके अनन्तर लुङ्में ' अेरङ् द्विश, स्वारे पर' णिनिमित्त' स्वरादेशो द्वित्वे कर्त्तव्ये स्थानिवत्' इनकर ण्किो द्वित्व होनेपर ' इपानां जपचपा' इसकर डकार किया फिर डकारको जकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । औजिढत् । इसी प्रकार ऊढशब्दसे णिच्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । ऊढयति । लुङ्में । औजढत्, औडढत् ॥

क्यङ् ॥ ४६६ ॥ उपमानात्कर्तुराचारार्थे यङ् । श्येन इवाचरति श्येनायते काकः । पण्डितायते मूर्खः । एतायते । यङ्मानिनो पुंवत् ॥

भाषा—उपमानकर्त्तासे आचरण अर्थके विषें यङ्प्रत्यय होय । उदाहरण—श्येन इवाचरति । इसमें उपमानकर्त्ता श्येन है इससे आचरण अर्थमें यङ्प्रत्यय करनेपर ' ये ' इसकर दीर्घ किया तब रूप सिद्ध हुआ । श्येनायते । श्येनके समान आचरण करता है । इसी प्रकार उपमानकर्त्ता पण्डितशब्दसे यङ्प्रत्यय

करनेपर सिद्ध हुआ । पण्डितायते । 'एनी इवाचरति' इसमें उपमानकर्तृवाचक एनीशब्दसे यङ्प्रत्यय करनेपर 'यङ्मानिनोः पुंवत्' इसकर यङ्प्रत्यय पर होनेसे पूर्व स्त्रीलिंगको पुँल्लिंग किया तब हुआ एतय फिर 'ये' इसकर दीर्घ करनेसे रूप सिद्ध हुआ । एतायते ॥

यङि वा सलोपः ॥ ४६७ ॥ पयायते पयस्यते वा तक्रम् ॥

भाषा—उपमानकर्तृवाचक सकारांतनामके सकारका लोप विकल्पकरके होय यङ्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—पयस्शब्दसे यङ्प्रत्यय करनेपर एक जगह सकारका लोप करनेपर 'ये' इसकर दीर्घ करनेपर सिद्ध हुआ । पयायते । और एक जगह सिद्ध हुआ । पयस्यते ॥

अप्सरसो जस् सुमनसां नित्यम् ॥४६८॥ अप्सरायते । ओजायते दुर्बलः । सुमनायते ॥

भाषा—उपमानकर्तृवाचक अप्सरस्, ओजस्, सुमनस् इनके सकारका नित्यही लोप होय यङ्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—अप्सरस्शब्दसे यङ्प्रत्यय करनेपर सकारका लोप करनेसे 'ये' इसकर पूर्वको दीर्घ किया तब सिद्ध हुआ । अप्सरायते । इसी प्रकार ओजस् सुमनस्शब्दसे यङ्प्रत्यय करनेके अनन्तर सकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । ओजायते । सुमनायते ॥

नाम्न आचारे क्विब्वा ॥ ४६९ ॥ कृष्ण इवाचरति कृष्णति । अकृष्णत् । अ इवाचरति अति अतः अन्ति । ऐत् ऐताम् ऐयुः । अतु अतात् अताम अन्तु । आत् आन् आः । लिटि । औ अतुः उः । इथ । यात् । इता । आसीत् आसिष्टाम् । मालेवाचरति मालाति । मालायात् । मालाहि । अमालात् । मालाञ्चकार । मालिता । अमालासीत् । कविरिवाचरति कवयति । अकवयत् ॥

भाषा—उपमानकर्तृवाचक नामसे क्विप्प्रत्यय होय आचरणअर्थके विषैं । उदाहरण—कृष्ण इवाचरति । इसमें आचरण अर्थ विद्यमान है इस कारण उपमानकर्तृवाचक कृष्णशब्दसे क्विप् प्रत्यय करनेपर 'वेः' इसकर क्विप्का लोप किया तब रूप स्थित हुआ कृष्ण फिर 'सधातुः' इसकर धातुसंज्ञा करनेपर 'अप् कर्त्तरि' इसकर अप् प्रत्यय किया 'अदे' इसकर अकारका लोप किया तब सिद्ध हुआ । कृष्णाति । बहुवचनमें । कृष्णान्ति । लङ्में । अकृष्णत् । लिट्में । कृष्णां-

घकार । लुङ्में । अकृष्णीत् । इसी प्रकार मशब्दसे क्विप् प्रत्यय करनेके अनन्तर, धातुसंज्ञामें ' अदे ' इसकर अकारका लोप किया तब रूप सिद्ध हुआ । मति । द्विवचनमें । मतः । बहुवचनमें । मन्ति । यातमें ' या ' इसकर सिद्ध हुआ । मेत् । लङ्में । मात् । लिट्में द्वित्व करनेपर ' माम्योणोंदी ' इसकर पूर्वके अकार किया परआकारका ' मत ' इसकर लोप किया फिर ' आतो णव् औ ' इसकर सिद्ध हुआ । मौ । द्विवचनमें ' आतोऽनपि ' इसकर आकारका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । मतुः । बहुवचनम । उ । थपमें इट् करनेपर सिद्ध हुआ । मय । लिङ्में ' मत ' इसकर मकारका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । यात् । लुङ्में ' यमिरमिनमातां सक् सेरिट् पे ' इसकर सिद्ध हुआ । मासीत् । 'मालाशब्दसे क्विप् प्रत्यय करनेपर धातुसंज्ञामें रूप सिद्ध हुआ । मालाति । लिट्में अनेक स्वर होनेसे 'आम्' प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । मालाञ्चकार । लुङ्में ' यमिरमि०' इसकर सिद्ध हुआ । अमालासीत् । कविशब्दसे क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर धातुसंज्ञामें ' . अप् कर्तरि, गुण', ए अय् ' इनकर सिद्ध हुआ । कवयति । लिट्में । कवयाञ्चकार । लुङ्में अकवि-इ-स् ई-त् ऐसा स्थित है ॥

नामधातोर्वृद्धिर्वा सौ ॥ ४७० ॥ अकवायीत् अकवयीत् । वियं वाचरति वयति । विवाय वियतुः । अवायीत् अवयीत् । श्रीरिवाचरति । श्रयति । शिश्राय । शिश्रियतुः । अश्रायीत् अश्रयीत् । पितेवाचरति । पितरति । पितराञ्चकार । यादादाविति रिङ् । पित्रियात् । भूरिवाचरति । भवति । बुभाव । अभावीत् । द्युरिवाचरति । द्रवति । अद्रावीत् ॥

भाषा–नामधातुके विकल्पकरके वृद्धि होय सिप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–अकवि-इ-स् ई-त् । इसमें नामधातु कविके इकारको विकल्पकरके वृद्धि किया क्योंकि सिप्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । अकवायीत् । और जहां वृद्धि नहीं हुई वहां गुण करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अकवयीत् । विशब्दसे क्विप्प्रत्यय करनेपर धातुसंज्ञामें सिद्ध हुआ । वयति । लिट्में । विवाय । द्विवचनमें । वियतुः । लुङ्में ' नामधातोर्वृद्धिर्वा सौ ' इसकर एक जगह वृद्धि करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अवायीत् । और एक जगह गुण करनेसे सिद्ध हुआ । अवयीत् । श्रीशब्दसे क्विप् प्रत्यय करनेके अनन्तर धातुसंज्ञामें ' अप् कर्तरि ' इसकर अप्प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । श्रयति । लिट्में । शिश्राय । द्विवचनमें ' नुधातो ' इसकर इय् करनेपर सिद्ध हुआ । शिश्रियतुः । लुङ्में ' नामधातोर्

द्विर्वा सौ ' इसकर सिद्ध हुआ । अश्रायीत्, अश्रयीत् । पितृशब्दसे क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर धातुसंज्ञामे अप् कर पश्चात् गुण करनेसे सिद्ध हुआ । पितरति । लिट्में । पितराञ्चकार । लिङ्मे ' यादादौ पे ' इसकर रिङ् करनेपर सिद्ध हुआ । पित्रियात् । लुङ्म । अपितारीत । अपितरीत् । भूशब्दसे क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर सिद्ध हुआ । भवति । लिट्में । बुभाव । धातुपाठस्थके अभावसे ' आभ्भेर्णादौ ' इत्यादि सूत्रोंकी यहां प्राप्ति नहीं होती है । लुङ्में । अभावीत्, अभवीत् । द्रुशब्दसे क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर सिद्ध हुआ । द्रवति । लिट्में । दुद्राव । लुङ्में । अद्रावीत, अद्रवीत् ॥

ञमान्तस्योपधाया दीर्घः ॥ ४७१ ॥ कौ झसादौ क्ङिति हे च ॥

इदमिवाचरति । इदामति । राजेवाचरति । राजानति । राजायते । मन्था इवाचरति । मथीनति । ऋभुक्षा इवाचरति । ऋभुक्षीणति । द्यौरिवाचरति । द्यवति । दुद्याव । द्यूयात् । द्यविता । क इवाचरति । कति । चकौ । चक इत्यन्ये । स्व इवाचरति । स्वति । सस्वौ । सस्व इत्यन्ये ॥

भाषा—ञमप्रत्याहारान्तकी उपधाको दीर्घ होय क्विप्प्रत्यय तथा क्ङित्संज्ञक झसप्रत्याहारादि तथा हकारादि प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—इदम्शब्दसे क्विप्प्रत्यय करनेपर उपधारूप मकार पूर्ववर्ती अकारको दीर्घ किया क्योंकि इदम् शब्द ञमप्रत्याहारसंबन्धी मकारान्त है तब रूप स्थित हुआ इदाम् फिर धातुसंज्ञामें सिद्ध हुआ । इदामति । लिट्में । इदामाञ्चकार । लुङ्मे । ऐदामीत् । राजन्शब्दसे क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर उपधाको दीर्घ करनेपर धातुसंज्ञामें सिद्ध हुआ । राजानाति । मथिन्शब्दसे क्विप्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । मथीनति । ऋभुक्षन्शब्दसे क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर सिद्ध हुआ । ऋभुक्षीणाति । दिव्शब्दसे क्विप्प्रत्यय करनेपर ' क्ङिति झसे कौ ञमे च छस्य शो वस्य ऊः ' इसकर वकारको ऊकार करनेपर ' इयं स्वरे ' इसकर रूप स्थित हुआ द्यू पश्चात् धातुसंज्ञामें अप् करनेपर गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । द्यवति । लिट्में । दुद्याव । लुङ्में । अद्यावीत, अद्यवीत । कशब्दसे क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर धातुसंज्ञामे ' अप् कर्त्तरि अदे ' इसकर सिद्ध हुआ । काति । लिट्में द्वित्व करनेके पश्चात् ' धातोर्नामिनः ' इसकर वृद्धि की तत्पश्चात ' आतो णव् डौ ' इसकर सिद्ध हुआ । चकौ । और माधवके मतमें ' यतः ' इसकर अकारका लोप करनेसे सिद्ध हुआ । चक । इसी प्रकार स्वशब्दसे क्विप्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । स्वाति । लिट्में । सस्वौ, सस्व ॥

आचार उपमानात् ॥ ४७२॥ कर्मधारये उपमानादाचारेऽर्थे यप्रत्ययोऽस्य चेकार ॥ पुत्रमिवाचरति । पुत्रीयति शिष्यमुपाध्यायः । प्रासाद इवाचरति । प्रासादीयति कुट्यां भिक्षुः ॥

भाषा–कर्मसंज्ञक उपमानसे तथा आधारसंज्ञक उपमानसे यप्रत्यय होय आचरण अर्थके विषें और यह यप्रत्यय पर हुए संते पूर्व अवर्णको ईकार होय । उदाहरण–शिष्यं पुत्रमिवाचरति । इसमें कर्मसंज्ञक शिष्य उपमेय है और शिष्यको पुत्रकी उपमा दी गई है इस कारण कर्मसंज्ञक उपमान पुत्रशब्दसे यप्रत्यय किया पश्चात् अकारको ईकार किया तब 'सधातुः' इसकर धातुसंज्ञा होनेपर सिद्ध हुआ । पुत्रीयति । 'कुट्यां प्रासादे इवाचरति' इसमें आधारसंज्ञक कुटिशब्द उपमेय है और कुटिको प्रासादकी उपमा दी गई है इस कारण आधारसंज्ञक उपमान प्रासादशब्दसे यप्रत्यय करनेके पश्चात् अकारको ईकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । प्रासादीयति ॥

भृशादिभ्योऽभूततद्भावेयङ् अन्त्यहसलोपश्च ॥४७३॥ अभृशो भृशो भवति भृशायते । अशश्वत् शश्वद्भवति शश्वायते ॥

भाषा–अभूततद्भावअर्थके विषें भृशादिक शब्दोंसे यङ्प्रत्यय होय और अन्तके विषें विद्यमान हुए हसका लोप होय । जो पूर्व नहीं हुआ उसके होनेका नाम अभूततद्भाव है । उदाहरण–अभृशो भृशो भवति । इसमें अभूततद्भाव अर्थ है क्योंकि पूर्व अभृश है अर्थात् अतिशय नहीं है फिर भृश होता है अर्थात् अतिशय होता है इस कारण भृशशब्दसे यङ्प्रत्यय करनेपर 'ये' इसकर दीर्घ किया तब रूप सिद्ध हुआ । भृशायते । शश्वत्शब्दसे अभूततद्भाव अर्थमें यङ्प्रत्यय करनेपर अन्त्य हस तकारका लोप करनेसे 'ये' इसकर दीर्घ किया तब सिद्ध हुआ । शश्वायते ॥

क्विबपि ॥ ४७४ ॥ भृशति ॥

भाषा–भृशादिकसे अभूततद्भाव अर्थके विषें क्विप्प्रत्यय होय । उदाहरण–अभूततद्भाव अर्थमें भृशशब्दसे क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर 'ये' इसकर क्विप्प्रत्ययका लोप किया फिर धातुसंज्ञामें सिद्ध हुआ । भृशति ॥

च्विरपि ॥ ४७५ ॥ भृशीभवति । भृशयभूत् । सुमनायते । उपसर्गसमानाकार पूर्वार्द्ध धातुसंज्ञाहेतौ प्रत्यये चिकीर्षिते पृथक् क्रियते । स्वमनायत । उदमनायत ॥

भाषा—भृशादिकोंसे अभूततद्भाव अर्थके विषै च्विप्रत्ययभी होता है । च्विप्रत्ययसे परे कृ, भू और अस्. धातुओंका प्रयोग होता है । उदाहरण—भृशशब्दसे च्विप्रत्यय करनेपर 'च्वौ दीर्घ ई चास्य' इसकर पूर्व अकारको ईकार करनेपर और परमें भूधातु प्रयुक्त करनेपर सिद्ध हुआ । भृशीभवति । च्विप्रत्ययका लोप 'वेः' इस कृदन्तसूत्रकर होता है । लिट्में । भृशीबभूव । लुङ्में । भृशयभूत । सुमनस्-शब्दसे अभूततद्भाव अर्थमें यङ्प्रत्यय करनेपर अन्त्य हस्का लोप किया तब सिद्ध हुआ । सुमनायते । धातुसंज्ञाके विधान करनेवाला जब कोई प्रत्यय करनेको इच्छित होता है तब उपसर्गतुल्य जो पूर्वपद है वह भिन्न किया जाता है । उदाहरण—सुमनस्शब्दसे धातुसंज्ञाविधायक, यङ्प्रत्यय किया गया है इस कारण उपसर्गतुल्य पूर्वपद सु पृथक् करनेपर अट् आगम मनायधातुके पूर्व करनेपर रूप सिद्ध हुआ । स्वमनायत । इसी प्रकार उद्उपसर्गको पृथक् कर अट् आगम करनेपर सिद्ध हुआ । उदमनायत ॥

सुखादिभ्यो यङ् ॥४७६॥ कर्तुरनुभवे ॥ सुखं वेदयते सुखायते । दुःखायते ॥

भाषा—सुखादिकोंसे कर्त्ताके अनुभवमें यङ्प्रत्यय होय । भाव यह है कि यदि सुखादिकके भोगनेवाला कर्त्ता यदि सुखादिकसे युक्त होवे तौ सुखादिकसे यङ्प्रत्यय होय । उदाहरण—सुखं वेदयते । इसमें कर्त्ताको सुखका अनुभव होता है इस कारण सुखशब्दसे यङ्प्रत्यय करनेपर 'ये' इसकर दीर्घ किया तब सिद्ध हुआ । सुखायते । इसी प्रकार दुःखशब्दसे यङ्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । दुःखायते ॥

पुच्छादुदसने व्यसने पर्यसने च णिङ् ॥४७७॥ उत्पुच्छयते । उदपुच्छत । विपुच्छयते । परिपुच्छयते ॥

भाषा—पुच्छशब्दसे उदसन नाम ऊपरको फेंकनेमें और व्यसन नाम अनेक प्रकार फेंकनेमें और पर्यसन नाम चारों तरफ फेंकनेमें णिङ्प्रत्यय होय । उदाहरण—पुच्छमुदस्यति । इसमें उदसन अर्थ विद्यमान है इस कारण पुच्छशब्दसे णिङ्प्रत्यय करनेपर धातुसंज्ञामें आत्मनेपद करनेसे रूप सिद्ध हुआ । उत्पुच्छयते । 'पुच्छं व्यस्यति पर्यस्यति वा' इसमें व्यसन वा पर्यसन अर्थ विद्यमान है इस कारण णिङ्प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । विपुच्छयते । परिपुच्छयते ॥

भाण्डात्समाचयने ॥ ४७८ ॥ सम्भाण्डयते ॥

भाषा—भाण्डशब्दसे णिङ्प्रत्यय होय समाचयन नाम राशीकरण अर्थात् इकट्ठे करनेरूप अर्थमें । उदाहरण—भाण्डान् समाचिनोति । इसमें समाचयन अर्थ विद्यमान

है इस कारण सम उपसर्ग पूर्व युक्त कर माण्डशब्दसे णिच्प्रत्यय करनेपर धातुसंज्ञामें आत्मनेपद युक्त करनेसे सिद्ध हुआ। संमाण्डयते। लङ्में। सममाण्डयत॥

चीवरादर्जने परिधाने च॥ ४७९॥ चीवराणि अर्जयति परिधत्ते वा सञ्चीवरयते भिक्षुः। नाम्नो णिराचष्टे॥

भाषा—चीवरशब्दसे अर्जन और परिधान अर्थके विषै णिप्रत्यय होय। अर्जन नाम इकट्ठे करनेका है और परिधान नाम पहिरनेका है। उदाहरण—चीवराणि अर्जयति परिधत्ते वा। इसमें अर्जन और परिधान दोनों अर्थ विद्यमान हैं इस कारण चीवरशब्दसे णिप्रत्यय करनेपर सम् उपसर्ग पूर्व करनेसे सिद्ध हुआ। संचीवरयते। लङ्में। समचीवरयत। आचष्टे क्रियाके विषै नामसे णिप्रत्यय होय। उदाहरण—अर्थमाचष्टे। इसमें आचष्टे क्रिया विद्यमान है इस कारण कर्मसंज्ञक नामसे णिप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ अर्थ-इ॥

अर्थवेदसत्यानामापुग् णौ ॥४८०॥ अर्थापयति। आर्तीथपत्। वेदापयति। सत्यापयति। अससत्यपत्। एतयते। ऐतितत्। पृथुम्। प्रथयति। पृथो सत्या पूर्वे वा टिलोपः। अपप्रथत् अपिप्रथत्। मृदुम्। म्रदयति। अमम्रदत् अमिम्रदत्। भृशम्। भ्रशयति। अबभ्रशत्। कृशम्। क्रशयति। अचक्रशत्। दृढम्। द्रढयति। अदद्रढत्। परिमढयति। पर्य्यवमढत्। त्वादयति। अतित्वदत्। मादयति। अमीमदत्। युष्मयति। अयुयुष्मत्। अस्मयति। आसिस्मत्। विद्वांसम्। विद्वयति। अविविद्वत्। विद्वापयति इत्यपरे। आविविद्वापत्। विदयति इत्यन्ये। अविविदत्। एवं श्वानमाचष्टे श्वयति। अशिश्वत्। शावयत्यपरे। अशुशावत्। शुनयतीत्यन्ये। अशुशुनत्। उदञ्चम्। उदीचयति। उदैचिचत्। प्रत्यञ्चम्। प्रतीचयति। प्रत्यचिचत्। सम्यञ्चम्। समीचयति। सम्यचिचत्। तिर्य्यञ्चम्। तिरायपति। अतितिरायत्। सध्र्यञ्चम्। सध्र्यापयति। अससध्र्यापत्। अन्तिकम्। नेदयति। अनिनेदत्। बाढम्। साधयति। स्थूलम्। ज्यापयति। अजिज्यपत्। स्थूलम्। स्थवयति। स्फिरम्। स्फापयति। अपिस्फपत्। उरुम्। वरयति।

बहुलम् । बंहयति । तृप्रम् । त्रपयति । दीर्घम् । द्राघयति । अदद्राघत । वृंदारकम् । वृन्दयति । अववृन्दत ॥ इति नामधातुप्रक्रिया ॥

भाषा–अर्थ, वेद, सत्य इनको आपुक् आगम होय ञिप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–अर्थ–इ । इसमें अर्थशब्दसे ञिप्रत्यय परे विद्यमान है इस कारण अर्थशब्दको आपुक् आगम करनेपर स्थित हुआ अर्थापि फिर धातुसंज्ञामे सिद्ध हुआ । अर्थापयति । लुङ्में ' ञेरङ् द्विश्च, स्वरादेः परः ' इनकर स्थित हुआ आर्त्तथापि-अन्द् फिर ' ञेः, अङि लघौ०, लघोर्दीर्घः ' इनकर सिद्ध हुआ । आर्त्तीथपत् । वेदशब्दसे ञिप्रत्यय करनेके अनन्तर आपुक् आगम करनेपर धातुसंज्ञामें सिद्ध हुआ । वेदापयति । लुङ्में ' ञेरङ् द्विश्च ' इसकर द्वित्व करनेके पश्चात् रूप स्थित हुआ अविवेदापि-अन्द् फिर ' ञेः, अङि लघौ० ' इनकर सिद्ध हुआ । अविवेदपत् । इसी प्रकार सत्यशब्दसे आपुक् आगम करनेपर सिद्ध हुआ । सत्यापयति । लुङ्में । अससत्यपत् । एनीशब्दसे ञिप्रत्यय करनेपर टिका लोप कर ' निमित्ताभावे नैमित्तिकस्याप्यभावः ' इसकर नकारके स्थानमे तकार किया तब धातुसंज्ञामें सिद्ध हुआ । एतयते । लुङ्मे ' ञेरङ् द्विश्च, स्वरादेः परः ' इनकर तकारको द्वित्व करनेपर तकारमें वह स्वरयुक्त किया जिसका कि ञिप्रत्ययके होनेसे लोप हो गया था तब रूप स्थित हुआ ऐतित्ति-अन्द् फिर ' ञेः ' इसकर ञिका लोप करनेपर ' अग्लोपिनो नाङ्कार्यम् ' इसकर अङ्कार्य नहीं हुआ तब सिद्ध हुआ । ऐतितत् । पृथुशब्दसे ञिप्रत्यय करनेके अनन्तर ञिप्रत्ययको इष्ठवत् होनेसे ' ऋ र इमनि ' इसकर ऋकारको र करनेपर रूप स्थित हुआ प्रथि फिर धातुसंज्ञामें सिद्ध हुआ । प्रथयति । लुङ्मे वृद्धि होनेपर टिका लोप होय अथवा वृद्धिसे पूर्वही टिका लोप होय इसकर जहां लुङ्में पूर्व टिका लोप हो गया तब तो ' अग्लोपिनो नाङ्कार्यम् ' इसकर सिद्ध हुआ । अपप्रथत् । और प्रथमवृद्धि होकर पश्चात् टिका लोप हुआ तब अङ्कार्य उपधाको ह्रस्व और पूर्वअकारको इकार किया तब रूप सिद्ध हुआ । अपिप्रथत् । इसी प्रकार लुङ्में सब जगह दो रूप जानने ॥ मृदुशब्दसे ञिप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । म्रदयति । लुङ्में जहां पूर्व टिका लोप हो गया तहा सिद्ध हुआ । अमम्रदत् । और जहा वृद्धि होकर टिका लोप हुआ तब अङ्कार्य होनेसे सिद्ध हुआ । अमिम्रदत् । कृशशब्दसे ञिप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । क्रशयति । लुङ्में । अचक्रशत, अचिक्रशत । दृढशब्दसे ञिप्रत्यय करनेके अनन्तर सिद्ध हुआ । द्रढयति । लुङ्में । अदद्रढत, अदिद्रढत् । परिवृढशब्दसे ञिप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । परिव्रढयति । लुङ्में । पर्यवव्रढत, पर्यविव्रढत । एकवचनार्थ युष्मद् अस्मद् शब्दको टिका लोप करनेपर ञिप्रत्ययमें ' त्वन्मदेकत्वे '

इसकर त्वद् मद् आदेश करनेपर 'अत उपधाया' इसकर सिद्ध हुआ। त्वादयति। मादयति। लुङ्में अङ्कार्य करनेपर सिद्ध हुआ। अतित्वदत्। अमीमदत्। और एकार्थ भिन्न युष्मद् अस्मद्शब्दसे णिप्रत्यय करनेपर टिका लोप करनेसे धातुसंज्ञामें सिद्ध हुआ। युष्मयति। अस्मयति। लुङ्में। अयुयुष्मत्। आसिस्मित्। विद्वस्शब्दसे णिप्रत्यय करनेपर टिका लोप करनेसे धातुसंज्ञामें सिद्ध हुआ। विद्वयति। लुङ्में। अविविद्वत्। कोई आचार्य विद्वस्शब्दसे णिप्रत्यय करनेपर णिका लोप करनेसे 'वसोर्व उः' इसकर वकारको उकार कर पश्चात् वृद्धि कर सिद्ध करते हैं। विदावयति। और लुङ्में 'अग्लोपिनो नाङ्क्रयम्' इसकर उपधाको ह्रस्व नहीं कर सिद्ध करते हैं। अविविदावत्। और कोई अन्य आचार्य विद्वस्शब्दसे णिप्रत्यय करनेपर 'वसोर्व उः' इसकर उकार कर पश्चात् टिसंज्ञक उस्का लोप करनेसे सिद्ध करते हैं। विदयति। लुङ्में। अविविदत्। इसी प्रकार श्वन्शब्दसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर टिका लोप करनेपर धातुसंज्ञामें सिद्ध हुआ। श्वयति। लुङ्में। अशिश्वत्। और कोई आचार्य 'शुनो वस्य उर्वा' इसकर णिप्रत्ययको इष्ठवत् होनेसे श्वन्के वकारको उकार कर और टिका लोप न कर सिद्ध करते हैं। शुनयति। लुङ्में। अशुशुनत्। और कोई आचार्य णिप्रत्यय करनेके अनन्तर टिका लोप कर 'शुनो वस्य उर्वा' इसकर वकारको उकार कर वृद्धि करनेसे सिद्ध करते हैं। शावयति। लुङ्में। अशुशावत्। उदच्शब्दसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर 'तिरश्चादय' इसकर उदीच् आदेश करनेसे सिद्ध हुआ। उदीचयति। बहुलग्रहणसे टिका लोप नहीं हुआ है। लुङ्में 'उपसर्गसमानाकारं पूर्वपदं धातुसंज्ञाहेतौ प्रत्यये चिकीर्षिते पृथक् क्रियते' इसकर पूर्वपद उद् पृथक् कर लिया पश्चात् 'अरङ् द्विश्च, स्वरादेः परः' इनकर चिको द्वित्व किया तब रूप स्थित हुआ उद् अ-ई चि-चि म-द् फिर 'णे' इसकर णिका लोप करनेपर सिद्ध हुआ। उदैचिचत्। इसी प्रकार प्रत्यच्शब्दसे णिप्रत्यय करनेपर बहुलग्रहणसे टिका लोप नहीं किया किन्तु 'अचोऽल्लोपो दीर्घश्च' इसकर अच्के अकारका लोप और पूर्व इकारको ईकार करनेसे सिद्ध हुआ। प्रतीचयति। लुङ्में चिशब्दसे पूर्व अट् आगम करनेपर 'अरङ् द्विश्च' इसकर चिको द्वित्व करनेपर रूप स्थित हुआ प्रति अ चि-चि-अन्द् फिर 'णे' इसकर णिप्रत्ययका लोप किया तब सिद्ध हुआ। प्रत्यचिचत्। इसी प्रकार सम्यच्शब्दसे णिप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। समीचयति। लुङ्में। सम्यचिचत्। प्रकृतिभावपक्षमें। समिचचिचत्। तिर्य्यच्शब्दसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर टिका लोप करनेसे अच्का लोप हो गया तब रूप स्थित हुआ तिरि-इ फिर बहिरंगत्व कर असिद्ध होनेसे तिरिके स्थानमें तिरस् नहीं हुआ तब वृद्धि करनेपर रूप सिद्ध हुआ।

तिराययति । लुङ्में 'अग्वृलोपिनो नाङ्कार्यम्' इसकर अङ्कार्य न होनेसे सिद्ध हुआ । आतितिरायत् । इसी प्रकार सध्र्यच्शब्दसे ञिप्रत्यय करनेपर टि अच्का लोप हुआ तब 'निमित्ताभावे नैमित्तिकस्याप्यभावः' इसकर प्रथम स्थित हुआ सध्रि-इ फिर धातुसंज्ञामे वृद्धि करनेपर सिद्ध हुआ । सध्राययति । लुङ्में । अससध्रायत् । अन्तिकशब्दसे ञिप्रत्यय करनेपर नेद आदेश करनेसे सिद्ध हुआ । नेदयति । लुङ्में । अनिनेदत् । बाढको साध आदेश करनेपर 'यस्य लोपः' इसकर अकारका लोप किया तब रूप सिद्ध हुआ । साधयति । लुङ्में । अससाधत् । वृद्धशब्दको ञिप्रत्ययमें ज्या आदेश करनेपर 'रातो ञौ पुक्' इसकर पुक् आगम किया तब रूप सिद्ध हुआ । ज्यापयति । लुङ्में 'ञेरङ् द्विश्व, ञेः, अङि लघौ०' इनकर सिद्ध हुआ । अजिज्यपत् । और जहां ञिप्रत्ययके विषै वृद्धको वर्ष आदेश किया तहां रूप सिद्ध हुआ । वर्षयति । लुङ्में । अववर्षत् । और स्फिर-शब्दको स्फ आदेश करनेपर 'धातोर्नामिनः' इसकर वृद्धि करनेसे 'रातो ञौ पुक्' इसकर पुक् आगम किया तब रूप सिद्ध हुआ । स्फापयति । लुङ्में 'ञेरङ् द्विश्व, ञेः, अङि लघौ०' इनकर सिद्ध हुआ । अपिस्फपत् । उरुशब्दको वर् आदेश करनेपर बहुलग्रहणसे वृद्धि न होनेसे सिद्ध हुआ । वरयति । लुङ्में अङ्कार्य होनेसे सिद्ध हुआ । अवीवरत् । बहुलशब्दको बंह् आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । बंहयति । लुङ्में । अबबंहत् । तृप्रशब्दको त्रप् आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । त्रपयति । लुङ्में अङ्कार्य करनेपर सिद्ध हुआ । अतित्रपत् । दीर्घ-शब्दसे ञिप्रत्यय करनेके अनन्तर द्राघ आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । द्राघयति । लुङ्में 'अग्वृलोपिनो नाङ्कार्यम्' इसकर अङ्कार्य न होनेसे सिद्ध हुआ । अद्-द्राघत् । वृन्दारक शब्दको वृन्द् आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । वृन्दयति । लुङ्में । अववृन्दत् । ञिप्रत्यय इष्ठवत् होनेसे जो कि आदेश हुए हैं वह 'गुर्वादेरिष्ठेमेयस्सु' इस तद्धित सूत्रकर जानने ॥ इति,नामधातुप्रक्रिया ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामेण भाषया । कृतं चंद्रिकोत्तरार्द्धे नामधातुनिरूपणम् ॥ ९ ॥

कण्ड्वादिभ्यो धातुभ्यो यक् स्वार्थे ॥ ४८१ ॥ कण्डूञ् गात्रवि-घर्षणे ॥ कण्डूयति । कण्डूयते ॥ मन्तु अपराधे रोषे च ॥ मन्तू-यति । ञिदित्येके । मन्तूयते ॥ वल्गु पूजामाधुर्ययोः ॥ वल्गूय-ति ॥ असु असु असूञ् उपतापे ॥ अस्यति । अनपि च हसात् । असाञ्चकार । असूयति । असूयते ॥ लेला दीप्तौ ॥ लेलायति ॥

मेधा आशुग्रहणे ॥ मेधायति ॥ सुख दुःख तत्क्रियायाम् ॥ सुखयति । दुःखयति ॥ सपर् पूजायाम् ॥ सपर्य्यति । सपराञ्चकार ॥ भिषज् चिकित्सायाम् ॥ भिषज्यति ॥ इषुध् शरधारणे ॥ इषुध्यति । ऐषुधीत् ॥ गद्गद् वाक्स्खलने ॥ गद्गद्यति ॥ एला खेला विलासे ॥ एलायति । खेलायति ॥ हृणीङ् रोषणे लज्जायां च ॥ हृणीयते ॥ महीङ् पूजायाम् ॥ महीयते ॥ अगद् नीरोगत्वे ॥ अगद्यति । आगदीत् ॥ इति कण्ड्वादयः ॥

भाषा—कण्डूञ् आदिक धातुओंसे नित्यही यक् प्रत्यय होय स्वार्थके विषें। कण्ड्वादिक दो प्रकारके हैं धातुसंज्ञक और प्रातिपदिकसंज्ञक अर्थात् नामसंज्ञक। उदाहरण—कण्डूञ्धातु गात्रविघर्षण नाम शरीरके खुजानेमें वर्त्ते है। इससे यक्प्रत्यय स्वार्थमें करनेसे रूप सिद्ध हुआ कण्डू-य फिर 'सधातु' इसकर धातुसंज्ञामें 'स्वरितेत उभे' इसकर दोनों पद युक्त करनेसे रूप सिद्ध हुआ। कण्डूयति, कण्डूयते। लिट्में। कण्डूयांचकार। लुङ्में। अकण्डूयीत्, अकण्डूयिष्ट। मन्तु अपराध और क्रोधमें वर्त्ते है। इससे यक् प्रत्यय करनेपर 'मे' इसकर दीर्घ करनेसे धातुसंज्ञामें सिद्ध हुआ। मन्तूयति। कोई आचार्य इसको ङित्संज्ञक कहते हैं इससे आत्मनेपद होनेसे सिद्ध हुआ। मन्तूयते। वल्गु पूजा और मधुरतामें वर्त्ते है। इससे यक् प्रत्यय करनेके अनन्तर धातुसंज्ञामें सिद्ध हुआ। वल्गूयति। असु असू असूञ् यह तीनों धातु उपताप नाम सन्ताप करनेमें वर्त्ते हैं। असुधातुसे यक् प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। अस्यति। लिट्में 'अनपि च हलात्' इसकर आम् प्रत्यय करनेपर यकारका लोप और 'यत' इसकर अकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ। असाञ्चकार। लुङ्में। आसीत्। असुसे यक् प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। असूयति। असूञ्से यक् प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। असूयति असूयते। लेट् दीप्ति नाम प्रकाश अर्थमें वर्त्ते है। लेट्धातुसे यक् प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। लेटयति। मेधा शीघ्रही ग्रहण करनेमें वर्त्ते है। यक् प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। मेधायति। सुख दुःख यह दोनों तत्क्रिया नाम सुख और दुःख अर्थमें वर्त्ते हैं। यक् प्रत्यय करनेके अनन्तर 'यत' इसकर अकारका लोप करनेपर सिद्ध हुआ। सुख्यति। दुःख्यति। लिट्में। सुखाञ्चकार। दुःखाञ्चकार। लुङ्में। असुखीत्। अदुःखीत्। सपर् धातु पूजाअर्थमें वर्त्ते है। यक्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। सपर्यति। लिट्में 'अनपि च हलात्' इसकर यकारका लोप करनेपर सिद्ध हुआ। सपराञ्चकार। लुङ्में। असपर्यीत्।

भिषज् चिकित्सा करनेमें वर्त्ते है । यक्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । भिषिज्यति । लिट्में । भिषिजाञ्चकार । लुङ्मे । अभिषिजीत् । इषुध्धातु वाणके धारण करनेमें वर्त्ते है । यक्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । इषुध्यति । लिट्में 'अनपि च हसात्, यतः' इनकर यकार अकारका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । इषुधांचकार । लुङ्में । ऐषुधीत् । गद्गद्धातु वाक्स्खलन नाम गद्गद होनेमें वर्त्ते है । यक्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । गद्गद्यति । लिट्में । गद्गदाञ्चकार । लुङ्में । अगद्गदीत् । एलाधातु और खेलाधातु विलासअर्थमें वर्त्ते हैं । यक्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । एलायति । खेलायति । हृणीङ्धातु रोष करनेमें और लज्जामें वर्त्ते है । यक्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । हृणीयते । महीङ् पूजाअर्थमें वर्त्ते है । यक्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । महीयते । अगद नीरोगतामें वर्त्ते है यक्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । अगद्यति । लिट्में 'अनपि च हसात्, यतः' इनकर यकार अकारका लोप करनेपर सिद्ध हुआ अगद्यति । लुङ्मे । आगदीत् ॥ इति कण्ड्वादयः ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामेण भाषया । चन्द्रिकोत्तरार्द्धवृत्तौ कृतं कंड्वादिसाधनम् ॥ ६ ॥

निविशादेः ॥ ४८२ ॥ न्यादिपूर्वाद्विशादेर्धातोरात् ॥ निविशते ॥

भाषा–नि आदिक उपसर्ग हैं पूर्व जिनके ऐसे विश आदिक धातुओंसे आत्मनेपद होय । उदाहरण–उपसर्ग पूर्व युक्त करनेसे तुदादि विशधातुसे आत्मनेपद युक्त करनेपर रूप सिद्ध हुआ । निविशते ॥

परिव्यवेभ्यः क्रियः ॥ ४८३ ॥ परिक्रीणीते । विक्रीणीते अवक्रीणीते ॥

भाषा–परि, वि, अव, इन उपसर्गोंसे डुक्रीञ्धातुसे आत्मनेपद होय । उदाहरण–परि, वि, अव यह उपसर्ग पृथक् २ पूर्व युक्त करनेसे क्र्यादिगणीय डुक्रीञ्

१ सप्रत्ययके विषे कण्ड्वादिक धातुओंका तृतीय अवयव द्वित्व होता है । उदाहरण–कण्डूधातुसे स्वार्थमें यक्प्रत्यय कर सप्रत्यय करनेपर तृतीय अवयव द्वित्व करनेसे सिद्ध हुआ । कंडूयियिषति । नामधातुओंके विषे यप्रत्ययान्तसे सप्रत्यय करनेपर आदिके तीनों अवयवोंमें प्रत्येक द्वित्व हो सक्ते ह परन्तु स्वरादिका दूसराही द्वित्व होता है । उदाहरण–पुत्रशब्दसे इच्छाअर्थमें यप्रत्यय करनेके अनन्तर सप्रत्यय करनेसे तीनोंमेंसे एक द्वित्व करनेपर रूप सिद्ध हुआ । पुपुत्रीयिषति । पुतित्रीयिपति । पुत्रीयियिषति । इन्द्रशब्दसे इच्छाअर्थमें यप्रत्यय कर सप्रत्यय करनेसे 'स्वरादेः परः' इसकर द्री और यि दोनोंमेंसे एकको द्वित्व करनेपर सिद्ध हुआ । इदिद्रीयिषति । इन्द्रीयियिषति । ञ्यन्तसे सप्रत्यय करनेपर आदिके तीनो अवयवोंसे यथेच्छित द्वित्व होता है । उदाहरण–प्रियशब्दसे ञिप्रत्यय करनेपर प्र आदेश हुआ फिर सप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । पिप्रापयिषति । प्रापिपयिषति । प्रापयियिषति । यङ्सञ्यन्तात्सप्रत्यये तु । बोभूयिषयियाति । यङञिसान्तात् ञिप्रत्यये तु । बोभूयिषयते ॥ इति प्रत्ययमाला ॥

धातुसे आत्मनेपद युक्त करनेपर ' इ इसे ' इसकर सिद्ध हुआ । परिक्रीणीते । विक्रीणीते । अवक्रीणीते ॥

विपराभ्यां जे ॥ ४८४ ॥ विजयते । व्यजेष्ट । पराजयते ॥

भाषा—वि, परा इन उपसर्गोंसे परे भ्वादिगणीय जिधातुसे आत्मनेपद होय । उदाहरण—वि, परा यह उपसर्ग पृथक् २ पूर्व युक्त करनेसे भ्वादिगणीय जिधातुसे आत्मनेपद युक्त करनेपर रूप सिद्ध हुआ । विजयते । पराजयते । लुङमें । व्यजेष्ट । पराजेष्ट ॥

आङो दाणो नमु विकसने ॥ ४८५ ॥ विद्यामादत्ते । आदित । विकसने तु । व्याददाति मुखं कृष्ण । पराङ्गकर्मकान्नवत्येव । व्याददते पिपीलिका पतगस्य मुखम् ॥

भाषा—आङ्उपसर्गसे परे डुदाञ्धातुसे आत्मनेपद होय और विकसन अर्थके विषें नहीं होय । उदाहरण—आङ्उपसर्ग पूर्व युक्त करनेपर ह्वादिगणीय डुदाञ् धातुसे आत्मनेपद करनेसे रूप सिद्ध हुआ । आदत्ते । लुङमें ' अपिदाधात्यामि स्थोरिंत्वमाति, लोपो ह्रस्वात् ' इनकर सिद्ध हुआ । आदित । और विकसनअर्थमें आङ्उपसर्ग पूर्व होनेसे डुदाञ्धातुसे आत्मनेपद नहीं हुआ किन्तु परस्मैपद युक्त होनेसे सिद्ध हुआ । व्याददाति मुखं कृष्ण' । यहां अपना अंगही कर्म है । और विकसनअर्थके विषें पराङ्गकर्मवाले डुदाञ्धातुसे आत्मनेपदही होता है । उदाहरण—व्याददते पिपीलिकाः पतंगस्य मुखम् । इसमें पर जो पतंग उसका मुख कर्म है न कि कर्तृवाचक पिपीलिकाओंका अंग कर्मवाचक है इसीसे विकसनअर्थमें आत्मनेपद हुआ है ।

क्रीड आङनुसम्परिभ्यः ॥ ४८६ ॥ आक्रीडते । अनुक्रीडते । परिक्रीडते ॥

भाषा—आङ्, अनु सम्, परि इन उपसर्गोंसे परे क्रीडधातुसे आत्मनेपद होय । उदाहरण—आङ् अनु, सम्, परि यह उपसर्ग पूर्व युक्त करनेसे क्रीडधातुसे आत्मनेपद युक्त करनेपर सिद्ध हुआ । आक्रीडते । अनुक्रीडते । परिक्रीडते ॥

समोऽकूजने ॥ ४८७ ॥ संक्रीडते । कूजने तु । संक्रीडति रथचक्रम् ॥

भाषा—कूजनअर्थसे भिन्नअर्थके विषें सम् उपसर्गसे परे क्रीडधातुसे आत्मनेपद होय और कूजन नाम शब्दअर्थमें परस्मैपद होय । उदाहरण—संक्रीडति रथचक्रम् । यहां कूजन अर्थ है इस कारण परस्मैपद हुआ है ॥

आगमेः क्षमायाम् ॥ ४८८ ॥ आगमयस्व तावत् ॥

भाषा–आङ्उपसर्गसे परे णिप्रत्ययान्त गम्लृधातुसे आत्मनेपद होय क्षमा अर्थके विषैं। उदाहरण–आगमयस्व तावत्। यहां क्षमा अर्थ विद्यमान है इस कारण आङ्उपसर्ग पूर्व युक्त करनेसे णिप्रत्ययान्त गमधातुसे आत्मनेपद करनेपर लोट्के मध्यमभागके प्रथम वचनमे सिद्ध हुआ। आगमयस्व ॥

शिक्षेर्जिज्ञासायाम् ॥ ४८९ ॥ धनुषि शिक्षते ॥

भाषा–जिज्ञासा अर्थात् जाननेकी इच्छाके विषैं सप्रत्ययान्त, शक्लृधातुसे आत्मनेपद होय। उदाहरण–धनुषि शिक्षते। इसमें जिज्ञासा अर्थ विद्यमान है क्योंकि धनुषके जाननेमे समर्थ होनेकी इच्छा करता है इस कारण सप्रत्ययान्त शक्धातुसे आत्मनेपद करनेसे सिद्ध हुआ। शिक्षते ॥

हरतेर्गतताच्छील्ये ॥ ४९० ॥ पैतृकमश्वा अनुहरन्ते मातृकं गावः ॥

भाषा–गतताच्छील्य नाम सादृश्यके निरन्तर वर्त्तनेमें हृञ्धातुसे आत्मनेपद होय। उदाहरण–पैतृकमश्वा अनुहरन्ते मातृकं गावः। इसमें सादृश्यका निरन्तर वर्त्तन अर्थ पाया जाता है क्योंकि पितामाताकी सदृशताको निरन्तर घोडा गौएं वर्त्तते हैं इस कारण हृञ्धातुसे आत्मनेपद करनेपर सिद्ध हुआ। अनुहरंते ॥

किरतेर्हर्षजीविकाकुलायकरणेषु ॥ ४९१ ॥

भाषा–हर्ष, जीविका और कुलायकरण नाम आश्रय यह अर्थ वाच्य हुए संते कृधातुसे आत्मनेपद होय। भाव यह है कि हर्ष, जीविका और आश्रय यह निमित्त होनेसे कृधातुसे आत्मनेपद होय ॥

अपात्किरतेः सुट् चतुष्पाच्छकुनिकर्तृके आलेखने ॥ ४९२ ॥ अपस्किरते वृषो हृष्टः। कुक्कुटो भक्षार्थी। श्वाऽऽश्रयार्थी च। हर्षादिष्विति किम्। अपकिरति कुसुमं वायुः ॥

भाषा–हर्षादिक अर्थ निमित्त हुए संते आलेखनअर्थमें पशु और पक्षी कर्त्ता होनेपर कृधातुको सुट्का आगम होय। उदाहरण–अपस्किरते वृषो हृष्टः। इसमें खोदनेका हर्ष निमित्त है पशु कर्त्ता वृष और आलेखन अर्थ विद्यमान है इस कारण तुदादि कृधातुसे आत्मनेपद युक्त करनेपर फिर कृको अप उपसर्गसे सुट् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ। अपस्किरते। 'कुक्कुटो भक्षार्थी अपस्किरते' इसमे खोदनेका निमित्त भक्ष हुआ और पक्षी कर्त्ता कुक्कुट है और आलेखन अर्थ विद्यमान है। 'श्वाऽऽश्रयार्थी' इसमें खोदनेका निमित्त आश्रय निर्माण है और पशु कर्त्ता श्वा

और आलेखन अर्थ विद्यमान है इस कारण कृधातुसे आत्मनेपद और अप उपसर्गसे सुट्का आगम हुआ है और जहां हर्षादि अर्थ नहीं होवेंगे तहां आत्मनेपद और उपसर्गसे कृधातुको सुट् आगमभी नहीं होवे । उदाहरण-अपकिरति कुसुमं वायुः । और हर्षादिक अर्थ ती पाये जावें परन्तु आलेखन अर्थ न होनेसे सुट्का आगम न होवे तौभी आत्मनेपद नहीं होगा । उदाहरण-गजोऽपकिरति ॥

आङो नुप्रच्छोः ॥ ४९३ ॥ आनुते । आपृच्छते ॥

भाषा-आङ्उपसर्गसे परे अदादि णुधातु और तुदादि प्रच्छधातुसे आत्मनेपद होय । उदाहरण-आङ्उपसर्ग पूर्व युक्त करनेसे णु और प्रच्छ धातुसे आत्मनेपद करनेपर रूप सिद्ध हुआ । आनुते । आपृच्छते ॥

शप उपालम्भे ॥ ४९४ ॥ विभाय शपते ॥

भाषा-उपालम्भ नाम आक्रोशार्थके विषै अर्थात् शपथरूप अर्थके विषै शपधातुसे आत्मनेपद होता है । उदाहरण-विभाय शपते । इसमें शपथरूप अर्थ विद्यमान है । इस कारण शपधातुसे आत्मनेपद करनेपर सिद्ध हुआ । शपते ॥

समवप्रविभ्य स्थः ॥४९५॥ संतिष्ठते । समस्थित । अवतिष्ठते । प्रतिष्ठते । वितिष्ठते ॥

भाषा-सम्, अव, प्र वि इन उपसर्गोंसे परे स्थाधातुसे आत्मनेपद होय । उदाहरण-संउपसर्ग पूर्व युक्त करनेपर स्थाधातुसे आत्मनेपद करनेसे सिद्ध हुआ संतिष्ठते । लुङ्में अपिदाधास्थामिसेर्लिस्त्वमाति, स्लोपो ह्रस्वात् ' इनकर सिद्ध हुआ । समस्थित । इसी प्रकार । अवतिष्ठते । प्रतिष्ठते । वितिष्ठते ॥

आङः प्रतिज्ञायाम् ॥ ४९६ ॥ शब्द नित्यमातिष्ठते ॥

भाषा-प्रतिज्ञा अर्थके विषै आङ्उपसर्गसे परे स्थाधातुसे आत्मनेपद होय । उदाहरण-शब्दं नित्यमातिष्ठते । इसमें प्रतिज्ञा अर्थ विद्यमान है क्योंकि शब्दकी प्रतिज्ञा करता है इस कारण स्थाधातुसे पूर्व आङ् उपसर्ग नियुक्त कर आत्मनेपद करनेपर सिद्ध हुआ । आतिष्ठते ॥

स्वाभिप्रायाविष्करणे निर्णेत्राख्यायां च ॥ ४९७ ॥ गोपी कृष्णाय तिष्ठते । अस्थित । संशय्य कर्णादिषु तिष्ठते य ॥

भाषा-अपने अभिप्रायके प्रकट करनेमें तथा विवादके निर्णय करनेवालेका नाम विद्यमान होनेपर स्थाधातुमे आत्मनेपद होय । उदाहरण-गोपी कृष्णाय तिष्ठते । इसमें अभिप्रायकी प्रकटता है क्योंकि स्थित होकर वा नेत्रविकारसे गोपी

अपने अभिप्रायको कृष्णके लिये जनाती है इस कारण स्थाधातुसे आत्मनेपद करनेपर सिद्ध हुआ । तिष्ठते । 'संशय्य कर्णादिषु तिष्ठते यः' इसमें विवादके निर्णेताकी आख्या है क्योंकि संशयको विधान कर निर्णेतृभाव कर कर्णादिकोंको आश्रय करता है इस कारण निर्णेतृभावकर कर्णादिकोंका नाम होनेसे स्थाधातुसे आत्मनेपद करनेपर सिद्ध हुआ। तिष्ठते ॥

उदोऽनूर्ध्वकर्मणीहायाम् ॥ ४९८ ॥ मुक्तावुत्तिष्ठते । उदस्थास्तम्भोस्सलोपः । उत्थासीष्ट । उत्थासीयास्ताम् । उदस्थास्यत । उदस्थित । अनूर्ध्वकर्मणि किम् । पीठादुत्तिष्ठति । ईहायां किम् । ग्रामाच्छतमुत्तिष्ठति ॥

भाषा–जिस इच्छापूर्वक चेष्टाके विषैं ऊर्ध्वकर्म विद्यमान नहीं होय उस इच्छापूर्वक चेष्टामें उद् उपसर्गसे स्थाधातुसे आत्मनेपद होय । उदाहरण–मुक्तौ उत्तिष्ठते । इसमें ऊर्ध्वकर्मवर्जित इच्छापूर्वक चेष्टा अर्थ विद्यमान है क्योंकि मुक्तिके निमित्त इच्छापूर्वक चेष्टा करता है इस कारण स्थाधातुसे आत्मनेपद हुआ । सीष्टादिकमें 'उदस्थास्तम्भोः सलोपः' इसकर सकारका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । उत्थासीष्ट । अनूर्ध्व कर्म ऐसा क्यों कहा । 'पीठादुत्तिष्ठति' इसमे ऊर्ध्वकर्म विद्यमान है । ईहा ऐसा क्यों कहा । 'ग्रामाच्छतमुत्तिष्ठति' इसमे ईहाअर्थ विद्यमान नहीं है ॥

उपान्मंत्रकरणेदेवपूजासंगतिकरणमित्रकरणपथिषु ॥ ४९९ ॥ आग्नेय्याऽऽग्नीध्रमुपतिष्ठते । मंत्रकरणे किम् । भर्तारमुपतिष्ठति यौवनेन । आदित्यमुपतिष्ठते । गंगा यमुनामुपतिष्ठते । रथिकानुपतिष्ठते । स्रुघ्नमुपतिष्ठते पन्थाः ॥

भाषा–मंत्रकरण, देवपूजा, संगतिकरण, मित्रकरण और मार्ग इन अर्थोंके विषैं उपउपसर्गसे स्थाधातुसे आत्मनेपद होय । उदाहरण–आग्नेय्याऽऽग्नीध्रमुपतिष्ठते । इसमे मंत्रकरण स्तुति अर्थ विद्यमान है क्योकि अग्निदेवतासंबन्धी मंत्र कर आग्नीध्रनाम अग्निविशेषके स्तुति करनेको उसके समीप स्थित है इस कारण उपउपसर्गसे स्थाधातुसे आत्मनेपद हुआ है । मंत्रकरण ऐसा क्यों कहा ? 'भर्त्तारमुपतिष्ठति यौवनेन' इसमें मंत्रकरण अर्थ विद्यमान नहीं है क्योंकि भर्त्तारके समीप यौवनकरके खडी हुई है इस कारण उपउपसर्गसे आत्मनेपद नहीं हुआ है । 'आदित्यमुपतिष्ठते' इसमें देवपूजा अर्थ विद्यमान है क्योंकि आदित्यकी पूजा करनेको उनके सन्मुख खडा है इस कारण उपउपसर्गसे स्थाधातुसे आत्मने-

पद हुआ है, ' गंगा यमुनामुपतिष्ठते ' इसमें संगतिकरण अर्थ विद्यमान है क्योंकि गंगा यमुनाके प्रति संगमको प्राप्त हुई है इस कारण उपउपसर्गसे स्थाधातुसे आत्मनेपद हुआ है । ' रथिकानुपतिष्ठते ' इसमें मैत्रीकरण अर्थ विद्यमान है क्योंकि रथिकोंके प्रति मित्रता करता है इस कारण उपउपसर्गसे स्थाधातुसे आत्मनेपद हुआ है । ' सुघ्नमुपतिष्ठते पन्था ' इसमें मार्ग अर्थ विद्यमान है क्योंकि मार्ग सुघ्नदेशको प्राप्त करता है इस कारण उपउपसर्गसे स्थाधातुसे आत्मनेपद हुआ है ॥

वा लिप्सायाम् ॥ ५०० ॥ भिक्षुः प्रभुमुपतिष्ठते उपतिष्ठति वा ॥

भाषा—लिप्सा अर्थ प्राप्त हुए सते उपउपसर्गसे परे स्थाधातुसे विकल्पकरके आत्मनेपद होय । उदाहरण—भिक्षुः प्रभुमुपतिष्ठते उपतिष्ठति वा । इसमें लिप्सा अर्थ विद्यमान है क्योंकि भिक्षु पानेकी इच्छासे प्रभुके समीप जाता है इस कारण उपउपसर्गसे परे स्थाधातुसे विकल्पकरके आत्मनेपद हुआ है ॥

अकर्मकाच्च ॥ ५०१ ॥ ज्ञानमुपतिष्ठते ॥

भाषा—उपउपसर्गसे परे अकर्मक स्थाधातुसे आत्मनेपद होय । उदाहरण—ज्ञानमुपतिष्ठते । इसमें अकर्मक स्थाधातु है क्योंकि ज्ञान स्वयं उपस्थित होता है इस कारण उपउपसर्गसे परे स्थाधातुसे आत्मनेपद हुआ है ॥

उद्विभ्यां तपोऽकर्मकात्स्वाङ्गकर्मकाच्च ॥ ५०२ ॥ उत्तपते वितपते पाणिं शिरो वा । स्वांगकर्मकात्किम् । सुवर्णमुत्तपति ॥

भाषा—उद् और वि इन उपसर्गोंसे परे अकर्मक तपधातु अथवा स्वांगकर्मक तप धातुसे आत्मनेपद होय । उदाहरण—उत्तपते वितपते पाणिं शिरो वा । इसमें कर्ताका निज अंगही कर्म है इस कारण उद् वि इन दोनों उपसर्गोंसे परे तपधातुसे आत्मनेपद हुआ है । स्वांगकर्मक तपधातुसे आत्मनेपद होय ऐसा क्यों कहा । ' सुवर्णमुत्तपति ' इसमें कर्ताका निज अंग कर्म नहीं है इस कारण उद् वि उपसर्गसे परे स्थाधातुको आत्मनेपद नहीं हुआ है ॥

आङो यमहनिभ्यामकर्मकाभ्यां स्वांगकर्मकाभ्यां च ॥५०३॥ आयच्छते आहते पाणिं शिरो वा । आयनाते । आहते । अन्यत्र । शत्रुमायच्छति आहन्ति वा ॥

भाषा—आङ्उपसर्गसे परे अकर्मक यमधातु, हनधातु और स्वांगकर्मक यमधातु और हन्धातुसे आत्मनेपद होय । उदाहरण—आयच्छते आहते पाणिं शिरो वा । इसमें कर्ताका निज अंग पाणि वा शिर विद्यमान है इस कारण आङ् उपसर्ग पूर्व युक्त करनेपर यम् हन्धातुसे आत्मनेपद हुआ है । द्विवचनमें हन्-

धातुका ' गमां स्वरे, हनो घ्ने ' इनकर सिद्ध हुआ । आघ्नाते । सेमें ' लोपस्त्वनुदात्ततनाम् ' इसकर नकारका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । आहसे । ' शत्रुमायच्छति आहन्ति वा ' इसमें 'कर्त्ताका निज अंग कर्म नहीं इस कारण आङ्उपसर्ग पूर्व होनेपरभी यम हन्धातुसे आत्मनेपद नहीं हुआ है ॥

हनस्सिः कित् ॥ ५०४ ॥ वधो वाति । आवधिष्ट । आवधिषाताम् । आहसाताम् ॥

भाषा-हन्धातुसे परे सिप्रत्यय कित्संज्ञक होय । उदाहरण-आहन्धातुसे लुङ्में सिप्रत्यय करनेपर सिकी कित्संज्ञा होनेसे ' लोपस्त्वनुदात्ततनाम् ' इसकर नकारका लोप और ' लोपो ह्रस्वात् ' इसकर सिका लोप किया तब रूप सिद्ध हुआ । आहते । द्विवचनमें । आहसाताम् । और आत्मनेपदमें ' हनो लुङ्लिङोर्वधो वाति ' इसकर एक जगह वध आदेश करनेपर रूप सिद्ध हुआ । आवधिष्ट । द्विवचनमें । आवधिषाताम् ॥

यमस्सूचने सिःकित् ॥५०५॥ उदायत उदायसाताम् उदायसत ॥

भाषा-सूचन नाम जो कि दूसरेके दोषका प्रकट करना है उस अर्थमें यमधातुसे परे सिप्रत्ययकी कित्संज्ञा होवे है । उदाहरण-सूचनअर्थमें यमधातुसे सिप्रत्यय करनेके अनन्तर सिकी कित्संज्ञा होनेपर ' लोपस्त्वनुदात्ततनाम्, लोपो ह्रस्वात्' इनकर सिद्ध हुआ । उदायत । द्विवचनमें । उदायसाताम् ।

समो गमृच्छिप्रच्छिस्वरत्यर्तिश्रुविदिदृशिभ्यः ॥ ५०६ ॥ अकर्मकेभ्यः ॥ सङ्गच्छते ॥

भाषा-सम् उपसर्गसे परे अकर्मक गम्, ऋच्छ, प्रच्छ, स्वृ, ऋ, श्रु, विद् और दृश्, धातु इनसे आत्मनेपद होता है । उदाहरण-सम् उपसर्ग पूर्व युक्त करनेपर गम् धातुसे आत्मनेपद करनेसे लट्में सिद्ध हुआ । संगच्छते । लिट्में । संजग्मे ॥

गमेस्सिसयौ कितौ वा ॥ ५०७ ॥ संगसीष्ट संगंसीष्ट । समगत समगंस्त । समृच्छिष्यते । समानृच्छे । समार्च्छिष्ट । संस्वरते । संसस्वरे । संस्वरिषीष्ट संस्वृषीष्ट । समस्वरिष्ट समस्वृत । सम्पृच्छते । समप्रष्ट । समप्रक्षाताम् । संशृणुते । संश्रोता । समश्रोष्ट । संविन्ते । संविदाते ॥

भाषा-गम्धातुसे परे सिप्रत्यय और सीष्टादिकोंको सी यह दोनों विकल्प करके कित्संज्ञक हैं । उदाहरण-सम् उपसर्ग पूर्व युक्त कर गम्धातुसे सीष्टादि

करनेपर सीय्यादिकोंकी किरसंज्ञा होनेसे ' लोपस्त्वनुदात्ततनाम् ' इसकर नकारका लोप किया तब रूप सिद्ध हुआ । संगसीष्ट । और जहां सीय्यादिकोंकी किरसंज्ञा नहीं हुई तह। सिद्ध हुआ । संगंसीष्ट । लुङ्में जहां सिकी किरसंज्ञा हुई तहां 'लोपस्त्वनुदात्ततनाम्, लोपो ह्रस्वात् ' इनकर सिद्ध हुआ । समगत और जहां सिप्रत्ययकी किरसंज्ञा नहीं हुई तहां सिद्ध हुआ । समगस्त । द्विवचनमें । समगसाताम्, समगंसाताम् । तुदादि प्रच्छधातुसे पूर्व सम् उपसर्ग युक्त करनेपर आत्मनेपद करनेसे रूप सिद्ध हुआ । समृच्छते । लिट्में ' नुगशाम् ' इसकर पूर्वको नुक् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । समानृच्छे । स्वृधातुसे पूर्व सम् उपसर्ग होनेसे आत्मनेपद करनेपर रूप सिद्ध हुआ । संस्वरते । लिट्में ' गुणोर्तिसंयोगाद्यो ' इसकर सिद्ध हुआ । संसस्वरे । सीय्यादिकमें ' स्वरतिसूतिसूयति० ' इसकर जहां इट् हुआ वहां सिद्ध हुआ । संस्वरिसीष्ट । और जहां इट् नहीं हुआ वहां ' उ ' इसकर गुण न होनेसे सिद्ध हुआ । सस्वृषीष्ट । लुङ्में इट्पक्षमें । समस्वरिष्ट । और अनिट्पक्षमें ' उ', लोपो ह्रस्वात् ' इनकर सिद्ध हुआ । समस्वृत । द्विवचनमें । समस्वृषाताम् । प्रच्छधातुसे पूर्व सम् उपसर्ग युक्त करनेपर आत्मनेपद करनेपर सिद्ध हुआ । सम्पृच्छते । लिट्में मपृच्छे । लुङ्में 'छशप०' इसकर छकारको षकार किया फिर ' झसात् ' इसकर सिका लोप किया तब ' धुमि'० ' इसकर सिद्ध हुआ । समप्रष्ट । द्विवचनमें छशप०, षढोः०, कि० ' इनकर सिद्ध हुआ । समप्रक्षाताम् । श्रुधातुसे पूर्व सम् उपसर्ग युक्त करनेपर आत्मनेपद करनेसे रूप सिद्ध हुआ । सश्रृणुते । लुट्में । सश्रोता । लुङ्में । समश्रोष्ट । भ्वादि ऋधातुसे पूर्व सम् उपसर्ग युक्त करनेपर आत्मनेपद करनेसे सिद्ध हुआ । समृच्छते । लिट्में । समारे । सीय्यादिकमें ' उ' ' इसकर गुण न होनेसे सिद्ध हुआ । समृषीष्ट । लुङ्में ' उ ' इसकर गुण नहीं हुआ ' लोपो ह्रस्वात् ' इसकर सिका लोप करनेपर माङ्के योगमें सिद्ध हुआ । मासमृत । द्विवचनमें । मासमृषाताम् । माङ्के अभावमें । समार्त । द्विवचनमें । समार्षाताम् । ह्वादि ऋधातुसे पूर्व सम् उपसर्ग युक्त करनेपर आत्मनेपद करनेसे ' ह्वादेर्द्विश्च, अर्तिपिपर्त्योरिः पूर्वस्य, असवर्णे स्वरे० ' इनकर सिद्ध हुआ । समियृते । द्विवचनमें । समियृाते । लुङ्में ' सर्तिशास्त्यर्तिभ्यो ङो लुङि, ऋवर्णदृशोर्ङे गुण: ' इनकर सिद्ध हुआ । समारत । द्विवचनमें । समारेताम् । विदधातुसे पूर्व सम् उपसर्ग युक्त करनेपर आत्मनेपद करनेसे रूप सिद्ध हुआ । संविते । द्विवचनमें । संविदाते । बहुवचनमें संविद्-अते ऐसा स्थित है ॥

वेत्तेरन्तो वा रुट् ॥५०८॥ सविदते सविद्रते । सम्पश्यते । समरन्त । समियृते । समारे । समियृते । ऋतोरि पूर्वस्य । समियृीत । समि-

ग्दीयाताम् । स्वरादेः । अइ ए । एऐ ऐ । समैयृत । समैय्राताम् । अकर्मकात्किम् । ग्रामं सङ्गच्छति ॥

भाषा-विद्धातुसे परे अन्तको रुट् आगम होय । उदाहरण-संविद्-अन्ते । इसमें ' आतोन्तोऽदनतः ' इसकर अन्तके स्थानमें अते करनेपर रुट् आगम करनेसे रूप सिद्ध हुआ । संविद्रते । दृशधातुसे सम् उपसर्ग पूर्व युक्त कर आत्मनेपद करनेसे लट्में रूप सिद्ध हुआ । संपश्यते । लिट्में । संददृशे । सीष्टादिकर्मे । ' सिस्योः ' इसकर गुण न होनेसे ' छशष०, षढोः०, कि० ' इनकर सिद्ध हुआ । संदृक्षीष्ट । लुङ्मे ' सिस्योः ' इसकर गुण न होनेसे ' छशष० ' इसकर सिद्ध हुआ । समदृष्ट । अकर्मक ऐसा क्यों कहा । ' ग्रामं संगच्छति ' इसमें सकर्मक होनेसे परस्मैपद हुआ है ॥

उपसर्गादस्यत्यूह्योर्वा ॥ ५०९ ॥ निरस्यते निरस्यति । निरास्यत् समूहति समूहते । समुह्यात् ॥

भाषा-उपसर्गमात्रस परे असधातु और ऊहधातुसे आत्मनेपद विकल्पकरके होय । उदाहरण-निर् उपसर्ग पूर्व युक्त करनेपर दिवादि ' असु क्षेपणे ' धातुसे परस्मैपद आत्मनेपद दोनों करनेसे रूप सिद्ध हुआ । निरस्याति, निरस्यते । सम् उपसर्ग पूर्व युक्त करनपर ऊहधातुसे दोनों पद करनेपर रूप सिद्ध हुआ । समूहति, समूहते । लिङ्में ' उपसर्गादूहतेर्ह्रस्वो यादादौ किति ' इसकर उपसर्गमात्रसे परे ऊहधातुको ह्रस्व होय कित्ङित्संज्ञक यादादि प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण-यादादिकमें सम् उपसर्ग पूर्व युक्त कर ऊहधातुको ह्रस्व करनेपर रूप सिद्ध हुआ । समुह्यात् ॥

निसमुपविभ्यो ह्वः ॥ ५१० ॥ निह्वयते ॥

भाषा-नि, सम्, उप, वि इन उपसर्गोंसे परे ह्वेञ्धातुसे आत्मनेपद होय । उदाहरण-निउपसर्ग पूर्व युक्त करनेपर ह्वेञ्धातुसे आत्मनेपद करनेसे सिद्ध हुआ । निह्वयते ॥

स्पर्द्धायामाङः ॥ ५११ ॥ कृष्णश्चाणूरमाह्वयते ॥

भाषा-दूसरेके तिरस्कार करनेकी इच्छाका नाम स्पर्द्धा है इस स्पर्द्धा अर्थमें आङ्उपसर्गसे परे ह्वेञ्धातुसे आत्मनेपद होता है । उदाहरण-कृष्णश्चाणूरमाह्वयते । इसमें स्पर्द्धा विद्यमान है क्योंकि स्पर्द्धा कर कृष्ण चाणूरको बुलाते हैं इस कारण आङ्उपसर्ग पूर्व युक्त करनेपर ह्वेञ्धातुसे आत्मनेपद हुआ है ॥

अप्रतिबन्धोत्साहस्फीततासु क्रमः ॥ ५१२ ॥ ऋचि क्रमते बुद्धिः । अध्ययनाय क्रमते । क्रमन्तेऽस्मिन्शास्त्राणि ॥

भाषा—अप्रतिबन्ध, उत्साह और स्फीतता अर्थात् वृद्धि इन अर्थोंके विषैं क्रम धातुसे आत्मनेपद होय । उदाहरण—ऋचि क्रमते बुद्धि । इसमें अप्रतिबन्ध अर्थ विद्यमान है क्योंकि ऋचामें बुद्धि नहीं प्रतिबन्धको प्राप्त होवे है इस कारण क्रमधातुसे आत्मनेपद हुआ है। 'अध्ययनाय क्रमते' इसमें उत्साह अर्थ विद्यमान है क्योंकि अध्ययनके अर्थ उत्साह करता है। 'क्रमन्तेऽस्मिन् शास्त्राणि' इसमें वृद्धि अर्थ विद्यमान है क्योंकि इसके विषैं शास्त्र वृद्धिको प्राप्त होवे हैं इस कारण क्रमधातुसे आत्मनेपद हुआ है ॥

उपपराभ्याम् ॥ ५१३ ॥ उपक्रमते । पराक्रमते ॥

भाषा—अप्रतिबन्ध, उत्साह, स्फीतता यह अर्थ वाच्य हुए संते उप और परा इन दोनों उपसर्गोंसे परे क्रमधातुसे आत्मनेपद होय। उदाहरण—अप्रतिबन्धादि अर्थोंके विषैं उप परा इन उपसर्गोंसे परे क्रमधातुसे आत्मनेपद करनेपर सिद्ध हुआ। उपक्रमते । पराक्रमते ॥

आङो ज्योतिरुद्गमने ॥ ५१४ ॥ आक्रमते आक्रम्यते सूर्यः ॥

भाषा—ज्योतिके प्रकट करनेमें आङ्उपसर्गसे परे क्रमधातुसे आत्मनेपद होय। उदाहरण—आक्रमते आक्रम्यते सूर्यः। इसमें ज्योतिका प्रकट करना अर्थ विद्यमान है क्योंकि सूर्य उदयको प्राप्त होवे हैं इस कारण आङ्उपसर्गसे परे क्रमधातुसे आत्मनेपद हुआ है ॥

वेः पादविहरणे ॥ ५१५ ॥ साधु विक्रमते वाजी ॥

भाषा—पादविहरण अर्थमें विउपसर्गसे परे क्रमधातुसे आत्मनेपद होता है। उदाहरण—साधु विक्रमते वाजी । इसमें पादविहरण अर्थ विद्यमान है क्योंकि घोडा भली प्रकार चलता है इस कारण वि उपसर्गसे परे क्रमधातुसे आत्मनेपद हुआ है ॥

प्रोपाभ्यां प्रारम्भार्थाभ्याम् ॥ ५१६ ॥ प्रक्रमते । उपक्रमते ॥

भाषा—प्रारम्भ अर्थ है जिनका ऐसे प्र और उप दोनों उपसर्गोंसे परे क्रमधातुसे आत्मनेपद होय । उदाहरण—प्रारम्भअर्थके विषैं प्र और उप इन दोनों उपसर्गोंसे परे क्रमधातुसे आत्मनेपद करनेपर सिद्ध हुआ। प्रक्रमते । उपक्रमते ॥

अनुपसर्गाद्वा ॥ ५१७ ॥ क्रमते क्रम्यते । क्राम्यति क्रामति ॥

भाषा—उपसर्ग पूर्व न होनेसे क्रमधातुसे विकल्पकरके आत्मनेपद होय। उदाहरण—केवल उपसर्गवर्जित क्रमधातुसे आत्मनेपद परस्मैपद करनेपर सिद्ध हुआ। क्रमते, क्रम्यते । क्रामति क्राम्यति ॥

अपह्नवे ज्ञः ॥ ५१८ ॥ शतमपजानीते ॥

भाषा—अपह्नव नाम अपनयन अर्थात् दूर करनेरूप अर्थमें ज्ञाधातुसे आत्मनेपद होय। उदाहरण—अपनयन अर्थमे ज्ञाधातुसे आत्मनेपद करनेपर सिद्ध हुआ। शतमपजानीते। इसमें अपनयन अर्थ विद्यमान है क्योंकि शतको दूर करता है ॥

अकर्म्मकाच्च ॥ ५१९ ॥ सर्पिषो जानीते ॥

भाषा—अकर्मक ज्ञाधातुसे आत्मनेपद होय। उदाहरण—सर्पिषो जानीते। इसमे ज्ञाधातु अकर्मक है क्योंकि सर्पिष् उपाय कर प्रवृत्त होता है इस कारण ज्ञाधातुसे आत्मनेपद हुआ है ॥

अनुपसर्गाज्ज्ञः ॥ ५२० ॥ गां जानीते ॥

भाषा—उपसर्ग पूर्व न होनेसे सकर्मक ज्ञाधातुसे आत्मनेपद होय। उदाहरण—उपसर्गवर्जित सकर्मक ज्ञाधातुसे आत्मनेपद करनेपर सिद्ध हुआ। गां जानीते ॥

सम्प्रतिभ्यामनाध्याने ॥ ५२१ ॥ शतं सञ्जानीते। शतं प्रतिजानीते। अनाध्याने किम्। मातरं सञ्जानाति ॥

भाषा—उत्कंठापूर्वक स्मरण करनेका नाम आध्यान है वह आध्यान जहां विदित न होवे तहा सम्, प्रति इन उपसर्गोंसे परे ज्ञाधातुसे आत्मनेपद होय। उदाहरण—शतं सञ्जानीते। इसमें आध्यान अर्थ नहीं है क्योंकि शतको देखता है इस कारण सम्उपसर्ग पूर्व युक्त करनेपर ज्ञाधातुसे आत्मनेपद हुआ है। 'शतं प्रतिजानीते' इसमेंभी आध्यान अर्थ नहीं है क्योंकि शतको अंगीकार करता है इस कारण प्रति उपसर्ग पूर्व युक्त करनेपर ज्ञाधातुसे आत्मनेपद हुआ है। अनाध्यान ऐसा क्यों कहा। 'मातरं सञ्जानाति' इसमें आध्यान अर्थ विद्यमान है क्योंकि माताको उत्कंठापूर्वक स्मरण करता है इस कारण ज्ञाधातुसे आत्मनेपद नहीं हुआ ॥

अनुपसर्गाद्वा ॥ ५२२ ॥ गां जानाति जानीते वा ॥

भाषा—उपसर्ग पूर्व युक्त न होनेसे सकर्मक वा अकर्मक ज्ञाधातुसे विकल्पकरके आत्मनेपद होता है। उदाहरण—उपसर्ग पूर्व न होनेसे सकर्मक ज्ञाधातुसे आत्मनेपद परस्मैपद दोनों करनेपर रूप सिद्ध हुआ। जानाति, जानीते वा ॥

वेः शब्दकर्मणः ॥ ५२३ ॥ कृञः ॥ शब्दं विकुरुते ॥

भाषा—वि उपसर्गसे परे शब्दकर्मक कृञ्धातुसे आत्मनेपद होय। उदाहरण—शब्दं विकुरुते। इसमें शब्द कर्म है इस कारण विउपसर्गसे परे कृञ्धातुसे आत्मनेपद हुआ है। जहा शब्दकर्म नहीं होगा तहा विउपसर्गसे परे कृञ्धातुसे आत्मनेपदभी न होवेगा ॥

अकर्मकाच्च ॥ ५२४ ॥ विकुर्वते सैन्धवा ॥

भाषा-विउपसर्गसे परे अकर्मक कृञ्धातुसे आत्मनेपद होय । उदाहरण-विकुर्वते सैन्धवा । इसमें कृञ्धातु अकर्मक है इस कारण विउपसर्गसे परे कृञ्धातुसे आत्मनेपद हुआ है ॥

भासनोपसम्भाषाज्ञानयत्नविमत्युपमन्त्रणेषु वदः ॥५२५॥ शास्त्रे वदते । भृत्यानुपवदते । शास्त्रे वदते । क्षेत्रे वदते । गृहे वदते । उपवदते ब्राह्मण परदारान् ॥

भाषा-भासन नाम दीप्ति, उपसंभाषण नाम सांत्वन, ज्ञान, यत्न, विमति और उपमंत्रण नाम उपच्छन्द इन अर्थोंके विर्षे वदधातुसे आत्मनेपद होय । उदाहरण-शास्त्रे वदते । इसमें प्रकाश अर्थ है क्योंकि शास्त्रमें प्रकाशमान होता हुआ कहता है इस कारण वद्धातुसे आत्मनेपद हुआ है । 'भृत्यानुपवदते' इसमें सांत्वन अर्थ है क्योंकि भृत्योंको समझाता हुआ कहता है इस कारण वद्धातुसे आत्मनेपद हुआ है । 'शास्त्रे वदते' इसमें ज्ञान अर्थ विद्यमान है क्योंकि शास्त्र ज्ञानको कहता है इस कारण वद्धातुसे आत्मनेपद हुआ । 'क्षेत्रे वदते' इसमें यत्न अर्थ विद्यमान है क्योंकि क्षेत्र प्रयत्नको कहता है इस कारण वद्धातुसे आत्मनेपद हुआ है । 'गृहे वदते' इसमें विमति नाम विवादअर्थ विद्यमान है क्योंकि गृहमें विवादको कहता है इस कारण वद्धातुसे आत्मनेपद हुआ है । 'उपवदते ब्राह्मण परदारान्' इसमें उपच्छन्दन अर्थ है क्योंकि परस्त्रियोंको अपनी सेवाके लिये प्रार्थना करता है इस कारण वद्धातुसे आत्मनेपद हुआ है ॥

मनुष्यादीनां संभूयोच्चारे ॥ ५२६ ॥ सम्प्रवदन्ते ब्राह्मणा ॥

भाषा-मनुष्यादिकोंके मिलकर उच्चारण करनेमें वद्धातुसे आत्मनेपद होय । उदाहरण-ब्राह्मणा सम्प्रवदन्ते । इसमें ब्राह्मणोंका मिलकर उच्चारण करना विद्यमान है इस कारण वद्धातुसे आत्मनेपद हुआ है ॥

व्यक्तवाग्विषयादनुपूर्वादकर्मकात् ॥ ५२७ ॥ अनुवदते कठः कलापस्य ॥

भाषा-जिसका वाग्विषय प्रकट हो ऐसे अनुपूर्व अकर्मक वद्धातुसे आत्मनेपद होय । उदाहरण-अनुवदते कठः कलापस्य । इसमें वाग्विषय प्रकट होता है क्योंकि वेदशाखाध्यायक कलापके सादृश्य वेदशाखाध्यायक कठ कहता है इस कारण अनु उपसर्ग पूर्व युक्त करनेपर अकर्मक वद्धातुसे आत्मनेपद हुआ है ।

वा विरुद्धोक्तौ ॥ ५२८ ॥ विप्रवदन्ति विप्रवदन्ते वा वैद्या ॥

भाषा–विरुद्ध कहनेरूप अर्थमें वदधातुसे विकल्पकरके आत्मनेपद होय । उदाहरण–विप्रवदन्ति विप्रवदन्ते वा वैद्याः । इसमें विरुद्ध उक्ति है क्योंकि वैद्य परस्पर विरुद्ध कहते हैं इस कारण वदधातुसे आत्मनेपद हुआ है ॥

अवाद्ग्रः ॥ ५२९ ॥ अवगिरते ॥

भाषा–अवउपसर्गसे परे तुदादि गृधातुसे आत्मनेपद होय । उदाहरण–अव उपसर्ग पूर्व युक्त करनेपर तुदादि गृधातुसे आत्मनेपद करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अवगिरते ॥

समः प्रतिज्ञाने ॥ ५३० ॥ शब्दं नित्यं सङ्गिरते ॥

भाषा–प्रतिज्ञानअर्थके विषैं सम् उपसर्गसे तुदादि गृधातुसे आत्मनेपद होय । उदाहरण–शब्दं नित्यं संगिरते । इसमें प्रतिज्ञाअर्थ विद्यमान है क्योंकि नित्यशब्दको प्रतिज्ञा करता है इस कारण सम् उपसर्ग पूर्व युक्त करनेपर गृधातुसे आत्मनेपद हुआ है ॥

उदश्चरस्सकर्मकात् ॥ ५३१ ॥ धर्ममुच्चरते ॥

भाषा–उद्उपसर्गसे परे सकर्मक चरधातुसे आत्मनेपद होय । उदाहरण–धर्ममुच्चरते । इसमें उद्उपसर्ग पूर्व युक्त होनेपर सकर्मक चरधातुसे आत्मनेपद हुआ है ॥

समस्तृतीयायुक्तात् ॥ ५३२ ॥ रथेन सञ्चरते ॥

भाषा–तृतीयान्तयुक्त सम् उपसर्गसे परे चरधातुसे आत्मनेपद होय । उदाहरण–रथेन सञ्चरते । इसमें तृतीयान्त रथकर युक्त जो सम् उपसर्ग उससे परे चरधातुसे आत्मनेपद हुआ है ॥

दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे ॥ ५३३ ॥ दास्या संयच्छते कामुकः ॥

भाषा–तृतीयान्तयुक्त सम् उपसर्गसे परे दाण्धातुसे आत्मनेपद होय यदि वह तृतीया चतुर्थीके अर्थमें होवे तौ । उदाहरण–दास्या संयच्छते कामुकः । इसमें तृतीयान्त दासीकर युक्त जो सम् उपसर्ग उससे परे दाण्धातुसे आत्मनेपद हुआ है क्योंकि तृतीया चतुर्थीके अर्थमें विद्यमान है ॥

उपाद्यमस्स्वीकारे ॥ ५३४ ॥ भार्यामुपयच्छते ॥

भाषा–स्वीकार नाम विवाहअर्थमें उप उपसर्गसे परे यमधातुसे आत्मनेपद होय । उदाहरण–भार्यामुपयच्छते । इसमें विवाहअर्थ विद्यमान है क्योंकि भार्याको विवाहता है इस कारण उप उपसर्ग पूर्व युक्त करनेपर यम्धातुसे आत्मनेपद हुआ है ॥

यमस्सिः किद्वा विवाहे ॥ ५३५ ॥ रामस्सीतामुपायत उपायंस्त वा ॥

भाषा—विवाह अर्थमें यमधातुसे सिमत्यय विकल्पकरके किसंज्ञक होवे है। उदाहरण—उपअयम्-स्‌ त । इसमें जहां सिकी कित्संज्ञा हुई वहां 'लोपस्त्वनुदात्ततनाम्' इसकर नकारका लोप किया फिर 'लोपो ह्रस्वात्' इसकर सिद्ध हुआ। उपायत। द्विवचनमें। उपायसाताम्। और जहां सिमत्ययकी कित्संज्ञा नहीं हुई वहां सिद्ध हुआ। उपायंस्त ॥

ज्ञाश्रुस्मृदृशां सान्तानामात ॥ ५२६ ॥ जिज्ञासते । शुश्रूषते । सुस्मूर्षते । दिदृक्षते ॥

भाषा—ज्ञा, श्रु, स्मृ, दृश इन सप्रत्ययान्त धातुओंसेभी आत्मनेपद होय। उदाहरण—सप्रत्ययान्त ज्ञाधातुसे आत्मनेपद करनेपर सिद्ध हुआ। जिज्ञासते। इसी प्रकार सप्रत्ययान्त श्रु, स्मृ, दृश इन धातुओंसे आत्मनेपद करनेपर सिद्ध हुआ। शुश्रूषते। सुस्मूर्षते। दिदृक्षते ॥

अनोर्ज्ञानातेर्न ॥ ५२७ ॥ अनुजिज्ञासति पुत्रम् ॥

भाषा—अनुउपसर्गसे परे सप्रत्ययान्त ज्ञाधातुसे आत्मनेपद नहीं होय। उदाहरण—अनुजिज्ञासति पुत्रम्। इसमें अनुउपसर्गसे सप्रत्ययान्त ज्ञाधातुसे आत्मनेपद नहीं हुआ है ॥

प्रत्याङ्भ्यां श्रुव ॥ ५२८ ॥ प्रतिशुश्रूषति । आशुश्रूषति ॥

भाषा—प्रति आङ् इन उपसर्गोंसे परे सप्रत्ययान्त श्रुधातुसे आत्मनेपद नहीं होय। उदाहरण—प्रति आङ् इन उपसर्गोंसे सप्रत्ययान्त श्रुधातुसे आत्मनेपद न होनेपर सिद्ध हुआ। प्रतिशुश्रूषति। आशुश्रूषति ॥

स्वराद्यन्तोपसर्गाद्युजेरयज्ञे ॥ ५२९ ॥ प्रयुङ्क्ते । उद्युङ्क्ते । अयज्ञे किम्। पात्राणि प्रयुनक्ति ॥

भाषा—स्वर है आदि वा अन्तमें जिसके ऐसे उपसर्गसे परे युजधातुसे आत्मनेपद होय और यज्ञपात्र अर्थके विषे नहीं होय। उदाहरण—प्र इस उपसर्गके अन्तमें स्वर है इस कारण प्र उपसर्गसे युजधातुसे आत्मनेपद करनेपर सिद्ध हुआ। प्रयुङ्क्ते। उद् इस उपसर्गके आदिमें स्वर है इस कारण उद् उपसर्गसे युजधातुसे आत्मनेपद करनेपर सिद्ध हुआ। उद्युङ्क्ते। अयज्ञे ऐसा क्यों कहा। पात्राणि प्रयुनक्ति इसमें यज्ञपात्र अर्थ विद्यमान है इस कारण आत्मनेपद नहीं हुआ ॥

सम क्ष्णुव ॥ ५४० ॥ संक्ष्णुते शस्त्रम् ॥

भाषा—सम् उपसर्गसे परे क्ष्णुधातुसे आत्मनेपद होय। उदाहरण—सम् उपसर्ग पूर्व युक्त करनेपर क्ष्णुधातुसे आत्मनेपद करनेपर रूप सिद्ध हुआ। संक्ष्णुते ॥

भुजोऽपालने ॥ ५४१ ॥ ओदनं भुङ्क्ते । पालने तु । महीं भुनक्ति ॥

भाषा–रुधादिगणीय भुजधातुसे आत्मनेपद होय परन्तु पालनअर्थके विषैं भुजधातुसे आत्मनेपद नहीं होय । उदाहरण–ओदनं भुङ्क्ते । इसमें अभ्यवहार अर्थ विद्यमान है इस कारण भुजधातुसे आत्मनेपद हुआ है और पालनअर्थके विषैं आत्मनेपद नही होता है । जैसे 'महीं भुनक्ति' इसमे पालन अर्थ है ॥

गृधिवंचिभ्यां ण्यन्ताभ्यां प्रतारणे ॥ ५४२ ॥ माणवकं वञ्चयते । गर्द्धयते ॥

भाषा–प्रतारण अर्थके विषैं ञिप्रत्ययान्त गृधधातु और वञ्चधातु इनसे आत्मनेपद होय । उदाहरण–माणवकं वञ्चयते गर्द्धयते । इसमे प्रतारण अर्थ विद्यमान है क्योंकि बालकको ठगता है इसकारण ञिप्रत्ययान्त वञ्च और गृधधातुसे आत्मनेपद हुआ है ॥

अपाद्वदः ॥ ५४३ ॥ न्यायमपवदते ॥

भाषा–अपउपसर्गसे परे वद्धातुसे आत्मनेपद होता है । उदाहरण–अपउपसर्ग पूर्व युक्त करनेसे वद्धातुसे आत्मनेपद करनेपर सिद्ध हुआ । अपवदते ॥

समुदाङ्भ्यो यमो ग्रन्थे ॥ ५४४ ॥ व्रीहीन् संयच्छते । धान्यान् स्वीकरोतीत्यर्थः । भारमुद्यच्छते । भारं वहतीत्यर्थः । वस्त्रमायच्छते । वस्त्रमादधातीत्यर्थः । अग्रन्थे किम् । वेदमुद्यच्छति । वेदमधिगन्तुमुद्यमं करोतीत्यर्थः ॥

भाषा–सम्, उद्, आङ् इन उपसर्गोंसे परे यमधातुसे आत्मनेपद होय परन्तु ग्रन्थअर्थ विद्यमान हुए संते आत्मनेपद नहीं होय । उदाहरण–व्रीहीन् संयच्छते । इसमें ग्रंथ अर्थ नहीं क्योंकि धान्योंको ग्रहण करता है इस कारण सम् उपसर्गसे परे यमधातुसे आत्मनेपद हुआ है । 'भारमुद्यच्छते' इसमेंभी ग्रन्थ अर्थ नहीं इस कारण उद् उपसर्गसे परे यमधातुसे आत्मनेपद हुआ है । 'वस्त्रमायच्छते' इसमेंभी ग्रंथ अर्थ नहीं इस कारण आङ्उपसर्गसे परे यमधातुसे आत्मनेपद हुआ है । 'वेदमुद्यच्छति' इसमें ग्रन्थ अर्थ विद्यमान है इस कारण उद्उपसर्गसे परे यमधातुसे आत्मनेपद नहीं हुआ ॥

कर्मव्यतिहारेधातोरात् ॥ ५४५ ॥ व्यतिभवते । व्यतिराते ॥

भाषा–कर्म नाम क्रियाका व्यतिहार नाम विनिमय अर्थात् अदलबदल होना है उस अर्थमें वर्त्तमान हुए धातुसे आत्मनेपद होता है । उदाहरण–व्यतिभवते

इसमें कर्मव्यतिहार है क्योंकि अन्यके योग्य जो कि होना था उसके स्थानमें अन्य होता है इस कारण भूधातुसे आत्मनेपद हुआ है। 'व्यतिरासे' इसमेंभी कर्मव्यतिहार है क्योंकि अन्यके योग्य जो कि दान था उसको अन्य देता है॥

न गतिहिंसार्थपठजल्पहसात् ॥ ५४६ ॥ व्यतिगच्छन्ति व्यतिपठन्ति। व्यतिघ्नन्ति। व्यतिजल्पन्ति। व्यतिहसन्ति॥

भाषा-गति और हिंसा अर्थ है जिनका ऐसे धातुओंसे और पठ, जल्प, हस इन धातुओंसे आत्मनेपद नहीं होय कर्मव्यतिहारअर्थके विषे। उदाहरण-व्यतिगच्छति। इसमें गतिअर्थवाला गम्धातु है इस कारण कर्मव्यतिहार अर्थके विषे आत्मनेपद नहीं हुआ है। 'व्यतिघ्नन्ति' इसमें हिंसा अर्थवाला हन्धातु है इस कारण कर्मव्यतिहारके विषे आत्मनेपद नहीं हुआ है। पठ, जल्प, हस इन धातुओंसे कर्मव्यतिहार अर्थमें आत्मनेपद नहीं होनेसे सिद्ध हुआ। व्यतिपठन्ति। व्यतिजल्पन्ति। व्यतिहसन्ति॥

इतरेतरान्योऽन्यपरस्परोपपदाच्च ॥ ५४७ ॥ इतरेतरस्य अन्योऽन्यस्य परस्परस्य वा व्यतिलुनन्ति ॥ इत्यात्मनेपदप्रक्रिया॥

भाषा-इतरेतर वा अन्योन्य वा परस्पर यह नाम उपपद हैं जिन धातुओंके ऐसे धातुओंसे कर्मव्यतिहारअर्थके विषे आत्मनेपद नहीं होता है। उदाहरण-इतरेतरस्य अन्योन्यस्य परस्परस्य वा व्यतिलुनन्ति। इसमें इतरतर अन्योन्य परस्पर यह नाम उपपद है इस कारण कर्मव्यतिहारअर्थमें 'लूञ् छेदने' धातुसे आत्मनेपद नहीं हुआ है॥ इत्यात्मनेपदम्॥

अनुपराभ्यां कृञः पम् ॥ ५४८ ॥ अनुकरोति। पराकरोति॥

भाषा-अनु परा इन उपसर्गोंसे परे कृञ्धातुसे परस्मैपद होता है। उदाहरण-अनु परा यह उपसर्ग पूर्व युक्त करनेपर कृञ्धातुसे परस्मैपद करनेसे रूप सिद्ध हुआ। अनुकरोति। पराकरोति॥

अभिप्रत्यत्यभ्य क्षिपः ॥ ५४९ ॥ पम्॥ अभिक्षिपन्ति। प्रतिक्षिपन्ति। अतिक्षिपन्ति॥

भाषा-अभि, प्रति अति इन उपसर्गोंसे परे क्षिपधातुसे परस्मैपद होय। उदाहरण-अभि प्रति, अति यह उपसर्ग पूर्व युक्त करनेपर क्षिपधातुसे परस्मैपद करनेसे सिद्ध हुआ। अभिक्षिपन्ति। प्रतिक्षिपन्ति। अतिक्षिपन्ति॥

आङ्वहः ॥ ५५० ॥ प्रवहन्ति॥

भाषा–प्रउपसर्गसे परे वहधातुसे परस्मैपद होय । उदाहरण–प्रउपसर्ग पूर्व युक्त करनेपर वहधातुसे परस्मैपद करनेसे रूप सिद्ध हुआ । प्रवहन्ति ॥

परेर्मृषश्च ॥५९१॥ परिमृष्यति । परिवहति ॥ इति परस्मैपदप्रक्रिया ॥

भाषा–परिउपसर्गसे परे दिवादि मृषधातु और चकारसे वहधातुसे परस्मैपद होता है । उदाहरण-परिउपसर्ग पूर्व युक्त करनेपर मृष वह धातुसे परस्मैपद करनेसे सिद्ध हुआ । परिमृष्यति । परिवहति ॥ इति पदव्यवस्था ॥

मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामोक्तभाषया । चंद्रिकोत्तरार्द्धवृत्तौ पदव्यवस्था भूषिता ॥७॥

यक् चतुर्षु ॥५९२॥ धातोर्भावे कर्मणि च यक् प्रत्ययस्तिबादिषु चतुर्षु परतः ॥

भाषा–धातुसे भाव और कर्मअर्थमें यक् प्रत्यय होय तिप् आदिक चार लकारोंके प्रत्यय पर हुए संते । भाव यह है कि भावमें वा कर्ममें है अर्थ जिनका ऐसे लकारों मेंसे आदिके लट् आदिक चार लकार पर हुए संते धातुसे यक् प्रत्यय होय ॥

आद्भावे कर्मणि ॥ ५९३ ॥ अकर्मकाद्भावे सकर्मकाच्च कर्मण्याद्भवति । भावस्यैकत्वादेकवचनमेव । युष्मदस्मदोः सामानाधिकरण्याभावात्प्रथमः । नामाद्यविषयत्वेऽपि प्रथमातिक्रमे कारणाभावात्प्रथमः । भूयते । भूयेत । भूयताम् । अभूयत । बभूवे ॥

भाषा–अकर्मकधातुसे साध्यरूप भावअर्थमें और सकर्मकधातुसे कर्मअर्थमें आत्मनेपद होय । आख्यातवाच्य साध्यरूप भावको एक होनेसे एकही वचन होता है । युष्मद् अस्मद् साध्यरूप भावके साथ समानाधिकरणता न होनेसे साध्यरूप भावमें प्रथमपुरुषही होता है । भाव यह है कि युष्मद् अस्मद्को आख्यातवाच्य कारकवाची न होनेसे साध्यरूप भावमें प्रथमपुरुषही होता है और नामादिकीभी साध्यरूप भावके साथ समानाधिकरणता न होनेसे साध्यरूप भावमें

---

१ उपाद्कर्मकाद्रमतेर्वा पम् । उपरमति उपरमते वा ॥ भाषा–उपउपसर्गसे परे अकर्मक रमधातुसे विकल्पकरके परस्मैपद होय । उदाहरण–उपउपसर्गसे परे अकर्मक रमधातुसे विकल्पकरके परस्मैपद होनेसे सिद्ध हुआ । उपरमति, उपरमते ॥

वुधयुधनशजनेङ्प्रद्रुस्रुभ्यो ण्यन्तेभ्यः पम् ॥ अध्यापयति । प्रावयति । द्रावयति । स्रावयति ॥ भाषा–ञिप्रत्ययान्त बुध, युध, नश, जन, इङ्, प्र, द्रु, स्रु इनसे परस्मैपद होय । उदाहरण -ञिप्रत्ययान्त बुधधातुसे परस्मैपद युक्त करनेपर रूप सिद्ध हुआ । बोधयति । इसी प्रकार । योधयति । नाशयति । जनयति । अध्यापयति । इत्यादिक जानने ॥

२ साध्यरूपो भावस्त्वाख्यातवाच्यस्तस्यासत्वरूपत्वेन द्वित्वाद्यप्रतीतेर्न द्विवचनादि ॥ भाषा--जो कि आख्यातवाच्य साध्यरूप भाव है उसको अद्रव्यरूप होनेकर द्वित्वादिककी अप्रतीतिसे द्विवचनादि नहीं होते है ॥

प्रथमपुरुषही होता है । उदाहरण—भूधातु अकर्मक है इस कारण भावमें आख्यातप्रत्यय करनेपर आत्मनेपदमें लट्के प्रथमपुरुषके एकवचनके विषें भू-ते ऐसा स्थित है फिर ' यक् चतुर्षु ' इसकर भूधातुसे यक् प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । भूयते । लिङ्में । भूयेत । लोट्में । भूयताम् । लङ्में । अभूयत । लिट्में आदिक चार लकारोंका अभाव होनेसे यक् प्रत्यय नहीं हुआ तब ' छिम, भुवो वुक् ' इसकर सिद्ध हुआ । बभूवे ॥

स्वरान्तानां हनग्रहदृशां च भावकर्मणोस्सितासीस्यपामिङ्वा स इण्वच्च ॥ ५५४ ॥ भाविषीष्ट भविषीष्ट । भाविता भविता । भाविष्यते भविष्यते । अभाविष्यत अभविष्यत ॥

भाषा—स्वरान्तधातुओंसे और हन, ग्रह, दृश् इन धातुओंसे परे भाव और कर्ममें स्थित सि, ता, सी, स्यप् इन प्रत्ययको विकल्पकरके इट् आगम होय और इट् इण्वत् मानना अर्थात् जो कार्य वृद्धि आदिक इण् पर हुए संते होता है वही इट् पर हुए संते होय । उदाहरण—आशीर्लिङ्में भूधातुसे सीष्टको एक जगह इण्वत् इट् आगम करनेपर ' धातोर्नामिन ' इसकर भूधातुको वृद्धि करनेसे रूप सिद्ध हुआ । भाविषीष्ट । और जहां इण्वत् इट् आगम नहीं हुआ तहां धातुको सेट् होनेसे इट् करनेपर सिद्ध हुआ । भविषीष्ट । तादिकमें इसी प्रकार सिद्ध हुआ । भाविता, भविता । लृट्लङ्में । भाविष्यते, भविष्यते । अभाविष्यत, अभविष्यत ॥

इण् तन्यकर्तारि ॥ ५५५ ॥ धातोस्तनि परे भावे कर्मणि च इण्प्रत्ययस्सेरपवादः । तं लुक् । अभावि । अकर्मकोऽप्युपसर्गवशात्सकर्मको भवति । सुखमनुभूयते स्वामिना ॥

भाषा—भाव और कर्मअर्थके विषें तन्प्रत्यय पर हुए सते धातुसे इण् प्रत्यय होय और सिप्रत्ययका अपवाद होय । उदाहरण—भूधातुसे तन्प्रत्यय करनेपर सिप्रत्ययके स्थानमें इण् करनेसे ' लुक् ' इसकर तन्का लुक् किया फिर ' धातोर्नामिन ' इसकर वृद्धि करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अभावि । अकर्मकधातुभी उपसर्गके वशसे सकर्मक होता है । उदाहरण—अकर्मक भूधातुसे पूर्व अनुउपसर्ग करनेपर अर्थान्तरमें सकर्मक होनेसे कर्ममें आत्मनेपद किया तब सिद्ध हुआ । अनुभूयते । स्वामीकर सुख प्रत्यक्ष किया जाता है ॥

लज्जासत्तास्थितिजागरणं वृद्धिक्षयभयजीवितमरणम् ।
शयनक्रीडारुचिदीप्त्यर्थं धातुगणं तमकर्मकमाहुः ॥ १ ॥

भाषा—आचार्य उस धातुगणको अकर्मक कहते हैं जिसका कि अर्थ लज्जा,

सत्ता, स्थिति, जागरण, वृद्धि, क्षय, भय, जीवित, मरण, शयन, क्रीडा, रुचि और दीप्ति है ॥ १ ॥

फलव्यापारयोरेकनिष्ठतायामकर्मकः ।
धातुस्तयोर्धर्मिभेदे सकर्मक उदाहृतः ॥ २ ॥

भाषा—पदार्थकी सिद्धिका नाम फल है और पदार्थके सिद्ध करनेकी क्रियाका नाम व्यापार है फल और व्यापार इन दोनोंकी एकही धर्मी अर्थात् आश्रयमें स्थिति होनेपर आचार्योंने धातु अकर्मक कहा है। फल और व्यापार इन दोनोंका धर्मिभेद अर्थात् आश्रयभेद होनेपर आचार्योंने धातु सकर्मक कहा है। तात्पर्य यह है कि एक धर्मीके विषैं फल और अन्यधर्मीके विषैं व्यापार हो तौ धातु सकर्मक होता है ॥ २ ॥

धातोरर्थान्तरे वृत्तेर्धात्वर्थेनोपसंग्रहात् ।
प्रसिद्धेरविवक्षातः कर्मणोऽकर्मिका क्रिया ॥ ३ ॥

भाषा—अन्य अर्थमें वर्त्तनेसे सकर्मकधातुकी क्रिया अकर्मिका अर्थात् कर्मरहित होती है। भाव यह है कि प्रसिद्ध अर्थको त्याग अन्यार्थवाची होनेसे धातुका धात्वर्थ कर्मरहित होता है और धात्वर्थकर कर्मका ग्रहण होनेसे सकर्मकधातुकी क्रिया कर्मरहित होती है और कर्मकी प्रसिद्धिसे सकर्मधातुकी क्रिया कर्मरहित होती है और कर्मके न करनेकी इच्छासे सकर्मक धातुकी क्रिया कर्मरहित होती है ॥ ३ ॥

उदाहरण—नदी वहति स्यंदते। इसमें सकर्मक वहधातुको अर्थान्तर स्यन्दनरूपमें वर्त्तनेसे वहधातुकी क्रिया अकर्मक है। 'जीवति प्राणान् बिभर्ति' इसमें प्राणधारणरूप धात्वर्थकर कर्मणा ग्रहण है इस कारण जीवधातुकी क्रिया कर्मरहित है। 'मेघो वर्षति' इसमें जलरूप कर्म प्रसिद्ध है इस कारण वृषुधातुकी क्रिया कर्मरहित है। 'हितान्न यः संशृणुते स किंप्रभुः' इसमें वचनरूप कर्मके न कहनेकी इच्छा है इस कारण श्रुधातुकी क्रिया कर्मरहित है ॥

शीङोऽयङ् ये क्ङिति ॥ ५५६ ॥ शय्यते। शिश्ये। शायिषीष्ट शयिषीष्ट। अशायि। अयाकि ऋतोरिङ् भवत्यकारप्रत्यये यकि च। घटः क्रियते। त्वं दुःखीक्रियसे रागैर्विरागैस्सुख्यहं क्रिये। चक्रे। भाव्यते। भाययाञ्चक्रे भावयामासे। भावयांबभूवे ॥

भाषा—शीङ्धातुको अयङ् आदेश होय कित्ङित्संज्ञक यप्रत्यय पर हुए संते। उदाहरण—अकर्मक शीङ्धातुसे भावअर्थमें अकृप्रत्यय करनेके अनन्तर शीङ्धातुके अन्त्यको अयङ् आदेश किया तब रूप स्थित हुआ शययते फिर 'यतः'

इसकर यकार उत्तरवर्ती अकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । शय्यते । लिट्में । शिश्ये । आशीर्लिङ्में सेट् होनेसे इट् करनेपर सिद्ध हुआ । शयिषीष्ट । और एक जगह 'स्वरान्तानां हनग्रहदृशां च' इसकर इण्वत् इट् करनेपर सिद्ध हुआ । शायिषीष्ट । तादिकमें । शयिता, शायिता । लुङ्में 'इण् तन्यकर्त्तरि, लुङ्' इनकर सिद्ध हुआ । अशायि । कृञ्धातुके सकर्मक होनेसे कर्ममें आत्मनेपदसं-बन्धी आख्यातप्रत्यय करनेके अनन्तर चार लकारोंके विषे यक् करनेसे कर्ममें 'अयकि' इसकर सिद्ध हुआ । क्रियते । लिट्में । चक्रे । लिङ्में 'उ' इसकर गुण न होनेसे सिद्ध हुआ । कृषीष्ट । लुङ्में । अकारि । कर्ममें वर्त्तमान युष्मद् अस्मद् शब्दको आख्यातवाच्य होनेसे कृञ्धातुसे मध्यम और उत्तम पुरुष करनेपर रूप सिद्ध हुए । दुःखी त्वं क्रियसे रागि । सुखी अहं क्रिये विरागीः । जिप्रत्ययान्त भूधातुसे कर्ममें आत्मनेपदसम्बन्धी प्रत्यय करनेपर प्रथम रूप स्थित हुआ भाविभ्यते फिर 'ञे' इसकर ञिप्रत्ययका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ भाव्यते । लिट्में । भावयाञ्चक्रे भावयामासे भावयांबभूवे ॥

इण्वदिटि ञेर्लोपः ॥ ८८७ ॥ भाविता भावयिता । भाविष्यते भावयिष्यते । अभावि । अभाविषाताम् अभावयिषाताम् । स्नात्वा बुभूष्यते बुभूषाञ्चक्रे अबुभूषि । यङन्तात् । बोभूय्यते । बोभूयाञ्चक्रे । यङ्लुगन्तात् । बोभूयते । बोभवाञ्चक्रे । बोभाविषीष्ट बोभविषीष्ट । स्तूयते विष्णुः । अस्तावि । अस्ताविषाताम् । अस्तोषाताम् । अर्यते । आरे । आरिषीष्ट ऋषीष्ट । आरिता अर्ता । स्मर्यते । स्मारिता स्मर्ता । इज्यते इजे । यक्षीष्ट । यष्टा ॥

भाषा–जो कि इट् इण्वत् है वह पर हुए संते ञिप्रत्ययका लोप होय । उदाहरण–सीडादिकमें एक जगह इट् इण्वत् करनेपर ञिप्रत्ययका लोप करनेसे सिद्ध हुआ । भाविषीष्ट । और एक जगह 'सिसवासीस्यपामिट्' इसकर इट् करनेपर सिद्ध हुआ । भावयिषीष्ट । तादिकमें एक जगह इण्वत इट् करनेपर सिद्ध हुआ । भाविता । और एक जगह इट् करनेपर सिद्ध हुआ । भावयिता । लुङ्में 'इण् तन्यकर्त्तरि' इसकर इण् किया फिर 'ञे' इसकर ञिका लोप किया तत्पश्चात् 'लुक्' इसकर तनका लुक् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अभावि । द्विवचनमें सिप्रत्ययके जहां इण्वत् इट् किया वहां ञिप्रत्ययका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अभाविषाताम् । और जहां इट् आगम हुआ वहां सिद्ध हुआ । अभाव-यिषाताम् । भूधातुसे सन्प्रत्यय करनेसे अनन्तर भावमें आत्मनेपदसंबन्धी आ-

ख्यातप्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ बुभूषयते फिर ' यतः ' इसकर सप्रत्यय उत्तरवर्त्ती अकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । बुभूष्यते । लिट्में । बुभूषांचक्रे । लुङ्में ' इण् तन्यकर्त्तरि, लुक् ' इनकर सिद्ध हुआ । अबुभूषि । यङन्त भूधातुसे भावमें आत्मनेपदसंबन्धी आख्यातप्रत्यय करनेपर प्रथम रूप स्थित हुआ वोभूययते फिर ' यतः ' इसकर अकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । वोभूय्यते । लिट्में । वोभूयांचक्रे । लुङ्में । अवोभूयि । यङ्लुगन्त भूधातुसे भावमें आत्मनेपदसंबन्धी प्रत्यय करनेपर प्रथम रूप सिद्ध हुआ । वोभूयते । लिट्में । वोभवांचक्रे । सीष्टादिकमे एक जगह इण्वत् इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । वोभाविषीष्ट । और एक जगह इट् करनेपर सिद्ध हुआ । वोभविषीष्ट । लुङ्मे ' इण् तन्यकर्त्तरि, लुक् ' इनकर सिद्ध हुआ । अवोभावि । ष्टुञ्धातुसे कर्ममे आत्मनेपदसंबन्धी आख्यातप्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ स्तु य-ते फिर ' ये ' इसकर दीर्घ करनेसे रूप सिद्ध हुआ । स्तूयते । लिट्में । तुष्टुवे । लिङ्में एक जगह इण्वत् इट् करनेपर वृद्धि करनेसे सिद्ध हुआ । स्ताविषीष्ट । और एक जगह धातुको अनिट् होनेसे इट् न करनेपर सिद्ध हुआ । स्तोषीष्ट । लुङ्में । अस्तावि । द्विवचनमें एक जगह सिप्रत्ययको इण्वत् इट् करनेपर सिद्ध हुआ । अस्ताविषाताम् । और एक जगह अनिट् होनेसे सिको इट् करनेपर सिद्ध हुआ । अस्तोषाताम् । ऋधातुसे कर्ममें आत्मनेपदसंबन्धी आख्यातप्रत्यय करनेपर ' गुणोर्त्तिसंयोगाद्योः ' इसकर गुण करनेसे सिद्ध हुआ । अर्यते । लिट्में । आरे । सीष्टादिकमें एक जगह इण्वत् इट् करनेपर सिद्ध हुआ । आरिषीष्ट । और एक जगह अनिट् होनेसे ' उः ' इसकर गुण न होनेपर सिद्ध हुआ । ऋषीष्ट । लुङ्म । आरि । द्विवचनमे इण्वत् इट्के विषै । आरिषाताम् । और एक जगह इट् न होनेसे सिद्ध हुआ । आर्षाताम् । मध्यमवचनमें इण्वत् इट्के विषै । आरिष्ठाः और एक जगह अनिट्पक्षमे ' उः ' इसकर गुण न होनेसे ' लोपो ह्रस्वात् ' इसकर सिद्ध हुआ । आर्थाः । स्मृधातुसे कर्ममें आत् करनेपर ' गुणोर्त्तिसंयोगाद्योः ' इसकर गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । स्मर्यते । लिट्में । सस्मरे । लिङ्में इण्वत् इट्के विषै । स्मारिषीष्ट । और अनिट्पक्षमें ' उः ' इसकर सिद्ध हुआ । स्मृषीष्ट । लुङ्में । अस्मारि । द्विवचनमें । अस्मारिषाताम् । और अनिट्पक्षमें । अस्मृषाताम् । मध्यमवचनमे । अस्मारिष्ठाः । और अनिट्पक्षमें ' उः, लोपो ह्रस्वात् ' इनकर सिद्ध हुआ । अस्मृताः । यजधातुसे कर्ममें आत्मनेपदसंबन्धी प्रत्यय करनेपर ' यजां यवराणामिदुदृतः संप्रसारणं किति ' इसकर संप्रसारण करनेपर रूप सिद्ध हुआ । इज्यते । लिट्में । इजे । सीष्टादिकमें ' छशष०, षढोः०, कि०' इनकर सिद्ध हुआ । यक्षीष्ट । तादिकमें । यष्टा । लुङ्में । अयाजि । द्विवचनमें । अयक्षाताम् ॥

तनोतेर्वा आत्वं यकि ॥ ५५८ ॥ तायते तन्यते । तनिषीष्ट । अतानि । जनेर्वा यकि । जायते जन्यते ॥

भाषा—तन्धातुके अन्तको आकार आदेश होय विकल्पकरके यक्प्रत्यय पर हुए सते । उदाहरण—तन्धातुसे कर्ममें यक्प्रत्यय करनेपर एक जगह अन्तको आकार आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । तायते । और जहां अन्तको आकार आदेश नहीं हुआ वहां सिद्ध हुआ । तन्यते । लिट्में 'लोप पचां०' इसकर सिद्ध हुआ । तेने । सीयुडादिकमें । तनिषीष्ट । लुङ्में । अतानि । जन्धातुसे यक्प्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ जन्-य-ते जनधातुके अन्तको आकार आदेश होय विकल्प करके यक्प्रत्यय पर हुए सते । उदाहरण—जन्-य-ते । इसमें अन्तको आकार करने पर रूप सिद्ध हुआ । जायते । और जहां अन्तको आकार आदेश नहीं हुआ वहां सिद्ध हुआ । जन्यते । लिट्में 'गमां स्वरे' इसकर सिद्ध हुआ । जज्ञे । लिङ्में । जनिषीष्ट । लुङ्में । अजानि ॥

तपो नेण् कर्मकर्तर्यनुतापे च ॥ ५५९ ॥ अन्वतप्त देवदत्तः पापेन । दादेरि । दीयते । ददे ॥

भाषा—तपधातुसे इणप्रत्यय नहीं हो अनुतापअर्थके विषे तथा कर्मकर्ताअर्थके विषे । उदाहरण—तपधातुसे कर्ममें अनुतापअर्थके विषे यक्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । अनुतप्यते । लिट्में । अनुतेपे । लिङ्में अनुतप्सीष्ट । और लुङ्में इण न होनेसे सिद्ध हुआ । अन्वतप्त । डुदाञ् धातुसे कर्ममें यक्प्रत्यय करनेपर 'दादेरिः' इसकर आकारको इकार करनेसे 'ये' इसकर सिद्ध हुआ । दीयते । लिट्में । ददे । लिङ्में एक जगह इण्वत् इट् करनेपर रूप स्थित हुआ दा-इ-सीष्ट ॥

आतो युक् ॥५६०॥ इणि ञ्णिति कृति च ॥ दायिषीष्ट दासीष्ट । अदायि । अदायिषाताम् अदिषाताम् । धीयते । स्थीयते । ग्ल ग्लायि । हन्यते । हनो घ्नि । घानिषीष्ट वधिषीष्ट । घानिता हन्ता । अघानि । अघानिषाताम् । अहसाताम् अवधि । अवधिषाताम् ॥

भाषा—आकारान्तधातुको युक् आगम होय इणप्रत्यय तथा ञित्णित्संज्ञक कृत्प्रत्यय पर हुए सते । उदाहरण—दा-इ-सीष्ट । इसमें आकारान्त दाधातुको युक् आगम किया क्योंकि इण्वत् इट् परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । दायिषीष्ट । और जहां अनिट् होनेसे इट् नहीं हुआ वहां सिद्ध हुआ । दासीष्ट । लुङ्में । अदायि । द्विवचनमें इण्वत् इट् करनेपर 'आतो युक्' इसकर सिद्ध हुआ । अदायिषाताम् । और जहां इट् नहीं हुआ वहां 'आपिदाधास्थाम्भिङोऽम्नमाते'

इसकर आकारको इकार करनेपर सिद्ध हुआ । अदिपाताम् । इसी प्रकार डुधाञ्-धातुमें कर्मके यक्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । धीयते । स्याधातुसे यक्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । स्थीयते । ग्लैधातुसे कर्ममें यक्प्रत्यय करनेपर ' सन्ध्यक्षराणामपि ' इसकर आकार करनेपर सिद्ध हुआ । ग्लायते । लिट्में । जग्ले । लिङ्में । इण्वत् ' इट्के विषै ' आतो युक् ' इसकर युक् आगम करनेपर सिद्ध हुआ । ग्लायिषीष्ट । और अनिट्पक्षमे । ग्लासीष्ट । लुङ्में । अग्लायि । द्विवचनमें इण्वत् इट्के विषै सिद्ध हुआ । अग्लायिषाताम् । और अनिट्पक्षमे । अग्लासाताम् । हन्धातुसे सकर्मकमे यक्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । हन्यते । लिट्में ' गमां स्वरे, पूर्वाद्धन्तेर्हस्य घः ' इनकर सिद्ध हुआ । जघ्ने । लिङ्में एक जगह इण्वत् इट् करनेपर ' हनो घ्न ' इसकर हकारको घकार करनेपर ' अत उपधायाः ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । घानिषीष्ट । जहां इण्वत् इट् हुआ तहां वधादेश नहीं हुआ और जहां इण्वत् इट् नहीं हुआ तहां ' हनो लुङ्लिङोर्वधो० ' इसकर वध आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । वधिषीष्ट । लुङ्मे इण्वत् इट्के विषै सिद्ध हुआ । घानिष्यते । और एक जगह अनिट्पक्षमें ' हनृतः स्यपः ' इसकर इट् करनेपर सिद्ध हुआ । हनिष्यते । लुङ्में । अघानि । और द्विवचनमें इण्वत् इट्के विषै सिद्ध हुआ । अघानिषाताम् । और जहां इण्वत् इट् नहीं हुआ तहां ' लुङ्याति वा ' इसकर हन्को विकल्पकरके वधआदेश करनेपर सिद्ध हुआ । अवधिषाताम् । और जहां वध आदेश नहीं हुआ तहां ' हनः सिः कित् ' इसकर सिकी कित्संज्ञा होनेपर ' लोपस्त्वनुदात्ततनाम् ' इसकर नकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अहसाताम् । ग्रहधातुसे कर्ममें यक्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' ग्रहां क्किति च ' इसकर संप्रसारण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । गृह्यते ॥

इण्वदिटो न दीर्घः ॥ ९६१ ॥ ग्राहिता ग्रहिता । दर्पिषीष्ट दृक्षीष्ट । दर्शिता द्रष्टा । अदर्शि । अदर्शिषाताम् अदृक्षाताम् । शम्यते मुनिना ॥

भाषा—इण्वत् इट्को दीर्घ नहीं होय । उदाहरण—ग्रहधातुसे सीष्ट प्रत्यय करनेके अनन्तर जहां इण्वद् इट् हुआ तहां ' ईटो ग्रहाम् ' इसकर जो कि दीर्घ होता है वह इण्वत् इट्को दीर्घ नहीं होय तब रूप सिद्ध हुआ । ग्राहिषीष्ट । और इट्पक्षमें दीर्घ होनेसे सिद्ध हुआ । ग्रहीषीष्ट । तादिकमें । ग्राहिता, ग्रहीता । लुङ्में । अग्राहि । द्विवचनमें इण्वत् इट्के विषै अग्राहिषाताम् । और केवल इट्पक्षमें ' ईटो ग्रहाम् ' इसकर सिद्ध हुआ । अग्रहीषाताम् । दृश्धातुसे यक् प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । दृश्यते । लिट्में । ददृशे । लिङ्में एक जगह इण्वत् इट् करनेपर ' उपधाया लघोः ' इसकर गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । दर्शिषीष्ट । और अनि-

द्पक्षमें जहां इट् नहीं हुआ तहां ' सिस्योः ' इसकर गुण भी हुआ नहीं ' छशष०, षढो०' कि० ' इसकर सिद्ध हुआ । दमीष्ट । लुङ्में इण्वत् इट्के विषें । दमिता । अनिट्पक्षमें गुण करनेके पश्चात् ' रारो हसे ढलाम् ' इसकर सिद्ध हुआ । द्रष्ट । लुङ्में । इण सन्यकर्त्तरि ' इसकर सिद्ध हुआ । अदमि । द्विवचनमें इण्वत् इट्के विषें सिद्ध हुआ । अदमिषाताम् । और अनिट्पक्षमें ' सिस्यो' ' इसकर गुण भी हुआ नहीं ' छशष०, षढो०, कि० ' इनकर सिद्ध हुआ । अदसाताम् । शम्धातुके अकर्मक होनेसे भावमें आत्मनेपदसंबन्धी आख्यातप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । शम्यते । लिट्में । शेमे । लिङ्में । शमिषीष्ट । लुङ्में ' इण् सन्यकर्त्तरि लुङ् ' इनकर रूप स्थित हुआ अशम्-इ ॥

मान्तस्य सेटो न वृद्धिरिणि ञ्णिति कृति च न त्वाचमिकामिवमीनाम् ॥ ९६२ ॥ अशमि । अदमि । आचामि । अकामि । अवामि । ञ्यन्तास्तु । शम्यते मोहो मुनिना । शमयाञ्चक्रे ॥

भाषा–मकारान्तधातुको वृद्धि नहीं होय इण्प्रत्यय तथा ञित्णित्संज्ञक कृत्प्रत्यय पर हुए संते और आचम्, कम्, वम् इनको वृद्धि होय । उदाहरण–अशम्-इ । इसमें ' अत उपधाया' ' इसकर वृद्धि होनी चाहिये थी सो इण्प्रत्यय पर होनेसे मकारान्त सेट् शम्धातुको वृद्धि नहीं हुई तब रूप सिद्ध हुआ । अशमि । इसी प्रकार दम्धातुको अकर्मक होनेसे भावमें आत् करनेपर लुङ्में सिद्ध हुआ । अदमि । और लुङ्में इण् पर हुए संते आचम्, कम्, वम् इनको ' अत उपधाया ' इसकर दीर्घ करनेपर रूप सिद्ध हुआ । आचामि । अकामि । अवामि । ञिप्रत्ययान्त शमधातुको सकर्मक होनसे कर्ममें आत्मनेपदसंबन्धी आख्यातप्रत्यय करनेपर ' ञेः ' इसकर ञिप्रत्ययका लोप करनेसे सिद्ध हुआ । शम्यते । लिट्में । शमयाञ्चक्रे ॥

मितां ञ्यन्तानामिणि णमि च वा दीर्घः ॥ ९६३ ॥ शामिता शमिता शमयिता । अशामि । अशामिषाताम् अशमिषाताम् अशमयिषाताम् ॥ वध हिंसायाम् ॥ वध्यते । अनिवध्योर्न वृद्धिः । अवधि ॥

भाषा–मित्संज्ञक ञिप्रत्ययान्त धातुको विकल्पकरके दीर्घ होय इण्प्रत्यय तथा णम्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–सीयुडादिकमें ञिप्रत्ययान्त शमधातुसे सीयुट्के इण्वत् इट् करनेपर रूप स्थित हुआ शमि-इ-सीष्ट फिर ' ञेः ' इसकर ञिका लोप किया फिर ' अत उपधाया ' इसकर एक अवस्था वृद्धि की क्योंकि मित्संज्ञक ञिप्रत्ययान्त शम्धातुसे इण्वत् इट् परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ ।

शामिपीष्ट । और जहां वृद्धि नहीं हुई तहां सिद्ध हुआ । शमिषीष्ट । और जहां इट्प्रत्यय हुआ तहां णिप्रत्ययका लोप न होनेसे सिद्ध हुआ । शमयिपीष्ट । तादिकर्मे इसी प्रकार सिद्ध हुआ । शामिता, शमिता, शमयिता । लुङ्में । अशामि, अशमि । और द्विवचनमे इण्वत् इट्के विपै । अशामिपाताम्, अशमिपाताम् । और इट्के विपैं । अशमयिषाताम् । वधधातुसे कर्ममें यक् प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । वध्यते । लुङ्में 'इण् तन्यकर्त्तरि' इसकर इण् करनेपर 'जनिवध्योर्न वृद्धिः' इसकर वृद्धि न करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अवधि ॥

भञ्जेरिणि नलोपो वा ॥ ५६४ ॥ अभाजि अभञ्जि ॥

भाषा-भञ्जधातुके नकारका लोप विकल्पकरके होय इण्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण-भञ्जधातुसे कर्ममें यक्प्रत्यय करनेके अनन्तर 'नो लोपः' इसकर नकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । भज्यते । लिट्में । बभञ्जे । लिङ्में 'चोः कुः, खसे च०, कि०' इनकर सिद्ध हुआ । भङ्क्षीष्ट । लुङ्में इण्प्रत्ययके विपैं जहां नकारका लोप हो गया तहां वृद्धि करनेपर सिद्ध हुआ । अभाजि । और जहां नकारका लोप नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । अभञ्जि । द्विवचनमें 'चोः कुः, खसे च०, कि०' इनकर सिद्ध हुआ । अभङ्क्षाताम् ॥

लभेरिण्णमोर्नुम्वा ॥ ५६५ ॥ अलम्भि अलाभि ॥ गौणे कर्मणि दुह्यादेः प्रधाने नीहृकृष्वहाम् । बुद्धिभक्षार्थयोः शब्दकर्मकाणां निजेच्छया । प्रयोज्यकर्मण्यन्येपां ण्यन्तानां लादयो मताः ॥ गौर्दुह्यते पयः । धुक्षीष्ट । अजा ग्रामं नीयते । ह्रियते । कृष्यते । उह्यते । बोध्यते माणवकं धर्मः । माणवको धर्ममिति वा । भोज्यते माणवकमोदनः । ओदनं माणवको वा । पाठ्यते माणवक वेदः । माणवको वेदमिति वा । देवदत्तो ग्रामं गम्यते ॥

भाषा-डुलभष्धातुको नुम् आगम होय इण्प्रत्यय तथा णमुप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण-डुलभष् धातुसे कर्ममें यक् करनेपर सिद्ध हुआ । लभ्यते । लिट्में । लेभे । सीष्टादिकमें 'खसे च०' इसकर सिद्ध हुआ । लप्सीष्ट । तादिकमें 'तथोर्धः, झबे जवाः' इनकर सिद्ध हुआ । लब्धा । लुङ्में तन्के विपैं इण् करनेके अनन्तर एक जगह नुम् आगम किया तहां सिद्ध हुआ । अलम्भि । और जहां नुम् आगम नहीं हुआ तहां 'अत उपधायाः' इसकर वृद्धि करनेपर सिद्ध हुआ । अलाभि । द्विवचनमें 'खसे च०' इसकर सिद्ध हुआ । अलप्साताम् । द्वादशसंख्यक दुह आदिक धातुओंके गौणकर्ममें लट् आदिक प्रत्यय होते हैं और नी, हृ, कृष्, वह

इन चार धातुओंके प्रधानकर्ममें लट् आदिक प्रत्यय होते हैं और बुद्धि और भक्षण अर्थ है जिनका ऐसे णिप्रत्ययान्त धातुओंके प्रयोज्यकर्म वा प्रधानकर्म दोनोंमें किसीके विषें वक्ताकी निजेच्छाकर लट् आदिक प्रत्यय होते हैं और शब्द कर्म है जिनका ऐसे णिप्रत्ययान्त धातुओंके प्रयोज्यकर्म वा प्रधानकर्म दोनोंमेंसे किसीके विषें वक्ताकी इच्छानुसार लट् आदिक प्रत्यय होते हैं और अन्य णिप्रत्ययांत धातुओंके प्रयोज्यकर्ममेंही लट् आदिक प्रत्यय होते हैं । उदाहरण-गौर्दुह्यते पयः । इसमें गौणकर्म गौ है दुहधातुके गौणकर्मको आख्यातप्रत्ययोंके साथ कहनेसे 'अन्योक्ते प्रथमा' इसकर गोशब्दमें प्रथमा युक्त है और पय यह मुख्य कर्म है इस कारण 'कर्मणि द्वितीया' इसकर पय शब्दमें द्वितीया युक्त है और नी आदिक चारों धातुओंसे प्रधानकर्ममें आत्मनेपदसम्बन्धी आख्यातप्रत्यय होते हैं । जैसे-'अजा ग्रामं नीयते' इसमें अजा मुख्य कर्म है, नीधातुके मुख्य कर्म अजाको आख्यातप्रत्ययोंके साथ कहनेसे अजाशब्दमें प्रथमा युक्त है और ग्राम गौण कर्म है इस कारण गौणकर्म ग्राममें द्वितीया युक्त है । बोध्यते माणवकं धर्मः । माणवको धर्ममिति वा ' इसमें बुद्धिअर्थवाला णिप्रत्ययान्त बोधिधातुका धर्म यह मुख्य कर्म है और माणवक यह प्रयोज्य कर्म है इन दोनोंमें किसीको आख्यातप्रत्ययोंके साथ कहनेसे दोनोंमें प्रथमा हो सकती है परन्तु एकमें आख्यातप्रत्ययोंके साथ कहनेसे प्रथमा होय तो अन्यमें द्वितीया होय । 'भोज्यते माणवकमोदनः । ओदनं माणवको वा ' इसमें भक्षणार्थ णिप्रत्ययान्त भोजिधातुका ओदन यह मुख्य कर्म और माणवक प्रयोज्यकर्म है इन दोनोंमेंसे प्रत्येक आख्यातप्रत्ययोंके साथ कहा जा सकता है । 'पाठ्यते माणवकं वेदः । माणवको वेदमिति वा ' इसमें शब्दकर्मवाला णिप्रत्ययान्त पाठिधातुका वेद यह मुख्य कर्म है माणवक प्रयोज्यकर्म है इन दोनोंमेंसे प्रत्येक आख्यातप्रत्ययोंके साथ कहा जा सकता है । 'देवदत्तो ग्रामं गम्यते ' इसमें णिप्रत्ययान्त गमिधातुका ग्राम यह मुख्य कर्म है और देवदत्त यह प्रयोज्यकर्म है अन्यार्थ णिप्रत्ययान्त धातु होनेसे प्रयोज्यकर्म देवदत्तही आख्यातप्रत्ययोंके साथ कहा जा सकता है ॥

अकर्मकाणां कालादिकर्मकाणां भावे कर्मणि च लकारः ॥ ८६६ ॥ मास मासो वास्यते देवदत्तेन । क्रोशः क्रोशं वास्यते । कुरून् कुरवः वास्यते । गोदोह गोदोहो वास्यते ण्यन्तात्तु प्रयोज्ये प्रत्ययः । मासमास्यते माणवकः ॥ इति भावकर्मप्रक्रिया ॥

भाषा-कालादिक कर्मसंज्ञक हैं जिनके ऐसे अकर्मकधातुओंके भाव और कर्ममें आख्यातप्रत्यय होता है । भाव यह है । कि जो धातु अकर्मक हैं उन धातुओंसे

कर्मसंज्ञाको कालादि शब्द प्राप्त होते हों तो उन धातुओंसे भाव वा कर्म दोनोंमें आख्यातप्रत्यय होता है । उदाहरण—मासं मासो वा आस्यते । इसमें अकर्मक आसधातुकी कर्मसंज्ञाको मासशब्द प्राप्त हुआ है इस कारण मासशब्दको आख्यातके साथ कहनेसे मासशब्दमें प्रथमा युक्त है और जहां आसधातुसे भावमें आख्यात प्रत्यय हुआ तहां कर्मसंज्ञक मासशब्दको आख्यातके साथ न कहनेसे मासमें प्रथमा नहीं हुई किन्तु ' कर्मणि द्वितीया ' इसकर द्वितीया हुई इसी प्रकार शेष रूप जानने । और कालादिक शब्द कर्मसंज्ञाको प्राप्त हुए हों जिन धातुओंके विषैं ऐसे अकर्मक णिप्रत्ययान्त धातुओंसे प्रयोज्यकर्ममेंही आख्यातप्रत्यय होय न कि कालादिकर्ममें । उदाहरण—मासमास्यते माणवकः । इसमें णिप्रत्ययान्त अकर्मक आसिधातुका प्रयोज्यकर्म माणवक है और कालादिकर्म मासशब्द है इन दोनोंमेंसे प्रयोज्यकर्म माणवकही आख्यातप्रत्ययके साथ कहा जा सक्ता है न कि कालादिकर्म मासशब्द ॥ इति भावकर्मप्रक्रिया ॥ मंगलसेनात्मजश्रीकाशिरामेण भाषया । कृतं चंद्रिकोत्तरार्द्धे भावकर्मप्रसाधनम् ॥ ८ ॥

यदा सौकर्यातिशयं द्योतयितुं कर्तृव्यापारो न विवक्ष्यते तदा कारकान्तराण्यपि कर्तृसंज्ञां लभन्ते । साध्वसिश्छिनत्ति । काष्ठानि पचन्ति । स्थाली पचति । पच्यते ओदनेन । अपाचि । भिद्यते काष्ठेन । अभेदि । तेनोक्ते कर्मकर्तरि यगादिणिवदिटः । पच्यते ओदनः । भिद्यते काष्ठम् । अभेदि ॥

भाषा—जब कि कारकान्तरोंके सौकर्यातिशयके सिद्ध करनेको कर्तृव्यापार कहनेको नहीं अपेक्षित होता है तब कारकान्तरही कर्तृसंज्ञाको प्राप्त होते हैं । भाव यह है कि जब कि कर्त्ताके व्यापारकी तौ इच्छा नहीं की जाती है और जिस अन्यकारक कर्त्ताके करनेयोग्य कर्ममें सुतंत्रतासे ग्रहण होता है तब उस कारककी कर्तृसंज्ञा की जाती है । ' साध्वसिश्छिनत्ति ' इसमें करणसंज्ञक असिकी कर्तृसंज्ञा हुई है असिकर्त्ताको आख्यातप्रत्ययके साथ कहनेसे असिमें प्रथमा युक्त है । ' काष्ठानि पचन्ति ' इसमें करणसंज्ञक काष्ठकी कर्तृसंज्ञा हुई है काष्ठकर्त्ताको आख्यातप्रत्ययके साथ कहनेसे काष्ठमें प्रथमा युक्त है । ' स्थाली पचति ' इसमें आधारसंज्ञक स्थालीकी कर्तृसंज्ञा हुई है । स्थालीकर्त्ताको आख्यातप्रत्ययके साथ कहनेसे स्थालीमें प्रथमा युक्त है और कर्मका कर्तृभाव जब कि किया जाता है तब जो कि सकर्मकधातु हैं वह अकर्मक हो जाते हैं परन्तु द्विकर्मकधातु अकर्मक नहीं होते हैं । कर्मका कर्तृभाव होनेपर उस अकर्मकधातुसे भाव और कर्त्तामें

आख्यातप्रत्यय होता है। 'पच्यते ओदनेन' इसमें कर्मसंज्ञक ओदनसम्बन्धी कर्तृसंज्ञा है जब कि कर्मसंज्ञक ओदनकी कर्तृसंज्ञा हुई तब पचधातु अकर्मक हुआ यहां ओदन, कर्तृसंज्ञाको प्राप्त होकर आख्यातके साथ नहीं कहा गया है इस कारण पचधातुसे भावमें आख्यातप्रत्यय करनेपर 'यक् चतुष्, आत्मने कर्माणि' इत्यादिकर सिद्ध हुआ। पच्यते। दुदुहे। 'इण् तन्यकर्तरि', इसकर सिद्ध हुआ। अपाचि। 'भिद्यते काष्ठेन' इसी प्रकार यह जानना। आख्यातकर कहे हुए कर्मकर्त्ताके विषे यक्, आत्, इण्, इण्वदिट् यह होते हैं। भाव यह है कि कर्मके विषे आख्यातप्रत्यय करनेपर जो कि धातुसे यक् प्रत्यय आत्मनेपद, इण् और इण्वत् इट् यह कार्य होता है वही कार्य कर्मकर्त्ताके विषे आख्यातप्रत्यय करनेपर धातुसे होता है। 'पच्यते ओदन' इसमें कर्मसंज्ञक ओदनसम्बन्धी कर्तृसंज्ञा हुई है यहां कर्मकर्त्ताके आख्यातके साथ कहनेसे पचधातुसे यक्प्रत्ययादि कार्य यथास्थान करनेपर रूपमें सिद्ध हुआ। पच्यते। दुदुहे। अपाचि। इसी-प्रकार। भिद्यते काष्ठम्। इत्यादि उदाहरण जानने ॥

द्विकर्मकाणान्न ॥ ९६७ ॥ अजा ग्रामं नयति ॥

भाषा—द्विकर्मक धातुओंका कर्मकर्त्ता कर्मवत् नहीं होता है। भाव यह है कि जो धातु द्विकर्मक हैं उनके गौणकर्मकी कर्तृसंज्ञा होनेपर उस कर्मकर्त्ताको आख्यातके साथ कहनेसेभी यक्, इण्, इण्वत् इट्, आत्मनेपद यह कार्य नहीं होय। उदाहरण—अजा ग्रामं नयति। इसमें 'प्रधाने नीहृकृष्वहाम्' इस उक्तिसे मुख्य कर्म अजाकी कर्तृसंज्ञा है और अजा कर्त्ता आख्यातके साथ कहाभी गया है परन्तु नीधातुका एक कर्म ग्राम और होनेसे यक्, इण् इण्वत् इट्, आत्मनेपद यह कोई नहीं हो सकता ॥

दुहिपच्योस्सकर्मकयोर्वा ॥ ९६८ ॥

भाषा—सकर्मक दुह् और पचधातु इन दोनोंका कर्मकर्त्ता विकल्पकरके कर्मवत् होता है। भाव यह है कि द्विकर्मक दुहधातु और पचधातुके एक कर्मकी कर्तृसंज्ञा होनेपर उस कर्मकर्त्ताको आख्यातके साथ कहनेसे एक जगह यक्, इण्, आत्मनेपद यह कार्य होय और एक जगह नहीं होय ॥

दुहस्नुनमां कर्मकर्त्तरि यगिणौ न ॥ ९६९ ॥ गौः पयो दुग्धे। दोग्धि वा ॥

भाषा—दुह्, स्नु, नम् इन धातुओंसे कर्मकर्त्ता अर्थमें यक् और इण्,' यह दोनों प्रत्यय नहीं होते हैं। उदाहरण—गौः पयो दुग्धे। दोग्धि वा। इसमें 'गौणे कर्मणि दुह्यादेः' इस उक्तिसे गौणकर्म गौकी कर्तृसंज्ञा है और गौ कर्त्ता आख्यातके साथ कहा है

और द्वितीय कर्म पयःभी विद्यमान है इस कारण ' दुहिपच्योर्बहुलं सकर्मकयोर्वा ' इस- कर एक जगह कर्म कार्य किया तहां यक्प्रत्यय और इण् तौ हुआ नहीं किन्तु केवल आत्मनेपद हुआ और एक जगह कर्म कार्य नहीं किया तहां आत्मनेपदभी नहीं हुआ ॥

स्वरांतानां कर्मकर्तरीण् वा तनि ॥ ५७० ॥ अकारि अकारिष्ट अकृत कटः स्वयमेव ॥

भाषा–स्वरान्तधातुओंसे इण्प्रत्यय विकल्पकरके होय कर्मकर्त्ताअर्थमें तन् प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–कर्मकर्त्ताअर्थमे कृञ्धातुसे तन्के विषैं एक जगह इण् किया तहां सिद्ध हुआ । अकारि । और जहां इण् नहीं हुआ तहां एक जगह इण्वत् इट् करनेपर सिद्ध हुआ । अकारिष्ट । और एक जगह अनिट् होनेसे सिको इट् न होनेपर ' उः, लोपो ह्रस्वात् ' इनकर सिद्ध हुआ । अकृत ॥

दुहश्च ॥ ५७१ ॥ अदोहि अधुक्षत अदुग्ध । उदुम्बरः फलं पच्यते । पचति वा । प्रस्नुते गौः । स्नुक्रमोराति नेट् । प्रास्नाविष्ट प्रास्नोष्ट । नमते दण्डः । अनंस्त ॥

भाषा–दुहधातुसे इण्प्रत्यय विकल्पकरके होय कर्मकर्त्ताअर्थमें तन् प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–कर्मकर्त्तामें दुह्धातुसे जहां तन्के विषैं इण्प्रत्यय हुआ तहां सिद्ध हुआ । अदोहि । और जहां इण्प्रत्यय नहीं हुआ तहां ' हशषान्तात्सक् ' इसकर सिद्ध हुआ । अधुक्षत । और एक जगह ' दुहदिहलिहगुहूभ्यस्सको लुग्वा ' इसकर सक्का लुक् करनेपर ' झसात्, सिस्योः, दादेर्घः, तथोर्धः, खसे च० ' इनकर सिद्ध हुआ । अदुग्ध । ' उदुम्बरः फलं पच्यते पचति वा ' इसमें गौणकर्म उदुम्बरकी कर्तृसंज्ञा है और द्वितीयकर्म फल है इस कारण ' दुहिपच्योर्बहुलं सकर्मकयोर्वा ' इसकर एक जगह कर्मकार्य किया तहां सिद्ध हुआ । पच्यते । और एक जगह कर्मकार्य नहीं हुआ । ' प्रस्नुते गौः ' इसमें कर्मसंज्ञक गौकी कर्तृसंज्ञा है इस कारण कर्म- कार्य करनेपर ' दुहस्नुनमां कर्मकर्तरि ' इसकर यक्प्रत्यय न करनेसे सिद्ध हुआ । प्रस्नुते । सीष्टादिकमें एक जगह इण्वत् इट् करनेसे सिद्ध हुआ । प्रस्नाविषीष्ट । स्नुधातु और क्रमधातुसे परे वसादि प्रत्ययको इट् नहीं होय आत्मनेपदमें । उदाहरण–इस कथनसे स्नुधातुसे पर सीष्टको इट् न करनेपर सिद्ध हुआ । प्रस्नोसीष्ट । लुङ्में इण् करनेपर सिद्ध हुआ । प्रास्नाविष्ट । और जगह । प्रास्नोष्ट । ' नमते दण्डः ' इसमें कर्मसंज्ञक दण्डकी कर्तृसंज्ञा है कर्त्ताको आख्यातके साथ कहनेसे ' दुहस्नुनमां० ' इसकर यक्प्रत्यय नहीं किया केवल आत्मनेपद करनेसे सिद्ध हुआ । नमते । लुङ्में इण् न होनेसे सिद्ध हुआ । अनंस्त ॥

सृजेःश्रद्धोपपन्ने कर्त्तरि वा ॥८७२॥ सृज्यते स्रजं भक्तः । असर्जि ॥

भाषा—सकर्मक सृजधातुका कर्त्ता कर्मवत् होय श्रद्धायुक्त कर्त्ताअर्थके विषे । उदाहरण—सृज्यते स्रजं भक्तः । इसमें भक्तकर्त्ता आख्यातके साथ कहा गया है और स्रज् कर्म है सृजधातुका कर्त्ता कर्मवत् होनेसे सृजधातुसे कर्मकार्य यक् आत्मनेपद आदिक किया गया है । लुङमें । असर्जि ॥

युजेर्वा ॥ ८७३ ॥ युज्यते ब्रह्मचारी योगम् । युनक्ति वा ॥

भाषा—सकर्मक युजधातुका कर्त्ता कर्मवत् विकल्पकरके होय । उदाहरण—युज्यते ब्रह्मचारी योगं युनक्ति वा । इसमें ब्रह्मचारी कर्त्ता आख्यातके साथ कहा गया है और योग कर्म है । युजधातुका कर्त्ता कर्मवत् होनेसे युजधातुसे विकल्पकरके कर्मकार्य किया गया है ॥

भूषावाचिनां किरादीनां सन्तानां च यगिणिण्वदिटो न ॥ ८७४ ॥ अलङ्कुरुते कन्या । अलमकृत । अवकिरते हस्ती । अवाकरीष्ट अवाकरिष्ट अवाकीर्ष्ट । अवकिरते पुष्पम् । अवाकीर्ष्ट । आद्रियते दानम् । आदृत । म्रियते । अमृत । पृच्छते । अपृष्ट । चिकीर्षते कटः । चिकीर्षाञ्चक्रे । चिकीर्षाम्बभूवे । अचिकीर्षिष्ट ॥

भाषा—भूषा है अर्थ जिनका ऐसे धातुओंसे और कृ आदिक धातुओंसे और सन्प्रत्ययान्त धातुओंसे कर्मकर्त्ता अर्थके विषे यक्, इण् इण्वत् इट् यह नहीं होय किन्तु केवल आत्मनेपद होय । 'अलङ्कुरुते कन्या' इसमें भूषणार्थ अलंकृ धातु है और कर्मसंज्ञक कन्याकी कर्तृसंज्ञा है कर्मकर्त्ताको आख्यातके साथ कहनेसे अलंकृ धातुसे यक्, इण्, इण्वत् इट् नहीं हुए किन्तु केवल आत्मनेपद हुआ है । लुङमें इण् न होनेसे सिद्ध हुआ । अलमकृत । 'अवकिरते हस्ती' इसमें कर्मसंज्ञक हस्तिन्‌की कर्तृसंज्ञा है और कृधातु है कर्मकर्त्ता हस्तिन्‌को आख्यातके साथ कहनेसे कृधातुसे यक्, इण्, इण्वत् इट् नहीं हुए केवल आत्मनेपद हुआ है । लुङमें इण् न होनेसे एक जगह 'ह्रस्वाद्भ्यसदन्तात्सिस्पोरिङ्गाति' इसकर इट् नहीं हुआ वहां सिद्ध हुआ । अवाकीर्ष्ट । और एक जगह इट् होनेसे 'ह्रस्वाद्भ्यसदन्तानां वा' इसकर सिद्ध हुआ । अवाकरीष्ट, अवाकरिष्ट । इसी प्रकार शेष उदाहरण जानने । 'चिकीर्षते कटः' इसमें कर्मसंज्ञक कटकी कर्तृसंज्ञा है । कर्मकर्त्ता कटको आख्यातके साथ कहनेसे सन्प्रत्ययान्त चिकीर्षधातुसे यक्, इण् इण्वत् इट् यह नहीं हुए किन्तु केवल आत्मनेपद हुआ । लुङमें इण् न होनेसे 'सिसतासीस्यपामेट्, पव' इन कर सिद्ध हुआ । अचिकीर्षिष्ट ॥

णिश्रिग्रन्थिग्रंथ्यादकर्मकाणां यगिणौ न ॥५७५॥ कारयते कटः स्वयमेव । कारिषीष्ट । अचीकरत । उच्छ्रयते दण्डः । उदशिश्रियत । ब्रूते कथा । अवोचत । ग्रन्थते ग्रन्थः । अग्रन्थिष्ट । विकुर्वते सैन्धवाः । व्यकारिष्ट व्यकृत ॥

भाषा–णिप्रत्ययान्त धातुओंसे और ब्रूञ्, श्रन्थि, ग्रन्थि इन धातुओंसे और जो कि आत्मनेपदविधिमें अकर्मक हैं उन धातुओंसे यक् और इण् नहीं होय कर्मकर्त्ताअर्थके विषै । उदाहरण–कारयते घटः स्वयमेव । इसमे णिप्रत्ययान्तसे कर्मकर्त्तामें आख्यात प्रत्यय करनेपर यक् नहीं हुआ है किन्तु केवल आत्मनेपद हुआ है । आशीर्लिङ्में एक जगह इण्वत् इट् करनेसे सिद्ध हुआ । कारिषीष्ट । और एक जगह । कारयिषीष्ट । लुङ्मे इण् तौ हुआ नही किन्तु 'णेरड् द्विश्च, णेः, अडि लघौ, लघोर्दीर्घः' इनकर सिद्ध हुआ । अचीकरत । 'उच्छ्रयते दण्डः' इसमें श्रिधातुसे कर्मकर्त्ताअर्थमें आख्यात करनेपर यक् नहीं हुआ है केवल आत्मनेपद हुआ है । लुङ्में तन्के विषै इण् नही हुआ किन्तु 'श्रिस्रुद्रुभ्यो ङो लुङि सेरपवादः' इसकर सिद्ध हुआ । उदशिश्रियत । 'ब्रूते कथा' इसमे कर्मसंज्ञक कथाकी कर्तृसंज्ञा है कर्मकर्त्ताकथाको आख्यातके साथ कहनेसे ब्रूञ्धातुसे यक् नहीं हुआ है किन्तु केवल आत्मनेपद हुआ है । लुङ्में तन्के विषै इण् तौ हुआ नहीं किन्तु 'ब्रूञोऽनापि वच्, अस्यतिवक्तिख्यातिभ्यो ङो०, ङे वचेरुम्' इनकर सिद्ध हुआ । अवोच । 'ग्रन्थत ग्रन्थः' इसमें कर्मग्रंथकी कर्तृसंज्ञा हुई है कर्मकर्ताग्रंथको आख्यातके साथ कहनेसे ग्रंथधातुसे यक् नहीं हुआ है केवल आत्मनेपद हुआ । लुङ्में तन्के विषै इण् नही हुआ किन्तु सिप्रत्ययको इट् करनेपर सिद्ध हुआ । अग्रन्थिष्ट । 'विकुर्वते सैन्धवाः' इसमें विउपसर्ग पूर्व होनेसे कृञ्धातुसे आत्मनेपद हो सक्ता है इस कारण कर्मकर्ता सैन्धवको आख्यातके साथ कहनेसे आत्मनेपदीय विकृधातुसे यक् नहीं हुआ किन्तु केवल आत्मनेपद हुआ है । लुङ्मे तन्के विषै इण् तौ हुआ नहीं किन्तु एक जगह इण्वत् इट् करनेसे सिद्ध हुआ । व्यकारिष्ट । और एक जगह अनिट् होनेसे इट् न होनेसे 'उः, लोपो ह्रस्वात्' इनकर सिद्ध हुआ । व्यकृत ॥

कुषिरञ्जोः कर्मकर्तरि वा तिबादौ ॥ ५७६ ॥ कुष्यति कुष्यते वा पादः । अकोषि । रज्यति रज्यते वा वस्त्रम् । अरञ्जि ॥ इति कर्मकर्तृप्रक्रिया ॥

भाषा–कुष रञ्ज इन दोनों धातुओंसे विकल्पकरके आत्मनेपद होय तिबादिक

धार लकारके प्रत्यय पर हुए संते कर्मकर्त्ता अर्थके विषैं । भाव यह है कि कर्मकर्त्ता अर्थमें कुप रञ्जधातुसे दोनों पद होय चार लकारोंके विषैं और शेषलकारोंके विषैं आत्मनेपदही होय । उदाहरण–कुप्यति कुप्यते वा पादः । इसमें पादकर्मकी कर्तृसंज्ञा हुई है कर्मकर्तृपादको आत्मघातके साथ कहनेसे कुपधातुसे यक्प्रत्यय कर दोनों पद हुए हैं । लुङमें परस्मैपद भी हुआ नहीं किन्तु आत्मनेपद करनेपर इण्प्रत्यय करनेसे सिद्ध हुआ । अकोपि । इसी प्रकार रञ्जधातुके कर्मकर्त्तामें उदाहरण जानने । इस समस्त कर्मकर्तृप्रकरणमें ' क्रियते कटं स्वयम् ' इत्यादिक प्रयोगोंके विषैं स्वयंशब्द कारणार्थक जाननेयोग्य है । कटह स्वयं करता है इसी प्रकारसे अर्थ कर्मकर्त्ताका क्रियाके साथ होता है ॥ इति कर्मकर्तृप्रक्रिया ॥ मयङ्केनात्मजश्रीकाशिरामेण भाषया । कृत चन्द्रिकोत्तरार्द्धे कर्मकर्तृनिरूपणम् ॥ ९ ॥

स्मृतिवाचिन्युपपदे भूतानद्यतने धातोर्लृट् ॥ ५७७ ॥ लङोऽपवादः ॥ स्मरसि कृष्ण गोकुले वत्स्यामः ॥

भाषा–स्मृतिवाचक शब्द उपपद हुए संते भूतानद्यतनअर्थमें धातुसे लृट् लकार होय न कि लङ् । उदाहरण–स्मरसि कृष्ण गोकुले वत्स्यामः । इसमें स्मृतिवाचक स्मरसिपद उपपद है इस कारण वसधातुसे लृट्का उत्तमपुरुषका बहुवचन हुआ है । अर्थ–हे कृष्ण ! तुम याद करते हो कि हम गोकुलमें वसते हुए ॥

यद्योगे उक्त न ॥ ५७८ ॥ अभिमानासि कृष्ण यद्वनेऽभुञ्ज्महि ॥

भाषा–स्मृतिवाचक शब्द उपपद हुए संते यत्शब्दके योगमें भूतानद्यतन अर्थके विषैं लृट् नहीं होय किन्तु लङ्ही होय । उदाहरण–अभिजानासि० । इसमें स्मृतिवाचक अभिजानासि यह पद भी उपपद है परन्तु यत्शब्दका योग है इस कारण भूतानद्यतनअर्थमें लृट् नहीं हुआ किन्तु भुजधातुसे लङ्का उत्तमपुरुषका बहुवचन हुआ है । अर्थ–हे कृष्ण ! आप जानते हैं जो कि हम वनमें भोजन करते हुए ॥

उत्तमपुरुषे चित्तविक्षेपादिना पारोक्ष्यम् ॥ ५७९ ॥ सुप्तोऽहं किल विललाप ॥

भाषा–उत्तमपुरुषमें चित्तका मद समादिकर विक्षेप होनेकर पारोक्ष्य] प्रत्यय होय । उदाहरण–सुप्तोऽहं किल विललाप । इसमें स्वमकर सोनेवालेका चित्त विक्षेपको प्राप्त हुआ है इस कारण विलपधातुसे लिट्का उत्तमपुरुषका एक वचन प्रयुक्त है । अर्थ–न जाने मैं सोता हुआ क्या विलाप करता था ॥

अत्यन्तापह्नवे लिट् ॥ ५८० ॥ कलिङ्गेष्ववात्सीः । नाहं कलिङ्गाञ्जगाम ॥

भाषा-अत्यन्तही अपलापअर्थमे अर्थात् किसी वचनके अत्यन्त विरुद्ध वचनमें भूतअर्थके विषे लट्लकार होय। उदाहरण-कलिङ्गेष्ववात्सीः। इसमे पूंछनेवालेके वचनसे अत्यन्त विरुद्ध वचन है इस कारण भूतअर्थमे गमधातुसे लिट्के उत्तमभागका एक वचन हुआ है। अर्थ-किसीने पूंछा कि तू कलिंगदेशोंमे वसता हुआ। तौ उसने इस वचनसे अन्यन्त प्रातिकूल उत्तर दिया कि 'नाहं कलिंगान् जगाम' मैं तौ कलिंगदेशोंको नहीं जाता हुआ॥

हशश्वतोर्लङ्विषये लङ्लिटौ॥ ५८१॥ इति हाकरोत् चकार वा। शश्वदकरोत् चकार वा॥

भाषा-ह, शश्वत इन निपातशब्दोंका योग हुए संते लिङ्लकारके होनेके विषयमें लङ् और लिट् यह लकार होय। उदाहरण-इति हाकरोत्। इसमें ह और शश्वत इन अव्ययोका योग है इस कारण लिङ्लकारके जगह कृधातुसे लङ् और लिट् हुआ है॥

आसन्नकाले पृच्छ्यमानेऽर्थे लङ्लिटौ॥ ५८२॥ अगच्छत् किम्। जगाम किम्। अनासन्ने तु। कंसं जघान किम्॥

भाषा-धात्वर्थके पूंछे जानेपर समीपवर्ती भूतानद्यतनपरोक्षकालमें धातुके यह लिट् यह लकार होंय। उदाहरण-अगच्छत् किम्। जगाम किम्। इसमें पृच्छ्यमान धात्वर्थ तथा समीपवर्ती भूतानद्यतन परोक्षकाल विद्यमान है इस कारण गम्धातुसे लङ् लिट् लकार हुए हैं और जहा आसन्नकाल नहीं होगा तहां लिट्ही होगा। जैसे-'कंसं जघान किम्' इसमें पृच्छ्यमान धात्वर्थ तौ विद्यमान है परन्तु आसन्नकाल नहीं इस कारण लिट्ही हुआ हैं॥

स्मे लट्॥ ५८३॥ लिटोऽपवादः। यजति स्म युधिष्ठिरः। भूतानद्यतने लट् स्मयोगे। एवं स्म पिता ब्रवीति॥

भाषा-स्मअव्ययका योग हुए संते लिट्के होनेके विषयमें लट् होय लिट्का अपवाद होय। उदाहरण-यजति स्म युधिष्ठिरः। इसमें स्मअव्ययका योग है इस कारण यजधातुसे लिट्के विषयमें लट् हुआ है। स्मअव्ययका योग हुए संते भूतानद्यतनकालमें लट् होय लङ्का अपवाद होय। उदाहरण-एवं स्म पिता ब्रवीति। इसमें भूतानद्यतन काल और स्मअव्ययका योग है इस कारण ब्रूञ्धातुसे लट्लकार हुआ है॥

ननौ पृष्टप्रतिवचने॥ ५८४॥ भूते लट्॥ अकार्षीः किम्। ननु करोमि भोः॥

धार लगाके प्रत्यय पर हुए सते कर्मकर्त्रर्थके विषे । भाव यह है कि कर्मकर्त्रर्थमें कुप रञ्जधातुसे दोनों पद होय चार लकारोंके विषे और शेषलकारोंके विषे आत्मनेपदही होय । उदाहरण—कुप्यति कुप्यते वा पादः । इसमें पादकर्मकी कर्तृसंज्ञा हुई है कर्मकर्तृपादको आत्मपादके साथ कहनेसे कुपधातुसे यक्प्रत्यय कर दोनों पद हुए हैं । लुङ्में परस्मैपद भी हुआ नहीं किन्तु आत्मनेपद करनेपर इण्प्रत्यय करनेसे सिद्ध हुआ । अकोपि । इसी प्रकार रञ्जधातुके कर्मकर्त्रमें उदाहरण जानने । इस समस्त कर्मकर्तृप्रकरणमें ' भिद्यते काष्ठं स्वयम् ' इत्यादिक प्रयोगोंके विषे स्वयंशब्द करणार्थक जाननेयोग्य है । काष्ठ स्वयं कटता है इसी प्रकारसे अर्थ कर्मकर्त्ताका क्रियाके साथ होता है ॥ इति कर्मकर्तृप्रक्रिया ॥ मगऊते नारमभश्रीकाशिरामेण भाषया । कृत चन्द्रिकोत्तरार्द्धे कर्मकर्तृनिरूपणम् ॥ ९ ॥

स्मृतिवाचिन्युपपदे भूतानद्यतने धातोर्लृट् ॥ ५७७ ॥ लङोऽपवादः ॥ स्मरसि कृष्ण गोकुले वत्स्यामः ॥

भाषा—स्मृतिवाचक शब्द उपपद हुए सते भूतानद्यतन अर्थमें धातुसे लृट् लकार होय न कि लङ् । उदाहरण—स्मरसि कृष्ण गोकुले वत्स्यामः । इसमें स्मृतिवाचक स्मरसिपद उपपद है इस कारण वसधातुसे लृट्का उत्तमपुरुषका बहुवचन हुआ है । अर्थ—हे कृष्ण ! तुम याद करते हो कि हम गोकुलमें वसते हुए ॥

यद्योगे उक्त न ॥ ५७८ ॥ अभिजानासि कृष्ण यद्वनेऽभुञ्ज्महि ॥

भाषा—स्मृतिवाचक शब्द उपपद हुए सते यत्शब्दके योगमें भूतानद्यतन अर्थके विषे लृट् नहीं होय किन्तु लङ्ही होय । उदाहरण—अभिजानासि० । इसमें स्मृतिवाचक अभिजानासि यह पद भी उपपद है परन्तु यत्शब्दका योग है इस कारण भूतानद्यतनअर्थमें लृट् नहीं हुआ किन्तु भुजधातुसे लङ्का उत्तमपुरुषका बहुवचन हुआ है । अर्थ—हे कृष्ण ! आप जानते हैं जो कि हम वनमें भोजन करते हुए ॥

उत्तमपुरुषे चित्तविक्षेपादिना पारोक्ष्यम् ॥ ५७९ ॥ सुप्तोऽहं किल विललाप ॥

भाषा—उत्तमपुरुषमें चित्तका मद समाधिकर विक्षेप होनेकर पारोक्ष्य प्रत्यय होय । उदाहरण—सुप्तोऽहं किल विललाप । इसमें समझकर सोनेवालेका चित्त विक्षेपको प्राप्त हुआ है इस कारण विलपधातुसे लिट्का उत्तमपुरुषका एक वचन प्रयुक्त है । अर्थ—न जाने मैं सोता हुआ क्या विलाप करता था ॥

अत्यन्तापह्नवे लिट् ॥ ५८० ॥ कलिङ्गेष्ववात्सीः । नाहं कलिङ्गाञ्जगाम ॥

भाषा—अत्यन्तही अपलापअर्थमें अर्थात् किसी वचनके अत्यन्त विरुद्ध वचनमें भूतअर्थके विषैं लट्लकार होय। उदाहरण—कलिङ्गेष्ववात्सीः। इसमें पूंछनेवालेके वचनसे अत्यन्त विरुद्ध वचन है इस कारण भूतअर्थमे गमधातुसे लिट्के उत्तमभागका एक वचन हुआ है। अर्थ—किसीने पूंछा कि तू कलिंगदेशोंमें वसता हुआ। तौ उसने इस वचनसे अन्यन्त प्रतिकूल उत्तर दिया कि 'नाहं कलिंगान् जगाम' मैं तौ कलिंगदेशोंको नहीं जाता हुआ॥

हशश्वतोर्लिङ्विषये लङ्लिटौ॥ ५८१॥ इति हाकरोत् चकार वा। शश्वदकरोत् चकार वा॥

भाषा—ह, शश्वत् इन निपातशब्दोंका योग हुए संते लिङ्लकारके होनेके विषयमें लङ् और लिट् यह लकार होंय। उदाहरण—इति हाकरोत्। इसमें ह और शश्वत् इन अव्ययोंका योग है इस कारण लिङ्लकारके जगह कृधातुसे लङ् और लिट् हुआ है॥

आसन्नकाले पृच्छ्यमानेऽर्थे लङ्लिटौ॥ ५८२॥ अगच्छत् किम्। जगाम किम्। अनासन्ने तु। कंसं जघान किम्॥

भाषा—धात्वर्थके पूंछे जानेपर समीपवर्ती भूतानद्यतनपरोक्षकालमे धातुके यङ् लिट् यह लकार होंय। उदाहरण—अगच्छत् किम्। जगाम किम्। इसमें पृच्छ्यमान धात्वर्थ तथा समीपवर्ती भूतानद्यतन परोक्षकाल विद्यमान है इस कारण गम्धातुसे लङ् लिट् लकार हुए हैं और जहा आसन्नकाल नहीं होगा तहां लिट्ही होगा। जैसे—'कंसं जघान किम्' इसमें पृच्छ्यमान धात्वर्थ तौ विद्यमान है परन्तु आसन्नकाल नहीं इस कारण लिट्ही हुआ है॥

स्मे लट्॥ ५८३॥ लिटोऽपवादः। यजति स्म युधिष्ठिरः। भूतानद्यतने लट् स्मयोगे। एवं स्म पिता ब्रवीति॥

भाषा—स्मअव्ययका योग हुए संते लिट्के होनेके विषयमें लट् होय, लिट्का अपवाद होय। उदाहरण—यजति स्म युधिष्ठिरः। इसमें स्मअव्ययका योग है इस कारण यजधातुसे लिट्के विषयमें लट् हुआ है। स्मअव्ययका योग हुए संते भूतानद्यतनकालमें लट् होय लङ्का अपवाद होय। उदाहरण—एवं स्म पिता ब्रवीति। इसमें भूतानद्यतन काल और स्मअव्ययका योग है इस कारण ब्रूञ्धातुसे लट्लकार हुआ है॥

ननौ पृष्टप्रतिवचने॥ ५८४॥ भूते लट्॥ अकार्षीः किम्। ननु करोमि भोः॥

भाषा–ननुअव्ययका योग होनेपर पूछे हुए वाक्यके उत्तर करनेमें भूतकालके विर्षे लट् लकार होय । उदाहरण–ननु करोमि भोः । इसमें ननुअव्ययका योग और पूछे हुए वाक्यका उत्तर है और भूतकाल विद्यमान है इस कारण कृञ्धातुसे लट् लकार हुआ है किसीने पूछा कि 'अकार्षीः किम्' क्या तू करता हुआ तब इस पूछनेका उत्तर कहा कि मैं निश्चयही करता हुआ ॥

नन्वोर्वा ॥ ५८५ ॥ अकार्षीः किम् । न करोमि । नाकार्षम् । अहं नु करोमि । अहं न्वकार्षम् ॥

भाषा–न और नु इन निपातअव्ययोंका योग हुए सते पूछे हुएके उत्तर करनेमें भूतकालके विर्षे विकल्पकरके लट् होय । उदाहरण–न करोमि, नाकार्षम्, नु करोमि, न्वकार्षम् । इनमें न और नु अव्ययका योग और पूछे हुएका उत्तर और भूतकाल विद्यमान है इस कारण कृञ्धातुसे लट् लकार विकल्पकरके हुआ है और जहां लट् नहीं हुआ तहां लुङ्लकार हुआ है ॥

पुराशब्दयोगे भूतानद्यतने वा लुङ्लटौ न तु स्मयोगे ॥ ५८६ ॥ वसन्तीह पुरा छात्राः । अवात्सुः । अवसन् । इ पूर्वा । यजति स्म पुरा युधिष्ठिरः ॥

भाषा–पुराशब्दका योग हुए सते भूतानद्यतनकालके विर्षे धातुसे विकल्पकरके लुङ् और लट् यह दोनों लकार होंय और पुरा अव्ययके साथ स्मअव्ययका योग हुए संते नहीं होय । उदाहरण–वसन्तीह पुरा छात्राः । इसमें पुराअव्ययका योग है और भूतानद्यतनकालभी विद्यमान है इस कारण विकल्पकरके लुङ् लट् हुए हैं और जहां लुङ् लट् नहीं हुए तहां लङ् और लिट् हुए हैं ॥

यावत्पुरानिपातयोर्भविष्यति लट् ॥ ५८७ ॥ यावद्भुंक्ते । पुरा भुंक्ते । भोक्ष्यते भोक्ता वा ॥

भाषा–यावत् पुरा यह निपातसंज्ञक शब्द उपपद हुए संते भविष्यत्कालमें लट् होय । उदाहरण–यावद् भुङ्क्ते । पुरा भुङ्क्ते । इसमें यावत्, पुरा इन अव्ययोंका योग और भविष्यत्काल विद्यमान है इस कारण भुजधातुसे लट् हुआ है और यावत् पुरा यह अव्यय न होकर उपपद होवें तो लट् नहीं होय । जैसे–यावद्‌रपत्ते यावद्भोक्ष्यते ॥

कदाकर्ह्योर्वा ॥ ५८८ ॥ भविष्यति लट् ॥ कदा कर्हि वा भुंक्ते भोक्ष्यते भोक्ता वा ॥

भाषा—कदा कर्हि इन अव्ययोंका योग हुए संते भविष्यत्कालमें लट् विकल्पकरके होय । उदाहरण—कदा कर्हि वा भुंक्ते भोक्ष्यसे भोक्ता वा । इसमें कदा कर्हि इन अव्ययोंका योग है और भविष्यत्काल विद्यमान है इस कारण विकल्पकरके लट् हुआ है और जहा लट् नहीं हुआ तहां और लट् हुए हैं ॥

वर्तमानसामीप्ये भूते भविष्यति च वर्तमानवद्वा ॥ ५८९ ॥

कदाऽऽगतोऽसि । अयमागच्छामि । अयमागमम् । कदा गमिष्यसि । एष गच्छामि गमिष्यामि वा ॥

भाषा—वर्त्तमानकालकी समीपता है जिसके विषैं ऐसे भूतकाल और भविष्यत्कालमें विकल्पकरके वर्त्तमानार्थ लकार होय । भाव यह है कि जिस भूतकालमें वर्त्तमानकालकी समीपता होय उस भूतकालमें एक जगह वर्त्तमानार्थ लकार और एक जगह भूतकालार्थ लकार होय और जिस भविष्यत्कालमें वर्त्तमानकालकी समीपता होय उस भविष्यत्कालमें एक जगह वर्त्तमानार्थ लकार और एक जगह भविष्यत्कालार्थ लकार होय । उदाहरण—कदागतोऽसि । अयमागच्छामि । अयमागमम् । इसमें वर्त्तमानकालकी समीपतावाला भूतकाल है इस कारण वर्त्तमानसमीप भूतकालके प्रकाश करनेवाला 'अयम्' ऐसा प्रयुक्त कर गम्धातुसे लट् और एक जगह लुङ् हुआ है । 'कदा गमिष्यसि । एष गच्छामि । गमिष्यामि इसमें वर्त्तमानकालकी समीपतावाला भविष्यत्काल है इस कारण वर्त्तमानसमीप भूतकालके प्रकाश करनेवाला 'एष' ऐसा प्रयुक्त कर गम्धातुसे लट् और एक जगह लट् हुआ है । अर्थ—किसीने पूंछा तू कब आया था तब उसने उत्तर दिया कि अभी आदा था ॥

क्षिप्रवचने लृट् ॥ ५९० ॥ वृष्टिश्चेत् क्षिप्रमाशु त्वरितं वा यास्यति तदा शीघ्रं वप्स्यामः ॥

भाषा—क्षिप्रपर्याय उपपद हुए संते धातुसे भविष्यत्कालमें लृट् लकार होय । भाव यह है कि क्षिप्रार्थवाचक शब्दोंके योग होनेसे धातुसे भविष्यत्कालमें लृट्लकार होय । उदाहरण—वृष्टिश्चेत् क्षिप्रमाशु० । इसमें क्षिप्रपर्याय शीघ्रशब्द उपपद है इस कारण धातुसे लृट्लकार हुआ है । अर्थ—जब वर्षा निवृत्त हो जावेगी तभी शीघ्र बो देंगे ॥

गर्हायां लडपि जात्वोः ॥ ५९१ ॥ कालत्रये ॥ अपि जायां त्यजसि । जातु गणिकामाधत्से वा ॥

भाषा—अपि और जातु इन अव्ययोंका योग हुए संते गर्हा नाम निंदा वा-

क्यमें भूत, भविष्यत्, वर्तमान इन तीनों कालोंके विषें लट्ही होय। उदाहरण- अपि जायां त्यजसि । जातु गणिकामाधत्से । यहां निंदावाक्यमें विद्यमान हुए अपि जातु अव्ययका योग है इस कारण त्यज और डुधाञ्धातुसे तीनों कालोंके विषें लट् हुआ है। 'त्यजसि। अत्याक्षी । त्यक्ष्यसि' इन सबोंके स्थानमें त्यजसि यह हुआ है। अर्थ-अरे तू भार्याको त्यागता है वा त्यागता हुआ वा त्यागेगा और गणिकाको स्वीकार करता है वा करेगा वा करता हुआ ॥

वा कथमि लिङ्लटौ ॥ ५९२ ॥ गर्हायां कालत्रये ॥ कथं धर्मं त्यजेस्त्यजसि वा ॥

भाषा-कथं यह अव्ययका योग हुए संते निन्दावाक्यमें भूत भविष्यत् वर्तमान तीनों कालोंके विषें लिङ् और लट् यह दोनों लकार होंय। 'उदाहरण-कथं धर्मं त्यजेस्त्यजसि वा । इसमें कथ उपपद है और निंदावाक्य विद्यमान है इस कारण तीनों कालोंके विषें लिङ् और लट् यह दोनों लकार हुए हैं। 'अत्यज'। तत्यक्थ। त्यक्तासि। त्यक्ष्यसि। अत्यक्ष्यः। अत्याक्षीः' इन सबोंके स्थानमें त्यजसि। त्यजेः' ॥

जातुयद्यदायदियोगे लिङ् ॥ ५९३ ॥ लृटोऽपवादः ॥ जातु यद् यदा यदि वा त्वादृशो हरिं निंदेत् नावकल्पयामि । न मर्षयामि ॥

भाषा-जातु, यद्, यदा, यदि इनका योग हुए संते भविष्यत्कालमें धातुसे लिङ् होय लृट्का अपवाद होय। उदाहरण-जातु, यद्, यदा, यदि वा०। इनमेंसे एकका योग है इस कारण भविष्यत्कालमें निंदिधातुसे लिङ् हुआ है ॥

उताप्योर्बाढार्थयोर्लिङ् ॥५९४॥ समर्थयोरनयोर्लिङ् कालत्रये ॥ उत अपि वा हन्यादघं हरिः । उत दण्डः पतिष्यति । अपिधास्यति द्वारम् ॥

भाषा-बाढार्थ अर्थात् समर्थअर्थवाले उत अपि इन अव्ययोंका योग हुए संते भूत भविष्यत् वर्तमान तीनों कालके विषें धातुसे लिङ् लकार होय। उदाहरण-उत अपि वा हन्यादघं हरिः । इसमें समर्थअर्थवाचक उत वा अपि अव्ययका योग है इस कारण तीनों कालमें हन्धातुसे लिङ् हुआ है समर्थवाचक उत अपि इन अव्ययोंका योग होनेसे 'हन्ति। अहन्। जघान। हनिष्यति' इन सबोंके स्थानमें हन्यात् ऐसा हुआ है। हरि समर्थ हुए पापको नाश करते हैं वा करते हुए वा करेंगे। जहां उत अपिका बाढार्थ नहीं होगा वहां कालानुसार लकार होगा ॥

स्वाभिप्रायाविष्करणे गम्ये लिङ् ॥ ५९५ ॥ कालत्रये ॥ ए

कच्चिदिति ॥ कामो मे भुञ्जीत भवानिति । कच्चिदिति किम् । काच्चि-ज्जीवति मे माता ॥

भाषा–अपने अभिप्रायके प्रकट करनेमे तीनों कालोंके विषैं धातुसे लिङ् होय । और अपने अभिप्रायको प्रकट करना अर्थ तौ विद्यमान हो परन्तु कच्चित् अव्ययका योग होवे तौ कालत्रयमें लिङ् नहीं होय । उदाहरण–कामो मे भुञ्जीत भवान् । इसमें अपना अभिप्राय प्रकट हुआ है । इस कारण तीनों कालोंमें भुजधातुसे लिङ् हुआ है । ' भुनक्ति । अभुनक् । बुभोज । भोक्ष्यति ' इन सबके स्थानमें भुञ्जीत ऐसा हुआ है । अर्थ–यह मेरीही इच्छा थी कि जो आप भोजन करते हैं वा करते हुए वा करेंगे। और कच्चित् योग होनेसे धातुसे कालानुसार लकार होय । जैसे–कच्चिज्जीवति मे माता । इसमें अपने अभिप्रायका प्रकट करना अर्थ तौ विद्यमान है परन्तु कच्चित्का योग है इस कारण ' वर्त्तमानसामीप्ये० ' इसकर जीवधातुसे लट् लकार हुआ है ॥

हेतुहेतुमतोर्भविष्यति लिङ्वा ॥ ५९६ ॥ कृष्णं नमेचेत्सुखं यायात् । कृष्णं नमस्यति चेत्सुखं यास्यति ॥

भाषा–हेतु कारण और हेतुमत् फल इन दोनों अर्थोंके विषैं भविष्यत्कालमें विकल्पकरके लिङ् होय । उदाहरण–कृष्णं नमेचेत्सुखं यायात् । इसमें कृष्णकी नति सुखकी प्राप्तिका कारण है यहां कारण और फल दोनों अर्थ विद्यमान हैं इस कारण नम् तथा याधातुसे एक जगह लिङ् और एक जगह लट् हुआ है । अर्थ–जो कृष्णको प्रणाम करेगा तौ सुखको प्राप्त होवेगा ॥

इच्छार्थेषु लिङ्लोटौ कामप्रवेदने ॥ ५९७ ॥ इच्छामि भुञ्जीत भुंक्तां वा भवान् ॥

भाषा–इच्छार्थ शब्द उपपद हुए संते इच्छाके प्रकाश करनेमें धातुसे लिङ् और लोट् यह दोनों लकार होंय । उदाहरण–इच्छामि भुञ्जीत० । इसमें इच्छार्थ शब्द इच्छामि यह उपपद और दूसरेकी इच्छाकाभी प्रकाश किया गया है इस कारण भुजधातुसे लिङ् लोट् हुए हैं । अर्थ–मैं चाहता हूं कि आप भोजन करें । इसमें भोजन करनेवालेकी इच्छा प्रगट की गई है क्योंकि भोजनकर्त्ताकी भोजन करनेमें इच्छा थी ॥

इच्छार्थेभ्यो लिङ्लटौ ॥ ५९८ ॥ वर्तमानेऽर्थे ॥ कामयेत । कामयते ॥

भाषा–इच्छार्थ धातुओंसे वर्त्तमान अर्थके विषैं लिङ् और लिट् यह दोनों होंय ।

उदाहरण—कामयेत। कामयते। इसमें इच्छार्थे धातु कमु है और वर्तमानार्थ विद्यमान है इस कारण कमूधातुसे लिङ् और लट् हुए हैं॥

पौनःपुन्ये भृशार्थे च धातोर्लोट् सर्वलकारविषये तस्य हिस्वौ सर्वेतुवादिर्विषये तध्वमोर्विषये वा ॥ ५९९ ॥ क्रियासमभिहारे द्वित्वन्तस्यैव धातोरनुप्रयोगश्च ॥ याहि याहीति याति। एवं यातः यान्ति। याहि याथ याथ। यात यातेति यूयं याथ। यामि यावः यामः। याहि याहीति यास्यति। अयासीत्। अधीष्वाधी-ष्वेत्यधीते। एवमन्यत्रापि। ध्वविषये प्राग्वत्। पक्षे अधीध्वमधी-ध्वमिति यूयमधीध्वे॥

भाषा—पौनःपुन्य नाम वारंवार अर्थके विषै तथा भृशार्थ नाम अतिशयअर्थके विषै धातुसे समस्त लकारोंके विषयमें लोट् लकार होता है और उस लोट्‌स्थानमें हि और स्वप्रत्यय होय समस्त तप् आदिक वचनोंके विषयमें और तध्वं इन वचनोंके विषयमें हि स्व यह वचन विकल्पकरके होंय। भाव यह है कि जहां वारंवार वा अतिशय अर्थ होवे वहां समस्त लकारोंके होनेके विषयमें लोट् लकार होय और लोट्‌के सकल पुरुषवचन होनेके विषयमें कर्ता अर्थके विषै परस्मैपद धातुओंसे हिवचन होय और तवचनमें विकल्पकरके होय। और भाव तथा कर्म और कर्ता इन अर्थोंके विषै आत्मनेपद धातुओंसे स्ववचन होय और ध्वंवचनमें विकल्पकरके होय। क्रियासमभिहारमें अर्थात् क्रियाके वारंवार तथा अतिशय अर्थमें उस लोडन्त क्रियाको द्वित्व होय और जिस धातुसे सकल लकार विषयमें लोट् हुआ है उस धातुकाही लकार पुरुषवचनानुसार कालपुरुषवचनकी प्रकटताके लिये लोडन्तके पश्चात् प्रयोग करने योग्य है। उदाहरण—याहि याहीति याति यातः यान्ति। याहि याथ याथ। इसमें वारंवार तथा अतिशयअर्थ विद्यमान है इस कारण समस्त लकारोंके समस्त पुरुषवचनोंके स्थानमें कर्ताअर्थके विषै परस्मैपदि याधातुसे हि वचन कर इसी हिप्रत्ययान्तको द्वित्व किया है पश्चात् वर्तमानकालके प्रथमपुरुषके प्रथमवचनकी प्रकटताके लिये उस याधातुका वर्तमानकालके प्रथमपुरुषके प्रथमवचनानुसार याति ऐसा प्रयोग किया है। इसी प्रकार शेष उदाहरण जानने। 'यात यातेति यूयं याथ' इसमें समस्त लकारोंके समस्त पुरुषवचनोंके स्थानमें कर्ताअर्थके विषै परस्मैपदी याधातुसे लोट्‌का तवचन कर इसी तप्रत्ययान्तको द्वित्व किया है पश्चात् वर्तमानकालके मध्यमपुरुषके बहुवचनकी प्रकटताके लिये याथ ऐसा प्रयोग किया है। याहि याहि इसके

पश्चात् लट्लुङ्के प्रथमपुरुषके प्रथमवचनकी प्रकटताके लिये । यास्यति । अयासीत् । ऐसे प्रयोग किये हैं । 'अधीष्वाधीष्व' इसमें समस्त लकारोंके समस्त पुरुषवचनोंके स्थानमें कर्त्ताअर्थके विषे आत्मनेपदी इङ्धातुसे लोट्का स्ववचन कर इसी स्वप्रत्ययान्तको द्वित्व किया है पश्चात् वर्त्तमानकालके प्रथमपुरुषके प्रथमवचनकी प्रकटताके लिये अधीते ऐसा प्रयोग किया है । इसी प्रकार अन्य जगहभी जानना । 'अधीध्वमधीध्वम्' इसमें कर्त्ताअर्थके विषे आत्मनेपदी इङ्धातुसे समस्त लकारोंके; समस्त पुरुषवचनोंके स्थानमें लोट्का ध्वं वचन हुआ है । पश्चात् वर्त्तमानके मध्यमपुरुषके वहुवचनकी प्रकटताके लिये अधीध्वे यह प्रयोग किया है । भावमें । भूयस्व भूयस्व भूयते । कर्ममें । पच्यस्व पचस्वेति पच्यते । इत्यादिक जानने ॥

अनेकक्रियासमुच्चये वा लोट् तस्य हिस्वौ तध्वमोर्विषये वा हिस्वौ ॥ ६०० ॥ समानार्थस्य धातोरनुप्रयोगात्तिबादयः ॥ सक्तून् पिब धानाः खादेत्यभ्यवहराति । पिबत खादतेत्यभ्यवहरथ । अन्नं भुङ्क्ष्व दधिकमास्वादस्वेत्यभ्यवहरते । भुंग्ध्वमास्वादध्वमित्यभ्यवहरध्वे ॥

इत्याख्यातप्रक्रिया ।

भाषा–एक कर्त्ता है जिनका ऐसी अनेकक्रियाओंके समुच्चय नाम इकट्ठे होनेमें धातुसे विकल्पकरके लोट् होय और उस लोट् लकारके समस्त पुरुषवचनोंके विषयमें हि स्व यह वचन होय और तं ध्वं इन वचनोंके विषे हि स्व यह वचन विकल्पकरके होय । और उन लोडन्त अनेक क्रियाओंके पश्चात् उन अनेकक्रियाओंके समान अर्थवाले धातुके प्रयोगसे तिप् आदिक प्रत्यय होय । उदाहरण–सक्तून् पिब धानाः खादेत्यभ्यवहराति । इसमें एक कर्त्ताके साथ अनेक क्रियाओंका समुच्चय है इस कारण समस्त लकारोंके समस्त पुरुषवचनोंके स्थानमें विकल्पकरके लोट्का हिवचन परस्मैपदि 'पा पाने' धातु तथा खाद्धातुसे किया है । कालपुरुषवचनकी प्रकटताके लिये पा खाद् इन दोनोंके समानअर्थवाला अभ्यवहृधातुका पश्चात् । प्रयोग किया है । 'पिवत खादतेत्यभ्यवहरथ' इसमें समस्त लकारोंके समस्त पुरुषवचनोंके स्थानमें विकल्पकरके लोट्का त वचन परस्मैपदि पा खाद् इन धातुओंसे किया है पश्चात् वर्त्तमानकालके मध्यमपुरुषके वहुवचनके प्रकट करनेके लिये अभ्यवहृधातुका पश्चात् प्रयोग किया है । 'अन्नं भुंक्ष्व दाधिकमास्वादस्वेत्यभ्यवहरते' इसमें समस्त लकारोके समस्त पुरुषवचनोंके स्थानमें विकल्पकरके लोट्का स्ववचन आत्मनेपादि भुजधातु और आस्वादधातुसे किया है ।

पश्चात् वर्तमानकालके प्रथमपुरुषके बहुवचनके प्रकट करनेके लिये समानार्थ अस्धातुका पश्चात् प्रयोग किया है । 'भुङ्क्ष्वमास्वादस्वमित्यभ्यवहरध्वे' इसमें समस्त लकारोंके समस्त पुरुषवचनोंके स्थानमें विकल्पकरके लोटेकवचन आत्मनेपदि भुज आस्वाद इन दोनों धातुओंसे किया है पश्चात् वर्तमानकालके मध्यम पुरुषके बहुवचनके प्रकट करनेके लिये समानार्थ अभ्यवहृधातुका पश्चात् प्रयोग किया है ॥

प्रज्ञामीदृग्वचास्मिन्नन्यथा कथितं मया ।
शोध्यं विशेषणज्ञाताद्विकटाद्रिस्थविष्णुना ॥
मगनसेनात्मजश्रीकाशिरामेण भाषया ।
चन्द्रिकोत्तरार्द्धवृत्ती कृतमाख्यातसाधनम् ॥ १० ॥

इति श्रीरामाश्रमप्रणीतसिद्धान्तचन्द्रिकायामुत्तरार्द्धवृत्तौ 'श्रीपाठकमगनसेनात्मजकाशिरामविरचितलोकोपकारिभाषाटीकायामाख्यातप्रकरणं समाप्तम् ।

अथ कृदन्तप्रकरणम् ।

कृत्कर्तरि ॥६०१॥ वक्ष्यमाणाः प्रत्ययाः कृत्संज्ञकास्ते च कर्तरि भवंति ॥

प्रणिपत्य हृषीकेशं वाङ्मनोभिरगोचरम् । कुर्वे चन्द्रिकोत्तरार्द्धे भाषायां कृत्प्रकाशिकाम् ॥

भाषा—अगाडी जो कि प्रत्यय कहे जावेंगे वह कृत्संज्ञक हैं और कर्ताके विषे होवे हैं ॥

तृण्वुणौ ॥ ६०२ ॥ धातोः ॥ पक्ता ॥

भाषा—धातुसे कर्तामर्थमें तृ वुण् यह प्रत्यय होय । उदाहरण—पचधातुसे कर्तामर्थमें तृप्रत्यय करनेपर 'चोः कुः' इसकर स्थित हुआ पक्तृ फिर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' इसकर नामसंज्ञा होनेपर 'सेरा' इसकर सिद्ध हुआ । पक्ता ॥

कृतः ॥६०३॥ वसादेः कृत इट् ॥ कुटिता । एधते इति एधिता ॥

गोपायिता गोपिता गोप्ता । सहिता सोढा । पापिता पप्ता ॥

भाषा—धातुसे परे वसप्रत्याहार आदिवाले कृत्प्रत्ययको इट् आगम होय । उदाहरण—एधधातुसे कर्तामर्थमें तृप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको सेट् होनेसे वसप्रत्याहार आदिवाले तृप्रत्ययको इट् करनेपर नामसंज्ञामें 'सेरा' इसकर सिद्ध हुआ । एधिता । कुट्धातुसे कर्तामर्थमें तृप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको सेट्

१ अनेकक्रियासमुच्चये वा लोट् । इसका उदाहरण इस कल्पोक्तश्लोकमें समझ लेना । पुरीमवस्कन्द लुनीहि नन्दनं मुषाण रत्नानि हरामराङ्गनाः । विगृह्य चक्रे नमुचिद्विषा बली य इत्थमस्वास्थ्यमहर्निशं दिवः ॥

होनेसे तृप्रत्ययको इट् किया पश्चात् 'कुटादेर्ङिणद्वर्जः प्रत्ययो ङित्' इसपर तृप्रत्ययकी ङित्संज्ञा होनेसे धातुको गुण नहीं हुआ। नामसंज्ञामें 'सेरा' इसकर सिद्ध हुआ। कुटिता। गुप्धातुसे कर्त्ताअर्थमें तृप्रत्यय करनेके अनन्तर 'आयः' इसकर अनप्विषयमें विकल्पकरके आय करनेसे नित्य इट् करनेपर स्थित हुआ गोपायितृ फिर नामसंज्ञामें 'सेरा' इसकर सिद्ध हुआ। गोपायिता। और जहां आयप्रत्यय नहीं हुआ तहां 'ऊदितो वा' इसकर एक जगह तृप्रत्ययको इट् किया तहां नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ। गोपिता। और जहां इट् नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ। गोप्ता। 'सहते' इस विग्रहमें सहधातुसे तृप्रत्यय करनेके अनन्तर इट्पक्षमें नामसंज्ञाके विषै सिद्ध हुआ। सहिता। और 'इषुसहलुभरुषरिषामनापि तस्येड्वा' इसकर जहां इट् नहीं हुआ तहां 'हो ढः, तथोर्धः, ष्टुभिः०, ढि ढो लोपो दीर्घश्च, सहिवहोरोदवर्णस्य' इनकर सिद्ध हुआ। सोढा। इषुधातुसे तृप्रत्यय करनेके अनन्तर इट्पक्षमें सिद्ध हुआ। एषिता। और अनिट्पक्षमें सिद्ध हुआ। एष्टा॥

युवोरनाकौ ॥ ६०४ ॥ पाचकः। भावकः। आतो युक्। दायकः। घातकः। जनकः। घटकः। दरिद्रायकः। कोटकः। शमकः। नियामकः॥

भाषा—युप्रत्ययको अन और वुप्रत्ययको अक आदेश होय। उदाहरण—'पचति, पाचयति' इस विग्रहमें केवल पच वा णिप्रत्ययान्त पाचिधातुसे वुणप्रत्यय करनेके अनन्तर प्रत्ययको णित् होनेसे 'अत उपधायाः' इसकर वृद्धि की फिर वुण्को अकआदेश करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ। पाचकः। और जहां णिप्रत्ययान्त पाचिसे वुण् प्रत्यय हुआ तहां 'णेः' इसकर णिप्रत्ययका लोप किया तदनन्तर वुण्को अक आदेश करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ। पाचकः। भूधातुसे कर्त्ताअर्थमें वुण्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। भावकः। 'ददाति' इस विग्रहमें डुदाञ्धातुसे वुण् करनेके अनन्तर 'आतो युक्' इसकर युक् आगम किया तब रूप सिद्ध हुआ। दायकः। 'हन्ति' इस विग्रहमें हन्धातुसे वुण्प्रत्यय करनेके अनन्तर 'हनो घत्' इसकर हन्को घत् आदेश किया फिर 'अत उपधायाः' इसकर सिद्ध हुआ। घातकः। 'जनयति' इस विग्रहमें ण्यन्त जनिधातुसे वुण्प्रत्यय करनेपर 'जनिवध्योर्न वृद्धिः, णेः' इनकर सिद्ध हुआ। जनकः। 'घटयति' इस विग्रहमें घटधातुसे णिप्रत्यय कर 'मितां ह्रस्वः' इसकर ह्रस्व कर पश्चात् वुण्प्रत्यय करनेपर 'णेः' इसकर णिप्रत्ययका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ। घटकः। 'दरिद्राति' इस विग्रहमें दरिद्राधातुसे वुण्प्रत्यय करनेके अनन्तर 'आतो युक्' इसकर सिद्ध हुआ। दरिद्रायकः। कुटधातुसे वुण्प्रत्यय

करनेपर सिद्ध हुआ। कोटकः। इसमें णिप्रत्यय पर होनेसे 'उपधाया लघो' इसकर गुण हुआ है। 'शाम्यति' इस विग्रहमें शमधातुसे वुण्प्रत्यय करनेके अनन्तर सेट् होनेसे 'मान्तस्य सेटो न वृद्धिरिणि ञ्णिति कृति च' इसकर वृद्धि न होनेपर सिद्ध हुआ। शमकः। 'नियच्छति' इस विग्रहमें निपूर्वक यमधातुसे वुण्प्रत्यय करनेपर अनिट् होनेसे वृद्धि होनेपर सिद्ध हुआ। नियामकः॥

क्रमेः कर्तर्यात्मनेपदविषयात्क्तृन इण्न ॥ ६०५ ॥ प्रक्रन्ता ॥

भाषा—आत्मनेपदविषयक क्रमधातुसे परे कर्त्ताअर्थमें तृप्रत्ययको इट् नहीं होय। उदाहरण— प्रोपाभ्यां प्रारम्भार्थाभ्याम्० ' इसकर प्रउपसर्गके पूर्व होनेसे क्रमधातुको आत्मनेपद होता है इस कारण प्रउपसर्ग पूर्व युक्त कर क्रमधातुसे तृप्रत्ययको इट् न होनेसे सिद्ध हुआ। प्रक्रन्ता॥

नाम्युपधात्कः ॥ ६०६ ॥ क्षिप । बुध । वृत ॥

भाषा—नामिसंज्ञक स्वर है उपधारूप जिसका ऐसे धातुसे कर्त्ताअर्थमें कप्रत्यय होय। कप्रत्ययमें ककार इत्संज्ञक है। उदाहरण—क्षिपधातुमें उपधारूप नामिस्वर इकार है इस कारण क्षिपधातुसे कर्त्ताअर्थमें कप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। क्षिपः। इसी प्रकार बुध, वृत इन धातुओंसे कप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। बुधः। वृतः। इनमें किप्रत्यय पर होनेसे गुण नहीं हुआ है॥

प्रीकृज्ञाभ्यश्च ॥ ६०७ ॥ नुधातो । प्रियः । किरः । ज्ञः ॥

भाषा—प्री, कृ, ज्ञा इन धातुओंसेभी कर्त्ताअर्थमें कप्रत्यय होय। उदाहरण— 'प्रीणाति' इस विग्रहमें प्रीधातुसे कप्रत्यय करनेके अनन्तर 'नुधातो' इसकर ईकारको इय् करनेसे सिद्ध हुआ। प्रियः। 'किरति' इस विग्रहमें कधातुसे कप्रत्यय करनेपर 'ऋत इर्' इसकर सिद्ध हुआ। किरः। जानाति इस विग्रहमें ज्ञाधातुसे कप्रत्यय करनेपर 'आतोऽनापि' इसकर आकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ। ज्ञः॥

उपसर्गे आदन्तात् ॥ ६०८ ॥ प्रदः । सुग्लः ॥

भाषा—उपसर्ग पूर्वपद हुए संते आकारान्तधातुसे कर्त्ताअर्थमें कप्रत्यय होय। उदाहरण—' प्रददाति ' इस विग्रहमें प्रउपसर्ग पूर्व डुदाञ्धातुसे कप्रत्यय करनेके अनन्तर 'आतोऽनापि' इसकर सिद्ध हुआ। प्रदः। 'सुग्लायति' इस विग्रहमें सुग्लाधातुसे कप्रत्यय करनेपर 'आतोऽनापि' इसकर सिद्ध हुआ। सुग्लः॥

पचिनन्दिग्रहादेरयुणिनि ॥ ६०९ ॥ पचादेरच् । नन्द्यादेर्युः । ग्रहादेर्णिनि । पचः । पठः । चरः । वदः । चरः ॥

भाषा-डुपचष् आदिक धातुओंसे कर्त्ताअर्थमें अप्रत्यय और टुणदि आदिक धातुओंसे कर्त्ताअर्थमें युप्रत्यय और ग्रहआदिक धातुओंसे कर्त्ताअर्थमें णिन् प्रत्यय होय । उदाहरण-डुपचष्, वद, चल, पत्ल, चर इन धातुओंसे कर्त्ताअर्थमें अप्रत्यय करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुए । पचः । वदः । इत्यादिक ॥

चरिचलिपतिवदीनां वा द्वित्वं पूर्वस्यागप्रत्यये ॥ ६१० ॥

चराचरः । चलाचलः । पतापतः । वदावदः ॥

भाषा-चर्, चल्, पत्, वद् इनको अप्रत्यय पर हुए संते विकल्पकरके द्वित्व होय और द्वित्व होनेपर पूर्वरूपको आक् आगम होय । उदाहरण-चरधातुसे कर्त्ताअर्थमें अप्रत्यय करनेके अनन्तर एक जगह द्वित्व करनेपर पूर्वरूपको आक् आगम किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । चराचरः । इसमें आगमकी दीर्घताके सामर्थ्यसे ' ह्रस्वः ' इसकर ह्रस्व और ' पूर्वस्य हसादिः शेषः ' इसकर आदि हस शेष नही होता है इसी प्रकार । चलाचलः । इत्यादिक सिद्ध हुए जानने ॥

हन्तेर्हस्य घत्वं च ॥ ६११ ॥ घनाघनः ॥

भाषा-हन्धातुको अप्रत्यय पर हुए संते द्वित्व होय और द्वित्व होनेपर पूर्वरूपके हकारको घकार और आक् आगम होय । उदाहरण-हन्धातुसे कर्त्ताअर्थमें अप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको द्वित्व किया पश्चात् पूर्वको आक् आगम तथा पूर्वके हकारको घकार किया फिर ' पूर्वाद्धन्तेर्हस्य घः ' इसकर पररूपके हकारको घकार करनेसे नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । घनाघनः ॥

पाटेर्ञिलुक् चोक् च दीर्घश्च पूर्वस्य ॥ ६१२ ॥ पाटूपटः । हनः ।

पाटः । नन्दनः । वामनः । क्रमणः । दूषणः । साधनः । वर्द्धनः । शोभनः । रोचनः । रावणः । सहनः । तपनः । दमनः । जल्पनः । लवणः । णत्वं निपात्यम् । कोचनः । कुच शब्दे चुरादिः । म्लेच्छ अव्यक्ते शब्दे । म्लेच्छनः । ग्राही । उत्साही । उद्भासी । स्थायी । मायी । मंत्री । अयाची । अवाची । अपराधी ॥

भाषा-पाटिधातुसे समत्यय पर हुए संते ञिप्रत्ययका लुक् होय और धातुको द्वित्व होय और द्वित्व होनेपर पूर्वरूपको ऊक् आगम तथा दीर्घ होय । उदाहरण-ञिप्रत्ययान्त पाटिधातुसे कर्त्ताअर्थमें अप्रत्यय करनेके अनन्तर ञिप्रत्ययका लुक् होनेसे ' लुकि न तन्निमित्तम् ' इसकर उपधाकी वृद्धि निवृत्त होनेपर रूप स्थित हुआ पट्-अ फिर द्वित्व करनेके पश्चात् पूर्वको ऊक् और दीर्घ करनेसे नामसंज्ञामें

रूप सिद्ध हुआ । पाटूपट' और जहां इन् पाटिधातुसे अच्प्रत्यय करनेपर द्वित्व नहीं हुआ वहां सिद्ध हुआ । इन' । पाटः । ' नन्दयति ' इस विग्रहमें णिप्रत्ययान्त नन्दिधातुसे युप्रत्यय करनेपर ' युवोरनाकौ ' इसकर युको अन आदेश किया फिर ' णे ' इसकर णिप्रत्ययका लोप किया तब नामसंज्ञामें रूप सिद्ध हुआ । नन्दन' । ' वासयति ' इस विग्रहमें णिप्रत्ययान्त वासिधातुसे युप्रत्यय करनेके अनन्तर ' णे ' इसकर णिप्रत्ययका लोप किया तब नामसंज्ञामें रूप सिद्ध हुआ । वासन' । ' दूषयति ' इस विग्रहमें णिप्रत्ययान्त दूषिधातुसे युप्रत्यय करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । दूषण ' साध्यति, साधयति ' इन विग्रहमें केवल साधधातुसे तथा णिप्रत्ययान्त साधिसे युप्रत्यय करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । साधन' । 'वधते । शोभते । रोचते ' इन विग्रहमें क्रमसे वृध, शुभ, रुच इन धातुओंसे युप्रत्यय करनेके अनन्तर सिद्ध हुए । वर्द्धन । शोभन' । रोचन । ' रावयति ' इस विग्रहमें रावधातुसे युप्रत्यय करनेके अनन्तर सिद्ध हुआ । रावण' । ' सहते ' इस विग्रहमें सहधातुसे युप्रत्यय करनेके अनन्तर सिद्ध हुआ । सहनः । ' तप्यते ' इस विग्रहमें तपधातुसे युप्रत्यय करनेके अनन्तर सिद्ध हुआ । तपन' । ' दाम्यति । जल्पति । क्रोधति । म्लेच्छति ' इन विग्रहमें दम्, जल्प्, क्रुध, म्लेच्छ इन धातुओंसे युप्रत्यय करनेके अनन्तर सिद्ध हुए । दमन' । जल्पन । क्रोधन । म्लेच्छन' । ' लुनाति ' इस विग्रहमें लूञ्धातुसे युप्रत्यय करनेके अनन्तर युको अन आदेश करनेपर निपातसे नकारको णकार करनेसे सिद्ध हुआ । लवणः । ' गृह्णाति ' इस विग्रहमें ग्रहधातुसे णिन् प्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ ग्रह इन् प्रत्ययके आदिके चवर्ग टवर्ग इत्संज्ञक होते हैं फिर ' अत उपधाया ' इसकर स्थित हुआ ग्राहिन् फिर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । ग्राही । ' उत्सहते ' इस विग्रहमें उत्पूर्व सहधातुसे णिन्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । उत्साही । इसी प्रकार सिद्ध हुआ । उद्भासी । ' तिष्ठति ' इस विग्रहमें स्थाधातुसे णिन्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' आतो युक् ' इसकर युक् आगम किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । स्थायी । ' मिमीते ' इस विग्रहमें माङ्धातुसे णिन्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' आतो युक् ' इसकर युक् आगम हुआ तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । मायी । मन्त्रिधातुसे णिन्प्रत्यय करनेके अनन्तर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । मन्त्री । ' न याचते ' इस विग्रहमें नञ्पूर्व याच धातुसे णिन्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । अयाची । इसी प्रकार नञ्पूर्व व्याधातुसे णिन्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ अव्याधी । ' अपराध्यति ' इस विग्रहमें अपपूर्व राधधातुसे णिन्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । अपराधी ॥

दृशादे श ॥ ६१२ ॥ दृग्पाघ्राध्माधेड्भ्यः श ॥

रूप सिद्ध हुआ। पाटूपद और जहां इन् पाटिधातुसे अप्रत्यय करनेपर द्वित्व नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ। इन'। पाटः। ' नन्दयति ' इस विग्रहमें णिप्रत्ययान्त नन्दिधातुसे युप्रत्यय करनेपर ' युवोरनाकौ ' इसकर युको अन आदेश किया फिर ' णे ' इसकर णिप्रत्ययका लोप किया तब नामसंज्ञाम रूप सिद्ध हुआ। नन्दन'। ' वामयति ' इस विग्रहमें णिप्रत्ययान्त वामिधातुसे युप्रत्यय करनेके अनन्तर ' णे ' इसकर णिप्रत्ययका लोप किया तब नामसंज्ञामें रूप सिद्ध हुआ। वामनः। दूषयति ' इस विग्रहमें णिप्रत्ययान्त दूषिधातुसे युप्रत्यय करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ। दूषण ' साध्याति, साधयति ' इन विग्रहमें केवल साध्धातुसे तथा णिप्रत्ययान्त साधिसे युप्रत्यय करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ। साधनः। वर्धते। शोभते। रोचते ' इन विग्रहमें क्रमसे वृध्, शुभ् रुच् इन धातुओंसे युप्रत्यय करनेके अनन्तर सिद्ध हुए। वर्द्धन। शोभनः। रोचन'। ' रावयाते ' इस विग्रहमें रामिधातुसे युप्रत्यय करनेके अनन्तर सिद्ध हुआ। रावणः। ' सहते ' इस विग्रहमें सहधातुसे युप्रत्यय करनेके अनन्तर सिद्ध हुआ। सहन'। ' तप्यते ' इस विग्रहमें तपधातुसे युप्रत्यय करनेके अनन्तर सिद्ध हुआ। तपनः। ' दाम्यति। जल्पति। क्रोधति। म्लेच्छति ' इन विग्रहमें दम्, जल्प्, क्रुध्, म्लेच्छ इन धातुओंसे युप्रत्यय करनेके अनन्तर सिद्ध हुए। दमन'। जल्पन'। क्रोधनः। म्लेच्छन'। ' लुनाति ' इस विग्रहमें लूञ्धातुसे युप्रत्यय करनेके अनन्तर युको अन आदेश करनेपर निपातसे नकारको णकार करनेसे सिद्ध हुआ। लवण'। गृह्णाति ' इस विग्रहमें ग्रहधातुसे णिन् प्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ ग्रह इन् प्रत्ययके आदिके चवर्ग टवर्ग इत्संज्ञक होते हैं फिर ' अत उपधाया इसकर स्थित हुआ ग्राहिन् फिर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ। ग्राही। ' उत्सहते ' इस विग्रहमें उत्पूर्व सहधातुसे णिन्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। उत्साही। इसी प्रकार सिद्ध हुआ। उद्दासी। ' तिष्ठति ' इस विग्रहमें स्थाधातुसे णिन्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' आतो युक् ' इसकर युक् आगम किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ। स्थायी। ' मिमीते ' इस विग्रहमें माङ्धातुसे णिन्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' आतो युक् ' इसकर युक् आगम हुआ तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ। मायी। मन्त्रिधातुसे णिनप्रत्यय करनेके अनन्तर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ। मंत्री। ' न याचते ' इस विग्रहमें नञ्पूर्व याच धातुसे णिन्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। अयाची। इसी प्रकार नञ्पूर्व वच्धातुसे णिन्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ अवाची। ' अपराध्यति ' इस विग्रहमें अपपूर्व राध्धातुसे णिन्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। अपराधी॥

दृशादेः श ॥ ६१२ ॥ दृश्पाघ्राध्माधेट्भ्य श' ॥

भाषा—दृश्, पा, घ्रा, ध्मा, धेट् इन धातुओंसे कर्त्ताअर्थमें शप्रत्यय होय । इसमें शकारकी इत्संज्ञा है ॥

शिति चतुर्वत् ॥ ६१४ ॥ चतुर्षु तिबादिषु यत्कार्यमुक्तं तच्छिति परे भवति ॥ पश्यः । धयः । धमः । जिघ्रः । पिबः । घ्रसंज्ञायां न । व्याघ्रः ॥

भाषा—तिप् आदिक चार लकारोंके विषैं जो कि कार्य कहा है वह कार्य शित्-प्रत्यय पर हुए संते होय । उदाहरण—दृश्धातुसे कर्त्ताअर्थमें शप्रत्यय करनेपर वह कार्य किया जो कि तिबादिक चार लकारोंमें 'दृशादेः पश्यादिः, अप् कर्त्तरि' इनकरके हुआ है तब दृश्धातुको पश्य आदेश किया और अप् किया तब रूप स्थित हुआ पश्य-अ फिर 'अदे' इसकर अकारका लोप करनेपर नामसंज्ञामे रूप सिद्ध हुआ । पश्यः । 'पिबति' इस विग्रहमे पाधातुसे शप्रत्यय करनेके अनन्तर पाको पिब आदेश किया अप् किया पश्चात् 'अदे' इसकर अकारका लोप किया तब रूप सिद्ध हुआ । पिबः । 'जिघ्रति' इस विग्रहमें घ्राधातुसे शप्रत्यय करनेके अनन्तर तिबादिक चार लकारोंका कार्य करनेसे रूप सिद्ध हुआ । जिघ्रः । 'धमति' इस विग्रहमें ध्माधातुसे शप्रत्यय करनेके अनन्तर तिबादिक चार लकारोंका कार्य करनेसे रूप सिद्ध हुआ । धमः । 'धयति' इस विग्रहमें धेट्धातुसे शप्रत्यय करनेके अनन्तर तिबादिक चार लकारोंका कार्य करनेपर रूप सिद्ध हुआ । धयः । संज्ञा वाच्य हुए संते घ्राधातुसे शप्रत्यय नहीं होय । उदाहरण—'विशेषेण जिघ्रति' इस विग्रहमें घ्राधातुसे संज्ञा वाच्य होनेपर 'उपसर्गे आदन्तात्' इसकर कप्रत्यय करनेपर 'आतोऽनपि' इसकर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । व्याघ्रः ॥

अनुपसर्गेभ्यो लिम्पविन्दधारिपारिवेद्युदेजिचेतिसातिसाहिभ्यः शः ॥६१५॥ लिम्पः । विन्दः । धारयः । पारयः । वेदयः । उदेजयः । चेतयः । सातिः सुखे । सातयः । साहयः ॥

भाषा—नहीं है उपसर्ग पूर्व जिनसे ऐसे लिम्प, विन्द, धारि, पारि, वेदि, उदेजि, चेति, साति, साहि इन धातुओंसे कर्त्ताअर्थमें शप्रत्यय होय । उदाहरण—तुदादि 'लिप उपदेहे' धातुसे कर्त्ताअर्थमें शप्रत्यय करनेके अनन्तर तिबादिक चार लकारोंका कार्य 'तुदादेरः, मुचादेर्मुम्' इनकर किया तब रूप सिद्ध हुआ । लिम्पः । 'विन्दति' इस विग्रहमें 'विद्लृ लाभे' धातुसे शप्रत्यय करनेपर तिबादिक चार लकारोंका कार्य करनेसे नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । विन्दः । 'धारयति' इस विग्रहमें ञिप्रत्ययान्त धारिधातुसे शप्रत्यय करनेके अनन्तर

धारयः । ' पार कर्मसमाप्तौ ' चुरादि वा णिप्रत्ययान्त पारिधातुसे शप्रत्यय करनेके अनन्तर सिद्ध हुआ । पारय । विद चुरादि धातु वा णिप्रत्ययान्त वेदिधातुसे शप्रत्यय करनेके अनन्तर सिद्ध हुआ । वेदय । उदूपूर्वक णिप्रत्ययान्त एजिधातुसे शप्रत्यय करनेके अनन्तर सिद्ध हुआ । उदेजय । चित चुरादिधातुसे शप्रत्यय करनेके अनन्तर सिद्ध हुआ । चेतय । सातिधातु सुखअर्थमें वर्ते है और सौत्र है । सातिधातुसे शप्रत्यय करनेके अनन्तर सिद्ध हुआ । सातय । चुरादि ' षह मर्षणे ' धातु वा णिप्रत्ययान्त साहिधातुसे शप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । साहय ॥

नौ लिम्पे ॥ ६१६ ॥ निलिम्पा देवाः ॥

भाषा–निउपसर्ग उपपद हुए संते लिम्पधातुसे शप्रत्यय होय । उदाहरण– ' निलिम्पति ' इस विग्रहमें निउपसर्ग पूर्व लिपधातुसे शप्रत्यय करनेके अनन्तर विभादिक चार लकारोंका कार्य ' मुदादेरः, मुचादेर्मुम् ' इनका होनेसे नामसज्ञामें सिद्ध हुआ । निलिम्पा ॥

गवादिषु विन्देस्सञ्ज्ञायाम् ॥ ६१७ ॥ गोविन्द । अरविन्दम् ॥

भाषा–सञ्ज्ञा वाच्य होनेपर गोआदिक शब्द पूर्वपद हुए संते विन्दधातुसे शप्रत्यय होय । उदाहरण–' गां विन्दति । अरान् विन्दते ' इस विग्रहमें गोआदिक शब्द पूर्वपद हैं इस कारण विद्लृधातुसे शप्रत्यय करनेके अनन्तर तिबादि चार लकारोंका कार्य करनेसे रूप सिद्ध हुए । गोविन्द. । अरविन्दम् ॥

दाञ्धाञोर्वा ॥ ६१८ ॥ दद । दध ॥

भाषा–नहीं है पूर्व उपसर्ग जिनके ऐसे दाञ्, धाञ् इन धातुओंसे कर्ता अर्थमें विकल्पकरके शप्रत्यय होय । उदाहरण–' ददाति । दधाति ' इस विग्रहमें डुदाञ् डुधाञ् इन धातुओंसे एक जगह शप्रत्यय करनेके अनन्तर ' ह्वादेर्द्विश्च ' इसकर द्वित्व करनेपर ' दादे०' इसकर आकारका लोप किया तब रूप सिद्ध हुए । ददः । दध । और एक जगह ज्वलादेर्णः इसकर णप्रत्यय करनेपर ' आतो युक् ' इसकर युक् आगम किया पश्चात् नामसज्ञामें सिद्ध हुए । दाय । धाय । और उपसर्ग पूर्व होनेसे कप्रत्यय होता है ।

ज्वलादेर्णः ॥ ६१९ ॥ ज्वाल । ताप ॥

भाषा–नहीं है उपसर्ग पूर्व जिनसे ऐसे ज्वल आदिक धातुओंसे विकल्पकरके णप्रत्यय होय कर्ताअर्थमें । उदाहरण–' ज्वलति ' इस विग्रहमें ज्वलधातुसे णप्रत्यय करनेके अनन्तर अत उपधायाः ' इसकर उपधाको वृद्धि किया पश्चात् नामसज्ञामें सिद्ध हुआ । ज्वालः । इसी प्रकार तपधातुसे णप्रत्यय करनेपर सिद्ध

हुआ । तापः । और जहां णप्रत्यय नहीं हुआ तहां 'पचादेः' इसकर अप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । ज्वलः । तपः ॥

श्यादेश्च ॥ ६२० ॥ अवश्यायः । दायः । धायः ॥

भाषा-श्यादिक धातुओंसेभी कर्त्ताअर्थमें णप्रत्यय होय । उदाहरण-अवश्यायः । इत्यादिक ॥

कार्य्येऽण् ॥ ६२१ ॥ कर्मण्युपपदे धातोरण् ॥ कुम्भकारः ॥

भाषा-कर्मसंज्ञक पद पूर्व हुए संते धातुमात्रसे कर्त्ताअर्थमें अण्प्रत्यय होय । उदाहरण-'कुंभं करोति' इस विग्रहमें कर्मसंज्ञक कुम्भशब्द पूर्वपद है इस कारण कृञ्धातुसे अण्प्रत्यय करनेपर 'धातोर्नामिनः' इसकर वृद्धि किया फिर कृदन्त शब्दका र परे प्रयुज्यमान होनेसे कर्मसंज्ञिक कुम्भशब्दमे 'कर्त्तृकार्य्ययोरक्तादौ कृति षष्ठी' इसकर षष्ठी विभक्ति की फिर 'नाम्नश्च कृना समासः' इसकर 'कुम्भस्य कारः' इसका समास करनेपर नामसंज्ञामे सिद्ध हुआ । कुम्भकारः । गंगाधर भूधर आदिकोंके विषैं अण्प्रत्यय नहीं हुआ है पदसंस्कारपक्षमें 'धरतीति' इस विग्रहमें धृञ्धातुसे अप्रत्यय किया है 'शेषे कृति वा' इसकर कर्ममें जो कि षष्ठी होती है तदन्तकर समास होता है । 'गंगाया धरः' इस विग्रहमें समास करनेपर सिद्ध हुआ । गंगाधरः ॥

ह्वावामाभ्यश्च ॥ ६२२ ॥ स्वर्गह्वायः । तंतुवायः । धान्यमायः ॥

भाषा-कर्मसंज्ञक शब्द पूर्वपद हुए संते ह्वेञ्, वेञ्, माङ् इन धातुओंसे अण्प्रत्यय होय न कि डप्रत्यय । उदाहरण-स्वर्गं ह्वयति' इस विग्रहमें कर्मसंज्ञक स्वर्गशब्द पूर्वपद है इस कारण ह्वेञ्धातुसे अण्प्रत्यय करनेके अनन्तर समास करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । स्वर्गह्वायः । 'तंतुं वयति' इस विग्रहमे कर्मसंज्ञक तन्तुशब्द पूर्वपद है इस कारण वेञ्धातुसे अण्प्रत्यय करनेके अनन्तर समास करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । तन्तुवायः । 'धान्यं मिमीते' इस विग्रहमें माङ्धातुसे अङ्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । धान्यमायः ॥

शीलिकामिभक्ष्याचरिक्षमीक्षिभ्यो णः ॥ ६२३ ॥ मांसशीला । मांसकामा । मांसभक्षा । कल्याणाचारा । सुखप्रतीक्षा । बहुक्षमा ॥

भाषा-शील, कमु, भक्ष, आङ्पूर्व चर, क्षमूष्, ईक्ष धातु इनसे णप्रत्यय होय । उदाहरण-' मासं शीलति ' इस विग्रहमें शीलधातुसे णप्रत्यय करनेके अनन्तर 'आबतः स्त्रियाम्' इसकर स्त्रीलिंगमें आप्प्रत्यय करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ मांसशीला । 'मासं कामयते' इस विग्रहमें स्वार्थमें रचे हुए णिप्रत्यययुक्त कमि

धातुसे णप्रत्यय करनेके अनन्तर 'मे ' इसकर णिप्रत्ययका लोप किया तब स्त्रीलिंगमें रूप सिद्ध हुआ । मांसकामा । 'मांसं भक्षयति ' इसमें चुरादि भक्ष-धातुसे णप्रत्यय करनेपर स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । मांसभक्षा । 'कल्याणमाचरति ' इस विग्रहमें आङ्पूर्व चरधातुसे णप्रत्यय करनेपर ' अत उपधायाः ' इसकर वृद्धि किया तब स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । कल्याणाचारा । ' सुखं प्रतीक्षते ' इस विग्रहमें प्रतिपूर्व ईक्षधातुसे णप्रत्यय करनेपर स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । सुखप्रतीक्षा । ' बहून् क्षमते ' इस विग्रहमें क्षमूषधातुसे णप्रत्यय करनेपर स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । बहुक्षमा ॥

आतो ड ॥६२४॥ कर्मण्युपपदे आदन्ताड्‌ ॥ गोदः । धनदः । पार्ष्णित्रः ॥

भाषा—कर्मसंज्ञक शब्द उपपद हुए सते नहीं है उपसर्ग पूर्व जिसके ऐसे आकारान्तधातुसे डप्रत्यय होय । इसमें डकार इत्संज्ञक है । उदाहरण—' गां ददाति ' इस विग्रहमें कर्मसंज्ञक गोशब्द पूर्वपद है इस कारण उपसर्गहीन दाधातुसे डप्रत्यय करनेपर ' डिति टेः ' इसकर आकारका लोप करनेसे नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । गोदः । ' धनं ददाति ' इस विग्रहमें उपसर्गहीन दाधातुसे डप्रत्यय करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । धनदः । ' पार्ष्णि त्रायते ' इस विग्रहमें कर्मसंज्ञक पार्ष्णिशब्द पूर्वपद है इस कारण उपसर्गहीन त्रैङ्धातुसे डप्रत्यय करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । पार्ष्णित्रः । उपसर्ग पूर्व होनेसे आकारान्तधातुसे डप्रत्यय नहीं होय किन्तु अण्प्रत्यय होय । जैसे— गां संददाति ' इस विग्रहमें उपसर्ग पूर्व होनेसे दाधातुसे अण्प्रत्यय करनेपर ' आतो युक् ' इसकर युक् आगम किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । गोसंप्रदायः ॥

नाम्नि च ॥ ६२५ ॥ नाम्न्युपपदे धातोर्डः ॥ द्विजः । द्विपः । गृहस्थः । गिरिशः । पादपः ॥

भाषा—नाममात्र उपपद हुए सते धातुसे डप्रत्यय होय । उदाहरण—' द्वाभ्यां जायते ' इस विग्रहमें तृतीयाविभक्त्यर्थ नाम द्वि पूर्व युक्त है इस कारण जनधातुसे डप्रत्यय करनेपर ' डिति टेः ' इसकर टिका लोप किया तब समास करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । द्विजः । ' द्वाभ्यां पिबति ' इस विग्रहमें पाधातुसे डप्रत्यय करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । द्विपः । ' गिरौ शेते ' इस विग्रहमें सप्तमीविभक्त्यर्थ नाम गिरि पूर्व युक्त है इस कारण शीङ्धातुसे डप्रत्यय करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । गिरिशः । ' गृहे तिष्ठति ' इस विग्रहमें स्थाधातुसे डप्रत्यय करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । गृहस्थः । ' पादैः पिबति ' इस विग्रहमें

तृतीयाविभक्त्यर्थ नाम पाद पूर्व युक्त है इस कारण पाधातुसे डप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । पादपः ॥

शुचश्शू द्रे ॥ ६२६ ॥ शुचं द्रवतीति शूद्रः ॥

भाषा–शुचशब्दको शू आदेश होय द्र यह पर हुए संते । भाव यह है कि कर्म संज्ञक शुच्शब्द पूर्वपद होवे तौ द्रुधातुसे डप्रत्यय होय और शुच्के स्थानमें शू आदेश होय । उदाहरण–' शुचं द्रवति ' इस विग्रहमें द्रुधातुसे डप्रत्यय तथा शुच्के स्थानमें शू आदेश करनेपर रूप सिद्ध हुआ । शूद्रः ॥

उरसो लोपो मुम्वा डान्ते गमौ ॥ ६२७ ॥ उरगः उरंगः ॥

भाषा–डप्रत्यय है अन्तमें जिसके ऐसा गम्धातु पर हुए संते उरस्शब्दके सकारका लोप होय और विकल्पकरके मुम् आगम होय । उदाहरण–' उरसा गच्छति ' इस विग्रहमें ' नाम्नि च ' इसकर गम्धातुसे डप्रत्यय करनेपर समाससंज्ञा होनेके पश्चात् सकारका लोप और एक जगह मुम् आगम करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । उरंगः । और जहां मुम् आगम नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । उरगः ॥

विहायसो विहो मुम्वा डान्ते गमौ ॥ ६२८ ॥ विहगः विहङ्गः ॥

भाषा–डप्रत्ययान्त गम्धातु पर हुए संते विहायस्शब्दको विह आदेश होय और मुम् आगम होय । उदाहरण–' विहायसा गच्छति ' इस विग्रहमें गम्धातुसे डप्रत्यय करनेके अनन्तर ' नाम्नश्च कृता समासः ' इसकर संज्ञा होनेपर विहायस्के स्थानमें विह आदेश करनेपर जहां मुम् आगम हुआ तहां सिद्ध हुआ । विहङ्गः । और जहां मुम् आगम नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । विहगः ॥

भुजतुरयोर्मुम्वा ॥ ६२९ ॥ डान्ते गमौ ॥ भुजगः भुजङ्गः । तुरगः तुरङ्गः ॥

भाषा–डप्रत्ययान्त गम्धातु पर हुए संते भुज, तुर इन पूर्वपदोंको विकल्पकरके मुम् आगम होय । उदाहरण–' भुजेन गच्छति, तुरेण गच्छति ' इन विग्रहोंमें गम् धातुसे डप्रत्यय करनेके अनन्तर समाससंज्ञा होनेपर एक जगह मुम् आगम किया तहां सिद्ध हुआ । भुजङ्गः । तुरङ्गः । और जहां मुम् आगम नहीं हुआ तहां भुजगः । तुरगः ॥

सम्प्रसारणिभ्यो डः ॥ ६३० ॥ कापवादः ॥ प्रज्यः । प्राह्वः । प्रह्वः ॥

भाषा–जिन धातुओंको संप्रसारण होता है उन धातुओंसे डप्रत्यय होय । उदाहरण–ज्या, ह्वेञ् इन धातुओंको संप्रसारण होता है इस कारण कर्त्ताअर्थमें डप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । प्रज्यः । प्राह्वः । प्रह्वः ॥

धातुसे णप्रत्यय करनेके अनन्तर 'मे ' इसकर विप्रत्ययका लोप किया तब स्त्रीलिंगमें रूप सिद्ध हुआ । मांसभक्षा । ' मांसं भक्षयति ' इसमें चुरादि भक्ष धातुसे णप्रत्यय करनेपर स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । मांसभक्षा । 'कल्याणमाचरति ' इस विग्रहमें आङ्पूर्व चरधातुसे णप्रत्यय करनेपर ' अत उपधायाः ' इसकर वृद्धि किया तब स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । कल्याणाचारा । 'सुखं प्रतीक्षते ' इस विग्रहमें प्रतिपूर्व ईक्षधातुसे णप्रत्यय करनेपर स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । सुखप्रतीक्षा । ' बहून् क्षमते ' इस विग्रहमें क्षमूष्धातुसे णप्रत्यय करनेपर स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । बहुक्षमा ॥

आतो डः ॥६२४॥ कर्मण्युपपदे आदन्ताड्ड ॥ गोदः । धनदः । पार्ष्णित्रः ॥

भाषा—कर्मसंज्ञक शब्द उपपद हुए सते नहीं है उपसर्ग पूर्व जिसके ऐसे आकारान्तधातुसे डप्रत्यय होय । इसमें डकार इत्संज्ञक है । उदाहरण-' गां ददाति ' इस विग्रहमें कर्मसंज्ञक गोशब्द पूर्वपद है इस कारण उपसर्गहीन दाधातुसे डप्रत्यय करनेपर ' डिति टेः ' इसकर आकारका लोप करनेसे नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । गोदः । ' धनं ददाति ' इस विग्रहमें उपसर्गहीन दाधातुसे डप्रत्यय करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । धनदः । ' पार्ष्णिं त्रायते ' इस विग्रहमें कर्मसंज्ञक पार्ष्णिशब्द पूर्वपद है इस कारण उपसर्गहीन त्रैङ्धातुसे डप्रत्यय करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । पार्ष्णित्रः । उपसर्ग पूर्व होनेसे आकारान्तधातुसे डप्रत्यय नहीं होय किन्तु अण्प्रत्यय होय । जैसे-' गां संदाति ' इस विग्रहमें सं उपसर्ग पूर्व होनेसे दाधातुसे अण्प्रत्यय करनेपर ' आतो युक् ' इसकर युक् आगम किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । गोसंदायः ॥

नाम्नि च ॥ ६२५ ॥ नाम्न्युपपदे धातोर्डः ॥ द्विज । द्विपः । गृहस्थ । गिरिश । पादप ॥

भाषा—नाममात्र उपपद हुए सते धातुसे डप्रत्यय होय । उदाहरण-' द्वाभ्यां जायते ' इस विग्रहमें पञ्चम्यादिविभक्त्यर्थ नाम द्वि पूर्व युक्त है इस कारण जनधातुसे डप्रत्यय करनेपर ' डिति टे ' इसकर टिका लोप किया तब समास करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । द्विजः । ' द्वाभ्यां पिबति ' इस विग्रहमें पाधातुसे डप्रत्यय करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । द्विपः । ' गिरौ शेते ' इस विग्रहमें सप्तमीविभक्त्यर्थ नाम गिरि पूर्व युक्त है इस कारण शीङ्धातुसे डप्रत्यय करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । गिरिशः । ' गृहे तिष्ठति ' इस विग्रहमें स्थाधातुसे डप्रत्यय करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । गृहस्थः । ' पादैः पिबति ' इस विग्रहमें

भाषा—सुरा, शीधु यह पूर्वपद हुए संते 'पा पाने' धातुसे कर्त्ताअर्थमें कप्रत्यय होय । उदाहरण—'सुरां पिबति । शीधु पिबति' इस विग्रहमे सुरा शीधु यह शब्द पूर्वपद हैं इस कारण 'पा पाने' धातुसे टक्प्रत्यय किया तब 'ष्ट्रिन्नतः' इसकर ईप्प्रत्यय करनेपर स्त्रीलिंगमें रूप सिद्ध हुआ । सुरापी । शीधुपी ॥

अटौ नाम्नि कार्ये च ॥ ६३५ ॥ अकारटकारौ प्रत्ययौ ॥ अस्थिहरः श्वा । कवचहरः कुमारः । धनुर्धरो युवा । कुरुचरः । पुरस्सरः । अग्रेसरः । पार्श्वशयः । पृष्ठशयः । शक्तिग्रहः । पूजार्हो । स्तम्बेरमो हस्ती । कर्णेजपः सूचकः । यशस्करी विद्या । श्राद्धकरः । वचनकरः । कर्मकरः दिवाकरः । निशाकरः ॥

भाषा—नाममात्र वा कर्मसंज्ञक शब्द पूर्वपद हुए संते धातुसे अप्रत्यय और टप्रत्यय होय । उदाहरण—'अस्थि हराति' इस विग्रहमें कर्मसंज्ञक नाम अस्थि पूर्वपद है इस कारण हृञ्धातुसे अप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अस्थिहरः । इसी प्रकार सिद्ध हुआ । कवचहरः । 'धनुर्धराति' इस विग्रहमे धृञ्धातुसे अप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । धनुर्धरः । 'कुरौ चराति' इस विग्रहमें सप्तम्यन्त नाम कुरुशब्द पूर्वपद है इस कारण चरधातुसे टप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । कुरुचरः । 'पुरस्सराति । अग्रे सराति' इत्यादिक विग्रहोंमें सृधातुसे अप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । पुरस्सरः । अग्रेसरः । 'पार्श्वाभ्यां शेते । पृष्ठेन शेते' इत्यादिक विग्रहोंमें शीङ्धातुसे अप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । पार्श्वशयः । पृष्ठशयः । 'शक्तिं गृह्णाति' इस विग्रहमें ग्रहधातुसे अप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । शक्तिग्रहः । 'पूजामर्हति' इस विग्रहमे अर्हधातुसे अप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । पूजार्हो । 'स्तम्बे रमाति । कर्णे जपति' इन विग्रहोंमें रम और जपधातुसे अप्रत्यय करनेपर समाससंज्ञामें 'क्वचिदलुक्' इसकर पूर्व सप्तमीविभक्तिका लोप नहीं हुआ तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । स्तम्बेरमः । कर्णेजपः । 'यशः करोति । श्राद्धं करोति । वचनं करोति । कर्म करोति । दिवा करोति । निशा करोति' इन विग्रहोंमें कृञ्धातुसे हेतु और ताच्छील्य और आनुलोम्य अर्थके विषै टप्रत्यय करनेपर स्त्रीलिंगमें 'ष्ट्रिन्नतः' इसकर ईप्प्रत्यय करनेसे सिद्ध हुआ । यशस्करी । पुँल्लिगमें सिद्ध हुए । श्राद्धकरः । वचनकरः । इत्यादि ॥

इखखि ॥ ६३६ ॥ नाम्नि कार्ये च इखखि ॥ शकृत्करिः । स्तम्बकरिः । फलानि गृह्णाति फलेग्रहिः । फलस्यैदन्तत्वं निपाततात् । दृतिहरिः । नाथहरिः । देवापिः । वातापिः ॥

तुन्दशोकयोः परिमृजापनुदोरालस्यसुखाहरणयोः क ॥६२१॥

तुन्दपरिमृजोऽलस । शोकापनुद सुखस्याहर्ता ॥

भाषा—कर्मसंज्ञक तुन्द और शोक पूर्वपद हुए सते । परिउपसर्ग पूर्व मृजधातुसे और अप उपसर्गपूर्वे नुदधातुसे कप्रत्यय होय आलस्य और सुखाहरणके विषें । उदाहरण—' तुन्दं परिमार्ष्टि ' इस विग्रहमें तुन्दशब्द कर्मसंज्ञक होकर पूर्व विद्यमान है और आलस्यअर्थ विद्यमान है क्योंकि आलस्यसेही तुन्दका परिमार्जन करता है इस कारण परि उपसर्ग पूर्व मृजूप्धातुसे कप्रत्यय किया ' मृजेर्वृद्धिः ' इसकर जो कि विकल्पकरके वृद्धि होती है सो नहीं हुई कोई एक आचार्योंके मतसे तब नामसंज्ञामें रूप सिद्ध हुआ । तुन्दपरिमृज । ' शोकमपनुदति ' इस विग्रहमें कर्मसंज्ञक शोक पूर्व विद्यमान है और सुखाहरण अर्थ विद्यमान है क्योंकि सुखके आगे आपसे शोकको दूर करता है इस कारण अपउपसर्गपूर्व नुदधातुसे कप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । शोकापनुद ॥

मूलविभुजादि क ॥ ६२२ ॥ मूलानि विभुजतीति मूलविभुजो रथः । कुध्र । महीध्र । गिर । गिल ॥

भाषा—मूलविभुज इत्यादिक रूपोंकी सिद्धिके लिये धातुसे कप्रत्यय होय । उदाहरण—' मूलानि विभुजति ' इस विग्रहमें भुजोधातुसे कप्रत्यय करनेपर समाससंज्ञा होनेपर नामसंज्ञामें रूप सिद्ध हुआ । मूलविभुज । यह नाम रथका है । ' कु धरति ' इस विग्रहमें धृञ्धातुसे कप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । कुध्र । इसी प्रकार सिद्ध हुआ । महीध्र । ' गिरति ' इस विग्रहमें गृधातुसे कप्रत्यय करनेपर ' ऋत इर् गिरसे स्वरे रस्य लो वा ' इसकर विकल्पकरके रकारके स्थानमें लकार किया फिर नामसंज्ञामें सि विभक्ति करनेपर रूप सिद्ध हुआ । गिर । गिल ॥

गष्टक् ॥ ६२३ ॥ सामग । सामगी स्त्री ॥

भाषा—कर्मसंज्ञक शब्द पूर्वपद हुए सते गैधातुसे कर्ताअर्थमें टक् प्रत्यय होय । उदाहरण—' साम गायति ' इस विग्रहमें कर्मसंज्ञक सामशब्द पूर्व होनेसे गैधातुसे टक्प्रत्यय करनेपर ' सन्ध्यक्षराणामाकारः, आतोऽनपि ' इनकर रूप स्थित हुआ सामग फिर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । सामगः । प्रत्ययमें टकार ईप्प्रत्ययके अर्थ है इस कारण स्त्रीलिंगमें ' टिन्नन ' इसकर ईप्प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । सामगी ॥

पिबतेस्सुराशीध्वोः ॥ ६२४ ॥ सुरापी । शीधुपी ॥

भाषा–आशितशब्द पूर्वपद हुए संते भूधातुसे खप्रत्यय होय भाव और करणअर्थमें । उदाहरण–' आशितेन भूयते ' इस विग्रहमे आशितशब्द पूर्वपद है और भाव अर्थ विद्यमान है इस कारण भूधातुसे खप्रत्यय करनेपर पूर्वपदको मुम् आगम करनेसे रूप सिद्ध हुआ । आशितम्भवः । ' आशितो भवत्यनेनेति ' इस विग्रहमें पूर्वपद आशितशब्द है और करणअर्थ विद्यमान है इस कारण भूधातुसे खप्रत्यय करनेपर पूर्वपदको मुम् आगम करनेसे रूप सिद्ध हुआ । आशितम्भवः । जितने ओदनकर अतिथि आदिक जिंवाया जाता है उस ओदनका नाम आशितम्भव है ॥

एजेः खश् ॥ ६४० ॥ जनानेजयतीति जनमेजयः । आत्मानं पण्डितं मन्यते इति पण्डितम्मन्यः। मुंजं धयतीति मुंजन्धयः । कूलन्धयः ॥

भाषा–एजृ आदिक धातुओंसे खश् प्रत्यय होय इसमें खकार शकार इत्संज्ञक हैं। उदाहरण–' जनान् एजयति ' इस विग्रहमें चुरादि एजृधातुसे खश्प्रत्यय करनेपर ' शिति चतुर्वत् ' इसकर चार लकारोंका कार्य ' अप् कर्त्तरि ' इसकर अप् कर पश्चात् ' अदे ' इसकर अकारका लोप किया फिर ' खिति पदस्य ' इसकर मुम् आगम किया तव नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । जनमेजयः । ' पण्डितमात्मानं मन्यते ' इस विग्रहमे मन्धातुसे खश्प्रत्यय करनेपर चार लकारोका कार्य ' दिवादेर्यः ' इसकर यप्रत्यय किया फिर पूर्वपद पण्डितको मुम् आगम किया तव नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । पण्डितम्मन्यः । ' मुञ्जं धयति । कूलं धयति ' इन विग्रहोंमें धेट्धातुसे खश्प्रत्यय करनेपर ' शिति चतुर्वत्, खिति पदस्य ' इनकर सिद्ध हुआ । मुञ्जन्धयः । इत्यादि ॥

खशन्ते पूर्वपदस्यानव्ययस्य ह्रस्वः ॥ ६४१ ॥ मुष्टिं धमतीति मुष्टिंधमः । नाडिन्धमः । नासिकंधयः । अनव्ययस्य किम् । दिवामन्या रात्रिः । दोषामन्यमहः । कूलमुद्रुजः । कूलमुद्वहः । अरुन्तुदः ॥

भाषा–खश्प्रत्यय है अन्तमें जिसके ऐसा धातु पर हुए संते अव्यय तो होवे नहीं ऐसे पूर्वपदको ह्रस्व होय । उदाहरण–मुष्टीन्धमति । नाडीन्धमति । नासिकां धयति ' इन विग्रहोंमें ध्मा, धेट् इन धातुओंसे खश्प्रत्यय करनेपर 'शिति चतुर्वत्, खिति पदस्य' इन सूत्रोंका कार्य कर पूर्वपद मुष्टी, नाडी, नासिका इनको ह्रस्व करनेपर रूप सिद्ध हुए । मुष्टिन्धमः । इत्यादि । पूर्वपद अव्यय होवे नही ऐसा क्यों कहा तहां पूर्वपद अव्ययको ह्रस्व नही होय खश्प्रत्ययान्त धातु पर हुए संते । जैसे ' दिवा मन्यते । दोषा मन्यते ' इन विग्रहोंमें मन्धातुसे खश्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' शिति चतुर्वत् ' इसका कार्य कर पूर्वपद दिवा दोषा अव्यय होनेसे ' खिति पदस्य ' इसकर मुम् और ह्रस्व नहीं हुआ । ' कूलमुद्रुजति । कूलमुद्वहति । अरु-

भाषा—नाममात्र तथा कर्मसंज्ञक पद पूर्व हुए संते इ और ख और खि यह प्रत्यय होय । उदाहरण–स्तम्ब शकृत् यह नाम पूर्वपद होनेसे ब्रीहि और वत्स अर्थमें कृञ्धातुसे और हरि नाथ यह नाम पूर्व होनेसे पशुकर्तामें हृञ्धातुसे और देव वात यह नाम पूर्वपद होनेसे आप्लृधातुसे इप्रत्यय करनेसे रूप सिद्ध हुए शकृत्करि स्तम्बकरि । इत्यादिक । जैसे ' शकृत् करोति ' इस विग्रहमें कृञ्धातुसे इप्रत्यय किया है तिसी प्रकार सर्वत्र जानना । ' फलानि गृह्णाति ' इस विग्रहमें ग्रह धातुसे इप्रत्यय करनेके अनन्तर फलको एकारान्तता निपातसे करनेपर रूप सिद्ध हुआ । फलेग्राहि ॥

खिति पदस्य ॥ ६३७॥ खिति परे अनव्ययस्य पूर्वपदस्य मुम् ॥ सर्वंकष । कूलंकष । करीषंकष ॥

भाषा—खकार इत्वाला प्रत्यय है अन्तमें जिसके ऐसा धातु पर हुए संते अव्यय जो होवे नहीं ऐसे पूर्वपदको मुम् आगम होय । उदाहरण–सर्व, कूल, अभ्र, करीष यह नाम पूर्व होनेसे कषधातुसे खप्रत्यय करनेपर पूर्वपदको मुम् आगम किया क्योंकि परे खिदन्त कषधातु विद्यमान है तब सिद्ध हुए । सर्वंकष । इत्यादिक । सर्वंकष नाम खलका, कूलंकषा नाम नदीका, करीषंकषा नाम वात्याका है ॥

वाचंयमादयो निपात्याः ॥ ६३८ ॥ वाचंयम । पुरन्दर । द्विषन्तपः । परंतप । कुक्षिम्भरि । उदरम्भरि । आत्मम्भरि ॥

भाषा—वाचंयम आदिक रूप निपातसे सिद्ध हैं । उदाहरण–व्रतअर्थके विषै वाक्नामको पूर्वपद होनेसे यमधातुसे खप्रत्यय करनेके अनन्तर पूर्वपद वाक्को अकारान्त निपातसे कर मुम् आगम करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । वाचंयम । ' पुरं दृणाति ' इस विग्रहमें ' दृ विदारणे ' धातुसे खप्रत्यय करनके अनन्तर पूर्व पुरपदको अकारान्त निपातसे कर मुम् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । पुरंदर । ' द्विषन्तं परं वा तापयति ' इस विग्रहमें द्विषत् पर यह पूर्व होनेसे णिप्रत्ययान्त तापिधातुसे खप्रत्यय करनेपर ' णेः ' इसकर णिप्रत्ययान्तका लोप किया पश्चात् धातुकी उपधाको ह्रस्व निपातसे किया फिर मुम् आगम करनेपर ' संयोगान्तस्य लोप ' इसकर पूर्वपदके तकारका लोप किया तब नामसंज्ञामें रूप सिद्ध हुआ । द्विषन्तप । इसी प्रकार सिद्ध हुआ । परन्तप । ' कुक्षिं बिभर्ति ' इत्यादिक विग्रहोंमें आत्मन्, उदर, कुक्षि यह नाम पूर्वपद होनेसे भृञ्धातुसे खप्रत्यय करनपर पूर्वको मुम् आगम करनस रूप सिद्ध हुए । कुक्षिंभरि । इत्यादि ॥

आशिते भुवो भावकरणयोः ॥ ६३९ ॥ खः ॥ आशितेन भूयते आशितम्भवः । आशितो भवत्यनेनेति वा ॥

भाषा—जाया, पति यह शब्द पूर्वपद हुए संते हन्धातुसे टक्प्रत्यय होय मरणसूचक हस्तरेखादिरूपलक्षणवाले कर्त्ताअर्थमें । उदाहरण—' जायां हन्ति ' इस विग्रहमें जायाशब्द पूर्वपद है और मरणसूचक हस्तरेखादि रूपलक्षणवाला पुरुष कर्ता विद्यमान है इस कारण हन्धातुसे टक्प्रत्यय करनेपर ' गमां स्वरे ' इसकर हन्के उपधारूप अकारका लोप किया फिर ' हनो घ्ने ' इसकर हकारको घकार किया फिर समास होनेपर नामसंज्ञामें सिविभक्ति करनेपर रूप सिद्ध हुआ । जायाघ्नः । 'पतिं हन्ति ' इस विग्रहमे पतिशब्द पूर्वपद है और मरणसूचक हस्तरेखादिरूप लक्षणवाली स्त्री कर्त्ता विद्यमान है इस कारण हन्धातुसे टक्प्रत्यय करनेपर ' ष्ट्रित इसकर ईप्प्रत्यय स्त्रीलिंगमें करनेसे सिद्ध हुआ । पतिघ्नी ॥

अमनुष्यकर्तृके च ॥ ६४६ ॥ पतिघ्नी पाणिरेखा । जायाघ्नस्तिलकालकः ॥

भाषा—कर्मवाचक शब्द पूर्वपद हुए संते हन्धातुसे टक्प्रत्यय होय जो मनुष्यभिन्न कर्त्ता होवे तौ । उदाहरण—'पतिं हन्ति ' इसमें कर्मसंज्ञक पतिशब्द पूर्वपद है और मनुष्यभिन्न कर्त्ता पाणिरेखा है इस कारण हन्धातुसे टक्प्रत्यय करनेपर ' ष्ट्रितः ' इसकर स्त्रीलिंगमे ईप्प्रत्यय किया तब सिद्ध हुआ । पतिघ्नी पाणिरेखा । इसी प्रकार सिद्ध हुआ । जायाघ्नः तिलकालकः ॥

पाणिघताडघौ शिल्पिनि निपात्यौ ॥ ६४७ ॥ पाणिघः । ताडघः । शिल्पिनि किम् । पाणिघातः । ताडघातः ॥

भाषा—शिल्पीअर्थमें पाणिघ और ताडघ यह दोनों निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण—' पाणिं हन्ति ' ताडं हन्ति । इन विग्रहोंमें पाणि और ताड शब्द पूर्वपद होनेसे हन्धातुसे टक्प्रत्यय करनेसे अनन्तर हन्धातुके टिका लोप और हकारको घकार निपातसे करनेपर रूप सिद्ध हुए । पाणिघः । ताडघः । यह दोनों नाम शिल्पीके हैं । जहां शिल्पी अर्थ नहीं होगा तहां पाणि, ताड यह पूर्वपद होनेसे हन्धातुसे टक् नहीं होगा किन्तु अण्प्रत्यय होगा । जैसे—पाणिघातः । ताडघातः ॥

राजघश्च ॥ ६४८ ॥ राजानं हन्तीति राजघः ॥

भाषा—राजघ यह शब्दभी निपातसे सिद्ध होता है । भाव यह है कि राजन् शब्द पूर्वपद हुए संते हन्धातुसे टक्प्रत्यय होय और हन्धातुके टिका लोप और पूर्व हकारको घकार निपातसे होय । उदाहरण—'राजानं हन्ति ' इस विग्रहमें हन्धातुसे टक्प्रत्यय करनेके अनन्तर टिप्रत्ययका लोप हकारको घकार निपातसे करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । राजघः ॥

स्तुदति ' इन विग्रहोंमें उद् उपसर्ग पूर्व रुजधातु और वहधातु और निरुपसर्ग पूर्व तुदधातुसे खश्प्रत्यय करनेपर पूर्वको मुम् आगम करनेसे सिद्ध हुआ । कूल-मुद्रुज' । इत्यादि ॥

दारावाहनोऽणन्तस्य च ट संज्ञायाम् ॥ ६४२ ॥ हनो घत् ॥ उवम् । दारु आहन्तीति दार्वाघाटः ॥

भाषा—दारुशब्द पूर्वपद हुए सते आङ्उपसर्ग पूर्व हन्धातुसे अण् प्रत्यय होय और अन्तवर्णको टकार होय संज्ञा वाच्य होनेपर । उदाहरण—' दारु आह न्ति ' इस विग्रहमें दारुशब्द पूर्वपद है इस कारण आङ्पूर्व हन्धातुसे अण् किया तब ' हनो घत् ' इसकर हन्को घत् आदेश किया पश्चात्, अन्तवर्ण तकारको टकार कर ' अत उपधाया ' इसकर धातुके उपधारूप अकारको वृद्धि करी फिर समास सज्ञामें ' उवम् ' इसकर उकारको वकार किया फिर नामसंज्ञामें सिप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । दार्वाघाटः ॥

चारौ वा ॥ ६४३ ॥ चार्वाघाट । चार्वाघात ॥

भाषा—चारुशब्द पूर्वपद हुए संते आङ्पूर्व हन्धातुसे अण्प्रत्यय होय और अन्तवर्णको विकल्पकरके टकार होय । उदाहरण— चारु आहन्ति ' इस विग्रहमें चारुशब्द पूर्वपद होनेसे आङ्उपसर्ग पूर्व हन्धातुसे अण्प्रत्यय करनेके अनन्तर "हनो घत् ' इसकर हन्को घत् आदेश किया फिर ' अत उपधाया' 'इसकर धातुके उपधारूप अकारको वृद्धि की फिर अन्तवर्ण तकारको विकल्पकरके टकार करनेपर समास होनेसे नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । चार्वाघाट', चार्वाघात' ॥

कर्मणि सम्पूर्वाच्च ॥ ६४४॥ वर्णान् संहन्तीति वर्णसंघाट , वर्णसं-घात' । पद संहन्तीति पदसंघाटः, पदसंघात ॥

भाषा—कर्मवाचक शब्द पूर्वपद हुए सते सम् उपसर्ग पूर्व हन्धातुसे अण्प्रत्यय होय और अन्तवर्णको विकल्पकरके टकार होय । उदाहरण—'वर्णान् संहन्ति ' इस विग्रहमें कर्मवाचक वर्णशब्द पूर्वपद है इस कारण सम् उपसर्ग पूर्व हन्धातुसे अण् प्रत्यय करनेके अनन्तर हनो घत ' इसकर हन्को घत् आदेश किया फिर ' अत उपधाया' ' इसकर उपधारूप अकारको वृद्धि की फिर अन्त्यवर्ण तकारको विकल्प करके टकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । वर्णसंघाटः, वर्णसंघातः । इसी प्रकार सिद्ध हुआ । पदसंघाटः, पदसंघात ॥

जायापत्योष्टक् लक्षणवति कर्तरि ॥ ६४५ ॥ घर्मो स्वरे । हनो घ्ने ॥ जायां हन्तीति जायाघ्नो ना । पतिघ्नी स्त्री ॥

च्विप्रत्यय करनेपर सकारका लोप किया फिर 'च्वौ दीर्घ ई चास्य' इसकर जो कि कार्य होता है सो किया फिर भूकृधातुओंका रूप नियुक्त करनेसे सिद्ध हुए । सुमनीभावः । अरूकरोति । इत्यादिक ।

क्वचिड्डा ॥ ६५२ ॥ सुखं करोतीति सुखाकरोति । दुःखाकरोति । शंबाकरोति । द्विगुणाकरोति । बीजाकरोति ॥

भाषा–कहीं प्रयोगान्तरमें अभूततद्भावअर्थके विषैं डाप्रत्यय होय । उदाहरण–'असुखं सुखं करोति । अदुःखं दुःखं करोति' इन विग्रहोंमें अभूततद्भाव अर्थ विद्यमान है इस कारण सुख दुःख नामसे डाप्रत्यय करनेपर डाप्रत्ययान्तको अव्यय होनेसे विभक्तिका लुक् हो गया तब रूप सिद्ध हुआ । सुखाकरोति । दुःखाकरोति । शंब, द्विगुण, बीज इन नामोंसे कृषिवाच्य होनेपर डाप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुए । शम्बाकरोति । इत्यादि । 'शंबाकरोति' इसका अर्थ यह है कि अनुलोम जोते हुए खेतको प्रतिलोम जोतता है । 'द्विगुणाकरोति' इसका अर्थ यह है कि खेतका दो वार जोतता है । 'बीजाकरोति' इसका अर्थ यह है कि खेतको बीजवापनसहित जोतता है ॥

अव्ययस्य च्वावीत्वं न ॥६५३॥ दोषाभूतमहः । दिवाभूता रात्रिः । हसात्परस्य यकारस्य लोपश्च्वौ । अगार्ग्यो गार्ग्यो भवति गार्गीभवति ॥

भाषा–अव्ययके अवर्णको च्विप्रत्यय पर हुए संते दीर्घ नहीं होय । उदाहरण–'अदोषा दोषाभूतम्' इसमे दोषाशब्दसे च्विप्रत्यय करनेके अनन्तर दोषाशब्दको अव्यय होनेसे पूव आकारको ईकार नहीं होनेसे सिद्ध हुआ । दोषाभूतम् । इसी प्रकार सिद्ध हुआ । दिवाभूतम् । 'अगार्ग्यो गार्ग्यो भवति' इस विग्रहमें अभूततद्भाव अर्थ विद्यमान है इस कारण गार्ग्यशब्दसे च्विप्रत्यय करनेके अनन्तर 'हसात्तद्धितयस्य लोपो ये च्वौ' इसकर तद्धित यकारका लोप करनेपर 'च्वौ दीर्घ ई चास्य' इसकर अकारको ईकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । गार्गीभवति ॥

रीङ् ऋतः ॥ ६५४॥ मात्रीकरोति ॥

भाषा–ऋकारको रीङ् होय च्विप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–'अमातरं मातरं करोति' इस विग्रहमें मातृशब्दसे च्विप्रत्यय करनेके अनन्तर ऋकारको रीङ् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । मात्रीकरोति ॥

च्विविषये साद्वा ॥ ६५५ ॥

भाषा–अभूततद्भावके विषैं साकल्यअर्थमें नामसे च्विप्रत्यय होय विकल्पकरके ॥

भजो विण् ॥ ६४९ ॥

भाषा–नाममात्र उपपद हुए संते भज आदिक धातुओंसे विण्प्रत्यय होय ॥

वे ॥६४९॥ वेर्लोप ॥ अर्द्धभाक् । सुखभाक् । तुराषाट् । भारषाट् ॥

भाषा–विप्रत्ययका लोप होय । उदाहरण–'अर्द्ध भजति ' इस विग्रहमें अर्द्ध-नाम पूर्वपद है इस कारण भजधातुसे विण्प्रत्यय करनेपर ' अत उपधायाः ' इसकर भजधातुके उपधारूप अकारको दीर्घ करनेसे रूप स्थित हुआ अर्द्ध-माज् विण् फिर ' वेः ' इसकर विका लोप किया फिर ' नाम्नश्च कृता समासः ' इसकर समास करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । अर्द्धभाक् । इसी प्रकार शेष रूप जानने ॥

अभूततद्भावे कृभ्वस्तियोगे नाम्नश्च्वि ॥ ६५० ॥ च्वौ दीर्घ ई चास्य । च्वौ परेऽवर्णस्य ई । इदुतोर्दीर्घः । मिथुनीकरणम् । शुक्लीभाव । शुचीभवति । सहायास्यात् । हेतूकृतम् ॥

भाषा–जो कि पूर्व नहीं हुआ है उसके होनेका नाम अभूततद्भाव है उस अर्थमें नाममात्रसे च्विप्रत्यय होय कृ, भू, अस् इन धातुओंका योग हुए संते । च्विप्रत्यय पर हुए संते अवर्णनाम अकार आकारको ईकार होय और इकार उकारका दीर्घ होय । उदाहरण–' अमिथुनं मिथुनं क्रियते ' इस विग्रहमें अभूततद्भाव अर्थ है क्योंकि पूर्व तो मिथुन है नहीं फिर मिथुन किया गया है और कृधातुका परमें योग है इस कारण मिथुनशब्दसे च्विप्रत्यय करनेपर ' वेः ' इसकर विका लोप किया चकार उच्चारणार्थ इत्संज्ञक है फिर 'प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणं न याति ' इसकर च्विप्रत्ययके लोप होनेपरभी पूर्वअकारको ' च्वौ दीर्घ ई चास्य ' इसकर ईकार किया फिर ' क्त्वायन्तश्च ' इसकर च्विप्रत्ययान्तको अव्यय होनेसे विभक्तिका लुक् किया फिर कृधातुसे भावमें ' युट् भावे च ' इसकर युट् करनेपर सिद्ध हुआ । मिथुनीकरणम् । ' अशुक्लस्य शुक्लेन भवनं शुक्लीभावः ' इसमें अभूत तद्भाव अर्थ विद्यमान है और भूधातुका परमें योग है इस कारण शुक्लशब्दसे च्विप्रत्यय करनेके अनन्तर भूधातुसे भावमें घञ् करनेपर सिद्ध हुआ । शुक्लीभावः । शेष रूप इसी प्रकार जानने ॥

च्वौ सलोप ॥ ६५१॥ सुमनीभाव । अरूकरोति । चक्षूकरोति । सुचेतीभाव । रहीभवति । विरजीकरोति ॥

भाषा–च्विप्रत्यय पर हुए संते सकारका लोप होय । भाव यह है कि च्विप्रत्यय पर हुए संते अरुस्, मनस्, चक्षुष् चेतस्, रहस्, रजस् इन शब्दोंके सकारका लोप होय । उदाहरण–सुमनस्, अरुस्, चक्षुष्, सुचेतस्, रहस्, विरजस् इनके

भाषा—द्वितीयान्त और सप्तम्यन्त देव, मनुष्य, पुरुष, पुरु, मर्त्य इन शब्दोंसे त्राप्रत्यय विकल्पकरके होय । 'देवान् वन्दे । देवेषु रमे' इन विग्रहोंमें द्वितीया सप्तम्यन्त देवशब्द है इस कारण त्राप्रत्यय करनेपर 'समासप्रत्यययोर्लुक्' इसकरः द्वितीया और सप्तमी विभक्तिका लुक् किया फिर त्राप्रत्ययान्तको अव्यय होनेसे विभक्तिका लुक् करनेपर सिद्ध हुआ । देवत्रा वन्दे । और जहां त्राप्रत्यय नहीं हुआ तहा । देवान् वन्दे । और सप्तम्यन्तसे त्राप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । देवत्रा रमे । देवेषु रमे ॥

ख्युट् करणे ॥ ६६१ ॥ आढ्यसुभगस्थूलपलितनग्नान्धप्रियेषु च्व्यर्थेषु पदेषु कृञः करणेऽर्थे ख्युट्प्रत्ययः ॥ अनाढ्यमाढ्यं करोत्यनेनाढ्यंकरणम् । सुभगंकरणम् । स्थूलंकरणम् । दधि । पलितंकरणम् । नग्नंकरणं । द्यूतम् । अन्धंकरणम् । प्रियंकरणम् ॥

भाषा—च्व्यर्थ नाम अभूततद्भावअर्थवाले ऐसे आढ्य, सुभग, स्थूल, पलित, नग्न, अन्ध, प्रिय यह शब्द उपपद हुए संते कृञ्धातुसे ख्युट्प्रत्यय होय करणकारक अर्थके विषैं । उदाहरण—'अनाढ्यमाढ्यं करोति अनेन' इस विग्रहमें अभूततद्भाव अर्थवाला आढ्यशब्द पूर्वपद है और करणकारकभी विद्यमान है इस कारण करणकारक अर्थमें कृञ्धातुसे ख्युट् प्रत्यय किया । प्रत्ययमें खकार टकार इत्संज्ञक हैं फिर 'युवोरनाकौ' इसकर ख्युट्प्रत्ययके युको अनआदेश किया फिर 'खिति पदस्य' इसकर पूर्वपदको मुम् आगम किया तब सिद्ध हुआ । आढ्यंकरणम् । इसी प्रकार शेष रूप जानने ॥

भुवः खिष्णुखुकञौ कर्तरि ॥ ६६२ ॥ अनाढ्य आढ्यो भवति आढ्यम्भविष्णुः । आढ्यंभावुकः ॥

भाषा—अभूततद्भावअर्थवाले आढ्य आदिक शब्द उपपद हुए संते भूधातुसे खिष्णु, खुकञ् यह दोनों प्रत्यय होय कर्त्ताकारक अर्थके विषैं । उदाहरण—'अनाढ्य आढ्यो भवति' इस विग्रहमें अभूततद्भाव अर्थवाला आढ्यशब्द पूर्वपद है और कर्त्ताकारक अर्थभी विद्यमान है इस कारण भूधातुसे खिष्णुप्रत्यय किया इसमें खकार इत्संज्ञक है फिर 'खिति पदस्य' इसकर मुम् आगम करनेपर सिद्ध हुआ । आढ्यंभविष्णुः । और जहां अभूततद्भाव अर्थवाला आढ्यशब्द पूर्व होनेसे भूधातुसे कर्त्ताअर्थमें खुकञ्प्रत्यय हुआ तहां 'धातोर्नामिनः' इसकर वृद्धि किया फिर 'खिति पदस्य' पूर्वको मुम् आगम किया तब रूप सिद्ध

सात्पदाद्योः ॥६५६॥ सस्य पत्व न ॥ अग्निसाद्भवति । अग्नीभवति ॥

भाषा-सात्प्रत्ययके और पदके आदिमें वर्त्तमान हुए सकारको षकार नहीं होय । उदाहरण-' अनग्निरग्निर्भवति ' इस विग्रहमें अभूततद्भाव तथा साकल्य अर्थ विद्यमान है क्योंकि पूर्व सो अग्नि है नहीं फिर समस्त रूपकर अब अग्नि होता है इस कारण अग्निशब्दसे सात्प्रत्यय करनेपर सात्प्रत्ययान्तको अव्यय होनेसे विभक्तिका लुक् किया तब सिद्ध हुआ । अग्निसाद्भवति । और जहां सात्प्रत्यय नहीं हुआ वहां च्विप्रत्यय होनेसे सिद्ध हुआ । अग्नीभवति ॥

सम्पदायोगे च ॥ ६५७ ॥ जलसात्सम्पद्यते ॥

भाषा-नामसे अभूततद्भावअर्थमें संपद्धातुका योग हुए सतेमी सात्प्रत्यय होय । उदाहरण-'अजलं जलं सम्पद्यते ' इस विग्रहमें अभूततद्भाव अर्थ तथा सपद्धातुका योग है इस कारण जलसे सात्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । जलसात्सम्पद्यते ॥

अधीने च ॥ ६५८ ॥ राजसात्सम्पद्यते ॥

भाषा-नामसे अधीनअर्थके विषें सात्प्रत्यय होय कृ, भू, अस्, सम्पद् इन धातुओंका योग हुए संते । उदाहरण-' राजाधीनं करोति ' इस विग्रहमें अधीन अर्थ विद्यमान है और कृधातुका योगभी है इस कारण राजन्शब्दसे सात्प्रत्यय करनेपर ' नाम्नो नो लोपश् धौ ' इसकर नकारका लोप किया तब सिद्ध हुआ । राजसात्करोति । ' राजाधीनं सम्पद्यते ' इस विग्रहमें अधीन अर्थ तथा सपद्धातुका योग है इस कारण राजन्शब्दसे सात्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । राजसात्सम्पद्यते ॥

देये त्रा च ॥ ६५९ ॥ विप्राधीनं देयं करोति विप्रत्राकरोति । विप्रत्रासम्पद्यते । विप्रसात्करोति ॥

भाषा-नामसे तदधीन देयअर्थके विषें त्राप्रत्यय होय चकारसे सात्प्रत्ययभी होय कृ, भू, अस्, संपद् इन धातुओंका योग हुए सते । उदाहरण-' विप्राधीनं देयं करोति ' इस विग्रहमें तदधीन देय अर्थ विद्यमान है और कृधातुका योगभी विद्यमान है इस कारण विप्रशब्दसे त्राप्रत्यय करनेपर त्राप्रत्ययान्तको अव्यय होनेसे विभक्तिका लुक् हुआ तब सिद्ध हुआ । विप्रत्राकरोति । ' विप्राधीनं देयं सपद्यते ' इस विग्रहमें तदधीन देय अर्थ है और संपद्धातुका योगभी है इस कारण विप्रशब्दसे त्राप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । विप्रत्रासम्पद्यते ॥

देवमनुष्यपुरुषपुरुमर्त्येभ्यो द्वितीयासप्तम्यन्तेभ्यो वा त्रा ॥ ६६० ॥ देवत्रा वन्दे । देवं वन्दे ॥

'सुष्ठु शृणाति' इस विग्रहमें शधातुसे मनिप् प्रत्यय करनेके अनन्तर इट् होने चाहिये था सो 'ह्वत्योर्नेट्' इसकर इट् तौ हुआ गुण होनेपर सिद्ध हुआ। सुशर्मा । ह्रस्वधातुको तुक् आगम होय पित्संज्ञक कृत्प्रत्यय पर हुए संते। उदाहरण–'प्रातरेति' इस विग्रहमें इण्धातुसे क्वनिप् प्रत्यय करनेपर धातुको गुण तौ हुआ नहीं क्योंकि कित्संज्ञक प्रत्यय परे विद्यमान है परन्तु धातुको ह्रस्व होनेसे तुक् आगम हुआ। क्योंकि पित्संज्ञक कृत्प्रत्यय क्वनिप् परे विद्यमान है तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ। प्रातरित्वा ॥

वनिपि अमस्यात्वम् ॥ ६६७॥ विशेषेण जायते विजावा । ओणृ । ओणतीत्यवावा । पारदृश्वा । राजयुध्वा । सुत्वा । धीवा । पीवा ॥

भाषा–वनिप् प्रत्यय पर हुए संते अमप्रत्ययान्त धातुके अमको आकार होय। उदाहरण–'विजायते' इस विग्रहमें जनीधातुसे वनिप्प्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको अमप्रत्याहारसंबन्धी नकारान्त होनेसे अन्त नकारको आकार करनेपर 'ह्वत्योर्नेट्' इसकर इट् हुआ नहीं तब नामसंज्ञामें रूप सिद्ध हुआ। विजावा। 'ओणति' इस विग्रहमें ओणृधातुसे वनिप्प्रत्यय करनेपर धातुके णकारको आकार किया तब 'ओ अव्' इसकर ओकारको अव् किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ। अवावा। 'पारं पश्यति' इस विग्रहमें दृशधातुसे क्वनिप् प्रत्यय करनेपर गुण तौ हुआ नहीं क्योंकि कित्संज्ञक प्रत्यय परे विद्यमान है तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ। पारदृश्वा। 'राजानं युध्यते' इस विग्रहमें क्वनिप्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। राजयुध्वा। 'सुनोति' इस विग्रहमें षुञ्धातुसे क्वनिप्प्रत्यय करनेपर 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' इसकर तुक् आगम करनेपर सिद्ध हुआ। सुत्वा। 'दधाति। पिबति' इन विग्रहोंमें दा पा इन धातुओंसे क्वनिप् प्रत्यय करनेपर 'अपिद्दाधागैहाकुपिबतीनामीः' इसकर धातुके आकारको ईकार किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ। धीवा। पीवा ॥

क्विप् ॥ ६६८ ॥ धातोः क्विप्स्यात् ॥ कर्मकृत् । मो नो धातोः । प्रशान् । प्रदान् । अग्निचित् । सोमसुत् । सोमपाः । सर्वदृक् । दिश् । अतिसर्जने । दिक् ॥

भाषा–समस्त धातुओंसे क्विप्प्रत्यय होता है। उदाहरण–'कर्म करोति' इस विग्रहमें कृधातुसे क्विप् प्रत्यय करनेपर गुण तौ हुआ नहीं क्योंकि कित्प्रत्यय परे विद्यमान है परन्तु पित्प्रत्यय परे होनेसे 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' इसकर तुक् आगम किया फिर 'वेः' इसकर क्विप्का लोप किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ

हुआ । आदर्शमाप्लुकः । खुकञ्प्रत्ययमें खकार यकार इत्संज्ञक हैं इसी प्रकार । सुमर्गमभिष्णुः । सुमगमाबुकः । इत्यादिक सिद्ध करने योग्य हैं ॥

आतो मनिप्क्वनिब्वनिप ॥ ६६३ ॥ नाम्न्युपपदे आदन्ताद्धातोरेते प्रत्यया स्युः ॥ सुदामा । अश्वे तिष्ठतीति अश्वत्थामा । निपातात्सस्य तः ॥

भाषा—नाममात्र उपपद हुए संते आकारान्त धातुसे कर्त्रामर्थमें मनिप्, क्वनिप्, वनिप् यह प्रत्यय होंय । उदाहरण—' सुष्ठु ददाति ' इस विग्रहमें आकारान्त दाधातुसे मनिप् प्रत्यय कर नामसंज्ञामें सिविभक्तिके विषै ' नोपधायाः ' इसकर दीर्घ ' नाम्नो नो लोपशू धौ ' इसकर नकारका लोपश् करनेपर सिद्ध हुआ । सुदामा । ' अश्वे तिष्ठति ' इस विग्रहमें सप्तम्यन्त अश्व नाम पूर्वपद विद्यमान है इस कारण स्थाधातुसे मनिप्प्रत्यय करनेके अनन्तर निपातसे स्थाधातुके सकारके स्थानमें तकार करनेसे नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । अश्वत्थामा ॥

स्यामि ॥ ६६४ ॥ तादौ किति दोसोमास्थामिर्भवति ॥

शाच्छोर्वा ॥ ६६५ ॥

भाषा—तकरादि कित्संज्ञक प्रत्यय पर हुए संते दो, सो और माखप धातु इनको इकार होय और शोरूप धातु और छोरूप धातु इनको विकल्पकरके इकार होय ॥

अपिद्घाधागेर्हाक्पिबतीनामी ॥ ६६६ ॥ किति इत्ते किपि वा न तु क्यपि ॥ सुपीथा । घृतपीवा । भूरिदीवा । अनादन्तादपि । अपिशब्दान्निरुपपदेभ्योऽपि । सुकर्मा । ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् । मातरिश्वा । वनिपि ॥

भाषा—नहीं है पकार इत् जिनका ऐसा दारूप, धारूप, गै, ओहाक् और पा पाने धातु इनको ईकार होय कित्संज्ञक इस पर हुए संते और किप्प्रत्यय पर हुए संते विकल्पकरके ईकार होय और क्यप्प्रत्यय पर हुए संते ईकार नहीं होय उदाहरण—' घृत पिबति इस विग्रहमें नाम घृत पूर्वपद है इस कारण आकारान्त धातु पा पीनेसे क्वनिप् प्रत्यय करनेपर पाधातुके आकारको ईकार किया क्योंकि कित्संज्ञक इत्यादि क्वनिप्प्रत्यय परे विद्यमान है सप नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । घृतपीवा । इसी प्रकार । सुपीवा । भूरिदीवा । इत्यादिक जानने । अ- कि धातु आकारान्त नहीं है उससेभी मनिप् आदिक प्रत्यय होंय और अपि शब्दसे निरुपपद धातुओंसेभी यह प्रत्यय होय । उदाहरण— सुष्ठु करोति ' इस विग्रहमें निरुपपद कृधातुसे मनिप् प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । सुकर्मा ।

भाषा–गम्, तनु, यम्, णम् इत्यादिक धातुओंके अमका लोप होय क्विप्प्रत्यय पर हुए संते और क्यप्प्रत्यय पर हुए संते विकल्पकरके अमूका लोप होय। उदाहरण–' अंगं गच्छति ' इस विग्रहमें गम्धातुसे क्विप्रत्यय करनेपर धातुके अमप्रत्याहारसंबन्धी नकारका लोप किया फिर ' ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् ' इसकर धातुको तुक् आगम किया फिर क्विप्प्रत्ययका लोप करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ। अङ्गगत् । इसी प्रकार शेष रूप जानने ॥

ऊङ् च ॥ ६७२ ॥ अग्रेगूः । अग्रेभ्रूः ॥

भाषा–गम् आदिक धातुओंको ऊङ्का आदेश होय और अमूका लोप होय क्विप्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–'अग्रे गच्छति ' इस विग्रहमें गम्धातुसे क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर मकारका लोप किया और ङित् होनेसे धातुके अन्त्यवर्ण अकारको ऊ आदेश किया फिर क्विप्प्रत्ययका लोप किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । अग्रेगूः । ' अग्रे भ्रमति ' इस विग्रहमें भ्रम्धातुसे क्विप्रत्यय करनेपर मकारका लोप और ऊङ् आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । अग्रेभ्रूः ॥

द्युतिगमिजुहोतीनां क्विपि द्वित्वम् ॥ ६७३ ॥ दिद्युत् । जगत् ॥

भाषा–क्विप्प्रत्यय पर हुए संते । द्युत्, गम्, हु इन धातुओंको द्वित्व होय। उदाहरण–' द्योतते ' इस विग्रहमें द्युत्धातुसे क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर द्वित्व करनेके अनन्तर ' द्युतेः पूर्वस्य संप्रसारणम् ' इसकर संप्रसारण करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ। दिद्युत् । ' गच्छति ' इस विग्रहमे गम्धातुसे क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर द्वित्व किया फिर ' गमादीनां अमस्य लोपः ' इसकर मकारका लोप किया फिर ' ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् ' इसकर तुक् आगम हुआ तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । जगत् ॥

जुहोतेर्दीर्घः ॥ ६७४ ॥ जुहूः ॥

भाषा–हुधातुको क्विप्प्रत्यय पर हुए संते दीर्घ होय । उदाहरण–' जुहोति अनया ' इस विग्रहमे हुधातुसे करणकारक अर्थमें क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर द्वित्व किया फिर दीर्घ करनेसे नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । जुहूः ॥

पदान्तस्यानितेर्नस्य णत्वमुपसर्गस्थान्निमित्तात् ॥ ६७५ ॥

अन प्राणने । हे प्राण् । मित्राणि शास्तीति मित्रशीः ॥

भाषा–उपसर्गमें स्थित हुए षकार रेफ ऋवर्णरूप निमित्तसे अन्धातुके पदान्तस्थ नकारको णकार होय । उदाहरण–' प्राणिति ' इस विग्रहमे प्रउपसर्ग पूर्व अन्धातुसे क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर नामसंज्ञामें संबोधनके विषै ' नाम्नो नो

कर्मेकृत् । 'प्रशाम्यति' इस विग्रहमें प्रउपसर्ग पूर्व शमधातुसे क्विप् प्रत्यय करनेपर 'प्रशान्तस्योपधाया दीर्घः' इसकर धातुके उपधारूप अकारको दीर्घ किया फिर 'वेः' इसकर क्विप्प्रत्ययका लोप करनेसे पूर्व 'मो नो धातो' इसकर मकारको नकार किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । प्रशान् । इसी प्रकार सिद्ध हुआ । प्रदान् । 'अग्निं चिनोति, सोमं सुनोति' इन विग्रहोंमें चिञ् षुञ् इन धातुओंसे क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर गुण तो हुआ नहीं तुक् आगम करनेके अनन्तर क्विप्प्रत्ययका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । अग्निचित् । सोमसुत् । 'सोम पिबति' इस विग्रहमें पाधातुसे क्विप्प्रत्यय करनेपर एक जगह धातुके आकारको ईकार नहीं किया वहां सिद्ध हुआ । सोमपा । और एक जगह 'घुमास्थागापाजहातिसां हलि' इसकर ईकार किया तहां सिद्ध हुआ । सोमपी । इसी प्रकार शेष रूप जानने ॥

क्विपिवचिप्रच्छ्यायतस्तुकटप्रुजुश्रीणां दीर्घोऽसम्प्रसारणं च ॥ ६६९ ॥ वाक् । छ्विति शसे को ऽमे चेति छस्य शो यस्य ऊः तत्त्वमाट् तत्त्वप्राशौ । आयतस्तूः । कटप्रूः । जु गतौ । जूः । श्रीः ।

भाषा—वच्, प्रच्छ, आयतपूर्व ष्टुञ् कटपूर्व प्रुङ्, जु और श्रिञ् इन धातुओंको दीर्घ होय और संप्रसारण होय नहीं क्विप्प्रत्यय पर हुए सते । उदाहरण—'वक्ति' इस विग्रहमें वच्धातुसे क्विप्प्रत्यय करनेपर धातुको दीर्घ तो किया परन्तु संप्रसारण नहीं किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । वाक् 'तत्त्वं पृच्छति' इस विग्रहमें प्रच्छधातुसे क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको दीर्घ किया संप्रसारण नहीं किया फिर 'छ्विति शसे को ऽमे च' इसकर छकारको शकार करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । तत्त्वप्राट् । 'आयतं स्तौति' इस विग्रहमें ष्टुञ्धातुसे क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको दीर्घ किया पश्चात् क्विप्का 'वेः' इसकर लोप किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । आयतस्तूः । शेष रूप इसी प्रकार जानने ॥

ध्यायतेः क्विपि सम्प्रसारणम् ॥ ६७० ॥ सुधीः ॥

भाषा—क्विप्प्रत्यय पर हुए सते ध्यैधातुको संप्रसारण होय । उदाहरण—'सुष्ठु ध्यायति' इस विग्रहमें ध्यैधातुसे क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको संप्रसारण किया तो ऐकारस्वरसहित यकारको दीर्घ ईकार संप्रसारण हुआ फिर क्विप्प्रत्ययका लोप किया तब सिद्ध हुआ । सुधीः ॥

गमादीनां मस्य लोपः॥६७१॥ क्विपि क्वपि वा ॥ अङ्गगत् । परीतत् । संयत् । सुनत् ॥

दुहः कौ घोऽन्तादेशश्च ॥ ६७८ ॥ कामदुघा ॥

भाषा—दुहधातुसे कप्रत्यय होय और घकार अन्तको आदेश होय अर्थात् हकारको घकार आदेश होय । उदाहरण–' कामं दोग्धि ' इस विग्रहमे दुहधातुसे कप्रत्यय किया प्रत्ययमें ककार इत्संज्ञक है फिर हकारको घकार किया तब स्त्रीलिंगमें आप्प्रत्यय होनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । कामदुघा ॥

दृशेष्टक्सकौ चोपमाने कार्ये ॥ ६७९ ॥ उपमाने कर्मण्युपपदे दृशेष्टक्सकौ चात्क्विप् ॥

भाषा—उपमान कर्मसंज्ञक शब्द उपपद हुए संते दृश्धातुसे टक और सक् यह प्रत्यय होंय और चकारसे क्विप्प्रत्यय होय ॥

आसर्वादेः ॥ ६८० ॥ एषु परेषु सर्वादेष्टेरात्वम् ॥ अन्यादृशः अन्यादृक्षः अन्यादृक् । तादृशः तादृक्षः तादृक् ॥

भाषा—टक्प्रत्ययान्त दृश, सक् प्रत्ययान्त दृक्ष और क्विप्प्रत्ययान्त दृश् यह पर हुए संते उपमान कर्मसंज्ञक सर्व आदिकोंके टिको आकार होय । उदाहरण– ' अन्यामिव पश्यति ' इस विग्रहमें उपमान कर्मसंज्ञक सर्वादिगणीय अन्यशब्द पूर्वपद है इस कारण दृश्धातुसे टक् प्रत्यय किया प्रत्ययमें टकार ककार इत्संज्ञक हैं तब रूप समाससंज्ञामें स्थित हुआ अन्यदृश फिर पूर्व उपमान कर्मसंज्ञक सर्वादिकसंबन्धी अन्यशब्दके टिको आकार करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । अन्यादृशः । और जहा दृश्धातुसे सक्प्रत्यय किया तहां ' छशष०, षढोः०, कि० इनकर स्थित हुआ अन्यदृक्ष फिर अन्यके टिको अकार करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । अन्यादृक्षः । और जहां दृश्धातुसे क्विप्प्रत्यय हुआ तहां सिद्ध हुआ । अन्यादृक् । ' तमिव पश्यति ' इस विग्रहमें दृश्धातुसे टक् सक् क्विप्प्रत्यय करनेपर पूर्वपद सर्वादिकसंबन्धी तत्के टिको आकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । तादृशः, तादृक्षः, तादृक् ॥

किमिदमः कीश् ॥ ६८१ ॥ कीदृशः कीदृक्षः कीदृक् । ईदृशः । ईदृक्षः ईदृक् । भवादृशः भवादृक्षः भवादृक् । यादृशः यादृक्षः यादृक् । अदसोऽमुस्स्यादृक्दृशदृक्षेषु । अमूदृशः अमूदृक्षः अमूदृक् । मादृशः मादृक्षः मादृक् । त्वादृशः त्वादृक्षः त्वादृक् । युष्मादृशः युष्मादृक्षः युष्मादृक् । अस्मादृशः । समानस्य सः । सदृशः सदृक्षः सदृक् ॥

भाषा—किम्शब्द और इदम्शब्दको क्रमसे की और ईश् यह आदेश होय

लोपश्च भी ' इसकर नकारका लोपश्च न होनेपर मत्वपगर्गेस्य रेफरूप निमित्तसे नकारको णकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । हे माण् । ' मित्राणि शास्ति ' इस विग्रहमें शासुधातुसे क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' शासेरिः ' इसकर शास्धातुके आकारको इकार किया फिर ' घसादेः पः ' इसकर शास्के सकारको षकार किया तब रूप स्थित हुआ समाससंज्ञामें मित्रशिष् फिर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । मित्रशी ॥

आशासः क्वावुपधाया इत्वम् ॥ ६७६ ॥ आशी । गीः । पू ॥

भाषा—जो कि आङ्पूर्वं शासुधातु आत्मनेपदी है उस आशासुधातुके उपधाको इकार होय क्विप्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—' आशास्ते ' इस विग्रहमें आशासुधातुसे क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर उपधाको इकार किया फिर ' घसादेः षः ' इसकर सकारको षकार किया तब नामसंज्ञामें ' दोषां र', व्योर्विसे ' इसकर सिद्ध हुआ । आशीः । ' गिरति ' इस विग्रहमें गृधातुसे क्विप्प्रत्यय करनेपर ' ऋत इर् ' इसकर इ् किया तब नामसंज्ञामें ' व्योर्विसे ' इसकर सिद्ध हुआ । चीः । ' पिपर्ति ' इस विग्रहमें ' पृ पालनादौ ' धातुसे क्विप्प्रत्यय करनेपर ' पोरुर् ' इसकर ऋको उर् करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । पू । द्विवचनमें । पुरौ ॥

इस्मन्त्रन्क्विषु च्छादेर्ह्रस्वः ॥ ६७७ ॥ छद अपवारणे । चुरादिः । तनु छादयतीति तनुच्छत् । अक्षद्यूः । रेफाच्छ्वोर्लोप कौ ससादौ हे च प्रत्यये । मू मुरौ । धु धुरौ ॥

भाषा—इस्, मन्, त्र, क्विप् यह प्रत्यय पर हुए संते छादिधातुको ह्रस्व होय । उदाहरण—' तनु छादयति इस विग्रहमें चुरादि णिप्रत्ययान्त छदिधातुसे क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' णेः ' इसकर णिको लोप किया फिर ह्रस्व किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । तनुच्छत् । ' अक्षैर्दीव्यति ' इस विग्रहमें दिव्धातुसे क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' छ्वोः शूडनुनासिके च छस्य शो वस्य ऊः ' इसकर वकारको ऊकार करनेपर ' इर्यं स्वरे ' इसकर यकार कर समाससंज्ञामें स्थित हुआ अक्षद्यू फिर नामसंज्ञामें सिप्रत्ययके विषें सिद्ध हुआ । अक्षद्यूः । ' मूर्छति ' इस विग्रहमें मूर्छाधातुसे क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' रेफाच्छ्वोर्लोप कौ ससादौ हे च ' इस कर छकारका लोप किया तब स्थित हुआ मुर् फिर नामसंज्ञामें सिप्रत्ययके विषें ' व्योर्विसे इसकर सिद्ध हुआ । मूः । द्विवचनमें । मुरौ । ' धूर्वति ' इस विग्रहमें धुर्वीधातुसे क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' रेफाच्छ्वोर्लोप ' इसकर वकारका लोप किया तब नामसंज्ञामें सिप्रत्ययके विषें सिद्ध हुआ । धू ॥

भाषा–व्रत अर्थ होनेपर धातुसे णिनिप्रत्यय होय । उदाहरण–' स्थण्डिले शेते व्रतार्थम् ' इस विग्रहमें व्रतअर्थ विद्यमान है इस कारण शीङ्धातुसे कर्त्ताअर्थमें णिन्प्रत्यय करनेपर ' धातोर्नामिनः ' इसकर शीङ्धातुको वृद्धि की फिर नामसंज्ञा होनेपर सिमें सिद्ध हुआ । स्थण्डिलशायी ॥

क्विब्वनिब्डाः ॥६८४॥ धातोरतीते शीले चैते ॥ ब्रह्महा । भ्रूणहा वृत्रहा । सुकृत् । धर्मकृत् । पापकृत् । अग्निचित् । सोमसुत् । यज्वा । सरसिजम् । सरोजम् । संस्कारजः । प्रजा । अजः । द्विजः । परितः खाता परिखा ॥

भाषा–धातुसे अतीतकालके विषै तथा शीलअर्थमें क्विप्, वनिप्, डा यह प्रत्यय होय । उदाहरण–' ब्रह्माणं हतवान् ' इस विग्रहमे अतीतकाल विद्यमान है इस कारण हन्धातुसे क्विप्प्रत्यय करनेपर ' वेः ' इसकर क्विप्का लोप किया तब समास करनेपर रूप स्थित हुआ ब्रह्महन् फिर नामसंज्ञामें सिविभक्तिके विषैं ' इनां सौ शौ०, नाम्नो नो लोपश् धौ ' इनकर सिद्ध हुआ । ब्रह्महा । इसी प्रकार । भ्रूणहा । वृत्रहा । यह जानने । ' धर्ममकार्षीत् ' इस विग्रहमें अतीतकाल विद्यमान है इस कारण कृधातुसे क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर प्रत्ययको कित् होनेसे गुण नहीं हुआ ' ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् ' इसकर तुक् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । धर्मकृत् । शेष रूप इसी प्रकार जानने । अयाक्षीत् । ' यष्टुं शीलमस्य ' इस विग्रहमें भूतकाल तथा शीलअर्थ है इस कारण यज्धातुसे वनिप्प्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ यज्वन् फिर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । यज्वा । ' सरसि अजनि ' इस विग्रहमें अतीतकाल विद्यमान है इस कारण जनीधातुसे डप्रत्यय करनेपर समाससंज्ञामें स्थित हुआ सरसिज इसमें ' क्वचिदलुक् ' इसकर सप्तमीका लुक् नहीं हुआ है नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । सरसिजम् । इसी प्रकार शेष रूप जानने । ' परितः खाता ' विग्रहमें अतीतकाल विद्यमान है इस कारण खन्धातुसे डप्रत्यय करनेपर स्त्रीलिंगमें आप्प्रत्यय करनेसे सिद्ध हुआ । परिखा ॥

क्तक्तवतू ॥ ६८५ ॥ धातोरतीते काले क्तक्तवतू एतौ स्तो भावकर्मणोः क्तः । स्नातम् । कृतः कटः । क्तवतुः । विष्णुर्विश्वं कृतवान् ॥

भाषा–धातुसे अतीतकालके विषैं क्त और क्तवतु यह दोनो प्रत्यय होय भाव और कर्मके विषैं क्तप्रत्ययही होय और कर्त्ताअर्थके विषैं क्तवतु प्रत्यय होय । उदाहरण–' त्वया अस्नायि ' इस विग्रहमें अतीतकाल विद्यमान है और धातुको

---

१ ब्रह्मन्, भ्रूण, वृत्र यह शब्द कर्मवाचक होकर उपपद होनेसे हन्धातुसे क्विप्प्रत्यय होता है अन्यत्र नहीं ॥

दक्ष, दृक्ष, दृश यह पर हुए संते । उदाहरण–' कमिव पश्यति ' इस विग्रहमें दृश्धातुसे टक् सक् क्विप्प्रत्यय करनेके अनन्तर किम्शब्दको की आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । कीदृक्षः । इत्यादिक । ' इदमिव पश्यति ' इस विग्रहमें दृश्धातुसे ईदृश' । इत्यादि । आदेशमें शकार सर्वादेशके अर्थ है । ' भवन्तमिव पश्यति ' इस विग्रहमें दृश्धातुसे टक् आदिक प्रत्यय करनेके अनन्तर ' आसर्वादे ' इसकर भवत्शब्दके टिको आकार करनेपर सिद्ध हुआ । भवादृश' । इत्यादि । इसी प्रकार सिद्ध हुए । यादृश' । इत्यादिक जानने । अदस्शब्दको अमू आदेश होय दक्ष, दृश, दृक्ष यह पर हुए संते । उदाहरण– अमु पश्यति ' इस विग्रहमें दृश्धातुसे टक् आदिक प्रत्यय करनेपर अदस्को अमू आदेश करनेसे सिद्ध हुआ । अमूदृश । इत्यादि । ' मां त्वामिव पश्यति ' इस विग्रहमें दृश्से टक् आदिक प्रत्यय करनेके अनन्तर ' त्वन्मदेकत्वे ' इसकर एकवचन होनेसे अस्मद् युष्मद्को मत् त्वत् यह आदेश किये फिर ' आसर्वादे ' इसकर टिको आकार किया तब सिद्ध हुआ । मादृशः । त्वादृश । इत्यादिक । और जहां युष्मद् अस्मद्शब्द एकवचनवाची नहीं हों तहां । युष्मादृश' । अस्मादृश' । इत्यादिक जानने । समानको स यह आदेश होय दृश, दृक्ष, दक्ष यह पर हुए संते । उदाहरण–' समानमिव पश्यति ' इस विग्रहमें दृश्धातुसे टक् आदि प्रत्यय करनेपर समानको स यह आदेश करनेसे रूप सिद्ध हुआ । सदृश' । इत्यादि ॥

णिनिरतीते ॥६८२॥ धातोरतीते काले शीले च णिनिः ॥ अग्निष्टोमेनायाक्षीत् । यजनशीलो वा । अग्निष्टोमयाजी । पितृव्यघाती । उष्णभोजी ॥

भाषा–नाम और उपसर्ग उपपद हुए संते धातुसे अतीत नाम व्यतीत कालमें और शीलार्थके विषै णिनि प्रत्यय होय प्रत्ययमें णकार वृद्ध्यर्थ और इकार उच्चारणार्थ है । उदाहरण–' अग्निष्टोमेन अयाक्षीत् ' इस विग्रहमें अग्निष्टोम नाम उपपद है और यजधातुसे अतीतकालमें णिन्प्रत्यय है इस कारण यजधातुसे णिन्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' अत उपधायाः इसकर धातुसे उपधारूप अकारको वृद्धि किया फिर समास करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । अग्निष्टोमयाजी । और अग्निष्टोमेन यष्टुं शीलमस्य ' इस विग्रहमें शीलमर्थ विद्यमान है इस कारण यजधातुसे णिन्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । अग्निष्टोमयाजी । शेष रूप इसी प्रकार जानने ॥

व्रते च ॥ ६८३ ॥ स्थण्डिलशायी ॥

स्ययको इट् किया फिर ' शीङ्स्विदिमिद० ' इसकर गुण किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । अधिशयितः । ' अध्यष्ठात् ' इस अर्थमें अधिपूर्व स्थाधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर ' स्थामिः ' इसकर स्थाधातुके आकारको इकार किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । अधिष्ठितः । ' उपासिष्ट ' इस अर्थमें उपपूर्व आसधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर धातुको सेट् होनेसे इट् किया तब सिद्ध हुआ । उपासितः । ' उपावात्सीत् ' इस अर्थमें उपपूर्व वसधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर 'वसतिक्षुधोरिट् ' इसकर क्तप्रत्ययको इट् किया फिर ' यजां० ' इसकर संप्रसारण किया फिर ' घसादेः षः ' इसकर षकार किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । उपोषितः । ' अन्वजनिष्ट ' इस अर्थमें अनुपसर्ग पूर्व जनीधातुसे क्तप्रत्यय किया ' आदीदितः ' इसकर इट् नहीं हुआ फिर ' जनसनखनामात्व० ' इसकर टिको आकार किया तब सिद्ध हुआ । अनुजातः । ' आरुक्षत् ' इस अर्थमें आङ्पूर्व रुहधातुसे क्तप्रत्यय किया धातुको अनिट् होनेसे इट् नहीं हुआ फिर 'हो ढः, तथोर्धः ' ष्टुभिः ष्टुः, ढि ढो लोपो० ' इनकर सिद्ध हुआ । आरूढः । ' अन्वजारीत् ' इस अर्थके विषै अनुपूर्व जधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर ' कितः ' इसकर इट् हुआ नहीं फिर ' ऋत इर् , य्वोर्विहसे, रः ' इनकर सिद्ध हुआ । अनुजीर्णः ॥

क्तो वा सेट् ॥ ६८८ ॥ उदुपधात्सेट् क्तो वा कित् ॥ द्युतितं द्योतितम् । प्रमुदितः प्रमोदितः साधुः ॥

भाषा—उकार है उपधारूप जिसका ऐसे धातुसे इट्युक्त क्तप्रत्यय विकल्पकरके कित् होता है भाव और कर्म इन अर्थोंके विषै । ' अद्योति ' इस अर्थमें द्युतधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर इट् आगम किया तब रूप स्थित हुआ द्युत-इन्क्त फिर द्युतधातुमें उपधारूप उकार होनेसे इट्युक्त क्तप्रत्यय विकल्पकरके कित्संज्ञक है इस कारण गुण न होनेसे सिद्ध हुआ । द्युतितम् । और जहां द्युतधातुसे इट्युक्त क्तप्रत्यय कित् नहीं है तहां गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । द्योतितम् । ' प्रामोदि ' इस अर्थमें मुद्धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर इट् किया ' क्तो वा सेट् ' इसकर एक जगह इट्युक्त क्तप्रत्यय कित् है इस कारण गुण न होनेसे सिद्ध हुआ । प्रमुदितः । और जहां इट्युक्त क्तप्रत्यय कित् नहीं है तहां गुण होनेसे सिद्ध हुआ । प्रमोदितः ॥

शीङ्स्विदिमिदिक्ष्विदिधृषमृषपूङ्स्सेटौ क्तक्तवतू कितौ न ॥ ६८९ ॥ शयितः शयितवान् । प्रस्वेदितः प्रस्वेदितवान् । क्ष्वेदितः क्ष्वेदितवान् । धर्षितः धर्षितवान् ॥

अकर्मक होनेसे भावमर्थमी। है इस कारण स्नाधातुसे क्तप्रत्यय किया क्तप्रत्ययमें ककार इत्संज्ञक है तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ। स्नातम् । ' कटः अकारि ' इस विग्रहमें अतीतकाल तथा धातुको सकर्मक होनेसे कर्मअर्थमी विद्यमान है इस कारण कृधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर धातुको गुण वी हुआ नहीं क्योंकि क्ङित्प्रत्यय क्त परे विद्यमान है तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । कृत' कट' । ' विश्वमकार्षीत् ' इस विग्रहमें अतीतकाल और कर्त्ताअर्थ विद्यमान है इस कारण कृधातुसे क्तवतु प्रत्यय किया प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके वास्ते है और उकार ' मितो नुम् ' इसकर नुम्‌विधानके अर्थ है तब रूप स्थित हुआ कृतवत् फिर नामसंज्ञामें सिवि भक्तिके विषै सिद्ध हुआ । कृतवान् ॥

गत्यर्थादकर्मकाच्च कर्त्तरि क्तः ॥ ६८६ ॥ भावकर्मणोरपि ॥ गतागत । स्थित । अमान्तस्योपधाया दीर्घ क्ङिति झसे को च । शान्त । दान्तः ॥

भाषा-गति है अर्थ जिसका ऐसे धातुसे और अकर्मक धातुसे कर्त्ताअर्थमें क्तप्रत्यय होय और भावकर्म इन दोनोंके विषैभी होय । उदाहरण-' गतामगमत् ' इस विग्रहमें गत्यर्थ धातु और कर्त्ताअर्थ है इस कारण गम्‌धातुके क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर लोपस्तनुदात्ततनाम् ' इसकर मकारका लोप किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । गत ।' अस्थात् ' इसमें अकर्मक धातु और कर्त्ताअर्थ विद्यमान है इस कारण स्थाधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर ' स्थामि' इसकर स्थाधातुके आकारको इकार किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । स्थित ।' अशमत् । अदमत् ' इनमें अकर्मक धातु तथा कर्त्ताअर्थ विद्यमान है इस कारण शमु दमु धातुसे क्तप्रत्यय करनेक अनन्तर क्वचिदिट् इसकर इट् हुआ नहीं ' अमान्तस्योपधाया दीर्घ क्ङिति झसे ' इसकर उपधाको दीर्घ किया तब रूप सिद्ध हुआ । शान्त' । दान्त' ॥

श्लिषशीङ्स्थाआसवसजनरुहजीर्यतिभ्यश्च ॥ ६८७ ॥ राम मीनामाश्लिष्टः । शेषमधिशयितः । स्वर्गमधिष्ठित । हरिमुपासित । हरिदिनमुपोषित । तमनुजात । नृपमारूढ । जगदनुजीर्ण ॥

भाषा-श्लिष, शीङ् स्था, आस, वस, जनी रुह, जृ इन धातुओंसे कर्त्ता अर्थमें क्तप्रत्यय होय और भावकर्म इन दोनोंके विषैभी होय । उदाहरण-' मा- लिङ्गत् ' इस अर्थमें आङ्‌पूर्व श्लिष्‌धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर ' पुषि' षु ' इसकर रूप स्थित हुआ आश्लिष्ट फिर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ। आश्लिष्ट । अध्यशे- पिष्ट इस अर्थमें अधिपूर्व शीङ्‌धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर धातुसे सेट् होनेसे क्त-

'कितः' इसकर इट् न होनेपर सिद्ध हुआ । श्रितः । इसी प्रकार टुओश्विइर् धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर 'कितः' इसकर इट् तौ हुआ नहीं किन्तु । श्विधातुके संप्रसारणरूप स्वरको दीर्घ होय क्ति अकार स्वरसहित तकार पर हुए संते । उदाहरण-'श्वित' इसमें 'यजां०' इसकर श्विधातुको संप्रसारण किया तब रूप स्थित हुआ शुत फिर श्विधातुके संप्रसारणरूप उकारको दीर्घ किया क्योंकि क्तिसं-ज्ञक क्तप्रत्ययका तकार परे विद्यमान है फिर 'ल्वाद्योदितश्च' इसकर क्तप्रत्ययके तकारको नकार करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । शूनः । संप्रसारण हुए संते वेञ्धातुको ह्रस्व होय क्ति अकारसहित तकार पर हुए संते । उदाहरण-वेञ्धा-तुसे क्तप्रत्यय करनेपर संप्रसारण करनेसे रूप स्थित हुआ ऊत फिर ह्रस्व किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । उतम् ॥

आदीदितः ॥ ६९३ ॥ आदित ईदितश्च क्तक्तवत्वोर्नेट् ॥

भाषा-आकार है इत् जिसका ऐसे धातुसे और ईकार है इत् जिसका ऐसे धातुसे क्त और क्तवतु इन प्रत्ययोंको इट् नहीं होय । उदाहरण-जनी इस धातुसे क्तप्रत्यय किया तब इस धातुमें ईकार इत् है इससे क्तप्रत्ययको इट् न होनेसे 'जनसनखनामात्व०' इसकर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । जातः ॥

ञीतां क्तवर्तमानेऽपि ॥ ६९४ ॥ ञीतां धातूनां मतिबुद्धिपूजा-र्थानां च वर्तमानेऽपि क्तः ॥ राज्ञां मतः । बुद्धः । इष्टः ॥

भाषा-ञि है इत् जिनका ऐसे धातुओंसे और मति, बुद्धि, पूजा यह अर्थ हैं जिनके ऐसे धातुओंसे वर्त्तमानअर्थके विषैं तक्त प्रत्यय होय । उदाहरण-'मन्यते' इस अर्थमें मति तथा वर्त्तमान अर्थ विद्यमान है इस कारण मनधातुसे कर्ममें तक्त प्रत्यय करनेपर धातुको अनिट् होनेसे इट् तौ हुआ नहीं 'लोपस्त्वनुदात्ततनाम्' इसकर नकारका लोप किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । मतः । 'बुध्यते । विद्यते' इन विग्रहोंमें बुद्धि अर्थ तथा वर्त्तमानकाल विद्यमान है इस कारण बुध विद् धातुसे तक्त प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । बुद्धः । विदितः । 'पूज्यते' इसमें पूजा अर्थ तथा वर्तमान काल विद्यमान है इस कारण तक्तप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । पूजितः ॥

दस्तस्य नो दश्च ॥ ६९५ ॥ दकारात्परस्य कितस्तस्य नत्वं दकारस्य च ॥ भेदितं भिन्नम् ॥

भाषा-दकारसे परे क्ति अकारसहित तकारको नकार होय और दकारकोभी होय । उदाहरण-ञिप्रत्ययान्त भिद्धातुसे कर्ममें क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर इट् आगम करनेपर 'सेटोः क्तक्तवत्वोर्ञिलोपः' इसकर ञिप्रत्ययका लोप करनेसे

भाषा–शीङ्, स्विद्, मिद्, क्ष्विद्, धृष्, मृष्, पूङ् इन धातुओंसे इट्युक्त क और इट्युक्त क्तवतु यह प्रत्यय कित् नहीं होते हैं। उदाहरण–' अशयिष्ट ' इस अर्थमें शीङ्धातुसे क्त क्तवतु प्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको सेट् होनेसे क्तप्रत्यय और क्तवतुप्रत्ययको इट् किया फिर इट्युक्त क्तप्रत्यय और इट्युक्त क्तवतु प्रत्ययको कित् न होनेसे शीङ्धातुको गुण करनेपर सिद्ध हुआ । शयित । शयितवान् । ' प्रास्वेदिष्ट ' इस अर्थमें ञिष्विदाधातुसे क्त क्तवतु प्रत्यय करनेके अनन्तर ' मत्ते कर्त्तरि चादित ' इसकर जहां एक जगह इट् हुआ वहां क्त क्तवतु कित् न होनेसे गुण करनेपर सिद्ध हुआ । प्रस्वेदित, प्रस्वेदितवान् । शेष रूप इसी प्रकार जानने॥

मृष क्षान्तौ ॥ ६९० ॥ मर्षित मर्षितवान् ॥

भाषा–मृष्धातुसे इट्युक्त क्त क्तवतु प्रत्यय कित् नहीं होते हैं क्षमाअर्थके विषैं। उदाहरण–मृष्धातुसे क्षांतिअर्थमें क्त क्तवतु प्रत्यय करनेपर धातुको सेट् होनेसे क्त क्तवतु प्रत्ययोंको इट् आगम किया फिर मृष्धातुसे क्षांतिअर्थमें सेट् क्त क्तवतुको कित् न होनेसे धातुको गुण करनेसे सिद्ध हुआ । मर्षित , मर्षितवान् ॥

पूङो वा कितस्तस्येट्॥६९१॥ पवित पूत । पवितवान् पूतवान् ।

भाषा–पूङ्धातुसे कित ककार स्वरसहित तकारको विकल्पकरके इट् होय । उदाहरण–पूङ्धातुसे क्त क्तवतु प्रत्यय करनेपर एक जगह क्त क्तवतु प्रत्ययके कित् तकारको इट् किया तहां ' शीङ्स्विदिमिदि० ' इसकर सेट् क्त क्तवतु प्रत्यय कित् न होनेसे गुण करनेपर सिद्ध हुआ । पवित, पवितवान् । और जहां इट् नहीं हुआ वहां क्त क्तवतु प्रत्यय कित् होनेसे गुण नहीं हुआ तब सिद्ध हुआ । पूत पूतवान् ॥

कित ॥ ६९२ ॥ उवर्णान्तादृवर्णान्तात् श्विश्रिभ्यां च परस्य कितस्तस्य इण्न ॥ भूत । वृत । श्रित । श्वयतेस्सम्प्रसारणस्य दीर्घ किति ते ॥ शून । मेञो ह्रस्व । किति ते । उतम् ॥

भाषा–उवर्णांत और ऋवर्णांत और श्वि, श्रि इन धातुओंसे परे कित् ककार स्वरसहित तकारको इट् नहीं होय । उदाहरण–' अभूत ' इस अर्थमें भूधातुसे क्त प्रत्यय करनेपर क्तप्रत्ययको इट् नहीं हुआ क्योंकि उकारान्तधातुसे परे क्तप्रत्ययका कित् तकार विद्यमान है तब सिद्ध हुआ । भूत । ' अवारि ' इस अर्थमें वृञ्धातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको ऋकारान्त होनेसे क्तप्रत्ययको इट् न होनसे सिद्ध हुआ । वृत । इसी प्रकार श्रिञ्धातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर

१ तस्य से जहां कहीं तस्य त ऐसा कहा जाय तहां ककार स्वरसहित तकारका ग्रहण करना चाहिये ॥

'क्तिः' इसकर इट् न होनेपर सिद्ध हुआ । श्रितः । इसी प्रकार टुओश्विइर् धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर 'क्तिः' इसकर इट् तो हुआ नहीं किन्तु । श्विधातुके संप्रसारणरूप स्वरको दीर्घ होय क्ति् अकार स्वरसहित तकार पर हुए संते । उदाहरण-'श्वित' इसमें 'यजां०' इसकर श्विधातुको संप्रसारण किया तब रूप स्थित हुआ शुत फिर श्विधातुके संप्रसारणरूप उकारको दीर्घ किया क्योंकि कित्सं-ज्ञक क्तप्रत्ययका तकार परे विद्यमान है फिर 'ल्वाद्योदितश्च' इसकर क्तप्रत्ययके तकारको नकार करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । शूनः । संप्रसारण हुए संते वेञ्धातुको ह्रस्व होय कित् अकारसहित तकार पर हुए संते । उदाहरण-वेञ्धा-तुसे क्तप्रत्यय करनेपर संप्रसारण करनेसे रूप स्थित हुआ ऊत फिर ह्रस्व किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । उतम् ॥

आदीदितः ॥ ६९३ ॥ आदित ईदितश्च क्तक्तवत्वोर्नेट् ॥

भाषा-आकार है इत् जिसका ऐसे धातुसे और ईकार है इत् जिसका ऐसे धातुसे क्त और क्तवतु इन प्रत्ययोंको इट् नहीं होय । उदाहरण-जनी इस धातुसे क्तप्रत्यय किया तब इस धातुमें ईकार इत् है इससे क्तप्रत्ययको इट् न होनेसे 'जनसनखनामात्व०' इसकर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । जातः ॥

ञीतां क्तवर्तमानेऽपि ॥ ६९४ ॥ ञीतां धातूनां मतिबुद्धिपूजा-र्थानां च वर्तमानेऽपि क्तः ॥ राज्ञां मतः । बुद्धः । इष्टः ॥

भाषा-ञि है इत् जिनका ऐसे धातुओंसे और मति, बुद्धि, पूजा यह अर्थ हैं जिनके ऐसे धातुओंसे वर्त्तमानअर्थके विषैं तक् प्रत्यय होय । उदाहरण-'मन्यते' इस अर्थमें मति तथा वर्त्तमान अर्थ विद्यमान है इस कारण मनधातुसे कर्ममें तक् प्रत्यय करनेपर धातुको अनिट् होनेसे इट् तौ हुआ नहीं 'लोपस्त्वनुदात्ततनाम्' इसकर नकारका लोप किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । मतः । 'बुध्यते । विद्यते' इन विग्रहोंमें बुद्धि अर्थ तथा वर्त्तमानकाल विद्यमान है इस कारण बुध विद धातुसे तक् प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । बुद्धः । विदितः । 'पूज्यते' इसमें पूजा अर्थ तथा वर्तमान काल विद्यमान है इस कारण तक्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । पूजितः ॥

दस्तस्य नो दश्च ॥ ६९५ ॥ दकारात्परस्य कितस्तस्य नत्वं दकारस्य च ॥ भेदितं भिन्नम् ॥

भाषा-दकारसे परे कित् अकारसहित तकारको नकार होय और दकारकोभी होय । उदाहरण-ञिप्रत्ययान्त भिदधातुसे कर्ममें क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर इट् आगम करनेपर 'सेटोः क्तक्तवत्वोर्ञिलोपः' इसकर ञिप्रत्ययका लोप करनेसे

सिद्ध हुआ । मेदितम् । और मेदन सिद्‌धातुसे क्तमें क्तप्रत्यय करनेपर इद् भी हुआ नहीं तब दकारसे परे किन् तकार है इस तकारको नकार और दकारको नकार करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । भिन्न ।

भावे कर्तरि चादित आकान्तात्तोरिड्वा ॥ ६१६ ॥ मेदितः भिन्नः । स्वेदितः स्विन्नः । स्वेदितं स्विन्नं ॥

भाषा—आकार है इत् जिसका ऐसे धातुसे भाव और कर्तामें क्त ऐसे प्रत्ययमें विकल्पकरके इद् होय । उदाहरण—' मिपर्दे, नदे ' इस ञिमिदाधातुसे क्त प्रत्यय करनेपर जहां इद् हुआ वहां ' आद्यन्तवत् ' इसकर तप्रत्यय कित् न होनेसे गुण करनेपर सिद्ध हुआ । मेदितः । और इद् नहीं हुआ वहां क्त प्रत्यय कित् होनेसे गुण भी हुआ नहीं ' रदाभ्यां ' इसकर तकार दकार दोनोको नकार करनेसे सिद्ध हुआ । भिन्नः । इसी प्रकार शेष रूप जानने ॥

अदो जग्धु ॥ ६१७ ॥ किति तकारे ॥ जग्धः ॥

भाषा—अद्‌धातुको जग्धु आदेश होय कित् तकारादि प्रत्यय परे हुए हो। उदाहरण—अद्‌धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर जग्धु आदेश किया इसमें उकार उच्चारणार्थ है धातुको अनिद् होनेसे क्तप्रत्ययको इ भी हुआ नहीं ... ' झषस्तथोर्धोऽधः ' इसकर रूप सिद्ध हुआ । जग्धः ॥

र ॥ ६१८ ॥ रेफात्क्तिस्तस्य नत्वम् ॥ विकीर्णम् । जीर्णम् ॥

भाषा—रकारसे परे कित् तकारको नकार होय । उदाहरण—कॄ, जॄ इन धातुओंसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर ' कित् ' इसकर क्तप्रत्ययको इद् नहीं हुआ ' ऋत इर् ' इसकर ऋकारको इर् किया फिर ' र्वोरुपधाया दीर्घ इकः ' इसकर दीर्घ किया फिर ' र ' इसकर तकारको नकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । विकीर्णम् । जीर्णम् ॥

ल्वाद्योदितश्च ॥ ६१९ ॥ ल्वादेरोदितश्च धातोः क्तिस्तस्य नो भवति ॥ लूनः लूनवान् । ज्या वयोहानौ । जीन ॥

भाषा—लूञ् आदिक धातुओंसे और औकार है इत् जिसका ऐसे धातुसे क्त और क्तवतु प्रत्ययके कित् अक्षर स्वरसहित तकारको नकार होय । उदाहरण—लूञ्‌धातुसे क्त और क्तवतु प्रत्यय करनके अनन्तर क्त क्तवतु प्रत्ययके कित् तकारको नकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । लून , लूनवान् । ज्याधातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर ग्रहा० '

---

१ लूञ्, स्तॄञ्, कॄञ्, वॄञ्, धूञ्, शॄ, पॄ, वॄ, भॄ, मॄ, दॄ, जॄ, झॄ, धॄ, नॄ, कॄ, ॠ, गॄ, ज्या, री, ली, व्ली, प्ली यह धातु ल्वादिक हैं ॥

इसकर संप्रसारण किया फिर ज्याधातुको ल्वादि होनेसे क्तप्रत्ययके तकारको नकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । जीनः ॥

प्यायः पी ति किति ॥७००॥ पीनः । भुजो कौटिल्ये । भुग्नः । हीनः । स्वादय ओदितः ०। षूङ् प्राणिप्रसवे । सूनः सूनवान् ॥ दूङ् परितापे । दूनः । मीनः । दीङ् । उड्डीनः । दीनः । लीनः । व्रीणः । रीणः । धीनः ॥

भाषा–प्यायधातुको पी यह आदेश होय कित् तकारादि प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–ओप्यायीधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर धातुको ईदित् होनेसे इट् तौ हुआ नहीं और प्यायको पी आदेश किया क्योंकि कित् तकारादि प्रत्यय क्त परे विद्यमान है फिर धातुको ओदित् होनेसे 'ल्वाद्योदितश्च' इसकर क्तप्रत्ययके तकारको नकार किया तब रूप सिद्ध हुआ । पीनः । भुजोधातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको अनिट् होनेसे इट् नहीं हुआ फिर 'चोः कुः' इसकर जकारको गकार किया पश्चात् धातुको ओदित् होनेसे 'ल्वाद्योदितः०' इसकर क्तप्रत्ययके तकारको नकार करनेसे सिद्ध हुआ । भुग्नः । ओहाक्धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर धातुको अनिट् होनेसे इट् नहीं हुआ फिर 'घुमास्थागापाजहातिसां हलि' इसकर ईकार किया पश्चात् धातुको ओदित् होनेसे क्तप्रत्ययके तकारको नकार करनेसे सिद्ध हुआ । हीनः । षूङ्धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर 'स्वादय ओदितः' इसकर ओदित् होनेसे क्तप्रत्ययके तकारको नकार करनेसे सिद्ध हुआ । सूनः । इसी प्रकार शेष रूप स्वादिकोंके सिद्ध करने चाहिये ॥

दुग्वोर्दीर्घश्च ॥ ७०१ ॥ दूनः । गूनः ॥

भाषा–दु, गु इन धातुओंसे परे कित् अकारसहित तकारको नकार होय और इन दोनों धातुओंको दीर्घ होय । उदाहरण–यहा 'टुदु उपतापे' धातुका ग्रहण नहीं 'दु गतौ' धातुका ग्रहण है दुधातुसे तथा गुधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर प्रत्ययके तकारको नकार और धातुको दीर्घ करनेसे सिद्ध हुआ । दूनः । गूनः ॥

क्षियो दीर्घः कर्त्तरि क्तक्तवत्वोर्नत्वं च ॥ ७०२ ॥ क्षीणः क्षीणवान् । कर्त्तरि किम् । क्षितम् ॥

भाषा–क्षिधातुसे परे कर्त्ताअर्थमें स्थित क्त क्तवतु प्रत्ययोंके तकारको नकार होय और क्षिधातुको दीर्घ होय । उदाहरण–'अक्षैषीत्' इस अर्थमें क्त क्तवतु प्रत्यय करनेपर इन दोनों प्रत्ययोंको तकारको नकार किया फिर धातुको दीर्घ किया

तब रूप सिद्ध हुआ । क्षीणः, क्षीणवान् । ' कर्त्तरि ' ऐसा क्यों कहा यहां 'क्षीयते' इस अर्थमें क्षिधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर नकार और दीर्घ नहीं हुआ । जैसे–क्षितम् ॥

यण्संयोगादेरादन्तात्क्तितस्तस्य नत्वम् ॥ ७०३ ॥ द्राण । ग्लान । म्लान ॥

भाषा–यण्प्रत्याहार है संयोगसंज्ञक आदिमें जिसके ऐसे आकारान्त धातुसे परे कित्संज्ञक अकारयुक्त तकारको नकार होय । उदाहरण–द्राधातुसे क्तप्रत्यय किया द्राधातुके आदिमें यण्प्रत्याहारसंबन्धी[1] रकार संयोगसंज्ञक है और अन्तमें आकार है इस कारण द्राधातुसे क्तप्रत्ययके तकारको नकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । द्राण । इसी प्रकार ग्लै म्लै धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुए । ग्लान । म्लान ॥

नुदविदोन्दत्राघ्राह्रीनिर्वाभ्यो वा ॥ ७०४ ॥ त्राण त्रातः । घ्राण घ्रात । ह्रीण ह्रीत । नुन्न नुत्त । विद विचारणे । विन्न वित्त । उन्दी क्लेदने । उत्तः उन्न । निर्वाणो मुनिर्वह्निर्वातो निर्वा-तस्तु वातेऽनिले ॥

भाषा–नुद, विद, उन्दी, त्रा, घ्रा, ह्री, निरुपसर्गपूर्व वा इन धातुओंसे परे क्ति अकारसहित तकारको विकल्पकरके नकार होय । उदाहरण–नुदधातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर एक जगह क्तप्रत्ययके तकारको नकार किया और 'रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः' इसकर दकारको नकार किया तहां सिद्ध हुआ । नुन्न । और जहां क्तप्रत्ययके तकारको नकार नहीं हुआ तहां ' खरि च ' इसकर दकारको तकार करनेपर सिद्ध हुआ । नुत्त । ' विद् विचारणे ' इस रुधादिगणीय धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर जहां क्तप्रत्ययके तकारको नकार किया और दकारको नकार किया वहां सिद्ध हुआ । विन्न । और जहां क्तप्रत्ययके तकारको नकार नहीं हुआ वहां सिद्ध हुआ । वित्त । उन्दीधातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुसे ईदित् होनेसे ' श्वीदितो निष्ठायाम् ' इसकर क्तप्रत्ययको इट् भी हुआ नहीं विकल्पकरके क्तप्रत्ययके तकारको नकार और ' नो लोपः ' इसकर उन्दधातुके नकारका लोप किया फिर 'रदाभ्यां निष्ठा' इसकर दकारको भी नकार किया तब सिद्ध हुआ । उन्न । और जहां क्तप्रत्ययके तकारको नकार नहीं हुआ वहां ' नो लोपः ' इसकर नकारका लोप कर ' खरि च ' इसकर दकारको तकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । उत्त । त्रा घ्रा इन धातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर एक जगह क्तप्रत्ययके तकारको नकार करनेसे रूप सिद्ध हुए । त्राण । घ्राण और जहां क्तप्रत्ययके तकारको

1 भाष्यप्रमाणम् । येनेष्यु निर्दिष्टो नित्य निर्दिष्टोऽपि दृश्यते । निर्दिष्टतम [illegible] ... दि रे ॥

नकार नहीं हुआ तहां सिद्ध हुए । त्रातः । घ्रातः । इसी प्रकार ह्रीधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुए । ह्रीणः, ह्रीतः । मुनिवद्गत्यादिक अर्थोंके विषे निर् उपसर्ग पूर्व होनेसे वाधातुसे क्तप्रत्ययके तकारको नकार होता है तहां सिद्ध हुआ । निर्वाणः । और गतवातअर्थमें निर् उपसर्ग पूर्व होनेसे वाधातुसे क्तप्रत्ययके तकारको नकार नहीं होता है तहां सिद्ध हुआ । निर्वातः ॥

दो दत्ति ॥ ७०५ ॥ दा इत्यस्य दथ् किति तकारे न तु पितः ॥ दत्तः दत्तवान् ॥

भाषा-दा इस धातुको दथ् आदेश होय कित् तकार पर हुए संते और पित्संज्ञक दारूप धातुको दथ् आदेश नहीं होय । उदाहरण—डुदाञ्धातुसे क्त क्तवतु प्रत्यय करनेके अनन्तर दाधातुको दथ् आदेश किया तब 'खसे च०' इसकर सिद्ध हुआ । दत्तः ॥

स्वरांतो वा ॥ ७०६ ॥ स्वरान्तादुपसर्गादुत्तरस्य दा इत्यस्य तो वा किति तकारे न तु पितः ॥ प्रत्तः प्रदत्तः । अवत्तः अवदत्तः ॥

भाषा-स्वर है अन्तमें जिसके ऐसे उपसर्गसे परे दा इस धातुको तकार होय विकल्पकरके कित् तकार पर हुए संते पित्संज्ञक दा इस धातुको तकार नहीं होय । उदाहरण-प्र, अव यह उपसर्ग पूर्व युक्त करनेपर डुदाञ्धातुसे क्तप्रत्यय किया तब रूप स्थित हुआ प्रदात, अवदात इनमें स्वरान्त प्र, अव इन उपसर्गोंसे परे दाधातु विद्यमान है और दाधातुसे क्तप्रत्ययका कित् तकार परे है इस कारण दाधातुको तकार आदेश करनेपर रूप सिद्ध हुआ । प्रत्तः । अवत्तः । और जहां दाधातुको तकार आदेश नहीं हुआ तहां 'दो दत्ति' इसकर सिद्ध हुआ । प्रदत्तः । अवदत्तः ॥

नाम्यन्तोपसर्गस्य दीर्घो दादेशे तकारे ॥ ७०७ ॥ सुष्ठु अदायि सूत्तम् । नीत्तम् ॥

भाषा—नामिसंज्ञक स्वर है अन्तमें जिसके ऐसे उपसर्गको दीर्घ होय दाधातुके स्थानमें जो कि आदेश तकार है वह पर हुए संते । उदाहरण—सुष्ठु अदायि । इस अर्थमें सु उपसर्ग पूर्व दाधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर 'स्वरान्तो वा' इसकर दाधातुके स्थानमें जहां तकार आदेश हुआ तहां नाम्यन्त सुउपसर्गको दीर्घ करनेसे रूप सिद्ध हुआ । सूत्तम् । इसी प्रकार निउपसर्ग पूर्व दाधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर जहां दाधातुको तकार आदेश हुआ तहां सिद्ध हुआ । नीत्तम् ॥

धाञो हिः किति ते ॥ ७०८ ॥ निहितः ॥

भाषा–घासधातुको हि आदेश होय कित् ककारयुक्त तकार पर हुए संते। उदाहरण–निरुपसर्ग पूर्व घासधातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको हि आदेश किया क्योंकि कित् तकार परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । निहितम् ॥

ध्यास्त्यापृमुर्छिमदिभ्यो न नत्वम् ॥७०९॥ ध्यातः । स्यात' । पूर्वः । मूर्त' । मत्त' । यष्ट । इष्टम् । उप्तम् । ऊढः । व्येञ् । वीत' । ह्वेञ् । हूत' । उदित । उक्त ॥

भाषा–ध्यै, स्त्या, पृ, मुर्छ, मदी इन धातुओंसे परे क्त क्तवतु प्रत्ययोंके तकारको नकार नहीं होय । उदाहरण–ध्यै, स्त्या धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर 'धव-संयोगादे०' इसकर तकारको नकारकी प्राप्ति थी सो नहीं हुई तब सिद्ध हुआ । ध्यात' । स्त्यात' । पृधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर 'कित' इसकर इट् नहीं हुआ । 'पोरुर्' इसकर ऋकारको उर् कर 'र्वोरीहसे' इसकर दीर्घ किया यहां 'ल्वाद्योदितश्च' इसकर नकार नहीं हुआ तब सिद्ध हुआ । पूर्वः । मुर्छधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर 'आदीदित' इसकर इट् भी हुआ नहीं 'रेफाच्छोर्लोप०' इसकर छकारका लोप किया 'र्वोर्वि०' इसकर दीर्घ किया, यहां 'र' इसकर तकारको नकारकी प्राप्ति थी सो नहीं हुई तब सिद्ध हुआ । मूर्त' । मदीधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर 'आदीदित' इसकर इट् भी हुआ नहीं 'दस्तस्य नोदध' इसकर तकारको नकारकी प्राप्ति थी सो नहीं हुई तब 'स्तस यपा०' इसकर दकारको तकार करनेपर सिद्ध हुआ । मत्तः । यजधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर 'उभय यजां०' इसकर सिद्ध हुआ । इष्टम् । डुवपधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर 'यजां०' इसकर सम्प्रसारण करनेपर सिद्ध हुआ । उप्तम् । वहधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर 'यजां०' इसकर सम्प्रसारण किया हो ढ', तथोर्ध', ष्टुभि'० ढि ढो लोपो दीर्घश्च इनकर सिद्ध हुआ । ऊढ' । व्येञ् ह्वेञ् इन धातुओंसे सम्प्रसारण करनेसे सिद्ध हुआ । वीत' । हूत । वदधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर धातुको सेट् होनेसे इट् हुआ फिर 'यजां०' इसकर सम्प्रसारण करनेपर सिद्ध हुआ । उदित । वचधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर 'यजां० इसकर संप्रसारण करनेसे सिद्ध हुआ । उक्तः ॥

वसतिक्षुधोरिट् क्त्वाक्तक्तवतूनाम् ॥७१०॥ उषित । क्षुधित । मुतः ॥

भाषा–वस क्षुध इन धातुओंसे परे क्त्वा, क्त, क्तवतु इन प्रत्ययोंको इट् आगम होय । उदाहरण–'वस निवासे' धातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर इट् आगम किया फिर 'यजां०' इसकर वकारको उकार संप्रसारण कर 'घसादे' ष' इसकर सकारको षकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । उषित' । क्षुधधातुसे क्तप्रत्ययको इट् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । क्षुधितः । मिन्धप् इस धातुसे क्तप्रत्यय

करनेके अनन्तर धातुको अनिट् होनेसे इट् नहीं हुआ । 'यजा०' इसकर संप्रसारण करनेसे सिद्ध हुआ । सुप्तः ॥

क्वचिद्विटः क्तक्तवत्वोर्नेट् ॥ ७११ ॥ व्रश्चू । वृक्णः वृक्णवान् ॥

भाषा–जिस धातुसे किसी स्थलमें विकल्पकरके इट् विधान किया गया हो उस धातुसे परे क्त, क्तवतु इन प्रत्ययोंको इट् नहीं होय । उदाहरण–ओव्रश्चू धातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर इट् आगम तौ हुआ नहीं क्योंकि 'ऊदितो वा' इसकर ऊदित् धातुसे इट् विकल्पकरके होता है फिर 'ग्रहां क्ङिति०' इसकर संप्रसारण किया पश्चात् ओदित् होनेसे क्तप्रत्ययके तकारको 'ल्वाद्योदितश्च' इसकर नकार किया फिर नकारके असिद्ध होनेसे झल पर हुए संते 'छशप०' इसकर षकारकी प्राप्ति थी सो 'क्तक्तवत्वोरादेशः षत्वस्वरप्रत्ययेड्विधिषु सिद्धो वाच्यः' इस कथनसे 'चोः कुः' इसकर चकारको ककार किया फिर 'स्कोराद्योश्च' इसकर सकारका लोप किया तब सिद्ध हुआ । वृक्णः ॥

अञ्चेः पूजायामिट् ॥ ७१२ ॥ अञ्चितः । उक्तः ॥

भाषा–पूजाअर्थके विषे अञ्चुधातुसे क्त क्तवतु प्रत्ययोंको इट् आगम होय । उदाहरण–अञ्चुधातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर 'उदितः क्त्वो वेट्' इसकर क्त्वाप्रत्ययमें विकल्पकरके इट् होनेसे 'क्वचिद्विटः क्तक्तवत्वोर्नेट्' इसकर इट्की प्राप्ति नहीं थी परन्तु पूजाअर्थमें इट् करनेपर सिद्ध हुआ । अञ्चितः । इसमें 'पूजार्थाञ्चतेर्न०' इसकर नकारका लोप नहीं हुआ और गतिअर्थमें क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर इट्भी नहीं हुआ 'नो लोपः' इसकर नकारका लोपभी हो गया 'चोः कुः' इसकर सिद्ध हुआ । अक्तः ॥

पचो वः ॥ ७१३ ॥ क्तक्तवत्वोस्तस्य ॥ पक्वः, पक्ववान् ॥

भाषा–पचधातुसे परे क्त क्तवतु प्रत्ययोंके तकारको वकार होय । उदाहरण–पचधातुसे क्तप्रत्ययके तकारको वकार किया फिर वकारके असिद्ध होनेसे 'चोः कुः' इसकर चकारको ककार किया तब सिद्ध हुआ । पक्वः, पक्ववान् ॥

क्षायो मः ॥ ७१४ ॥ क्षामः क्षामवान् ॥

भाषा–क्षैधातुसे परे क्त क्तवतु प्रत्ययोंके तकारको मकार होय । उदाहरण–क्षैधातुसे क्त क्तवतु प्रत्यय करनेके अनन्तर 'सन्ध्यक्षराणामानाव' इसकर आकार किया फिर धातुको अनिट् होनेसे इट् तौ नहीं हुआ क्त क्तवतु प्रत्ययोंके तकारको मकार करनेपर सिद्ध हुआ । क्षामः, क्षामवान् ॥

प्रस्त्यस्सम्प्रसारणं क्ङिति तस्य मो वा ॥ ७१५ ॥ प्रस्तीमः प्रस्तीतः ॥

भाषा-प्रपूर्व स्त्यैधातुको संप्रसारण होय किप्रत्यय पर हुए संते और क क्तवतु प्रत्ययोंके तकारको विकल्पकरके मकार होय। उदाहरण-प्रपूर्व स्त्यैधातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर संप्रसारण करनेपर रूप स्थित हुआ प्रस्तीत। फिर एक जगह क्तप्रत्ययके तकारको मकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ। प्रस्तीमः। और जहां क्तप्रत्ययके तकारको मकार नहीं हुआ वहां सिद्ध हुआ। प्रस्तीतः॥

शुषेः कः॥ ७१६॥ शुष्कः शुष्कवान्॥

भाषा-शुष्धातुसे परे क क्तवतु प्रत्ययोंके तकारको ककार होय। उदाहरण-शुष् धातुसे क्तप्रत्ययके तकारको ककार करनेसे रूप सिद्ध हुआ। शुष्कः॥

स्फायस्स्फी ति किति॥ ७१७॥ स्फीतः। धेट्। धीतम्। गीतम्। पीतम्। दो। दितम्। सो। सितम्। मितम्॥

भाषा-स्फायीधातुको स्फी आदेश होय कित्संज्ञक तकारादि प्रत्यय पर हुए संते। उदाहरण-स्फायीधातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर 'आदीदितः' इसकर इट् नहीं हुआ फिर स्फी आदेश किया तब रूप सिद्ध हुआ। स्फीतः। धेट्धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर 'अपिदाधागेहस्कृशिवनीनामी' इसकर धातुको ईकार करनेपर सिद्ध हुआ। धीतम्। इसी प्रकार गै, पा इन धातुओंसे क्तप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। गीतम्। पीतम्। दो, सो, मारूप इन धातुओंसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर 'स्यामिः' इसकर इकार करनेपर सिद्ध हुआ। दितम्। सितम्। मितम्॥

सेटो क्तक्तवत्वोर्णिलोपः॥ ७१८॥ चोरितः चोरितवान्। पाचितः पाचितवान्॥

भाषा-इट्युक्त जो क्त क्तवतु प्रत्यय पर हुए संते णिप्रत्ययका लोप होय। उदाहरण-चुरादिगणीय णिप्रत्ययान्त चोरिधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ चोरि-इ-त फिर णिप्रत्ययका लोप किया क्योंकि इट्युक्त क्तप्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ। चोरितः। क्तवतुप्रत्ययमें सिद्ध हुआ। चोरितवान्। णिप्रत्ययान्त पाचिधातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको अनेक स्वर होनेसे इट् करनेपर सिद्ध हुआ। पाचितः। क्तवतुप्रत्ययमें। पाचितवान्॥

ऊर्णोतिर्नेट्॥ ७१९॥ ऊर्णुतः॥

भाषा-ऊर्णुञ्धातुसे कित् तकारादि प्रत्ययोंको इट् नहीं होय। उदाहरण-ऊर्णुञ्धातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर इट् हुआ नहीं तब रूप सिद्ध हुआ। ऊर्णुतः॥

द्रवस्य काठिन्ये स्पर्शे चार्थे श्यैङस्सम्प्रसारणं कितस्तस्य नत्वं च न तु स्पर्शे॥ ७२०॥ शीनं घृतम्। स्पर्शे तु। शीतं जलम्॥

भाषा–द्रव्यके कठिनतारूप अर्थमें तथा द्रव्यके स्पर्शअर्थमें श्यैङ्धातुको संप्रसारण होय और श्यैङ्धातुसे परे द्रव्यके कठिनतारूप अर्थमेंही कित् अकारयुक्त तकारको नकार होय और स्पर्श अर्थके विषैं श्यैङ्धातुसे परे कित् अकारयुक्त तकारको नकार नहीं होय । उदाहरण–श्यैङ्धातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर द्रव्यके कठिनतारूप अर्थके विषैं संप्रसारण और क्तप्रत्ययके तकारको नकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । शीनं घृतम् । और स्पर्शअर्थमें श्यैङ्धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर संप्रसारण तौ हुआ परन्तु क्तप्रत्ययके तकारको नकार नहीं हुआ तब सिद्ध हुआ । शीतं जलम् ॥

अञ्चेः कितस्तस्य नत्वं न त्वपादाने ॥ ७२१ ॥ समक्नः । अन्यत्रोदक्तमुदकं कूपात् ॥

भाषा–अञ्चुधातुसे परे कित् अकारयुक्त तकारको नकार होय और अपादानअर्थके विषैं नहीं होय । उदाहरण–सम्उपसर्ग पूर्व अञ्चुधातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर ' उदितः क्त्वो वेट् ' इसकर विकल्पकरके इट्का विधान किया है इस कारण ' क्वचिद्वेटः ' इसकर इट् तौ हुआ नहीं फिर क्तप्रत्ययके तकारको नकार किया नकारके असिद्ध होनेसे ' चोः कुः ' इसकर चकारको ककार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । समक्नः । और अपादानअर्थमें क्तप्रत्ययके तकारको नकार न होनेसे सिद्ध हुआ । उदक्तम् । कूपसे जल पृथक् किया है अर्थात् निकाला है यहां अपादानअर्थ विद्यमान है ॥

दिवोऽविजिगीषायाम् ॥ ७२२ ॥ आद्यूनः । विजिगीषायां तु । द्यूतम् ॥

भाषा–दिव्धातुसे परे क्त क्तवतु प्रत्ययोंके तकारको नकार होय और विजिगीषा नाम जीतनेकी इच्छा वाच्य हुए संते दिव्धातुसे परे क्त क्तवतु प्रत्ययोंके तकारको नकार नहीं होय । उदाहरण–जहां विजिगीषा अर्थ नहीं होय तहां दिव्धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर ' छ्वोः शूडनुनासिके च० ' इसकर वकारको ऊकार किया फिर ' इयं स्वरे ' इसकर इकारको यकार किया पश्चात् क्तप्रत्ययके तकारको नकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । द्यूनः और जहां विजिगीषा अर्थ है तहां क्तप्रत्ययके तकारको नकार न होनेसे सिद्ध हुआ । द्यूतम् । द्यूतमें जीतनेकी इच्छासे अक्ष गिराये जाते हैं ॥

अनुपसर्गात्फुल्लक्षीबकृशोल्लाघा निपात्यन्ते ॥ ७२३ ॥ फुल्लः फुल्लवान् । क्षीबृ मदे । क्षीबो । मत्तः । कृशस्तनुः । लाघ शोषणालमर्थयोः । उल्लाघो नीरोगः । उपसर्गात्तु ॥

भाषा—मपूर्व स्त्यैधातुको सम्प्रसारण होय क्तिप्रत्यय पर हुए सते और क्त क्तवतु प्रत्ययोंके तकारको विकल्पकरके मकार होय । उदाहरण—मपूर्व स्त्यैधातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर सम्प्रसारण करनेपर रूप स्थित हुआ मस्तीत । फिर एक जगह क्तप्रत्ययके तकारको मकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । मस्तीमः । और जहां क्तप्रत्ययके तकारको मकार नहीं हुआ वहां सिद्ध हुआ । मस्तीतः ॥

शुषेः कः ॥ ७१६ ॥ शुष्कः शुष्कवान् ॥

भाषा—शुष्धातुसे परे क्त क्तवतु प्रत्ययोंके तकारको ककार होय । उदाहरण—शुष् धातुसे क्तप्रत्ययके तकारको ककार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । शुष्कः ॥

स्फायस्स्फी ति किति ॥ ७१७ ॥ स्फीतः । धेट् । धीतम् । गीतम् । पीतम् । दो । दितम् । सो । सितम् । मितम् ॥

भाषा—स्फायीधातुको स्फी आदेश होय कित्संज्ञक तकारादि प्रत्यय पर हुए सते । उदाहरण—स्फायीधातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर 'आदीदितः' इसकर इट् नहीं हुआ फिर स्फी आदेश किया तब रूप सिद्ध हुआ । स्फीतः । धेट्धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर 'घुमास्थागापाजहातिसां हलि' इसकर धातुको ईकार करनेपर सिद्ध हुआ । धीतम् । इसी प्रकार गै, पा इन धातुओंसे क्तप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । गीतम् । पीतम् । दो, सो माङ् इन धातुओंसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर 'स्यतिः' इसकर इकार करनेपर सिद्ध हुआ । दितम् । सितम् । मितम् ॥

सेटो क्तक्तवत्वोर्णिलोपः ॥ ७१८ ॥ चोरितः चोरितवान् । पाचितः पाचितवान् ॥

भाषा—इट्युक्त जो क्त क्तवतु प्रत्यय पर हुए सते णिप्रत्ययका लोप होय । उदाहरण—चुरादिगणीय णिप्रत्ययान्त चोरिधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ तब फिर णिप्रत्ययका लोप किया क्योंकि इट्युक्त क्तप्रत्यय परे विद्यमान है तब सिद्ध हुआ । चोरितः । क्तवतुप्रत्ययमें सिद्ध हुआ । चोरितवान् । णिप्रत्ययान्त पाचिधातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको अनेक स्वर होनेसे इट् करनेपर सिद्ध हुआ । पाचितः । क्तवतुप्रत्ययमें । पाचितवान् ॥

ऊर्णोतेर्नेट् ॥ ७१९ ॥ ऊर्णुतः ॥

भाषा—ऊर्णुधातुसे कित् तकारादि प्रत्ययोंको इट् नहीं होय । उदाहरण—ऊर्णु धातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर इट् हुआ नहीं तब रूप सिद्ध हुआ । ऊर्णुतः ॥

द्रवकाठिन्ये स्पर्शे चार्थे श्यैङ्स्सम्प्रसारण कितस्तस्य नत्वं तु स्पर्शे ॥ ७२० ॥ शीनं घृतम् । स्पर्शे तु । शीतं जलम् ॥

भाषा—द्रव्यके कठिनतारूप अर्थमें तथा द्रव्यके स्पर्शअर्थमें श्यैङ्धातुको संप्रसारण होय और श्यैङ्धातुसे परे द्रव्यके कठिनतारूप अर्थमेंही कित् अकारयुक्त तकारको नकार होय और स्पर्श अर्थके विषें श्यैङ्धातुसे परे कित् अकारयुक्त तकारको नकार नहीं होय । उदाहरण—श्यैङ्धातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर द्रव्यके कठिनतारूप अर्थके विषें संप्रसारण और क्तप्रत्ययके तकारको नकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । शीनं घृतम् । और स्पर्शअर्थमें श्यैङ्धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर संप्रसारण तौ हुआ परन्तु क्तप्रत्ययके तकारको नकार नहीं हुआ तब सिद्ध हुआ । शीतं जलम् ॥

अंचेः कितस्तस्य नत्वं न त्वपादाने ॥ ७२१ ॥ समक्नः । अन्यत्रोदक्तमुदकं कूपात् ॥

भाषा—अञ्चुधातुसे परे कित् अकारयुक्त तकारको नकार होय और अपादानअर्थके विषें नहीं होय । उदाहरण—सम्उपसर्ग पूर्व अञ्चुधातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर ' उदितः क्त्वो वेट् ' इसकर विकल्पकरके इट्का विधान किया है इस कारण ' क्वचिद्वेटः ' इसकर इट् तौ हुआ नहीं फिर क्तप्रत्ययके तकारको नकार किया नकारके असिद्ध होनेसे ' चोः कुः ' इसकर चकारको ककार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । समक्नः । और अपादानअर्थमें क्तप्रत्ययके तकारको नकार न होनेसे सिद्ध हुआ । उदक्तम् । कूपसे जल पृथक् किया है अर्थात् निकाला है यहां अपादानअर्थ विद्यमान है ॥

दिवोऽविजिगीषायाम् ॥७२२॥ आद्यूनः। विजिगीषायां तु । द्यूतम् ॥

भाषा—दिव्धातुसे परे क्त क्तवतु प्रत्ययोंके तकारको नकार होय और विजिगीषा नाम जीतनेकी इच्छा वाच्य हुए संते दिव्धातुसे परे क्त क्तवतु प्रत्ययोंके तकारको नकार नहीं होय । उदाहरण—जहां विजिगीषा अर्थ नहीं होय तहां दिव्धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर ' किति झसे क्वौ ऊमे च० ' इसकर वकारको ऊकार किया फिर ' इयं स्वरे ' इसकर इकारको यकार किया पश्चात् क्तप्रत्ययके तकारको नकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । द्यूनः और जहां विजिगीषा अर्थ है तहां क्तप्रत्ययके तकारको नकार न होनेसे सिद्ध हुआ । द्यूतम् । द्यूतमें जीतनेकी इच्छासे अक्ष गिराये जाते हैं ॥

अनुपसर्गात्फुल्लक्षीबकृशोल्लाघा निपात्यन्ते ॥ ७२३ ॥ फुल्लः फुल्लवान् । क्षीबृ मदे । क्षीबो । मत्तः । कृशस्तनुः । लाघृ शोषणालमर्थयोः । उल्लाघो नीरोगः । उपसर्गात्तु ॥

भाषा-प्यूपूर्व स्त्यैधातुको सम्प्रसारण होय किद्प्रत्यय पर हुए सते और क क्तवतु प्रत्ययोंके तकारको विकल्पकरके मकार होय । उदाहरण-प्रपूर्व स्त्यैधातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर सम्प्रसारण करनेपर रूप सिद्ध हुआ प्रस्तीत । फिर एक जगह क्तप्रत्ययके तकारको मकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । प्रस्तीम । और जहां क्तप्रत्ययके तकारको मकार नहीं हुआ वहां सिद्ध हुआ । प्रस्तीत ॥

शुषेः कः ॥ ७१६ ॥ शुष्कः शुष्कवान् ॥

भाषा-शुष्धातुसे परे क्त क्तवतु प्रत्ययोंके तकारको ककार होय । उदाहरण-शुष् धातुसे क्तप्रत्ययके तकारको ककार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । शुष्कः ॥

स्फायस्स्फी ति किति ॥ ७१७ ॥ स्फीतः । वेट् । धीतम् । गीतम् । पीतम् । दो । दितम् । सो । सितम् । मितम् ॥

भाषा-स्फायीधातुको स्फी आदेश होय किद्संज्ञक तकारादि प्रत्यय पर हुए सते । उदाहरण-स्फायीधातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर 'आदीदितः' इसकर इट् नहीं हुआ फिर स्फी आदेश किया तब रूप सिद्ध हुआ । स्फीतः । धेट्धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर 'ओप्यायपिहाकुगिधतीनामी' इसकर धातुको ईकार करनेपर सिद्ध हुआ । धीतम् । इसी प्रकार गै, पा इन धातुओंसे क्तप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । गीतम् । पीतम् । दो, षो, माङ् इन धातुओंसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर 'स्यतिमि' इसकर इकार करनेपर सिद्ध हुआ । दितम् । सितम् । मितम् ॥

सेटो क्तक्तवत्वोर्णिलोपः ॥ ७१८ ॥ चोरितः चोरितवान् । पाचितः पाचितवान् ॥

भाषा-इट्युक्त जो क्त क्तवतु प्रत्यय पर हुए सते णिप्रत्ययका लोप होय । उदाहरण-चुराद्गिणपठीय णिप्रत्ययान्त चोरिधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ चोरि-इ-त फिर णिप्रत्ययका लोप किया क्योंकि इट्युक्त क्तप्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । चोरितः । क्तवतुप्रत्ययमें सिद्ध हुआ । चोरितवान् । णिप्रत्ययान्त पाचिधातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको अनेक स्वर होनेसे इट् करनेपर सिद्ध हुआ । पाचितः । क्तवतुप्रत्ययमें । पाचितवान् ॥

ऊर्णोतेर्नेट् ॥ ७१९ ॥ ऊर्णुतः ॥

भाषा-ऊर्णुञ्धातुसे किद् तकारादि प्रत्ययोंको इट् नहीं होय । उदाहरण-ऊर्णुञ्धातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर इट् हुआ नहीं तब रूप सिद्ध हुआ । ऊर्णुतः ॥

द्रवस्य काठिन्ये स्पर्शे चार्थे श्येङस्सम्प्रसारणं कितस्तस्य नत्वं च न तु स्पर्शे ॥ ७२० ॥ शीनं घृतम् । संवीतं तु । शीतं जलम् ॥

होता है । उदाहरण–विदुलधातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर ' गमहनविदविशदृशां वा ' इसकर क्सुप्रत्ययमें इट्की विकल्पता है इस कारण ' क्वचिद्वेटः ' इसकर क्तप्रत्ययोंको इट् नहीं हुआ फिर ' दस्तस्य नो दश्च ' इसकी प्राप्तिभी नहीं हुई क्योंकि विद्लधातुसे भोग और प्रतीतअर्थमें क्तप्रत्ययके तकारको निपातसे नकारका अभाव है तब रूप सिद्ध हुआ । वित्तः । और जहां भोग प्रतीत यह अर्थ नहीं होय तहां ' दस्तस्य नो दश्च ' इसकर क्तप्रत्ययके तकारको नकार करनेपर सिद्ध होता है । विन्नः । इसी प्रकार भिदधातुसे शकलअर्थमें क्तप्रत्ययके तकारको नकार न होनेसे सिद्ध हुआ । भित्तम् । और जहां शकलअर्थ नहीं होय तहां ' दस्तस्य नो दश्च ' इसकर क्तप्रत्ययके तकारको नकार करनेपर सिद्ध हुआ । भिन्नम् ॥

ऋणमाधमर्ण्ये ॥ ७२७ ॥ ऋतमन्यत्र ॥

भाषा–अधम नाम दुःखके देनेवाला है ऋण जिसको उसके भावका नाम आधमर्ण्य है उस आधमर्ण्य अर्थके विषैं निपातसे ऋणशब्द सिद्ध होता है । उदाहरण–' ऋ गतौ ' धातुसे आधमर्ण्यअर्थके विषैं क्तप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । ऋणम् ॥

क्षुब्धस्वान्तध्वांतलग्नम्लिष्टविरिब्धफाण्टबाढानि मन्थमनस्तमस्सक्ताविस्पष्टस्वरानायासभृशेषु ॥ ७२८ ॥ क्षुब्धो मन्थः । स्वन शब्दे । स्वान्तं मनः । ध्वान्तं तमः । लगे संगे । लग्नं सक्तम् । म्लिष्टमविस्पष्टम् । रेभृ शब्दे । विरिब्धः स्वरः । फाण्टमनायाससाध्यः कषायविशेषः । बाहृ प्रयत्ने । बाढं भृशम् । अन्यत्र तु । क्षुभितम् । स्वनितम् । ध्वनितम् । लगितम् । म्लेच्छितम् । विरेभितम् फणितम् । बाहितम् ॥

भाषा–क्षुब्ध, स्वान्त, ध्वान्त, लग्न, म्लिष्ट, विरिब्ध, फाण्ट, बाढ यह शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं मन्थ, मनस्, तमस्, सक्त, अविस्पष्ट, स्वर, अनायास, भृश इन अर्थोंके विषैं क्रमसे । उदाहरण–' क्षुभ संचलने ' धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर मन्थअर्थमें निपातसे सिद्ध हुआ । क्षुब्धः । ' स्वन ध्वन शब्दे ' इन धातुओंसे क्तप्रत्यय करनेपर क्रमसे । स्वान्त ध्वान्त अर्थोंके विषैं निपातसे सिद्ध हुआ । स्वान्तम् । ध्वान्तम् । ' लगे संगे ' धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर सक्तअर्थमें निपातसे सिद्ध हुआ । लग्नम् । ' म्लेच्छ अव्यक्ते शब्दे ' धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर अविस्पष्टअर्थमें निपातसे सिद्ध हुआ । म्लिष्टम् । ' रेभृ शब्दे ' धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर स्वरअर्थमें निपातसे सिद्ध हुआ । विरिब्धः । ' फण् गतौ ' धातुसे क्तप्रत्यय

भाषा—उपसर्ग पूर्व युक्त न होनेसे उत्फुल्ल, क्षीब, कृश, उल्लाघ निपातसे सिद्ध होते हैं। उदाहरण—'ञिफला विशरणे' धातुसे क्त क्तवतु प्रत्यय करनेके अनन्तर 'आदीदितः' इसकर इट् तौ हुआ नहीं तब रूप स्थित हुआ फल्+त फिर क्तप्रत्ययके तकारको लकार किया निपातसे तब रूप स्थित हुआ फल्+ल ॥

चरफलोरत उत्ति किति ॥ ७२४ ॥ प्रफुल्त'। प्रक्षीबित'। प्रकृशित। प्रोल्लाघित। चर। चूर्ण ॥

भाषा—चर, फल इन धातुओंके अकारको उकार होय कित् तकारादि प्रत्यय परे हुए संते। उदाहरण—फल्+ल। इसमें फलधातुके अकारको उकार किया क्योंकि परे कित् क्तप्रत्यय तकार विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ। फुल्लः। क्तवतुप्रत्ययमें सिद्ध हुआ। फुल्लवान्। क्षीबृ और कृश और उपपूर्व लाघृ इन धातुओंसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर क्तप्रत्ययके तकारका लोप निपातसे करनेसे रूप सिद्ध हुए। क्षीबः। कृश'। उल्लाघ। और उपसर्ग पूर्व होनेसे ञिफला क्षीब, कृश उल्लाघृ इन धातुओंसे क्तप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुए। प्रफुल्तः। प्रक्षीबित प्रकृशित'। प्रोल्लाघितः। चरधातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर निपातसे इट् नहीं किया फिर 'चरफलोरत उत्ति किति' इसकर अकारको उकार किया 'र्वोरुपधायाः' इसकर दीर्घ किया फिर 'र' इसकर क्तप्रत्ययके तकारको नकार करनेपर सिद्ध हुआ। चूर्णः ॥

उत्फुल्लसंफुल्लौ च ॥ ७२५ ॥

भाषा—उत्फुल्ल, संफुल्ल यह दोनों शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं। उदाहरण—उद पूर्वक तथा सम्पूर्वक ञिफलाधातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर क्तप्रत्ययके तकारको लकार निपातसे हुआ फिर 'चरफलोरत उत्ति किति' इसकर सिद्ध हुआ। उत्फुल्लः। संफुल्लः ॥

वित्तो भोगप्रतीतयोः ॥ ७२६ ॥ वित्तं धनम्। वित्त पुरुष। अन्यत्र। विन्न। वित्त शकलम्। विन्नमन्यत्र ॥

भाषा—भोग अर्थ तथा प्रतीत नाम प्रसिद्धअर्थमें वित्त यह निपातसे सिद्ध

---

१ यदि कहो कि 'फुल्ल विकसने, क्षापृ शक्तौ' इनसे 'पचादेः' इसकर अच्प्रत्यय करनेपर और शेष क्षीबृ कृश इन धातुओंसे 'नाम्युपधात्कः' इसकर कप्रत्यय करनेपर फुल्ल क्षीब, कृश, उल्लाघ शब्द सिद्ध होते थे फिर यह सूत्र क्यों विधान किया है तहां समाधान है कि यदि यह सूत्र न होता तो ञिफला धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर फुल्ल ऐसा सिद्ध हो जाता इस कारण इत्यादिक प्रयोगोंकी निवृत्तिके अर्थ यह सूत्र है ॥

२ यद्यपि 'फुल्ल विकसने' धातुसे पूर्व उद्, सम् उपसर्ग पूर्व करनेसे 'पचादेः' इसकर अच्प्रत्यय करनेपर उत्फुल्ल, संफुल्ल सिद्ध हो सके हैं तथापि उत्फुल्ल, संफुल्ल इन प्रयोगोंकी निवृत्तिके अर्थ यह कहा है ॥

घुष्टोऽविशब्दने ॥ ७३३ ॥ घुष्टा रज्जुः । अविशब्दने किम् । घुषितं वाक्यम् ॥

भाषा–अविशब्दन नाम अप्रतिज्ञानअर्थमें घुष्टशब्द निपातसे सिद्ध होता है। उदाहरण–घुषिर्धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर अविशब्दनअर्थमें निपातसे सिद्ध हुआ। घुष्टः । स्त्रीलिंगमें । घुष्टा । और जह अविशब्दनअर्थमें नहीं होय तहां घुषिर्धातुसे क्तप्रत्ययको इट् करनेपर सिद्ध हुआ । घुषितम् ॥

अभ्यर्णमाविदूर्ये ॥ ७३४ ॥ अभ्यर्दितमन्यत् ॥

भाषा–जो कि विशेषकर दूर हो उसका नाम विदूर है और जो विदूर नहीं होय होय उसका नाम अविदूर है उसके भावका नाम आविदूर्य है उस आविदूर्य अर्थके विषैं अभ्यर्णशब्द निपातसे सिद्ध होता है और जहां आविदूर्य अर्थ नहीं होय तहां अभ्यर्दित सिद्ध होता है । उदाहरण–आविदूर्य अर्थके विषैं 'अर्द गतौ' धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । अभ्यर्णम् । यह समीपवाचक है और अन्यत्र अर्दधातुसे अभिउपसर्ग पूर्व युक्त कर क्तप्रत्ययको इट् करनेसे सिद्ध हुआ । अभ्यर्दितम् ॥

क्षीरहविषोः पाके शृतम् ॥ ७३५॥ अन्यत्र । श्राणं श्रपितं वा ॥

भाषा–क्षीर और हविष् इनके पाकअर्थमें शृतशब्द निपातसे सिद्ध होता है और क्षीरहविष्से अन्यत्र पाकके विषैं श्राणम् , श्रपितम् इस प्रकार सिद्ध होते हैं। उदाहरण–क्षीर और हविष् इनके पाकअर्थमें 'श्रै पाके' धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ। शृतम् । और क्षीरहविष्से अन्यत्र अर्थके विषैं अदादि चुरादि श्राधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर अदादिसे इट् तौ हुआ नहीं फिर–'यलसंयोगादेः' इसकर क्तप्रत्ययके तकारको नकार किया तब सिद्ध हुआ। श्राणम् । और चुरादि श्राधातुसे स्वार्थमें णिप्रत्यय कर पश्चात् 'रातो णौ पुक्' इसकर पुक् आगम किया फिर 'घटादयो मितः, मितां ह्रस्वः' इसकर ह्रस्व किया पश्चात् क्तप्रत्ययको अनेकस्वर धातु होनेसे इट् किया तदनन्तर 'सेटो क्तक्तवत्वोर्णिलोपः' इसकर णिप्रत्ययका लोप किया तब सिद्ध हुआ। श्रपितम् ॥

दान्तादयो वा निपात्यन्ते ॥ ७३६ ॥ दान्तः दमितः । शान्तः शमितः । पूर्णः पूरितः । दसु उपक्षये । दस्तः दासितः । स्पष्टः स्पाशितः । छन्नः छादितः । ज्ञप्तः ज्ञपितः । रुष्टः रुषितः । आन्तः अमितः । तूर्णः त्वरितः । संघुष्टः संघुषितः । आस्वान्तः आस्व-

करनेपर अनायाससाध्य कषायविशेषअर्थमें निपातसे सिद्ध हुआ । फांटम् । 'वाह प्रयत्ने' धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर भृशअर्थमें निपातसे सिद्ध हुआ । बाढम् । और जहां मन्थादिक अर्थ नहीं हुआ तहां । क्षुभितम् । इत्यादिक होते हैं ॥

धृष्टविशस्तावविनये ॥ ७२९ ॥ धृष्ट । विशस्तः । अन्यत्र । धर्षित । विशसितः ॥

भाषा—अविनय अर्थमें धृष्ट, विशस्त यह शब्द सिद्ध होते हैं । उदाहरण—'ञिधृषा प्रागल्भ्ये' धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर अविनयअर्थमें सिद्ध हुआ । धृष्ट । 'शसु हिंसायाम्' धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर अविनयअर्थमें सिद्ध हुआ । विशस्त । जहां अविनयअर्थ न होय किन्तु विनय अर्थ होय तहां ञिधृषा, शसु इन धातुओंसे क्तप्रत्यय करनेपर 'आदीदित' 'क्तयोरेडेः' इनकर इट्की प्राप्ति हीहै इस कारण निपातसे इट् करनेपर सिद्ध हुआ । धर्षितः । विशसितः ॥

दृढः स्थूलबलयोः ॥ ७३० ॥ दृंहितो दृंहितोऽन्य । दृह दृहि वृद्धौ ॥

भाषा—स्थूल और बलवान् अर्थके विषें दृढशब्द निपातसे सिद्ध होता है । उदाहरण—दृह दृहि इन दोनों धातुओंसे क्तप्रत्यय करनेपर स्थूल और बलवान् अर्थमें निपातसे सिद्ध हुआ । दृढः । और स्थूल और बलवान् अर्थ नहीं हो तहां इन दोनों धातुओंसे क्तप्रत्ययको इट् करनेसे सिद्ध हुआ । दृहित , दृंहित, । दृह दृहि यह दोनों धातु वृद्धि अर्थमें वर्त्ते हैं ॥

प्रभौ परिवृढः ॥ ७३१ ॥ परिवृहितः । परिवृंहितोऽन्य ॥

भाषा—प्रभु अर्थ वाच्य हुए सते परिवृढ शब्द निपातसे सिद्ध होता है । उदाहरण—वृह वृहि इन धातुओंसे क्तप्रत्यय करनेपर प्रभुअर्थमें निपातसे सिद्ध हुआ । परिवृढः । और जहां प्रभु अर्थ नहीं होय तहां इन दोनों धातुओंसे क्तप्रत्ययको इट् करनेपर सिद्ध हुआ । परिवृहितः परिवृंहित ॥

कृच्छ्रगहनयोः कषः ॥ ७३२ ॥ कष्टम् । कष्टो मोह । कष्ट शास्त्रम् । कषितमन्यत् ॥

भाषा—कृच्छ्र नाम कष्ट और गहन नाम कठिनअर्थमें कषधातुसे क्तप्रत्ययको इट् नहीं होय । उदाहरण—यहां कष्ट नाम दुःखका कारण मोह है इस कारण मोह अर्थमें कषधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । कष्टो मोहः । कठिनअर्थमें कषधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । कष्टं शास्त्रम् । और इन दोनों अर्थोंसे भिन्नअर्थमें कषधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर इट् करनेसे सिद्ध हुआ । कषितम् ॥

ह्लादीधातुसे क्तप्रत्यय करनेके अनन्तर ' आदीदितः ' इसकर इट् नहीं किया फिर ' दस्तस्य नो द्रश्च ' इसकर तकार दकारको नकार किया फिर ह्रस्व करनेपर रूप सिद्ध हुआ । प्रह्लन्नः ॥

निनदीभ्यां स्नातेस्सस्य षः कौशले ॥ ७३८ ॥ निष्णातः । नदीष्णातः ॥

भाषा–नि, नदी इनसे परे स्नाधातुके सकारको षकार होय कौशलअर्थ वाच्य हुए संते । उदाहरण–' शास्त्रेषु नितरां स्नातः । नद्यां स्नातः ' इन विग्रहोंमें नि, नदी इनसे परे स्नाधातुके सकारको षकार करनेपर सिद्ध हुआ । निष्णातः । नदीष्णातः । नदीके स्नानमें चतुर है ॥

स्थैर्यगतिभक्षणार्थेभ्योऽधिकरणेऽपि क्तः ॥ ७३९ ॥ तथा च । मुकुंदस्यासितमिदमिदं यातं रमापतेः । भुक्तमेतदनन्तस्येत्यूचुर्गोप्यो दिदृक्षवः ॥

भाषा–स्थैर्य, गति, भक्षण यह अर्थ हैं जिन धातुओंके ऐसे धातुओंसे अधिकरण नाम आधारअर्थमें क्तप्रत्यय होय । उदाहरण–' आस्यतेऽस्मिन् ' इस अर्थमें स्थैर्यअर्थवाले ' आस उपवेशने ' धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । आसितम् । ' यायतेऽस्मिन् ' इस अर्थमें गतिअर्थवाले ' या ापणे ' धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । यातम् । ' भुज्यतेऽस्मिन् ' इस अर्थमें भक्षणअर्थवाले भुजधातुसे क्तप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । भुक्तम् । श्लोकार्थ–देखनेकी इच्छावाली गोपिका इस प्रकार कहती हुई कि यह मुकुन्द श्रीकृष्णका आसित नाम आसन है और यह रमापति श्रीकृष्णका यात नाम मार्ग है और यह अनन्त श्रीकृष्णका भुक्त नाम भोजनपात्र है ॥

जीर्यतेरतृ ॥ ७४० ॥ जरन् । जरन्तौ ॥

भाषा–जॄष्धातुसे भूतअर्थके विषैं अतृप्रत्यय होय अतृप्रत्ययमें ऋकार इत्संज्ञक है ' त्रितो नुम् ' इसके अर्थ है । उदाहरण–'जीर्यति ' इस विग्रहमें जॄधातुसे अतृप्रत्यय करनेपर धातुको गुण किया तब रूप स्थित हुआ जरत् नामसंज्ञामें ' त्रितो नुम् ' इसकर नुम् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । जरन् । द्विवचनमें । जरन्तौ ॥

क्वसुकानौ णबेवत् ॥ ७४१ ॥ धातोरतीते काले एतौ भवतः तौ च यथाक्रमं णबेवत् ॥ द्वित्वम् । संयोगान्तस्य लोपः । चकृवान् । वसोर्व उः । चकुषः । चकुषा । वसां रसे । चकृवद्भ्याम् । चक्राणः ।

नित, । रुष् तुष्टौ । रुष्ट रुषितम् । अपचायित अपचित । प्यान पीन । ह्लादी सुखे ॥

भाषा–दान्त आदिक शब्द विकल्पकरके निपातसे सिद्ध होते हैं। मात यह कि दान्त आदिक सांत शब्द णिप्रत्यय किये सते क्तप्रत्ययान्त निपातसे सिद्ध होवे हैं और रुषादिक धातुओंसे क्तप्रत्ययको विकल्पकरके इट् निपातसे होवा है। उदाहरण–दमु, शमु धातुओंसे णिप्रत्यय करनेपर ' मितां ह्रस्व ' इसकर ह्रस्व किया पश्चात् क्तप्रत्ययको एक जगह निपातसे इट् न करनेसे ' णेः ' इसकर णिका लोप किया फिर ' अमान्तस्योपधाया दीर्घो झौ सनादौ क्ङिति हे च ' इसकर उपधाको दीर्घ करनेसे रूप सिद्ध हुआ । दान्त । शान्त । और जहां णिप्रत्ययान्त इन धातुओंसे क्तप्रत्ययको इट् किया वहां सिद्ध हुआ। दमितः । शमितः । ' पूरी आप्यायने ' धातुसे णिप्रत्यय करनेपर क्तप्रत्ययको एक जगह विकल्पकरके इट् निपातसे नहीं किया वहां 'णेः ' इसकर णिका लोप किया फिर ' र ' इसकर क्तप्रत्ययके तकारको नकार किया तब सिद्ध हुआ। पूर्णः । और एक जगह इट् करनेसे सिद्ध हुआ । पूरितः । दसु, स्पश, छद इन णिप्रत्ययान्त धातुओंसे क्तप्रत्ययको इट् और धातुको वृद्धि यह दोनों कार्य निपातसे एक जगह न करनेसे सिद्ध हुए । दस्तः । स्पष्टः । छन्नः । और एक जगह इट् वृद्धि दोनों कार्य करनेसे सिद्ध हुआ। दासितः । स्पाशितः । छादितः । ज्ञप णिप्रत्ययान्तसे क्तप्रत्ययको इट् निपातसे न करनेसे सिद्ध हुआ । ज्ञप्तः । और एक जगह ज्ञपितः । रुषु, अम, त्वरा, घुषिर्, स्वन, रुष् इन धातुओंसे क्तप्रत्ययको विकल्पकरके इट् करनेसे रूप सिद्ध हुए । रुष्टः, रुषितः । आन्तः, अमितः । तूर्णः, त्वरितः । संघुष्टः, संघुषितः । आस्वान्तः आस्वनितः । रुष्टम् रुषितम् । चायृ, धातुसे क्तप्रत्ययको विकल्पकरके इट् निपातसे करनेपर जहां इट् नहीं हुआ वहां निपातसे सिद्ध हुआ । अपचितः । और एक जगह । अपचायितः । ' ओप्यायी वृद्धौ ' धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर प्यायृको पी आदेश निपातसे एक जगह करनेपर ' श्वीदितो निष्ठायाम ' इसकर क्तप्रत्ययके तकारको नकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । पीनः । और जहां पी आदेश निपातसे नहीं हुआ वहां ' श्वीदितः ' इसकर इट् वी हुआ नहीं फिर ' यवयोवसे हकारे च लोपः ' इसकर यकारका लोप किया फिर ' श्वीदितो निष्ठायाम ' इसकर क्तप्रत्ययके तकारको नकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । प्यानः । ह्लादाधातु सुखअर्थमें वर्त्ते है ॥

ह्लादेह्रस्व क्ङिति ते ॥ ७३७ ॥ मह्रस्म ॥

भाषा–ह्लादाधातुको ह्रस्व होय कित् ककारका स्वर पर हुए संते । उदाहरण–

भाषा–गम्, हन्, विद, विश, दृश् इन धातुओंसे परे वसुप्रत्ययको विकल्पकरके इट् होय । उदाहरण–जजागृ-वस् । इसमें इट् नहीं हुआ क्योंकि जिनधातुओंसे परे वसुप्रत्ययको इट् होता है उन धातुओंसे यह धातु भिन्न है तब नामसंज्ञामे सिद्ध हुआ । जजागृवान् । द्विवचनमें । जजागृवांसौ । स्त्रीलिंगमें । जजागृषी । इसी प्रकार भूधातुसे क्वसुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । बभूवान् । शस्में 'वसोर्व उः' इसकर वस्के वकारको उकार किया फिर 'भुवो वुक्' इसकर 'वुक्' आगम किया तब रूप सिद्ध हुआ । बभूवुषः । 'अद भक्षणे' धातुसे क्वसुप्रत्यय करनेके अनन्तर द्वित्व करनेपर 'सवर्णे दीर्घः सह' इसकर सन्धि होनेसे एकस्वर धातुही रहा इस कारण वसुप्रत्ययको इट् करनेपर सिद्ध हुआ । आदिवान् । द्विवचनमें । आदिवांसौ । इसी प्रकार ऋधातुसे क्वसुप्रत्यय करनेपर 'गुणोऽर्त्तिसंयोगाद्योः' इसकर गुण करनेके पश्चात् द्वित्व करनेपरभी एकस्वरही रहा इस कारण क्वसुप्रत्ययको इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । आरिवान् । डुदाञ्धातुसे क्वसुप्रत्यय करनेके अनन्तर क्वसुप्रत्ययको इट् आगम किया क्योंकि आकारान्तसे परे क्वसुप्रत्यय विद्यमान है फिर 'आतोऽपि' इसकर आकारका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । ददिवान् । इसी प्रकार दरिद्राधातुसे क्वसुप्रत्यय करनेसे सिद्ध हुआ । ददरिद्रिवान् । वकारको उकार करनेपर इट्का अभाव होय । उदाहरण–शस्के विषै 'वसोर्व उः' इसकर वकारको उकार करनेपर इट्का अभाव होनेसे सिद्ध हुआ । आदुषः । 'अद भक्षणे' धातुसे क्वसुप्रत्यय करनेके अनन्तर 'अदसिसयोर्घस्लृ लिटि तु वा' इसकर एक जगह घस्लृ आदेश करनेपर द्वित्व किया फिर घसधातुसे क्वसुप्रत्ययको इट् किया पश्चात् 'गमां स्वरे' इसकर धातुके उपधारूप अकारका लोप किया फिर 'घसादेः षः' इसकर सकारको षकार और 'खसे चपा०' इसकर घकारको ककार किया फिर 'कषसंयोगे क्षः' इसकर सिद्ध हुआ । जक्षिवान् । शस्में । जक्षुषः । गमधातुसे क्वसुप्रत्यय करनेपर एक जगह इट् किया तहां 'गमां स्वरे' इसकर धातुके उपधाका लोप करनेसे सिद्ध हुआ । जग्मिवान् । और जहां इट् नहीं हुआ तहां 'मो नो धातोः' इसकर मकारको नकार करनेपर सिद्ध हुआ । जगन्वान् । शस्में वस्के वकारको उकार करनेपर इट् अनिट् पक्ष दोनोंमें 'गमां स्वरे' इसकर उपधाका लोप करनेसे सिद्ध हुआ । जग्मुषः । हन्धातुसे क्वसुप्रत्ययको एक जगह इट् करनेपर 'गमां स्वरे, हनो घ्ने' इसकर सिद्ध हुआ । जघ्निवान् । और इट् नहीं हुआ तहां 'पूर्वाद्धन्तेर्हस्य घः' इसकर पर हन्धातुके हकारको घकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । जघन्वान् । शस्में वस्के वकारको उकार कर 'गमां स्वरे, हनो घ्ने' इनकर सिद्ध हुआ । जघ्नुषः । विद्लृधातुसे क्वसुप्रत्ययको जहां इट् हुआ तहां सिद्ध हुआ । विविदिवान् । अनिट्पक्षमें । विविद्वान् ।

चमज्वान्। जघागृवान्। द्वित्वे सत्येकस्वरादादन्ताद्घसेश्च वसोरिट् नान्यस्मात्॥

भाषा-धातुसे अतीतकालके विषें क्वसु, कान यह प्रत्यय होय यह दोनों प्रत्यय यथाक्रम णप्प्रत्यय तथा एप्रत्ययके समान होवे हैं। भाव यह है कि परोक्षकालार्थ णप्प्रत्यय पर हुए सते जो कार्य द्वित्वादिक होता है वही कार्य क्वसु प्रत्यय पर हुए सते होता है और जो कि परोक्षकालार्थ एप्रत्यय पर हुए सते द्वित्वादिकार्य होता है वही कार्य कानप्रत्यय पर हुए सते होता है। क्वसु कान प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है और उकार 'मितो नुम्' इसकर नुम्विधानके अर्थ है। उदाहरण-अतीतकालमें डुकृञ्धातुसे क्वसु और कान दोनों प्रत्यय किये क्योंकि 'डुकृञ् करणे' धातु उभयपदी है। परस्मैपदीसे क्वसु आत्मनेपदीसे कान और उभयपदीसे क्वसु कान दोनों होवे हैं फिर द्वित्व किया तब रूप स्थित हुआ चकृवस्, चकाण फिर नामसञ्ज्ञामें 'मितो नुम्, न्सम्महतो धौ दीर्घे' धौ च, संयोगान्तस्य लोप' इनकर सिद्ध हुआ। चकृवान्। द्विवचनमें। चकृवांसौ। शस्में 'वसोर्व उ' इसकर सिद्ध हुआ। चकुषः। भ्यामादिवचनमें 'वसां रसे' इसकर सिद्ध हुआ। चकृवद्भ्याम्। प्रथमा एकवचनमें चकाणः। द्विवचनमें। चकाणौ। स्त्रीलिंगमें 'ऋिन्नतः' इसकर ईप्प्रत्यय करनेके अनन्तर 'वसोर्व उ' इसकर सिद्ध हुआ। चकुषी। चकाणी। भ्रमधातुसे क्वसु कान प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। बभ्रमज्वान्। द्विवचनमें। बभ्रमज्वांसौ। बभ्रमानः। स्त्रीलिंगमें 'ऋिन्नतः' इसकर ईप्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। बभ्रमुषी। बभ्रमाना। जागृधातुसे क्वसुप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुओं सेट् होनेसे इट् होना चाहिये था उसका निषेध है। द्वित्व किये सतेभी जो धातु एकस्वर अवशेष रहता है उस धातुसे और आकारान्तधातुसे और घसधातुसे परे वसुप्रत्ययको इट् होय और इनसे भिन्न जो कि धातु है उससे परे वसुप्रत्ययको इट् नहीं होय॥

गमहनविदविशदृशां वा॥ ७४२॥ बभूवान्। भुवो वुक्। बभूवुषः। बभूवुषा॥ अद भक्षणे॥ आदिवान्॥ ऋ गतौ॥ आरिवान्॥ दुदाञ् दाने॥ ददिवान्। ददरिद्रिवान्। वस्योत्वे इडभाव। आदुषः। जग्मिवान्। जक्षिवान्। जग्मिवान् जगन्वान्। जग्मुषः। जघ्निवान् जघन्वान्। जघ्नुषः। विविदिवान् विविद्वान्। विविदुषः। विविशिवान् विविश्वान्। ददृशिवान् ददृश्वान्। ईयिवान्। सेदिवान्। ऊषिवान्। शुश्रुवान्। शुश्रुवुषः॥

भाषा–गम्, हन्, विद, विश्, दृश् इन धातुओंसे परे वसुप्रत्ययको विकल्पकरके इट् होय । उदाहरण–जजागृ-वस् । इसमें इट् नहीं हुआ क्योंकि जिनधातुओंसे परे वसुप्रत्ययको इट् होता है उन धातुओंसे यह धातु भिन्न है तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । जजागृवान् । द्विवचनमें । जजागृवांसौ । स्त्रीलिंगमें । जजागृुषी । इसी प्रकार भूधातुसे क्वसुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । बभूवान् । शस्में 'वसोर्व उः' इसकर वस्के वकारको उकार किया फिर 'भुवो वुक्' इसकर वुक् आगम किया तब रूप सिद्ध हुआ । बभूवुषः । 'अद भक्षणे' धातुसे क्वसुप्रत्यय करनेके अनन्तर द्वित्व करनेपर 'सवर्णे दीर्घः सह' इसकर सन्धि होनेसे एकस्वर धातुही रहा इस कारण वसुप्रत्ययको इट् करनेपर सिद्ध हुआ । आदिवान् । द्विवचनमें । आदिवांसौ । इसी प्रकार ऋधातुसे क्वसुप्रत्यय करनेपर 'गुणोर्त्तिसंयोगाद्योः' इसकर गुण करनेके पश्चात् द्वित्व करनेपरभी एकस्वरही रहा इस कारण क्वसुप्रत्ययको इट् करनेपर रूप सिद्ध हुआ । आरिवान् । डुदाञ्धातुसे क्वसुप्रत्यय करनेके अनन्तर क्वसुप्रत्ययको इट् आगम किया क्योंकि आकारान्तसे परे क्वसुप्रत्यय विद्यमान है फिर 'आतोऽपि' इसकर आकारका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । ददिवान् । इसी प्रकार दरिद्राधातुसे क्वसुप्रत्यय करनेसे सिद्ध हुआ । ददरिद्रिवान् । वकारको उकार करनेपर इट्का अभाव होय । उदाहरण–शस्के विषै 'वसोर्व उः' इसकर वकारको उकार करनेपर इट्का अभाव होनेसे सिद्ध हुआ । आदुषः । 'अद भक्षणे' धातुसे क्वसुप्रत्यय करनेके अनन्तर 'अदसिसयोर्घस्लृ लिटि तु वा' इसकर एक जगह घस्लृ आदेश करनेपर द्वित्व किया फिर घसधातुसे क्वसुप्रत्ययको इट् किया पश्चात् 'गमां स्वरे' इसकर धातुके उपधारूप अकारका लोप किया फिर 'घसादेः षः' इसकर सकारको षकार और 'खसे चपा०' इसकर घकारको ककार किया फिर 'कषसंयोगे क्षः' इसकर सिद्ध हुआ । जाक्षिवान् । शस्में । जक्षुषः । गमधातुसे क्वसुप्रत्यय करनेपर एक जगह इट् किया तहां 'गमां स्वरे' इसकर धातुके उपधाका लोप करनेसे सिद्ध हुआ । जग्मिवान् । और जहां इट् नहीं हुआ तहां 'मो नो धातोः' इसकर मकारको नकार करनेपर सिद्ध हुआ । जगन्वान् । शस्में वस्के वकारको उकार करनेपर इट् अनिट् पक्ष दोनोंमें 'गमां स्वरे' इसकर उपधाका लोप करनेसे सिद्ध हुआ । जग्मुषः । हन् धातुसे क्वसुप्रत्ययको एक जगह इट् करनेपर 'गमां स्वरे, हनो घ्नं' इसकर सिद्ध हुआ । जघ्निवान् । और इट् नहीं हुआ तहां 'पूर्वाद्धन्तेर्हस्य घः' इसकर पर हन् धातुके हकारको घकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । जघन्वान् । शस्में वस्के वकारको उकार कर 'गमां स्वरे, हनो घ्नं' इनकर सिद्ध हुआ । जघ्नुषः । विद्लृधातुसे क्वसुप्रत्ययको जहां इट् हुआ तहां सिद्ध हुआ । विविदिवान् । अनिट्पक्षमें । विविद्वान् ।

विशधातुसे क्वसुप्रत्यय करनेपर इट्पक्षमें विविशिवान् । अनिट्पक्षमें । विविश्वान् । शसूमें । विविशुषः । दृशधातुसे क्वसुप्रत्यय करनेपर इट्पक्षमें । ददृशिवान् । अनिट्पक्षमें । ददृश्वान् । इण्धातुसे । क्वसुप्रत्यय करनेपर द्वित्व किया पश्चात् इट् लिया तसे किया ' सवर्णे दीर्घः सह ' इस सूत्रको बाधित कर ' इणः क्विपि स्वरे यः ' इसकर इणके यकार किया फिर ' इण किति णादौ पूर्वस्य दीर्घः ' इसकर पूर्वको दीर्घ किया तब सिद्ध हुआ । ईयिवान् । शसूमें । ईयुषः । पद्लृधातुसे क्वसुप्रत्यय करनेपर ' लोप पचां० ' इसकर पत्वपूर्व लोप हुआ फिर एकस्वर होनेसे क्वसुप्रत्ययको इट् करनेसे रूप सिद्ध हुआ । सेदिवान् । शसूमें । सेदुषः । ' वस निवासे ' धातुसे क्वसुप्रत्यय करनेपर द्वित्व किया पश्चात् ' णादौ पूर्वस्य ' इसकर पूर्वको ' यजां० ' इसकर परको सम्प्रसारण कर ' सवर्णे दीर्घः सह ' इसकर सन्धि की तब एकस्वर होनेसे क्वसुको इट् करनेपर ' घसादेः षः ' इसकर सिद्ध हुआ । ऊषिवान् । श्रुधातुसे क्वसुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । शुश्रुवान् । शसूमें वसुके वकारको उकार करनेपर ' नानप्योर्वं ' इसकर उव् करनेसे सिद्ध हुआ । शुश्रुवुषः ॥

शतृशानौ तिप्तेवत्क्रियायाम् ॥ ७४३ ॥ क्रियायां गम्यमानायां धातोः शतृशानौ भवतस्तौ च तिप्तेवत् ॥ पचन्नास्ते । पठंस्तिष्ठति । गायन्नागच्छति ॥

भाषा—क्रिया गम्यमान हुए संते धातुसे शतृ और शान यह प्रत्यय होंय वह दोनों प्रत्यय क्रमसे तिप् और ते प्रत्ययवत् होते हैं । भाव यह है कि क्रिया गम्यमान होनेपर परस्मैपदीधातुसे शतृप्रत्यय होय और तिप्प्रत्यय पर हुए संते जो कार्य होता है वह कार्य शतृप्रत्यय पर हुए संते होता है और आत्मनेपदी धातुसे शानप्रत्यय होय और ते प्रत्यय पर हुए संते जो कार्य होता है । वह कार्य शानप्रत्यय पर हुए संते होता है और उभयपदी धातुसे शतृ शान दोनों प्रत्यय होते हैं । शकार ' शिति चतुर्वत ' इस कार्यके अर्थ है । ऋकार नुमविधानार्थ है । उदाहरण—पचति । यहां वर्तमानार्थ क्रिया गम्यमान है इस कारण पच्धातुसे शतृप्रत्यय करनेपर ' शिति चतुर्वत् ' इसकर शप् किया फिर ' अदे ' इसकर अकारका लोप किया तब रूप स्थित हुआ पचत् फिर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । पचन् । द्विवचनमें । पचन्तौ । पठ्धातुसे शतृप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । पठन् । गैधातुसे शतृप्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ गाय्-अ-अत फिर ' अदे ' इसकर स्थित हुआ गायत् । नामसंज्ञामें सिप्रत्ययके विषे ' धितो नुम् ' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । गायन् ॥

मुगानेऽतः ॥ ७४४ ॥ अकारस्याने मुगागमः स्यात् ॥ पचमान-

त्परस्य शतुर्नुम्नित्यमीकारे ङेपि च । भवन् स भवन्ती । दीव्यन् । दीव्यन्ती । दीव्यन्त्यौ भगायमुने । द्विरुक्तानां जक्षादीनां च परस्य शतुर्नुम्न शौ वा । ददत् । दधत् ॥

भाषा—अप्प्रत्यय और यप्रत्ययसे परे शतृप्रत्ययको नित्यही नुम् आगम होय ईकार और ईप्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–' भवति, दीव्यति ' इन अर्थोंमें भू दिव धातुसे शतृप्रत्यय करनेके अनन्तर स्त्रीलिंगमें ' ऋिमतः ' इसकर ईप्प्रत्यय किया तब रूप स्थित हुआ भव भवत्-ई, दीव्य भत्-ई इनमें अप्प्रत्यय तथा यप्रत्ययसे परे शतृप्रत्यय है और शतृप्रत्ययसे परे ईप्प्रत्यय विद्यमान है इस कारण शतृ प्रत्ययको नित्य नुम् आगम करनेसे रूप स्थित हुआ । भव-अन्-त्-ई, दीव्य अन्-त्-ई फिर ' अदे ' इसकर भव और दीव्यके अकारका लोप करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । भवन्ती । दीव्यन्ती । द्विरुक्त धातु और जक्ष आदिक धातुओंसे परे शतृप्रत्ययको नुम् नहीं होय और शिप्रत्यय पर हुए संते विकल्पकरके नुम् आगम होय । उदाहरण–' ददाति । दधाति ' इन विग्रहोंमें डुदाञ् डुधाञ् धातुसे शतृप्रत्यय करनेपर ' शिति धातुर्वत् ' इसकर द्वित्व किया तब रूप स्थित हुआ ददा-अत् , दधा-अत् फिर ' दादेः ' इसकर आकारका लोप किया तब रूप स्थित हुआ ददत्, दधत् फिर नामसंज्ञामें ' मितो नुम् ' इसकर नुम् आगम न करनेपर सिद्ध हुआ । ददत् । दधत् । डुदाञ् डुधाञ् धातुसे शतृप्रत्यय करनेके अनन्तर स्त्रीलिंगमें ईप्प्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ ददा-अत्-ई, दधा-अत्-ई इनमें आकारसे परे शतृप्रत्यय है और शतृप्रत्ययसे ईप्प्रत्यय परे विद्यमान है इस कारण शतृप्रत्ययको एक जगह 'वा शीप्योः शतुः' इसकर नुम् आगम करनेपर रूप स्थित हुआ ददा अन्-त्-ई, दधा-अन्-त्-ई फिर ' दादेः ' इसकर आकारका लोप करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । ददन्ती । दधन्ती । और जहां शतृप्रत्ययको नुम् आगम नहीं हुआ वहां सिद्ध हुआ । ददती । दधती । नपुंसकलिंगमें शिप्रत्ययके विषै विकल्पकरके नुम् करनेपर सिद्ध हुआ । ददति । ददन्ति ॥

विदेर्वा वसुः ॥७३८॥ वेत्तेः परस्य शतुर्वा वसुरादेशः ॥ विद्वान् विदन् ।

भाषा—विद्धातुसे परे शतृप्रत्ययको विकल्पकरके वसु आदेश होय । उदाहरण–' वेत्ति ' इस अर्थमें ' विद् ज्ञाने ' धातुसे शतृप्रत्यय करनेपर एक जगह शतृ प्रत्ययको विकल्पकरके वसु आदेश करनेसे रूप सिद्ध हुआ । विद्वान् । और जहां वसुआदेश नहीं हुआ वहां सिद्ध हुआ । विदन् । स्त्रीलिंगमें ' वसोर्व उः ' इसकर सिद्ध हुआ । विदुषी । विदती ॥

माङ्याक्रोशे ॥ ७४९ ॥ माजीवन् ॥

भाषा—माङ् उपपद हुए संते आक्रोश निन्दाअर्थमें धातुसे शतृप्रत्यय होय । उदाहरण—माङ् पूर्व होनेसे निन्दाअर्थ होनेपर जीवधातुसे शतृप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । माजीवन् ॥

लक्षणहेत्वोः क्रियायाः ॥७५० ॥ शयाना भुञ्जते यवनाः ॥ अर्ज प्रतियत्ने ॥ चुरादिः । अर्जयन्वसति ॥

भाषा—क्रियाके लक्षण नाम चिह्न और हेतु अर्थमें वर्त्तमानधातुसे शतृ और शानप्रत्यय होय । हेतुशब्दकरके फल और कारण यहां कहा गया है । उदाहरण—'शेरते' इस विग्रहमें शीङ्धातुसे लक्षण अर्थमे शानप्रत्यय करनेपर 'शीङो गुण-श्चतुर्षु' इसकर गुण करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । शयानाः । यवन शयन करते हुए भोजन करते हैं । यवनोंके भोजन करनेका चिह्न शयन है । 'अर्जयति' इस विग्रहमे 'अर्ज प्रतियत्ने' धातुसे कारण अर्थमें शतृप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अर्जयन् । अर्जन करता हुआ वसता है । निवास करनेवालेका निवास अर्जनके कारण है ॥

भविष्यति स्यप्शतृशानपरः ॥ ७५१ ॥ हनृतस्य पः । करिष्यन् । करिष्यमाणः ॥

भाषा—भविष्यतिकालके विषें शतृ शान हैं परे जिसके ऐसा स्यप्प्रत्यय होय । भाव यह है कि भविष्यकालार्थ स्यप्प्रत्ययान्त धातुसे परे परस्मैपदके स्थानमें शतृ और आत्मनेपदके स्थानमें शान प्रत्यय होय । उदाहरण—'करिष्यति' इस अर्थमें कृधातुसे स्यप्प्रत्यय तत्पश्चात् शतृ और शान दोनों किये क्योंकि उभय-पदी धातु हैं तब रूप स्थित हुआ कृ स्य-अत्, कृ-स्य-आन फिर 'हनृतः स्यपः' इसका इट् किया पश्चात् गुण करनेसे 'क्ङि०, अदे' इनकर शतृप्रत्ययमें नामसंज्ञा होनेपर सिद्ध हुआ । करिष्यन् । और शानप्रत्ययमें 'मुगानेतः' इसकर मुक् आगम करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । करिष्यमाणः ॥

ताच्छील्यवयोवचनशक्तिष्वानश् ॥ ७५२ ॥ भोगं भुञ्जानः । कवचं बिभ्राणः । शत्रून्निघ्नानः ॥

भाषा—ताच्छील्य नाम तत्स्वभावता और वयोवचन यौवनादि शक्तिसामर्थ्य यह वाच्य हुए संते परस्मैपदी तथा आत्मनेपदी दोनों प्रकारके धातुओंसे आनश् प्रत्यय होय । उदाहरण—'भोगं भुञ्जति' इसमें तत्स्वभावता वाच्य है क्योंकि भोगके भोगनेका स्वभाव कर्त्तामें विद्यमान है इस कारण भुजधातुसे आनश् प्रत्यय

करनेपर ' शिवि चतुर्वत् ' इसकर रुधादि होनेसे नम् किया फिर ' नमसोऽस्य इसकर नमुके अकारका लोप किया तब सिद्ध हुआ । भोग भुञ्जानः । ' कवचं बिभर्ति ' इसमें यौवनअवस्था वाच्य है क्योंकि कवचके धारण करनेकी यौवनअवस्था कर्त्ताके विषै विद्यमान है इस कारण भृञ्धातुसे आनशप्रत्यय करनेपर ' शिवि चतुर्वत् ' इसकर चतुर्वत् कार्य करनेसे सिद्ध हुआ । बिभ्राणः । ' शत्रून् निघ्नन्ति ' इसमें सामर्थ्य वाच्य है क्योंकि शत्रुओंके मारनेका सामर्थ्य कर्त्तामें विद्यमान है इस कारण हन्धातुसे आनशप्रत्यय करनेपर ' शिवि० ' इसकर चतुर्वत् कार्य किया ' गमां स्वरे ' इसकर हनके उपधाका लोप कर ' हनो घ्ने ' इसकर हकारको घकार किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । निघ्नानः ॥

इङ्धार्योरकृच्छ्रिणि कर्तरि शतृ ॥ ७८३ ॥ इङ् अध्ययने ॥ अधीयन् ॥ धृञ् धारणे ॥ स्यन्त । धारयन् ॥ द्विष अप्रीतौ ॥

भाषा–इङ् और धारि इन धातुओंसे शतृप्रत्यय होय कष्टवर्जित कर्त्ताअर्थमें विषै । उदाहरण–' अधीते ' इसका अर्थ सुखपूर्वक अध्ययन करता है यह है और ' धारयते ' इसका अर्थ सुखपूर्वक धारण करता है यह है । इन दोनों धातुओंसे शतृप्रत्यय करनेसे सिद्ध हुआ । अधीयन् । धारयन् । द्विष्धातु अप्रीतिअर्थमें वर्त्ते है ॥

द्विषश्शत्रौ ॥ ७८४ ॥ द्वेष्टीति द्विषन् ॥

भाषा–' द्विष् अप्रीतौ ' धातुसे शतृप्रत्यय होय शत्रुअर्थ वाच्य हुए संते । उदाहरण–' द्वेष्टि ' इस विग्रहमें शत्रुअर्थ वाच्य होनेसे द्विष्धातुसे शतृप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । द्विषन् ॥

अर्हः पूजायाम् ॥ ७८५ ॥ अर्हन् ॥

भाषा–' अर्ह पूजायाम् ' धातुसे शतृप्रत्यय होय पूजाअर्थके विषै । उदाहरण–' अर्हति ' इस विग्रहमें पूजाअर्थ वाच्य है इस कारण अर्हधातुसे शतृप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । अर्हन् ॥

शीले ॥ ७८६ ॥ तृन् ॥ कट कर्त्ता । इषु हर्त्ता ॥

भाषा–शीलअर्थमें तृन्प्रत्यय होता है । तृन्प्रत्ययमें नकार स्वार्थ है । उदाहरण–' करोत्येवंशीलः ' इस विग्रहमें कृञ्धातुसे तृन्प्रत्यय करनेपर धातुको अनिट् होनेसे इट् करनेसे नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । कर्त्ता । हृञ्धातुसे शीलअर्थमें तृन्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । हर्त्ता ॥

इष्णुस्त्नुक्तु शीले ॥ ७८७ ॥ अलंकरिष्णुः । निराकरिष्णुः । जनी । प्रजनिष्णुः ॥

भाषा–धातुसे इष्णु, स्नु, क्नु यह प्रत्यय होते हैं शीलअर्थके विषैं । क्नुप्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण–' अलंकरोत्येवंशीलः ' इस विग्रहमें अलंपूर्व कृञ्धातुसे इष्णुप्रत्यय करनेपर गुण करनेसे सिद्ध हुआ । अलंकरिष्णुः । ' निराकरोत्येवंशीलः ' इस विग्रहमें शीलअर्थ विद्यमान है इस कारण निरापूर्व कृधातुसे इष्णुप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । निराकरिष्णुः । ' प्रजायते इत्येवंशीलः ' इस अर्थमें प्रजन्धातुसे इष्णुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । प्रजनिष्णुः ॥

जिभुवोर्नेड्गुणौ स्नौ ॥ ७८८ ॥ जि जये ॥ जिष्णुः । भूष्णुः । ग्लास्नुः । त्रस्नुः । त्रैङ । त्रस्नुः । गृध्नुः । ञिधृषा । धृष्णुः । क्षिपः । क्षिप्नुः ॥

भाषा–जि, भू इन धातुओंको इट् और गुणकार्य नहीं होते हैं स्नुप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–' जयति इत्येवंशीलः ' इस विग्रहमें जिधातुसे स्नुप्रत्यय करनेपर धातुको अनिट् होनेसे इट् तौ हुआ नहीं और गुणभी नहीं हुआ ' जिभुवोर्नेड्गुणौ स्नौ ' इसकर तब ' किलात्षः० ' इसकर स्नुके सकारको षकार किया फिर ' षुर्नो णोऽनन्ते ' इसकर नकारको णकार किया तब रूप सिद्ध हुआ । जिष्णुः । ' भवत्येवंशीलः ' इस विग्रहमें भूधातुसे स्नुप्रत्यय किया तब ' जिभुवोर्नेड्गुणौ स्नौ ' इसकर इट् गुण तौ हुआ नहीं फिर ' किलात्षः०, षुर्नो णोऽनन्ते ' इनकर सिद्ध हुआ । भूष्णुः । ' ग्लायत्येवंशीलः ' इस विग्रहमे ग्लैधातुसे स्नुप्रत्यय करनेके अनन्तर अनिट् होनेसे इट् न होनेसे सिद्ध हुआ । ग्लास्नुः । ' त्रसी उद्वेगे ' धातुसे शीलअर्थमें क्नुप्रत्यय करनेके अनन्तर ' ह्वत्योर्नेट् ' इसकर इट् तौ हुआ नहीं तब सिद्ध हुआ । त्रस्नुः । इसी प्रकार गृधुधातुसे क्नुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । गृध्नुः । ञिधृषाधातुसे स्नुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । धृष्णुः । क्षिप्धातुसे क्नुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । क्षिप्नुः ॥

षाकोकणः ॥ ७८९ ॥ शीलार्थे षाक उ उकण् प्रत्यया भवंति ॥ जल्पाकः ॥ भिक्ष याच्ञायाम् ॥ भिक्षाकः ॥ कुट्ट च्छेदे ॥ कुट्टाकः दुष्टः ॥ लुण्ठ चौर्ये ॥ लुण्ठाकः ॥ वृङ् संभक्तौ ॥ वराकः भिक्षुः ॥ शासि वाक्यप्रबन्धे ॥ इदितो नुम् । आशंसुः । चिकीर्षुः ॥ लष् कान्तौ ॥ लाषुकः ॥ पत्लृ पतने ॥ पातुकः । आतो युक् । स्थायुकः । भावुकः ॥ वृषु सेचने ॥ वर्षुकः । घातुकः । कामुकः ॥

भाषा–धातुसे षाक, उ, उकण् यह प्रत्यय होंय शीलअर्थके विषैं षाकप्रत्य-

यमें पकार 'षिद्गौरादिभ्यश्च' इसकर ईप्प्रत्ययके विधानके अर्थ है । उकण्प्रत्ययमें णकार वृद्धिके अर्थ है । उदाहरण-' जल्पतीत्येवंशीलः ' इस विग्रहमें जल्पधातुसे पाक प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । जल्पाकः । इसी प्रकार पाकप्रत्ययमें सिद्ध हुए रूप वराकपर्यन्त जानने । सनप्रत्ययान्त तथा आशस और भिक्षधातुसे उप्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुए चिकीर्ष-उ । आशंस्-उ । भिक्ष्-उ । फिर ' यतः ' इसकर सप्रत्ययके अकारका लोप किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुए । चिकीर्षु । आशंसु । भिक्षु । 'लपति इत्येवंशीलः' इस विग्रहमें लष्धातुसे उकण् प्रत्यय करनेपर 'अत उपधायाः' इसकर वृद्धि करनेसे नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । लाषुकः । इसी प्रकार पतलधातुसे उकण्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । पातुकः । 'तिष्ठति इत्येवंशील' इस विग्रहमें स्थाधातुसे उकण्प्रत्यय करनेसे अनन्तर 'आतो युक्' इसकर युक् आगम किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । स्थायुकः । भूधातुसे उकण्प्रत्यय करनेके अनन्तर 'धातोर्नामिनः' इसकर वृद्धि करनेके नामसंज्ञाके विषे सिद्ध हुआ । भावुकः । वृषुधातुसे उकण्प्रत्यय करनेपर 'उपधाया लघोः' इसकर गुण किया तब सिद्ध हुआ । वर्षुकः । शेष रूप इसी प्रकार मानने ॥

शॄवन्द्योरारुः ॥७६०॥ शॄ हिंसायाम् ॥ शरारुः । वदि । वन्दारुः ॥

भाषा-शृ, वदि इन धातुओंसे परे शीलअर्थके विषे आरुप्रत्यय होय । उदाहरण-'शृणाति इत्येवंशीलः' इस अर्थमें शृधातुसे आरुप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । शरारुः । इसी प्रकार वदिधातुसे आरुप्रत्यय करनेपर 'इदितो नुम्' इसकर नुम् आगम किया तब रूप सिद्ध हुआ । वन्दारुः ॥

स्पृहिगृहिपतिदयिनिद्रातन्द्राश्रद्धाशीङ्भ्य आलुः ॥ ७६१ ॥ स्पृहयालुः ॥ गृहु ग्रहणे ॥ चुरादिः । गृहयालुः । पतयालुः । दय दाने ॥ दयालुः ॥ द्रा कुत्सायाम् ॥ निद्रालुः । तदो नान्तत्वम् । तन्द्रालुः । श्रद्धालुः । शीङ् । शयालुः ॥

भाषा-स्पृहि, गृहि, पति, दय, निद्रा, तंद्रा, श्रद्धा, शीङ् इन धातुओंसे शील अर्थमें आलुप्रत्यय होय । उदाहरण-स्पृहि, गृहि, पति इन तीनों चुरादि धातुओंसे शीलअर्थमें आलुप्रत्यय करनेके अनन्तर 'न तिष्ठन्तास्वाय्येल्विष्णुषु' इसकर णिप्रत्ययका लोप न करनेपर रूप सिद्ध हुए । स्पृहयालुः । गृहयालुः । पतयालुः । 'दयते इत्येवंशीलः' इस विग्रहमें आलुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । दयालुः । निपूर्वक द्राधातुसे शीलअर्थमें आलुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । निद्रालुः । तत्पूर्वक द्राधातुसे आलुप्रत्यय करनेके अनन्तर तत्शब्दके तकारको नकार निपातसे

करनेपर सिद्ध हुआ । तन्द्रालुः । अत्पूर्वक धाञ्धातुसे आलुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । श्रद्धालुः । शीङ्धातुसे आलुप्रत्यय करनेके अनन्तर सिद्ध हुआ । शयालुः ॥

शमादिभ्यो घिनुण् ॥ ७६२ ॥ शम उपशमे ॥ शमी । तमी । दमी । भ्रमी । क्षमी । क्लमी । श्रमी । प्रमादी । चजोः कगौ घिति । चकारजकारयोः ककारगकारौ घिति । सम्पर्की । योगी । विवेकी । त्यागी । अस्ति । अनेकके घिनुणि रञ्जेर्नलोपो वाच्यः । रागी । भागी । विकाषी । विलासी । प्रलापी । प्रसारी ॥ मथ हिंसायाम् ॥ प्रमाथी । प्रवासी ॥

भाषा–शमु, तमु, दमु, श्रमु, भ्रमु, क्षमु, क्लमु, मदी इन आठ शमादिक धातुओंसे शीलअर्थमें घिनुण् प्रत्यय होय आदिशब्दकरके अन्यधातुओंसेभी होय । उदाहरण–' शाम्यत्येवंशीलः ' इस विग्रहमें शमुधातुसे घिनुण्प्रत्यय किया घिनुण्प्रत्ययमें णकार वृद्धिके अर्थ है और घकार ' चजोः कगौ घिति ' इस सूत्रमे अर्थके है उकार उच्चारणार्थ है तव रूप स्थित हुआ शम्-इन् ' मान्तस्य सेटो न वृद्धिरिणि ञिणति कृति ' इसकर धातुके उपधारूप अकारको वृद्धि नहीं हुई तव नामसंज्ञामें ' इना० ' इसकर सिद्ध हुआ । शमी । इसी प्रकार शेष रूप सिद्ध हुए जानने । प्रपूर्व मदीधातुसे घिनुण्प्रत्यय करनेके अनन्तर उपधाको वृद्धि करनेपर रूप सिद्ध हुआ । प्रमादी । आदिशब्दके अन्यधातुओंसेभी घिनुण्प्रत्यय होता है । ' पृची संपर्के ' धातुसे घिनुण्प्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ पृच्-इन् फिर ' उपधाया लघोः ' इसकर गुण किया तव रूप स्थित हुआ पर्च्-इन् । चकार जकारको ककार घकार होय घकार है इत् जिसका ऐसा प्रत्यय पर हुए संते । भाव यह है कि घकार इत्वाला यदि प्रत्यय परे होवे तौ धातुके चकारको ककार और जकारको गकार होय । उदाहरण–पर्च्-इन् । इसमे चकारको ककार किया क्योंकि घित्प्रत्यय परे विद्यमान है तव नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । संपर्की । युजिर्धातुसे शीलअर्थमें घिनुण्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' चजोः कगौ घिति ' इसकर युजधातुके जकारको गकार करनेपर सिद्ध हुआ । योगी । इसी प्रकार शेष रूप जानने । रञ्जधातुसे घिनुण्प्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ रञ्ज्-इन् अस्, उस्, अन, अक, घिनुण् यह प्रत्यय पर हुए संते रञ्जधातुसे नकारका लोप वाच्य है । उदाहरण–रञ्ज्-इन् । इसमें रञ्जधातुके नकारका लोप किया क्योंकि घिनुण्प्रत्यय परे विद्यमान है फिर ' चजोः कगौ घिति ' इसकर जकारको गकार और उपधाको वृद्धि किया तव रूप सिद्ध हुआ । रागी । भजधातुसे

घिनुणप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। मागी। विपूर्व कषधातुसे घिनुणप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। विकषी। शेष रूप इसी प्रकार सिद्ध हुए जानने ॥

निन्दादेवुञ् ॥७६३॥ निन्दक । हिंसकः । परिक्षेपक । परिवादकः ॥

भाषा—णिदि आदिक धातुओंसे शीलमर्थके विषें वुञ् प्रत्यय होय। उदाहरण—' निन्दतीत्येवंशीलः ' इस विग्रहमें ' णिदि कुत्सायाम् ' धातुसे वुञ्प्रत्यय करनेपर ' युवोरनाकौ ' इसकर वुञ्प्रत्ययको अक आदेश किया फिर ' इदितो नुम् ' इसकर धातुको नुम् आगम किया तब रूप सिद्ध हुआ। निन्दकः । ' हिंसि हिंसायाम् ' धातुसे शीलमर्थमें वुञ्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। हिंसकः । परिपूर्वक क्षिपधातुसे वुञ्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । परिक्षेपकः । और णिप्रत्ययान्त ' वद व्यक्तायां वाचि ' धातुसे वुञ्प्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ परिवादि-अक फिर ' णे ' इसकर णिका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ। परिवादक ॥

चलनशब्दार्थादकर्मकायुः ॥७६४॥ चुप मन्दायां गतौ ॥ चोपन । चलन । कम्पन । शब्दन । रवणः ॥

भाषा—चलनरूप अर्थ है जिसका और शब्दरूप अर्थ है जिसका ऐसे अकर्मकधातुसे शीलमर्थमें युप्रत्यय होय । उदाहरण—' चल कम्पने, चुप मन्दायां गतौ, कपि चलने ' यह धातु अकर्मक और चलनार्थ हैं इस कारण शीलमर्थमें युप्रत्यय करनेपर ' युवोरनाकौ ' इसकर युको अनआदेश किया तब रूप सिद्ध हुए । चलन । चोपन । कम्पन । ' शब्द शब्दने, रु शब्दे ' यह धातु शब्दार्थ और अकर्मक हैं इस कारण युप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुए । शब्दन । रवण ॥

अनुदात्तेतो हलादेरकर्मकात् ॥ ७६५ ॥ वर्तन । रमण ॥

भाषा—अनुदात्त स्वर है इत् जिसका ऐसे हलप्रत्याहारादि अकर्मकधातुसे शीलमर्थमें युप्रत्यय होय । उदाहरण-' वृतु वर्तने, रमु क्रीडायाम् ' इन धातुओंका अनुदात्त स्वर इत्संज्ञक है और इनके आदिमें हलप्रत्याहारसम्बन्धी वकार रकार विद्यमान है और यह दोनों धातु अकर्मकभी हैं इस कारण युप्रत्यय करनेके अनन्तर युप्रत्ययको ' युवोरनाकौ ' इसकर अनआदेश किया तब रूप सिद्ध हुआ । वर्तन । रमणः ॥

ज्वादेश्च ॥७६६॥ जु गतौ वेगे च ॥ जवन । सरणः । गर्धन । कोपन । रोषणः । मण्डनः । भूषण ॥

भाषा—जु आदिक धातुओंसे शीलमर्थमें युप्रत्यय होय । उदाहरण-' जवते इत्येवंशीलः ' इस विग्रहमें जुधातुसे युप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । जवनः । इसी प्रकार शेष रूप जानने ॥

ज्यादेरिनिः ॥ ७६७ ॥ जयी । प्रजवी । दरी । क्षयी ॥

भाषा–जि आदिक धातुओंसे शीलअर्थमें इनिप्रत्यय होय इनिप्रत्ययमें इकार, उच्चारणार्थ है । उदाहरण–जिधातुसे इन्प्रत्यय करनेपर गुण किया फिर 'ए अय्' इसकर रूप स्थित हुआ जयिन् नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । जयी । इसी प्रकार शेष रूप सिद्ध हुए जानने ॥

दादेरुः ॥ ७६८ ॥ दारुः । धारुः । सेरुः ॥

भाषा–दारूप आदिक धातुओंसे शीलअर्थमे रुप्रत्यय होय । उदाहरण–'ददात्येवंशीलः' इस विग्रहमे डुदाञ्धातुसे रुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । दारुः । 'दो अवखण्डने, देङ् पालने' इनकाभी ग्रहण है । डुधाञ्धातुसे रुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । धारुः । षिञ्धातुसे रुप्रत्यय करनेके अनन्तर गुण करनेपर रूप सिद्ध हुआ । सेरुः ॥

सृघस्य दः क्मरः ॥ ७६९ ॥ सृमरः । घस्मरः । अद्मरः ॥

भाषा–सृ, घस्, अद् इन धातुओंसे शीलअर्थमें क्मरप्रत्यय होय प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके वास्ते है । उदाहरण–'सरतीत्येवंशीलः' इस विग्रहमें सृधातुसे क्मरप्रत्यय करनेपर प्रत्ययको कित् होनेसे गुण तौ हुआ नहीं तव सिद्ध हुआ । सृमरः । घस्, अद् इन धातुओंसे क्मरप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । घस्मरः । अद्मरः ॥

भञ्जभासमिदो घुरः ॥ ७७० ॥ भंगुरः । भासुरः । मेदुरः ॥

भाषा–भञ्जो, भासृ, ञिमिदा इन धातुओंसे शीलअर्थमें घुरप्रत्यय होय प्रत्ययमें घकार 'चजोः कगौ घिति' इसकर जकारको गकार करनेके अर्थ है । उदाहरण–'भनक्ति इत्येवंशीलः' इस विग्रहमें भञ्जोधातुसे घुरप्रत्यय करनेपर 'चजोः कगौ घिति' इसकर धातुके जकारको गकार किया क्योंकि घित्प्रत्यय घुर परे विद्यमान है तव नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । भंगुरः । भासृधातुसे घुरप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । भासुरः । ञिमिदाधातुसे घुरप्रत्यय करनेपर 'उपधाया लघोः' इसकर गुण करनेपर सिद्ध हुआ । मेदुरः ॥

विदिभिदिच्छिदेः कुरः ॥ ७७१ ॥ विदुरम् । भिदुरम् । छिदुरम् ॥

भाषा–विद्, भिदिर्, छिदिर् इन धातुओंसे शीलअर्थमें कुरप्रत्यय होय कुरप्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण–'विद ज्ञाने' धातुसे कुरप्रत्यय करनेपर कित्प्रत्यय होनेसे गुण नहीं हुआ तव रूप सिद्ध हुआ । विदुरम् । इसी प्रकार शेष रूप जानने ॥

इण्नशजिसर्तिभ्यः क्वरप् ॥ ७७२ ॥ ह्रस्वस्य पिति तुक् ।

इत्वर । इत्वरी । नश्वर । जित्वर । सृत्वर । गमेर्लोपश्च । गत्वरः ॥

भाषा–इण, नश, जि, सृ इन धातुओंसे शीलअर्थमें क्वरप् प्रत्यय होय क्वरप्प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ और टकार ईप्प्रत्ययके अर्थ और पकार तुक्आगमके अर्थ है । उदाहरण–इणधातुसे शीलअर्थमें क्वरप् प्रत्यय करनेके अनन्तर कित्प्रत्यय परे होनेसे धातुको गुण तो हुआ नहीं किन्तु 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' इसकर तुक आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । इत्वर । और णश धातुसे क्वरप् प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । नश्वर । जि सृ धातुओंसे क्वरप् प्रत्यय करनेके अनन्तर तुक् आगम करनेपर सिद्ध हुए । जित्वरः । सृत्वर । गम्धातुसे क्वरप् प्रत्यय करनेके अनन्तर मकारका लोप निपातसे किया फिर तुक आगम करनेपर सिद्ध हुआ । गत्वर ॥

जागर्तेरूक ॥ ७७३ ॥ जागरूक ॥

भाषा–जागृधातुसे शीलअर्थमें ऊकप्रत्यय होय । उदाहरण–'जागर्तीत्येवं-शीलः' इस विग्रहमें जागृधातुसे ऊकप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको गुण करनेसे सिद्ध हुआ । जागरूकः ॥

यङ ऊकः ॥ ७७४ ॥ यजजपदशवदिभ्यो यङन्तेभ्य ऊक शीले स्यात् । ऊके सति यङो लुक् । यायजूक । जञ्जपूक । दंदशूक । वावदूक ॥

भाषा–यङ्प्रत्यय है अन्तमें जिनके ऐसे यज, जप, दश, वद इन धातुओंसे शीलअर्थमें ऊकप्रत्यय होय । उदाहरण–'यायज्यते इत्येवंशीलः' इस विग्रहमें अतिशयार्थ यङ्प्रत्ययान्त यज्धातुसे ऊक्प्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ यायज्य-ऊक । ऊकप्रत्यय पर हुए संते यङ्प्रत्ययका लुक् होय । उदाहरण–याय ज्य-ऊक् । इसमें ऊकप्रत्यय परे विद्यमान है इस कारण यङ्का लुक् करनेपर सिद्ध हुआ । यायजूक । इसी प्रकार शेष रूप जानने ॥

भिय क्रुक्लुकन्लुकाः ॥ ७७५ ॥ भीरुः भीरुक भीलुक ॥

भाषा–भिभीधातुसे शीलअर्थके विषे क्रु, क्रुक, क्लुक यह तीन प्रत्यय होंय इनमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण–'बिभेतीत्येवंशीलः' इस विग्रहमें 'भिभी भये' धातुसे क्रु, क्रुक, क्लुक यह प्रत्यय करनेके अनन्तर कित्प्रत्यय पर होनेसे गुण तो हुआ नहीं तब सिद्ध हुआ । भीरुः, भीरुकः, भीलुकः ॥

नमादेर ॥ ७७६ ॥ नम्रः । स्मेर । नम्कम्प्यस्मि० क्रियासातत्ये । अजसम् । कम्र । हिंस्र । दीप्र ॥

भाषा—नम् आदिक धातुओंसे शीलअर्थमें रप्रत्यय होय । उदाहरण—' नमतीत्येवंशीलः ' इस विग्रहमें ' णम् प्रह्वत्वे शब्दे च ' इस धातुसे रप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । नम्रः । स्मिङधातुसे रप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । स्मेरः । नञ् अव्यय है पूर्व जिसके ऐसे जसुधातुसे क्रियाकी निरन्तरतारूप अर्थमें रप्रत्यय होय । उदाहरण—नञ्पूर्व जस्धातुसे क्रियाकी निरन्तरतामें रप्रत्यय करनेके अनन्तर ' नासमासे ' इसकर नञ्को अ आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । अजस्रम् । शेष रप्रत्ययान्त रूप इसी प्रकार जानने ॥

विन्दुरिच्छुरेतौ निपात्यौ ॥ ७७७ ॥ वेत्ति तच्छीलो विन्दुः । इच्छतीतीच्छुः ॥

भाषा—विन्दु, इच्छु यह शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण—' वेत्तीत्येवंशीलः, इच्छतीत्येवंशीलः ' इन विग्रहोंमें ' विद ज्ञाने, इषु इच्छायाम् ' इन धातुओंसे ' षाकोकणः ' इसकर उप्रत्यय करनेके अनन्तर निपातसे सिद्ध हुए । विन्दुः । इच्छुः ॥

स्वपितृषिधृषेर्नजिङ् ॥ ७७८ ॥ स्वप्नक् । तृष्णक् । धृष्णक् ॥

भाषा—स्वप्, तृष्, धृष् इन धातुओंसे शीलअर्थमें नजिङ् प्रत्यय होय प्रत्ययमें ङकार गुणनिषेधके अर्थ है इकार उच्चारणार्थ है । उदाहरण—ञिष्वप्, तृष् ञिधृषा इन धातुओंसे नजिङ्प्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुए स्वप्नज् । तृष्णज् । धृष्णज् । नामसंज्ञामें सिप्रत्ययके विषैं सिद्ध हुए । स्वप्नक् । तृष्णक् । धृष्णक् ॥

स्थादेर्वरः॥७७९॥ स्थावरः । ईश्वरः । भास्वरः । पेस्वरः । कस्वरः॥

भाषा—स्था इत्यादिक धातुओंसे वरप्रत्यय होय शीलअर्थके विषैं । उदाहरण—' तिष्ठतीत्येवंशीलः ' इस विग्रहमें ' ष्ठा गतिनिवृत्तौ ' धातुसे वरप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । स्थावरः । ' ईश ऐश्वर्ये ' धातुसे शीलअर्थके विषैं वरप्रत्यय करनेपर ' ह्वत्योर्नेट् ' इसकर प्रत्ययको इट् आगम नहीं हुआ तब सिद्ध हुआ । ईश्वरः । इसी प्रकार शेष रूप जानने ॥

आद्दतः किर्द्विश्च भूते ॥ ७८० ॥ आदन्तादृदंताज्जनिगमिनमिभ्यो यङंतेभ्यस्सासहिवावहिचाचलिपापतिभ्यः किप्रत्ययो भूते शीले धातोश्च द्वित्वम् ॥ किलिँड्वद्वाच्यः । रामस्सोमं पपिर्यज्ञे ददिर्गाश्चक्रिरद्भुतम् । याजकान्वव्रिराजह्निः पौण्डरीके महाद्विजान् ॥ जज्ञिः । नेमिः । जग्मिः । सासहिः । वावहिः । चाचलिः । पापतिः ॥

भाषा—आकारान्त ऋकारान्त और जन्, गम्, नम् और यङ्प्रत्ययान्त सासद्' वावद्, चाचल, पापत् इन धातुओंसे भूतकाल अर्थके विषे और शीलअर्थमें किप्रत्यय होय और धातुको द्वित्व होय किप्रत्यय लिट्लकारके समान वाच्य है अर्थात् जो कि कार्य लिट् पर हुए संते होता है वही कार्य किप्रत्यय पर हुए संते होता है। प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण–' पा पाने ' धातुसे भूतअर्थमें किप्रत्यय करनेपर धातुको द्वित्व किया फिर ' आतोऽनपि ' इसकर आकारका लोप किया तब नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । पपि' । इसी प्रकार डुदाञ्धातुसे किप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । ददि' । ऋकारान्त डुकृञ्धातुसे किप्रत्यय करनेपर धातुको द्वित्व किया पश्चात् नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । चक्रि । ' जनी प्रादुर्भावे ' धातुसे भूतकालमें किप्रत्यय करनेके अनन्तर द्वित्व करनेपर ' गमां स्वरे ' इसकर धातुके उपधारूप अकारका लोप किया फिर ' क्षामि' ञु ' इसकर नकारको अकार किया तब सिद्ध हुआ । जज्ञि' । नम्धातुसे भूतअर्थमें किप्रत्यय करनेके अनन्तर द्वित्व करनेपर ' लोप' पचां किल्ये चास्य ' इसकर पूर्व और अकारको एकार किया क्योंकि परमें लिट्प्रत्ययवत् किप्रत्यय विद्यमान है तब सिद्ध हुआ । नेमि' । गमधातुसे किप्रत्यय करनेके अनन्तर द्वित्व करनेपर ' गमां स्वरे ' इसकर उपधाका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ । जग्मि' । ' सासहाचक्रे ' इस अर्थमें यङ्प्रत्ययान्त सहधातुसे किप्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ सासह्य-इ' फिर ' अनपि च इसात् ' इसकर यकारका और ' यत' ' इसकर अकारका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । सासहि । इसी प्रकार यङ्प्रत्ययान्त वद, चल, पत इन धातुओंसे भूत अर्थमें किप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुए । वावदि । चाचलि । पापति ॥

अथोणादयः । कृवापाजिमिस्वदिसाध्यशूभ्य उण् ॥ ७८१ ॥ कारु । वातीति वायु' । पायु । जायु । मिनोतीति मायुः । स्वद आस्वादने । स्वादु । साधु । आशु । दीर्यते इति दारु । सानुः ॥

भाषा—इसके अनन्तर उण् आदिक प्रत्ययोंको कहते हैं । कृआदिक धातुओंसे उण्प्रत्यय होय प्रत्ययमें णकार वृद्धि आदिक अर्थार्थ है । उदाहरण– ' करोति ' इस अर्थमें कृञ्धातुसे उण्प्रत्यय करनेपर धातुको वृद्धि करनेसे सिद्ध हुआ । कारु' । ' वाति इस अर्थमें उण्प्रत्यय करनेपर ' आतो युक् ' इसकर युक् आगम किया तब सिद्ध हुआ । वायुः । शेष रूपभी इसी प्रकार अर्थानुसार जानने ॥

जनेर्ञुञ् ॥ ७८२ ॥ जानुः । चारु । चा   । किं शृणातीति किंशारुः । जरामेतीति जरायुः ॥

भाषा–जन्धातुसे ञुञ्प्रत्यय होय ञुञ्प्रत्ययमें दोनों ञकार इत्संज्ञक है । उदाहरण–जन्धातुसे ञुञ्प्रत्यय किया तब रूप स्थित हुआ जन्-उ इसमें ' जनिवध्योश्च ' इसकर वृद्धि नहीं होनी चाहिये परन्तु दो ञकारोके सामर्थ्यसे वृद्धि करने योग्य है तब रूप सिद्ध हुआ । जानुः । ' जरामेतीति ' इस विग्रहमें जरापूर्वक इण्धातुसे उण्प्रत्यय करनेके अनन्तर वृद्धि करनेपर ' ऐ आय्, सवर्णे दीर्घः सह' इत्यादिकर सिद्ध हुआ । जरायुः ॥

त्रो रस्य लः ॥ ७८३ ॥ तरन्ति वर्णा अनेनेति तालुः ॥

भाषा–तृ और ऋ इन धातुओंके रकारको लकार होय उण्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–' तरन्ति वर्णा अनेन ' इस विग्रहमें तृधातुसे उण्प्रत्यय करनेके अनन्तर वृद्धि करनेपर रकारको लकार किया तब रूप सिद्ध हुआ । तालुः ॥

कृके वचः कश्च ॥ ७८४ ॥ कृकेन गलेन वक्तीति कृकवाकुः ॥

भाषा–कृकशब्द उपपद हुए संते वच्धातुके अन्त्यवर्णको ककार आदेश होय उण्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–' कृकेन वक्ति ' इस विग्रहमें कृकपद पूर्व होनेसे वच्धातुसे उण्प्रत्यय करनेके अनन्तर वच्के चकारको ककार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । कृकवाकुः ॥

भ्रादेरुः ॥ ७८५॥ मरुः । शयुः । तरुः । चरुः । त्सर छद्मगतौ । त्सरुः । तनुः । धनुः । मयुः । कटुः । बटुः । अणुः । शृणातीति शरुः।स्वरुः।त्रपुः।अस्रवः । वसुः । हनुः । बन्धुः । मनुः । बिन्दुः ॥

भापा–मृङ्आदिक धातुओंसे उप्रत्यय होय । उदाहरण–'म्रियन्तेऽस्मिन् भूतानि' इस विग्रहमें मृङ्धातुसे उप्रत्यय करनेपर गुण करनेसे सिद्ध हुआ । मरुः । शेष रूप अर्थानुसार इसी प्रकार जानने चाहिये ॥

स्यन्देस्सम्प्रसारणं धश्च ॥ ७८६ ॥ सिन्धुः ॥

भाषा–स्यन्दधातुको संप्रसारण होय और दकारको धकार होय उप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–' स्यन्दते जलमिति ' इस विग्रहमें स्यन्द्धातुसे उप्रत्यय करनेके अनन्तर यकारको इकार संप्रसारण किया और दकारको धकार किया तब सिद्ध हुआ । सिन्धुः ॥

उन्देरिच्चादेः ॥ ७८७ ॥ उनत्तीति इन्दुः ॥

भाषा-उन्दीधातुसे आदिवर्णको इकार होय उप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण-' उनत्ति ' इस अर्थमें उन्दीधातुसे उप्रत्यय करनेके अनन्तर आदिवर्ण उकारको इकार करनेपर सिद्ध हुआ । इन्दुः ॥

स्कन्देस्सलोपश्च ॥ ७८८ ॥ कन्दुः ॥

भाषा-स्कन्दिर्धातुके सकारका लोप होय उप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण-' स्कन्दति शोष्यति ' इस विग्रहमें स्कन्दिर्धातुसे उप्रत्यय करनेके अनन्तर सकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । कन्दुः ॥

सृजेरसुम् सलोपश्च ॥ ७८९ ॥ रज्जुः ॥

भाषा-सृजधातुको असुम् आगम होय और सकारका लोप होय उप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण-' सृजति ' इस विग्रहमें सृजधातुसे उप्रत्यय करनेके अनन्तर असुम् आगम और सकारका लोप किया तब रूप स्थित हुआ ऋ-अस्-ज उ फिर ' अरम् स्वौ' ञुमि ञु' ' इन सूत्रोंसे ऋकारको रकार और सकारको शकार किया फिर ' झवे जबा' ' इसकर शकारको स्थानसवर्ण होनेसे जकार किया तब सिद्ध हुआ । रज्जुः ॥

फलेर्गुक् च ॥ ७९० ॥ फल्गुः ॥

भाषा-फलधातुको गुक् आगम होय उप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण-फलधातुसे उप्रत्यय करनेके अनन्तर गुक् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ । फल्गुः ॥

पाटेः पटिश्च ॥ ७९१ ॥ पाटयतीति पटुः समर्थः ॥

भाषा-पाटिधातुको पट आदेश होय उप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण-' पाटयति इस विग्रहमें णिप्रत्ययान्त पाटिधातुसे उप्रत्यय करनेपर पट आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । पटुः ॥

मनेर्धश्च ॥ ७९२ ॥ मन ज्ञाने । मधु ॥

भाषा-मन्धातुसे अन्त्यवर्णको धकार आदेश होय उप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण-मन्धातुसे उप्रत्यय करनेके अनन्तर नकारको धकार करनेपर सिद्ध हुआ । मधु ॥

जनेस्तश्च ॥ ७९३ ॥ जतु ॥

भाषा-जन्धातुके अन्त्यवर्णको तकार आदेश होय उप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण- जायते ' इस अर्थमें जन्धातुसे उप्रत्यय करनेके अनन्तर अन्त्यवर्ण नकारको तकार आदेश करनेपर रूप सिद्ध हुआ । जतुः ॥

वलेर्गुक् च ॥ ७९४ ॥ वल संवरणे । वल्गु ॥

भाषा–वल्धातुको गुक् आगम होय उप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–वल्धातुसे उप्रत्यय करनेके अनन्तर गुक् आगम करनेपर सिद्ध हुआ । वल्गुः ॥

नमेर्नाकिश्च ॥ ७९५ ॥ नम्यतेऽनेनेति नाकुः ॥

भाषा–नमूधातुको नाक् आदेश होय उप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–'नम्यतेऽनेन' इस विग्रहमें नमूधातुसे उप्रत्यय करनेके अनन्तर नाक् आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । नाकुः ॥

श्यतेः कुस्सवच्च ॥ ७९६ ॥ शिशुः ॥

भाषा–शोधातुसे कुप्रत्यय होय और यह कुप्रत्यय सप्रत्ययवत् होय अर्थात् सप्रत्यय पर हुए संते जो कि द्वित्वादि कार्य होता है वहही कार्य कुप्रत्यय पर हुए संते होता है ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण–शोधातुसे कुप्रत्यय करनेके अनन्तर 'संध्यक्षराणामानपि' इसकर धातुके ओकारको आकार किया पश्चात् द्वित्व किया फिर 'यः से' इसकर पूर्वके अकारको इकार किया फिर 'आतोऽनपि' इसकर आकारका लोप किया तब सिद्ध हुआ । शिशुः ॥

याभ्रोर्द्विश्च ॥ ७९७ ॥ ययुः । बभ्रुः ॥

भाषा–या, भृञ् इन धातुओंसे कुप्रत्यय होय और धातुको द्वित्व होय । उदाहरण–'यातीति । भरतीति' इन विग्रहमें या भृ धातुसे कुप्रत्यय कर धातुको द्वित्व किया तब सिद्ध हुए । ययुः । बभ्रुः ॥

व्यधेः कुः ॥ ७९८ ॥ विधुः ॥

भाषा–व्यधधातुसेभी कुप्रत्यय होय । उदाहरण–'विरहिणं विध्यति' इस विग्रहमें व्यधधातुसे कुप्रत्यय करनेके अनन्तर 'ग्रहां किति च' इसकर संप्रसारण करनेपर सिद्ध हुआ । विधुः ॥

कृग्रोरुरङ् च ॥ ७९९ ॥ करोतीति कुरुः । गॄ शब्दे । गृणातीति गुरुः ॥

भाषा–कृञ्, गॄ इन धातुओंको उरङ् आदेश होय उप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–'करोति, तत्वं गृणाति' इन विग्रहोंमें कृ गॄधातुसे कुप्रत्यय करनेके अनन्तर उरङ् आदेश 'ङिदन्तस्यैव वक्तव्यः' इसकर अन्त्य ऋकार ॠकारको करनेपर सिद्ध हुए । कुरुः । गुरुः ॥

रपेरस्येच्च ॥ ८०० ॥ अनिष्टं रपतीति रिपुः ॥

भाषा–रपधातुसे कुप्रत्यय होय और धातुके अकारको इकार होय । उदाहरण–'अनिष्टं रपति' इस विग्रहमें 'रप गतौ' धातुसे कुप्रत्यय करनेके अनन्तर अकारको इकार करनेपर सिद्ध हुआ । रिपुः ॥

अर्त्तिदृशिकम्यमिपशिबाधामृजिपशितुक्धुक्दीर्घहकाराश्च ॥ ८०१ ॥ अर्त्तयति गुणानिति ऋत्षु । सर्वानविशेषेण पश्यतीति पशु । कमु कान्तौ । कन्तुः । अन्धुः । पांशुः । बाधते इति बाहु ॥

भाषा–अर्त्ते, दृशि, कमु, अम, पशि, बाधृ इन धातुओंको क्रमसे ऋत्ष पश यह आदेश और तुक्‌धुक् यह आगम और दीर्घ और हकार होय और कुप्रत्यय होय। भाव यह है कि कुप्रत्यय पर किये संते अर्त्तेको ऋत्षु और दृशिर्‌धातुको पश आदेश होय और कमुको तुक् आगम और अमुको धुक् आगम होय और पशिको दीर्घ और बाधृधातुके अन्त्यवर्णको हकार होय। उदाहरण–अर्त्तधातुसे कुप्रत्यय करनेके अनन्तर ऋत्ष आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । ऋत्षु । दृशिर्‌धातुसे कुप्रत्यय करनेपर पश् आदेश करनेपर सिद्ध हुआ। पशु । कमुधातुसे कुप्रत्यय करनेके अनन्तर 'तुक्' आगम करनेपर सिद्ध हुआ। कन्तुः। अमुधातुसे कुप्रत्यय करनेके अनन्तर धुक् आगम करनेपर सिद्ध हुआ। अन्धुः। पशिधातुसे कुप्रत्यय करनेके अनन्तर 'इदितो नुम्' इसकर नुम् आगम और अकारको दीर्घ करनेपर सिद्ध हुआ। पांशु । और बाधृधातुसे कुप्रत्यय करनेके अनन्तर धकारको हकार करनेपर सिद्ध हुआ। बाहुः॥

प्रथिम्रदिभ्रस्जां सम्प्रसारणं सलोपश्च ॥८०२॥ पृथुः । मृदु ॥

भाषा–प्रथ, म्रद, भ्रस्ज इन धातुओंसे कुप्रत्यय होय और धातुओंको सम्प्रसारण तथा सकारका लोप होय । उदाहरण–' प्रथते, मृदितं शक्यते ' इन विग्रहोंमें कुप्रत्यय करनेके अनन्तर सम्प्रसारण करनेसे सिद्ध हुआ। पृथु। मृदु ॥

न्यङ्क्वादेः कु ॥ ८०३ ॥ न्यङ्कु । भृज्जति तपसा इति भृगु ॥

भाषा–न्यङ्कु इत्यादि गणमें कवर्ग निपातसे होता है। उदाहरण–' नितरामञ्चति ' इस विग्रहमें पुजार्थ अञ्चुधातुसे कुप्रत्यय करनेके अनन्तर चकारको ककार निपातसे करनेपर सिद्ध हुआ। न्यङ्कुः । ' भृज्जति तपसा ' इस विग्रहमें भ्रस्जधातुसे कुप्रत्यय करनेके अनन्तर ' प्रथिम्रदिभ्रस्जां० ' इसकर संप्रसारण और सकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ भृज्‌च फिर न्यंक्वादिक होनेसे जकारको गकार करनेपर सिद्ध हुआ। भृगु ॥

लघिबह्योर्नलोपश्च ॥ ८०४ ॥ लघु ॥

भाषा–लघि, बहि इन धातुओंसे कुप्रत्यय होय और नकारका लोप होय । उदाहरण–लघिधातुसे कुप्रत्यय करनेके अनन्तर ' इदितो नुम ' इसकर नुमके आगमके नकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ। लघु ॥

वालमूललघ्वंगुलीनां वा लस्य रः ॥ ८०५ ॥ वालः वारः । मूलं मूरम् । लघुः रघुः । अंगुलिः अंगुरिः । बहि गतौ । बहुः ॥

भाषा–वाल, मूल, लघु, अंगुलि इन शब्दोंके लकारको विकल्पकरके रकार होता है । उदाहरण उपरोक्त सुगम है । बहिधातुसे कुप्रत्यय करनेके अनन्तर 'इदितो नुम्' इसकर नुम् आगम किया फिर नकारका लोप किया तब सिद्ध हुआ । बहुः ॥

ऊर्णोतेर्नुलोपश्च ॥ ८०६ ॥ ऊरुः ॥

भाषा–ऊर्णुञ्धातुसे कुप्रत्यय और नुका लोप होय । उदाहरण–' ऊर्णूयते आच्छाद्यते ' इस विग्रहमें ऊर्णुञ्धातुसे कुप्रत्यय करनेके अनन्तर नुका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । ऊरुः ॥

महति ह्रस्वश्च ॥ ८०७ ॥ उरु महत् ॥

भाषा–ऊर्णुञ्धातुसे महत्अर्थमें कुप्रत्यय होय और नुका लोप तथा ह्रस्व होय । उदाहरण–' ऊर्णोति ' इस विग्रहमें ऊर्णुञ्धातुसे कुप्रत्यय करनेके अनन्तर महत्अर्थमें नुका लोप और ह्रस्व करनेपर सिद्ध हुआ । उरु ॥

आङ्परयोः खनिशृभ्यां डिच्च ॥ ८०८ ॥ आखनतीत्याखुः । शॄ हिंसायाम् । परान् शृणातीति परशुः ॥

भाषा–आङ् पर यह उपपद हुए संते खन् शॄ इन धातुओंसे कुप्रत्यय होय वह कुप्रत्यय डित्प्रत्ययवत् होता है । उदाहरण–' आखनाति ' इस विग्रहमें आङ्पूर्व खन्धातुसे कुप्रत्यय किया कुप्रत्ययको डित्वत् होनेसे ' डिति टेः ' इसकर टिका लोप किया तब सिद्ध हुआ । आखुः । ' परान् शृणाति ' इस विग्रहमें परपूर्व शॄधातुसे डित्वत् कुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । परशुः ॥

द्रोश्च ॥ ८०९ ॥ द्रवति ऊर्ध्वमिति द्रुः । शतधा द्रवतीति शतद्रुः ॥

भाषा–द्रुधातुसेभी डिद्वत् कुप्रत्यय होय । उदाहरण–' द्रवति ऊर्ध्वम् । शतधा द्रवति ' इन विग्रहोंमें द्रुधातुसे डित्वत् कुप्रत्यय करनेपर ' डिति टेः ' इसकर टिका लोप किया तब सिद्ध हुआ । द्रुः । शतद्रुः ॥

मृगय्वादयो निपात्याः ॥ ८१० ॥ मृगं यातीति मृगयुः । शंकुः । नीलंगुः कृमिविशेषः । मन्द्यादेरुरः । मदि । मन्दुरा । वाशुरा । मथे हिंसायाम् । मथुरा । चते याचने । चतुरः । अंकुरः ॥

भाषा–मृगयु आदिक शब्द कुप्रत्ययान्त निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण–

'मृग याति' इसमें मृगपूर्व याधातुसे कुप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ। मृगयु'। शकिधातुसे कुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। शकुः। निपूर्व लगिधातुसे कु-प्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ। नीर्लगु'। मदि आदिक धातुओंसे उरप्रत्यय होय। उदाहरण-मदिधातुसे उरप्रत्यय करनेपर 'इदितो नुम्' इसकर नुम् आगम किया तब सिद्ध हुआ। मन्दुरा। शेष रूप उरप्रत्ययान्त सिद्ध हुए जानने॥

मद्गुरादयो निपात्याः ॥ ८११ ॥ माद्यतीति मद्गुर'। कर्बुर'। बन्धुरः। बन्धूर। कुक वृक आदाने। कुक्कुरः। कुकूर'। मसुरः मसूर। मसुरः मसूर॥

भाषा-मद्गुर आदिक शब्द उरप्रत्ययान्त निपातसे सिद्ध होते हैं। उदाहरण-'मदी हर्षे' धातुसे उरप्रत्यय करनेपर गुक् आगम निपातसे करनेपर सिद्ध हुआ। मद्गुर'। 'कॄ वरणे' धातुसे उरप्रत्यय करनेपर बुगागम निपातसे करनेसे सिद्ध हुआ। कर्बुर। शेष रूप धातुओंके अनुसार उरप्रत्ययान्त निपातसे जानने॥

शावशेराप्तौ ॥ ८१२ ॥ शु इति आश्चर्ये। शु शीघ्र अश्नुते प्राप्नोति कन्यां यस्मात्स श्वशुर॥

भाषा-शीघ्रार्थवाचक शुशब्द उपपद हुए संते अशूङ्धातुसे उरप्रत्यय होय प्राप्तिअर्थ प्राप्त हुए संते। उदाहरण- शु शीघ्र अश्नुते कन्यां यस्मात्' इस विग्रहमें प्राप्तिअर्थमें विद्यमान है इस कारण शीघ्रार्थवाचक आशुअव्ययके आकारका लोप निपातसे कर शुशब्द उपपद होनेसे अशूङ्धातुसे उरप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। श्वशुर॥

अविमह्योरिषट् ॥८१३॥ अविष। महिष। महिषी राजपत्नी।

भाषा-अव मह इन धातुओंसे इषट्प्रत्यय होय टकार ईप्प्रत्ययके अर्थ है। उदाहरण-'अव रक्षणे, मह पूजायाम्' धातुओंसे इषट्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। अविष। महिष'॥

अमेर्दीर्घश्च ॥ ८१४ ॥ अम गत्याम्। आमिषम्॥

भाषा-अम्धातुसे इषट् प्रत्यय होय और धातुको दीर्घ होय। उदाहरण-अम् धातुसे इषट्प्रत्यय करनेके अनन्तर अकारको दीर्घ करनेसे सिद्ध हुआ। आमिषम्॥

रुहेर्वृद्धिश्च ॥ ८१५ ॥ रौहिष'॥

भाषा-रुहधातुसे इषट्प्रत्यय होय और धातुको वृद्धि होय। उदाहरण-' रु

वीजजन्मनि प्रादुर्भावे च ' इस धातुसे इषट्प्रत्यय करनेके अनन्तर धातुके उकारको औकार वृद्धि करनेपर सिद्ध हुआ । रौहिषः ॥

किलेर्बुक् च ॥ ८१६ ॥ किल शैक्ल्ये । केलतीति किल्बिषम् ॥

भाषा–किलधातुसे इषट्प्रत्यय होय और धातुको बुक् आगम होय । उदाहरण–किलधातुसे इषट्प्रत्यय करनेके अनन्तर किलको बुक् आगम किया तब सिद्ध हुआ । किल्बिषम् ॥

मद्यादेः किरः ॥८१७॥ मदिरा । मुदिरः । मंदिरम् । तिमिरम् । मिहिरः । छिदिरः । रुचिरम् । रुधिरम् । वध हिंसायाम् । बधिरः । सुशिरम् ॥

भाषा–मदी आदिक धातुओंसे किरप्रत्यय होय किरप्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण–' मदी हर्षे ' धातुसे किरप्रत्यय करनेपर स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । मदिरा । ' मुद हर्षे ' धातुसे किरप्रत्यय करनेके अनन्तर प्रत्ययको कित् होनेसे गुण न करनेपर सिद्ध हुआ । मुदिरः । ' मदि मोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु ' इस धातुसे किरप्रत्यय करनेपर ' इदितो नुम् ' इसकर नुम् आगम किया तब सिद्ध हुआ । मन्दिरम् । शेष रूप धातुओंके अनुसार किरप्रत्ययान्त इस प्रकार जानने ॥

अजिरादयो निपात्याः ॥ ८१८ ॥ अजिरम् । शश प्लुतगतौ । शशतीति शिशिरम् । श्रथ मोचने । शिथिलम् । स्थिरः । स्फायी । स्फिरम् । स्थविरः । खदिरः । शीङ् । शिबिरम् । सल गतौ । सलिलम् । अनिलः । महिला । कोकिलः । कमु । कपिलः । मथ्यन्ते रिपवो अस्यामिति मिथिला ॥

भाषा–अजिर आदिक शब्द किरप्रत्ययान्त निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण–अजधातुसे किरप्रत्यय करनेपर वीआदेश निपातसे न होनेसे सिद्ध हुआ । अजिरम् । शशधातुसे किरप्रत्यय करनेपर निपातसे अकारको इकार करनेसे सिद्ध हुआ । शिशिरम् । श्रथधातुसे किरप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । शिथिलम् । स्थाधातुसे इरप्रत्यय करनपर सिद्ध हुआ । स्थिरः । स्फायीधातुसे किरप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ निपातसे । स्फिरम् । और स्थाधातुसे किरप्रत्यय करनेपर वुक् ह्रस्व निपातसे करनेसे सिद्ध हुआ । स्थविरः । इसी प्रकार शेष रूप धातुओंके अनुसार किरप्रत्ययान्त निपातसे जानने ॥

कुबेरादयोऽपि ॥ ८१९ ॥ कुबि आच्छादने। कुबेर। कपृ स्मरणे। कपोत ॥

भाषा—कुबेर आदिक शब्दभी निपातसे सिद्ध होवे हैं। उदाहरण–'कुम्बति अन्येषामैश्वर्यम्' इस विग्रहमें कुबिधातुसे एरप्रत्यय करनेके अनन्तर निपातसे मकारका लोप करनेपर सिद्ध हुआ। कुबेर। कपृधातुसे ओतप्रत्यय करनेपर ऋकारके पकार निपातसे करनेसे सिद्ध हुआ। कपोत ॥

भातेर्डवतु ॥ ८२० ॥ भातीति भवान् ॥

भाषा—भाधातुसे डवतुप्रत्यय होय प्रत्ययमें डकार डित्कार्यके अर्थ है और उकार 'उगितो नुम्' इसकर नुम्विधानके अर्थ है। उदाहरण–'भाति' इस विग्रहमें भाधातुसे डवतुप्रत्यय करनेके अनन्तर 'डिति टेः' इसकर टिका लोप किया नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ। भवान्। द्विवचनमें। भवन्तौ ॥

किशोरादयो निपात्यते ॥८२१॥ किं शृणातीति किशोर। कठ कृच्छ्रजीवने। कठोर। चक तृप्तौ। चकोर। कपि चलने। कपोल। पटोल ॥

भाषा—किशोर आदिक शब्द ओरप्रत्ययान्त व ओलप्रत्ययान्त निपातसे सिद्ध होते हैं। उदाहरण–'किं शृणाति' इस विग्रहमें किम्पूर्व शृधातुसे ओरप्रत्यय करनेके अनन्तर किम्के मकारका लोप और शृधातुके ऋकारका लोप निपातसे करनेपर सिद्ध हुआ। किशोर। 'कपि चलने' धातुसे ओलप्रत्यय करनेपर नकारका लोप निपातसे करनेसे सिद्ध हुआ। कपोल। शेष रूप धातुओंके अनुसार ओरप्रत्ययान्त ओलप्रत्ययान्त निपातसे इसी प्रकार जानने ॥

मीनातेरूर ॥ ८२२ ॥ मयूर ॥

भाषा—मीञ्धातुसे ऊरप्रत्यय होय। उदाहरण–'मीञ् हिंसायाम्' धातुसे ऊर प्रत्यय करनेपर गुण करनेसे 'ए अय्' इसकर सिद्ध हुआ। मयूर ॥

स्यन्देः सम्प्रसारणम् ॥ ८२३ ॥ सिन्दूरम् ॥

भाषा—स्यन्दधातुसे ऊरप्रत्यय होय और धातुको सम्प्रसारण होय। उदाहरण–'स्यन्दू प्रस्रवणे' धातुसे ऊरप्रत्यय करनेके अनन्तर यकारका इकार संप्रसारण करनेसे रूप सिद्ध हुआ। सिन्दूरम् ॥

स्यादेस्तु ॥ ८२४ ॥ सेतु। तन्तु। ओतु। मसी परिणामे। मस्तु। धातुः। षच समवाये। सचति समवैरयति चात्मनि जटमिति सक्तु। क्रोष्टा ॥

भाषा–षिञ् आदिक धातुओंसे तुप्रत्यय होय । उदाहरण–'षिञ् बन्धने' धातुसे तुप्रत्यय करनेपर धातुसे गुण करनेपर सिद्ध हुआ । सेतुः । 'तनु विस्तारे' धातुसे तुप्रत्यय करनेके अनन्तर निपातसे इट् न होनेपर सिद्ध हुआ । तन्तुः । षचधातुसे तुप्रत्यय करनेपर 'चोः कुः' इसकर चकारको ककार करनेसे सिद्ध हुआ । सक्तुः 'क्रुश आक्रोशे' धातुसे तुप्रत्यय करनेके अनन्तर 'छशष०' इसकर शकारको षकार कर 'ष्टुभिः ष्टुः' इसकर स्थित हुआ क्रोष्टु नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । क्रोष्टा । शेष रूप इसी प्रकार तुप्रत्ययान्त जानने ॥

अर्तेस्तुक् ॥ ८२५ ॥ ऋतुः । मन्तुः । जनी प्रादुर्भावे । जन्तुः ॥

भाषा–ऋधातुसे तुक्प्रत्यय होय प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण–ऋधातुसे तुक्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । ऋतुः । 'मन ज्ञाने, जनी प्रादुर्भावे' इन धातुओंसे तुप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुए । मन्तुः । जन्तुः ॥

चायः किः ॥ ८२६ ॥ केतुः । वस्तुः ॥

भाषा–चायृधातुको तुप्रत्यय पर हुए संते कि आदेश होय । उदाहरण–चायृधातुसे तुप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको कि आदेश किया फिर गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । केतुः । 'वस निवासे' धातुसे तुप्रत्यय करनेपर नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । वस्तुः ॥

आगारे णित् ॥ ८२७ ॥ वास्तुः ॥

भाषा–आगारअर्थके विषैं वसधातुसे जो कि तुप्रत्यय होय वह णित्संज्ञक होय । उदाहरण–आगारअर्थमें वस्धातुसे तुप्रत्यय करनेके अनन्तर प्रत्ययको णित् होनेसे 'अत उपधायाः' इसकर वृद्धि करनेसे सिद्ध हुआ । वास्तुः ॥

कृञः क्तुः ॥ ८२८ ॥ क्रतुः ॥

भाषा–कृञ्धातुसे क्तुप्रत्यय होय ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण–कृञ्धातुसे क्तुप्रत्यय करनेके अनन्तर 'ऋरम्' इसकर सिद्ध हुआ । क्रतुः ॥

जीवेरातृको वृद्धिश्च ॥ ८२९ ॥ जीवयति कुमुदानीति जैवातृकः ॥

भाषा–जीवधातुसे आतृप्रत्यय होय और धातुको वृद्धि होय । उदाहरण–'जीव प्राणधारणे' धातुसे आतृकप्रत्यय करनेके अनन्तर जीवधातुको वृद्धि करनेपर सिद्ध हुआ । जैवातृकः ॥

कृषादेरूः ॥ ८३० ॥ कर्षूः । खर्ज व्यथने । खर्जूः ॥

भाषा–कृष आदिक धातुओंसे ऊप्रत्यय होय । उदाहरण–कृषधातुसे ऊप्रत्यय करनेके अनन्तर 'उपधायां लघोः' इसकर गुण करनेपर सिद्ध हुआ । कर्षूः । खर्जधातुसे ऊप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । खर्जूः ॥

वहो धश्च ॥ ८३१ ॥ वहति प्राप्नोति फलमिति वधूः ॥

भाषा–वहधातुसे ऊप्रत्यय होय और अन्त्यवर्णको धकार आदेश होय। उदाहरण– 'वह प्रापणे' धातुसे ऊप्रत्यय करनेके अनन्तर हकारको धकार आदेश करनेसे सिद्ध हुआ। वधूः ॥

कषेश्छश्च ॥ ८३२ ॥ कच्छूः ॥

भाषा–कषधातुसे ऊप्रत्यय होय और अन्त्यवर्णको छकार आदेश होय। उदाहरण– 'कष हिंसायाम्' धातुसे ऊप्रत्यय करनेके अनन्तर षकारको छकार करनेपर 'छः' इसकर छकारको द्वित्व किया तब सिद्ध हुआ। कच्छूः ॥

कास्वादय ॥ ८३३ ॥ कस्यते हन्यतेऽनया कासूः । पद्यते प्राप्यतेऽनया पादूः । लबि गतौ । अलाबूः। कर्कन्धूः । दद्रूः ॥

भाषा–कासू आदिक शब्द ऊप्रत्ययान्त निपातसे सिद्ध होवे हैं। उदाहरण– 'कस गतौ' धातुसे ऊप्रत्यय करनेके अनन्तर वृद्धि करनेसे सिद्ध हुआ। कासूः । 'पद गतौ' धातुसे ऊप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । पादूः । 'लबि गतौ' धातुसे ऊप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ। अलाबूः । शृधातुसे ऊप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ। कशेरुः । दरिद्राधातुसे ऊप्रत्यय करनेसे निपातसे सिद्ध हुआ। दद्रूः ॥

अन्द्वादय ॥ ८३४ ॥ अन्दूः ॥

भाषा–अन्दू आदिक शब्द कूप्रत्ययान्त निपातसे सिद्ध होवे हैं। उदाहरण– 'अदि बन्धने' धातुसे कूप्रत्यय करनेके अनन्तर सिद्ध हुआ। अन्दूः ॥

जनेर्बुक् ॥ ८३५ ॥ जम्बूः । कर्कं दधाति कर्कन्धूः । दिधिं धैर्यं स्यतीति दिधिषूः ॥

भाषा–जन्धातुको बुक् आगम होय कूप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण– 'जनी प्रादुर्भावे' धातुसे कूप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको बुक् आगम किया फिर 'नश्चापदान्ते झले' इसकर नकारको अनुस्वार किया तब सिद्ध हुआ। जम्बूः । कर्कं दधाति इस विग्रहमें कर्कशब्द पूर्व होनेसे धाधातुसे कूप्रत्यय करनेपर 'आतोऽनपि' इसकर आकारका लोप किया और निपातसे पूर्वको मुम् किया तब सिद्ध हुआ। कर्कन्धूः । दिधिपूर्व षोधातुसे कूप्रत्यय करनेके अनन्तर 'आतोऽनपि' इसकर आकारका लोप किया तब सिद्ध हुआ। दिधिषूः ॥

मृग्रोरुति ॥ ८३६ ॥ मरुत् । गरुत् ॥

भाषा—मृङ् गृ इन धातुओंसे उतिप्रत्यय होय प्रत्ययमें इकार उच्चारणार्थ है । उदाहरण—' मृङ् प्राणधारणे, गृ निगरणे ' इन धातुओंसे उत्प्रत्यय करनेके अनन्तर धातुओंको गुण करनेसे सिद्ध हुआ । मरुत । गरुत ॥

गिरतेरुतिस्तस्य मुट् ॥ ८३७ ॥ गर्मुत् । चट भेदने ॥

भाषा—गधातुसे उतिप्रत्यय होय और उस उतिप्रत्ययको मुट् आगम होय प्रत्ययमें इकार उच्चारणार्थ है । उदाहरण—' गॄ निगरणे ' धातुसे उत्प्रत्ययको मुट् आगम करनेके अनन्तर धातुको गुण करनेसे सिद्ध हुआ । गर्मुत् । चटधातु भेदन-अर्थमें वर्ते है ॥

चटेरुलः ॥ ८३८ ॥ चटुलम् ॥

भाषा—चटधातुसे उलप्रत्यय होय । उदाहरण—सुगम है ॥

हादेरितिः ॥ ८३९ ॥ हरित् । सरित् । युष सौत्रो धातुः । युष भजने । योषित् ॥

भाषा—हृञ् आदिक धातुओंसे इतिप्रत्यय होय प्रत्ययमें इकार उच्चारणार्थ है । उदाहरण—' हृञ् हरणे ' धातुसे इत् प्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको गुण करनेसे सिद्ध हुआ । हरित् । सृधातुसे इत्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । सरित् । युषधातु सौत्र है भजनअर्थमें वर्त्ते है इत्प्रत्यय करनेपर ' उपधाया लघोः ' इसकर गुण किय । तब सिद्ध हुआ । योषित् ॥

ताडेर्णिलुक् च ॥ ८४० ॥ तडित् ॥

भाषा—ताडिधातुसे इत्प्रत्यय पर हुए संते णिप्रत्ययका लुक् होय । उदाहरण—' ताडयति ' इस विग्रहमें णिप्रत्ययान्त ' तड आघाते ' धातुसे इत्प्रत्यय करनेके अनन्तर णिका लुक् किया लुक् होनेसे ' लुकि न तन्निमित्तम् ' इसकर वृद्धिकी निवृत्ति हुई तब सिद्ध हुआ । तडित् ॥

शमेर्ढः ॥ ८४१ ॥ शण्ढः ॥

भाषा—शम्धातुसे ढप्रत्यय होय । उदाहरण—शम्धातुसे ढप्रत्यय करनेके अनन्तर ' ह्वत्त्योर्नेट् ' इसकर इट् नहीं किया ' नश्चापदान्ते झसे ' इसकर अनुस्वार करनेसे सिद्ध हुआ । शण्ढः ॥

कमादेरठः ॥ ८४२ ॥ कमठः । जरठः । रमेर्वृद्धिश्च । रामठम् । शमेः खः । शंखः । कणेष्ठः । कण्ठः ॥

भाषा—कमु आदिक धातुओंसे अप्रत्यय होय । उदाहरण—' कमु कान्तौ, जॄ

वयोहानी ' इससे अठप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । कमठः । मरठः । रमुधातुको वृद्धि होय अठप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–रमुधातुसे अठप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुके अकारको वृद्धि करनेपर सिद्ध हुआ । रामठम् । शमुधातुसे ठमस्यय होय । उदाहरण–' शमु उपशमे ' धातुसे ठमस्यय करनेपर सिद्ध हुआ । शंठः । कणधातुसे ठमस्यय होय और णकारको अनुस्वार निपातसे होय । उदाहरण–' कण निमीलने ' धातुसे ठमस्यय करनेपर निपातसे णकारको अनुस्वार करनेसे सिद्ध हुआ । कंठः ॥

वृषलादयः कलप्रत्ययान्ता निपात्या ॥८४३॥ वृषल० । शप् । शबल० । पल गतौ । पललम् । सरलम् । तरलम् । कम्बलम् । मुस खण्डने । मुसलम् ॥

भाषा–वृषल आदिक शब्द कलप्रत्ययान्त निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण–' वृष सेचने ' धातुसे कलप्रत्यय करनेसे सिद्ध हुआ । वृषलः । ' शप् आक्रोशे ' धातुसे कलप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । शबलः । ' सृ गतौ ' धातुका । सरलम् । ' तॄ प्लवनसंतरणयो ' धातुका । तरलम् । ' कमु कान्तौ ' धातुसे कलप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । कम्बलम् ॥

लगेर्वृद्धिश्च ॥ ८४४ ॥ लांगलम् । कुट्मलम् । कुड्मलम् । कश्मलम् । कोमलम् । मृजू । मलम् । चुप् । चपलम् । शकलम् । शमलम् । छमल ॥

भाषा–लगिधातुको वृद्धि निपातसे होय कलप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–' लगि गतौ ' धातुसे कलप्रत्यय करनेके अनन्तर इदितो नुम् ' इसकर नुम् और वृद्धि निपातसे करनेसे सिद्ध हुआ । लांगलम् । ' कुट कौटिल्ये ' धातुका निपातसे, सिद्ध हुआ । कुट्मलम् । कुड दाहे ' धातुका । कुड्मलम् । ' कश गतिशासनयोः ', धातुका सिद्ध हुआ । कश्मलम् । ' कु शब्दे ' धातुका । कोमलम् । ' मृज शुद्धौ ' का सिद्ध हुआ । मलम् । ' चुप् मन्दायां गतौ ' धातुका सिद्ध हुआ । चपलम् । शक्लधातुका । शकलम् । ' शमु उपशमे ' धातुका । शमलम् । ' छो छेदने ' धातुसे कलप्रत्यय करनेके अनन्तर निपातसे सिद्ध हुआ । छमलः ॥

अमान्ताड्ड ॥८४५॥ दण्ड० । रण्डा । खण्ड । मन्यते । मण्डः । अण्ड० । भण्ड । पण्ड ॥

भाषा–अमप्रत्याहारान्त धातुसे डप्रत्यय होय । उदाहरण–दमुधातु मकारान्त है इस कारण इससे डप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । दंडः । ' रमु क्रीडायाम् ',

रुढः । 'खनु अवदारणे' धातुका । खण्डः । 'मन ज्ञाने' धातुका । मण्डः । शेष रूप इसी प्रकार धातुओंके अनुसार डप्रत्ययान्त जानने ॥

कवर्गादिभ्यः किच्च ॥ ८४६ ॥ गुङ् गतौ । गुडः ॥

भाषा-कवर्गसंबन्धी वर्ण है आदिम जिनके ऐसे धातुओंसे डप्रत्यय कित्संज्ञक होय । उदाहरण-'गुङ् गतौ' धातुमें कवर्गसंबन्धी गकार वर्ण धातुके आदिमें है इस कारण कित्संज्ञक डप्रत्यय करनेपर गुण न होनेसे सिद्ध हुआ । गुडः ॥

स्थादेराल्ः ॥ ८४७ ॥ स्थालम् । स्थाली ॥

भाषा-स्था आदिक धातुओंसे आलप्रत्यय होय । उदाहरण-'ष्ठा गतिनिवृत्तौ' धातुसे आलप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । स्थालम् । स्त्रीलिंगमें । स्थाली ॥

पतिचण्डिभ्यामाल्ञ् ॥ ८४८ ॥ पातालम् । चडि कोपे । चंडालः ॥

पत्लृ, चाडि इन धातुओंसे आल्ञ्प्रत्यय होय प्रत्ययमें ञकार वृद्धिके अर्थ है । उदाहरण-'पतन्त्यस्मिन्नधर्मिणः' इस विग्रहमें पत्लृधातुसे आल्ञ्प्रत्यय करनेपर वृद्धि करनेसे सिद्ध हुआ । पातालम् । चडिधातुसे आल्ञ्प्रत्यय करनेके अनन्तर नुम् आगम करनेपर उपधाके अभावसे वृद्धि नहीं हुई तब सिद्ध हुआ । चंडालः । स्वार्थमें अण्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । चाण्डालः ॥

तमादिभ्यः काल्ः ॥ ८४९ ॥ तमालः । बिड भेदने । बिडालः । मृण हिंसायाम् । मर्णयति कमलानि मृणालम् । कुल संस्त्याने नाशने च । कोलति नष्टां करोति मृत्तिकां कुलालः । कपालम् । पल्यते त्यज्यतेऽसौ पललम् ॥

भाषा-तमु आदिक धातुओंसे कालप्रत्यय होय प्रत्ययमे ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण-'तमु कांक्षायाम्' धातुसे कालप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ तमालः । 'मृण हिंसायाम्' धातुसे कालप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको कित्प्रत्यय पर होनेसे गुण न करनेपर सिद्ध हुआ । मृणालम् । 'कपि चलने' धातुसे कालप्रत्यय करनेके अनन्तर नुम् आगमके नकारका लोप निपातसे करनेपर सिद्ध हुआ । कपालम् । शेष रूप धातुओंके अनुसार कालप्रत्ययान्त इसी प्रकार जानने ॥

पतादिभ्योऽङ्गः ॥ ८५० ॥ पतंगः । तरंगः । लवंगम् ॥

भाषा-पत्लृआदिक धातुओंसे अंगप्रत्यय होय । उदाहरण-'पत्लृ पतने, तॄ प्लवनसंतरणयोः, लूञ् छेदने' इन धातुओंसे अंगप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुए । पतंगः । तरंगः । लवंगः ॥

विडादे कित् ॥ ८५१ ॥ विडङ्ग । मृद क्षोदे । मृदङ्ग ॥

भाषा-विड आदिक धातुओंसे जो कि अंगप्रत्यय होय वह कित्संज्ञक होय । उदाहरण-'विड आक्रोशे, मृद क्षोदे' इन धातुओंसे अंगप्रत्यय कित्संज्ञक करनेपर धातुको गुण न करनेसे सिद्ध हुआ । विडङ्ग । मृदंग ॥

गमादेर्गः ॥ ८५२ ॥ गङ्गा । छो । छागः । सङ्गः ॥

भाषा-गम् आदिक धातुओंसे गप्रत्यय होय । उदाहरण-गम्लृधातुसे गप्रत्यय करनेपर स्त्रीलिङ्गमें सिद्ध हुआ । गंगा । 'छो छेदने, स्वञ्ज भेदने' धातुओंसे गप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । छाग । सङ्गः ॥

भृंगादय ॥ ८५३ ॥ भृञ् । भृङ्गः । शृङ्गम् । शार्ङ्गम् । पूगः । मोदते मुद्गः ॥

भाषा-भृङ्ग आदिक शब्द गक्प्रत्ययान्त निपातसे सिद्ध होवे हैं । उदाहरण-'भृञ् धारणपोषणयोः' धातुसे गक्प्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । शृङ्ग । 'शॄ हिंसायाम्' धातुका । शृङ्गम् । शार्ङ्गम् । 'पूङ् पवने' धातुका पूग । 'मुद हर्षे' धातुका । मुद्ग ॥

शारदादयोऽदिप्रत्ययान्ता निपात्याः ॥ ८५४ ॥ शॄ । शरद् । दृणाते । दरद् । दृषद् । त्यजे त्यद् । तने । तद् । यजे । यद् । इण् । एतद् ॥

भाषा-शरद् आदिक शब्द अदिप्रत्ययान्त निपातसे सिद्ध होवे हैं प्रत्ययमें इकार उच्चारणार्थ है । उदाहरण-'शॄ हिंसायाम्' धातुसे अदृप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । शरद् । 'दॄ विदारणे' धातुसे अदृप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । दरद् । दृषद् । 'त्य वयोहानौ' धातुका निपातसे सिद्ध हुआ । त्यद् । 'यज देवपूजादौ' धातुका । यद् । 'तनु विस्तारे' धातुका । तद् । इण गतौ' धातुका । एतद् ॥

भियोऽजिः पुक् ह्रस्वश्च ॥ ८५५ ॥ भिषक् ॥

भाषा-भीधातुसे अजिप्रत्यय होय और अजिप्रत्यय होनेके अनन्तर भीधातुको पुक् आगम और ह्रस्व होय प्रत्ययमें इकार उच्चारणार्थ है । उदाहरण-'ञिभी भये' धातुसे अज्प्रत्यय करनेपर पुक् आगम और ह्रस्व करनेसे भिषज् हुआ भिषज् नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । भिषक ॥

युष्यसिभ्यां मदिक् ॥८५६॥ युष सौत्र । युष्मद् । अस्मद् ॥

भाषा-युष्, असु इन धातुओंसे मदिक् प्रत्यय होय ककार गुणनिषेधके अर्थ और इकार उच्चारणार्थ है। उदाहरण-युष्धातु सौत्र है, भजनअर्थमें वर्त्ते है इससे मदिक्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। युष्मद्। 'असु क्षेपणे' धातुसे मदिक्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। अस्मद्॥

स्त्वादेर्मः ॥ ८५७ ॥ स्तोमः । सोमः । होमः । धर्मः । क्षेमम् । भामः । वामः । यामः । पद्मम् । नयतीति नेमः ॥

भाषा-स्तु आदिक धातुओंसे मप्रत्यय होय। उदाहरण-'ष्टुञ् स्तुतौ, षुञ् अभिषवे, हु दानादनयोः, धृञ् धारणे, क्षिप क्षेपे, भा दीप्तौ, वा गतिगन्धनयोः, या प्रापणे, पद गतौ, णीञ् प्रापणे' इन धातुओंसे क्रमसे मप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुए। स्तोमः। इत्यादिक॥

जिह्मादयो निपात्यंते ॥ ८५८ ॥ जिह्मः । ग्रसु ग्लसु अदने । ग्रामः । सिमः । शुष्मम् । श्यैङ् । श्यामः । धूमः । युग्मम् । रुक्मम् । तिग्मम् । हिमम् । भीमः । भीष्मः । घृ । क्षरणे दीप्तौ च । जिघर्त्यनेन घर्मः । ग्रसेः । ग्रीष्मः ॥

भाषा-जिह्म आदिक मप्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं। उदाहरण-'ओहाक् त्यागे' धातुसे मप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ। जिह्मः। 'ग्रसु अदने' धातुसे मप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ। ग्रामः। 'षिञ् बन्धने' धातुका। सिमः। 'शुष् शोषणे' धातुका। शुष्मम्। 'श्यैङ् गतौ' धातुका। श्यामः। 'धूञ् कंपने' धातुका सिद्ध हुआ। धूमः। 'युजिर् योगे' धातुका। युग्मम्। 'रुच दीप्तौ' धातुका। रुक्मम्। 'तिज निशाने' धातुका सिद्ध हुआ। तिग्मम्। 'हन हिंसागत्योः' धातुका। हिमः। 'ञिभी भये' धातुका। भीमः। भीष्मः। घृ क्षरणे दीप्तौ च' धातुका। घर्मः। 'ग्रसु अदने' धातुका। ग्रीष्मः॥

प्रथेः षिवः सम्प्रसारणं च ॥ ८५९ ॥ पृथिवी ॥

भाषा-प्रथधातुसे षिवप्रत्यय होय और धातुको संप्रसारण होय प्रत्ययमें षकार 'षिद्गौरादिभ्यश्च' इसकर ईष्प्रत्ययके अर्थ है। कोई आचार्य षिवप्रत्ययके स्थानमें ष्वप्रत्यय कहते हैं। उदाहरण-'प्रथ प्रख्याने' धातुसे षिवप्रत्यय करनेके अनन्तर प्रथको संप्रसारण किया तब स्त्रीलिंगमें 'षिद्गौरादिभ्यश्च' इसकर ईप्रत्यय करनेसे सिद्ध हुआ। पृथिवी। और जहां ष्वप्रत्यय हुआ तहां सिद्ध हुआ। पृथ्वी॥

अशादेः क्वः ८६० ॥ अश्वः । खट कांक्षायाम् । खट्वा । विश्वम् । सर्वादिरयम् ॥

भाषा–मश्रुद आदिक धातुओंसे कमत्यय होय प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण–' मशूङ् व्याप्तौ ' धातुसे कमत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । अश्व' । ' लटघते कांक्ष्यते क्षपनार्थिमि ' इस विग्रहमें ' लट् कांक्षायाम् ' धातुसे कमत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । लट्वा । ' विश प्रवेशने ' धातुसे कमत्यय करनेके अनन्तर प्रत्ययको कित् होनेसे गुण न करनेपर सिद्ध हुआ । विश्वम् ॥

सादेर्व ॥ ८६१ ॥ सृतमनेन विश्वमिति सर्व । शर्वः । गर्वः ॥

भाषा–सृ आदिक धातुओंसे वप्रत्यय होय । उदाहरण–' सृ गतौ ' धातुसे वप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको गुण करनेसे सिद्ध हुआ । सर्वः । ' शॄ हिंसायाम्, गॄ निगरणे ' इन धातुओंसे वप्रत्यय करनेपर धातुको गुण करनेसे सिद्ध हुआ । शर्व । गर्व ॥

ग्रीवादयो वप्रत्ययांता निपात्यते ॥ ८६२ ॥ ग्रीवा । लिहत्यनयेति जिह्वा ॥

भाषा–ग्रीवा आदिक वप्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण–' गिरत्यनया ' इस विग्रहमें ' गॄ निगरणे ' धातुसे वप्रत्यय करनेपर निपातसे स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । ग्रीवा । लिहत्यनया ' इस विग्रहमें ' लिह आस्वादने ' धातुसे वप्रत्यय करनेपर स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । जिह्वा ॥

य्वादे कन् ॥ ८६३ ॥ युवा । वृषा । तक्ष्णोति काष्ठानि । तक्षा । राजा । धवि गतौ । धन्वयति धरानिति धन्वा प्रतिदिवा ॥

भाषा–यु आदिक धातुओंसे कन्प्रत्यय होता है कन्प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण–' यु मिश्रणे धातुसे कन्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' नुधातोः ' इसकर उव् किया तब रूप स्थित हुआ युवन् नामसंज्ञामें सिके विर्ष सिद्ध हुआ । युवा । ' वृषु सेचने धातुसे कन्प्रत्यय करनेपर प्रत्ययको कित् होनेसे गुण न करनेपर स्थित हुआ वृषन् नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । वृषा । ' तक्षू तनूकरणे ' धातुसे कन्प्रत्यय करनेपर स्थित हुआ तक्षन् नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । तक्षा । ' राजृ दीप्तौ ' धातुसे कन्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । राजा । धवि गतौ ' धातुसे कन्प्रत्यय करनेपर ' इदितो नुम् ' इसकर नुम् आगम किया नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । धन्वा । ' दिवु क्रीडादौ ' धातुसे कन्प्रत्यय करनेपर स्थित हुआ प्रतिदिवन् नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । प्रतिदिवा ॥

सप्यशूभ्यां तुट् च ॥ ८६४ ॥ सप समवाये । सप्त । अष्ट ॥

भाषा–सप, मशूङ् इन धातुओंसे जो कि कन्प्रत्यय होय उसको तुट् आगम

होय । उदाहरण–' सप समवाये ' धातुसे कन्प्रत्ययको तुक्आगम करनेपर रूप स्थित हुआ सप्तन् नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । सप्त । अशूङ् धातुसे कन्प्रत्ययको तुट् आगम करनेके अनन्तर ' छशष०, ष्टुभिः० ' इनकर स्थित हुआ अष्टन् नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । अष्ट ॥

नञि जहातेः ॥ ८६५ ॥ अहः ॥

भाषा–नञ् अव्यय उपपद हुए संते हाक् धातुसे कन्प्रत्यय होय । उदाहरण–' न जहाति प्रकाशम् ' इस विग्रहमें नञ् पूर्व होनेसे ओहाक्धातुसे कन्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' नासमासे ' इसकर नञ्को अकार आदेश किया फिर ' आतोऽनपि ' इसकर अकारका लोप करनेसे रूप स्थित हुआ अहन् नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । अहः ॥

श्वादयः ॥ ८६६ ॥ श्वा । उक्षा । पुष्णाति कमलानीति पूषा । प्लेहति प्लीहा । मुह्यन्त्यस्मिन्नाहते मूर्द्धा । मज्जत्यस्थिषु मज्जा । अर्य्यपूर्वान्माङः । अर्य्यमा । मातर्य्यन्तरिक्षे श्वयतीति मातरिश्वा । मह पूजायाम् । मह्यते इति मघवा ॥ इत्युणादौ प्रथमः पादः ॥ १ ॥

भाषा–श्वन् आदिक कन्प्रत्ययान्त शब्दनिपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण–' टुओश्विइर् गतिवृद्ध्योः ' इस धातुसे कन्प्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । श्वा । ' उक्ष सेचने ' धातुका । उक्षा । ' पुष वृद्धौ ' धातुका । पूषा । द्विवचनमें । पूषणौ । ' प्लिह गतौ ' धातुका । प्लीहा । मुह । वैचित्त्ये ' धातुका । मूर्छा । ' टुमस्जो शुद्धौ ' धातुका । मज्जा । अर्यपूर्व ' माङ् माने ' धातुका । अर्यमा । मातर् अव्यय पूर्व ' श्वि गतिवृद्ध्योः ' धातुका । मातरिश्वा । ' मह पूजायाम् ' धातुका । मघवा । यह युवन् आदिक शब्द नकारान्त हैं ॥ इत्युणादौ प्रथमः पादः समाप्तः ॥ १ ॥

कृहृभ्योरेणुः ॥ ८६७ ॥ करेणुः । हरेणुः ॥

भाषा–कृञ् हृञ् इन दोनों धातुओंसे एणुप्रत्यय होय । उदाहरण–' डुकृञ् करणे, हृञ् हरणे ' इन धातुओंसे एणुप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । करेणुः । हरेणुः ॥

कुषादेः क्थः ॥ ८६८ ॥ कुष्ठम् । रथः । काशृ दीप्तौ । काष्ठम् । अवभृथः ॥

भाषा–कुष आदिक धातुओंसे क्थप्रत्यय होय प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण–' कुष निष्कर्षे ' धातुसे क्थप्रत्यय करनेपर ' ष्टुभिः ष्टुः ' इसकर सिद्ध हुआ । कुष्ठः । ' रमु क्रीडायाम् ' धातुसे क्थप्रत्यय करनेपर ' लोपस्त्वनुदात्ततनाम् '

इसप्रकार मकारका लोप करनेसे सिद्ध हुआ। रथ' कपधातुसे क्यप्रत्यय करनेके अनन्तर ' छन्दस्य०, प्रमि' इ ' इसप्रकार सिद्ध हुआ। कश्यप् । ' कुशत् धारणार्थी ' धातुसे क्यप्रत्यय करनेसे सिद्ध हुआ। अवभृथ ॥

उपादेस्थ ॥८६९॥ ओथ । कोथ । गाथा । अर्थ । शु गतौ । शोथः ॥

भाषा-उपआदिक धातुओंसे थप्रत्यय होय। उदाहरण-' उप दाहे ' धातुसे थप्रत्यय करनेपर धातुको गुण करनेपर सिद्ध हुआ। ओथः। ' कुष निष्कर्षे 'धातुका। कोथः। ' गै शब्दे ' धातुसे थप्रत्यय करनेपर स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ। गाथा। ' ऋ गतौ ' धातुका। अर्थ'। शुधातुका। शोथ' ॥

सर्तेर्णित् ॥ ८७० ॥ सार्थ ॥

भाषा-सृधातुसे जो कि थप्रत्यय होय वह णित्संज्ञक होय। उदाहरण-' सृगतौ ' धातुसे थप्रत्यय करनेके पश्चात् प्रत्ययको णित् होनेसे धातुको वृद्धि करनेपर सिद्ध हुआ। सार्थ' ॥

निशीथादय ॥ ८७१ ॥ निशीथः। तीर्थः। रिचिर् विरेचने। रिक्थम्। पिचिर् क्षरणे। सिक्थम्। पुष् सेचने। पुष्ठम्। गूथम्। यु मिश्रणे। यूथम्। मोथः ॥

भाषा-निशीथ आदिक शब्द थक्प्रत्ययान्त निपातसे सिद्ध होते हैं। उदाहरण-' शीङ् स्वप्ने ' धातुसे थक्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। निशीथः। ' तृ प्लवनसंतरणयोः ' धातुका। तीर्थ'। रिचिर्धातुका। रिक्थम्। पिचिर्धातुका। सिक्थम्। ' पुष् सेचने ' धातुका। पुष्ठम्। ' गु पुरीषोत्सर्गयो ' धातुका। गूथम्। ' यु मिश्रणे' धातुका। यूथम्। ' मुङ् गतौ धातुका। मोथ' ॥

स्फायादेरक् ॥ ८७२ ॥ स्फार'। तच संकोचने। तक्रम्। वञ्चु। वक्र'। शक्र'। क्षिप'। क्षुद्र'। चक्रम्। चदि चन्द्र। उन्दी। उन्द्र। श्वित। श्वित्रम्। सृप्र'। वीर। नीरम्। छिद्रम्। उस्र। शुभ्रम् ॥

भाषा-स्फायी आदिक धातुओंसे रक्प्रत्यय होय प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधार्थ है। उदाहरण-'स्फायी वृद्धौ ' धातुसे रक्प्रत्यय करनेपर ' इडत्त्यर्ति ' इसकर इट् आगम तो हुआ नहीं यवयोर्वसे इकारे च लोप' ' इसकर यकारका लोप किया तब सिद्ध हुआ। स्फारम्। ' तञ्चू संकोचने ' धातुसे रक्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' नो लोपः ' इसकर नकारका लोप किया फिर ' च्योःकुः ' इसकर चकारको ककार किया तब सिद्ध हुआ। तक्रम्। ' वञ्चु प्रलंभने 'धातुसे रक्प्रत्यय

करनेपर सिद्ध हुआ । वक्रम् । ‘ क्षिप प्रेरणे ’ धातुका । क्षिप्रम् । ‘क्षुदिर् संपेषणे ’ धातुका सिद्ध हुआ । क्षुद्रम् । ‘ चदि आह्लादने ’ का । चन्द्रः । ‘ उन्दी क्लेदने । का । चन्द्रः । ‘ श्विता वर्णे ’ का । श्वित्रम् । ‘ वृतु वर्त्तने ’ का । वृत्रः । ‘ अज गतिक्षेपणयोः ’ इस धातुसे रक्प्रत्यय करनेपर ‘ अजेर्वी ’ इसकर वी आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । वीरः । ‘ णीञ प्रापणे ’ धातुका । नीरः । ‘ वस निवासे ’ का स्त्रीलिंगमें । उस्रा । ‘ शुभ दीप्तौ ’ धातुका । शुभ्रम् ॥

अमितम्योर्दीर्घश्च ॥ ८७३ ॥ आम्रः । ताम्रम् ॥

भाषा–अम् तमधातुके उपधाको दीर्घ होय रक्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–‘ अम गत्यादौ , तमु कांक्षायाम् ’ इन धातुओंसे रक्प्रत्यय करनेपर उपधाअकारको दीर्घ करनेपर सिद्ध हुआ । आम्रः । ताम्रम् ॥

निद्रादयः ॥ ८७४ ॥ णिदि । निद्रा । अर्द । आर्द्रम् । शुच् । शूद्रः । दुःखेनेयते । दूरम् । कृती । कृच्छ्रम् । क्रूरः । रोदयतीति रुद्रः । ज्या वयोहानौ । जीरः ॥

भाषा–निद्रा आदिक रक्प्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण–‘ णिदि कुत्सायाम् ’ धातुको रक्प्रत्यय करनेपर निपातसे स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । निद्रा । ‘ अर्द गतौ ’ धातुका । आर्द्रा । ‘ शुच् शोके ’ धातुका । शूद्रः । दुर् पूर्व ‘ इण् गतौ ’ धातुका । दूरम् । ‘ कृती छेदने ’ धातुका । कृच्छ्रम् । क्रूरः । ‘ रुदिर् अश्रुविमोचने ’ णिप्रत्ययान्त धातुका । रुद्रः ‘ ज्या वयोहानौ ’ धातुका । जीरः ॥

स्वादेः क्रः ॥ ८७५ ॥ सुरः । षूङ् प्राणिप्रसवे । सूरः धीरः । गृध्रः ॥

भाषा–षुञ् आदिक धातुओंसे क्रप्रत्यय होय प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण–‘ षुञ् अभिषवे ’ धातुसे क्रप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । सुरः । षूङ्धातुका । सूरः । ‘ डुधाञ् धारणादौ ’ धातुमे क्रप्रत्यय करनेके अनन्तर ‘ अपिद्राधागेहाक्० ’ इसकर धातुके आकारको ईकार करनेपर सिद्ध हुआ । धीरः । ‘ गृधु अभिकांक्षायाम् ’ धातुसे क्रप्रत्यय करनेपर ‘ हवक्त्योर्नेट् ’ इसकर इट् हुआ नहीं तब सिद्ध हुआ । गृध्रः ॥

शूरादयः ॥ ८७६ ॥ शु सात्रः । शूरः । षिञ् । सीरः । चिञ् चीरम् ॥

भाषा–शूर आदिक क्रप्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण–‘ शु गतौ ’ धातुसे क्रप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । शूरः । ‘ षिञ् बन्धने ’ धातुका । सीरः । ‘ चिञ चयने ’ धातुका । चीरम् ॥

वा विन्धेः ॥ ८७७ ॥ वीध्रम् । वृधु । वर्ध्रम् । वप्रः । इन्द्रः ।

अगि गतौ । अग्रम् । वज्रम् । दुग्रम् । विप्रः उच समवाये । उग्रः । ञिभी भये । भेरिः । शुच शोके । शुक्रः । शुक्रः । गुद् गतौ । गौरः । इण् । इरा । माला ॥

भाषा—विउपसर्ग पूर्वपद हुए सते इन्धीधातुसे रक्प्रत्यय होय । उदाहरण—विउपसर्ग पूर्व कर ञिइन्धीधातुसे रक्प्रत्यय करनेपर 'नो लोप' इसकर नकारका लोप करनेसे सिद्ध हुआ । वीध्रम् । 'वृधु वृद्धौ' धातुका । वर्ध्रम् । 'दुम्प्र् बीजतन्तुसन्ताने' धातुका । वप्रः । 'इदि परमैश्वर्ये' धातुका । इन्द्रः । 'अगि गतौ' धातुका । अग्रम् । 'वज गतौ' धातुका । वज्रम् । दुवप्धातुका । विप्रः । 'उच समवाये' धातुका । उग्रः । 'ञिभी भये' धातुका स्त्रीलिंगमें । भेरी । शुच्धातुका । शुक्रः । शुक्रः । गुर्द्धातुका । गौरः । इण्धातुका । इरा 'मा माने' धातुका । माला ॥

क्वुन्शिल्पिसंज्ञयो ॥ ८७८ ॥ रजकः । चष् भक्षणे । चषकम् । कुट विस्मापने । कुटकम् ॥

भाषा—शिल्पी और अभिधेयसंज्ञा प्राप्त हुए सते क्वुन्प्रत्यय होय प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है उदाहरण—'रंज रागे' धातुसे शिल्पीअर्थके विषैं क्वुन्प्रत्यय करनेपर 'युवोरनाकौ' इसकर प्रत्ययको अक आदेश किया फिर प्रत्ययको कित होनेसे 'नो लोप' इसकर नकारका लोप किया तब सिद्ध हुआ । रजकः । चष, कुट इन धातुओंसे संज्ञाअर्थमें क्वुन्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । चषकः । कुटकः ॥

मुषे कक्दीर्घश्च ॥ ८७९ ॥ मूषकः ॥

भाषा—मुष्धातुसे कक्प्रत्यय होय और उपधाको दीर्घ होय । उदाहरण—'मुष स्तेये' धातुसे कक्प्रत्यय करनेपर प्रत्ययको कित होनेसे गुण तौ हुआ नहीं किन्तु दीर्घ करनेपर सिद्ध हुआ । मूषकः ॥

क्रिय इक ॥ ८८० ॥ क्रयिकः ॥

भाषा—क्रीञ्धातुसे इक प्रत्यय होय । उदाहरण—डुक्रीञ्धातुसे इकप्रत्यय करनेपर धातुको गुण करनेसे सिद्ध हुआ । क्रयिकः ॥

श्यास्त्याहृञभिभ्य इन ॥ ८८१ ॥ श्येनः । स्त्येनः । हरिणः ॥

भाषा—श्यैङ् स्त्यै हृञ् इन धातुओंसे इनप्रत्यय होय । उदाहरण—'श्यैङ् गतौ, स्त्यै शब्दसंघाते, हृञ् हरणे' इन धातुओंसे इनप्रत्यय करनेपर 'सन्ध्यक्षराणामापि' इसकर आकार और हृञ्को गुण करनेसे सिद्ध हुआ । श्येनः । स्त्येनः । हरिणः ॥

वृजादेः किनः ॥ ८८२ ॥ वृजिनम् ॥

भाषा–वृजआदिक धातुओंसे किनप्रत्यय होय प्रत्ययमे ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण–' वृजी वर्जने ' धातुसे किनप्रत्यय करनेपर धातुको गुण नही किया क्योंकि परे कित्प्रत्यय विद्यमान है तब सिद्ध हुआ । वृजिनम् ॥

अजेर्वीनः ॥ ८८३ ॥ अजिनम् । कठ कृच्छ्रजीवने । कठिनम् । नल गन्धे । नलिनम् । कुडि दाहे । कुण्डिनम् । दो । दिनम् ॥

भाषा–अजधातुको वी आदेश होय इनप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–' अज गत्यादौ ' धातुसे किनप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । अजिनम् । कठधातुका । कठिनम् । नलधातुका । नलिनम् । ' कुडि दाहे ' धातुसे किनप्रत्यय करनेपर ' इदितो नुम् ' इसकर नुम् आगम करनेसे सिद्ध हुआ । कुण्डिनम् ।' दो अवखण्डने ' धातुसे किनप्रत्यय करनेके अनन्तर ' सन्ध्यक्षराणामानपि, आतोऽनापि ' इनकर सिद्ध हुआ । दिनम् ॥

द्रुदक्षिभ्यामिनः॥८८४॥ द्रविणम् । दक्ष वृद्धौ । दक्षिणः । दक्षिणा ।

भाषा–द्रु, दक्ष इन धातुओंसे इनप्रत्यय होय । उदाहरण–' द्रु गतौ ' धातुसे इनप्रत्यय करनेपर धातुको गुण करनेसे सिद्ध हुआ । द्रविणम् । दक्षधातुका । दक्षिणः । स्त्रीलिंगमें । दक्षिणा ॥

अर्तेः किदिर् च ॥ ८८५ ॥ इरिणम् ॥

भाषा–ऋधातुसे जो कि इनप्रत्यय होय वह कित्संज्ञक होय और धातुको इर् आदेश होय । उदाहरण–' ऋ गतौ ' धातुसे कित्संज्ञक इनप्रत्यय करनेपर धातुके इर् आदेश किया तब सिद्ध हुआ । इरिणम् ॥

वेपितुह्योर्ह्रस्वश्च ॥ ८८६ ॥ विपिनम् । तुहिनम् ॥

भाषा–टुवेपृ तुहिर् इन धातुओंसे इनप्रत्यय होय और धातुको ह्रस्व होय । उदाहरण–' टुवेपृ कंपने ' धातुसे इनप्रत्यय करनेके अनन्तर उपधाको ह्रस्व करनेसे सिद्ध हुआ । विपिनम् । ' तुहिर् अर्दने ' धातुसे इनप्रत्यय करनेके अनन्तर ' उपधायाः लघोः ' इसकर गुण करनेपर ह्रस्व करनेसे सिद्ध हुआ । तुहिनम् ॥

तलिपुलिभ्यां च ॥८८७॥ तल प्रतिष्ठायाम् । तलिनम् । पुलिनम् ।

भाषा–तल, पुल धातुओंसे कित्संज्ञक इनप्रत्यय होय । उदाहरण–सुगम है ॥

रुहेश्च ॥ ८८८ ॥ रोहिणः ॥

भाषा–रुहधातुसे इनप्रत्यय होय । उदाहरण–सुगम है ॥

आप्नोतेः क्विप् ह्रस्वश्च ॥ ८८९ ॥ आप । अपि ॥

भाषा–आप्लृधातुसे क्विप्प्रत्यय होय और धातुको ह्रस्व होय । उदाहरण–'आप्लृ व्याप्तौ' धातुसे क्विप्प्रत्यय करनेपर 'वेः' इसकर क्विप्प्रत्ययका लोप किया फिर धातुको ह्रस्व किया तब रूप सिद्ध हुआ अप् । नामसंज्ञामें । आपः ॥

ग्लानुदिभ्यां डौः ॥ ८९० ॥ ग्लौः । नौः ॥

भाषा–ग्लै, नुद इन धातुओंसे डौप्रत्यय होय प्रत्ययमें डकार टिलोपके अर्थ है । उदाहरण–ग्लैधातुसे डौप्रत्यय करनेके अनन्तर 'डित्ति टेः' इसकर टिका लोप किया तब सिद्ध हुआ । ग्लौः । नुदधातुसे डौप्रत्यय करनेपर टिका लोप कर नेसे सिद्ध हुआ । नौः ॥

रातेर्डैः ॥ ८९१ ॥ राः । रायौ ॥

भाषा–राधातुसे डैप्रत्यय होय प्रत्ययमें डकार टिलोपके अर्थ है । उदाहरण–'रा दाने' धातुसे डैप्रत्यय करनेपर 'डिति टेः' इसकर टिका लोप किया तब सिद्ध हुआ रै । नामसंज्ञामें । राः । द्विवचनमें । रायौ ॥

गमेर्डोः ॥ ८९२ ॥ गौः ॥

भाषा–गम्लृधातुसे डोप्रत्यय होय । उदाहरण–'गम्लृ गतौ' धातुसे डोप्रत्यय करनेपर 'डिति टेः' इसका सिद्ध हुआ गो नामसंज्ञामें । गौः । द्विवचनमें । गावौ ॥

भ्रमेर्डूः ॥ ८९३ ॥ भ्रूः ॥

भाषा–भ्रमुधातुसे डूप्रत्यय होय प्रत्ययमें डकार टिलोपके अर्थ है । उदाहरण–'भ्रमु अनवस्थाने' धातुसे डूप्रत्यय करनेपर टिका लोप करनेसे सिद्ध हुआ । भ्रूः ॥

दमेर्डोस् ॥ ८९४ ॥ दोः । दोषौ ॥

भाषा–दमुधातुसे डोस्प्रत्यय होय प्रत्ययमें डकार टिलोपके अर्थ है । उदाहरण–'दमु उपशमे' धातुसे डोस् करनेपर टिका लोप करनेसे सिद्ध हुआ दोष । नामसंज्ञामें । दोः । द्विवचनमें । दोषौ ॥

पणेरिज् आदेर्वः ॥ ८९५ ॥ वणिक् ॥

भाषा–पणधातुसे इजप्रत्यय होय और आदिवर्णको वकार होय । उदाहरण–'पण व्यवहारे स्तुतौ च' इससे इजप्रत्यय करनेपर आदिपकारको वकार करनेसे सिद्ध हुआ वणिज् । नामसंज्ञामें । वणिक् ॥

अशेरशादेशो युप्रत्ययः ॥ ८९६ ॥ रशना ॥

भाषा-अशूधातुसे युप्रत्यय होय और धातुको रशआदेश होय । उदाहरण-' अशूङ् व्याप्तौ वा अशू भोजने ' इस धातुसे युप्रत्यय करनेके अनन्तर ' युवोरनाकौ ' इसकर प्रत्ययको अनआदेश किया पश्चात् धातुको रशआदेश करनेपर सिद्ध हुआ । रशना ॥

उन्देर्नलोपश्च ॥ ८९७ ॥ ओदनः ॥

भाषा-उन्दीधातुसेभी युप्रत्यय होय और धातुके नकारका लोप होय । उदाहरण-' उन्दी क्लेदने ' धातुसे युप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुके नकारका लोप करनेपर ' उपधाया लघोः ' इसकर गुण किया तब सिद्ध हुआ । ओदनः ॥

गमेर्गान्तादेशश्च ॥ ८९८ ॥ गगनम् । अन्येभ्योऽपि युः । स्यंदनम् । रोचनः । रंजिकृभ्यां क्युः । रजनम् । कॄ । किरणः ॥

भाषा-गमधातुसे युप्रत्यय होय और धातुके अन्त्यवर्णको गकार आदेश करनेपर ' युवोरनाकौ ' इसकर युप्रत्ययको अनआदेश किया तब सिद्ध हुआ । गगनम् । अन्यधातुओंसेभी युप्रत्यय होय । उदाहरण-' स्यंदू प्रस्रवणे ' धातुसे युप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । स्यन्दनम् । ' रुच दीप्तौ ' धातुका । रोचनः । रञ्ज, कॄ इन धातुओंसे क्युप्रत्यय होय प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण-' रञ्ज रागे, कॄ विक्षेपे ' इन धातुओंसे क्युप्रत्यय । करनेके अनन्तर ' युवोरनाकौ ' इसकर प्रत्ययको अनआदेश किया पश्चात् प्रत्ययको कित् होनेसे नकारका लोप और गुण न करनेसे सिद्ध हुए । रजनम् । किरणः ॥

धृषेर्धिषश्च ॥ ८९९ ॥ धिषणा । धाञश्च । निधनम् ॥

भाषा-धृषधातुसे युप्रत्यय होय और धातुको धिषआदेश होय । उदाहरण-' ञिधृषा प्रागल्भ्ये ' धातुसे युप्रत्यय करनेके अनन्तर ' युवोरनाकौ ' इसकर प्रत्ययको अनआदेश किया और धातुको धिष आदेश किया तब सिद्ध हुआ स्त्रीलिंगमें । धिषणा । धाञ्धातुसे युप्रत्यय होय । उदाहरण-' डुधाञ् धारणादौ ' धातुसे युप्रत्ययको अनआदेश करनेपर ' आतोऽनपि ' इसकर आकारका लोप किया तब सिद्ध हुआ । निधनम् ॥

पृषद्दादयः ॥ ९०० ॥ पृषु सेचने । पृषत् । पृषन्ति । बृह उद्यमे । बृहत् । महान् । जगत् । विपूर्वाद्धनः । वेहत् ॥

भाषा-पृषत् आदिक अत्प्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण-'पृषु सेचने, बृह उद्यमे, मह पूजायाम् ' इन धातुओंसे अत्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । पृषत् । बृहत् । महान् । स्त्रीलिंगमें ' उगितश्च ' इसकर ईप्प्रत्यय करनेपर

सिद्ध हुआ । पृषती । बृहती । महती । विउपसर्ग पूर्व इन् धातुसे अद्प्रत्यय होय और उपसर्गके इकारको एकार और धातुके टिका लोप निपातसे होय । उदाहरण—विपूर्व 'इन हिंसागत्योः' धातुसे अदुप्रत्यय करनेके अनन्तर उपसर्गके इकारको एकार और धातुके टि अन्का लोप निपातसे करनेपर सिद्ध हुआ । वेदत् ॥

नप्तृनेष्टृत्वष्टृक्षत्तृहोतृपोतृप्रशास्तृभ्रातृजामातृमातृपितृदुहितृ एते निपात्यसे तृप्रत्ययान्ता ॥ ९०१ ॥ न पतन्त्यनेनेति नप्ता । नेष्टा । त्वेषयतीति त्वष्टा । क्षद भक्षणे । क्षत्ता । होता । पोता । प्रशास्ता । भ्राता । जायां मातीति जामाता । मान पूजायाम् । माता । पातीति पिता । दुहिता ॥

भाषा—नप्तृसे लेकर दुहितृपर्यन्त तृप्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण—नञ्पूर्व 'पत्लृ पतने' धातुसे तृप्रत्यय करनेपर निपातसे हुआ नप्तृ । नामसंज्ञामें सिके सिद्धे सिद्ध हुआ । नप्ता । 'णीञ् प्रापणे' धातुका । नेष्टा । 'त्विष् दीप्तौ' धातुका । त्वष्टा । 'क्षद अक्षकीकरणे भक्षणे च' धातुका । क्षत्ता । 'हु दानादनयोः' धातुका । होता । 'पूञ् पवने' धातुका । पोता । 'भ्राजृ दीप्तौ' धातुका । भ्राता । 'जायां मातीति' इस विग्रहमें जायापूर्व 'मा माने' धातुका । जामाता । 'मान पूजायाम्' धातुका । माता । 'पा रक्षणे' धातुका । पिता । 'दुह प्रपूरणे' धातुका । दुहिता ॥

सावसेर्ऋन् ॥ ९०२ ॥ स्वसा ॥

भाषा—सुउपसर्ग उपपद हुए संते असुधातुसे ऋन्प्रत्यय होय । उदाहरण—सुउपसर्ग उपपद होनेसे 'असु क्षेपणे' धातुसे ऋन्प्रत्यय करनेपर रूप हुआ स्वसृ । नामसंज्ञामें । स्वसा ॥

यतेर्वृद्धिश्च ॥ ९०३ ॥ याता ॥

भाषा—यतीधातुसे ऋन्प्रत्यय होय और धातुको वृद्धि होय । उदाहरण—'यती प्रयत्ने' धातुसे ऋन्प्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको वृद्धि करनेपर रूप हुआ यातृ । नामसंज्ञामें । याता ॥

नञि नन्देश्च ॥ ९०४ ॥ न नन्दतीति ननांदा । ननन्देत्येके ॥

भाषा—नञ् उपपद हुए संते टुनदिधातुसे ऋन्प्रत्यय होय और धातुको वृद्धि होय । उदाहरण—नञ्पूर्व 'टुनदि समृद्धौ' धातुसे ऋन्प्रत्यय करनेपर रूप हुआ ननान्दृ । नामसंज्ञामें । ननान्दा । और जहां धातुको वृद्धि कोई आचार्य नहीं करते हैं वहां सिद्ध हुआ । ननन्दा ॥

दिवेर्ऋः ॥ ९०५ ॥ देवा । देवरौ ॥

भाषा–दिव्धातुसे ऋप्रत्यय होय । उदाहरण–' दिवु क्रीडादौ ' धातुसे ऋप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको गुण करनेसे रूप हुआ देवृ । नामसंज्ञामें । देवा । द्विवचनमें । देवरौ ॥

नयतेर्डिच्च ॥ ९०६ ॥ ना । नरौ । नरः ॥

भाषा–णीञ्धातुसे जो कि ऋप्रत्यय होय वह डित्संज्ञक होय । उदाहरण–' णीञ् प्रापणे ' धातुसे डित्संज्ञक ऋप्रत्यय करनेके अनन्तर ' डिति टेः ' इसकर टिका लोप किया तब रूप हुआ नृ । नामसंज्ञामें । ना । द्विवचनमें । नरौ ॥

अत्यादेरनिः ॥९०७॥ अरणिः । सरणिः । तरणिः । धमनिः । अशनिः । अवनिः । रजनिः ॥

भाषा–ऋ आदिक धातुओंसे अनिप्रत्यय होय । उदाहरण–' ऋ गतौ ' धातुसे अनिप्रत्यय करनेपर धातुको गुण किया तब सिद्ध हुआ । अरणिः । इसी प्रकार ' सृ गतौ ' धातुका । सरणिः । तृ प्लवनसंतरणयोः ' धातुका तरणिः । धमि सौत्रधातुका । धमनिः । ' अश भोजने ' धातुका । अशनिः । ' अव रक्षणे ' धातुका । अवनिः । ' रंज रागे ' धातुसे अनिप्रत्यय करनेपर निपातसे नकारका लोप किया तब सिद्ध हुआ । रजनिः ॥

अर्च्यादेरिस् ॥ ९०८ ॥ अर्चिः । अर्चिषी । रोचिः । शोचिः । छदिः । हविः । सर्पिः ॥

भाषा–अर्च आदिक धातुओंसे इस्प्रत्यय होय । उदाहरण–' अर्च पूजायाम् ' धातुसे इस्प्रत्यय करनेपर रूप हुआ अर्चिष् । नामसंज्ञामें । अर्चिः । ' रुच् दीप्तौ ' धातुका । रोचिः ' शुच् शोके ' धातुका । शोचिः । ' छद अपवारणे ' धातुका । छदिः । ' हु दानादानयोः ' धातुका । हविः । ' सृप्लृ गतौ ' धातुका । सर्पिः ॥

द्युतेरादेर्जः ॥ ९०९ ॥ ज्योतिः ॥

भाषा–द्युतधातुसे इस्प्रत्यय होय और धातुसे आदिवर्ण दकारके स्थानमें जकार होय । उदाहरण–' द्युत दीप्तौ ' धातुसे इस्प्रत्यय करनेके अनन्तर आदिवर्ण दकारके स्थानमें जकार करनेसे रूप स्थित हुआ ज्योतिष् । नामसंज्ञामें ' दोषां रः, खोर्विसर्गः ' इनकर सिद्ध हुआ । ज्योतिः ॥

बृंहेर्नलोपश्च ॥ ९१० ॥ बर्हिः ॥

भाषा–बृंहधातुसे इस्प्रत्यय होय और नकारका लोप होय । उदाहरण–' बृंह

वृधी ' धातुसे इसप्रत्यय करनेके अनन्तर नकारका लोप किया फिर ' उपधायाः लघोः ' इसकर गुण किया तब रूप स्थित हुआ बर्हिष्। नामसंज्ञामें। बर्हिः॥

जनादेरुस् ॥९११॥ जनुः। अरुः। चक्षोश्शित्। चक्षुः। वपुः। वपुः। यजुः। यजुः॥

भाषा—जनी आदिक धातुओंसे उस्प्रत्यय होय। उदाहरण—' जनी प्रादुर्भावे ' धातुसे उस्प्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ जनुष्। नामसंज्ञामें। जनुः। ' ऋ गतौ ' धातुका। अरुः। चक्षिङ् धातुका। चक्षुः। ' डुवप् बीजतन्तुसन्ताने ' धातुका। वपुः। ' यज देवपूजादौ ' धातुका। यजुः॥

एतेर्णित् ॥ ९१२ ॥ आयुः॥

भाषा— इण्धातुसे जो कि उस्प्रत्यय होय वह णित्संज्ञक होय। उदाहरण— ' इण गतौ ' धातुसे णित्संज्ञक उस्प्रत्यय करनेपर धातुको वृद्धि किया पश्चात् ' ऐ आय् ' इसकर रूप स्थित हुआ आयुष्। नामसंज्ञामें। आयुः॥

धीवरादयः ष्वरप्रत्ययान्ता निपात्यंते ॥ ९१३ ॥ धीवरः। शर्वरी। निषद्वर। पीवर॥

भाषा—धीवर आदिक ष्वरप्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं। प्रत्ययमें षकार ' स्त्रियां ' इसकर ईप्प्रत्ययके अर्थ है। उदाहरण—' डुधाञ् धारणादौ ' धातुसे ष्वरप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ। धीवरः। ' शॄ हिंसायाम् ' धातुका स्त्रीलिंगमें। शर्वरी। निपूर्व ' षद्लृ विशरणादौ ' धातुका। निषद्वरः। ' पा पाने ' धातुका। पीवर॥

इणादेर्नक् ॥९१४ ॥ इनः। जिनः। दीनः। कृष्णः॥

भाषा—इण आदिक धातुओंसे नक्प्रत्यय होय प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है। उदाहरण— इण गतौ ' धातुसे नक्प्रत्यय करनेपर रूप हुआ। इनः। ' जि जये ' धातुका। जिन। ' दीङ् क्षये ' का। दीन। ' कृष् विलेखने ' धातुका। कृष्णः॥

बधेर्ब्रघबुधौ च ॥ ९१५ ॥ ब्रघ्नः। बुध्नः॥

भाषा—बधधातुको ब्रध और बुध आदेश होय नक्प्रत्यय पर हुए संते। उदाहरण—' बंध बन्धने ' धातुसे नक्प्रत्यय करनेके अनन्तर ब्रध, बुध आदेश करनेसे रूप सिद्ध हुआ। ब्रघ्नः। बुध्नः॥

धादेर्मः ॥ ९१६ ॥ धामः। घर्मः। सस्मः। भीमः॥

भाषा—धाञ् आदिक धातुओंसे मप्रत्यय होय। उदाहरण—' डुधाञ् धार-

णादौ ' धातुसे नप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । धानाः । ' पृ पालनादौ ' धातुका । पर्णम् । ' वस निवासे ' धातुका । वस्नः । ' श्रु श्रवणे ' धातुका । श्रोणः ॥

लक्षेर्न्नस्याण्मटौ ॥ ९१७ ॥ लक्षणः ' लक्ष्मणः ॥

भाषा–लक्षधातुसे परे नप्रत्ययको अट् और मट् आदेश होय । उदाहरण–' लक्ष दर्शनांकनयोः ' धातुसे नप्रत्यय करनेके अनन्तर एक जगह प्रत्ययको अट् और एक जगह मट् आगम किया तब सिद्ध हुआ । लक्षणः । लक्ष्मणः ॥

रास्नादयः॥९१८॥ रासृ शब्दे । रास्ना । सास्ना । स्थूणा । वीणा । कृती । कृत्स्नम् । तिज । तीक्ष्णम् । श्लिषेः । श्लक्ष्णम् ॥

भाषा–रास्ना आदिक नक्प्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण–' रस आस्वादने ' धातुसे नक्प्रत्यय करनेके अनन्तर निपातसे स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । रास्ना । ' षस् स्वप्ने ' धातुसे नक्प्रत्यय करनेके अनन्तर निपातसे सिद्ध हुआ । सास्ना । ' ष्ठा गतिनिवृत्तौ ' धातुका । स्थूणा । ' कृती छेदने ' धातुका । कृत्स्नम् । ' तिज निशाने ' धातुका । तीक्ष्णम् । ' श्लिष् आलिंगने ' धातुका । श्लक्ष्णम् ॥

मनादेर्य्युः ॥ ९१९ ॥ मन्युः । दस्युः । जन्युः ॥

भाषा–मन आदिक धातुओंसे युप्रत्यय होय । उदाहरण–' मन ज्ञाने, दसु उपक्षये, जनी प्रादुर्भावे ' इन धातुओंसे युप्रत्यय करनेपर निपातसे ' युवोरनाकौ ' इसकर अन आदेश नहीं हुआ तब सिद्ध हुआ । मन्युः । दस्युः । जन्युः ॥

मृङस्त्युक् ॥ ९२० ॥ मृत्युः ॥

भाषा–मृङ्धातुसे त्युक् प्रत्यय होय । उदाहरण–' मृङ् प्राणत्यागे ' धातुसे त्युक्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । मृत्युः ॥

सर्तेरय्वयू ॥ ९२१ ॥ सरयुः सरयूः ॥

भाषा–सृधातुसे अयु और अयू यह दोनों प्रत्यय होंय । उदाहरण–' सृ गतौ ' धातुसे अयु, अयू दोनों प्रत्यय करनेपर गुण करनेपर सिद्ध हुआ । सरयुः । सरयूः ॥

पादेः पः ॥ ८२२ ॥ पापम् ॥

भाषा–पा आदिक धातुओंसे पप्रत्यय होय । उदाहरण–' पा रक्षणे ' धातुसे पप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । पापम् ॥

न्यादेः कित् ॥९२३ ॥ नीपः । सूपः । कूङ् शब्दे । कूपः ॥

भाषा–णीञ् आदिक धातुओंसे जो कि पप्रत्यय होय वह कित्संज्ञक होय। उदाहरण–'णीञ् प्रापणे' धातुसे कित्संज्ञक पप्रत्यय करनेपर गुण न करनेसे सिद्ध हुआ। नीपः। 'षुञ् अभिषवे' धातुसे कित्संज्ञक पप्रत्यय करनेपर धातुके अन्त्यको दीर्घ किया तब सिद्ध हुआ। सूपः। कुङ्धातुका। कूपः॥

शिल्पादय ॥ ९२४ ॥ शील । शिल्पम् । शसु । शष्पम् । बाष्टृ । बाष्पम् । रु । रूपम् । शॄ । शूर्पम् ॥

भाषा–शिल्प आदिक पप्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण–'शील समाधौ' धातुसे पप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । शिल्पम् । 'शसु हिंसायाम्' धातुका । शष्पम् । 'बाष्टृ विलोडने' धातुका । बाष्पम् । 'रु शब्दे' धातुका । रूपम् । 'शॄ हिंसायाम्' धातुका । शूर्पम् ॥

स्तनादेर्ण्यन्तादित्नुः ॥ ९२५ ॥ स्तनयित्नुः । गदयित्नुः ॥

भाषा–णिप्रत्ययान्त स्तन आदिक धातुओंसे इत्नुप्रत्यय होय । उदाहरण–'स्तन गद देवशब्दे' इन णिप्रत्ययान्त स्तन गद धातुसे इत्नुप्रत्यय करनेके अनन्तर 'न ल्यिडामन्ताल्वाय्येत्न्विष्णुषु' इसकर णिप्रत्ययका लोप न करनेसे सिद्ध हुआ । स्तनयित्नुः । गदयित्नुः ॥

दाभाभ्यां नु ॥ ९२६ ॥ दानुः । भानुः ॥

भाषा–दाण्, भा इन दोनों धातुओंसे नुप्रत्यय होय । उदाहरण–डुदाञ्धातुसे नुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । दानुः । 'भा दीप्तौ' धातुसे नुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । भानुः ॥

धेट इच्च ॥ ९२७ ॥ धेनुः ॥

भाषा–धेट्धातुसे नुप्रत्यय होय और धातुके आकारको इकार होय । उदाहरण–'धेट् पाने' धातुसे नुप्रत्यय करनेके अनन्तर 'सन्ध्यक्षराणामानपि' इसकर आकार किया फिर आकारको इकार करनेसे सिद्ध हुआ । धेनुः ॥

सुवः कित् ॥ ९२८ ॥ सूनुः ॥

भाषा–सूङ्धातुसे जो कि नुप्रत्यय होय वह कित्संज्ञक होय । उदाहरण–'षूङ् प्राणिप्रसवे' धातुसे कित्संज्ञक नुप्रत्यय करनेपर प्रत्ययको कित्संज्ञक होनेसे गुण नहीं हुआ तब सिद्ध हुआ । सूनुः ॥

अजिवृभ्यां णुः ॥ ९२९ ॥ वेणुः । वर्णुः ॥

भाषा–अज, वृञ् इन धातुओंसे णुप्रत्यय होय । उदाहरण–'अज गतौ' धातुसे णुप्रत्यय करनेके अनन्तर 'अजेर्वी' इसकर वी आदेश किया फिर गुण कर-

नेसे सिद्ध हुआ । वेणुः । 'वृञ् संभक्तौ' धातुसे णुप्रत्यय करनेसे सिद्ध हुआ। वर्णुः ॥

स्थारीभ्यां णुः ॥ ९३० ॥ स्थाणुः । रेणुः ॥

भाषा–स्था, री इन धातुओंसेभी णुप्रत्यय होय । उदाहरण–'ष्ठा गतिनिवृत्तौ, री गतिरेषणयोः' इन धातुओंसे णुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। स्थाणुः । रेणुः ॥

विषेः कित् ॥ ९३१ ॥ विष्णुः ॥

भाषा–विषधातुसे जो कि णुप्रत्यय होय वह कित्संज्ञक होय । उदाहरण–'विष्लृ व्याप्तौ' धातुसे णुप्रत्यय करनेके अनन्तर प्रत्ययको कित् होनेसे धातुको गुण न करनेसे सिद्ध हुआ । विष्णुः ॥

कृादेः कः ॥ ९३२ ॥ कर्कः । राका । अर्कः । कल्कः । इण् । एकः । भेकः । काकः । पाकः । निहाकः ॥

भाषा–कृञ् आदिक धातुओंसे कप्रत्यय होय । उदाहरण–'कृञ् करणे' धातुसे कप्रत्यय करनेपर धातुको गुण करनेसे सिद्ध हुआ । कर्कः । 'रा दाने' धातुका स्त्रीलिंगमें । राका । 'अर्च पूजायाम्' धातुसे कप्रत्यय करनेके अनन्तर 'चोः कुः' इसकर चकारको ककार किया तब सिद्ध हुआ। अर्कः । 'कल गतौ' धातुका । कल्कः । इण् गतौ' धातुका । एकः । ञिभी भये धातुका। भेकः । 'कै शब्दे' धातुका। काकः। 'पा पाने' धातुका । पाकः । निपूर्व 'ओहाक् त्यागे' धातुका । निहाकः ॥

नौ सदेर्डित् ॥ ९३३ ॥ निष्कः ॥

भाषा–निउपसर्ग उपपद हुए संते सदधातुसे कप्रत्यय डित्संज्ञक होय। निपूर्व 'षद्लृ विशरणादौ' धातुसे डित्संज्ञक कप्रत्यय करनेके अनन्तर 'डिति टेः' इसकर धातुके टिका लोप करनेसे सिद्ध हुआ। निष्कः ॥

शकेरुनउन्तउन्तिउनिप्रत्ययाः ॥ ९३४ ॥ शकुनः शकुन्तः । शकुन्तिः शकुनिः ॥

भाषा–शक्धातुसे उन, उन्त, उन्ति, उनि यह चार प्रत्यय होंय। उदाहरण–'शक्लृ शक्तौ' धातुसे क्रमसे उन आदि कप्रत्यय करनेसे मूलस्थ रूप हुए जानने ॥

हृश्याभ्यामितः ॥ ९३५ ॥ हरितः । श्येतः ॥

भाषा–हृञ्, श्यैङ् इन धातुओंसे इतप्रत्यय होय । उदाहरण–हृञ् हरणे, श्यैङ् गतौ, इनधातुओंसे इतप्रत्यय करनेपर हृधातुको गुण और श्यैङ्धातुको आकार

करनेके अनन्तर 'आतोऽनापि' इसकर आकारका लोप किया तब सिद्ध हुआ। इरित । ह्येतः ॥

रुहेरस्य लो वा ॥ ९२६ ॥ रोहित । लोहितम् ॥

भाषा—रुहधातुसे इतप्रत्यय होय और रकारको विकल्पकरके लकार होय। उदाहरण—' रुह बीजजन्मनि ' धातुसे इतप्रत्यय करनेके अनन्तर ' उपधाया लघो ' इसकर गुण किया फिर एक जगह रकारको लकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ। रोहितः । लोहितम् ॥

श्र्वादेराप्यः ॥ ९२७ ॥ श्रवाप्यः । स्पृहयाप्य' ॥

भाषा—श्रु आदिक धातुओंसे आप्यप्रत्यय होय। उदाहरण—' श्रु श्रवणे ' धातुसे आप्यप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ। श्रवाप्य' । ' स्पृह ईप्सायाम् ' धातुसे स्वार्थमें णिप्रत्यय करनेके पश्चात् आप्यप्रत्यय किया तब ' न णिवडामन्ताल्वाय्येत्स्विष्णुषु ' इसकर णिप्रत्ययका लोप नहीं हुआ तब सिद्ध हुआ। स्पृहयाप्यः ॥

वृञ एण्यः ॥ ९२८ ॥ वरेण्य ॥

भाषा—वृञ्धातुसे एण्यप्रत्यय होय । उदाहरण—' वृञ् वरणे ' धातुसे एण्यप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको गुण करनेसे सिद्ध हुआ। वरेण्यः ॥

अर्तेरन्य' ॥९२९॥ अरण्यम् । पृषु सेचने । पृषेश्च पस्य ज' । पर्जन्य' ॥

भाषा—ऋधातुसे अन्यप्रत्यय होय। उदाहरण—' ऋ गतौ ' धातुसे अन्यप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ। अरण्यम् । पृषुधातु सेचनअर्थमें वर्ते है । पृषधातुसे अन्यप्रत्यय होय और पकारको जकार होय। उदाहरण—' पृषु सेचने ' धातुसे अन्यप्रत्यय करनेके अनन्तर पकारको जकार किया फिर ' उपधाया लघो ' इसकर गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ। पर्जन्य' ॥

वदेरान्य' ॥ ९४० ॥ वदान्य' ॥

भाषा—वदधातुसे आन्यप्रत्यय होय। उदाहरण—' वद व्यक्तायां वाचि ' धातुसे आन्यप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ। वदान्य' ॥

अमादेरत्र' ॥९४१॥ अमत्रम् । नक्षत्रम् । पतत्रम् । कलत्रम् । वरत्रा ॥

भाषा—अम आदिक धातुओंसे अत्रप्रत्यय होय। उदाहरण—' अम गतौ, णक्ष गतौ, पत्लृ पतने ' इन धातुओंसे अत्रप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। अमत्रम् । नक्षत्रम् । पतत्रम् । ' कल गतौ ' धातुका। कलत्रम् । अथवा ' गड सेचने ' धातुका निपातसे सिद्ध हुआ। कलत्रम् । ' वृञ् वरणे ' धातुका स्त्रीलिंगमें । वरत्रा ॥

आदेरतः ॥ ९४२ ॥ भरतः । पर्व पूर्तौ । पर्वतः ॥

भाषा–भृञ् आदिक धातुओंसे अतप्रत्यय होय । उदाहरण–'भृञ् भरणे' धातुसे अतप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको गुण करनेसे सिद्ध हुआ । भरतः । 'पर्व पूर्तौ' धातुका । पर्वतः ॥

पृषिरञ्जिभ्यां कित् ॥ ९४३ ॥ पृषतः । रजतम् ॥

भाषा–पृष, रञ्ज इन धातुओंसे जो कि अतप्रत्यय होय वह कित्संज्ञक होय । उदाहरण–'पृषु सेचने' धातुसे कित्संज्ञक अतप्रत्यय करनेपर प्रत्ययको कित होनेसे गुण न होनेपर सिद्ध हुआ । पृषतः । 'रञ्ज रागे' धातुसे अतप्रत्यय करनेपर 'नो लोपः' इसकर नकारका लोप किया तब सिद्ध हुआ रजतम् ॥

शपादेरथः ॥ ९४४ ॥ शपथः । शमथः । दमथः । वस । आवसथः । संवसथः ॥

भाषा–शप आदिक धातुओंसे अथप्रत्यय होय । उदाहरण–'शप आक्रोशे, शमु दमु उपशमे' और आङ् वा समपूर्व 'वन निवासे' इन धातुओंसे क्रमसे अथप्रत्यय करनेपर मूलस्थ रूप सिद्ध हुए जानने ॥

रभादेरसः ॥ ९४५ ॥ रभसः ॥

भाषा–रभआदिक धातुओंसे असप्रत्यय होय । उदाहरण–'रभ राभस्ये' धातुसे असप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । रभसः ॥

वेञ आत्वाभावस्तुट् च ॥ ९४६ ॥ वेतसः ॥

भाषा–वेञ्धातुको आकारका अभाव होय असप्रत्यय पर हुए संते और असप्रत्ययको तुट् आगम होय । उदाहरण–'वेञ् तन्तुसन्ताने' धातुसे असप्रत्यय करनेके अनन्तर 'सन्ध्यक्षराणामानपि' इसकर जो कि आकार होता है उसका अभाव और प्रत्ययको तुट् आगम करनेसे सिद्ध हुआ । वेतसः ॥

दिवेः कित् ॥ ९४७ ॥ दिवु । दिवसः ॥

भाषा–दिवधातुसे जो कि असप्रत्यय होय वह कित्संज्ञक होय । उदाहरण–'दिवु क्रीडादौ' धातुसे असप्रत्यय करनेके अनन्तर कित होनेसे धातुको गुण नहीं किया तब सिद्ध हुआ । दिवसः ॥

कादेरभः ॥ ९४८ ॥ कॄ । करभः । शॄ शरभः । शल गतौ । शलभः । कल गतौ । कलभः । गर्द कुत्सिते शब्दे । गर्दभः ॥

भाषा–कॄ आदिक धातुओंसे अभप्रत्यय होय । उदाहरण–'कॄ विक्षेपे, शॄ

हिंसायाम् ' इन धातुओंसे अमप्रत्यय करनेपर धातुको गुण करनेसे सिद्ध हुआ । करमः । शरमः । शल, कल इन धातुओंका । शलमः । कलमः । गर्दधातुका । गर्दमः ॥

ऋषिवृषिभ्यां कित् ॥ ९४९ ॥ ऋषभ । वृषभ ॥

भाषा–ऋष, वृष इन धातुओंसे जो कि अमप्रत्यय होय वह कित्संज्ञक होय । उदाहरण–' ऋषी गतौ, वृषु सेचने ' इन धातुओंसे अमप्रत्यय करनेपर प्रत्ययको कित् होनेसे धातुको गुण नहीं हुआ तब सिद्ध हुआ । ऋषभः । वृषभ ॥

रासवल्लिभ्यां च ॥ ९५० ॥ रासृ शब्दे । रासभ । वल्ल वल्ल संवरणे । वल्लभ ॥

भाषा–रास वल्ल इन धातुओंसेभी अमप्रत्यय होय । उदाहरण–' रासृ शब्दे, वल्ल संवरणे ' इन धातुओंसे अमप्रत्यय करनेके अनन्तर रूप सिद्ध हुए । रासभः । वल्लभः ॥

विशादेरन्तः ॥ ९५१ ॥ वेशन्त । वसन्त । जयन्तः ॥

भाषा–विश आदिक धातुओंसे अन्तप्रत्यय होय । उदाहरण–' विश प्रवेशने ' धातुसे अन्तिप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको ' उपधाया लघो ' इसकर गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । वेशन्तः । ' वस निवासे ' धातुका । वसन्त । ' जि जये ' धातुका । जयन्तः ॥

हन्तेर्हिमुट् च ॥ ९५२ ॥ हेमन्त ॥

भाषा–हन्धातुको हि आदेश होय अन्तप्रत्यय पर हुए संते और अन्तप्रत्ययको मुट् आगम होय । उदाहरण–' हन हिंसागत्योः ' धातुसे अन्तप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको हि आदेश और प्रत्ययको मुट् आगम किया फिर गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । हेमन्त ॥

अत्यादेररः ॥ ९५३ ॥ अररम् । भ्रमर । चमरः । देवरः । वासृ शब्दे । वासरः ॥

भाषा–ऋ आदिक धातुओंसे अरप्रत्यय होय । उदाहरण–' ऋ गतौ ' धातुसे अरप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । अररम् । ' भ्रमु अनवस्थाने ' धातुका । भ्रमरः । ' चमु अदने ' धातुका । चमरः । ' दिवु क्रीडा ' धातुका । देवरः । वासधातुका । वासरः ॥

कुवः कित् रुट् च ॥ ९५४ ॥ कुरर ॥

भाषा–कुधातुसे कित्संज्ञक अरप्रत्यय होय और प्रत्ययको रुट् आगम होय ।

उदाहरण–' कु शब्दे ' धातुसे अरप्रत्यय करनेके अनन्तर प्रत्ययको रुट् आगम किया फिर प्रत्ययको कित् होनेसे धातुको गुण नहीं हुआ तब सिद्ध हुआ । कुररः ॥

अंग्यादेरारः ॥ ९५५ ॥ अंगारः । मन्दारः ॥

भाषा–अंगि आदिक धातुओंसे आरप्रत्यय होय । उदाहरण–' अगि गतौ, मदि स्तुत्यादौ ' इन धातुओंसे आरप्रत्यय करनेके अनन्तर ' इदितो नुम् ' इसकर नुम् आगम किया तब सिद्ध हुआ । अंगारः । मन्दारः ॥

गडेः कड् च ॥ ९५६ ॥ गड आसेचने । कडारः ॥

भाषा–गड्धातुको कड् आदेश होय और आरप्रत्यय होय । उदाहरण–' गड आसेचने ' धातुसे आरप्रत्यय करनेपर कड् आदेश करनेसे हुआ । कडारः ॥

शृंगारादयः ॥ ९५७ ॥ शृंगारः । भृंगारः । मृजूष् मार्ज्जारः । कमु । कुमारः । तुषारः । कासारः ॥

भाषा–शृंगार आदिक आरप्रत्यय शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण–' शॄ हिंसायाम् ' धातुसे आरप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । शृंगारः । ' भृञ् मरणे, धातुका । भृंगारः । ' मृजूष् शुद्धौ ' धातुका । मार्जारः । ' कमु कान्तौ ' धातुका । कुमारः । तुष् तुष्टौ ' धातुका तुषारः । ' कासृ शब्दकुत्सायाम् ' धातुका । कासारः ॥

सर्त्तेरपः षुक् च ॥ ९५८ ॥ सर्षपः ॥

भाषा–सृधातुसे अप्रत्यय होय और धातुको षुक् आगम होय । उदाहरण–' सृ गतौ ' धातुसे अपप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको षुक् आगम किया फिर गुण करनेसे सिद्ध हुआ । सर्षपः ॥

विटपादयः ॥ ९५९ ॥ विट शब्दे । विटपः । विष्टपम् । कुणपम् । वल संवरणे । उलपम् ॥

भाषा–विटप आदिक कपप्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण–' विट् शब्दे ' धातुसे कपप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । विटपः । ' विश प्रवेशने ' धातुसे कपप्रत्यय करनेके अनन्तर प्रत्ययको तुट् आगम निपातसे किया तब ' छशष० ' इसकर शकारको षकार किया फिर ' ष्टुभिः ष्टुः ' इसकर सिद्ध हुआ । विष्टपम् । ' कण शब्दे ' धातुका निपातसे सिद्ध हुआ । कुणपम् । ' वल संवरणे ' धातुका निपातसे सिद्ध हुआ । उलपम् ॥

वृतादेस्तिकः ॥ ९६० ॥ वर्तिका ॥

भाषा–वृतु आदिक धातुओंसे विकप्रत्यय होय। उदाहरण–'वृतु वर्तने' धातुसे विकप्रत्यय करनेके अनन्तर 'उपधाया लघोः' इसकर गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ। वर्तिका॥

कृतः कित्॥ ९६१॥ कृत्तिका॥

भाषा–कृतीधातुसे तिकप्रत्यय कित्संज्ञक होय। उदाहरण–'कृती छेदने' धातुसे तिकप्रत्यय करनेके अनन्तर प्रत्ययको कित् होनेसे धातुको गुण नहीं हुआ तब सिद्ध हुआ। कृत्तिका॥

इष्याशिभ्यान्तकः॥ ९६२॥ इष्टका। अष्टका॥

भाषा–इषु, अशूङ् इन धातुओंसे तकप्रत्यय कित्संज्ञक होय। उदाहरण–'इषु इच्छायाम्' धातुसे तकप्रत्यय कित्संज्ञक करनेसे 'ष्टुभिः ष्टुः' इसकर सिद्ध हुआ स्त्रीलिङ्गमें। इष्टका। 'अशूङ् व्याप्तौ' धातुसे तकप्रत्यय करनेपर 'व्रश्च०, ष्टुभिः ष्टुः' इनकर सिद्ध हुआ स्त्रीलिङ्गमें। अष्टका॥

वीपतिभ्यां तनः॥ ९६३॥ वेतनम्। पत्तनम्॥

भाषा–वी, पत्लृ इन धातुओंसे तनप्रत्यय होय। उदाहरण–'वी गत्यादौ, पत्लृ पतने' इन धातुओंसे तनप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। वेतनम्। पत्तनम्॥

अत्यादिभ्यो मः॥ ९६४॥ अर्मः। दृ भये। दर्मः। गर्मः॥

भाषा–ऋ आदिक धातुओंसे मप्रत्यय होय। उदाहरण–'ऋ गतौ' धातुसे मप्रत्यय करनेपर धातुको गुण किया तब सिद्ध हुआ। अर्मः। 'दृ भये' धातुका। दर्मः। 'गॄ निगरणे' धातुका। गर्मः॥

इणः कित्॥ ९६५॥ इमः॥

भाषा–इण्धातुसे मप्रत्यय कित्संज्ञक होय। उदाहरण–'इण्। गतौ' धातुसे मप्रत्यय किया प्रत्ययको कित् होनेसे गुण नहीं हुआ तब सिद्ध हुआ। इमः॥

असिसञ्जिभ्यां क्थिः॥ ९६६॥ अस्थि। सक्थि॥

भाषा–असु षञ्ज इन धातुओंसे क्थिप्रत्यय होय प्रत्ययमें ककार नलोपके अर्थ है। उदाहरण–'असु क्षेपणे' धातुसे क्थिप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ। अस्थि। 'षञ्ज सङ्गे' धातुसे क्थिप्रत्यय करनेपर 'नलोपः' इसकर नकारका लोप किया फिर 'चोः कुः, खरि चपा झलानाम्' इनकर सिद्ध हुआ। सक्थि॥

शुषादेः क्सिः॥ ९६७॥ शुक्षिः। कुष निष्कर्षे। कुक्षिः। अक्षु। अक्षिः॥

भाषा-शुष् आदिक धातुओंसे क्सिप्रत्यय होय प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण-' शुष् शोषणे ' धातुसे क्सिप्रत्यय करनेके अनन्तर ' षढो० ' इसकर षकारको ककार किया फिर ' क्लिात्षः० ' इसकर सकारको षकार किया तब सिद्ध हुआ । शुक्षिः । इसी प्रकार ' कुष निष्कर्षे ' धातुका । कुक्षिः । ' अशूङ् व्याप्तौ ' धातुसे क्सिप्रत्यय करनेपर ' छशष०, षढोः०, क्लि० ' इसकर सिद्ध हुआ । अक्षि ॥

इषः क्सुः ॥ ९६८ ॥ इक्षुः ॥

भाषा-इषुधातुसेभी क्सुप्रत्यय होय । उदाहरण-' इषु इच्छायाम् ' धातुसे क्सुप्रत्यय करनेपर ' षढोः० ' इसकर षकारको ककार किया तब सिद्ध हुआ । इक्षुः ॥

अवितृस्तृतन्त्रिभ्य ईः ॥९६९॥ अवीः । तरीः । स्तरीधूमः । तंत्रीः ॥

भाषा-अव, तृ, स्तृञ्, तन्त्रि इन धातुओंसे ईप्रत्यय होय । उदाहरण-' अव रक्षणादौ ' धातुसे ईप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अवीः । ' तृ प्लवनसंतरणयोः ' धातुका । तरीः । ' स्तृञ् आच्छादने ' धातुका । स्तरीः । ' तन्त्रि कुटुम्बधारणे ' चुरादिधातुसे ईप्रत्यय करनेके अनन्तर ' णेः ' इसकर णिप्रत्ययका लोप किया तब सिद्ध हुआ । तंत्रीः ॥

लक्षेरी मुट् च ॥ ९७० ॥ लक्ष्मीः ॥ इति तृतीयः पादः ॥ ३ ॥

भाषा-लक्षधातुसे ईप्रत्यय होय और प्रत्ययको मुट् आगम होय । उदाहरण-' लक्ष दर्शनांकनयोः ' चुरादिधातुसे ईप्रत्यय करनेके पश्चात् ईप्रत्ययको मुट् आगम किया फिर ' णेः ' इसकर णिप्रत्ययका लोप किया तब सिद्ध हुआ । लक्ष्मीः ॥ इत्युणादौ तृतीयपादः समाप्तः ॥ ३ ॥

वातप्रम्यादयः ॥ ९७१ ॥ वातप्रमीः । यांत्यनेनेति ययीः । पा रक्षणे । पपीः ॥

भाषा-वातप्रमी आदिक कीप्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण-' वातं प्रमिमीते ' इस विग्रहमें वातपूर्व ' माङ् माने ' धातुसे कीप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । वातप्रमीः । ' या प्रापणे ' धातुका । ययीः । ' पा रक्षणे ' धातुका । पपीः ॥

रत्न्यादयः ॥ ९७२ ॥ रम । रत्निः । अंजु । अञ्जलिः । मदी । मत्स्यः । अत् । अतिथिः । अगि । अंगुलिः । कु । कवसः । कौतेः । कवचः । यु । यवासः । कृश् । कृशानुः ॥

भाषा–रत्नि आदिक शब्द निपातसे सिद्ध होवे हैं । उदाहरण–' ऋ गतौ ' धातुका निपातसे सिद्ध हुआ । रत्नि । ' अञ्चू व्यक्त्यादौ ' धातुका । अङ्गुलिः । ' मदी हर्षे ' धातुका । मत्स्यः । ' अत सातत्यगमने ' धातुका । आतापि । ' अगि गतौ ' धातुका । अंगुलिः । ' कु शब्दे ' धातुका । कलघः । ' यु मिश्रणे ' धातुका । यवासः । ' कृश तनूकरणे ' धातुका । कृशानु ॥

शु कर ॥ ९७३ ॥ शर्करा ॥

भाषा–शृधातुसे करप्रत्यय होय । उदाहरण–' शॄ हिंसायाम् ' धातुसे करप्रत्यय करनेपर गुण करनेसे सिद्ध हुआ स्त्रीलिंगमें । शर्करा ॥

पुषः कित् ॥ ९७४ ॥ पुष्कर ॥

भाषा–पुष्धातुसे भविष्यत्कालमें इनिप्रत्यय होय । उदाहरण–' पुष पुष्टौ ' धातुसे करप्रत्यय करनेपर प्रत्ययको कित् होनेसे धातुसे गुण नहीं हुआ। तब सिद्ध हुआ । पुष्कर ॥

गमेरिनिर्भविष्यति ॥ ९७५ ॥ गमिष्यतीति गमी ॥

भाषा–गम्लृधातुसे भविष्यत्कालमें इनिप्रत्यय होय प्रत्ययमें इकार उच्चारणार्थ है । उदाहरण–' गम्लृ गतौ ' धातुसे भविष्यत्कालमें इन्प्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ गमिन् । नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । गमी ॥

परमेस्थ कित् ॥ ९७६ ॥ परमेष्ठी ॥

भाषा–परम शब्द उपपद हुए सते स्थाधातुसे कित्संज्ञक इन्प्रत्यय होय । उदाहरण–' परमे तिष्ठति ' इस विग्रहमें परमशब्द उपपद हुए सते स्थाधातुसे इन्प्रत्यय करनेपर ' आतोऽनापि ' इसकर आकारका लोप किया फिर ' क्वचिदलुक् ' इसकर सप्तमीका लोप नहीं हुआ तब ' किलात्व० ' इसकर षकार किया फिर ' ष्टुभिः ष्टुः ' इसकर थकारको ठकार किया तब सिद्ध हुआ । परमेष्ठी ॥

मन्थ इनि कित् ॥ ९७७ ॥ मन्था । मन्थानौ ॥

भाषा–मन्थधातुसे कित्संज्ञक इन्प्रत्यय होय । उदाहरण–' मन्थ विलोडने ' धातुसे कित्संज्ञक इन्प्रत्यय करनेसे ' नो लोपः ' इसकर नकारका लोप किया तब स्थित हुआ मथिन् । नामसंज्ञामें । मन्था । द्विवचनमें । मन्थानौ ॥

पतेस्थश्च ॥ ९७८ ॥ पथाः । पथानौ ॥

भाषा–पतलृधातुसे इन्प्रत्यय होय और तकारको थकार होय । उदाहरण–'पतलृ पतने ' धातुसे इन्प्रत्यय करनेके अनन्तर तकारको थकार किया तब रूप हुआ पथिन् । नामसंज्ञामें । पन्था । द्विवचनमें । पन्थानौ ॥

बलाकादयः ॥ ९७९ ॥ बलाका । पताका । खज मन्थे । खजाकः । पिनाकः । तड आघाते । तडाकः ॥

भाषा–बलाका आदिक आकप्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण–' वल प्राणने ' धातुसे आकप्रत्यय करनेपर स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । बलाका । 'पत्ऌ पतने ' धातुका स्त्रीलिंगमें । पताका । खजधातुका । खजाकः । ' पा रक्षणे ' धातुसे आकप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । पिनाकः । तड धातुका । तडाकः ॥

दूषेरीकः ॥ ९८० ॥ दूषीका ॥

भाषा–दूषीधातुसे ईकप्रत्यय होय । उदाहरण–ञिप्रत्ययान्त ' दुष वैकृत्ये ' धातुसे ईकप्रत्यय करनेपर ' ञेः ' इसकर ञिप्रत्ययका लोप किया तव सिद्ध हुआ स्त्रीलिंगमें । दूषीका ॥

अनिहृषिभ्यां किच्च ॥ ९८१ ॥ अनीकम् । हृषीकम् ॥

भाषा–अन, हृष् इन धातुओंसे कित्संज्ञक ईकप्रत्यय होय । उदाहरण–' अन प्राणने ' धातुसे ईकप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । अनीकम् । ' हृष्ट तुष्टौ ' धातुसे ईकप्रत्यय करनेपर प्रत्ययको कित् होनेसे गुण नहीं हुआ तव सिद्ध हुआ । हृषीकम् ॥

अलीकादयः ॥ ९८२ ॥ अल भूषणादौ । अलीकम् । वलीकम् । पुण कर्माणि शुभे । पुण्डरीकम् । इषिका । इषीका ॥

भाषा–अलीक आदिक कीकप्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण–अलधातुसे कीकप्रत्यय किया प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है तव रूप सिद्ध हुआ । अलीकम् । ' वल संवरणे ' धातुका । वलीकम् । पुणधातुसे कीकप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । पुण्डरीकम् । ' ईष गतौ ' धातुका स्त्रीलिंगमें निपातसे सिद्ध हुआ । ईषिका । इषीका ॥

कादेरीषः ॥ ९८३ ॥ करीषम् । तॄ । तरीषः ॥

भाषा–कॄ आदिक धातुओंसे ईषप्रत्यय होय । उदाहरण–' कॄ विक्षेपे, तॄ प्लवनादौ ' इन धातुओंसे ईषप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुए । करीषम् । तरीषः ॥

श्रादेः कीषः ॥ ९८४ ॥ शॄ । शिरीषः पॄ पुरीषम् ॥

भाषा–शॄ आदिक धातुओंसे कीषप्रत्यय होय प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण–' शॄ हिंसायाम् ' धातुसे कीषप्रत्यय करनेके अनन्तर ' ऋत इद् ' इसकर इर् किया तव सिद्ध हुआ । शिरीषः । ' पॄ पालनपूरणयोः ' धातुसे कीषप्रत्यय करनेपर ' पोरुत् ' इसकर उर् किया तव सिद्ध हुआ । पुरीषम् ॥

अर्जेर्ऋज ॥९८५॥ ऋजीषम् । अमि शब्दे । अंबरीषो निपात्य । अम्बरीषम् ॥

भाषा–अर्ज धातुसे कीषप्रत्यय होय और अर्जधातुको ऋज आदेश होय । उदाहरण–' अर्ज अर्जने ' धातुसे कीषप्रत्यय होय और अर्ज धातुको ऋज आदेश किया तब सिद्ध हुआ । ऋजीषम् । अंबरीषशब्द निपातसे सिद्ध होता है । उदाहरण–' अमि शब्दे ' धातुसे ईषप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । अम्बरीषम् ॥

कॄादेरीर ॥९८६ ॥ करीर । शॄ । शरीरम् ॥

भाषा–कॄ आदिक धातुओंसे ईरप्रत्यय होय । उदाहरण–' कॄ विक्षेपे, शॄ हिंसायाम् ' इन धातुओंसे ईरप्रत्यय करनेपर धातुको गुण करनेसे सिद्ध हुए । करीर । शरीरम् ॥

गभीरादय ॥ ९८७ ॥ गम्लृ । गभीर गम्भीरः । वश उशीरम् । घस्लृ । क्षीरम् ॥

भाषा–गभीर आदिक ईरप्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होवे हैं । उदाहरण–' गम्लृ गतौ ' धातुसे ईरप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । गभीरः, गम्भीरः । ' वश कान्तौ ' धातुका । उशीरम् । ' घस्लृ अदने ' धातुका । क्षीरम् ॥

शीङो धुक्लक्वलञ्वालपाला ॥ ९८८ ॥ शीधु । शीलम् । शवल । शैवल । शेवालम् । शेपालम् ॥

भाषा–शीङ्धातुसे धुक्, लक्, वल, वलञ्, वाल, पाल यह छः प्रत्यय होंय । उदाहरण–' शीङ् स्वप्ने धातुसे धुक्प्रत्यय करनेपर गुण तौ हुआ नहीं क्योंकि किन्प्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । शीधु । और जहां लक् प्रत्यय किया वहां सिद्ध हुआ । शीलम् । और जहां वलप्रत्यय किया वहां गुण करनेसे सिद्ध हुआ । शेवलः । और जहां वलञ्प्रत्यय किया वहां वृद्धि किया क्योंकि ञित्प्रत्यय परे विद्यमान है तब सिद्ध हुआ । शैवलः । और जहां वाल, पाल यह प्रत्यय हुए वहां गुण करनेसे सिद्ध हुआ । शेवालम् । शेपालम् ॥

उलूकादयः ॥९८९॥ उलूक । शमु । शम्बूकः । शल । शल्लूकः । मडि भूषायाम् । मण्डूक ॥

भाषा–उलूक आदिक ऊकप्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होवे हैं । उदाहरण–' वल संवरणे ' धातुसे ऊकप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । उलूकः । शमु उपशमे ' धातुका । शम्बूकः । ' शल गतौ ' धातुका । शल्लूकः । ' मडि भूषायाम् ' धातुका । मण्डूकः ॥

नियो मिः ॥ ९९० ॥ नेमिः ॥

भाषा–णीञ्धातुसे मिप्रत्यय होय । उदाहरण–'णीञ् प्रापणे' धातुसे मिप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । नेमिः ॥

अर्तेरूच्च ॥ ९९१ ॥ ऊर्मिः ॥

भाषा–ऋधातुसे मिप्रत्यय होय और धातुको उर् आदेश होय । उदाहरण–'ऋ गतौ' धातुसे मिप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको उर् आदेश किया फिर 'र्वोर्विहसे' इसकर दीर्घ किया तब सिद्ध हुआ । ऊर्मिः ॥

भुवः किच्च ॥ ९९२ ॥ भूमिः ॥

भाषा–भूधातुसे कित्संज्ञक मिप्रत्यय होय । उदाहरण–'भू सत्तायाम्' धातुसे कित्संज्ञक मिप्रत्यय करनेपर धातुको गुण नहीं हुआ क्योंकि परे कित्संज्ञक प्रत्यय विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । भूमिः ॥

अश्नोतेरश् च ॥ ९९३ ॥ रश्मिः ॥

भाषा–अशूङ्धातुसे मिप्रत्यय होय और धातुको रश् आदेश होय । उदाहरण–'अशूङ् व्याप्तौ' धातुसे मिप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको रश् आदेश करनेपर रूप सिद्ध हुआ । रश्मिः ॥

सृवृषोर्निः कित् ॥ ९९४ ॥ सृणिः । वृष्णिः ॥

भाषा–सृ आदिक धातुओंसे कित्संज्ञक निप्रत्यय होय । उदाहरण–'सृ गतौ, वृषु सेचने' इन दोनों धातुओंसे निप्रत्यय करनेपर प्रत्ययको कित् होनेसे धातुको गुण नहीं हुआ फिर 'षुर्नो णोऽनन्ते' इसकर नकारको णकार किया तब सिद्ध हुआ । सृणिः । वृष्णिः ॥

अङ्गेर्नलोपश्च ॥ ९९५ ॥ अग्निः ॥

भाषा–अगिधातुसे निप्रत्यय होय और नकारका लोप होय । उदाहरण–'अगि गतौ' धातुसे निप्रत्यय करनेके अनन्तर 'इदितो नुम्' इसकर जो कि नुम् आगमसंबन्धी नकार हुआ उसका लोप करनेसे सिद्ध हुआ । अग्निः ॥

वह्यादेर्निः ॥ ९९६ ॥ वह्निः । श्रोणिः । योनिः । द्रोणिः । ग्लानिः ।

भाषा–वह आदिक धातुओंसे निप्रत्यय होय । उदाहरण–'वह प्रापणे' धातुसे निप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । वह्निः । 'श्रु श्रवणे' धातुसे निप्रत्यय करनेपर धातुको गुण किया तब सिद्ध हुआ । श्रोणिः । 'यु मिश्रणे' धातुका । योनिः । 'द्रु गतौ' धातुका । द्रोणिः । 'ग्लै हर्षक्षये' धातुका । ग्लानिः ॥

घृण्यादयः ॥ ९९७ ॥ घृणिः । स्पृश् । पृश्निः । पृषु । पार्ष्णिः ॥

भाषा—घृणि आदिक निक्प्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण-'घृ सेचने' धातुसे निक्प्रत्यय करनेपर प्रत्ययको कित् होनेसे धातुको गुण नहीं हुआ तब 'पुर्नो णोऽनन्त्ये' इसकर सिद्ध हुआ । घृणि । 'स्पृश संस्पर्शने' धातुका निपातसे सिद्ध हुआ । पृश्नि । 'पृष् सेचने' धातुसे निक्प्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । पार्ष्णि ॥

पातेर्डतिः ॥ ९९८ ॥ पतिः ॥

भाषा—'पा रक्षणे' धातुसे डतिप्रत्यय होवे । उदाहरण—'पा रक्षणे' धातुसे डतिप्रत्यय करनेके अनन्तर 'डिति टेः' इसकर टिका लोप किया तब सिद्ध हुआ । पतिः ॥

शकेर्ऋत् ॥ ९९९ ॥ शकृत् ॥

भाषा—शक्लृधातुसे ऋतप्रत्यय होय । उदाहरण—'शक्लृ शक्तौ' धातुसे ऋत प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । शकृत् ॥

हन्तेरति रंह च ॥ १००० ॥ हन्ति दुरितमनया अंहतिः ॥

भाषा—हन्धातुसे अतिप्रत्यय होय और धातुको अंह आदेश होय । उदाहरण-'हन् हिंसागत्योः' धातुसे अतिप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको अंह आदेश किया तब सिद्ध हुआ । अंहतिः ॥

सूञादेः क्रिः ॥ १००१ ॥ सूरिः । भूरिः । अद्रिः ॥

भाषा—षूङ् आदिक धातुओंसे क्रिप्रत्यय होय प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण—'षूङ् प्राणिप्रसवे' धातुसे क्रिप्रत्यय करनेपर धातुको गुण नहीं हुआ क्योंकि क्रिप्रत्यय परे विद्यमान है तब सिद्ध हुआ । सूरिः । 'भू सत्तायाम्' धातुका । भूरिः । 'अद भक्षणे' धातुका । अद्रिः ॥

रादेस्त्रिः ॥ १००२ ॥ रात्रिः । अत्रिः ॥

भाषा—रा आदिक धातुओंसे त्रिप्रत्यय होय । उदाहरण- रा दाने, अद भक्षणे धातुसे त्रिप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । रात्रिः । अत्रिः ॥

पतेरत्रिः ॥ १००३ ॥ पतत्रिः ॥

भाषा—पत्लृधातुसे अत्रिप्रत्यय होय । उदाहरण—'पत्लृ पतने' धातुसे अत्रिप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । पतत्रिः ॥

मृङ ईचि ॥ १००४ ॥ मरीचिः ॥

भाषा—मृङ्धातुसे ईचिप्रत्यय होय । उदाहरण—'मृङ् प्राणत्यागे' धातुसे ईचि प्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको गुण करनेसे सिद्ध हुआ । मरीचिः ॥

वेञो डिच्च ॥ १००५ ॥ वीचिः ॥

भाषा-वेञ्धातुसे ईचिप्रत्यय डित्संज्ञक होय । उदाहरण-' वेञ् तन्तुसन्ताने ' धातुसे ईचिप्रत्यय डित्संज्ञक करनेसे ' डिति टेः ' इसकर टिका लोप किया तब सिद्ध हुआ । वीचिः ॥

पुरः कुषः ॥ १००६ ॥ पुर अग्रगमने । पुरुषः ॥

भाषा-पुर्धातुसे कुषप्रत्यय होय । प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण-पुर्धातुसे कुषप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । पुरुषः ॥

पॄनहिकलिभ्य उषः ॥ १००७ ॥ परुषम् । नहुषः । कलुषम् ॥

भाषा-पॄ, णह, कल इन धातुओंसे उषप्रत्यय होय । उदाहरण-' पॄ पालनपूरणयोः ' धातुसे उषप्रत्यय करनेपर धातुको गुण करनेपर रूप सिद्ध हुआ । परुषम् । ' णह बन्धने ' धातुका । नहुषः । ' कल शब्दसंख्यानयोः ' धातुका । कलुषः ॥

पीयेरूषः ॥ १००८ ॥ पीय पाने सौत्रः । पीयूषम् । पेयूषम् ॥

भाषा-पीयधातुसे ऊषप्रत्यय होय । उदाहरण-' पीय पाने ' धातुसे ऊषप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । पीयूषम् । और निपातसे एक जगह गुण करनेसे सिद्ध हुआ । पेयूषम् ॥

मस्जेर्नुम्च ॥ १००९ ॥ मंजूषा ॥

भाषा-टुमस्जो धातुसे ऊषप्रत्यय होय और धातुको नुम् आगम होय । उदाहरण-' टुमस्जो शुद्धौ ' धातुसे ऊषप्रत्यय किया पश्चात् नुम् आगम किया तब रूप स्थित हुआ मन्स्ज-ऊष फिर ' स्तोः श्चुभिः श्चुः ' इसकर शकार कर ' झवे जवाः ' इसकर जकार किया फिर ' स्तोः श्चुभिः श्चुः ' इसकर नकारको ञकार किया फिर ' हसात्परस्य झसस्य लोपो वा सवर्णे झसे ' इसकर जहां जकारका लोप हो गया तहां सिद्ध हुआ । मञ्जूषा । और एक जगह । मञ्ज्जूषा । यह रूप स्त्रीलिंगमें होते हैं ॥

गण्डेश्च ॥ १०१० ॥ गडि वदनैकदेशे । गण्डूषः ॥

भाषा-गडिधातुसे ऊषप्रत्यय होय । उदाहरण-गडिधातुसे ऊषप्रत्यय करनेपर ' इदितो नुम् ' इसकर नुम् आगम किया तब सिद्ध हुआ । गण्डूषः ॥

शकादेरटः ॥ १०११ ॥ शकटम् । ककि गतौ । कंकटः । कृञ् । करटः ॥

भाषा-शक्लृ आदिक धातुओंसे अटप्रत्यय होय । उदाहरण-' शक्लृ शक्तौ ' धातुसे अटप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । शकटः । ' ककि गतौ ' धातुसे अटप्र-

भाषा—घृणि आदिक निक्प्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण—"घृ सेचने" धातुसे निक्प्रत्यय करनेपर प्रत्ययको कित् होनेसे धातुको गुण नहीं हुआ तब 'धुर्नो णोऽनन्ते' इसकर सिद्ध हुआ । घृणिः । 'स्पृश संस्पर्शने' धातुका निपातसे सिद्ध हुआ । पृश्निः । 'पृष् सेचने' धातुसे निक्प्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । पार्ष्णिः ॥

पातेर्डतिः ॥ ९९८ ॥ पतिः ॥

भाषा— पा रक्षणे' धातुसे डतिप्रत्यय होय । उदाहरण—'पा रक्षणे' धातुसे डतिप्रत्यय करनेके अनन्तर 'डिति टेः' इसकर टिका लोप किया तब सिद्ध हुआ । पतिः ॥

शकेर्ऋतन् ॥ ९९९ ॥ शकृत् ॥

भाषा—शक्लधातुसे ऋतन्प्रत्यय होय । उदाहरण—'शक्लृ शक्तौ' धातुसे ऋतन्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । शकृत् ॥

हन्तेरति रंह् च ॥ १००० ॥ हन्ति दुरितमनया अंहतिः ॥

भाषा—हन्धातुसे अतिप्रत्यय होय और धातुको अंह् आदेश होय । उदाहरण—"हन् हिंसागत्योः" धातुसे अतिप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको अंह् आदेश किया तब सिद्ध हुआ । अंहतिः ॥

सूङादेः क्रिः ॥ १००१ ॥ सूरिः । सूरिः । अद्रिः ॥

भाषा—सूङ् आदिक धातुओंसे क्रिप्रत्यय होय प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण—'पूङ् प्राणिप्रसवे' धातुसे क्रिप्रत्यय करनेपर धातुको गुण नहीं हुआ क्योंकि क्रिप्रत्यय परे विद्यमान है तब सिद्ध हुआ । सूरिः । 'मू सत्तायाम्' धातुका । सूरिः । 'अद् भक्षणे' धातुका । अद्रिः ॥

रादोस्त्रिः ॥ १००२ ॥ रात्रिः । अत्रिः ॥

भाषा—रा आदिक धातुओंसे त्रिप्रत्यय होय । उदाहरण— रा दाने, अद भक्षणे धातुसे त्रिप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । रात्रिः । अत्रिः ॥

पतेरत्रिः ॥ १००३ ॥ पतत्रिः ॥

भाषा—पतलधातुसे अत्रिप्रत्यय होय । उदाहरण—'पतॢ पतने' धातुसे अत्रिप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । पतत्रिः ॥

मृङ ईचि ॥ १००४ ॥ मरीचिः ॥

भाषा—मृङ्धातुसे ईचिप्रत्यय होय । उदाहरण—'मृङ् प्राणत्यागे' धातुसे ईचिप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको गुण करनेसे सिद्ध हुआ । मरीचिः ॥

'लगि गतौ' धातुसे ऊलप्रत्यय करनेके अनन्तर 'इदितो नुम्' इसकर नुम् आगम और धातुके अकारको आकार वृद्धि किया तब रूप सिद्ध हुआ । लांगूलम् ॥

कुवश्चट् दीर्घश्च ॥ १०१९ ॥ कूची ॥

भाषा–कुधातुसे चट्प्रत्यय होय और विकल्पकरके दीर्घ होय प्रत्ययमें टकार ईप्प्रत्ययके अर्थ है । उदाहरण–'कु शब्दे' धातुसे चट्प्रत्यय करनेके अनन्तर एक जगह दीर्घ किया तब 'छ्रितः' इसकर स्त्रीलिंगमें ईप्प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । कूची ॥

सिवेरू च ॥ १०२० ॥ सूची ॥

भाषा–षिवुधातुसे चट्प्रत्यय होय और धातुके टिको ऊकार होय । उदाहरण–'षिवु तन्तुसन्ताने' धातुसे चट्प्रत्यय करनेके अनन्तर धातुके टिरूप इव्को ऊकार करनेसे स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । सूची ॥

शमेर्वः ॥ १०२१ ॥ शमु । शम्वः ॥

भाषा–शमुधातुसे वप्रत्यय होय । उदाहरण–'शमु उपशमे' धातुसे वप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । शम्वः ॥

उल्वादयः ॥ १०२२ ॥ उच समवाये । उल्वः । शुल्वम् । स्था । स्तंबः । स्तवकः ॥

भाषा–उल्व आदिक वप्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण–'उच समवाये' धातुसे वप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । उल्वः । 'शुच शोके' धातुका । शुल्वम् । 'ष्ठा गतिनिवृत्तौ' धातुका । स्तम्वः । स्तवकः ॥

शाशपिभ्यां दः ॥ १०२३ ॥ शादः । शब्दः ॥

भाषा–शो, शप् इन धातुओंसे दप्रत्यय होय । उदाहरण–'शो तनूकरणे' धातुसे दप्रत्यय करनेपर 'सन्ध्यक्षराणामानपि' इसकर आकार किया तब सिद्ध हुआ । शादः । 'शप् आक्रोशे' धातुसे दप्रत्यय करनेपर 'झवे जवाः' इसकर पकारको वकार किया तब सिद्ध हुआ । शब्दः ॥

अब्दादयः ॥ १०२४ ॥ अवतीत्यब्दः । कुन्दः ॥

भाषा–अब्द आदिक दप्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण–'अव रक्षणे' धातुसे दप्रत्यय करनेपर वकारको वकार निपातसे किया तब सिद्ध हुआ । अब्दः । 'कु शब्दे' धातुका । कुन्दः ॥

वलिमलितनिभ्यः कयः ॥ १०२५ ॥ वलयम् । मलयः । तनयः ॥

भाषा–वल, मल, तन् इन धातुओंसे कयप्रत्यय होय प्रत्ययमें ककार गुणनि-

त्यय करनेपर 'इदितो नुम्' इसकर नुम् आगम किया तब सिद्ध हुआ । कण्टः । 'कृत्र् करणे' धातुका । करटः ॥

कलिकर्द्योरम ॥ १०१२ ॥ कलम । कर्द कुत्सिते शब्दे । कर्दम ॥

भाषा—कल, कर्द इन धातुओंसे अमप्रत्यय होय । उदाहरण-' कल संख्याने, कर्द कुत्सिते शब्दे ' इन धातुओंसे अमप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । कलम' । कर्दमः ॥

पुल्यादेः किन्द ॥ १०१३ ॥ पुलिन्द ॥

भाषा—पुल आदिक धातुओंसे किन्दप्रत्यय होय प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधक अर्थ है । उदाहरण-'पुल महत्वे' धातुसे किन्दप्रत्यय करनेपर प्रत्ययको कित् होनेसे गुण नहीं हुआ तब सिद्ध हुआ । पुलिन्दः ॥

कुपेर्वा च १०१४ ॥ कुपिन्द' कुविन्दः ॥

भाषा—कुपधातुके पकारको विकल्पकरके वकार होय किन्दप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण-' कुप क्रोधे ' धातुसे किन्दप्रत्यय करनेके अनन्तर एक जगह पकारको वकार किया तब सिद्ध हुआ । कुविन्दः । कुपिन्द' ॥

नौ पञ्जेर्घथि ॥ १०१५ ॥ निषंगथि' ॥

भाषा—निरुपसर्ग उपपद हुए संते पञ्जधातुसे घथिप्रत्यय होय । उदाहरण-निउपसर्ग पूर्व करनेपर 'पञ्ज संगे' धातुसे घथिप्रत्यय करनेसे 'घजो' कुमी घिति' इसकर जकारको गकार किया तब सिद्ध हुआ । निषंगथिः ॥

सर्तेर्णिच्च ॥ १०१६ ॥ सारथि' ॥

भाषा—सृधातुसे घथिप्रत्यय णित्संज्ञक होय । उदाहरण-' सृ गतौ ' धातुसे णित्संज्ञक घथिप्रत्यय करनेके अनन्तर प्रत्ययको णित् होनेसे धातुको वृद्धि किया तब सिद्ध हुआ । सारथि' ॥

खर्ज्जादेरूरः ॥ १०१७ ॥ खर्जूर । कर्पूरम् । वल्लूरम् ॥

भाषा—खर्ज आदिक धातुओंसे ऊरप्रत्यय होय । उदाहरण-' खर्ज मार्जने ' धातुसे ऊरप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । खर्जूर' । 'कृपू सामर्थ्ये ' धातुसे ऊरप्रत्यय करनेपर धातुको गुण किया तब सिद्ध हुआ । कर्पूरम् । ' वल्ल संवरणे ' धातुका वल्लूरम् ॥

लगेर्वृद्धिश्च ॥ १०१८ ॥ लांगूलम् । कुसाभ । कुसूलम् ॥

भाषा—लगिधातुसे ऊलप्रत्यय होय और धातुको वृद्धि होय । उदाहरण-

'लगि गतौ' धातुसे ऊलप्रत्यय करनेके अनन्तर 'इदितो नुम्' इसकर नुम् आगम और धातुके अकारको आकार वृद्धि किया तब रूप सिद्ध हुआ । लांगूलम् ॥

कुवश्चट् दीर्घश्च ॥ १०१९ ॥ कूची ॥

भाषा–कुधातुसे चट्प्रत्यय होय और विकल्पकरके दीर्घ होय प्रत्ययमें टकार ईप्प्रत्ययके अर्थ है । उदाहरण–'कु शब्दे' धातुसे चट्प्रत्यय करनेके अनन्तर एक जगह दीर्घ किया तब 'षिद्गौरादिभ्यश्च' इसकर स्त्रीलिंगमें ईप्प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । कूची ॥

सिवेरू च ॥ १०२० ॥ सूची ॥

भाषा–षिवुधातुसे चट्प्रत्यय होय और धातुके टिको ऊकार होय । उदाहरण–'षिवु तन्तुसन्ताने' धातुसे चट्प्रत्यय करनेके अनन्तर धातुके टिरूप इव्को ऊकार करनेसे स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । सूची ॥

शमेर्बः ॥ १०२१ ॥ शमु । शम्बः ॥

भाषा–शमुधातुसे बप्रत्यय होय । उदाहरण–'शमु उपशमे' धातुसे बप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । शम्बः ॥

उल्बादयः ॥ १०२२ ॥ उच समवाये । उल्बः । शुल्बम् । स्था । स्तंबः । स्तबकः ॥

भाषा–उल्ब आदिक बप्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण–'उच समवाये' धातुसे बप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । उल्बः । 'शुच शोके' धातुका । शुल्बम् । 'ष्ठा गतिनिवृत्तौ' धातुका । स्तम्बः । स्तबकः ॥

शाशपिभ्यां दः ॥ १०२३ ॥ शादः । शब्दः ॥

भाषा–शो, शप् इन धातुओंसे दप्रत्यय होय । उदाहरण–'शो तनूकरणे' धातुसे दप्रत्यय करनेपर 'सन्ध्यक्षराणामानपि' इसकर आकार किया तब सिद्ध हुआ । शादः । 'शप् आक्रोशे' धातुसे दप्रत्यय करनेपर 'झबे जबाः' इसकर पकारको बकार किया तब सिद्ध हुआ । शब्दः ॥

अब्दादयः ॥ १०२४ ॥ अवतीत्यब्दः । कुन्दः ॥

भाषा–अब्द आदिक दप्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण–'अव रक्षणे' धातुसे दप्रत्यय करनेपर वकारको बकार निपातसे किया तब सिद्ध हुआ । अब्दः । 'कु शब्दे' धातुका । कुन्दः ॥

वलिमलितनिभ्यः कयः ॥ १०२५ ॥ वलयम् । मलयः । तनयः ॥

भाषा–वल, मल, तन् इन धातुओंसे कयप्रत्यय होय प्रत्ययमें ककार गुणनि-

षेषके अर्थ है। उदाहरण-' मल संवरणे, मल धारणे, तनु विस्तारे ' इन धातुओंसे कम्प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुए । मल्यम् । मल्ल्यः । तनयः ॥

हृञो दुक् च ॥ १०२६ ॥ हरतीति हृदयम् ॥

भाषा-हृञ्धातुसे कयमत्यय होय और धातुको दुक् आगम होय । उदाहरण-' हृञ् हरणे ' धातुसे कयमत्यय करनेके अनन्तर धातुको दुक् आगम किया ' उपधाया लघो' इसकर गुण नहीं हुआ क्योंकि परे कित्प्रत्यय विद्यमान है तब सिद्ध हुआ । हृदयम् ॥

मिनोतेरु ॥ १०२७ ॥ मेरु ॥

भाषा-डुमिञ्धातुसे रुमत्यय होय । उदाहरण-' डुमिञ् प्रक्षेपे ' धातुसे रुप्रत्यय करनेपर धातुसे गुण किया तब सिद्ध हुआ । मेरुः ॥

जन्वादय ॥ १०२८ ॥ जत्रुः । अश्रुः । रुरुः । शातयतीति शत्रु ॥

भाषा-जत्रु आदिक रुमत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण-' जनी प्रादुर्भावे ' धातुसे रुप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । जत्रुः । ' अशूङ् व्याप्तौ ' धातुका । अश्रुः । ' रु शब्दे ' धातुका । रुरुः । णिप्रत्ययान्त ' शदॢ शातने ' धातुका । शत्रुः ॥

कुसेरुम्भोमेदेताः ॥१०२९॥ कुसुम्भम् । कुसुमम् । कुसीदम् । कुसित ॥

भाषा-कुस धातुसे उम्भ, उम, ईद, इत यह चार प्रत्यय होंय । उदाहरण-' कुस श्लेषणे ' धातुसे उम्भ, उम, ईद, इत यह प्रत्यय करनेपर निपातसे गुण नहीं हुआ तब क्रमसे सिद्ध हुए रूप मूलस्थ जानने ॥

तण्डुलादयः ॥ १०३० ॥ तड आघाते । तण्डुलाः । अकि लक्षणे । अङ्कुश । चप । चपालः । पल्वलम् । धिषुणा । धिष्ण्यम् । शल्यम् ॥

भाषा-तण्डुल आदिक शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण-' तड आघाते ' धातुका निपातसे सिद्ध हुआ । तण्डुलाः । अकिधातुका । अंकुशः । ' चप भक्षणे ' धातुका । चषालः । ' पा पाने ' धातुका । पल्वलम् । ' ञिधृषा प्रागल्भ्ये ' धातुका । धिष्ण्यम् । ' शल गतौ ' धातुका । शल्यम् ॥

मूल्शल्पविभ्य क्लः ॥ १०३१ ॥ मूलम् । शल्कः । अम्लः । अवि गतौ । अम्लः ॥

भाषा–मूङ्, शक्ल, अम, अवि इन धातुओंसे क्तप्रत्यय होय प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण–' मूङ् बन्धने, शक्ल शक्तौ, अम रोगे, अवि गतौ ' इन धातुओंसे क्तप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । मूलम् । शक्लः । अम्लः । अंव्लः ॥

माद्भ्यो यः ॥ १०३२ ॥ माया । छाया । सस्यम् । षुञ् । सव्यम् ॥

भाषा· मा आदिक धातुओंसे यप्रत्यय होय । उदाहरण–' मा माने ' धातुसे यप्रत्यय करनेपर स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । माया । ' छो छेदने ' धातुसे यप्रत्यय करनेपर ओकारको आकार किया तब सिद्ध हुआ । छाया । ' षस स्वप्ने । धातुका । सस्यम् । ' षुञ् अभिषवे ' धातुका । सव्यम् ॥

जनेर्यक् ॥ १०३३ ॥ जाया । जन्यम् ॥

भाषा––जनीधातुसे यक्प्रत्यय होय । उदाहरण––' जनी प्रादुर्भावे ' धातुसे यक्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' जनसनखनामात्वमनिटि से क्ङिति झसे हे च कौ, यादौ क्ङिति वा ' इसकर एक जगह आकार किया तब स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । जाया । और एक जगह जहां आकार नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । जन्यम् ॥

अघ्न्यादयः ॥ १०३४ ॥ हन् । अघ्न्या । कनी दीप्तौ । कन्या । वन्ध्या ॥

भाषा–अघ्न्या आदिक यक्प्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण––' हन हिंसागत्योः ' धातुसे यक्प्रत्यय करनेपर स्त्रीलिंगमें निपातसे सिद्ध हुआ अघ्न्या । ' कनी दीप्तौ ' धातुका । कन्या । ' बंध बन्धने ' धातुका । वन्ध्या ॥

अर्त्यादिभ्यो वन् ॥ १०३५ ॥ अर्वा । पॄ । पर्वा ॥

भाषा–ऋ आदिक धातुओंसे वन्प्रत्यय होय । उदाहरण–' ऋ गतौ ' धातुसे वन्प्रत्यय करनेपर रूप हुआ अर्वन् । नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । अर्वा । ' पॄ पालनपूरणयोः ' धातुसे वन्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । पर्वा ॥

प्याध्योस्सम्प्रसारणम् ॥ १०३६ ॥ प्यैङ् ध्यैङ् वृद्धौ । पीवा । धीवा ॥

भाषा–ध्यैङ्, प्यैङ् इन धातुओंसे वन्प्रत्यय होय और इन धातुओंको संप्रसारण होय वन्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–' प्यैङ् वृद्धौ ' धातुसे वन्प्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको संप्रसारण ईकार करनेपर रूप हुआ पीवन् । नामसंज्ञामें । पीवा । इसी प्रकार ' ध्यैङ् चिन्तायाम् ' धातुका । धीवा ॥

अदेर्धश्च ॥ १०३७ ॥ अध्वा ॥

भाषा–अदधातुसे वन्प्रत्यय होय और दकारको धकार होय । उदाहरण–

* अद् भक्षणे ' धातुसे वन्प्रत्यय करनेके अनन्तर दकारको धकार किया तब रूप हुआ अध्वन् । नामसञ्ज्ञामें । अध्वा ॥

धातोरिः ॥ १०३८ ॥ यजिः । यट वेष्टने । यटि । मनि । योधि । हरिः । सर्चिः ॥

भाषा—धातुसे इप्रत्यय होय । उदाहरण—' यज देवपूजादौ ' धातुसे इप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । यजि । शेष रूप धातुके अनुसार इप्रत्ययान्त जानने ॥

नाम्युपधात्किः ॥ १०३९ ॥ कृपिः । ऋपिः । शुचिः । लिपिः । तुल निष्कर्षे । तुलिः ॥

भाषा—नामिसंज्ञक स्वर है उपधारूप जिस धातुका उससे किप्रत्यय होय। प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण—' कृप विलेखने ' धातुमें नामिसंज्ञक स्वर ऋकार उपधारूप है इस कारण कृपधातुसे किप्रत्यय किया प्रत्ययको कित होनेसे गुण नहीं हुआ तब सिद्ध हुआ । कृपिः । ' ऋषी गतौ ' धातुसे किप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । ऋषिः । ' शुच शोके ' धातुका । शुचिः । ' लिप उपदेहे ' धातुका । लिपि । तुलधातुका । तुलिः ॥

क्रमितमिशतिस्तम्भामत इच्च ॥ १०४० ॥ क्रिमि । तिमिः । शिति । स्तिमि ॥

भाषा—क्रमु, तमु, शत, स्तम्भ इन धातुओंसे किप्रत्यय होय और इन धातुओंके अकारको इकार होय । उदाहरण— क्रमु पादविक्षेपे ' धातुसे किप्रत्यय कर, नेके अनन्तर अकारको इकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । क्रिमि । ' तमु काङ्क्षायाम् धातुसे किप्रत्यय करनेपर अकारको इकार किया तब सिद्ध हुआ । तिमिः । शत सौत्र और स्तम्भ सौत्र धातुसे किप्रत्यय करनेके अनन्तर अकारको इकार किया पश्चात् ' नो लोपः ' इसकर नकारका लोप किया तब सिद्ध हुआ । स्तिमिः ॥

मनेरत उच्च ॥ १०४१ ॥ मुनिः ॥

भाषा—मनधातुसे किप्रत्यय होय और धातुके अकारको उकार होय । उदाहरण—' मन ज्ञाने ' धातुसे किप्रत्यय करनेके अनन्तर अकारको उकार किया तब सिद्ध हुआ । मुनि ॥

वर्णेर्वलिश्च ॥ १०४२ ॥ वर्ण वर्णने सौत्र ॥ वलि ॥

भाषा—वर्णधातुसे किप्रत्यय होय और धातुको वल आदेश होय । उदाहरण— ' वर्ण वर्णने ' धातुसे किप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको वल आदेश किया तब सिद्ध हुआ । वलिः ॥

वपादेरिञ् ॥ १०४३ ॥ वापिः । राजिः । वारिः ॥

भाषा–टुवप् आदिक धातुओंसे इञ्प्रत्यय होय । उदाहरण–' टुवप् बीजतंतु-सन्ताने ' धातुसे इञ्प्रत्यय करनेपर धातुके उपधारूप अकारको ' अत उपधायाः ' इसकर वृद्धि किया तब सिद्ध हुआ । वापिः । ' राजृ दीप्तौ ' धातुका । राजिः । ' वृञ् वरणे ' णिप्रत्ययान्त धातुसे इञ्प्रत्यय करनेपर ' णेः ' इसकर णिप्रत्ययका लोप हुआ तब सिद्ध हुआ । वारिः ॥

नहो भः ॥ १०४४ ॥ नाभिः । जनिः । आजिः । आतिः ॥

भाषा–नहधातुके हकारको भकार होय इञ्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण–' णह बन्धने ' धातुसे इञ्प्रत्यय करनक अनन्तर ' अत उपधायाः ' इसकर वृद्धि किया पश्चात् हकारको भकार करनेसे सिद्ध हुआ । नाभिः । ' जनी प्रादुर्भावे ' धातुसे इञ्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' जनिवध्योर्न वृद्धिः ' इसकर वृद्धि नहीं हुई तब सिद्ध हुआ । जनिः । ' अज गतौ क्षेपणे च, अत सातत्यगमने ' इन धातुओंसे इञ्प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुए । आजिः । आतिः ॥

अशेरुट् ॥ १०४५ ॥ राशिः ॥

भाषा–अशूङ्धातुसे इञ्प्रत्यय होय और धातुको रुट् आगम होय । उदाहरण–' अशूङ् व्याप्तौ ' धातुसे इञ्प्रत्यय करनेके अनन्तर अकारको आकार वृद्धि किया पश्चात् धातुको रुट् आगम किया तब सिद्ध हुआ । राशिः ॥

वातेर्डित् ॥ १०४६ ॥ विः ॥

भाषा–वाधातुसे इञ्प्रत्यय डित्संज्ञक होय इदाहरण–' वा गतिगन्धनयोः ' धातुसे इञ्प्रत्यय डित्संज्ञक करनेपर ' डिति टेः ' इसकर टिका लोप किया तब सिद्ध हुआ । विः ॥

नीव्यादयः ॥ १०४७॥ निपूर्वो व्येञ् । नीविः । प्रहिः । समानं ख्यायते जनैरिति सखा ॥

भाषा--नीवि आदिक डिप्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण--निउपसर्गपूर्व ' व्येञ् संवरणे ' धातुसे डिप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । नीविः । प्रपूर्व ' हृञ् हरणे ' धातुसे डिप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । प्रहिः । सहपूर्व ' ख्या प्रकथने ' धातुसे डिप्रत्यय करनेपर निपातसे ' सहादेः सादिः ' इसकर समानको स आदेश करनेपर रूप सिद्ध हुआ सखि । नामसंज्ञामें । सखा ॥

आङ्पूर्वौ श्रीहनी ॥ १०४८॥ अश्रिः । अहिः ॥

भाषा--आङ्उपसर्ग पूर्व श्रिञ्, हन् इन धातुओंसे डिप्रत्यय होय और निपा-

इससे पूर्व उपसर्ग आङ्को ह्रस्व होय। उदाहरण-आङ्पूर्व 'श्रिञ् सेवायाम्' और आङ्पूर्व 'हन् हिंसागत्योः' इन धातुओंसे डिप्रत्यय किया 'डिति टेः' इस कर टिका लोप किया फिर निपातसे आङ्उपसर्गको ह्रस्व किया तब सिद्ध हुआ। अश्रिः। अहिः॥

ऋादे किः ॥ १०४९ ॥ कॄ। किरि। गॄ गिरि। पॄ। पुरिः॥

भाषा-ॠ आदिक धातुओंसे किप्रत्यय होय प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है। उदाहरण-'कॄ विक्षेपे' धातुसे किप्रत्यय करनेपर 'ऋत इर्' इसकर इर् करनेसे सिद्ध हुआ। किरि। इसी प्रकार 'गॄ निगरणे' धातुका। गिरिः। 'पॄ पालनादौ' धातुका। पुरिः॥

मन् धातो ॥ १०५० ॥ कर्म्म। चर्म्म। भस भर्त्सनदीप्त्योः। भस्म। जन्म। छद्म। सुशर्मा॥

भाषा-धातुसे मन्प्रत्यय होय। उदाहरण-'डुकृञ् करणे' धातुसे मन्प्रत्यय करनेपर धातुको गुण किया तब रूप हुआ कर्मन्। नामसंज्ञामें। कर्म। 'चर गत्यादौ' धातुका। चर्म। भसधातुका। भस्म। 'जनी प्रादुर्भावे' धातुका। जन्मन्। नामसंज्ञामें। जन्म। 'छद् अपवारणे' चुरादिधातुसे मन्प्रत्यय करनेपर 'णेः' इसकर णिप्रत्ययका लोप किया फिर 'इस्मन्त्रन्किषु छादेर्ह्रस्वः' इसकर ह्रस्व किया तब सिद्ध हुआ। छद्म। सुपूर्व 'शृङ् पालने' धातुका। सुशर्मा॥

बृंहेर्नस्य अ ॥ १०५१ ॥ ब्रह्म॥

भाषा-बृहिधातुसे मन्प्रत्यय होय और धातुके नकारका लोप होय। उदाहरण-'बृहि वृद्धौ' धातुसे मन्प्रत्यय करनेपर 'इदितो नुम्' इसकर जो कि नुम् आगम हुआ उसके नकारका लोप किया तब रूप सिद्ध हुआ ब्रह्मन्। नामसंज्ञामें। ब्रह्म॥

नामादय ॥ १०५२ ॥ म्ना। नाम। षिञ्। सीमा। व्येञ्। व्योम। रु। रोम। पै शोषणे। पाप्मा। वेमा। अतेर्मनिण्। आत्मा॥

भाषा-नामन् आदिक मन्प्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं। उदाहरण-'म्ना अभ्यासे' धातुसे मन्प्रत्यय करनेपर निपातसे रूप हुआ नामन्। नामसंज्ञामें। नाम। 'षिञ् बन्धने' धातुका सीमन्। नामसंज्ञामें। सीमा। 'व्येञ् संवरणे' धातुका व्योमन् नामसंज्ञामें। व्योम। 'रु शब्दे' धातुका रोमन्। नामसंज्ञामें। रोम। पैधातुका पाप्मन्। नामसंज्ञामें। पाप्मा। 'वेञ् तन्तुसन्ताने' धातुका वेमन्। नामसंज्ञामें वेमा। अतधातुसे मनिण्प्रत्यय होय प्रत्ययमें

णकार वृद्धिके अर्थ है इकार उच्चारणार्थ है। उदाहरण-' अत सातत्यगमने ' धातुसे मनिण्प्रत्यय करनेपर धातुको वृद्धि किया तब रूप हुआ आतमन् । नाम-संज्ञामें । आत्मा ॥

हनिमशिभ्यां सिकः ॥ १०५३ ॥ हंसिका । मश शब्दे । मक्षिका ॥

भाषा-हन्, मश इन धातुओंसे सिकप्रत्यय होय । उदाहरण-हन् हिंसा-गत्योः ' धातुसे सिकप्रत्यय करनेपर ' नश्चापदान्ते झसे ' इसकर अनुस्वार किया तब स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । हंसिका । ' मश शब्दे ' धातुसे सिकप्रत्यय करनेसे ' छशष० ' इसकर शकारको षकार कर पश्चात् ' षढोः० ' इसकर षकारको ककार किया फिर ' क्लिात्ष० ' इसकर सकारको षकार किया तब स्त्रीलिंगमे सिद्ध हुआ । मक्षिका ॥

कोररः ॥ १०५४ ॥ कवरः ॥

भाषा-कुधातुसे अरप्रत्यय होय । उदाहरण-' कु शब्दे ' धातुसे अरप्रत्यय करनेपर गुण किया पश्चात् ' ओ अव् ' इसकर ओकारको अव् किया तव सिद्ध हुआ । कवरः ॥

गिर उडः ॥ १०५५ ॥ गरुडः ॥

भाषा-गृधातुसे उडप्रत्यय होय । उदाहरण-' गृ निगरणे ' धातुसे उडप्र-त्यय करनेपर धातुको गुण किया तब सिद्ध हुआ । गरुडः ॥

इन्देः कमिर्नलोपश्च ॥ १०५६ ॥ इदम् ॥

भाषा-इदिधातुसे कमिप्रत्यय होय और नकारका लोप होय प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है और इकार उच्चारणार्थ है । उदाहरण-' इदि परमैश्वर्ये ' धातुसे कमुप्रत्यय करनेपर ' इदितो ' नुम् इसकर जो कि नुम् आगम हुआ उसका लोप किया तब सिद्ध हुआ । इदम् ॥

कायतेर्डिम् ॥ १०५७ ॥ किम् ॥

भाषा-कैधातुसे डिम्प्रत्यय होय प्रत्ययमें डकार टिलोपके अर्थ है । उदाह-रण-' कै शब्दे ' धातुसे डिम्प्रत्यय करनेपर ' डिति टेः ' इसकर टिका लोप किया तब सिद्ध हुआ । किम् ॥

धातोस्त्रः ॥ १०५८ ॥ वस्त्रम् । अस्त्रम् । छत्रम् ॥

भाषा-धातुसे त्रप्रत्यय होय । उदाहरण-' वस निवासे ' धातुसे त्रप्रत्यय कर-नेपर सिद्ध हुआ । वस्त्रम् । ' असु क्षेपणे ' धातुका । अस्त्रम् । ' छद अपवारणे ' चुरादिधातुसे त्रप्रत्यय करनेपर ' णेः ' इसकर णिका लोप किया पश्चात् ' इस्मन्-

अक्षिपु छावेर्इस्व' इसकर ह्रस्व किया पश्चात 'स्तो चपा०' इसकर दकारको तकार किया तब सिद्ध हुआ। छत्रम् ॥

सिविमुच्योष्टेरू ॥ १०५९ ॥ सिवु । सूत्रम् । मुच्लृ । मूत्रम् ॥

भाषा-सिवु, मुच्लृ इन धातुओंसे त्रप्रत्यय होय और इन धातुओंके टिको ऊकार होय। उदाहरण-' षिवु तन्तुसन्ताने ' धातुसे त्रप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुके टिसंज्ञा इवुको ऊकार करनेपर सिद्ध हुआ । सूत्रम् । 'मुच्लृ मोचने' धातुसे त्रप्रत्यय करनेपर धातुके टिसंज्ञा उचूको ऊकार करनेसे सिद्ध हुआ । मूत्रम् ।

अमादेः क्त ॥ १०६० ॥ आंत्रम् । चित्रम् । मित्रम् । वस्त्र । उष्ट्र ॥

भाषा-अम आदिक धातुओंसे क्तप्रत्यय होय प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है। उदाहरण-' अम रोगे ' धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर ' अमान्तस्योपधाया दीर्घः झी झसादौ क्ङिति हे च ' इसकर उपधाअकारको दीर्घ किया पश्चात मकारको अनुस्वार किया तब सिद्ध हुआ । आंत्रम् । चिञ् चयने ' धातुका । चित्रम् । 'ञिमिदा स्नेहने' धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर ' स्तो चपा० ' इसकर दकारको तकार किया तब सिद्ध हुआ। मित्रम् । ' उष दाहे ' धातुसे क्तप्रत्यय किया तब ' ष्टुभि' ष्टु ' इसकर तकारको टकार किया तब सिद्ध हुआ । उष्ट्रम् ॥

पुत्रो ह्रस्वश्च ॥ १०६१ ॥ पुत्र' ॥

भाषा-पूञ्धातुसे त्रप्रत्यय होय और धातुको ह्रस्व होय । उदाहरण-' पूञ् पवने ' धातुसे त्रप्रत्यय करनेपर धातुको ह्रस्व किया तब सिद्ध हुआ । पुत्र ॥

स्त्यायतेड्रट् ॥ १०६२ ॥ स्त्री ॥

भाषा-स्त्यै धातुसे ड्रट्प्रत्यय होय प्रत्ययमें डकार टिलोपके अर्थ और टकार ईप्प्रत्ययके अर्थ है । उदाहरण-' स्त्यै शब्दसंघातयो ' इस धातुसे ड्रट्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' डिति टेः ' इसकर टिका लोप किया तब स्त्रीलिंगमें 'टिड्ढ' इसकर ईप्प्रत्यय करनेसे रूप सिद्ध हुआ । स्त्री ॥

गमेरा ॥ १०६३ ॥ गात्रम् ॥

भाषा-गम्लृ धातुसे त्रप्रत्यय होय और धातुके टिको आकार होय । उदाहरण-' गम्लृ गतौ ' धातुसे त्रप्रत्यय करनेपर धातुके टि अमूको आकार करनेसे सिद्ध हुआ । गात्रम् ॥

चरादेरित्रञ् ॥ १०६४ ॥ चारित्रम् । पावित्रम् ।

भाषा-चर आदिक धातुओंसे इत्रञ्प्रत्यय होय प्रत्ययमें अकार वृद्धिके अर्थ है । उदाहरण-' चर गतौ ' धातुसे इत्रञ्प्रत्यय करनेपर ' अत उपधायाः ' इसकर

धातुको शिर आदेश किया फिर गुण तौ हुआ नहीं क्योंकि कित्संज्ञक प्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ । शिरः ॥

अर्तेरुरः ॥ १०७८ ॥ उरः ॥

भाषा—ऋधातुसे कित्संज्ञक असूप्रत्यय होय और धातुको उर् आदेश होय । उदाहरण—' ऋ गतौ ' धातुसे कित्संज्ञक असूप्रत्यय किया और धातुको उर् आदेश किया तब सिद्ध हुआ । उरः ॥

व्याधौ शुट् ॥ १०७९ ॥ अर्शः ॥

भाषा—व्याधिअर्थमें ऋधातुसे असूप्रत्यय होय और प्रत्ययको शुट् आगम होय । उदाहरण—व्याधिअर्थमें ' ऋ गतौ ' धातुसे असूप्रत्यय करनेपर प्रत्ययको शुट् आगम किया पश्चात् धातुको गुण किया तब सिद्ध हुआ । अर्शः ॥

उदके नुट् ॥ १०८० ॥ अर्णः ॥

भाषा—उदकअर्थमें ऋधातुसे असूप्रत्यय होय और प्रत्ययको नुट् आगम होय । उदाहरण—' ऋ गतौ ' धातुसे असूप्रत्यय नुट् आगम कर धातुको गुण किया तब सिद्ध हुआ । अर्णः ॥

इण आगसि ॥ १०८१ ॥ एनः ॥

भाषा—आगस् नाम अपराधअर्थमें इण्धातुसे असूप्रत्यय होय और प्रत्ययके नुट् आगम होय । उदाहरण—' इण् गतौ ' धातुसे असूप्रत्ययको नुट् आगम कर धातुको गुण किया तब सिद्ध हुआ । एनः ॥

स्रुरीभ्यां तुट् च ॥ १०८२ ॥ स्रोतः । रेतः ॥

भाषा— , री इन धातुओंसे असूप्रत्यय होय और प्रत्ययको तुट् आगम होय। उदाहरण—' स्रु गतौ, रीङ् श्रवणे ' इन धातुओंसे असूप्रत्यय और प्रत्ययको तुट् आगम किया तब सिद्ध हुआ । स्रोतः । रेतः ॥

पातेरुदके थुट् ॥ १०८३ ॥ पाथः ॥

भाषा—पाधातुसे असूप्रत्यय होय उदकअर्थमें और प्रत्ययको थुट् आगम होय । उदाहरण—' पा रक्षणे ' धातुसे असूप्रत्ययको थुट् आगम करनेपर सिद्ध हुआ । पाथः ॥

अदेर्भक्ते धो नुम् च ॥ १०८४ ॥ अन्धः ॥

भाषा—भक्तअर्थमें अद्धातुसे असूप्रत्यय होय और धातुके दकारको धकार और नुम् आगम होय । उदाहरण—'अद् भक्षणे ' धातुसे असूप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको नुम् आगम किया और दकारका धकार किया तब सिद्ध हुआ । अन्धः ।

भातुका । अगास्ति । अगपूर्व ' असु क्षेपणे ' धातुसे तिप्रत्यय किया । फिर ' इगा देरीपादी टेर्लोप ' इसकर टिका लोप किया तब सिद्ध हुआ । अगास्ति ॥

वौ तसे ॥ १०७१ ॥ तसु उपक्षये । वितस्ति । पत्तिः ॥

भाषा-विउपसर्ग पूर्व हुए संते तसुधातुसे तिप्रत्यय होय । उदाहरण-विउपसर्ग पूर्व ' तसु उपक्षये ' धातुसे तिप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । वितस्तिः । ' पद गतौ ' धातुका । पत्तिः ॥

दृणातेर्हस्व ॥ १०७२ ॥ दृति ॥

भाषा-दृधातुसे तिप्रत्यय होय और धातुको ह्रस्व होय । उदाहरण-' दृ विदारणे ' धातुसे तिप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको ह्रस्व किया तब सिद्ध हुआ । दृतिः ॥

कृतॄकृपिभ्य कीट ॥ १०७३ ॥ किरीटम् । तिरीटम् । कृपीटम् ॥

भाषा-कृ, तॄ, कृपू इन धातुओंसे कीट्प्रत्यय होय प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण-' कृ विक्षेपे ' धातुसे कीट्प्रत्यय करनेपर प्रत्ययको कित् होनेसे गुण नहीं हुआ तब ' ऋत इर् ' इसकर सिद्ध हुआ । किरीटम् । ' तॄ प्लवनसंतरणयोः धातुका । तिरीटम् । ' कृपू सामर्थ्ये ' धातुका । कृपीटम् ॥

धातोरसु ॥ १०७४ ॥ चेत । सरः । पयः ॥

भाषा-धातुसे असुप्रत्यय होय प्रत्ययमें उकार उच्चारणार्थ है । उदाहरण-' चिती संज्ञाने ' धातुसे असुप्रत्यय करनेके अनन्तर ' उपधाया लघो ' इसकर गुण किया तब रूप हुआ चेतस् । नामसंज्ञामें । चेतः । ' सृ गतौ ' धातुका । सरः । ' पीङ् पाने ' धातुका । पयः ॥

अशेर्युट् स्तुतौ ॥ १०७५ ॥ स्तूयते इति यशः ॥

भाषा-अशूङ्धातुसे स्तुतिअर्थमें असुप्रत्यय होय और धातुको युट् आगम होय । उदाहरण-' अशूङ् व्याप्तौ ' धातुसे स्तुतिअर्थमें असुप्रत्यय किया और धातुको युट् आगम किया तब रूप सिद्ध हुआ । यशः ॥

उब्जेर्बले बलोप ॥ १०७६ ॥ ओज ॥

भाषा-उब्जधातुसे बलअर्थमें असुप्रत्यय होय और बकारका लोप होय । उदाहरण- उब्ज आर्जवे ' धातुसे असुप्रत्यय किया और बकारका लोप किया पश्चात् ' उपधाया लघोः इसकर उकारको गुण किया तब सिद्ध हुआ । ओजः ॥

श्रिञ्शिरः किञ्च ॥ १०७७ ॥ शिरः ॥

भाषा-श्रिञ्धातुसे असुप्रत्यय कित्संज्ञक होय और धातुको शिर आदेश होय । उदाहरण-' श्रिञ् सेवायाम् धातुसे असुप्रत्यय करनेके अनन्तर श्रिञ्

धातुको शिर आदेश किया फिर गुण तौ हुआ नहीं क्योंकि कित्संज्ञक प्रत्यय परे विद्यमान है तव रूप सिद्ध हुआ । शिरः ॥

अर्तेरुरः ॥ १०७८ ॥ उरः ॥

भाषा—ऋधातुसे कित्संज्ञक असुप्रत्यय होय और धातुको उर् आदेश होय । उदाहरण—' ऋ गतौ ' धातुसे कित्संज्ञक असुप्रत्यय किया और धातुको उर् आदेश किया तव सिद्ध हुआ । उरः ॥

व्याधौ शुट् ॥ १०७९ ॥ अर्शः ॥

भाषा—व्याधिअर्थमें ऋधातुसे असुप्रत्यय होय और प्रत्ययको शुट् आगम होय । उदाहरण—व्याधिअर्थमें ' ऋ गतौ ' धातुसे असुप्रत्यय करनेपर प्रत्ययको शुट् आगम किया पश्चात् धातुको गुण किया तव सिद्ध हुआ । अर्शः ॥

उदके नुट् ॥ १०८० ॥ अर्णः ॥

भाषा—उदकअर्थमें ऋधातुसे असुप्रत्यय होय और प्रत्ययको नुट् आगम होय । उदाहरण—' ऋ गतौ ' धातुसे असुप्रत्यय नुट् आगम कर धातुको गुण किया तव सिद्ध हुआ । अर्णः ॥

इण आगसि ॥ १०८१ ॥ एनः ॥

भाषा—आगस् नाम अपराधअर्थमें इण्धातुसे असुप्रत्यय होय और प्रत्ययके नुट् आगम होय । उदाहरण—' इण् गतौ ' धातुसे असुप्रत्ययको नुट् आगम कर धातुको गुण किया तव सिद्ध हुआ । एनः ॥

स्रुरीभ्यां तुट् च ॥ १०८२ ॥ स्रोतः । रेतः ॥

भाषा— , री इन धातुओंसे असुप्रत्यय होय और प्रत्ययको तुट् आगम होय । उदाहरण—' स्रु गतौ, रीङ् श्रवणे ' इन धातुओंसे असुप्रत्यय और प्रत्ययको तुट् आगम किया तव सिद्ध हुआ । स्रोतः । रेतः ॥

पातेरुदके थुट् ॥ १०८३ ॥ पाथः ॥

भाषा—पाधातुसे असुप्रत्यय होय उदकअर्थमें और प्रत्ययको थुट् आगम होय । उदाहरण—' पा रक्षणे ' धातुसे असुप्रत्ययको थुट् आगम करनेपर सिद्ध हुआ । पाथः ॥

अदेर्भक्ते धो नुम् च ॥ १०८४ ॥ अन्धः ॥

भाषा—भक्तअर्थमें अद्धातुसे असुप्रत्यय होय और धातुके दकारको धकार और नुम् आगम होय । उदाहरण—' अद् भक्षणे ' धातुसे असुप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको नुम् आगम किया और दकारका धकार किया तव सिद्ध हुआ । अन्धः ।

आप उदके ह्रस्वो नुम्भौ ॥ १०८५ ॥ अम्भ ॥

भाषा—उदकअर्थमें आप्लृधातुसे असुप्रत्यय होय और धातुके पकारको मकार और नुम् आगम होय और धातुको ह्रस्व होय । उदाहरण—आप्लृधातुसे असुप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको नुम् आगम और पकारको मकार किया पश्चात् धातुके आदिस्वर आकारको ह्रस्व किया तब सिद्ध हुआ । अम्भ ॥

नहेर्दिवि भ ॥ १०८६ ॥ नभ ॥

भाषा—दिव् नाम आकाशअर्थमें नहधातुसे असुप्रत्यय होय और हकारको भकार होय । उदाहरण—' णह बन्धने ' धातुसे असुप्रत्यय करनेके अनन्तर हकारको भकार किया तब सिद्ध हुआ । नभः ॥

इण आग अपराधे ॥ १०८७ ॥ आग ॥

भाषा—अपराधअर्थमें इण्धातुको आग् आदेश होय और असुप्रत्यय होय । उदाहरण—'इण् गतौ 'धातुसे अपराधअर्थमें असुप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको आग् आदेश किया तब सिद्ध हुआ । आग ॥

अमेर्हुक् ॥ १०८८ ॥ अंह ॥

भाषा—अम्धातुसे असुप्रत्यय होय और धातुको हुक् आगम होय । उदाहरण—' अम रोगे ' धातुसे असुप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको हुक् आगम किया तब सिद्ध हुआ । अंह ॥

रमेश्च ॥ १०८९ ॥ रंह । देशे ह च । रमतेऽस्मिन् रहः ॥

भाषा—रमुधातुसे असुप्रत्यय होय और धातुको हुक् आगम होय । उदाहरण—' रमु क्रीडायाम् ' धातुसे असुप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको हुक् आगम किया तब सिद्ध हुआ । रंह । देश वाच्य हुए संते रमुधातुसे असुप्रत्यय होय और धातुके मकारको हकार आदेश होय । उदाहरण—देश वाच्य होनेपर ' रमु क्रीडायाम् ' धातुसे असुप्रत्यय करनेपर धातुके मकारको हकार आदेश किया तब सिद्ध हुआ । रह ॥

रञ्ज्यादेः कित् ॥ १०९० ॥ रज । भुव ॥

भाषा—रञ्ज आदिक धातुओंसे कित्संज्ञक असुप्रत्यय होय । उदाहरण—'रञ्ज रागे ' धातुसे असुप्रत्यय करनेपर ' नो लोपः ' इसकर नकारका लोप किया क्यों, कि कित्संज्ञक असुप्रत्यय परे विद्यमान है तब सिद्ध हुआ । रजः । ' भू सत्तायाम् ' धातुसे असुप्रत्यय करनेपर गुण नहीं हुआ नहीं क्योंकि कित्संज्ञक प्रत्यय परे विद्यमान है तब ' भुवावो ' इसकर उव् करनेपर सिद्ध हुआ । भुव ॥

वसेर्णित् ॥ १०९१ ॥ वासः ॥

भाषा-वसधातुसे असप्रत्यय णित्संज्ञक होय । उदाहरण-' वस निवासे ' धातुसे णित्संज्ञक अस्प्रत्यय करनेपर ' अत उपधायाः ' इसकरके वृद्धि की तब सिद्ध हुआ । वासः ॥

चंदेरादेश्च छः ॥ १०९२ ॥ छन्दः ॥

भाषा-चदिधातुसे अस्प्रत्यय होय और धातुके आदिवर्णको छकार होय । उदाहरण-' चदि आह्लादने ' धातुसे अस्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' इदितो नुम् ' इसकर नुम् आगम किया फिर आदिवर्ण चकारको छकार किया तब सिद्ध हुआ । छन्दः ॥

वचादेस्सुट् ॥ १०९३ ॥ वक्षः । पक्षः ॥

भाषा-वच आदिक धातुओंसे अस्प्रत्यय होय और प्रत्ययको सुट् आगम होय । उदाहरण-' वच परिभाषणे ' धातुसे अस्प्रत्ययको सुट् आगम करनेपर रूप स्थित हुआ वच्-सस् फिर ' चोः कुः, किलातषः० ' इनकर सिद्ध हुआ । वक्षः । ' डुपचष् पाके ' धातुसे असप्रत्ययको सुट् आगम करनेसे सिद्ध हुआ । पक्षः ॥

नञि हन एह च ॥ १०९४ ॥ अनेहाः । अनेहसौ ॥

भाषा-नञ्अव्यय पूर्व हुए संते हन्धातुसे असप्रत्यय होय और धातुको एह आदेश होय । उदाहरण-नञ्अव्यय पूर्व होनेपर ' हन् हिंसागत्योः ' धातुसे अस् प्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको एह आदेश किया ' अन्स्वरे ' इसकर अन् आदेश किया तब सिद्ध हुआ । अनेहाः । द्विवचनमें । अनेहसौ ॥

विधाञो वेध च ॥ १०९५ ॥ वेधाः ॥

भाषा-विउपसर्गसहित धाञ्धातुको वेध आदेश होय अस्प्रत्यय परे हुए संते । उदाहरण-विउपसर्गसहित ' डुधाञ् धारणादौ ' धातुको वेध आदेश किया क्योंकि असप्रत्यय परे विद्यमान है तब सिद्ध हुआ । वेधाः ॥

चन्द्रे माङो डित् ॥ १०९६ ॥ चन्द्रमाः ॥

भाषा-चन्द्रशब्द उपपद हुए संते माङ्धातुसे अस्प्रत्यय डित्संज्ञक होय । उदाहरण-चंद्रशब्द उपपद होनेसे ' माङ् माने ' धातुसे डित्संज्ञक अस्प्रत्यय करनेपर ' डिति टेः ' इसकर टिका लोप किया तब रूप हुआ चन्द्रमस् । नामसंज्ञामें । चन्द्रमाः ॥

पुरसि धाञः ॥ १०९७ ॥ पुरोधाः ॥

भाषा-पुरस्शब्द उपपद हुए संते धाञ्धातुसे असप्रत्यय डित्संज्ञक होय ।

उदाहरण—पुरस्शब्द उपपद होनेसे धाञ् धातुसे डित् असप्रत्यय करनेपर रूप हुआ पुरोधस् नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ। पुरोधा॰ ॥

उपः कित् ॥ १०९८ ॥ उपः ॥

भाषा—उपधातुसे कित्संज्ञक असप्रत्यय होय। उदाहरण—' उप दाहे ' धातुसे कित्संज्ञक असमत्यय करनेपर धातुको गुण नहीं हुआ क्योंकि कित्संज्ञक असप्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ। उप॰ ॥

दमेरुनसि॰ ॥ १०९९ ॥ दमुना॰ ॥

भाषा—दमुधातुसे उनसिप्रत्यय होय प्रत्ययमें इकार उच्चारणार्थ है। उदाहरण—' दमु उपशमे धातुसे ' उनसिप्रत्यय करनेपर रूप हुआ दमुनस्। नामसंज्ञामें। दमुना ॥

वशे कनसि ॥ ११०० ॥ उशना ॥

भाषा—वशधातुसे कनसिप्रत्यय होय। प्रत्ययमें ककार गुणनिषेध तथा संप्रसारणके अर्थ है इकार उच्चारणार्थ है।। उदाहरण—' वश कान्तौ ' धातुसे कनसिप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको संप्रसारण किया तब रूप हुआ उशनस्। नामसंज्ञामें। उशना॰॥

अगिरादय॰ ॥ ११०१ ॥ अगि। अङ्गिरा॰ ॥

भाषा—अगिरस आदिक असिप्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं। उदाहरण—' अगि गतौ ' धातुसे असप्रत्यय करनपर निपातसे सिद्ध हुआ अंगिरस्। नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ। अंगिरा॰ ॥

अप्पूर्वस्सर्त्तिः ११०२ ॥ अप्सराः ॥

भाषा—अप्पूर्व सृधातुसे असिप्रत्यय होय। उदाहरण—अप्पूर्व करनेपर ' सृ गतौ ' धातुसे असप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ अप्सरस्। नामसंज्ञामें। अप्सरा॰ ॥

पुरुपूर्वो रौति ॥ ११०३॥ पुरूरवा॰ ॥ इत्युणादौ चतुर्थ पाद ॥४॥

भाषा—पुरुपूर्व रुधातुमें असप्रत्यय करनेपर पुरूरवस् शब्द निपातसे सिद्ध होता है। उदाहरण—पुरुपूर्व 'रु शब्दे' धातुसे असप्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ। पुरूरवा॰ ॥ इत्युणादौ चतुर्थ पाद ॥ ४ ॥

अदिभुवो डुत॰ ॥ ११०४ ॥

भाषा—अदुअव्यय उपपद हुए सते भूधातुसे डुतप्रत्यय होय प्रत्ययमें डकार लोपके अर्थ है। उदाहरण—अदुअव्यय पूर्व होनेपर ' भू सत्तायाम् ' धातुसे डुत प्रत्यय करनेसे ' डिति टेः ' इसकर टिका लोप किया तब सिद्ध हुआ। अद्भुतम् ॥

गुधेरूमः ॥ ११०५ ॥ गोधूमः ॥

भाषा–गुधधातुसे ऊमप्रत्यय होय । उदाहरण–'गुध परिवेष्टने' धातुसे ऊमप्रत्यय करनेपर धातुको गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ । गोधूमः ॥

मसेरूरः ॥ ११०६ ॥ मसूरः ॥

भाषा–मसीधातुसे ऊरप्रत्यय होय । उदाहरण–'मसी परिणामे' धातुसे ऊरप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । मसूरः ॥

तृहेः क्नो हलोपः ॥ ११०७ ॥ तृणम् ॥

भाषा–तृहूधातुसे क्नप्रत्यय होय और हकारका लोप होय । प्रत्ययमें ककार गुण-निषेधके अर्थ है । उदाहरण–'तृहू हिंसायाम्' इस धातुसे क्नप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुके हकारका लोप किया फिर 'षुर्नो णो०' इसकर नकारको णकार किया तब सिद्ध हुआ । तृणम् ॥

दंसेष्टो न आ च ॥ ११०८ ॥ दासः ॥

भाषा–दसिधातुसे टप्रत्यय होय और धातुके नकारको आकार होय प्रत्ययमें टकार ईप्प्रत्ययके अर्थ है । उदाहरण–'दसि दंशनदर्शनयोः' धातुसे टप्रत्यय करनेके अनन्तर 'इदितो नुम्' इसकर नुम् आगम किया तब रूप स्थित हुआ दंस्+अ फिर नकारको आकार कर 'सवर्णे दीर्घः सह' इसकर रूप सिद्ध हुआ । दासः ॥

दंशेश्च ११०९ ॥ दाशः ॥

भाषा–दंशधातुसेभी टप्रत्यय होय और नकारको आकार होय । उदाहरण–'दंश दंशने' धातुसे टप्रत्यय करनेपर नकारको आकार किया तब सिद्ध हुआ । दाशः ॥

सौ रमेः क्तः सोर्दीर्घः ॥ १११० ॥ सूरतः ॥

भाषा–सुउपसर्ग उपपद हुए संते रमुधातुसे क्तप्रत्यय होय और सुउपसर्गको दीर्घ होय । उदाहरण–सुउपसर्गपूर्व 'रमु क्रीडायाम्' धातुसे क्तप्रत्यय करनेपर 'लोपस्त्वनुदात्ततनाम्' इसकर मकारका लोप किया फिर सुउपसर्गको दीर्घ किया तब सिद्ध हुआ । सूरतः ॥

पूञो यो णुक् ह्रस्वश्च ॥ ११११ ॥ पुण्यम् ॥

भाषा–पूञ्धातुसे यप्रत्यय होय और धातुको णुक् आगम तथा ह्रस्व होय । उदाहरण–'पूञ् पवने' धातुसे यप्रत्यय किया और धातुको ह्रस्व और णुक् आगम किया तब सिद्ध हुआ । पुण्यम् ॥

स्रंसतेश्शिर्यस्य कित्त्वं कुट् च ॥ १११२ ॥ शिक्यम् ॥

भाषा–स्रंसुधातुसे यप्रत्यय होय और धातुको शि आदेश होय और प्रत्य-

यको कुद् आगम तथा किद् भाव होय । उदाहरण-' भ्रशु अधःपतने ' धातुसे यमत्यय करनेपर धातुको शिआदेश कर प्रत्ययको कुद् आगम किया फिर यप्रत्ययके कित् होनेसे गुण नहीं हुआ तब सिद्ध हुआ । शिक्यम् ॥

अर्तेः क्युरुट् च ॥ ११११ ॥ उरणः ॥

भाषा-ऋधातुसे क्युप्रत्यय होय और धातुको उर् आदेश होय । उदाहरण-' ऋ गतौ ' धातुसे क्युप्रत्यय करनेपर ' युवोरनाकौ ' इसकर प्रत्ययको आनआदेश किया पश्चात् धातुको उर् आदेश किया तब सिद्ध हुआ । उरणः ॥

उदि दृणातेर लदो दलोपश्च ॥ १११४ ॥ उदरम् ॥

भाषा-उद्पूर्व हुए अते दृधातुसे अप्रत्यय होय । उद्के दकारका लोप होय । उदाहरण-उद्पूर्व ' दृ विदारणे ' धातुसे अप्रत्यय करनेके अनन्तर उद्के दकारका लोप किया पश्चात् गुण करनेसे सिद्ध हुआ । उदरम् ॥

स्नेर्मुट् कप्रत्ययः ॥ १११५ ॥ मुसम् ॥

भाषा-स्नुधातुसे कप्रत्यय होय और धातुको मुट् आगम होय । उदाहरण-' स्नु विदारणे ' धातुसे कप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको मुट् आगम किया फिर ' टिति टेः ' इसकर टिका लोप किया तब सिद्ध हुआ । मुसम् ॥

अमेः स ॥ १११६ ॥ असः ॥

भाषा-अमधातुसे सप्रत्यय होय । उदाहरण-' अम गतौ ' धातुसे सप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । अंसः ॥

मुहे सो मूर्च ॥ १११७ ॥ मूर्खः ॥

भाषा-मुहधातुसे खप्रत्यय होय और धातुको मूर् आदेश होय । उदाहरण-' मुह वैचित्ये ' धातुसे खप्रत्यय किया और धातुको मूर् आदेश किया तब सिद्ध हुआ । मूर्खः ॥

नहेर्हलोपश्च ॥ १११८ ॥ नस ॥

भाषा-नहधातुसे सप्रत्यय होय और धातुके हकारका लोप होय । उदाहरण-' णह बन्धने ' धातुसे सप्रत्यय करनेके अनन्तर हकारका लोप करनेसे सिद्ध हुआ । नसः ॥

शीङो ह्रस्वश्च ॥ १११९ ॥ शिखा ॥

भाषा-शीङ्धातुसे खप्रत्यय होय और धातुको ह्रस्व होय । उदाहरण-' शीङ् स्वप्ने ' धातुसे खप्रत्यय करनेपर धातुको ह्रस्व किया तब सिद्ध हुआ स्त्रीलिङ्गमें । शिखा ॥

माङ ऊखो मय च ॥ ११२० ॥ मयूखः ॥

भाषा–माङ्धातुसे ऊखप्रत्यय होय और धातुको मय् आदेश होय। उदाहरण–' माङ् माने ' धातुसे ऊखप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको मय् आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । मयूखः ॥

गले फो गस्योच्च ॥ ११२१ ॥ गुल्फः ॥

भाषा–गलधातुसे फप्रत्यय होय और गकारउत्तरवर्त्ती अकारको उकार होय। उदाहरण–' गल अदने ' धातुसे फप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुके अकारको उकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । गुल्फः ॥

स्पृशेश्शुश्वणौ पृ च ॥ ११२२ ॥ पर्शुः । पार्श्वः ॥

भाषा–स्पृशधातुसे शु, श्वण् यह प्रत्यय होय और धातुको पृ आदेश होय। उदाहरण–' स्पृश् स्पर्शने ' धातुसे शुप्रत्यय किया तहां पृ आदेश करनेपर गुण किया तब सिद्ध हुआ । पर्शुः । और जहां श्वण्प्रत्यय हुआ तहां स्पृधातुको पृ आदेश करनेपर ' धातोर्नामिनः ' इसकर वृद्धि की तब सिद्ध हुआ । पार्श्वः ॥

श्मनि श्रिञो डुन् ॥ ११२३ ॥ श्मन्शब्दो मुखवाची । श्मानं मुखं श्रयते श्मश्रुः ॥

भाषा–श्मन्शब्द उपपद हुए संते श्रिञ्धातुसे डुन्प्रत्यय होय । प्रत्ययमें डकार टिलोपके अर्थ है नकार उच्चारणार्थ है । उदाहरण–श्मन्शब्द पूर्व ' श्रिञ् सेवायाम् ' धातुसे डुन्प्रत्यय करनेपर ' डिति टेः ' इसकर टिका लोप किया तब सिद्ध हुआ । श्मश्रुः ॥

जनेरो जंघ च ॥ ११२४ ॥ जंघा ॥

भाषा–जनधातुसे अप्रत्यय और धातुको जंघ आदेश होय । उदाहरण–' जनी प्रादुर्भावे ' धातुसे अप्रत्यय करनेके अनन्तर जंघ आदेश किया तब स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । जंघा ॥

हन्तेः शरीरावयवे द्वे च ॥ ११२५ ॥ जघनम् ॥

भाषा–हन्धातुसे शरीरके अवयवार्थमें अप्रत्यय होय और धातुको द्वित्व होय। उदाहरण–' हन् हिंसागत्योः ' धातुसे शरीरके अवयवार्थमें अप्रत्यय करनेपर धातुको द्वित्व किया फिर ' पूर्वाद्धन्तेर्हस्य घः ' इसकर पर हकारको घकार किया तब सिद्ध हुआ । जघनम् ॥

क्लिशलस्य लोपश्च ॥ ११२६ ॥ केशः ॥

भाषा–क्लिशधातुसे अप्रत्यय होय और धातुके लकारका लोप होय।

यको कुट् आगम तथा कित् भाव होय । उदाहरण–' शंसु अधःपतने ' धातुसे यमत्यय करनेपर धातुको शिभादेश पर मत्ययको कुट् आगम किया फिर यमत्ययके कित् होनेसे गुण नहीं हुआ तब सिद्ध हुआ । शिक्यम् ॥

अर्तेर्न्युरुर् च ॥ १११३ ॥ उरण' ॥

भाषा–ऋधातुसे न्युमत्यय होय और धातुको उर् आदेश होय । उदाहरण–' ऋ गतौ ' धातुसे न्युमत्यय करनेपर ' युवोरनाकौ ' इसकर प्रत्ययको अन आदेश किया पश्चात धातुको उर् आदेश किया तब सिद्ध हुआ । उरणः ॥

उदि दृणातेर दलो दलोपश्च ॥ १११४ ॥ उदरम् ॥

भाषा–उद्पूर्व हुए संते दृधातुसे अमत्यय होय । उद्के दकारका लोप होय । उदाहरण–उद्पूर्व ' दृ विदारणे ' धातुसे अमत्यय करनेके अनन्तर उद्के दकारका लोप किया पश्चात् गुण करनेसे सिद्ध हुआ । उदरम् ॥

स्नेर्मुट् क्सप्रत्ययः ॥ १११५ ॥ मुसम् ॥

भाषा–स्नुधातुसे क्समत्यय होय और धातुको मुट् आगम होय । उदाहरण–' स्नु विदारणे ' धातुसे क्समत्यय करनेके अनन्तर धातुको मुट् आगम किया फिर ' डिति टेः ' इसकर टिका लोप किया तब सिद्ध हुआ । मुसम् ॥

अमेः स ॥ १११६ ॥ असः ॥

भाषा–अमधातुसे समत्यय होय । उदाहरण–' अम गतौ ' धातुसे समत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । अंस' ॥

मुहेः खो मूर्च ॥ १११७ ॥ मूर्ख ॥

भाषा–मुहधातुसे खमत्यय होय और धातुको मुर् आदेश होय । उदाहरण–' मुह वैचित्ये ' धातुसे खमत्यय किया और धातुको मूर् आदेश किया तब सिद्ध हुआ । मूर्ख' ॥

नहेर्हलोपश्च ॥ १११८ ॥ नसः ॥

भाषा–नहधातुसे समत्यय होय और धातुके हकारका लोप होय । उदाहरण–' णह बन्धने ' धातुसे समत्यय करनेके अनन्तर हकारका लोप करनेसे सिद्ध हुआ । नस' ॥

शीङो ह्रस्वश्च ॥ १११९ ॥ शिसा ॥

भाषा–शीङ्धातुसे समत्यय होय और धातुको ह्रस्व होय । उदाहरण–' शीङ् स्वप्ने ' धातुसे समत्यय करनेपर धातुको ह्रस्व किया तब सिद्ध हुआ स्त्रीलिंगमें । शिसा ॥

माङ ऊखो मय च ॥ ११२० ॥ मयूखः ॥

भाषा–माङ्धातुसे ऊखप्रत्यय होय और धातुको मय् आदेश होय । उदाहरण–' माङ् माने ' धातुसे ऊखप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको मय् आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । मयूखः ॥

गले फो गस्योच्च ॥ ११२१ ॥ गुल्फः ॥

भाषा–गलधातुसे फप्रत्यय होय और गकारउत्तरवर्त्ती अकारको उकार होय । उदाहरण–' गल अदने ' धातुसे फप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुके अकारको उकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ । गुल्फः ॥

स्पृशेश्शुश्वणौ पृ च ॥ ११२२ ॥ पर्शुः । पार्श्वः ॥

भाषा–स्पृश्धातुसे शु, श्वण् यह प्रत्यय होंय और धातुको पृ आदेश होय । उदाहरण–' स्पृश् स्पर्शने ' धातुसे शुप्रत्यय किया तहां पृ आदेश करनेपर गुण किया तव सिद्ध हुआ । पर्शुः । और जहां श्वण्प्रत्यय हुआ तहां स्पृधातुको पृ आदेश करनेपर ' धातोर्नामिनः ' इसकर वृद्धि की तव सिद्ध हुआ । पार्श्वः ॥

श्मनि श्रिञो डुन् ॥११२३॥ श्मन्शब्दो मुखवाची । श्मानं मुखं श्रयते श्मश्रुः ॥

भाषा–श्मन्शब्द उपपद हुए संते श्रिञ्धातुसे डुन्प्रत्यय होय । प्रत्ययमें डकार टिलोपके अर्थ है नकार उच्चारणार्थ है । उदाहरण–श्मन्शब्द पूर्व ' श्रिञ् सेवायाम् ' धातुसे डुन्प्रत्यय करनेपर ' डिति टेः ' इसकर टिका लोप किया तव सिद्ध हुआ । श्मश्रुः ॥

जनेरो जंघ च ॥ ११२४ ॥ जंघा ॥

भाषा–जनधातुसे अप्रत्यय और धातुको जंघ आदेश होय । उदाहरण–' जनी प्रादुर्भावे ' धातुसे अप्रत्यय करनेके अनन्तर जंघ आदेश किया तव स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । जंघा ॥

हन्ते शरीरावयवे द्वे च ॥ ११२५ ॥ जघनम् ॥

भाषा–हन्धातुसे शरीरके अवयवार्थमें अप्रत्यय होय और धातुको द्वित्व होय । उदाहरण–' हन् हिंसागत्योः ' धातुसे शरीरके अवयवार्थमें अप्रत्यय करनेपर धातुको द्वित्व किया फिर ' पूर्वोद्धन्तेर्हस्य घः ' इसकर पर हकारको घकार किया तव सिद्ध हुआ । जघनम् ॥

क्लिशलस्य लोपश्च ॥ ११२६ ॥ केशः ॥

भाषा–क्लिशधातुसे अप्रत्यय होय और धातुके लकारका लोप होय ।

उदाहरण-' क्लिशु विबाधने ' धातुसे अप्रत्यय करनेके पश्चात् धातुके लकारका लोप किया फिर धातुको गुण करनेपर सिद्ध हुआ । केश" ॥

फलेरित' फस्य प ॥ ११२७ ॥ पलितम् ॥

भाषा-फलधातुसे इतप्रत्यय होय और फकारको पकार होय । उदाहरण-' फल निष्पत्तौ ' धातुसे इतप्रत्यय करनेके अनन्तर फकारको पकार करनेपर सिद्ध हुआ । पलितम् ॥

कृञादेर्वुः ॥ ११२८ ॥ करक' । कर्टक । कुर गतौ । कोरकः । नरक ॥

भाषा-कृञ् आदिक धातुओंसे वुप्रत्यय होय । उदाहरण-' डुकृञ् करणे ' धातुको वुप्रत्यय करनेके अनन्तर ' युवोरनाकौ ' इसकर वुप्रत्ययको अकआदेश किया फिर गुण करनेसे सिद्ध हुआ । करक । ' कट वर्षावरणयोः ' धातुका । कटकः । ' कुर गतौ ' धातुका । कोरक' ' नॄ नये ' धातुका । नरकः ॥

चीकयतेराद्यन्तविपर्यय ॥ ११२९ ॥ चीक शब्दे । कीचक' ॥

भाषा-चुरादि ' चीकृ शब्दे ' धातुसे वुप्रत्यय होय और धातुके आदि और अन्तको विपर्यय होय अर्थात् धातुके आदिवर्णके स्थानमें अन्त्यवर्ण और अन्त्यवर्णके स्थानमें आदिवर्ण होय । उदाहरण-चुरादि ' चीकृ शब्दे ' धातुसे वुप्रत्यय करनेके अनन्तर वुप्रत्ययको ' युवोरनाकौ ' इसकर अक आदेश किया पश्चात् ' णे ' इसकर णिप्रत्य[illegible] लोप किया फिर आदिवर्ण चकारके स्थानमें अन्त्यवर्ण ककार किया और अन्त्यवर्ण ककारके स्थानमें आदिवर्ण चकार किया तब सिद्ध हुआ । कीचकः ॥

पचिमच्योरिरत' ॥ ११३० ॥ पेचकः । मेचक' । मच शब्दे ॥

भाषा-पच मच इन धातुओंसे वुप्रत्यय होय और इन धातुओंके अकारको इकार होय । उदाहरण-' डुपचष् पाके, मच शब्दे ' इन धातुओंसे वुप्रत्यय करनेपर अकारको इकार किया तब सिद्ध हुआ । पेचकः । मेचकः ॥

जनेररष्ठ च' ॥ ११३१ ॥ जठरम् ॥

भाषा-जन्धातुसे अरप्रत्यय होय और धातुके नकारको ठकार होय । उदाहरण-' जन जनने वा जनी प्रादुर्भावे ' इन दोनों धातुओंसे अरप्रत्यय करनेके अनन्तर नकारको ठकार किया तब सिद्ध हुआ । जठरम् ॥

हयतेः कन्यो हिर च ॥ ११३२ ॥ हिरण्यम् ॥

भाषा-हयधातुसे कन्यप्रत्यय होय और धातुको हिर आदेश होय प्रत्ययमें

ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण–' हय गतिकांत्योः ' इस धातुसे कन्यप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको हिर् आदेश किया फिर गुण नहीं किया क्योंकि परे किप्रत्यय विद्यमान है तव सिद्ध हुआ । हिरण्यम् ॥

कृञः पासः ॥ ११३३ ॥ कर्पासः ॥

भाषा–कृञ्धातुसे पासप्रत्यय होय । उदाहरण–' डुकृञ् करणे ' धातुसे पासप्रत्यय करनेपर धातुको गुण किया तव सिद्ध हुआ । कर्पासः ॥

ऊर्णोतेर्डः ॥ ११३४ ॥ ऊर्णा ॥

भाषा–ऊर्णुञ्धातुसे डप्रत्यय होय प्रत्ययमें डकार टिलोपके अर्थ है । उदाहरण–' ऊर्णुञ् आच्छादने ' धातुसे डप्रत्यय करनेके अनन्तर ' डिति टेः ' इसकर टिका लोप किया तव स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । ऊर्णा ॥

दधातेर्यो नुट् च ॥ ११३५ ॥ धान्यम् ॥

भाषा–डुधाञ्धातुसे यप्रत्यय होय और प्रत्ययको नुट् आगम होय । उदाहरण–' डुधाञ् धारणे ' धातुसे यप्रत्ययको नुट् आगम किया तव सिद्ध हुआ । धान्यम् ॥

तनोतेर्डउः ॥ ११३६ ॥ तितउः ॥

भाषा–तनुधातुसे जो कि डउप्रत्यय होय वह सप्रत्ययके समान होय । भाव यह है कि जो कार्य द्वित्वादि सप्रत्यय परे होनेसे होता है वहही कार्य डउप्रत्यय परे होनेसे होता है । उदाहरण–' तनु विस्तारे ' धातुसे डउप्रत्यय करनेपर धातुको द्वित्व किया पश्चात् ' यः से ' इसकर पूर्व अकारको इकार किया फिर ' डिति टेः ' इसकर धातुके टि अन्का लोप किया तव सिद्ध हुआ । तितउः ॥

अर्भकादयः ॥ ११३७ ॥ ऋधु । अर्भकः ॥

भाषा–अर्भक आदिक शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण–' ऋधु वृद्धौ ' धातुका निपातसे सिद्ध हुआ । अर्भकः ॥

प्रथेरुक् सम्प्रसारणं च ॥ ११३८ ॥ प्रथ । पृथुकः ॥

भाषा–प्रथधातुसे उकप्रत्यय होय और धातुको संप्रसारण होय । उदाहरण–' प्रथ प्रख्याने ' धातुसे उकप्रत्यय करनेके अनन्तर प्रथधातुके रको ऋकार संप्रसारण किया तव सिद्ध हुआ । पृथुकः ॥

पिबतेः कः ॥ ११३९ ॥ पाकः ॥

भाषा–पाधातुसे कप्रत्यय होय । उदाहरण–' पा पाने ' धातुसे कप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । पाकः ॥

वदेर्नञि यः ॥ ११४० ॥ अवद्यम् । अव । अवम॰ । अधम॰ ॥

भाषा—नञ्अव्यय पूर्वपद हुए संते वद्धातुसे यमत्यय होय । उदाहरण—नञ् अव्यय पूर्व ' वद व्यक्तायां वाचि ' धातुसे यमत्यय करनेके अनन्तर ' नाखमाते ' इसकर नञ्को अकार आदेश किया तब सिद्ध हुआ । अवद्यम् । ' अव रक्षणे ' धातुका निपातसे सिद्ध हुआ । अवम॰ । अधमः ॥

क्लिशेरः ॥ ११४१ ॥ कीनाशः ॥

भाषा—क्लिश्धातुसे अमत्यय होय और धातुके उपधाको ईकार और लकारका लोप और नाम् आगम निपातसे होय । उदाहरण—' क्लिशू विबाधने ' धातुसे अम त्यय करनेके अनन्तर निपातसे सिद्ध हुआ । कीनाश॰ ॥

चतेरुरः ॥ ११४२ ॥ चत्वार ॥

भाषा—चतेधातुसे उरमत्यय होय । उदाहरण—' चते याचने ' धातुसे उरमत्यय करनेपर रूप हुआ चतुर् । नामसंज्ञामें बहुवचनके विषै । चत्वारः ॥

हन्तेर्घुरच् ॥ ११४३ ॥ घोरम् ॥

भाषा—हन्धातुसे अमत्यय होय और हन्धातुको घुर् आदेश होय । उदाहरण—' हन् हिंसागत्योः ' इस धातुसे अमत्यय करनके अनन्तर धातुको घुर आदेश किया तब सिद्ध हुआ । घोरम् ॥

क्षमेरलोपश्च ॥ ११४४ ॥ क्ष्मा ॥

भाषा—क्षमूष्धातुसे अमत्यय होय और धातुके उपधारूप अकारका लोप होय । उदाहरण— क्षमूष् सहने ' धातुसे अमत्यय करनेके अनन्तर धातुके उपधारूप अकारका लोप किया तब स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । क्ष्मा ॥

तरतेड्रिः ॥ ११४५ ॥ त्रय । त्रीन् ॥

भाषा—तृधातुसे ड्रिमत्यय होय । उदाहरण—' तृ प्लवनसंतरणयोः ' धातुसे ड्रिमत्यय करनेपर ' डिति टे. ' इसकर ऋकारका लोप किया तब रूप हुआ । त्रि । नामसंज्ञामें । त्रय॰ ॥

ग्रहेरानिः ॥ ११४६ ॥ ग्रहाणि ॥

भाषा—ग्रहधातुसे अनिमत्यय होय । उदाहरण—' ग्रह उपादाने ' धातुसे अनिमत्यय करनेपर ' ऋवर्णो॰ ' इसकर नकारको णकार किया तब सिद्ध हुआ । ग्रहाणि ॥

प्रथेरम ॥ ११४७ ॥ प्रथम ॥

भाषा—प्रथधातुसे अममत्यय होय । उदाहरण—' प्रथ प्रख्याने ' धातुसे अममत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । प्रथमः ॥

चरेश्च ॥ ११४८ ॥ चरमः ॥

भाषा–चरधातुसेभी अमप्रत्यय होय । उदाहरण–' चर गतिभक्षणयोः ' इस धातुसे अमप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । चरमः ॥

मंगेरलः ॥ ११४९ ॥ मंगलः । सदोणादयः । सर्वस्मिन्काले उणादयः । उणादयोऽपरिमिताः प्रयोगमनुसृत्य प्रयोक्तव्याः ॥ इत्युणादौ पंचमः पादः ॥ ५ ॥

भाषा–मगिधातुसे अलप्रत्यय होय । उदाहरण–'मगि गतौ ' धातुसे अल-प्रत्यय करनेके अनन्तर ' इदितो ' नुम् इसकर नुम् आगम किया तब सिद्ध हुआ । मंगलः । सभी कालमें उण् आदिक प्रत्यय होते हैं । उणादिक प्रत्यय अनन्त हैं प्रयोगके अनुसार करके धातुसे प्रयुक्त किये जाते हैं ॥ इत्युणादौ पंचमः पादः ॥ ५ ॥

तुम् तदर्थायां भविष्यति ॥ ११५० ॥ धातोर्भविष्यति काले तुम्प्रत्ययस्तदर्थायां क्रियायां गम्यमानायाम् ॥ गुडं भोक्तुं व्रजति । व्याकरणं पठितुमीष्टे ॥

भाषा–धातुसे भविष्यत्कालके विषें भावमें तुम् प्रत्यय होय उस भविष्यत्कालमें होने योग्य क्रियाके प्रयोजनवाली क्रिया उपपद हुए संते । भाव यह है कि उस धातुसे भविष्यत्कालमें तुम् प्रत्यय होय जिस धातुकी भविष्यत्कालमें होनेवाली क्रियाके सिद्ध करनेवाली क्रिया यदि उपपद होवे तो । उदारण–' गुडं भोक्तुं व्रजति ' इसमें भविष्यत्कालमें होनेवाली भोजनरूप क्रियाके सिद्ध करनेवाली व्रजति क्रिया उपपद है इस कारण भुजधातुसे तुम्प्रत्यय करनेपर धातुको गुण किया है और नामसंज्ञामें ' क्त्वाद्यन्तं च ' इसकर अव्ययसंज्ञा होनेसे विभक्तिका लुक् हुआ है । अर्थ–गुड जेवनेको जाता है । इसी प्रकार शेष उदाहरण जानने ॥

तुमर्थे वुण् ॥ ११५१ ॥ कृष्णं दर्शको व्रजति ॥

भाषा–तुम्प्रत्ययके अर्थमें वुण्प्रत्यय होय । भाव यह है कि धातुसे भविष्यत्कालमें कर्त्ताअर्थके विषें वुण् प्रत्यय होय भविष्यत्कालमें होनेवाली क्रियाके सिद्ध करनेवाली क्रिया उपपद हुए संते । उदाहरण–' कृष्णं दर्शको व्रजति ' इसमें भविष्यत्कालमें होनेवाली दर्शनरूप क्रियाके सिद्ध करनेवाली क्रिया व्रजति उपपद

है इस कारण 'दाशि - मेसणे' धातुसे कथार्थमें तुण्प्रत्यय हुआ है 'युवोरनाकौ' इसकर तुण्प्रत्ययको अक आदेश हुआ।

कालसमयवेलासु ॥ ११५२ ॥ अध्येतुं कालः। स्तोतुं समयः। भोक्तुं वेला ॥

भाषा—काल, समय, वेला यह उपपद हुए सते धातुसे तुम् प्रत्यय होय। भाव यह है कि क्रियाकी सिद्धिके जतानेवाले कालार्थ शब्द उपपद हुए सते धातुसे तुमुप्रत्यय होय। उदाहरण—'अध्येतुं कालः' इसमें कालशब्द उपपद है इस कारण अधिपूर्व 'इङ् अध्ययने' धातुसे तुमुप्रत्यय हुआ है इसी प्रकार शेष उदाहरण जानने ॥

इच्छार्थेष्वेककर्तृकेषूपपदेषु धातोस्तुम् ॥ ११५३ ॥ भोक्तु- मिच्छति वष्टि वांछति वा ॥

भाषा—एकही कर्तावाले इच्छार्थशब्द उपपद हुए सते धातुसे तुमुप्रत्यय होय। उदाहरण—'भोक्तुमिच्छति' इसमें भोजनरूप क्रिया और इच्छारूप क्रियाका एकही कर्ता है इस कारण 'भुज पालनाभ्यवहारयो' धातुसे तुमुप्रत्यय किया है ॥

शकधृषज्ञाग्लाघटरभलभक्रमसहार्हाऽस्त्यर्थेषु ॥ ११५४ ॥ शक्नोति भोक्तुम्। धृष्णोति। जानातीत्यादि ॥

भाषा—शक, धृष, ज्ञा, ग्ला, घट, रभ, लभ, क्रम, सह, अर्ह, अस्त्यर्थ यह शब्द उपपद हुए संते धातुसे तुमुप्रत्यय होय। उदाहरण—'शक्ल शक्तौ, ञिधृषा प्रागल्भ्ये, ज्ञा अवबोधने, ग्लै हर्षक्षये, घट चेष्टायाम् रभ रामस्ये डुलभष् प्राप्तौ, क्रमु पादविक्षेपे' षह मर्षणे, अर्ह पूजायाम्, अस भुवि अर्थग्रहणसे 'भू सत्तायाम्, विद सत्तायाम्' इन धातुओंके उपपद होनेसे भुजधातुसे तुमुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। भोक्तुं शक्नोति। धृष्णोति। जानाति। ग्लायति। घटते। आरभते। लभते। क्राम्यति। सहते। अर्हति। अस्ति। भवति। विद्यते ॥

पूर्णतावाचिषु सामर्थ्यार्थेषु ॥ ११५५ ॥ पर्याप्तो भोक्तुम्। प्रवीणः। कुशलः। समथः। पूर्णतेति किम्। अलं भुक्त्वा। सामर्थ्यार्थेषु किम्। पर्याप्तं भुङ्क्ते ॥

भाषा—पूर्णतावाचक ऐसे सामर्थ्यअर्थवाले शब्द उपपद हुए संते धातुसे तुमुप्रत्यय होय। उदाहरण—'भोक्तुं पर्याप्तः प्रवीणः कुशलः समर्थः' इसमें पूर्ण

तावाचक और सामर्थ्य अर्थवाले पर्याप्त आदिक शब्द उपपद हैं इस कारण भुज धातुसे तुमुप्रत्यय किया है । पूर्णतावाचक ऐसा क्यों कहा तहां कहते हैं कि 'पर्याप्तं भुंक्ते' इत्यादिकमें प्रभूतता प्राप्त है परन्तु भोजन करनेवालेका सामर्थ्य नहीं है ॥

घञ् भावे ॥ ११५६ ॥ पाकः । त्यागः । भावः । दायः ॥

भाषा—भावअर्थमें घञ्प्रत्यय होय । भाव यह है कि सिद्ध अवस्थाको प्राप्त हुए धात्वर्थके वाच्य होनेपर धातुसे घञ्प्रत्यय होय । उदाहरण—'पच्यते पचनं वा' यहां सिद्ध अवस्थाको प्राप्त हुआ धात्वर्थ वाच्य है इस कारण डुपचष् धातुसे घञ्प्रत्यय करनेपर धातुको 'अत उपधायाः' इसकर वृद्धि की क्योंकि ञित्प्रत्यय परे विद्यमान है फिर 'चजोः कु घिण्ण्यतोः' इसकर चकारके ककार किया क्योंकि घकार इत्वाला घञ्प्रत्यय परे विद्यमान है तब सिद्ध हुआ । पाकः । इसी प्रकार शेष रूप सिद्ध हुए जानने ॥

संज्ञायामकर्तरि ॥ ११५७ ॥ कर्तृवर्जिते कारके भावे च घञ् संज्ञायामसंज्ञायां च ॥ कार्यं प्रत्याह्रियते यः सः प्रत्याहारः । दीयतेऽस्मै दायः । विक्रियतेऽनेनेति विकारः । उपाध्यायः । घञर्थे कः । घञोऽपवादः । विशेषेण हन्यते कार्यमनेनेति विघ्नः । सुघ्नः ॥

भाषा—कर्तृवर्जित कारक अर्थके विषैं और भावअर्थके विषैं धातुसे घञ्प्रत्यय होय संज्ञा वा असंज्ञा वाच्य हुए संते । उदाहरण—'कार्यं प्रत्याह्रियते' इस विग्रहमें कर्मकारक अर्थ विद्यमान है इस कारण प्रतिपूर्व हृञ्धातुसे घञ्प्रत्यय करनेपर 'धातोर्नामिनः' इसकर वृद्धि कर सिद्ध हुआ । प्रत्याहारः । 'दीयतेऽस्मै' इस विग्रहमें संप्रदानकारक अर्थ विद्यमान है इस कारण 'डुदाञ् दाने' धातुसे घञ्प्रत्यय करनेपर 'आतो युक्' इसकर युक् आगम किया तब सिद्ध हुआ । दायः । 'विक्रियतेऽनेन' इस विग्रहमें करणकारक अर्थ विद्यमान है इस कारण विपूर्व 'डुकृञ् करणे' धातुसे घञ्प्रत्यय करनेपर धातुको वृद्धि करनेसे सिद्ध हुआ । विकारः । 'उपेत्याधीयतेऽस्मात्' इस विग्रहमे अपादानकारक अर्थ विद्यमान है इस कारण उप अधिपूर्व 'इङ् अध्ययने' धातुसे घञ्प्रत्यय करनेपर धातुको वृद्धि किया तब सिद्ध हुआ । उपाध्यायः । घञ्प्रत्ययके अर्थमें कप्रत्यय होय घञ्का अपवाद होय । प्रत्ययमें ककार कित्कार्यके अर्थ है । उदाहरण—'विशेषेण हन्यते कार्यमनेन' इस विग्रहमें करणकारक अर्थ विद्यमान है इस कारण विउपसर्गपूर्व 'हन् हिंसागत्योः' धातुसे घञ्प्रत्ययके होनेके

है इस कारण 'दृशि् प्रेक्षणे' धातुसे कर्ताअर्थमें वुण्प्रत्यय हुआ है 'युवोरनाकौ' इसकर वुण्प्रत्ययको अक आदेश हुआ।

कालसमयवेलासु ॥ ११५२ ॥ अध्येतुं कालः। स्रोतुं समयः। भोक्तुं वेला ॥

भाषा—काल, समय, वेला यह उपपद हुए संते धातुसे तुम् प्रत्यय होय। भाव यह है कि क्रियाकी सिद्धिके जतानेवाले कालार्थ शब्द उपपद हुए संते धातुसे तुमुप्रत्यय होय। उदाहरण—'अध्येतुं कालः' इसमें कालशब्द उपपद है इस कारण अधिपूर्व 'इङ् अध्ययने' धातुसे तुमुप्रत्यय हुआ है इसी प्रकार शेष उदाहरण जानने ॥

इच्छार्थेष्वेककर्तृकेषूपपदेषु धातोस्तुम् ॥ ११५३ ॥ भोक्तुमिच्छति वष्टि वांछति वा ॥

भाषा—एकही कर्तावाले इच्छार्थशब्द उपपद हुए संते धातुसे तुमुप्रत्यय होय। उदाहरण—'भोक्तुमिच्छति' इसमें भोजनरूप क्रिया और इच्छार्थरूप क्रियाका एकही कर्ता है इस कारण 'भुज पालनाभ्यवहारयोः' धातुसे तुमुप्रत्यय किया है ॥

शकधृषज्ञाग्लाघटरभलभक्रमसहार्हाऽस्त्यर्थेषु ॥ ११५४ ॥ शक्नोति भोक्तुम्। धृष्णोति। जानातीत्यादि ॥

भाषा—शक, धृष, ज्ञा, ग्ला घट, रभ, लभ, क्रम, सह, अर्ह, अस्त्यर्थ यह धातु उपपद हुए संते धातुसे तुमुप्रत्यय होय। उदाहरण—'शक्लृ शक्तौ, ञिधृषा प्रागल्भ्ये, ज्ञा अवबोधने, ग्लै हर्षक्षये, घट चेष्टायाम्, रभ राभस्ये, डुलभष् प्राप्तौ, क्रमु पादविक्षेपे' 'षह मर्षणे, अर्ह पूजायाम्, अस भुवि अर्थग्रहणसे' 'भू सत्तायाम्, विद सत्तायाम्' इन धातुओंके उपपद होनेसे भुजधातुसे तुमुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। भोक्तुं शक्नोति। धृष्णोति। जानाति। ग्लायति। घटते। आरभते। लभते। क्राम्यति। सहते। अर्हति। अस्ति। भवति। विद्यते ॥

पूर्णतावाचिषु सामर्थ्यार्थेषु ॥ ११५५ ॥ पर्याप्तो भोक्तुम्। प्रवीणः। कुशलः। समर्थः। पूर्णतेति किम्। अलं भुक्त्वा। सामर्थ्यार्थेषु किम्। पर्याप्तं भुङ्क्ते ॥

भाषा—पूर्णतावाचक ऐसे सामर्थ्यअर्थवाले शब्द उपपद हुए संते धातुसे तुम् प्रत्यय होय। उदाहरण—'भोक्तुं पर्याप्तः प्रवीणः कुशलः समर्थः' इसमें पूर्ण

भाषा—मद आदिक धातुओंसे अप्रत्यय होय भाव और आदिपदसे कर्तृवर्जित कारक अर्थके विषैं । उदाहरण—मद्धातुसे भावअर्थमें अप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । मदः । 'पण व्यवहारे स्तुतौ च' इस धातुसे भावअर्थमें अप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । पणः । 'शमु उपशमे' धातुका । शमः । 'आश्रम्यतेऽस्मिन्' इस विग्रहमें अधिकरणकारक विद्यमान है इस कारण आङ्पूर्व 'श्रमु तपसि खेदे च' धातुसे अप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । आश्रमः ॥

मूर्तौ घनः ॥ ११६० ॥ काठिन्ये परिच्छेदे च हन्तेरप्रत्ययो घनादेशश्च ॥ दधिघनः । सैन्धवघनः ॥

भाषा—काठिन्य तथा परिच्छेद अभिधेयके विषैं हन्धातुसे अप्रत्यय होय और धातुको घन आदेश होय । उदाहरण—'कठिनं दधि, परिच्छिन्नं सैन्धवम्' इन अर्थोंमें दधि सैन्धव पूर्व हन्धातुसे अप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको घन आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । दधिघनः । सैन्धवघनः ॥

हनो वधोऽप्रत्ययश्च ॥ ११६१ ॥ हननमिति वधः ॥

भाषा—उपसर्गहीन हन्धातुसे अप्रत्यय होय और धातुको वध आदेश होय भावअर्थके विषैं और चकारसे घञ्प्रत्ययभी होय । उदाहरण—'हन् हिंसागत्योः' धातुसे भावमें अप्रत्यय करनेके अनन्तर वध आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । वधः । और जहां घञ्प्रत्यय हुआ तहां 'हनो घत्' इसकर घत् आदेश किया तव सिद्ध हुआ । घातः ॥

ट्वितोऽथुः ॥ ११६२ ॥ ट्वितो धातोरथुर्भवति भावादौ ॥ टुवेपृ कम्पने । वेपनम् । वेपथुः । वमथुः । नन्दथुः । श्वयथुः ॥

भाषा—टकार है इत्संज्ञक जिसका ऐसे धातुमे अथुप्रत्यय होय भावअर्थमें तथा कर्तृवर्जित कारकअर्थके विषैं । उदाहरण—'टुवेपृ कम्पने' इसमें टकार इत्संज्ञक है इस कारण इस धातुसे भावअर्थमें अथुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । वेपथुः । 'टुवमु उद्गिरणे' धातुका । वमथुः । 'टुणदि समृद्धौ' धातुका । नंदथुः । 'टुओश्वि गतिवृद्ध्योः' धातुका । श्वयथुः ॥

ड्वितस्त्रिमक् तत्कृते ॥ ११६३ ॥ ड्वितो धातोस्त्रिमक्प्रत्ययो धात्वर्थेन कृतेऽर्थे ॥ करणेन निर्वृतः कृत्रिमः घटः । पक्त्रिमः ॥

भाषा—डकार है इत्संज्ञक जिसका ऐसे धातुसे त्रिमक्प्रत्यय होय धात्वर्थकरके किये हुए अर्थके विषैं प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधार्थ है । उदाहरण—'करणेन निर्वृतः कृत्रिमः' इसमें धात्वर्थकरके किया हुआ अर्थभी है और डित्संज्ञक धातु है इस

स्थानमें कमत्यय करनेपर ' गमां स्वरे ' इसकर धातुके उपधारूप मकारका लोप किया फिर ' हनो घ्ने ' इसकर हकारको घकार किया तब सिद्ध हुआ। विघ्न'। इसी प्रकार। सुघ्न'। यह सिद्ध हुआ है॥

स्वराद् ॥ ११९८ ॥ भावादौ ॥ घञोऽपवादः। चयन चयः। नयन नयः। षिञ् बन्धने। विशेषेण सीयते बध्यते जना अनेनेति विषय। स्तूयते अनेनेति स्तव। सवन सवः। लवन लवः। कृञ्। क्रियते कार्यमनेनेति करः। गिरत्यनेनेति गर'। गल'। द्व्याद्युपसर्गहीनस्य छादेर्ह्रस्वोऽप्रत्यये। परिच्छद छन्नम्। दन्ता छाद्यन्तेऽनेनेति दन्तच्छद' ओष्ठ। द्व्यादि किम्। अन्ववमच्छाद'। समवपरिच्छाद'॥

भाषा—स्वरान्तधातुसे अप्रत्यय होय भाव और कर्तृवर्जित कारक अर्थके विषे और घञ्प्रत्ययका अपवाद होय। उदाहरण—' चिञ् चयने ' धातुसे भावअर्थमें अप्रत्यय किया क्योंकि चिञ्धातु स्वरान्त है तब धातुको गुण करनेसे सिद्ध हुआ। चय'। ' णीञ् प्रापणे ' धातुसे भावअर्थमें अप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। नय। विशेषेण सीयन्ते जना अनेन ' इस विग्रहमें करणकारक अर्थ विद्यमान है इस कारण विपूर्व ' षिञ् बन्धने ' धातुको स्वरान्त होनेसे अप्रत्यय करनेपर धातुको गुण किया तब सिद्ध हुआ। विषय। इसी प्रकार शेष रूप सिद्ध हुए जानने। दो आदिक उपसर्गोंसे हीन छादिधातुको ह्रस्व होय अप्रत्यय पर हुए संते। उदाहरण—' परिच्छाद्यतेऽनेन ' इस विग्रहमें चुरादि णिप्रत्ययान्त ' छद अपवारणे ' धातुसे पूर्व एकही परि उपसर्ग है इस कारण अप्रत्यय पर हुए संते णिप्रत्ययान्त छादिधातुसे अप्रत्यय करनेपर णिका लोप होनेके पश्चात् ह्रस्व करनेसे सिद्ध हुआ। परिच्छद'। ' दन्ताश्छाद्यन्तेऽनेन ' इस विग्रहमें ' छद अपवारणे धातुसे पूर्व एकभी स्वर नहीं इस कारण अप्रत्यय करनेके अनन्तर ह्रस्व करनेसे सिद्ध हुआ। दंतच्छद'। यदि दो वा अधिक उपसर्ग छद्धातुसे पूर्व विद्यमान हों तो ह्रस्व नहीं होय। जैसे णिप्रत्ययान्त ' छद अपवारणे ' धातुके पूर्व अनु, अव, म उपसर्ग होनेसे अप्रत्यय करनेपर णिप्रत्ययान्त छद्धातुको ह्रस्व नहीं हुआ तब सिद्ध हुआ। अन्ववमच्छादः॥

मदाम ॥ ११९९ ॥ मदादीनामप्रत्ययो भावादौ ॥ मद'। पण'। प्रमद'। समद'। शम। आभम'॥

भाषा–मद् आदिक धातुओंसे अप्रत्यय होय भाव और आदिपदसे कर्तृवर्जित कारक अर्थके विषैं । उदाहरण–मद्धातुसे भावअर्थमें अप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । मदः । 'पण व्यवहारे स्तुतौ च' इस धातुसे भावअर्थमें अप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । पणः । 'शमु उपशमे' धातुका । शमः । 'आश्रम्यतेऽस्मिन्' इस विग्रहमें अधिकरणकारक विद्यमान है इस कारण आङ्पूर्व 'श्रमु तपसि खेदे च' धातुसे अप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । आश्रमः ॥

मूर्तौ घनः ॥ ११६० ॥ काठिन्ये परिच्छेदे च हन्तेरप्रत्ययो घनादेशश्च ॥ दधिघनः । सैन्धवघनः ॥

भाषा–काठिन्य तथा परिच्छेद अभिधेयके विषैं हन्धातुसे अप्रत्यय होय और धातुको घन आदेश होय । उदाहरण–'कठिनं दधि, परिच्छिन्नं सैन्धवम्' इन अर्थोंमें दधि सैन्धव पूर्व हन्धातुसे अप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको घन आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । दधिघनः । सैन्धवघनः ॥

हनो वधोऽप्रत्ययश्च ॥ ११६१ ॥ हननमिति वधः ॥

भाषा–उपसर्गहीन हन्धातुसे अप्रत्यय होय और धातुको वध आदेश होय भावअर्थके विषैं और चकारसे घञ्प्रत्ययभी होय । उदाहरण–'हन् हिंसागत्योः' धातुसे भावमें अप्रत्यय करनेके अनन्तर वध आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । वधः । और जहां घञ्प्रत्यय हुआ तहां 'हनो घत्' इसकर घत् आदेश किया तब सिद्ध हुआ । घातः ॥

ट्वितोऽथुः ॥ ११६२ ॥ ट्वितो धातोरथुर्भवति भावादौ ॥ टुवेपृ कम्पने । वेपनम् । वेपथुः । वमथुः । नन्दथुः । श्वयथुः ॥

भाषा–टकार है इत्संज्ञक जिसका ऐसे धातुसे अथुप्रत्यय होय भावअर्थमें तथा कर्तृवर्जित कारकअर्थके विषैं । उदाहरण–'टुवेपृ कम्पने' इसमें टकार इत्संज्ञक है इस कारण इस धातुसे भावअर्थमें अथुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । वेपथुः । 'टुवमु उद्गिरणे' धातुका । वमथुः । 'टुणदि समृद्धौ' धातुका । नंदथुः । 'टुओश्विङ् गतिवृद्ध्योः' धातुका । श्वयथुः ॥

ड्वितस्त्रिमक् तत्कृते ॥ ११६३ ॥ ड्वितो धातोस्त्रिमक्प्रत्ययो धात्वर्थेन कृतेऽर्थे ॥ करणेन निर्वृतः कृत्रिमः घटः । पक्त्रिमः ॥

भाषा–डकार है इत्संज्ञक जिसका ऐसे धातुसे त्रिमक्प्रत्यय होय धात्वर्थकरके किये हुए अर्थके विषैं प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधार्थ है । उदाहरण–'करणेन निर्वृतः कृत्रिमः' इसमें धात्वर्थकरके किया हुआ अर्थभी है और डित्संज्ञक धातु है इस

करण ' डुकृञ् करणे ' धातुसे त्रिमक्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । कृत्रिम' । ' पाकेन निर्वृत्त पक्त्रिम' ' इसमें धात्वर्थकरके किया हुआ अर्थ है डित्संज्ञक धातु है इस कारण डुपचष्धातुसे त्रिमक्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । पक्त्रिम ॥

नङ् ॥ ११६४ ॥ धातोर्नङ् प्रत्ययो भावादौ ॥ यज्ञ । इज्यन्ते देवा अनेनेति यज्ञ । याच्ञा । यततीति यत्न । प्रच्छविच्छो शो नेऽसम्प्रसारणं च । प्रश्न । विश्न । रक्ष पालने । रक्ष्ण । स्वप्न । अन्तः धीयते च स अन्तर्द्धि । आधि । विशेषेण जनेषु पीडा आधीयतेऽनेनेति व्याधि । प्रकर्षेण दधाति रथमार्गमनेनेति प्रधि । वारि धीयतेऽस्मिन्निति वारिधि । पयः धीयतेऽस्मिन्निति पयोधि ॥

भाषा–धातुसे नङ् यह प्रत्यय होय भावमर्थमें तथा कर्तृवर्जित कारकमर्थके विषे इन दोनों प्रत्ययोंमें ङकार णकार इत्संज्ञक हैं । उदाहरण–' इज्यन्ते देवा अनेन ' इस विग्रहमें करणकारक अर्थ विद्यमान है इस कारण यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु इस धातुसे नङ्प्रत्यय करनेपर ' स्तो श्चुना श्चु ' इससे नकारको ञकार कर ' अचोर्ञ ' इससे सिद्ध हुआ । यज्ञ । टुयाचृधातुसे भावमर्थमें नङ्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' स्तो श्चुना श्चु ' इससे नकारको ञकार किया तब स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । याच्ञा । ' यती प्रयत्ने ' धातुका । यत्न । प्रच्छ, विच्छ इन धातुओंसे छकारको शकार होय नङ्प्रत्यय पर हुए सते और सम्प्रसारण नहीं होय । उदाहरण– प्रच्छ ज्ञीप्सायाम् ' धातुसे भावमर्थमें नङ्प्रत्यय करनेके अनन्तर छकारको शकार । तथा और ' ग्रहि ज्या ' इससे सम्प्रसारणकी प्राप्ति थी सो नहीं हुई तब सिद्ध हुआ । प्रश्न । ' विच्छ गतौ ' धातुसे नङ्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । विश्न । ' रक्ष पालने ' धातुसे भावमर्थमें नङ्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । रक्ष्ण । ' ञिष्वप् शये ' धातुका । स्वप्न । ' विशेषेण जनेषु पीडा आधीयतेऽनेन ' इस विग्रहमें करणकारक अर्थ विद्यमान है इस कारण विपूर्वक आङ्पूर्वक ' डुधाञ् धारणपोषणयोः ' धातुसे किप्रत्यय करनेके अनन्तर ' आतो लोप इटि च ' इससे आकारका लोप किया तब सिद्ध हुआ । व्याधि । ' प्रकर्षेण दधाति, रथमार्गमनेन ' इस विग्रहमें भी करणकारक अर्थ विद्यमान है इस कारण प्र उपसर्गपूर्वक ' डुधाञ् धारणपोषणयोः ' धातुसे किप्रत्यय करनेपर ' आतो लोप इटि च ' इससे आकारका लोप किया तब सिद्ध हुआ । प्रधि । ' वारि धीयतेऽस्मिन् ' इस विग्रहमें अधिकरण अर्थ विद्यमान है इस कारण वारिपूर्वक ' डुधाञ् धारणपोषणयोः ' धातुसे किप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । वारिधि । इसी प्रकार पयोधि भी जानना ॥

युट् भावे च ॥ ११६५ ॥ ज्ञानम् । करणम् । कारणम् ॥

भाषा–धातुसे भावअर्थमें युट्प्रत्यय होय चकारसे युण्प्रत्ययभी होय । प्रत्ययमें टकार ईप्प्रत्ययके अर्थ है । उदाहरण–'ज्ञा अवबोधने, डुकृञ् करणे' इन धातुओंसे भावअर्थमे युट्प्रत्यय करनेके अनन्तर 'युवोरनाकौ' इसकर युप्रत्ययको अन आदेश किया तब सिद्ध हुआ । ज्ञानम् । करणम् । और जहा युण्प्रत्यय हुआ तहां 'धातोर्नामिनः' इसकर वृद्धि की तब सिद्ध हुआ । कारणम् ॥

साधनाधारयोश्च ॥ ११६६ ॥ पच्यतेऽनेनेति पचनोऽग्निः । पच्यतेऽस्यां पचनी स्थाली ॥

भाषा–साधन नाम करणकारक और आधार अधिकरणकारक इन अर्थोंके विषैंभी धातुसे युट्प्रत्यय होय । उदाहरण–'पच्यतेऽनेन' इस विग्रहमें साधनकारक अर्थ विद्यमान है इस कारण डुपचष् धातुसे युट्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । पचनः । 'पच्यतेऽस्याम्' इस विग्रहमें अधिकरण अर्थ विद्यमान है इस कारण डुपचष्धातुसे युट्प्रत्यय करनेपर स्त्रीलिंगमें 'ष्टित्रतः' इसकर ईप्प्रत्यय करनेसे रूप हुआ । पचनी ॥

इषद्दुःसुषु खल्यू ॥ ११६७ ॥ ईषदादिषु प्रयुज्यमानेषु खल्यू एतौ भावादौ ॥ ईषद्भवः । दुर्भवः । सुकरः । दुःखेन युध्यतेऽस्मादिति दुर्योधनः । दुःखेन शिष्यते इति शासनः । कर्तृकर्मणोश्च्व्यर्थयोरीषदादिषु चोपपदेषु भूकृञोः खल् । अदुराढ्येन दुराढ्येन भूयते दुराढ्यंभवं भवता । अस्वाढ्यः स्वाढ्यः क्रियते स्वाढ्यंकरः ॥

भाषा–ईषत्, दुर्, सु यह उपपद हुए संते धातुसे खल्, यु यह प्रत्यय होंय भाव और कर्मादिक कारक अर्थके विषैं प्रत्ययमें खकार मुम्विधानके अर्थ है । उदाहरण–ईषत्पूर्व 'भू सत्तायाम्' तथा दुर्पूर्व 'भू सत्तायाम्' धातुसे खल्प्रत्यय करनेपर धातुको गुण करनेसे सिद्ध हुआ । ईषद्भवः । दुर्भवः । 'सुष्ठु क्रियते' इस विग्रहमें सुपूर्व 'डुकृञ् करणे' धातुसे कर्मअर्थके विषैं खल्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । सुकरः । 'दुःखेन युध्यतेऽस्मात्' इस विग्रहमें अपादानकारक अर्थ विद्यमान है इस कारण दुर्पूर्व 'युध संप्रहारे' धातुसे युप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । दुर्योधनः । 'दुःखेन शिष्यते' इस विग्रहमें कर्मकारक अर्थ विद्यमान है इस कारण दुर्पूर्व 'शासु अनुशिष्टौ' धातुसे युप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । दुःशासनः । च्विप्रत्ययके अर्थवाले कर्तृवाचक तथा कर्मवाचक शब्द उपपद हुए संते और कर्तृवाचक वा कर्मवाचकसे पूर्व ईषत्, दुर्, सु यह उपपद हुए संते धातुसे

खल्प्रत्यय होय प्रत्ययमें खकार मुमुविधानके अर्थ है । उदाहरण-' अदुराढ्येन दुराढ्येन भूयते ' इस विग्रहमें च्चिअर्थवाला कर्तृवाचक दुर्पूर्व आढ्यशब्द उप पद है इस कारण भूधातुसे खल्प्रत्यय करनेपर ' खिति पदस्य ' मुम् इसकर पूर्वको मुम् आगम किया तब सिद्ध हुआ । दुराढ्यंभवम् । ' अस्वाद्य स्वाद्य' क्रियते स्वाद्यंकर ' इस विग्रहमें च्चिअर्थवाला कर्मवाचक सुपूर्व आद्यशब्द उपपद है इस कारण ' डुकृञ् करणे ' धातुसे खल्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । स्वाद्यंकर' ॥

तव्यानीयौ ॥ ११६८ ॥ तावकार्ययो ॥ एधितव्य एधनीयम् । आसितव्य आसनीयम् । पातव्य पानीयम् ॥

भाषा-इसके अनन्तर कृत्यसंज्ञक प्रत्ययोंको कहते हैं । धातुसे भाव और कर्मअर्थके विषै तव्य, अनीय यह प्रत्यय होंय । उदाहरण-' एध वृद्धौ ' धातुसे कर्मअर्थमें तव्यप्रत्यय करनेके अनन्तर ' कृत्व' इसकर इट् आगम किया तब सिद्ध हुआ । एधितव्यम् । और जहां अनीय प्रत्यय हुआ तहां सिद्ध हुआ । एधनीम् । " आस उपवेशने ' धातुसे भावअर्थमें तव्यप्रत्यय करनेपर ' कृतः ' इसकर इट् आगम किया तब सिद्ध हुआ । आसितव्यम् । और अनीयप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । आसनीयम् ॥

वसेस्तव्य कर्त्तरि णिच्च ॥ ११६९ ॥ वसतीति वास्तव्य ॥

भाषा-वसधातुसे कर्तृअर्थमें तव्यप्रत्यय णित्संज्ञक होता है । उदाहरण-'वसति' इस विग्रहमें ' वस निवासे ' धातुसे णित्संज्ञक तव्यप्रत्यय करनेपर धातुको ' अत उपधायाः ' इसकर वृद्धि की तब सिद्ध हुआ । वास्तव्य ॥

केलिम ॥ ११७० ॥ सौकर्ये भावो केलिमं प्रत्ययो भवति ॥ पचेलिमा माषा । भिदेलिमा सरला ॥

भाषा-धातुसे कर्मअर्थके विषै केलिमप्रत्यय होय प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण-डुपचष्धातुको केलिमप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । पचेलिमा । " भिदिर् विदारणे ' धातुसे केलिमप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । भिदेलिमा ॥

स्वराद्य ॥ ११७१ ॥ स्वगताचावोर्य ॥ चेयम् । जेयम् । तव्यादयोऽपि । चेतव्य चयनीय । चित्त्यम् ॥

भाषा-स्वरान्तधातुसे कर्मअर्थमें यप्रत्यय होय और तव्य आदिकभी प्रत्यय होंय । उदाहरण- ' चिञ् चयने ' धातुसे कर्मअर्थमें यप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको गुण करनेपर सिद्ध हुआ । चेयम् । ' जि जये ' धातुका । जेयम् । स्वरान्त " चिञ् चयने धातुसे यम अर्थमें तव्य अनीय प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ

चेतव्यः । चयनीयः । यप्रत्ययान्त 'डुदाञ् दाने' धातुसे कर्मअर्थमें यप्रत्यय करने-पर सिद्ध हुआ । दित्स्यम् ॥

ई चातः ॥ ११७२ ॥ आदन्ताद्धातोर्य आकारस्य च ईकारः ॥

देयम् । ग्लेयम् । गेयम् ॥

भाषा-आकारान्तधातुसे कर्मअर्थमें यप्रत्यय होय और आकारको ईकार होय । उदाहरण-'डुदाञ् दाने, गै शब्दे, ग्लै हर्षक्षये' इन आकारांत धातुओंसे कर्मअर्थमें यप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुके आकारको ईकार किया तब गुण करनेपर सिद्ध हुए देयम् । गेयम् । ग्लेयम् ॥

पुशकात् ॥ ११७३ ॥ पवर्गान्ताच्छकादेश्च यः प्रत्ययः ॥

शप्यम् । यम्यम् । जप्यम् । शक्यम् । सह्यम् ॥

भाषा-पवर्ग है अन्तमें जिसके उस धातुसे और शक्ल आदिक धातुओंसे यप्रत्यय होय कर्मअर्थमें । उदाहरण-'शप उपालम्भे, यमु उपरमे, जप व्यक्तायां वाचि' इन धातुओंके अन्तमें पवर्गसंबन्धी अक्षर विद्यमान हैं इस कारण इन धातु-ओंसे कर्मअर्थमें यप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुए । शप्यम् । यम्यम् । जप्यम् । 'शक्ल शक्तौ, षह मर्षणे' इन धातुओंसे यप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुए । शक्यम् । सह्यम् ॥

ऋहसान्ताद् घ्यण् ॥ ११७४ ॥ ऋवर्णान्तात् हसान्ताद्धातोर्घ्यण् भावकार्ययोः ॥ कार्यम् । हार्यम् । वाह्यम् । घात्यम् । वाक्यम् । पाक्यम् । रोग्यम् ॥

भाषा-ऋवर्णान्त और हसान्त धातुसे घ्यण्प्रत्यय होय भाव और कर्मअर्थ दोनोंके विषें प्रत्ययमें णकार वृद्धिके अर्थ है और घकार घित्कार्यके अर्थ है । उदा-हरण-'डुकृञ् करणे, हृञ् हरणे' यह धातु ऋकारान्त हैं इस कारण इन धातुओंसे घ्यण्प्रत्यय करनेके अनन्तर 'धातोर्नामिनः' इसकर वृद्धि की तब सिद्ध हुआ । कार्यम् । हार्यम् । 'वह प्रापणे' धातु हसप्रत्याहारसंबन्धि हकारान्त है इस कारण इस धातुसे घ्यण्प्रत्यय करनेके अनन्तर 'अत उपधायाः' इसकर वृद्धि की तब सिद्ध हुआ । वाह्यम् । 'हन् हिंसागत्योः' धातुसे घ्यण्प्रत्यय करनेपर 'हनो घत्' इसकर धातुको घत् आदेश किया फिर वृद्धि करनेसे सिद्ध हुआ । घात्यम् । डुपचष्-धातुसे कर्मअर्थमें घ्यण्प्रत्यय करनेके अनन्तर 'अत उपधायाः' इसकर वृद्धि की फिर 'चजोः कगौ घिति' इसकर चकारको ककार किया तब सिद्ध हुआ । पाक्यम् । इसी प्रकार 'वच परिभाषणे' धातुका । वाक्यम् । 'रुज् रोगे' धातुका । रोग्यम् ॥

ण्याणि क्वचित्कुत्वाभाव ॥ ११७५ ॥ याज्यम् । याच्यम् । वाच्यम् । रोच्यम् । अर्च्यम् ॥

भाषा—ण्यण्प्रत्यय पर हुए संते कहीं प्रयोगान्तरोंमें चवर्गको कवर्ग नहीं होय । उदाहरण—' यज देवपूजादौ, डुयाचृ याच्ञायाम्, वच परिभाषणे, रुच स्तुतौ ' इन धातुओंके जकार चकारको ' चजो' कगौ घिति ' इसकर गकार ककार न होनेसे सिद्ध हुआ । याज्यम् । याच्यम् । वाच्यम् । रोच्यम् । अर्च्यम् ॥

ओरावश्यके ॥ ११७६ ॥ उवर्णान्ताद्धातोरावश्यकेऽर्थे ण्यण् ॥

भाषा—आवश्यक अर्थमें उवर्णान्त धातुसे ण्यण्प्रत्यय होय । उदाहरण—' अवश्यं भवति ' इस विग्रहमें आवश्यक अर्थ विद्यमान है इस कारण अवश्यपूर्व भूधातुको उकारान्त होनेसे ण्यण्प्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ अवश्यं-भू-य फिर ' धातोर्नामिन' ' इसकर धातुको वृद्धि की क्योंकि णित्प्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप स्थित हुआ अवश्यं भौ-य फिर ॥

ओदौतोर्यस्स्वरवत् ॥ ११७७ ॥ ओकारौकारयोर्निमित्त य प्रत्यय स्वरवत् ॥ " लुम्पेदवश्यमः कृत्ये तुम्काममनसोरपि । समो वा हितततयोर्मासस्य पचि युड्घञोः ॥ अवश्य भाव्योऽवश्यभाव्य । भोक्तुकाम । भोक्तुमना । सहित सहितम् । सतत सततम् । मासस्य पचनम् । मांसपचन मांसपचनं । मांसस्य पाक । मांसपाक मांसपाक ॥

भाषा—ओकार और औकार इन दोनोंका निमित्त जो कि यप्रत्यय है वह स्वरके समान होता है । भाव यह है कि जिस यप्रत्ययको आश्रयकरके गुणसे जहां ओकार और वृद्धिसे जहां औकार होता है तहां वह प्रत्यय स्वरके समान होता है । उदाहरण—अवश्य-भौ-य । इसमें ण्यण्प्रत्ययको निमित्तमानके आश्रय कर धातुको औकार वृद्धि हुआ है इस कारण ण्यण्प्रत्ययको स्वरवत् जान ' औ आव् ' इसकर आव् करनेपर रूप स्थित हुआ अवश्यमाव्य । कृत्यसंज्ञक प्रत्यय पर हुए संते अवश्यम् निपातके अन्त्यवर्णका लोप करे और काम, मनस् यह शब्द पर हुए संते तुम्प्रत्ययके अन्त्यवर्णका लोप करे और हित, तत यह शब्द पर हुए संते सम् उपसर्गके अन्त्य वर्णका लोप करे विकल्पकरके और पचधातुसे परे युट् घञ् यह प्रत्यय पर हुए संते मांसशब्दके अन्त्यवर्णका लोप करे विकल्प करके । उदाहरण—अवश्यंमाव्य । इसमें भूधातुसे कृत्यप्रत्यय ण्यण् परे विद्यमान है

इस कारण अवश्यम्शब्दके अन्त्यवर्ण मकारका लोप करनेसे रूप नामसंज्ञामें सिद्ध हुआ । अवश्यभाव्यः । इसी प्रकार काम और मनस् शब्द पर होनेसे तुम्प्रत्ययके मकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । भोक्तुकामः । श्रोतुमनाः । हित, तत यह पर होनेसे सम् उपसर्गके मकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ । सहितम् । सततम् । और जहां सम् उपसर्गके मकारका लोप नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । संहितम् । संततम् । पच्धातुके युट्प्रत्यय और घञ्प्रत्ययके रूप पर होनेसे मांसशब्दके अन्त्यवर्ण अकारका लोप विकल्पकरके करनेसे सिद्ध हुआ । मांस्पचनम् । मांस्पाकः । एक जगह जहां अकारका लोप नहीं हुआ तहां । मांसपचनम् । मांसपाकः ॥

हनो वधादेशो ये ॥ ११७८ ॥ वध्यम् ॥

भाषा–हन्धातुसे यप्रत्यय होय और धातुको वध आदेश होय । उदाहरण– 'हन् हिंसागत्योः' धातुसे कर्मअर्थमें यप्रत्यय करनेपर धातुको वध आदेश किया तब सिद्ध हुआ । वध्यम् ॥

ऋदुपधात्क्यप् ॥ ११७९ ॥ ऋकारोपधाद्धातोः क्यप् ॥ कृती । कृत्यम् । वृत्यम् ॥

भाषा–ऋकार है उपधारूप जिस धातुका उस धातुसे क्यप्प्रत्यय होय भाव और कर्मअर्थके विषैं । उदाहरण–' कृती छेदने ' धातुका उपधारूप ऋकार है इस कारण कृतीधातुसे क्यप्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । कृत्यम् । इसी प्रकार ' वृतु वर्त्तने ' धातुसे क्यप्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । वृत्यम् ॥

कृपिचृत्योर्न ॥ ११८० ॥ कल्प्यम् । चृत दीप्तौ । चर्त्यम् ॥

भाषा–कृप्, चृती इन धातुओंसे क्यप्प्रत्यय नहीं होय । उदाहरण–' कृप् सामर्थ्ये, चृती हिंसायाम् ' इन धातुओंके उपधारूप ऋकार तौ है परन्तु निषेध होनेसे क्यप्प्रत्यय तौ हुआ नहीं ण्यत्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । कल्प्यम् । चर्त्यम् ॥

मृजो वा ॥ ११८१ ॥ मृज्यम् । मार्ग्यम् ॥

भाषा–मृजूष्धातुसे विकल्पकरके क्यप्प्रत्यय होय । उदाहरण–' मृजूष् शुद्धौ ' धातुसे एक जगह क्यप्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । मृज्यम् । और जहां क्यप्प्रत्यय नहीं हुआ तहां ण्यत्प्रत्यय करनेपर ' मृजेर्वृद्धिः ' इसकर वृद्धि की पश्चात् ' चजोः कगौ घिति ' इसकर जकारको गकार करनेपर सिद्ध हुआ । मार्ग्यम् ॥

भुवो भावे ॥ ११८२ ॥ नाम्न्युपपदे भुवो भावे क्यप् ॥ ब्रह्मणो भावः ब्रह्मभूयम् । नाम्नि किम् । भव्यम् ॥

घ्याणि क्वचित्कुत्वाभाव ॥ ११७५ ॥ याज्यम् । याच्यम् । वाच्यम् । रोच्यम् । अर्च्यम् ॥

भाषा–घ्यण्प्रत्यय पर हुए सते कहीं प्रयोगान्तरोंमें चवर्गको कवर्ग नहीं होय । उदाहरण–' यज देवपूजादौ, डुयाचृ याच्ञायाम्, वच परिभाषणे, रुच स्तुतौ ' इन धातुओंके जकार चकारको ' चजो कगौ घिति ' इसकर गकार ककार न होनेसे सिद्ध हुआ । याज्यम् । याच्यम् । वाच्यम् । रोच्यम् । अर्च्यम् ॥

ओरावश्यके ॥ ११७६ ॥ उवर्णान्तादावश्यकेऽर्थे घ्यण् ॥

भाषा–आवश्यक अर्थमें उवर्णान्त धातुसे घ्यण्प्रत्यय होय । उदाहरण–' अवश्य भवति ' इस विग्रहमें आवश्यक अर्थ विद्यमान है इस कारण अवश्यपूर्व भूधातुको उकारान्त होनेसे घ्यण्प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ अवश्य-भू-य फिर ' धातोर्नाम्नि ' इसकर धातुको वृद्धि की क्योंकि णित्प्रत्यय परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ अवश्य भौ-य फिर ॥

ओदौतोर्यस्स्वरवत् ॥ ११७७ ॥ ओकारौकारयोर्निमित्त य प्रत्यय स्वरवत् ॥ " लुम्पेदवश्यमः कृत्ये तुम्काममनसोरपि । समो वा हिततयोर्मांसस्य पचि युड्घञो ॥ अवश्य भाव्योऽवश्यभाव्य । भोक्तुकाम । भोक्तुमना । सहित संहितम् । सतत संततम् । मांसस्य पचनम् । मांसपचन मासपचन । मांसस्य पाक । मांसपाक मांसपाक ॥

भाषा–ओकार और औकार इन दोनोंका निमित्त जो कि यप्रत्यय है वह स्वरके समान होता है । भाव यह है कि जिस यप्रत्ययको आश्रयकरके गुणसे जहां ओकार और वृद्धिसे जहां औकार होता है तहां वह प्रत्यय स्वरके समान होता है । उदाहरण–अवश्य-भौ-य । इसमें घ्यण्प्रत्ययको निमित्तमात्रसे आश्रय कर धातुको औकार वृद्धि हुआ है इस कारण घ्यण्प्रत्ययको स्वरवत् जान ' औ आव् ' इसकर आव् करनेपर रूप सिद्ध हुआ अवश्यभाव्य । कृत्यसंज्ञक प्रत्यय पर हुए संते अवश्यम् निपातके अन्त्यवर्णका लोप करे और काम मनस् यह शब्द पर हुए संते तुम्प्रत्ययके अन्त्यवर्णका लोप करे और हित, तत यह शब्द पर हुए संते सम् उपसर्गके अन्त्य वर्णका लोप करे विकल्पकरके और पचधातुसे परे युट् घञ् यह प्रत्यय पर हुए संते मांसशब्दके अन्त्यवर्णका लोप करे विकल्प करके । उदाहरण–अवश्यमाव्य । इसमें भूधातुसे कृत्यप्रत्यय घ्यण परे विद्यमान है

प्रत्ययमें । वृष्यम् । और जहां क्यप्प्रत्यय नहीं हुआ तहां ण्यत्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । वर्ष्यम् ॥

पुष्यसिध्यौ नक्षत्रे ॥ ११८७ ॥ पुष्णन्ति कार्याण्यस्मिन्निति पुष्यः । सिध्यंति कार्याण्यस्मिन्निति सिध्यः ॥

भाषा-पुष्य, सिध्य यह क्यप्प्रत्ययान्त शब्द नक्षत्र अर्थ वाच्य हुए संते निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण-' पुष् पुष्टौ, षिधु गत्याम् ' इन धातुओंसे अधिकरणकारक अर्थके विषैं नक्षत्रअर्थ वाच्य होनेपर क्यप्रत्यय करनेसे सिद्ध हुआ पुष्यः । सिध्यः ॥

राजसूयादयः ॥ ११८८ ॥ राज्ञा सोतव्योऽभिषवद्वारा निष्पादयितव्यः । राजसूयः । सरत्याकाशे सूर्यः ॥

भाषा-राजसूय आदिक क्यप्प्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण-राजन्शब्द पूर्व ' षुञ् अभिषवे ' धातुसे क्यप्प्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । राजसूयः । ' सृ गतौ ' धातुसे क्यप्प्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । सूर्यः ॥

तव्यादयोऽर्हेऽर्थे विधा शक्तौ च वक्तव्याः ॥११८९॥ दर्शनार्हो द्रष्टव्यः दर्शनीयः दृश्यः । स्वाध्यायोऽध्येतव्यः अध्ययनीयः अध्येयः । श्रोतव्यः । मंतव्यः । वोढव्यः । तव्यादीनां कृत्यसंज्ञा । कृत्यक्तखलर्थाः प्रत्यया भावकर्मणोर्भवन्ति ॥

भाषा-अर्ह, विधि, शक्ति इन अर्थोंके विषैंभी तव्य आदि प्रत्यय धातुसे वक्तव्य हैं । उदाहरण-' दर्शनस्य अर्हः, दर्शनस्य शक्यः, दर्शनस्य विधेयः' इन विग्रहोंमें अर्ह, शक्ति, विधि यह अर्थ क्रमसे विद्यमान इस कारण इन तीनों अर्थोंके विषैं ' दृशिर् प्रेक्षणे ' धातुसे तव्यप्रत्यय किया तब धातुका अनिट् होनेसे इट् नहीं हुआ गुण करनेके पश्चात् ' रारो झसे दृशाम् ' इसकर ऋके स्थानमें र किया फिर ' छशष० ' इसकर षकार किया फिर 'ष्टुभिः ष्टुः' इसकर तकारको टकार किया तब सिद्ध हुआ । द्रष्टव्यः । और जहां अनीयप्रत्यय किया तहां गुण करनेपर सिद्ध हुआ । दर्शनीयः । और जहां क्यप्प्रत्यय किया तहां सिद्ध हुआ । दृश्यः । आधिपूर्व ' इङ् अध्ययने' धातुसे तव्यप्रत्यय किया तहां सिद्ध हुआ । अध्येतव्यः । अनीयप्रत्यय किया तहां । अध्ययनीयः । और जहां यप्रत्यय हुआ तहां । अध्येयः ॥ ' श्रु श्रवणे ' धातुसे तव्यप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । श्रोतव्यः । ' मन ज्ञाने '

भाषा–नाम उपपद हुए सते भूधातुसे भावअर्थमें क्यप्प्रत्यय होय । उदाहरण– 'ब्रह्मणो भावः' इस विग्रहमें ,ब्रह्मनपूर्व भूधातुसे भावअर्थमें क्यप्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । ब्रह्मभूयम् । जहां नाम उपपद न होवे वहां भूधातुसे क्यप्प्रत्यय नहीं होय किन्तु 'स्वराघ' इसकर यप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । भव्यम् ॥

इणस्तुभृदृवृशासुजुषृखन क्यप् च ॥ ११८३ ॥ इत्य । स्तुत्य । दृङ् आदरे । दृत्य । वृत्य । शासेरि । शिष्य । जुषी प्रीतिसेवनयो । जुष्य ॥

भाषा–इण्, स्तु, भृ, दृ, वृ, शासु, जुष, खन इन धातुओंसे क्यप्प्रत्यय होय । उदाहरण–'इण् गतौ' धातुसे क्यप्प्रत्यय करनेपर धातुको गुण तो हुआ नहीं क्योंकि कित्प्रत्यय परे विद्यमान है 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' इसकर तुक् आगम करनेपर सिद्ध हुआ । इत्य । 'ष्टुञ् स्तुतौ' धातुसे क्यप्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । स्तुत्य । 'दृङ् आदरे' धातुका । दृत्य । 'भृञ् मरणे' धातुका । भृत्य । 'वृञ् वरणे' धातुका । वृत्य । 'शासु अनुशिष्टौ' धातुसे क्यप्प्रत्यय करनेके अनन्तर 'शासेरि' इसकर शास्धातुके आकारको इकार कर पश्चात् 'षढोः कः सि' इसकर सकारको षकार किया तब सिद्ध हुआ । शिष्य । 'जुषी प्रीतिसेवनयो' धातुका । जुष्य । 'खन खनने' धातुसे क्यप्प्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ खन्‌य ॥

खन इत्व क्यपि ॥ ११८४ ॥ खेयम् ॥

भाषा–खन्धातुके नकारको इकार होय क्यप्प्रत्यय पर हुए सते । उदाहरण– खन्‌य । इसमें खन् धातुसे परे क्यप्प्रत्यय विद्यमान है इस कारण खन्धातुके नकारको इकार करनेपर 'अइ ए' इसकर एकार करनेसे सिद्ध हुआ । खेयम् ॥

भिद्योद्ध्यौ नदे ॥ ११८५ ॥ भिनत्ति कूलमिति भिद्य । उज्झति जलमित्युद्ध्य ॥

भाषा–भिद्य उद्ध्य यह शब्द क्यप्प्रत्ययान्त निपातसे सिद्ध होते हैं नदअर्थ वाच्य हुए सते । उदाहरण–'भिदिर् विदारणे, उज्झ त्यागे' इन धातुओंसे नदअर्थ वाच्य होनेपर क्यप्प्रत्यय करनेसे सिद्ध हुआ । भिद्य । उद्ध्य ॥

कृवृषोर्वा क्यप् ॥ ११८६ ॥ कृत्य कार्यम् । वृष्य वर्ष्यम् ॥

भाषा–कृञ्, वृष इन धातुओंसे क्यप्प्रत्यय विकल्पकरके होय । उदाहरण– 'डुकृञ् करणे' धातुसे एक जगह क्यप्प्रत्यय करनेपर 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' इसकर तुक् आगम किया वहां सिद्ध हुआ । कृत्यम् । और जहां क्यप्प्रत्यय नहीं हुआ वहां ण्यत्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । कार्यम् । 'वृषु सेचने' धातुका क्यप्

प्रत्ययमें । वृष्यम् । और जहां क्यप्प्रत्यय नहीं हुआ तहां ण्यत्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । वर्ष्यम् ॥

पुष्यसिध्यौ नक्षत्रे ॥ ११८७ ॥ पुष्यन्ति कार्याण्यस्मिन्निति पुष्यः । सिध्यंति कार्याण्यस्मिन्निति सिध्यः ॥

भाषा–पुष्य, सिध्य यह क्यप्प्रत्ययान्त शब्द नक्षत्र अर्थ वाच्य हुए संते निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण–' पुष पुष्टौ, षिधु गत्याम् ' इन धातुओंसे अधिकरणकारक अर्थके विषैं नक्षत्रअर्थ वाच्य होनेपर क्यप्रत्यय करनेसे सिद्ध हुआ । पुष्यः । सिध्यः ॥

राजसूयादयः ॥ ११८८ ॥ राज्ञा सोतव्योऽभिषवद्वारा निष्पादयितव्यः । राजसूयः । सरत्याकाशे सूर्यः ॥

भाषा–राजसूय आदिक क्यप्प्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं । उदाहरण–राजन्शब्द पूर्व ' षुञ् अभिषवे ' धातुसे क्यप्प्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । राजसूयः । ' सृ गतौ ' धातुसे क्यप्प्रत्यय करनेपर निपातसे सिद्ध हुआ । सूर्यः ॥

तव्यादयोऽर्हेऽर्थे विधौ शक्तौ च वक्तव्याः ॥११८९॥ दर्शनार्हो द्रष्टव्यः दर्शनीयः दृश्यः । स्वाध्यायोऽध्येतव्यः अध्ययनीयः अध्येयः । श्रोतव्यः । मंतव्यः । वोढव्यः । तव्यादीनां कृत्यसंज्ञा । कृत्यक्तखलर्थाः प्रत्यया भावकर्मणोर्भवन्ति ॥

भाषा–अर्ह, विधि, शक्ति इन अर्थोंके विषैंभी तव्य आदि प्रत्यय धातुसे वक्तव्य हैं । उदाहरण–' दर्शनस्य अर्हः, दर्शनस्य शक्यः, दर्शनस्य विधेयः' इन विग्रहोंमें अर्ह, शक्ति, विधि यह अर्थ क्रमसे विद्यमान इस कारण इन तीनों अर्थोंके विषैं ' दृशिर् प्रेक्षणे ' धातुसे तव्यप्रत्यय किया तब धातुका अनिट् होनेसे इट् नहीं हुआ गुण करनेके पश्चात् ' रारो झसे दृशाम् ' इसकर ऋके स्थानमें र किया फिर ' छशष० ' इसकर षकार किया फिर 'ष्टुभिः ष्टुः' इसकर तकारको टकार किया तब सिद्ध हुआ । द्रष्टव्यः । और जहां अनीयप्रत्यय किया तहां गुण करनेपर सिद्ध हुआ । दर्शनीयः । और जहां क्यप्प्रत्यय किया तहां सिद्ध हुआ । दृश्यः । आधिपूर्व ' इङ् अध्ययने' धातुसे तव्यप्रत्यय किया तहां सिद्ध हुआ । अध्येतव्यः । अनीयप्रत्यय किया तहां । अध्ययनीयः । और जहां यप्रत्यय हुआ तहां । अध्येयः । ' श्रु श्रवणे ' धातुसे तव्यप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । श्रोतव्यः । ' मन ज्ञाने '

धातुका । मन्तव्य । ' वह प्रापणे ' धातुसे तव्यप्रत्यय करनेपर ' हो ढः, तथोर्धः, ष्टुभिः०, ढि ढो लोपो दीर्घश्च, सहिवहोरोदवर्णस्य ' इनकर सिद्ध हुआ । वोढव्य । तव्य आदिक प्रत्ययोंकी कृत्यसंज्ञा है । भाव यह है कि तव्यप्रत्ययसे लेकर क्यप्प्रत्ययपर्यन्त जो कि प्रत्यय कहे हैं उनकी कृत्यसंज्ञक है । कृत्यसंज्ञक प्रत्यय, क्तप्रत्यय, खलर्थप्रत्यय भाव और कर्मअर्थमेंही होते हैं ॥

स्त्रियां यजां भावे ॥ ११९० ॥ यजादेर्धातो स्त्रियां भावे क्यप् । इज्या । व्रज्या । समज्या । निषद्या । निपत्या । मन्या । विद्या । सुत्या । शय्या । भृत्या । इत्या । कृत्या ॥

भाषा—यज आदिक धातुओंसे भावअर्थमें तथा कर्तृवर्जित कारकअर्थमें स्त्रीलिङ्गके विषै क्यप्प्रत्यय होय । उदाहरण—' यज देवपूजादौ ' धातुसे भावअर्थमें स्त्रीलिंगके विषै क्यप्प्रत्यय करनेपर ' यजां किति ' इसकर सम्प्रसारण किया तब सिद्ध हुआ । इज्या । ' व्रज गतौ ' धातुका । व्रज्या । ' समजन्त्यस्याम् ' इस विग्रहमें अधिकरणकारक अर्थ विद्यमान है इस कारण सम्पूर्व ' अज व्यक्त्यादौ ' धातुसे स्त्रीलिंगमें क्यप्प्रत्यय करनेपर ' नो लोपः ' इसकर नकारका लोप किया तब सिद्ध हुआ । समज्या । ' निषीदन्त्यस्याम् ' इस विग्रहमें अधिकरणकारक अर्थ विद्यमान है इस कारण निपूर्व ' षद्लृ विशरणादौ ' धातुसे स्त्रीलिंगमें क्यप्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । निषद्या । ' निपतन्त्यस्याम् ' इस विग्रहमें अधिकरण अर्थ विद्यमान है इस कारण निपूर्व ' पतॢ पतने ' धातुसे स्त्रीलिंगमें क्यप्प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । निपत्या । ' मन्यतेऽनया ' इसमें करणकारण अर्थ विद्यमान है इस कारण ' मन ज्ञाने ' धातुसे स्त्रीलिंगमें क्यप्प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । मन्या । ' विदन्त्यनया ' इस विग्रहमभी करणकारक अर्थ विद्यमान है इस कारण ' विद ज्ञाने ' धातुसे क्यप्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । विद्या । षुञ् अभिषवे ' धातुसे स्त्रीलिंगमें क्यप्प्रत्यय करनेके अनन्तर ' ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् ' इसकर तुक् आगम किया तब सिद्ध हुआ । सुत्या । ' शेरतेऽस्याम् ' इस विग्रहमें ' शीङ् स्वपने ' धातुसे क्यप्प्रत्यय करनेपर शीङो यङ् ये क्ङिति ' इसकर सिद्ध हुआ । शय्या । ' भृञ् धारणादौ ' का । भृत्या । ' ईयतेऽनया ' इस विग्रहमें ' इण गतौ धातुका । इत्या । ' डुकृञ् करणे ' धातुका । कृत्या ॥

कृञो यश्वा ॥ ११९१ ॥ अयकि ॥ क्रिया । इषेरिच्छेति निपात इषेरप् च्छत्वादेश । इच्छा । सर्वेर्गुण । परिसर्या । अटाट्या । आस्या । जागर्तेर्गुण । जागर्या ॥

भाषा–कृञ्धातुसे विकल्पकरके यक्प्रत्यय होय भावअर्थके विषें । उदाहरण–कृञ्धातुसे भावअर्थमें यक् प्रत्यय करनेपर 'अयकि' इसकर स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । क्रिया । इष्धातुका भावअर्थमें इच्छा रूप निपातसे सिद्ध होता है । भाव यह है कि इष्धातुसे अप्रत्यय होय और षकारको छकार आदेश होय । उदाहरण–सुगम है कि सृधातुसे शप्रत्यय होय और धातुको गुण होय । उदाहरण–'सृ गतौ' धातुसे भावअर्थमें शप्रत्यय करनेके अनन्तर 'शिति चतुर्वत्' इसकर यक्प्रत्यय करनेपर गुण करनेमे स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । परिसर्य्या । 'अट गतौ' धातुसे शप्रत्यय करनेके अनन्तर 'शिति चतुर्वत्' इसकर यक्प्रत्यय किया फिर निपातसे द्वित्व किया पश्चात् 'आबतः स्त्रियाम्' इसकर आप्प्रत्यय किया तब सिद्ध हुआ । अटाट्या । 'आस उपवेशने' धातुसे निपातसे यक्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । आस्या । 'जागृ निद्राक्षये' धातुसे यक्प्रत्यय करनेपर गुण करनेसे सिद्ध हुआ । जागर्या ॥

हनस्तः ॥ ११९२ ॥ हत्या ॥

भाषा–उपसर्गवर्जित हन्धातुसे भावअर्थमें क्यप्प्रत्यय होय और नकारको तकार होय । उदाहरण–'हन् हिंसागत्योः' धातुसे भावमें स्त्रीलिंगके विषें क्यप्प्रत्यय करनेपर नकारको तकार किया तब सिद्ध हुआ । हत्या ॥

क्तिः ॥ ११९३ ॥ धातोः क्तिः स्त्रियां भावे ॥ कृतिः । बुद्धिः । स्मृतिः । अमान्तस्य दीर्घः । शान्तिः । दान्तिः । कान्तिः । क्षान्तिः । ह्वेञ् । हूतिः । ऊढिः । स्फीतिः ॥

भाषा–स्त्रीलिंगके विषें भाव और कर्मकारकादिमें धातुसे क्तिप्रत्यय होय । उदाहरण–डुकृञ्धातुसे भावअर्थमें स्त्रीलिंगमें क्तिप्रत्यय किया तब प्रत्ययको कित् होनेसे सिद्ध हुआ । कृतिः । 'बुध अवगमने' धातुसे क्तिप्रत्यय करनेके अनन्तर 'तथोर्धः' इसकर तकारको धकार किया फिर 'झबे जबाः' इसकर सिद्ध हुआ । बुद्धिः । 'स्मृ चिन्तायाम्' धातुका । स्मृतिः । 'शमु दमु उपशमे' धातुसे क्तिप्रत्यय करनेके अनन्तर 'अमान्तस्योपधाया दीर्घः कौ झसादौ' इसकर उपधाको दीर्घ करनेपर सिद्ध हुआ शान्तिः । दान्तिः । 'कमु कान्तौ' धातुका । कान्तिः । 'क्षमूष् सहने' धातुका । क्षान्तिः । ह्वेञ्धातुसे क्तिप्रत्यय करनेपर संप्रसारण करनेसे सिद्ध हुआ । हूतिः । 'वह प्रापणे' धातुसे क्तिप्रत्यय करनेके अनन्तर संप्रसारण किया फिर 'हो ढः, तथोर्धः, ष्टुभिः०, ढि ढो लोपो दीर्घश्च' इनकर सिद्ध हुआ । ऊढिः । 'स्फायी वृद्धौ' धातुसे क्तिप्रत्यय करनेके अनन्तर 'स्फायस्स्फीतिकिति' इसकर सिद्ध हुआ । स्फीतिः ॥

इवत्त्योर्नेट् ॥ ११९४ ॥ मशीति ॥

भाषा—इवप्रत्याहारादि प्रत्ययको और क्तिप्रत्ययको इट् नहीं होय । उदाहरण—सम् उपसर्ग पूर्व ' शीङ् स्वप्ने ' धातुसे क्तिप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको सेट् होनेपरभी निषेध होनेसे इट् नहीं हुआ फिर गुणभी नहीं हुआ क्योंकि क्तिप्रत्यय परे विद्यमान है तब सिद्ध हुआ । सशीति ॥

ग्रहादानामिट् ॥ ११९५ ॥ निगृहीति ॥

भाषा—ग्रहादि धातुओंसे परे क्तिप्रत्ययको इट् होय । उदाहरण—' ग्रह उपादाने ' धातुसे क्तिप्रत्ययको इट् किया फिर ' ईटो ग्रहाम् ' इसकर दीर्घ कर सम्प्रसारण किया तब सिद्ध हुआ । निगृहीति ॥

ग्लादेर्निः॥११९६॥ग्लानि । म्लानि । त्वरतेर्वस्योरूत्वम् । तूर्णि ।

भाषा—ग्लै आदिक धातुओंसे निप्रत्यय होय भावअर्थमें स्त्रीलिंगके विषै । उदाहरण—' ग्लै म्लै हर्षक्षये ' इन धातुओंसे भावअर्थमें निप्रत्यय करनेपर ' सन्ध्यक्षराणामानपि ' इसकर आकार किया तब सिद्ध हुआ । ग्लानि । म्लानि । ' त्रिरवरा संभ्रमे ' धातुसे निप्रत्यय करनेपर ' ज्वरत्वरस्रिव्यविमवामुपधायाश्च योरूट् ' इसकर उपधारूप अकार और वकार दोनोंके स्थानमें ऊकार कर ' रषृभ्यो णोऽन्त्ये ' इसकर नकारको णकार किया तब सिद्ध हुआ । तूर्णि ॥

ऋल्वादिभ्य क्तेर्निः ॥११९७॥कीर्णि । गीर्णि । लूनि । धूनि ॥

भाषा—ऋकारान्त' और लूञ् आदिक धातुओंसे क्तिप्रत्ययको निआदेश होय उदाहरण—' कॄ विक्षेपे, गॄ निगरणे ' यह धातु ऋकारान्त हैं इस कारण इन धातुओंसे क्तिप्रत्ययको नि आदेश करनेके अनन्तर ' ऋत इर्, य्वोर्विहसे, रषृना० ' इनकर सिद्ध हुआ । कीर्णि । गीर्णिः । ' लूञ् छेदने , धूञ् कम्पने ' इन धातुओंसे क्तिप्रत्ययको नि आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । लूनि । धूनि ॥

सपदादेः क्विप्वा ॥११९८॥ सपदन सम्पत् । सपत्ति । कचरि क्विः ॥

पूर्व पदधातुसे भावअर्थमें स्त्रीलिंगके विषै विकल्पकरके क्विप्प्रत्यय होय । उदाहरण—सम्पूर्व ' पद गतौ ' धातुसे जहां क्विप् हुआ तहां ' वेः ' इसकर क्विप्प्रत्ययका लोप किया तब सिद्ध हुआ । सपत् । और जहां क्तिप्रत्यय हुआ तहां । सपत्ति ॥

सज्ञायाम् ॥११९९॥ प्रकुरुते इति प्रकृति ॥

भाषा—धातुसे कर्ममर्थके विषै क्तिप्रत्यय होय सज्ञा वाच्य हुए संते । उदाहरण—' प्रकुरुते ' इस विग्रहमें डुकृञ्धातुसे क्तिप्रत्यय करनेपर संज्ञा वाच्य होनेसे सिद्ध हुआ । प्रकृतिः ॥

षिद्भिदादिभ्योऽङ् ॥ १२०० ॥ षितो धातोर्भिदादेश्च स्त्रियामङ् ॥
पचा । मृजा । भिदा ॥

भाषा—षकार है इत्संज्ञक जिसका उस धातुसे और भिदिर् आदिक धातुओंसे स्त्रीलिंगके विषैं भावअर्थ अङ्प्रत्यय होय । उदाहरण–' डुपचष् पाके, मृजूष् शुद्धौ ' इन धातुओंका षकार इत्संज्ञक है इस कारण स्त्रीलिंगके विषैं भावअर्थमें अङ्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । पचा । मृजा । ' भिदिर् विदारणे ' धातुसे अङ्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । भिदा ॥

ऋदृतोऽङि गुणः ॥ १२०१ ॥ जरा । छिदा । क्षिपा । गुहा ॥

भाषा—ऋकारान्त धातुको गुण होय अङ्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण– ' जॄषिर् वयोहानौ ' धातुका षकार इत् है इस कारण अङ्प्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको गुण किया तब सिद्ध हुआ । जरा । ' छिदिर् द्वैधीकरणे, क्षिप् प्रेरणे, गुहू संवरणे ' यह धातु भिदादि हैं इस कारण इन धातुओंसे अङ्प्रत्यय करनेपर स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ । छिदा । क्षिपा । गुहा ॥

गुरोर्हसात् ॥ १२०२ ॥ गुरुमतो हसान्तात्स्त्रियामङ् न क्तिः ॥
ईहा । ऊहा । कुण्डा ॥

भाषा—गुरु अक्षर है विद्यमान जिसके विषैं ऐसे हसान्तधातुसे स्त्रीलिंगमें भावअर्थके विषैं अङ्प्रत्यय होय न कि क्तिप्रत्यय । उदाहरण–' ईह चेष्टायाम्, ऊह वितर्के ' इन धातुओंमें गुरुसंज्ञक अक्षर ईकार और ऊकार विद्यमान है इस कारण इन धातुओंसे स्त्रीलिंगमें अङ्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । ईहा । ऊहा । ' कुडि दाहे ' धातुमें ' इदितो नुम् ' इसकर नुम् आगम किया तब उकार गुरुसंज्ञक विद्यमान है क्योंकि उकारसे परे संयोग अक्षर है इस कारण इस धातुसे स्त्रीलिंगमें अङ्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । कुण्डा ॥

प्रत्ययांतात् ॥ १२०३ ॥ स्त्रियामङ् ॥ चिकीर्षा । लोलूया ।
कण्डूया । पुत्रकाम्या ॥

भाषा—प्रत्ययान्त धातुसे स्त्रीलिंगके विषैं अङ्प्रत्यय होय । उदाहरण–' डुकृञ् करणे ' धातुसे सप्रत्यय करनेपर रूप हुआ चिकीर्ष यह धातु सप्रत्ययान्त है इस कारण स्त्रीलिंगमें अङ्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । चिकीर्षा । ' लूञ् छेदने ' धातुसे यङ्प्रत्यय करनेपर रूप हुआ लोलूय यह धातु यङ्प्रत्ययान्त है इस कारण स्त्रीलिंगमें इस धातुसे अङ्प्रत्यय करनेसे सिद्ध हुआ । लोलूया । ' कण्डूञ् गात्रविघर्षणे ' धातुसे ' कण्ड्वादिभ्यो यक् ' इसकर यक्प्रत्यय

करनेपरस्-रूप हुआ कण्डूय यह धातु यक्प्रत्ययान्त है इससे अप्रत्यय करनेसे सिद्ध हुआ। कण्डूया। 'पुत्रमिच्छति' इस विग्रहमें पुत्रशब्दसे काम्यप्रत्यय करनेपर रूप हुआ पुत्र-काम्य यह काम्यप्रत्ययान्त नामधातुसे है इससे स्त्रीलिंगमें अप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ। पुत्रकाम्या॥

धात्वर्थनिर्देशे ण्वुण् वक्तव्य ॥ १२०४ ॥ आशिका । शायिका ॥

भाषा—धातुके अर्थमात्रके कथनमें धातुसे स्त्रीलिंगमें ण्वुण्प्रत्यय वक्तव्य है। उदाहरण—अश्, शीङ् इन धातुओंके अर्थमात्रके कथनमें इन धातुओंसे स्त्रीलिंगमें ण्वुण्प्रत्यय किया तब प्रत्ययको णित् होनेसे 'अत उपधाया, धावोर्नामिनः' इन कर वृद्धि की पश्चात् 'युवोरनाकौ' इसकर प्रत्ययको अक आदेश किया तदनन्तर स्त्रीलिंगमें आप्प्रत्यय करनेपर 'कप्यत' इसकर सिद्ध हुआ। आशिका। शायिका॥

इक्श्तिपौ धातुनिर्देशे ॥ १२०५ ॥ पचि । पचति ॥

भाषा—धातुके कथनमात्रमें धातुसे इक् श्तिप् यह प्रत्यय होय। इक्प्रत्ययमें ककार गुण निषेधके अर्थ है श्तिप्में शकार श्तिकार्यके अर्थ है और पकार पित् कार्यके अर्थ है। उदाहरण—पचधातुके कथनमात्रमें पच्धातुसे जहां इक्प्रत्यय हुआ वहां सिद्ध हुआ। पचि। और जहां श्तिप्प्रत्यय हुआ वहां 'शिति धातुर्वत्' इसकर अप्प्रत्यय किया पश्चात् रूप सिद्ध हुआ। पचति॥

ण्यन्तार्थासश्रन्थघट्टिवन्दिविदिइषिभ्य स्त्रियां युः ॥ १२०६ ॥

कारणा। अर्थना। आसना। श्रन्थना। घट्टना। वन्दना। वेदना। एषणा॥

भाषा—णिप्रत्ययान्त अर्थ, आस, श्रंथ, घट, वन्दि, विद, इष् इन धातुओंसे स्त्रीलिंगके विषै युप्रत्यय होय अप्रत्ययका अपवाद होय। उदाहरण—'डुकृञ् करणे' धातुसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर स्त्रीलिंगमें युप्रत्यय किया तब 'युवोरनाकौ' इसकर युप्रत्ययको अन आदेश किया पश्चात् 'णे' इसकर णिप्रत्ययका लोप किया तब सिद्ध हुआ। कारणा। 'अर्थयति' इस विग्रहमें 'अर्थ याच्ञायाम्' धातुसे युप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। अर्थना। 'आस्यन्तेऽस्याम्' इस विग्रहमें 'आस उपवेशने' धातुसे युप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। आसना। 'श्रथ संदर्भे' धातुका। श्रंथना। 'घट चेष्टायाम्' धातुका। घटना। 'वदि अभिवादनस्तुत्योः' धातुका। वन्दना। 'विद्लृ लाभे' धातुका। वेदना। 'इष् गतौ' धातुका। एषणा॥

इञ् अजादिभ्य ॥ १२०७ ॥ आजि । आति ॥

भाषा—अज आदिक धातुओंसे इञ्प्रत्यय होय स्त्रीलिंगके विषै प्रत्ययमें ञकार वृद्धिके अर्थ है। उदाहरण—'अज गत्यादौ, अत सातत्यगमने' इन धातुओंसे

इञ्प्रत्यय करनेपर ' अत उपधायाः ' इसकर वृद्धि की तब सिद्ध हुआ । आजिः । आतिः ॥

विभाषाख्यानपरिप्रश्नयोरिञ्च ॥ १२०८॥ का त्वं कारिं कारिकां कृत्यां कृतिं वाऽकार्षीः इति प्रश्ने पाचिं पाचिकां पचां पक्तिं वाऽकार्षम् । इत्याख्यानेऽपि । आक्रोशे नञ्यनिः ॥ अकरणिः । अजननिः ॥

भाषा—आख्यान और परिप्रश्न अर्थ वाच्य हुए संते धातुसे इञ्प्रत्यय होय और चकारसे वुञ्प्रत्यय विकल्पकरके होय । उदाहरण परिप्रश्न प्राप्त होनेपर ' डुकृञ् करणे ' धातुसे भावअर्थमें स्त्रीलिंगके विषें इञ् वुञ् प्रत्यय करनेपर ञित्प्रत्यय पर होनेसे धातुको वृद्धि की पश्चात् ' युवोरनाकौ काप्यतः ' इनकर सिद्ध हुआ । कारिं, कारिकाम् । आख्यान अर्थ प्राप्त होनेपर डुपचष् धातुसे इञ्, वुञ् प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । पाचिं, पाचिकाम् । आक्रोश अर्थके विषें नञ् अव्यय पूर्वपद हुए संते धातुसे अनिप्रत्यय होय । उदाहरण—' हे शठ मा करणं वा मा जननं ते स्यात् ' इस विग्रहमें शापअर्थ विद्यमान है इस कारण नञ्पूर्व डुकृञ्, जनी इन धातुओंसे भावअर्थमें अनिप्रत्यय करनेपर ' नासमासे ' इसकर नञ्के स्थानमें अकार आदेश करनेपर सिद्ध हुआ । अकरणिः । अजननिः ॥

इक् कृष्यादिभ्यः ॥ १२०९ ॥ कृषिः । गिरिः ॥

भाषा—कृष् आदिक धातुओंसे इक्प्रत्यय होय प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण—' कृष् विलेखने ' धातुसे इक्प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । कृषिः । ' गॄ निगरणे ' धातुसे इक्प्रत्यय करनेपर ' ऋत इद् ' इसकर सिद्ध हुआ । गिरिः ॥

पूर्वकाले क्त्वा ॥१२१०॥ धातोः समानकर्तृके धातौ प्रयुज्यमाने पूर्वकालेऽर्थे क्त्वा प्रत्ययः ॥

भाषा—पूर्वकालअर्थके विषें क्रियावचन है जिस धातुका उस धातुसे क्त्वाप्रत्यय होय भावअर्थमें समानकर्त्तृवाला धातु प्रयुक्त हुए संते । भाव यह है कि जिस धातुसे कि क्त्वा प्रत्यय विधान किया जाता है उस धातुके क्रियाका कर्त्ता जिस धातुका कर्ता होय उस धातुके प्रयुक्त होनेपर क्त्वाप्रत्यय होय प्रत्ययमें ककार गुणनिषेधके अर्थ है । उदाहरण—' स्नात्वा भुंक्ते ' इस विग्रहमें स्नान और भोजन इन दोनों क्रियाओंका एक कर्त्ता है और भोजन क्रियासे स्नान क्रिया पूर्वकालमें हुई है इस कारण ' स्ना शौचे ' धातुसे क्त्वाप्रत्यय किया है क्योंकि उसी कर्तृवाली भोजनार्थ क्रिया परे विद्यमान है ॥

क्त्वा सेट् किन्न ॥१२११॥ धातो सेट् क्त्वा किन्न ॥ मर्दित्वा । शयित्वा ॥

भाषा– धातुसे इट्युक्त क्त्वाप्रत्यय कित्संज्ञक नहीं होता है । उदाहरण–'मृद मर्दने' धातुसे क्त्वाप्रत्यय न० अनन्तर 'कृत' इसकर इट् आगम किया फिर धातुको गुण किया क्योंकि धातुसे सेट् क्त्वाप्रत्यय सो कित् होताही नहीं फिर नामसंज्ञामें 'क्त्वायन्त च' इसकर विभक्तिमात्रका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । मर्दित्वा । 'शीङ् शयने' धातुसे क्त्वाप्रत्यय करनेपर इट् किया पश्चात् सेट् क्त्वा प्रत्ययको कित् न होनेसे सिद्ध हुआ । शयित्वा ॥

मृडमृदगुधकुषक्लिशवदवसरुदविदमुषग्राहिभ्यः कित् ॥१२१२॥ मृडित्वा । मृदित्वा । गुधित्वा । कुषित्वा । क्लिशित्वा । उदित्वा । उषित्वा । रुदित्वा । विदित्वा । मुषित्वा । गृहीत्वा ॥

भाषा–मृड, मृद, गुध, कुष, क्लिश, वद, वस, रुद, विद, मुष, ग्रह इन धातुओंसे इट्युक्त क्त्वाप्रत्यय कित्संज्ञक होता है । उदाहरण–'मृड सुखे, मृद मर्दे, गुध परिवेष्टने रोषे च, कुष निष्कर्षे, क्लिश हिंसायाम्' इन धातुओंसे क्त्वाप्रत्यय करनेके अनन्तर इट् करनेपर क्त्वाप्रत्ययको कित् होनेसे 'उपधाया लघो' इसकर गुण नहीं हुआ तब सिद्ध हुआ । मृडित्वा । मृदित्वा । इत्यादि । 'वद व्यक्तायां वाचि, वस निवासे' इन धातुओंसे क्त्वाप्रत्ययको इट् करनेपर क्त्वाप्रत्ययको कित् होनेसे 'यजां०' इसकर सम्प्रसारण किया तब सिद्ध हुआ । उदित्वा । उषित्वा । 'रुदिर् अश्रुविमोचने, विद ज्ञाने, मुष स्तेये' इन धातुओंसे सेट् क्त्वाप्रत्ययको कित् होनेसे गुण न होनेपर सिद्ध हुआ । रुदित्वा । इत्यादि । 'ग्रह उपादाने' धातुसे क्त्वाप्रत्ययको इट् किया पश्चात् प्रत्ययको कित् होनेसे संप्रसारण किया फिर 'ईटो ग्रहाम्' इसकर इट्को दीर्घ किया तब सिद्ध हुआ । गृहीत्वा ॥

नोपधात्थफान्ताद्वा ॥ १२१३ ॥ कित् । ग्रथित्वा ग्रन्थित्वा । गुफित्वा गुम्फित्वा ॥

भाषा–नकार है उपधारूप जिनका ऐसे थकारान्त वा फकारान्त धातुसे विकल्पकरके इट्युक्त क्त्वाप्रत्यय कित्संज्ञक होता है । उदाहरण–'ग्रंथ संदर्भे, गुम्फ गुम्फने' इन धातुओंका उपधारूप नकार है और इनके अन्तम थकार और फकार है इस कारण इन धातुओंसे इट्युक्त प्रत्यय कित् विकल्पकरके होनेसे 'नो लोप' इसकर नकारका लोप किया तब सिद्ध हुआ । ग्रथित्वा । गुफित्वा । और जहां कित् नहीं है वहां नकारका लोप नहीं होनेसे सिद्ध हुआ । ग्रंथित्वा । गुम्फित्वा ॥

अलंखल्वोः प्रतिषेधे ॥ १२१४ ॥ अलंभुक्त्वा । खलुकृत्वा ॥

भाषा—प्रतिषेधअर्थके विषैं विद्यमान अलं, खलु यह शब्द उपपद हुए संते धातुसे क्त्वाप्रत्यय होय । उदाहरण—प्रतिषेधार्थक अलंपूर्व ' भुज पालनादौ ' धातुसे क्त्वाप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अलंभुक्त्वा । प्रतिषेधार्थक खलुपूर्व ' डुकृञ् करणे ' धातुसे क्त्वाप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । खलुकृत्वा ॥

उदितः क्त्वो वेट् ॥ १२१५ ॥ एषित्वा इष्ट्वा भ्रमित्वा भ्रान्त्वा ॥

भाषा—उकार है इत्संज्ञक जिसका ऐसे धातुसे परे क्त्वाप्रत्ययको विकल्पकरके इट् होय । उदाहरण—' इषु इच्छायाम् ' धातुका उकार इत् है इस कारण क्त्वाप्रत्ययको विकल्पकरके जहां इट् किया तहां गुण करनेपर रूप सिद्ध हुआ । एषित्वा । और जहां इट् नहीं हुआ तहां क्त्वाप्रत्ययको कित् होनेसे गुण तौ हुआ नहीं किन्तु ' ष्टुभिः ष्टुः ' इसकर सिद्ध हुआ । इष्ट्वा । ' भ्रमु अनवस्थाने ' धातुकाभी उकार इत् है इस कारण इससे क्त्वाप्रत्ययको जहां इट् किया तहां सिद्ध हुआ । भ्रमित्वा । और जहां इट् नही हुआ तहां ' अनुनासिकस्य क्विझलोः क्ङिति दीर्घः ' इसकर दीर्घ किया तब सिद्ध हुआ । भ्रान्त्वा ॥

अदो जग्धिः ॥ १२१६ ॥ जग्ध्वा ॥

भाषा—अदधातुको जग्ध आदेश होय क्त्वाप्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—' अद भक्षणे ' धातुसे क्त्वाप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुको अनिट् होनेसे इट् तौ हुआ नहीं किन्तु अद्को जग्ध् आदेश करनेपर ' झषस्तथोर्धोऽधः ' इसकर प्रत्ययके तकारको धकार किया तत्पश्चात् ' झलां जश् झशि ' इसकर धकारको गकार किया तब सिद्ध हुआ । जग्ध्वा ॥

समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् ॥ १२१७ ॥ समासे सति पूर्वकाले क्यप् समानकर्तृके धातौ प्रयुज्यमाने ॥ सम्भूत्य करोति । प्रणम्य गच्छति । अनञ्पूर्व इत्येके । अकृत्वा ॥

भाषा—पूर्व कालके विषैं क्रियावचन है जिस धातुका उस धातुसे क्यप् प्रत्यय होय समानकर्तृवाला धातु प्रयुक्त हुए संते नञ्वर्जित अव्ययके साथ समास होनेपर । भाव यह है कि नञ्वर्जित अव्ययके साथ जिस धातुका समास होवे और वह धातु पूर्वकाल अर्थके विषैं विद्यमान होवे तौ उस धातुसे क्यप्प्रत्यय होय जो जिस धातुसे क्यप्प्रत्यय होता है उस धातुके क्रियाका कर्त्ता जिस धातुका कर्त्ता होय वह धातु पर हुए संते होवे तौ । उदाहरण—' सम्भूत्य करोति ' इस विग्रहमें संभरण क्रिया और करणक्रिया दोनोंका एक कर्त्ता है और करणक्रि-

याते समरणक्रिया पूर्व हुई है और समरण क्रियार्थे क्यप्प्रत्ययान्त मृत्यशब्दका प्रउपसर्गके साथ ' नाम्नम कृता० ' इसकर समास हुआ है इस कारण समपूर्व प्रउपसर्ग पूर्व णमुधातुसे ' मृञ् मरणे ' धातुसे क्यप्प्रत्यय किया है इसी प्रकार प्रउपसर्ग पूर्व णमुधातुसे क्यप्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ है । प्रणम्य गच्छति । कोई एक आचार्य कहते हैं जिस धातुसे नञ्अव्यय पूर्व होय उस धातुसे क्यप्प्रत्यय नहीं होता है तहां क्त्वाप्रत्यय होता है । उदाहरण—नञ्पूर्व डुकृञ्धातुसे क्यप्प्रत्यय तो हुआ नहीं किन्तु क्त्वाप्रत्यय करनेपर ' नासमासे ' इसकर सिद्ध हुआ । अकृत्वा ॥

मान्तानिटां धातूनां तु मस्य लोपो वा भवति क्यपि । वनतितनोत्यादीनां तु नित्यं नमस्य लोपः क्यपि ॥

भाषा—अनिट् जो मकारान्त धातु हैं उनके मकारका लोप विकल्पकरके होय क्यप्प्रत्यय पर हुए संते । वनु तनु इत्यादिक धातुओंके नमका लोप नित्यही होय क्यप्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—आङ्पूर्व ' गम्लृ गतौ ' धातुसे क्यप्प्रत्यय करनेके अनन्तर जहां मकारका लोप हुआ तहां ' ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् ' इसकर तुक् आगम किया तब नामसंज्ञामें ' क्त्वाद्यन्तं च ' इसकर विभक्तिका लोप करनेसे सिद्ध हुआ । आगत्य । और जहां मकारका लोप नहीं हुआ तहां । आगम्य । इसी प्रकार । प्रणत्य, प्रणम्य । ' हन हिंसागत्योः ' मन, तनु इन धातुके नकारका लोप नित्य करनेपर ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् ' इसकर तुक् आगम किया तहां सिद्ध हुआ । प्रहत्य । प्रमत्य । वितत्य ॥

क्यपि लघुपूर्वात्परस्य णेरय् ॥ १२१८ ॥ परिणमय्य । लघुपूर्वात्किम् । सधार्य ॥

भाषा—लघु स्वर है पूर्व जिससे ऐसे वर्णसे परे णिप्रत्ययको अय् आदेश होय क्यप्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण—परिउपसर्ग पूर्व ' णम् प्रह्वत्वे शब्दे च ' धातुसे णिप्रत्यय करनेके पश्चात् क्यप्प्रत्यय किया तब रूप स्थित हुआ परिणमिय्य फिर णिको अय् आदेश किया क्योंकि णकारसे पूर्व लघु इकार है तब सिद्ध हुआ । परिणमय्य । और जहां गुरु पूर्ववर्णसे परे णिप्रत्यय होय तौ अय् आदेश नहीं होय किन्तु लोप होय जैसे समपूर्व ' धृ धारणे ' धातुसे णिप्रत्यय करनेपर क्यप्प्रत्यय करनेसे रूप स्थित हुआ सधारिय्य इसमें जिस रकारसे परे णिप्रत्यय है उस रकारसे पूर्व गुरु अक्षर आकार है इस कारण णिको अय् आदेश तो हुआ नहीं किन्तु ' णेः ' इसकर णिका लोप करनेपर सिद्ध हुआ । सधार्य ॥

आप्नोतेर्वा ॥ १२१९ ॥ प्रापय्य प्राप्य ॥

भाषा-आप्लृधातुसे परे ञिप्रत्ययको अय् आदेश विकल्पकरके होय क्यप्प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण-प्रपूर्व 'आप्लृ व्याप्तौ' धातुसे ञिप्रत्यय करनेके पश्चात् क्यप्प्रत्यय किया तब एक जगह अय् आदेश किया तब सिद्ध हुआ । प्रापय्य । और एक जगह 'ञेः' इसकर ञिप्रत्ययका लोप करनेसे सिद्ध हुआ । प्राप्य ॥

क्यपीत्वाभावः ॥१२२०॥ प्रदाय । प्रधाय । प्रस्थाय । प्रसाय । मिनोतिमीनातीत्यात्वम् । प्रमाय । निमाय । एवं लीलीङोरात्वं वेत्यादि । विलीय । विलाय ॥

भाषा-क्यप्प्रत्यय पर हुए संते धातुको इकार वा ईकार नहीं होय । उदाहरण-प्रपूर्व 'डुदाञ् दाने, डुधाञ् धारणादौ' इन धातुओंसे क्यप्प्रत्यय करनेके अनन्तर 'दादेरिः, स्थामि' इसकर इकार ईकार न होनेसे सिद्ध हुआ । प्रदाय । प्रधाय । प्रपूर्व 'ष्ठा गतिनिवृत्तौ, षोऽन्तकर्मणि' इन धातुओंसे क्यप्प्रत्यय करनेके अनन्तर इकार ईकार न होनेसे सिद्ध हुआ । प्रस्थाय । प्रसाय । प्रपूर्व 'डुमिञ् प्रक्षेपे' धातुसे क्यप्प्रत्यय करनेपर 'मीनातिमिनोतिदीङां गुणवृद्धिविषये क्यपि चात्वम्' इसकर आकार करनेपर सिद्ध हुआ । प्रमाय । निपूर्व 'मीङ् हिंसायाम्' धातुसे क्यप्प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । निमाय । विपूर्व 'लीङ् श्लेषणे' धातुसे क्यप्प्रत्यय करनेपर 'लीलीङोरात्वं वा गुणवृद्धिविषये क्यपि चात्वम्' इसकर सिद्ध हुआ । विलीय । विलाय ॥

कालेऽपि क्वचित् ॥१२२१॥ नेत्रे संमील्य हसति । मुखं व्यादाय स्वपिति ॥

भाषा-कहीं प्रयोगान्तरमें तत्काल अर्थ विषै विद्यमान हुए धातुसे क्यप्प्रत्यय होय समानकर्तृवाला धातु प्रयुक्त हुए संते । उदाहरण-'नेत्रे संमिल्य हसति' इस विग्रहमें तत्काल अर्थ विद्यमान है क्योंकि जिस समय हँसता है उसी समय नेत्रोंको मीचता है इस कारण संपूर्व मील धातुसे क्यप्प्रत्यय हुआ है । 'मुखं व्यादाय स्वपिति' इस विग्रहमेंभी तत्काल अर्थ विद्यमान है इस कारण विआङ् पूर्व 'डुदाञ् दाने' धातुसे क्यप्प्रत्यय हुआ है ॥

पौनःपुन्ये णम्पदं द्विश्च ॥ १२२२ ॥ समानकर्तृकेषु धातुषु प्रयुज्यमानेषु पूर्वकाले धातोर्णम् क्त्वा च णमन्तस्य द्विर्वचनम् ॥ पायंपायं गच्छति । भोजंभोजम् । स्मारंस्मारम् । मितां ञ्यन्ताना-

• मिणि णमि च वा दीर्घः । गामगामम् । गमगमम् । लाभंलाभम् । लभंलभम् ॥

भाषा–पौन:पुन्य अर्थ वाच्य हुए संते पूर्वकालभावक विषै क्रियावचन है जिस धातुका उस धातुसे णमुप्रत्यय होय और चकारसे क्त्वाप्रत्ययभी होय समानकर्तावाला धातु प्रयुक्त होनेपर । भाव यह है वारंवार होनेवाले धात्वर्थके विषै जिस धातुसे कि णमुप्रत्यय होता है उस धातुके क्रियाका कर्ता जिस धातुका कर्ता हो यह धातु प्रयुक्त हुए संते धातुसे णमुप्रत्यय होय और क्त्वाप्रत्ययभी होय णमुप्रत्ययान्त पदको द्वित्व होय । उदाहरण–' पायंपायं गच्छति ' वारंवार पान करके जाता है इस विग्रहमें पौन:पुन्य अर्थ पाया है और पानक्रिया और गमनक्रियाका एकही कर्ता है और गमनक्रियासे पानक्रिया पूर्वकालमें की गई है इस कारण ' पा पाने ' धातुसे णमुप्रत्यय करनेके अनन्तर ' आतो युक् ' इसकर युक् आगम किया तब रूप हुआ पायम् फिर इस णमुप्रत्ययान्त पदको द्वित्व किया तब सिद्ध हुआ । पायंपायम् । और जहां णमुप्रत्यय नहीं हुआ वहां क्त्वा प्रत्यय करनेपर ' अपिदामागोस्थाकुपिबतीनामीः ' इसकर धातुके आकारको ईकार किया तब सिद्ध हुआ । पीत्वापीत्वा । ' भुज पालनादौ ' धातुसे णमुप्रत्यय करनेपर ' उपधाया लघोः ' इसकर गुण करनेसे सिद्ध हुआ । भोजंभोजम् । ' स्मृ चिन्तायाम् ' धातुसे णमु प्रत्यय करनेपर ' धातोर्नामिनः ' इसकर वृद्धि करनेपर सिद्ध हुआ । स्मारंस्मारम् । ' गम्लृ गतौ ' धातुसे णिप्रत्यय करनेके अनन्तर धातुके अमन्त होनेसे मित्संज्ञामें ' मितां ह्रस्वः ' इसकर ह्रस्व किया पश्चात् णमुप्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ गमि-अम् फिर ' णेः ' इसकर णिका लोप किया पश्चात् ' मितां ह्रस्वानामिणि णमि च वा दीर्घः ' इसकर एक जगह उपधाको दीर्घ किया तत्पश्चात् द्वित्व किया तब सिद्ध हुआ । गामंगामम् । और जहां उपधाको दीर्घ नहीं हुआ वहां सिद्ध हुआ । गमंगमम् । ' डुलभष् प्राप्तौ ' धातुसे णमुप्रत्यय करनेके अनन्तर ' लभेरिण्णमोर्नुम्वा ' इसकर एक जगह नुम् आगम किया तब सिद्ध हुआ । लम्भंलम्भम् । और जहां नुम् आगम नहीं हुआ वहां ' अत उपधायाः ' इसकर वृद्धि करनेपर सिद्ध हुआ । लाभंलाभम् ॥

कथमादिषु स्वार्थे कृञो णम् ॥ १२२३ ॥ कथंकारम् । अन्यथाकारम् । एवंकारम् । इत्थंकारं पठति । एवंकारं पठतीत्यर्थः ॥

भाषा–कथम् आदिक अर्थात् कथम्, अन्यथा, इत्थम्, एवम् इत्यादि शब्द उपपद हुए सन्ते स्वार्थमें कृञ्धातुसे णम्प्रत्यय होय । उदाहरण–जहां कथम् आदिक शब्दोंके अर्थमात्रका कथन हो वहां कथम् आदि शब्दोंको पूर्वसिद्ध

कर पश्चात् कृञ्धातुसे णमूप्रत्यय करे। जैसे कथंकारं पठति। कथं पठतीत्यर्थः। अन्यथाकारं भुंक्ते अन्यथा भुंक्ते इत्यर्थः। एवंकारं करोति। एवं करोतीत्यर्थः। इत्थंकारं वदति। इत्थं वदति इत्यर्थः॥

अग्रे प्रथमपूर्वेषूपपदेषु क्त्वाणमौ वा॥ १२२४॥ अग्रेभोजं व्रजति। अग्रेभुक्त्वा। प्रथमम्भोजं प्रथमम्भुक्त्वा। पूर्वम्भोजं पूर्वम्भुक्त्वा। पक्षे प्रत्ययाभावः। अग्रे भुंक्ते ततो व्रजति। आभीक्ष्ण्ये तु पूर्वेण नित्यमेव णम्। अग्रेभोजं भोजं भुक्त्वा भुक्त्वा वा व्रजति॥

भाषा–अग्रे, प्रथम, पूर्व यह उपपद हुए संते पूर्वकालके विषैं विद्यमान हुए धातुसे क्त्वा, णमु यह प्रत्यय विकल्पकरके होवे हैं समानकर्तृ धातु प्रयुक्त होवे तो। उदाहरण–अग्रेशब्द उपपद होनेसे 'भुज पालनादौ' धातुसे णमु, क्त्वा यह प्रत्यय किये क्योंकि भोजन क्रिया व्रजन क्रियासे पूर्व हुई है और भोजनक्रिया और व्रजनक्रिया दोनोंका एक कर्त्ता है तव रूप हुआ। अग्रेभोजम्। अग्रेभुक्त्वा। यहां पौनःपुन्य अर्थ नहीं है इसीसे णमूप्रत्ययान्तको द्वित्व नहीं हुआ इसी प्रकार शेष उदाहरण जानने। और जहां अग्रे आदिक शब्द उपपद होनेपर णमु क्त्वा यह प्रत्यय नहीं होंय तहां लट्आदिक प्रत्यय होवे हैं। जैसे 'अग्रे भुंक्ते ततो व्रजति' और पौनःपुन्य अर्थके विषैं 'पौनःपुन्ये णम्पदं०' इस पूर्वसूत्रकरके नित्यही णम्प्रत्यय वा क्त्वाप्रत्यय होता है॥

कर्मण्याक्रोशे कृञः खमुञ्॥ १२२५॥ चौरंकारमाक्रोशति। चौरशब्दमुच्चार्येत्यर्थः॥

भाषा–कर्मसंज्ञक शब्द उपपद हुए संते कृञ्धातुसे खमुञ्प्रत्यय होय आक्रोश अर्थ प्राप्य होनेपर। प्रत्ययमें खकार 'खिति पदस्य मुम्' इसकर मुम् आगमके अर्थ है और ञकार वृद्धिके अर्थ और उकार उच्चारणार्थ है। उदाहरण–कर्मसंज्ञक चौरशब्द पूर्व होनेसे कृञ्धातुसे खमुञ्प्रत्यय किया क्योंकि आक्रोशार्थ आक्रोशति क्रिया विद्यमान है तव 'खिति पदस्य मुम्' इसकर पूर्वपदको मुम् किया पश्चात् कृञ्धातुको वृद्धि किया तव सिद्ध हुआ। चौरंकारमाक्रोशति॥

च्व्यर्थेषु स्वाद्वर्थे॥ १२२६॥ कृञो णम्स्यादेककर्तृकयोः पूर्वकाले पूर्वपदस्य मान्तत्वं निपात्यते॥ अस्वादुं स्वादुं कत्वा भुंक्ते। स्वादुंकारं भुंक्ते। संपन्नंकारम्। लवणंकारम्। सम्पन्नलवणशब्दौ स्वादुपर्यायौ। क्त्वापि। स्वादुं कत्वा भुंक्ते॥

भाषा–ख्मिप्रत्ययका अर्थ विद्यमान है जिनके विषैं ऐसे स्वादुपर्याय शब्द उपपद हुए संते एककर्तृवाले दो धातुओंके मध्यमें पूर्वकालके विषैं विद्यमान हुए कृञ्धातुसे णम्प्रत्यय होय और पूर्वपदको मकारान्तता निपातसे होते हैं । उदाहरण–' अस्वादुं स्वादुं कृत्वा भुङ्क्ते ' इस विग्रहमें ख्मिप्रत्ययार्थ स्वादुशब्द उपपद है । कृञ्, भुज इन दोनों धातुओंका एक कर्ता है और भोजनक्रियासे करणक्रिया पूर्वकालमें हुई है इस कारण स्वादुपूर्व कृञ्धातुसे णम्प्रत्यय करनेके अनन्तर पूर्वपद स्वादुको मकारान्तता निपातसे हुई फिर कृञ्धातुको ' धातोर्नामिन ' इसकर वृद्धि की तब सिद्ध हुआ । स्वादुंकारं भुंक्ते । सम्पन्नलवण शब्द स्वादुपर्याय हैं क्त्वाप्रत्ययभी होता है । जैसे स्वादुं कृत्वा भुंक्ते ॥

यथातथयोरसूयाप्रतिवचने ॥ १२२७ ॥

कृञः सिद्धाऽप्रयोगे णम् ॥ १२२८ ॥ यथाकारमहं भोक्ष्ये तथाकारं भोक्ष्ये किं तवानेन । सिद्धप्रयोगे किम् । सिद्धकृत्वा भुङ्क्ते ॥

भाषा–यथा तथा यह उपपद होनेपर निन्दाकरके जो कि प्रतिवचन है तिसमें कृञ्धातुसे सिद्धाप्रयोगके विषैं णम्प्रत्यय होय । उदाहरण–' यथाकारमहं भोक्ष्ये तथाकारं भोक्ष्ये किं तवानेन ' जिस प्रकार मैं भोजन करता हूं तिसी प्रकार करूंगा । तेरे इस करके क्या है इसमें निन्दाकरके प्रतिवचन कहा है और यथातथासे परे कृञ्धातु सिद्ध प्रयोगके अयोग्य है इस कारण यथा पूर्व होनेसे कृञ्धातुसे णम्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । यथाकारम् । तथाकारम् । और जहां यथा तथासे परे कृञ्धातु सिद्धप्रयोगके योग्य हो वहां णम्प्रत्यय नहीं होय किन्तु क्त्वाप्रत्यय होय ' यथा कृत्वा भुक्ते ' इसमें यथाशब्दसे परे कृञ्धातु सिद्ध प्रयोगके योग्य है इस कारण कृञ्धातुसे क्त्वाप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । यथाकृत्वा भुंक्ते । यथा सिद्धं कृत्वा भुक्ते इत्यर्थ ॥

कर्माणि दृशिविदो साकल्ये ॥ १२२९ ॥ कन्यादर्शं वरयति । सर्वाः कन्या इत्यर्थ । ब्राह्मणवेदं भोजयति य य ब्राह्मण जानाति लभते विचारयति वा त त सर्वं भोजयतीत्यर्थं ॥

भाषा–कर्म उपपद हुए संते दृश, विद् इन धातुओंसे णम्प्रत्यय होय समग्रसामर्थ्यके विषैं । उदाहरण–' कन्यादर्शं वरयति ' इसमें साकल्यभाव विद्यमान है । क्योंकि जिन जिन कन्याओंको देखता है उन सबको वरता है इस कारण कर्म वाचक कन्याशब्द उपपद होनेसे ' दृशिर् प्रेक्षणे ' धातुसे णम्प्रत्यय हुआ है ' ब्राह्मणवेदं भोजयति ' इसमेंभी साकल्यभाव विद्यमान है क्योंकि जिस ब्राह्मणको

जानता है वा प्राप्त करता है वा विचारता है उसको जिवाता है इस कारण कर्म- वाचक ब्राह्मणशब्द उपपद होनेसे ' विद् ज्ञाने, विद्लृ लाभे वा, विद विचारणे ' धातुसे णमुप्रत्यय हुआ है ॥

यावति विन्दजीवोः ॥ १२३० ॥ यावद्वेदं भुंक्ते । यावल्लभते ताव- दित्यर्थः । यावज्जीवमधीते विप्रः ॥

भाषा–यावत्शब्द उपपद हुए संते विद्लृ, जीव इन धातुओंसे णमुप्रत्यय होय । उदाहरण–' यावद्विन्दते तावद्भुंक्ते ' इस विग्रहमें यावत्शब्द उपपद है इस कारण ' विद्लृ लाभे ' धातुसे णमुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । यावद्वेदम् । इसी प्रकार शेष उदाहरण जानना ॥

कर्मणोश्चर्मोदरयोः पूरेः ॥ १२३१ ॥ चर्मपूरं स्तृणाति । उदरपूरं भुंक्ते ॥

भाषा–कर्मसंज्ञक चर्म, उदर यह शब्द उपपद हुए संते पूरीधातुसे णमुप्रत्यय होय । उदाहरण–चर्म, उदर यह कर्मसंज्ञक पूर्व होनेसे ' पूरी आप्यायने ' धातुसे णमुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । चर्मपूरम् । उदरपूरम् ॥

कर्मण्युपपदे पूरेरूलोपश्च वा ॥ १२३२ ॥ वर्षप्रमाणे गम्ये णम् ॥ गोष्पदप्रं वृष्टो देवः । गोष्पदपूरं वा । मूषिकाबिलप्रं वृष्टो देवः । मूषिकाबिलपूरं वा ॥

भाषा–कर्मसंज्ञक शब्द उपपद हुए संते पूरधातुसे णमुप्रत्यय होय और पूर- धातुके ऊकारका लोप होय विकल्पकरके वर्षप्रमाण अर्थ प्राप्य होनेपर । उदाहरण– वृष्टिप्रमाण अर्थ प्राप्य होनेपर कर्मसंज्ञक गोष्पदशब्द पूर्व होनेसे पूरधातुसे णम् करनेके अनन्तर जहां पूरधातुके ऊकारका लोप किया तहां सिद्ध हुआ । गोष्पद- प्रम् । और जहां पूरधातुके ऊकारका लोप नहीं हुआ तहां सिद्ध हुआ । गोष्प- दपूरम् ॥

चैलार्थेषु कर्मसूपपदेषु क्नोपेर्वर्षप्रमाणे ॥ १२३३ ॥ णम् चैलक्नोपं वृष्टो देवः । वस्त्रक्नोपम् । वसनक्नोपम् ॥

भाषा–चैल नाम वस्त्र है अर्थ जिनका ऐसे कर्मसंज्ञक शब्द उपपद हुए संते क्नूयीधातुसे णमुप्रत्यय होय वर्षप्रमाणअर्थमें । उदाहरण–' वृष्टिप्रमाण अर्थ प्राप्य होनेपर वस्त्रार्थ कर्मसंज्ञक चैलशब्द उपपद होनेसे ' क्नूयी शब्दे उन्दे च ' इस धातुसे णमुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । चैलक्नोपम् । इसी प्रकार शेष उदाहरण जानने ॥

निमूलसमूलयोः कषः ॥१२३४॥ कषादिषु यथाविध्यनुप्रयोग प्रयोक्तव्यः ॥ अत्र प्रकरणे पूर्वकाल इति न सबध्यते । असम्भवात्प्रतीतेश्च । निमूलकाषं कषति । समूलकाषं कषति । निमूलं समूलं वा कषतीत्यर्थः ॥

भाषा—निमूल, समूल यह कर्मसंज्ञक शब्द उपपद हुए संते कषधातुसे णमुप्रत्यय होय । कषआदिक धातुओंके विषै यथाविधि अर्थात् विधिके अनुसार धातुका अनुप्रयोग प्रयुक्त करनेयोग्य है । कषसे लेकर जो कि प्रकरण है इसमें पूर्वकाल नहीं सम्बद्ध होता है क्योंकि इस प्रकरणमें पूर्वकालका सम्भव और प्रतीति नहीं है । उदाहरण—कर्मसंज्ञक निमूलशब्द उपपद होनेसे 'कष हिंसायाम्' धातुसे णमुप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । निमूलकाषम् । यहां अनुप्रयोगमें कर्ताके साथ कषधातुका क्रियावचनही प्रयुक्त करना चाहिये क्योंकि कषादिक धातुओंसे णमुप्रत्यय करनेके अनन्तर जैसा विधान हो वैसाही धातु क्रियावचन होता है । शेष उदाहरण इसी प्रकार जानने ॥

शुष्कचूर्णरूक्षेषु कर्मसूपपदेषु पिषः ॥ १२३५ ॥ शुष्कपेषं पिनष्टि । शुष्कं पिनष्टीत्यर्थः । चूर्णपेषम् । रूक्षपेषम् ॥

भाषा—कर्मसंज्ञक शुष्क, चूर्ण, रूक्ष यह उपपद हुए संते पिषधातुसे णमुप्रत्यय होय । उदाहरण—'शुष्कं पिनष्टि' इस विग्रहमें कर्मसंज्ञक शुष्कशब्द उपपद है इस कारण पिष्लृधातुसे णम्प्रत्यय करनेके अनन्तर रूप सिद्ध हुआ । शुष्कपेषम् । यहां कर्ताके साथ पिष्लृधातुकाही क्रियावचन प्रयुक्त करने योग्य है ॥

समूलाकृतजीवेषु कर्मसु हन्कृञ्ग्रहां णम् ॥ १२३६ ॥ समूलघातं हन्ति । समूलं हन्तीत्यर्थः । अकृतकारं करोति । जीवग्राहं गृह्णाति । जीवं गृह्णातीत्यर्थः ॥

भाषा—समूल, अकृत, जीव यह कर्मसंज्ञक शब्द उपपद हुए संते हन्, कृञ्, ग्रह इन धातुओंसे णमुप्रत्यय होय । उदाहरण—'समूलं हन्ति' इस विग्रहमें कर्मसंज्ञक समूलशब्द उपपद होनेसे 'हन् हिंसागत्योः' धातुसे णमुप्रत्यय करनेके अनन्तर 'हनो घत, अत उपधायाः' इनकर सिद्ध हुआ समूलघातं यहां कर्ताके साथ यथाविधि अनुप्रयोग हन्धातुका क्रियावचन करनेपर सिद्ध हुआ । समूलघातं हन्ति । शेष उदाहरण इसी प्रकार जानने ॥

करणे हनः ॥ १२३७ ॥ पादघातं हन्ति । पादेन हन्तीत्यर्थः ॥

भाषा–करणकारक उपपद हुए संते हन्धातुसे णमुप्रत्यय होय । उदाहरण–' पादेन हन्ति ' इस विग्रहमें कर्मसंज्ञक पादशब्द उपपद है । इस कारण हन्धातुसे णमुप्रत्यय करनके अनन्तर ' हनो घत्, अत उपधायाः ' इनकर सिद्ध हुआ । पादघातम् । यहा कर्ताके साथ हन्धातुका क्रियावचन करनेपर रूप हुआ । पादघातं हन्ति ॥

स्नेहने पिषः ॥ १२३८ ॥ उदपेषं पिनष्टि । उदकेन पिनष्टीत्यर्थः ॥

भाषा–करणकारक स्नेहनार्थ उपपद हुए संते पिष्लृधातुसे णमुप्रत्यय होय । उदाहरण–' उदकेन पिनष्टि ' इस विग्रहमें स्नेहनार्थ करणकारक उदकशब्द उपपद होनेसे ' पिष्लृ संचूरणे ' धातुसे णमुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । उदकपेषम् । यहां कर्ताके साथ पिष्लृधातुका क्रियावचन करनेपर रूप हुआ । उदकपेषं पिनष्टि ॥

हस्तार्थे करणे वर्तिग्रहोः ॥ १२३९ ॥ हस्तवर्त्तं वर्त्तयति । करवर्त्तम् । हस्तेन गुटिकां करोतीत्यर्थः । हस्तग्राहं गृह्णाति । करग्राहम् । पाणिग्राहम् ॥

भाषा–हस्तार्थ करणकारक उपपद हुए संते वर्त्ति, ग्रह इन धातुओंसे णमुप्रत्यय होय । उदाहरण–' हस्तेन वर्त्तयति ' इस विग्रहमें हस्तार्थ करणकारक हस्तशब्द उपपद होनेसे णिप्रत्ययान्त ' वृतु वर्त्तने ' धातुसे णमुप्रत्यय करनेपर ' णेः ' इसकर णिप्रत्ययका लोप किया तब सिद्ध हुआ । हस्तवर्त्तम् । यहां कर्ताके साथभी ण्यन्त वृतुधातुका क्रियावचन करनेपर रूप हुआ । हस्तवर्त्तं वर्त्तयति । शेष उदाहरण इसी प्रकार जानने ॥

धनार्थे करणे पुषः ॥ १२४० ॥ धनपोषं पुष्णाति । स्वपोषम् । गोपोषम् ॥

भाषा–धनार्थवाचक करणकारकसंज्ञक पद उपपद हुए संते पुषधातुसे णमुप्रत्यय होय । उदाहरण–' धनेन पुष्णाति ' इस विग्रहमें धनार्थ करणकारकशब्द उपपद होनेसे ' पुष पुष्टौ ' धातुसे अणुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । धनपोषम् । यहां कर्ताके साथ पुषधातुका क्रियावचन करनेपर रूप हुआ । धनपोषं पुष्णाति ॥

आधारे बन्धः ॥ १२४१ ॥ चक्रबन्धं बध्नाति । चक्रे बध्नातीत्यर्थः ॥

भाषा–अधिकरणकारकसंज्ञक शब्द उपपद हुए संते बंधधातुसे अणुप्रत्यय होय । उदाहरण–' चक्रे बध्नाति ' इस विग्रहमें आधिकरणकारक चक्रशब्द उपपद होनेसे बन्धधातुसे अणुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । चक्रबन्धम् । यहां कर्ताके साथ बन्धधातुका क्रियावचन करनेपर रूप हुआ । चक्रबन्धं बध्नाति ॥

संज्ञायां बध्नाते ॥ १२४२ ॥ क्रौञ्चबन्धं बद्धः । मयूरिकाबन्धं बद्धः । अट्टालिकाबन्धं बद्धः । बन्धविशेषाणां संज्ञा एताः ॥

भाषा—संज्ञा वाच्य हुए सते बन्धधातुसे णमुल्प्रत्यय होय । उदाहरण—संज्ञा वाच्य होनेपर 'बन्ध बन्धने' धातुसे णमुल्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । क्रौञ्चबन्धम् । इसी प्रकार शेष उदाहरण जानने ॥

कर्त्रोर्जीवपुरुषयोर्नशिवहो ॥ १२४३ ॥ जीवनाशं नश्यति । जीवो नश्यतीत्यर्थः । पुरुषवाहं वहति । पुरुषो वहतीत्यर्थः ॥

भाषा—कर्तृसंज्ञक जीव पुरुष यह उपपद हुए सते नश, वह इन धातुओंसे णमुल्प्रत्यय होय । उदाहरण—'जीवो नश्यति' इसमें कर्तृसंज्ञक जीवशब्द उपपद होनेसे 'णश् अदर्शने' धातुसे णमुल्प्रत्यय करनेके अनन्तर णशधातुकाही कर्थोके साथ अनुप्रयोग किया तब सिद्ध हुआ । जीवनाशं नश्यति । शेष इसी प्रकार जानने ॥

ऊर्ध्वे कर्त्तरि शुषिपूरो ॥ १२४४ ॥ ऊर्ध्वशोषं शुष्यति । ऊर्ध्वः शुष्यतीत्यर्थः । ऊर्ध्वपूरं पूर्यते । ऊर्ध्वः पूर्यत इत्यर्थः ॥

भाषा—कर्तृसंज्ञक ऊर्ध्वशब्द उपपद हुए सते शुष और पूरधातुसे णमुल्प्रत्यय होय । उदाहरण—'ऊर्ध्वः शुष्यति' इस विग्रहमें ऊर्ध्वशब्द कर्तृसंज्ञक पूर्व होनेसे 'शुष शोषणे' धातुसे णमुल्प्रत्यय करनेके अनन्तर शुषधातुका यथाविधि अनुप्रयोग करनेसे सिद्ध हुआ । ऊर्ध्वशोषं शुष्यति । 'ऊर्ध्वः पूर्यते' इस विग्रहमें कर्तृसंज्ञक ऊर्ध्व उपपद होनेसे 'पूरी आप्यायने' धातुसे णमुल्प्रत्यय करनेके अनन्तर पूरीधातुका यथाविधि अनुप्रयोग करनेसे सिद्ध हुआ । ऊर्ध्वपूरं पूर्यते ॥

उपमाने कर्मणि कर्त्तरि च ॥ १२४५ ॥ घृतनिधायं निहितं जलम् । घृतमिव सुरक्षितमित्यर्थः । अजनाशं नष्टः । अज इव नष्ट इत्यर्थः कषादिषु यथाविध्यनुप्रयोग इत्यस्य एवानुप्रयोक्तव्यः । तथैवोदाहृतम् ॥

भाषा—उपमानवाचक कर्म वा कर्तृसंज्ञक शब्द उपपद हुए सते धातुमात्रसे णमुल्प्रत्यय होय और उसी धातुका यथाविधि अनुप्रयोग करनेयोग्य है । उदाहरण—'घृतमिव निहितं जलम्' इस विग्रहमें उपमानवाचक कर्मसंज्ञक घृत उपपद होनेसे निपूर्व 'धाञ् धारणादौ' धातुसे णमुल्प्रत्यय किया तब 'आतो युक्' इसकर युक् आगम किया तब सिद्ध हुआ । घृतनिधायम् । यहां धाञ्धातुका कर्मके

साथ अनुप्रयोग करनेपर रूप हुआ । घृतनिधायं निहितं जलम् । इसी प्रकार शेष उदाहरण जानना । कषादिक धातुओंके मध्यमें जिस धातुसे णमुप्रत्यय विधान किया जाता है उसी धातुके क्रियावचनादिके अनुसार उसी धातुका पश्चात् प्रयोग प्रयुक्त करने योग्य है तिसी प्रकार ग्रंथकारने उदाहरण दिये हैं ॥

उपदंशस्तृतीयायाम् ॥ १२४६ ॥ इतः प्रभृति पूर्वकाल इति संबध्यते । मूलकोपदंशं भुंक्ते । मूलकेनोपदंशम् । दश्यमानस्य मूलकस्य भुजिं प्रति करणत्वात्तृतीया । यद्यप्युपदंशिना सह न शाब्दः संबंधः तथाऽप्यार्थोऽस्त्येव ॥

भाषा-तृतीयाविभक्त्यन्त शब्द उपपद हुए संते उपदंशधातुसे णमुप्रत्यय होय । यहांसे लेकर समस्त सूत्रोंमें पूर्वकाले ऐसा पद संवद्ध होता है दश्यमान मूलकको भुजधातुके प्रति करण होनेसे मूलकसे तृतीयाविभक्ति की है यद्यपि उपदंश धातुके साथ करणकारक मूलकशब्दका शाब्दसंबन्ध नहीं है तथापि आर्थ संबन्ध तौ हैही । उदाहरण-' मूलकेन उपदंश्य भुंक्ते ' इस विग्रहमें ' भुज पालनादौ ' धातुका करणकारक मूलकशब्द उपपद है । उपदंशधातुके साथ मूलकका आर्थ संबन्ध है इस कारण उपपूर्व ' दंश दंशने ' धातुसे णमुप्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । मूलकोपदंशं भुंक्ते ॥

हिंसार्थानां चानुप्रयोगधातुना समानकर्मणां तृतीयान्ते उपपदे ॥ १२४७ ॥ दण्डोपघातं गाः कालयति । दंडेनोपघातं दण्डताडं दण्डेन ताडं वा । समानकर्मकाणां किम् । दण्डेन चौरमाहत्य गाः कालयतीत्यर्थः ॥

भाषा-तृतीयाविभक्त्यन्त शब्द उपपद हुए संते अनुप्रयोग धातुके साथ समानकर्मवाले ऐसे हिंसार्थधातुसे णमुप्रत्यय होय । उदाहरण-' दण्डेनोपहत्य गाः कालयति ' इस विग्रहमें तृतीयान्त दण्डशब्द उपपद है और अनुप्रयोग कलधातुका जो कि गोकर्म है वहही कर्म हिंसार्थ उपपूर्व हन्धातुका है इस कारण दण्डपूर्व उपहन धातुसे णमुप्रत्यय करनेपर ' हनो घत् ' इसकर घत् आदेश कर ' अत उपधायाः ' इसकर वृद्धि की तब सिद्ध हुआ । दण्डोपघातं गाः कालयति । इसी प्रकार शेष रूप जानन ॥

सप्तम्यां तृतीयायां चोपपदे उपपीडरुधकर्षः ॥ १२४८ ॥ पार्श्वोपपीडं शेते । पार्श्वाभ्यामुपपीडम् । पार्श्वयोरुपपीडं वा ।

व्रजोपरोधं गाः स्थापयति । व्रजेनोपरोधम् । पाण्युपकर्षं धानाः संगृह्णाति । पाणावुपकर्षम् । पाणिनोपकर्षम् ॥

भाषा—सप्तम्यन्त तथा तृतीयान्त शब्द उपपद हुए सते उपपूर्व पीड, रुध, कर्ष इन धातुओंसे णमुल्प्रत्यय होय । उदाहरण-'पार्श्वाभ्यां वा पार्श्वयोरुपपीडच' इस विग्रहमें तृतीयान्त तथा सप्तम्यन्त पार्श्वशब्द उपपद है इस कारण उपपीड धातुसे णमुल्प्रत्यय करनेके अनन्तर 'नाम्नाम कृञा०' इसकर समास करनेपर सिद्ध हुआ । पार्श्वोपपीडम् । और जहां समास नहीं हुआ वहां । पार्श्वाभ्यामुपपीडम् । पार्श्वयोरुपपीडं वा । इसी प्रकार शेष उदाहरण जानने ॥

तृतीयासप्तम्योरुपपदयोस्सन्निकर्षे धातोः ॥१२४९॥ केशग्राहं युध्यन्ते । केशेषु गृहीत्वा युध्यत इत्यर्थः । हस्तग्राहम् । हस्तेन गृहीत्वा ॥

भाषा—तृतीयाविभक्त्यन्त तथा सप्तम्यन्त उपपद हुए सते सन्निकर्षअर्थके विषे धातुसे णमुल्प्रत्यय होय । उदाहरण-'केशेषु गृहीत्वा युध्यन्ते' इस विग्रहमें सप्तम्यन्त शब्द केश उपपद है और सन्निकर्ष अर्थ विद्यमान है इस कारण 'ग्रह उपादाने' धातुसे णमुल्प्रत्यय करनेके अनन्तर 'नाम्नाम कृञा०' इसकर समास किया तब सिद्ध हुआ । केशग्राहं युध्यन्ते । इसी प्रकार शेष उदाहरण जानने ॥

तृतीयासप्तम्यो प्रमाणे गम्ये धातो ॥१२५०॥ द्व्यङ्गुलोत्कर्षं खण्डिकां छिनत्तीति । द्व्यङ्गुलेन द्व्यङ्गुले वोत्कर्षम् ॥

भाषा-तृतीयान्त और सप्तम्यन्त शब्द उपपद हुए सते धातुमात्रसे णमुल्प्रत्यय होय प्रमाण अर्थ प्राप्त हुए सते । उदाहरण-'द्व्यङ्गुलेन वा द्व्यङ्गुले उत्कृष्य खण्डिकां छिनत्ति' इस विग्रहमें तृतीयान्त वा सप्तम्यन्त द्व्यङ्गुलशब्द उपपद है और प्रमाणअर्थभी विद्यमान है इस कारण उत्पूर्व 'कृष विलेखने' धातुसे णमुल्प्रत्यय करनेके अनन्तर समास करनेपर रूप सिद्ध हुआ । द्व्यङ्गुलोत्कर्षं खण्डिकां छिनत्ति । और जहां समास नहीं हुआ वहां । द्व्यङ्गुलेन द्व्यङ्गुले वोत्कर्षं खण्डिकां छिनत्ति ॥

अपादाने द्वितायायां च त्वरायां गम्यमानायां धातो ॥१२५१॥ शय्योत्थायं धावति । यष्टिग्राहं युध्यन्ते । लोष्टग्राहम् ॥

भाषा—अपादान नाम पञ्चम्यन्त और द्वितीयान्त शब्द उपपद हुए सते धातुसे णमुल्प्रत्यय होय वेग अर्थ प्राप्त हुए सते । उदाहरण-'शय्याया उत्थाय धावति' इस विग्रहमें पञ्चम्यन्त शय्याशब्द उपपद है और वेगअर्थ विद्यमान है इस कारण उत्पूर्व 'ष्ठा गतिनिवृत्तौ' धातुसे णमुल्प्रत्यय करनेके अनन्तर 'आतो

युक्' इसकर युक् आगम किया तब सिद्ध हुआ । शय्योत्थायं धावति । 'यष्टिं गृहीत्वा युध्यन्ते ' इस विग्रहमें द्वितीयान्त यष्टिशब्द उपपद है और त्वरा अर्थ विद्यमान है इस कारण ' ग्रह उपादाने ' धातुसे अण्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । यष्टिग्राहं युध्यन्ते । एवं अन्यमपि ॥

अपगुरोर्वा णम्योतः ॥ १२५२ ॥ गुरी उद्यमे । अस्यपगारं युध्यन्ते । अस्यपगोरं वा ॥

भाषा–अपपूर्व गुरीधातुको उकारको अकार होय विकल्पकरके णम् प्रत्यय पर हुए संते । गुरीधातु उद्यमअर्थमें वर्त्ते है । उदाहरण–' असिमपगुर्य्य युध्यन्ते ' इस विग्रहमें कर्मसंज्ञक असिशब्द पूर्व होनेसे अपपूर्व ' गुरी उद्यमे ' धातुसे णम्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । अस्यपगोरम् ॥

अध्रुवे स्वांगे द्वितियान्ते धातोः ॥ १२५३ ॥ भ्रूविक्षेपं कथयति भ्रुवं विक्षेपम् । अध्रुवे किम् । शिर उत्क्षिप्य कथयति । येन विना न जीवनं तद् ध्रुवम् ॥

भाषा–द्वितीयान्त अध्रुव स्वांग उपपद हुए संते धातुसे णम्प्रत्यय होय । उदाहरण–' भ्रुवं विक्षिप्य कथयति ' इस विग्रहमें द्वितीयान्त अध्रुव निज अंग भ्रू शब्द उपपद है इस कारण विपूर्व ' क्षिप प्रेरणे ' धातुसे णम् प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । भ्रूविक्षेपं भ्रवं विक्षेपं वा कथयति । अध्रुव ऐसा क्यों कहा तहां ' शिर उत्क्षिप्य कथयति ' इसमें अध्रुव स्वांग उपपद नहीं किन्तु ध्रुव स्वांग है इस कारण उद्पूर्व क्षिपधातुसे णम्प्रत्यय नहीं हुआ जिसके विना जीवन नहीं होय वह ध्रुव है ॥

परिक्लिश्यमाने द्वितियान्ते स्वांगे धातोः ॥ १२५४ ॥ उरःप्रतिपेषं युध्यन्ते । कृत्स्नमुरस्संपीडयित्वेत्यर्थः । " उरोविदारं प्रतिचस्करे नखैः । " ध्रुवार्थमिदम् ॥

भाषा–परिक्लिश्यमान अर्थात् सब तरफसे क्लेशको प्राप्त हुआ द्वितीयान्त स्वांग उपपद हुए संते धातुसे णम्प्रत्यय होय । उदाहरण–' उरः प्रतिपिष्य युध्यन्ते ' इस विग्रहमें सब तरफसे बाधित किया हुआ द्वितीयान्त निज अंग उरस्शब्द उपपद है इस कारण प्रतिपूर्व ' पिष्ऌ सञ्चूर्णने ' धातुसे णम्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । उरःप्रतिपेषं युध्यन्ते । इसी प्रकार उरोविदारम् इत्यादिक रूप सिद्ध हुए जानने ॥

द्वितीयान्तेविशिपतिपदिस्कन्दां व्याप्यमानासेव्यमानयोः ॥ १२९५ ॥ गेहादिद्रव्याणां विशादिक्रियाभिः साकल्येन संबन्धो व्याप्तिः । क्रियायाः पौनःपुन्यं समासे वा । गेहानुप्रवेशमास्ते । गेहंगेहमनुप्रवेशम् । एवं गेहानुप्रपातम् । गेहानुप्रपादम् । गेहानुस्कन्दम् । असमासे गेहस्य णमन्तस्य च पर्यायेण द्वित्वम् । गेहंगेहमनुप्रवेशम् । गेहमनुप्रवेशमनुप्रवेशम् ॥

भाषा–द्वितीयान्त शब्द उपपद हुए सन्ते विश, पत, पद, स्कंदि इन धातुओंसे णमुल्प्रत्यय होय व्याप्यमान नाम व्याप्तिअर्थके विषैं और आसेव्यमान नाम पौनःपुन्य अर्थके विषैं । गेहादिक द्रव्योंका विशादिक क्रियाओंके साथ जो कि सम्प्रवाकरके सम्बन्ध है वह व्याप्ति है और क्रियाका पौनःपुन्य नाम वारवार अर्थ है वह आसेवा है । ' गेहंगेहमनुप्रविश्य आस्ते ' इस विग्रहमें पौनःपुन्य अर्थ विद्यमान है और द्वितीयान्त गेहशब्द उपपद है इस कारण अनुप्रपूर्व ' विश प्रवेशने ' धातुसे णमुल्प्रत्यय करनेपर समाससंज्ञामें सिद्ध हुआ । गेहानुप्रवेशम् । ' गेहं समस्तयानुप्रविश्य आस्ते ' इस विग्रहमें व्याप्तिअर्थ विद्यमान है और द्वितीयान्त गेहशब्द उपपद है इस कारण अनुप्रपूर्व ' विश प्रवेशने ' धातुसे णमुल्प्रत्यय करनेके अनन्तर समाससंज्ञामें सिद्ध हुआ । गेहानुप्रवेशम् । इसी प्रकार व्याप्ति तथा पौनःपुन्य अर्थ विद्यमान होनेपर द्वितीयान्त गेहशब्द उपपद होनेसे अनुप्रपूर्व ' पत्लृ पतने ' और अनुप्रपूर्व ' पद गतौ ' और अनुपूर्व ' स्कन्दिर् गतिशोषणयोः ' इन धातुओंसे क्रमपूर्वक णमुल्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुए गेहानुप्रपातम् । इत्यादि । और जहां समास नहीं होय वहां गेहशब्दको और णमुल्प्रत्ययान्तको क्रमसे द्वित्व होय । जैसे गेहं गेहमनुप्रवेशमनुप्रवेशमिति ॥

क्रियांतरेषु कालेषु द्वितीयान्तेषूपपदेषु क्रियाव्यवधाने वर्तमानयोरस्यतितृषो ॥ १२९६ ॥ द्व्यहात्यासं गा पाययति । द्व्यहमत्यासम् । द्व्यहतर्षम् । अत्यसनेन तर्षणेन च गवां पानक्रिया व्यवधीयते । अद्य पाययित्वा द्व्यहमतिक्रम्य पुनः पाययतीत्यर्थः ॥

भाषा–व्यवधानकरके क्रियाके अन्तर करनेवाले कालवाची द्वितीयान्त शब्द उपपद हुए सन्ते क्रियाव्यवधान नाम क्रियाके अन्तरमें वर्तमान हुए असु, तृष इन धातुओंसे णमुल्प्रत्यय होय । उदाहरण–' द्व्यहमत्यस्य गाः पाययति ' इस

विग्रहमें गौओंकी पानक्रियाके अन्तर करनेवाला कालवाचक द्वितीयान्त द्व्यहशब्द उपपद है और गौओंकी पानक्रियाके बीच अत्यसन क्रिया विद्यमान है इस कारण अतिपूर्व ' असु क्षेपणे ' धातुसे णमुप्रत्यय करनेके अनन्तर रूप सिद्ध हुआ । द्व्यहात्यासं गाः पाययति । इसी प्रकार शेष उदाहरण जानना । यहां प्रत्यसन और तर्षण क्रियाकर गौओंकी पानक्रिया अन्तरको प्राप्त हुई है जैसे गौओंको जल अब पान करायकर दो दिन उल्लंघन कर फिर पान कराता है ॥

नाम्नि द्वितीयान्ते आदिशिग्रहोः ॥ १२८७ ॥ नामादेशमाचष्टे नामग्राहं कथयति ॥

भाषा–द्वितीयान्त नामशब्द उपपद हुए संते आङ्पूर्व दिश, ग्रह इन धातुओंसे णमुप्रत्यय होय । उदाहरण–' नामादिश्याचष्टे, नाम गृहीत्वा कथयति ' इन विग्रहोंमे द्वितीयान्त नामशब्द उपपद है इस कारण आङ्पूर्व ' दिश अतिसर्जने, ग्रह उपादाने ' इन धातुओंसे णमुप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । नामादेशमाचष्टे । नामग्राहं कथयति ॥

अव्ययेऽयथाभिप्रेताख्याने कृञः क्त्वाणमौ वा ॥ १२८८ ॥ अयथाभिप्रेताख्यानं नाम अप्रियस्योच्चैः प्रियस्य नीचैः कथनम् । उच्चैः कृत्य उच्चैः कृत्वा उच्चैःकारं वाऽप्रियमाचष्टे । नीचैःकृत्य नीचैः कृत्वा नीचैः कारं वा प्रियं ब्रूते ॥

भाषा–अव्यय उपपद हुए संते कृञ्धातुसे क्त्वा, णमु यह प्रत्यय होंय अयथाभिप्रेताख्यानअर्थके विषै । भाव यह है कि जैसा अभिप्राययुक्त अर्थ हो उस अर्थको तिस प्रकार न कहनेमें अव्यय पूर्वपद हुए संते कृञ्धातुसे क्त्वा, णमु यह प्रत्यय होंय । ' उच्चैः कृत्य अप्रियं ब्रूते ' इस विग्रहमें अयथाभिप्रेताख्यान अर्थ है क्योंकि अप्रियवाक्यका नीचे स्वरसे कथन करना चाहिये था सो ऊंचे स्वरसे कथन किया है इस कारण उच्चैः अव्यय उपपद होनेपर कृञ्धातुसे क्त्वा, णमु क्यप्प्रयय करनेपर सिद्ध हुआ । उच्चैः कृत्वा । उच्चैः कारम् । उच्चैः कृत्य । शेष उदाहरणभी इसी प्रकार जानना ॥

तिर्यच्युपपदे समाप्तौ कृञः क्त्वाणमौ वा ॥ १२८९ ॥ तिर्यक्कृत्य गत इति तिर्यक्कृत्वा । तिर्यक्कारम् । समाप्य गत इत्यर्थः ॥ समाप्तौ किम् तिर्यक्कृत्वा काष्ठङ्गतः ॥

भाषा–तिर्यक्शब्द उपपद हुए संते कृञ्धातुसे क्त्वा, णमु यह विकल्पकरके

होय समाप्ति अर्थ प्राप्य हुए सवे। उदाहरण–' तिर्यक्कृत्य गतः ' इस विग्रहमें तिर्यक् शब्द उपपद है और समाप्तिअर्थ प्राप्य है इस कारण तिर्यक् पूर्व कृञ्धातुसे णमु क्त्वा, यह विकल्पकरके करनेसे रूप सिद्ध हुए। तिर्यक्कारम्। तिर्यक्कृत्वा। और जहां णमु, क्त्वा यह प्रत्यय नहीं हुए वहां ल्यप्प्रत्यय हुआ और जहां समाप्ति अर्थ प्राप्य नहीं होय वहां णमुप्रत्यय नहीं होय जैसे। तिर्यक्कृत्वा काष्ठं गतः॥

स्वाङ्गे तस्प्रत्यये कृभ्वोः ॥ १२६० ॥ मुखतः कृत्य गतः। मुखतः कृत्वा मुखतः कारम्। मुखतोभूय गत इति। मुखतोभूत्वा। मुखतोभावम्॥

भाषा–तस्प्रत्ययान्त स्वाङ्ग उपपद हुए सवे कृञ्, भू इन धातुओंसे क्त्वा, णमु यह प्रत्यय होंय। उदाहरण–' मुखतः कृत्य गतः, मुखतोभूय गतः ' इन विग्रहोंमें तस्प्रत्ययान्त स्वांग मुखतः शब्द उपपद है इस कारण डुकृञ् ' करणे, भू सत्तायाम् ' इन धातुसे क्त्वा णमु प्रत्यय करनेपर क्रमसे रूप सिद्ध हुए। मुखतः कृत्वा, मुखतः कारम्। मुखतो भूत्वा मुखतोभावम्॥

नाधार्थप्रत्ययान्ते च्व्यर्थे कृभ्वोः क्त्वाणमौ वा ॥ १२६१ ॥ अनाना नानाकृत्य नानाकृत्वा नानाकारम्। विनाकृत्य विनाकृत्वा विनाकारम्। नानाभूय नानाभूत्वा नानाभावम्। अनेकद्रव्यमेकं कृत्वा एकधाकृत्य एकधाकृत्वा एकधाकारम्। एकधाभूय एकधाभूत्वा एकधाभावम्। प्रत्ययग्रहणं किम्। हिरुक्कृत्वा। पृथग्भूत्वा॥

भाषा-नाधार्थ अर्थात् नाप्रत्ययान्त, नाञ्प्रत्ययान्त धाप्रत्ययान्त और धमुञ्प्रत्ययान्त च्विप्रत्ययके समान अर्थवाला शब्द उपपद हुए सवे कृ, भू इन धातुओंसे क्त्वा, णमु यह प्रत्यय होंय और वाग्रहणसे ल्यप्प्रत्ययभी होय। उदाहरण– अनाना नानाकृत्य ' इस विग्रहमें च्विप्रत्ययके समान अर्थवाला नाप्रत्ययान्त नानाशब्द उपपद है इस कारण कृञ्धातुसे क्त्वा, णमु ल्यप् तीनों प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। नानाकृत्वा। नानाकारम्। नानाकृत्य इसी प्रकार विनाकृत्वा। विनाकारम्। विनाकृत्य। नाप्रत्ययान्त च्विप्रत्ययके समान अर्थवाला नानाशब्द उपपद होनेसे भूधातुसे तीनों प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ। नानाभूत्वा नानाभावम्। नानाभूय। धाप्रत्ययान्त एकधाशब्द जब उपपद होनेसे कृञ्, भू इन दोनों धातुओंसे तीनों प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुए रूप एकधाकृत्वा। इत्यादि। नाधार्थ प्रत्ययान्त शब्द जहां उपपद न होवे तो कृञ्, भू इन धातुओंसे पूर्वोक्त तीनों प्रत्यय नहीं होंय जैसे। हिरुक्कृत्वा पृथग्भूत्वा॥

तूष्णींशब्दे भुवः क्त्वाणमौ ॥ १२६२ ॥ तूष्णींभूय गतः । तूष्णींभूत्वा तूष्णींभावम् ॥

भाषा–तूष्णीं शब्द उपपद हुए संते भूधातुसे क्त्वा, णमु यह प्रत्यय होंय उदाहरण–' तूष्णीभूय गतः ' इस विग्रहमें तष्णीं शब्द उपपद है इस कारण ' भू सत्ताय ' धातुसे क्त्वा णमु प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । तूष्णींभूत्वा । तूष्णींभावम् ॥

अन्वक्शब्दे भुवः क्त्वाणमौ वा ॥ १२६३ ॥ आनुकूल्ये गम्ये । अन्वग्भूयास्ते । अन्वग्भूत्वा । अन्वग्भावम् । अग्रतः पार्श्वतः पृष्ठतो वानुकूलो भूत्वा आस्ते इत्यर्थः । आनुकूल्ये किम् । अन्वग्भूत्वा तिष्ठति । पृष्ठतो भूत्वेत्यर्थः ॥

भाषा–अन्वक्शब्द उपपद हुए संते भूधातुसे क्त्वा और णमु और वाग्रहणसे क्यप्प्रत्यय होय आनुकूल्य अर्थ प्राप्य हुए संते । उदाहरण–' अन्वग्भूय आस्ते ' इस विग्रहमें अन्वक्शब्द उपपद है और आनुकूल्य अर्थ विद्यमान है क्योंकि यहां अन्वक्शब्द अनुकूलवाचक है तव भूधातुसे क्त्वा, णमु, क्यप् तीनों प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । अन्वग्भूत्वा । अन्वग्भावम् । अन्वग्भूय । और जहां आनुकूल्य अर्थ नहीं होगा तहां अन्वक्शब्द उपपद होनेसे भूधातुसे यह तीनों प्रत्यय नहीं होवेंगे । जैसे ' अन्वग्भूत्वा तिष्ठति ' इसमें आनुकूल्य अर्थ नहीं है क्योंकि यहां अन्वक्शब्द पृष्ठार्थवाचक है ॥

वर्णात्कारः ॥ १२६४ ॥ अकारः । इकारः । वकारः ॥

भाषा–जिस वर्णका केवल कथन हो उस वर्णमात्रमे कारप्रत्यय होता है । उदाहरण–जहां केवल अ, इ, व इत्यादि अक्षरमात्रका ग्रहण हो तहां कारप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । अकारः इकारः । वकारः ॥

रादिफो वा ॥ १२६५ ॥ रेफः । रकारः ॥

भाषा–रकार अक्षरसे केवल रकारके कथनमें इफप्रत्यय होय विकल्पकरके उदाहरण–जहां केवल र इस अक्षरका ग्रहण है तहां इफप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । रेफः । और जहां इफप्रत्यय नहीं होय तहां कारप्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ । रकारः ॥

लोकाच्छेषस्य सिद्धिः ॥ १२६६ ॥ यथा मातरादयः ॥

भाषा–शेष नाम जो कि इस ग्रंथमें नहीं कहा है उसका साधन लोक नाम अन्य-

व्याकरणसे जानने योग्य है उदाहरण–मातर आदिक शब्दोंकी सिद्धि अन्यव्याकरणसे जाननी ॥

श्रीमन्मगल्सेनसत्तुविदुषा श्रीकाशिरामेण वै
लक्ष्मीवेंकटनायकस्य कृपया ह्यल्पज्ञबुद्धये ॥
सिद्धान्तोत्तरचन्द्रिकार्द्धविषये भाषार्थटीका कृता
दृष्ट्वा यत्त्रुटिका भवेद्बुधवरैः संशोध्य तत् क्षम्यताम् ॥ १ ॥
बाणपक्षखगचन्द्रवत्सरे कार्तिके च सितविष्णुवासरे ॥
भासमासिमगमाद्धि चन्द्रिका मोत्तरार्द्धविषयाभिचन्द्रिका ।
श्रीवेंकटेश भगवान् हृदि मे प्रविश्य
कल्याणवासिनिजभक्तयशो वितन्वन् ॥
लोकाय व्याकरणदिव्यरस भवाद
टीकामिमामकथयत्परचन्द्रिकाख्याम् ॥ २ ॥

इति श्रीरामाश्रमविरचितायां सिद्धान्तचन्द्रिकायामुत्तरार्द्धे
रामविरचितभाषाटीकोदाहरणसहिता सारस्वतव्याकरणस्य वृत्ति र

इति भाषाटीकासहितं सिद्धान्तचन्द्रिकोत्तरार्धं समाप्तः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस,
कल्याण–मुंबई

खेमराज
"श्रीवेङ्कटे